गुसाईं-गुरुबानी

(गुसाईं मत का गुरु-ग्रंथ)

प्राक्कथन

डा० गोकुलचन्द नारंग

एम० ए पी-एच डी० बार एट-ला

भूतपूर्व मंत्री पंजाब सरकार

भूमिका

डा० विजयेन्द्र स्नातक

एम ए पी-एच डी

रीडर दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

सतगुरु सिद्ध बाबा साइदास सेवक संघ दिल्ली

के निमित्त

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बाबा साईदास के सेवक और प्रेमी इस पवित्र ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए 'सद्गुरु सिद्ध बाबा साईदास सेवक संघ' के अत्यन्त आभारी हैं। इस ग्रन्थ के विषय में कुछ कहने से पहले बाबा साईदास के सम्बन्ध में कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा। वे संत थे और उनका जन्म गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में) के पास एक छोटे-से गांव में हुआ था। कुछ समय पश्चात् वे अपने प्रिय शिष्य बाहो—चीमा कबीले के एक जाट—के साथ जम्मू चले गये। वहां उन्होंने बड़ोली गुसाईं नामक गांव की स्थापना की। वहीं उन्होंने तपस्या की और शीघ्र ही ईश्वर भक्ति और आत्मज्ञान के लिए प्रसिद्ध हो गए। उनके उत्तराधिकारियों ने उनके पुनीत कार्य को उनके नाम से एक गद्दी स्थापित करके चालू रखा। उनके उत्तराधिकारी लगभग ५० वर्षों तक गद्दी को सफलतापूर्वक चलाते रहे। देश के बंटवारे के समय पंजाब के अन्य हिन्दुओं की भांति उनके उत्तराधिकारियों को भी गांव छोड़ना पड़ा।

गुसाईं जी के उत्तराधिकारियों के कार्यकाल में उस गांव की महत्ता और भी बढ़ गई, क्योंकि वहां पानी का एक तालाब था जिसके बारे में यह समझा जाता था कि उसमें बीमारियों को ठीक करने की एक अद्भुत शक्ति है। सेवकों की संख्या बढ़ती गई और उनके सेवकों में से एमनाबाद (गुजरांवाला के पास एक सुप्रसिद्ध नगर) का प्रमुख नन्दा परिवार भी था। जब दीवान कृपाराम जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने वहां एक बड़ा मन्दिर और एक लम्बा-चौड़ा तालाब जो पहले एक छोटे तालाब के रूप में था बनवाया। गुसाईं जी के सेवकों के लिए यह स्थान तीर्थ यात्रा-स्थल बन गया। 'चड़' नाम से एक बड़ा मेला मई मास में यहां होता था। इस मेले के अवसर पर गुजरांवाला जिले के सभी कोर्ट और स्कूल बन्द रहते थे और भारी संख्या में हिन्दू और मुसलमान इस मेले में भाग लेते थे। पूर्णमासी की रात को यहां संगीत का मोहक कार्यक्रम होता था। इस कार्यक्रम में आसपास के सभी प्रसिद्ध संगीतज्ञ भाग लेते थे और कार्यक्रम रात भर चलता रहता था।

बटवारे के बाद भी साधारण रूप से गद्दी चलती रही और अब भी यहीं पर एक महन्त बैठते हैं और सब के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष अब भी एक प्रकार का मेला उत्तराधिकारी महन्त की अध्यक्षता में भारत में होता है।

इस 'गुसाईं गुरुवानी' ग्रन्थ में बाबा साईंदास तथा उनके वंशजों अनुयायियों और कुछ शिष्यों की रचनाएं संगृहीत हैं। ८   पृष्ठों के इस महाग्रन्थ में अनेक पुस्तकें सम्मिलित कर ली गई हैं। पहली पुस्तक—रतनज्ञान—संभवतः बाबा साईंदास का अपना मुख-वाक है। इसके बाद बार को भागवत अमृतवाणी दशावतार तथा विभिन्न पद हरिश्चन्द्र की कहानी बाबा साईंदास की जीवनी महादास की जीवन-गाथा अमरदास और काशीदास—जो बाबा साईंदास के अनुयायियों में से थे—के बारे वर्णित हैं। धन्ना भगत की कहानी का भी वर्णन है। इसमें गुरु नानक और बाबा साईंदास की (जो गुरु नानक के समकालीन थे—और जो नानकजी से कुछ महीने पूर्व या पश्चात् पैदा हुए थे) सम्भावित भेंट का भी वर्णन है। पुस्तक में रामनाम के गुणगान पर ही जोर दिया गया है, ठीक वैसे ही जैसे कि सिक्खों के गुरु ग्रन्थ साहिब में उपलब्ध होता है।

शहंशाह जहांगीर जब शिकार के लिए हरनमुनारा गये थे उस समय महन्त काशीदास के साथ हुई उनकी मुलाकात का भी वर्णन पुस्तक में किया गया है।

मुझे यह ग्रन्थ इसलिए भी प्रिय है कि बड़ोदी गुसाईं ही मेरा जन्म-स्थान है और मुझे प्रसन्नता है कि यह ग्रन्थ सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ है। मुझे विश्वास है बाबा साईंदास के सेवक प्रेमी और उत्तराधिकारी तथा साहित्य में रुचि रखने वाले महानुभाव इसे काफी पसन्द करेंगे।

—गोकुलचन्द नारंग

भूमिका

मध्ययुगीन संत साधकों के इतिहास तथा साहित्य के सम्बन्ध में यद्यावधि जो शोध-कार्य हुआ है वह इतना अपूर्ण है कि उसके आधार पर न तो संत परम्परा का सम्यक आकलन संभव है और न उनकी उपलब्धियों का ही हमें पूरा ज्ञान होता है। पन्द्रहवीं सोलहवीं शती में उत्पन्न हुए पंजाब तथा राजस्थान के संत साधकों की जो विशाल सूची प्रकाश में आ रही है वह इस तथ्य को पुष्ट करती है कि सगुण भक्ति के उन्मेष से पूर्व संत साधकों की रहस्यमयी भावधारा का प्रवाह समस्त देश में व्याप्त हो चुका था। आचार्य क्षितिमोहन सेन प परशुराम चतुर्वेदी एं वियोगी हरि, डा० बड़थ्वाल डा मोहन सिंह विद्वानों ने अपनी कृतियों में संत परम्परा का विभिन्न दृष्टि बिन्दुओं से वर्णन किया है। किन्तु इन सत्प्रयत्नों के बाद भी संत साधकों की सम्पूर्ण जानकारी अभी तक हम उपलब्ध नहीं कर सके हैं। पंजाब के संत और भक्त कवियों की रचनाएं अभी तक अज्ञात बनी हुई हैं क्योंकि गुरुमुखी लिपि में होने क कारण उनका विधिवत् अध्ययन ही नहीं हुआ है। पटियाला में ही शताधिक ग्रन्थों की सूचना शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त हुई है। इन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का काम शनैः शनैः प्रारम्भ हुआ है। 'गुसाइं गुरबानी' इसी परम्परा की दुर्लभ एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है।

बाबा साईंदास मध्ययुगीन संत साधकों की परम्परा के उज्ज्वल रत्न हैं जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय म हिन्दी जगत् को कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। ज्ञान और भक्ति की समन्वित भावधारा से जिज्ञासुओं को परम शान्ति का सन्देश देनेवाले बाबा साइंदास किसी पन्थ या मत के अनुयायी न होकर स्वयं एक अन्य मत के प्रवर्तक थे जिसे 'गुसाईं पंथ' या 'गुसाइं मत' के नाम से व्यवहृत किया जाता है।

बाबा साईंदास ने 'गुसाईं पन्थ' का प्रवर्तन क्यों और किन परिस्थितियों में किया यह प्रश्न कई कारणों से विचारणीय है। किन्तु मैं इस प्रसंग को यहां विस्तार से प्रस्तुत नहीं करना चाहता केवल इतना ही संकेत करना चाहता हूं कि गुरु नानकदेव के समकालीन होने से बाबा साईंदास ने तत्कालीन धार्मिक

सामाजिक और राजनीतिक स्थितियो को उसी परिप्रेक्ष्य मे ग्रहण किया था जिस परिप्रेक्ष्य मे गुरु नानक ने। गुरु नानक की उपासना-पद्धति मे एकेश्वरवाद के निर्गुण स्वरूप का आग्रह था जिसे ज्यो का त्यो उनके पुत्र श्रीचन्द ने भी स्वीकार नही किया। फलत श्रीचन्द ने अपने पिता के पन्थ से कुछ हटकर स्वतन्त्र उदासी सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और अपनी धार्मिक भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त धरातल खोज निकाला। बाबा लालदास गुरु नानक की विचार धारा से पूर्ण परिचित थे। दोनो सत एक ही जिले के निवासी एवं समकालीन थे समाज के उद्धार मे रुचि रखनेवाले उच्च कोटि के साधक थे। गुरु नानक ने जिस धरातल पर हिन्दू धर्म की धार्मिक मान्यताओं एवं परम्पराओ को स्वीकार किया उसमे राम और कृष्ण जैसे अवतारी महापुरुषो के लिए वह स्थान नही था जो सगुणोपासक भक्तो की आस्था-श्रद्धापूर्ण दृष्टि मे चला आ रहा था। बाबा लालदास ने हिन्दू धर्म की आस्था को अक्षुण्ण रखते हुए राम और कृष्ण के अवतारी रूप को भक्त की भावना मे अनुकूल बनाया। साथ ही योग मार्ग की साधना को सहज-साधना का रूप देकर प्रस्तुत किया जो गुरु नानक की पद्धति से सर्वथा भिन्न स्तर पर है। साधना के क्षेत्र की प्रतिक्रिया के रूप मे बाबा लालदास ने अपने पन्थ मे ज्ञान भक्ति और योग के समन्वय पर बल दिया तथा एक ऐसा सहज पन्थ खोज निकाला जो हिन्दू धर्म की परम्पराओं को निर्जीव करता हुआ सत साधना का नवीन पथ प्रशस्त करने मे सक्षम हो सके। यह एक तथ्यमात्र है जिसके द्वारा बाबा लालदास के पन्थ प्रवर्तन के मूल कारण का उद्घाटन संभव है।

बाबा लालदास गुसाईं सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक तथा मूल पुरुष माने जाते है। 'मुरार गुस्वामी' के 'लालदास जीवनी' प्रकरण मे लालदास का जन्म संवत् १५२१ लिखा है। तिथि मास आदि का पूरा विवरण इस प्रकरण में मिलता है। यदि इसे प्रमाण माना जाय तो ईसा की पन्द्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध मे इनका जन्म मानना होगा। लालदास बचपन से ही विरक्त स्वभाव के थे किन्तु बचपन मे ही विवाह हो जाने से साधु बनकर घर-बार छोड नही सके। गृहस्थ के रूप मे शान्त वृत्ति से जीवन-यापन करते हुए अपने विचारों का प्रचार करते रहे। अपने पुत्रो को भी इन्होंने अपनी विचारधारा के अनुरूप बनाया।

बाबा लालदास वैष्णव परम्परा के भक्त है या निर्गुणधारा के समर्थक सत साधक यह प्रश्न विचारणीय होने के साथ बडे महत्त्व का है। इस प्रश्न का समाधान दो मार्गों से सभव है। 'गुसाईं गुस्वानी' के अध्ययन से उपलब्ध निष्कर्ष तथा सम्प्रदाय मे प्रचलित उपासना-पद्धति के अनुशीलन से प्राप्त तथ्य। इन दोनों स्रोतों के अवगाहन के बाद मैं इस सम्प्रदाय को उस प्रकार का वैष्णव भक्ति

सम्प्रदाय नहीं मानता जैसा कि रामानन्द का सम्प्रदाय है। रामानन्द की भक्ति-पद्धति का अनेक संत सम्प्रदायों पर गहरा प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु उन सबको वैष्णव सम्प्रदायों में समाविष्ट नहीं किया जा सकता। यही स्थिति गुसाईं मत की भी है। वस्तुतः यह पंथ पूर्ण रूप से विकसित सम्प्रदाय नहीं है अतः वैष्णव साधना की मर्यादा भी इसमें नहीं है। राम और कृष्ण की कथा को 'गुसाईं गुरबानी' में पूरे उल्लास के साथ इस मत के संतों ने गाया है किन्तु कथा के पल्लवन में न तो वैष्णव भावना है और न सिद्धान्तों में अवतारी राम या कृष्ण की वैसी स्वीकृति है जैसी वैष्णव साहित्य में मिलती है। राम और कृष्ण को उपास्यदेव मानते हुए भी उनके रूप गुण शील वर्णन में निर्गुण भावना का विचित्र ढंग से आरोप किया गया है। रामानन्द की परम्परा में अपने को मानते हुए और गुरुमंत्र या दीक्षा मंत्र में राम का स्तवन करते हुए भी ब्रह्म जीव और जगत् के विषय में इनकी विचारधारा ज्ञान मार्ग के मेल में है। उपनिषद् और वेदान्त को स्वीकार करते हुए एको एक सब में बसै अवरि न दूजा कोय। साईंदास जो जानै वरि दूसरा दरि वरि भासा होय।" आदि वाक्यों द्वारा अद्वैत भावना का ही समर्थन है। ब्रह्म वर्णन में इन्होंने अपने आध्यात्मिक तत्त्व को बड़े स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है—

आदि निरंजन जानियो निर्मो गुन निराकारि।
अगम अगोचर बुधि में रचना रचनि हारि।।

संक्षेप में ब्रह्म ओंकार, माया जीव और जगत् के नानाविध वर्णनों को पढ़कर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उपनिषद् और वेदान्त के प्रतिपाद्य को स्वीकार करते हुए गुसाइयों ने राम और कृष्ण के चरित्र को अपनी शैली में ढाला है। राम की उपासना तो है किन्तु वह उपासना वैसी ही है जैसी निर्गुणधारा के अन्य मतों या पंथों में स्वीकृत है। इस पंथ की विशेषता है कि इन्होंने कृष्ण भक्ति को भी अपनी वाणी में स्थान दिया है। राम और कृष्ण का अवतारी सगुण ईश्वर के रूप न मानकर भी निर्गुण रूप में ध्यान का विषय बनाना ही इस पंथ की विशिष्टता समझी जानी चाहिए।

निर्गुण और सगुण का जिस सामान्य धरातल पर मेल संभव है उसे देख पाना और प्रस्तुत करना कठिन काम है किन्तु मध्ययुगीन अनेक संत महानुभावों को यह दिव्यदृष्टि प्राप्त थी और उसी के द्वारा यह विलक्षण चमत्कार इन संतों ने कर दिखाया है।

गुसाईं गुरबानी में भावना के जिन भावों का स्थान-स्थान पर उल्लेख हुआ है वे भी इस तथ्य के समर्थक हैं कि गुसाईं गुरुओं के सामने समन्वय का आदर्श

था। गुरु नानक के सिख पंथ ने तथा श्रीचन्द के उदासी मत ने जिन दो विचार-धाराओं को साधना के क्षेत्र में उस समय प्रस्तुत किया था इन गुसाईं गुरुओं ने उनके पार्थक्य को विस्मृत कर हिन्दू धर्म की परम्परागत मान्यताओं के भीतर ही अपने गुसाईं पंथ की नींव रखी। योग के प्रपंच को भी इन महानुभावों ने त्याज्य नहीं बताया वरन् बड़े विस्तार के साथ अपनी वाणी में उसका वर्णन किया। सहज साधना के नाम से मध्ययुग में जो उपासना पद्धति चल पड़ी थी और जिसका मूल नाथ सम्प्रदाय के भीतर था इस पंथ में भी किसी न किसी रूप में स्थान पा गई है। जप तप नाम स्मरण आदि सामान्य साधन मार्गों का भी उल्लेख इस पंथ में मिलता है। आचार विचार में पवित्रता के प्रति उसी प्रकार का आग्रह इस पंथ में है जैसा कबीर आदि संत महात्माओं ने व्यक्त किया है।

'गुसाईं गुरुवाणी' एक संकलित रचना है जिसमें व्यक्ति-भेद के साथ काल-भेद भी है अतः अभिव्यंजना कला में भी एकरूपता होना सम्भव नहीं है। बाबा साईंदास की वाणी अन्य गुसाइयों से अधिक प्रौढ़ एवं परिमार्जित है। उसमें विस्तार भी औरों से अधिक है। रूपावतार वर्णन में इनकी सरस काव्य शैली का रूप द्रष्टव्य है। पद शैली परम्परागत रागों पर आश्रित है, उसमें कोमल कान्त पदावली का वैभव स्थान-स्थान पर लक्षित होता है। यों सामान्यतः जैसा काव्य वैभव वैष्णव कवि सूर, तुलसी मीरा आदि में है वैसा इस वाणी में नहीं है किन्तु निर्गुण धारा के अनेक मत-पंथों के संतों की तुलना में इस वाणी की काव्य-सुषमा अधिक आकर्षक है। सुदूर पंजाब प्रान्त में ब्रजभाषा को मेरुदंड बनाकर काव्य सर्जन करने वाले इस पंथ के गुरुओं की वाणी का अभी तक मूल्यांकन नहीं हुआ है। मैं समझता हूं कि काव्य-सौष्ठव तथा भाषा-वैभव की कसौटी पर भी इसका अध्ययन होना चाहिए।

'गुसाईं गुरुवाणी' के अनुशीलन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि बाबा साईंदास की रचनाओं में इसका आधा है, शेष पांच अन्य महानुभावों की रचनाओं में विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त हुए हैं। साईंदास जी विरक्त परम्परा के साधु नहीं थे। उनकी उपासना में गृहस्थ भक्तों को भी पूरा अधिकार था। गुसाईं नरहरिदास जी बाबा साईंदास के आत्मज थे अपने पिता के बाद गुसाईं गद्दी के स्वामी बने और उन्होंने श्रीकृष्ण लीला वर्णन द्वारा अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया। इनके पुत्र काशीदास जी गुसाईं गद्दी के तीसरे महन्त हुए। इन्होंने मोक्ष विषयक पद रचना की है। गुरुस्वरूपदास पद्मापाराम और सोहनदास के सम्बन्ध में वाणी तथा के आधार पर कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती। इनके अतिरिक्त कुछ और भक्तों के नाम भी वाणी में मिलते हैं किन्तु न तो उनकी रचना

प्रभूत मात्रा में है और न उनकी पृथकता ही आलोच्य बनने योग्य है।

'गुसाईं गुरुबानी' के सम्बन्ध में आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व मुझे सूचना मिली थी। भारत विभाजन के बाद इस मत के अनुयायी गुसाईं वृन्द तथा उनके सेवक गुजरांवाला छोड़कर भारत चले आए और उनका पूज्य ग्रंथ पाकिस्तान में ही छूट गया। ग्रंथ की प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति का इस पन्थ के अनुयायियों में उसी प्रकार पूज्यबुद्धि से पाठ होता चला आ रहा था जैसा सिख पंथ के गुरुद्वारों में 'गुरुग्रंथ साहब' का होता है। अतः इस अमूल्य निधि के पाकिस्तान में छूट जाने की वेदना सामान्य नहीं थी। फलतः एक भक्त ने प्राणों की बाजी लगा पाकिस्तान जाकर इस बाणी-ग्रंथ को लाने का संकल्प किया और अपनी निष्ठा-शक्ति से वह इस ग्रंथ को अक्षत रूप में लाने में समर्थ हुआ। जिस समय यह ग्रंथ मुझे दिखाया गया था उस समय तक इसका महत्त्व केवल गुसाईं मत के अनुयायियों तक ही सीमित था। मैंने ग्रन्थ को देखकर अवकाश के दिनों में इसके अध्ययन का वचन दिया था किन्तु न तो मुझे अवकाश मिला और न ग्रंथ के स्वामी को इतना धैर्य रखना संभव हुआ कि अनिश्चित काल तक वे ग्रंथ मेरे पास छोड़ सकें। फलतः अन्य व्यक्तियों के सहयोग से इसका लिप्यन्तरण टंकण तथा बाद में मुद्रण हुआ। मुझे हार्दिक संतोष है कि अब बड़े सुन्दर रूप में गुसाईं श्री ओमप्रकाश जी के प्रयत्न से ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है। भारत-विख्यात विद्वान् डा॰ गोकुलचन्द नारंग इस पंथ के प्रवर्तक की जन्मभूमि के हैं। इस पंथ की उन्हें अच्छी जानकारी है अतः उनके प्राक्कथन ने इस ग्रंथ की उपयोगिता निश्चित की है इसमें कोई सन्देह नहीं।

मैं आशा करता हूं कि 'गुसाईं गुरुबानी' के प्रकाशन से संत-साहित्य की परम्परा में एक नवीन कड़ी जुड़ेगी और संत साधना से अनुराग रखने वाले विद्वानों का ध्यान इस कृति की ओर अवश्य आकृष्ट होगा।

हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
१ जुलाई, १९६४

—विजयेन्द्र स्नातक

विषय-सूची

गुरुबानी पढ़ने की विधि

इस ग्रन्थ का लिप्यन्तरण टंकण अथवा मुद्रण करते समय हमने किसी प्रकार का परिवर्तन करना उचित नहीं समझा। हिन्दी के जिन मूर्धन्य विद्वानों से हम परामर्श प्राप्त कर सके उन का यही मत था कि प्राचीन पाण्डुलिपि यथावत् रूप में ही प्रकाशित होनी चाहिए। अतः मुद्रित रूप में यह ग्रन्थ प्राचीन हस्तलिखित प्रति का अक्षरशः प्रत्यंकन ही है। प्रूफ पढ़ते समय कुछ स्थानों पर जो त्रुटियाँ रह गई हैं उनका निवारण दूसरे संस्करण में सम्भव हो सकेगा।

ग्रन्थ का अध्ययन करते समय पाठक महानुभावों को जहाँ-कहाँ कोई त्रुटि प्रतीत हो वे हमें सूचित करने की कृपा करें। हमारा यत्न होगा कि इस ग्रन्थ का दूसरा संस्करण सब प्रकार की त्रुटियों से मुक्त हो।

जिन सज्जनों को प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अभ्यास नहीं है, उन्हें इस ग्रन्थ का प्रस्तुत रूप में अनुशीलन करते समय थोड़ी-सी असुविधा का अनुभव हो सकता है। उनकी सुविधा के लिए हम निम्नलिखित संकेत दे रहे हैं।

१ कई स्थानों पर ि का अतिरिक्त प्रयोग हुआ है, जैसे

आधुनिक व्यावहारिक रूप	ग्रन्थ में प्रयुक्त रूप
गम्भीर	गंभीरि
पूर्ण	पूरिण
प्रसाद	प्रसादि
प्यास	प्यासि
शरीर	सरीरि
मि	मु

२ जो—इस ग्रन्थ में जहाँ-तहाँ 'जो' का प्रयोग हुआ है पाठकगण उसे 'यो' के रूप में ग्रहण करें।

'कीतो' 'उठिगो' 'लीतो' आदि शब्दों को क्रमशः कीयो उठियो (उठयो) लीयो के रूप में पढ़ा जाए।

३ ष—'ष' का उच्चारण 'ख' किया जाए।

४ ढी— ढी का उच्चारण 'ड़' के समान किया जाए

५. म—कई स्थानों पर 'ग' के स्थान पर 'म' का प्रयोग हुआ है जैसे 'गुरदेव' के स्थान पर मुरदेव।

६ नि—कुछ स्थानों पर 'नहीं' के स्थान पर 'नि' का प्रयोग हुआ है। 'नि' नहीं का संक्षिप्त रूप है।

हस्तलिखित मूलग्रन्थ साहिब के प्रथम पृष्ठ का चित्र

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नम

॥ अथ रतन ज्ञानि लिख्यते[1] ॥

दीनानाथ दयाल प्रभ दुष दूर करने बिसवास।
भौगिनि मेटे गुण करन गुरि पूर्न साईंदासि ॥
बाबा रामानंदि जिस सिमरे होवि अनंदि।
जिह समरनि ते पाईए लक्ष्मी परिमानदि ॥
गुरि नरिहरि पुन सकल करिणा बुधि बिबक।
औरि नहीं कोई आसरा एक तुम्हारी टेक ॥
गुरि कांधीदासि के दर्स कों सुरि नरि धर ध्यान।
मनि की देत है वांछना पूर्न पुर्ष निधान ॥
बिहारीदास कविस गुरि भेटया मिटि गए सकल विकार।
चमचंदि गुर चर्न लगि भौजलि उतिरे पारि ॥
सलोकु[2]—ग्यानि रतन जपि जी पढ सुनते मुक्त सिधाहु।
साइदास गुरि चर्न लगि भ्रम भौ जस्मि तिस नाहि ॥

---

१ अथ रतन ज्ञानि लिख्यते—रतन ज्ञानि बाबा साईंदास जी की रचना है। इसलिए "अथ रतन ज्ञानि लिख्यते" यहां से बाबा साईंदास जी की वाणी समझी जाएगी किन्तु यहां "दीनानाथ दयाल प्रभ दुख दूर करन बिसवास" से लेकर "चमचदि गुरचर्न लगि भौजलि उतिरे पारि" तक बाबा साईंदास जी की वाणी नहीं है। वस्तुतः यह गुसाईंयों की "अरदास" (प्रार्थना) है। इस में—साईंदास उनके गुरु रामानन्द नरहरि तथा परवर्ती गुरु कान्धी दास बिहारीदास और चमचन्द आदि को नमस्कार किया है। इसके अनन्तर ज्ञानरतन का प्रारम्भ है।

२ सलोकु—यह श्लोक का अपभ्रंश है। यह हिन्दी का दोहा छन्द है। रचना के प्रारंभ में इसी श्लोक या दोहा का प्रयोग है। अनन्तर २ अर्धालियों या ४ चौपाइयों के प्रयोग के बाद दोहा या श्लोक मिलता है। ज्ञानरतन की रचना इसी रूप में प्राप्त है।

भोकारि सम भपर भपार। सम रचना सोई रावनिहार॥
सुति शास्त्र सिमृति वर्नं बेप। सभ भौरे भौरे पूछ देप॥
पूछ्या सुने सुनयो मन लेइ। तांको सतिगुर परिचा देइ॥
परिच भी मनि कौं परितीति। तवहू टूटे मर्म की भीति॥
पगि नगि जगि मगि होइ रह्यो इह मनुभा मनि पोह।
साईंदास गुरि बन गगि मत्ति तजि निर्मल होइ॥
भूपमि सुर्त बिचार के भानदि मगिन भयति।
कहु नरिश्रुरि गुरि कृपा ते पसरी किम मनति॥
भलप भगम्य भगाघ प्रभि सुरि नरि जाकी सेव।
भनदि मैं मस्तक धर्‌यो श्री बर्न कवित्त गुरि देवि[1]॥

३

गुरि बर्नी मति चित वनि राषी। ताते सुनि भ्रोपत की साषी॥
गुरि बर्नी राता प्रह्लादि। पिता सग कीनो उपिवादि॥
नारदमुनि का राख्यो मान। गुरि बर्नी पावन परिवान॥
गुरिगोविंद से माही भद। पूछा शास्त्र सिमृत बेद॥
सभ सभ मीष ऊंचा तेरा नाम। गुरि बिनि कौनि बतावै थाउ॥
थाउ लहे बरि ठाक न पावे। मिस रहे बिछुर्‌या नहीं जावे॥
मिलना हो सतिगुरि की दात। साइदास फरि जनम न जाति॥
भस्थावर जगम सभ सर्व म्यापी ताहु।
साइंदास नाम भनेक भनदि गुनि जपि जपि सवि सराहु[2]॥

४

तेरे नाम सो तुही भनंता। मंतु ना पावे बकिता बंता[3]॥
दीनानाथ नाथन को दाता। भीमोहिन मनि हिन करि जाता॥
भपनामन गोपाल गोसाई। मम म पूर राखा सभ थाई॥

---

१ भनदि मैं मस्तक धर्‌यो श्री बर्न कवित्त गुरि देवि—यहां से "गुरु महिमा" वर्णन प्रारम्भ है।

२ साईंदास नाम भनेक भनदि गुनि—यहां से एक ही प्रभु के भनेक नामों का वर्णन है।

३ बकिताबंता—बोला या बकिता शब्द बक्ता के अपभ्रंश है। बकताबंता बकिता बना।

बिष्णु रूप धर्नी धार्ने । करुणासिंध सबै करि तारन ॥
तू करिता कर्नेहारि अबिनाशी । कबिल ब्रह्म तू सर्बनिवासी ॥
निर्भौ निरंजन निरंकार । नाम न अन्त अन्त नही पार ॥
प्रभ कृपाल पूर्न धीधारी । गर्ब देन प्रभ गर्ब प्रहारी ॥
अमिय पूर्ण पवना का पावन । नारसिंघ परसराम भरि बावन ॥
राम कृष्ण गोबिंद बनिधारी । जुगि जीवनि गोवर्धन धारी ॥
तार्ने तर्ने सरन जगि तार्ने । भगित निधानि सो मानि निवार्ने ॥
गोबिंद केशवि सतम सुखिनाई । जुगि जुगि जोति मुरारिवराई[1] ॥
कर्म धर्म समाहं[2] रहता । साईंदास प्रभ रूपि बिधंता ॥
तीनि ताप तन को भए भाखि उपाय बिभाय ।
साईंदास जिह्वे पाईए परमपद सो उत्तम दर्सनिसाध[3] ॥

५

दरसन ते उपजै भनि बुद्धि । दर्सन ते तनि होवे सुद्धि ॥
दरसन ते मैल मन ते जाइ । दर्सन खोटा बहुर न थाइ ॥
दर्सन शिव साध बैरागी । दर्सन ते दुरमत उठ भागी ॥
दर्सन सिद्ध साध सतोष । दर्सन ते तनि रहे निर्दोष ॥
दर्सन धूप भूप को नास । दर्सन मुक्त परापत बास ॥
दर्सन होइ भगत की प्रीति । दर्सनि ते दुरमति मिल जीत ॥
दर्सन ते बिगसे घटि अम्बा । दर्सन ते मनि होइ अनंदा ॥
दर्सन पर्सन प्रेम रस जि पूरण बडि भागि ।
साईंदास प्यास मिल रहित होय अनिरागि ॥
नरहरि नाम न बीसरे सदा साध के संग ।
रसना रसीए राम रस और न भावे रंग ॥

---

१ मुरारिवराई < मुरारवराय—श्रीकृष्ण भगवान् का नाम ।
२ 'सम भाई'—होना चाहिए (लिपिकार से 'म' छूट गया है)
३ साईंदास जिससे पाईए परमपद सो उत्तम दर्शन साध—यहाँ से साधु दर्शन की महिमा का वर्णन है ।

असपकोटि ब्रह्मंडि मै सर्ब निरन्तर सोइ ।
साइंदास जिह किह तित जानिआ तुझ बिनु अउरि नि कोइ[1] ॥

६

तू कर्ता तुझ बिनु नहीं कोई । सर्ब निरन्तरि असमा सोई ॥
आपे करि करि आप करावै । आपे मति आपे मरिमावै ॥
आपे मुनी ज्ञानी आप । आपे देवो आपो थाप ॥
आपे धम कर्म वीचारी । सभ मै अपुनी जोत पसारी ॥
जागि जुगत जाग जुगितोई । एको नामु सहसी नाई ॥
जिन जान्या तिना हरि सिव साई । तेऊ नई जिन्हा दरो वडिआई ॥
हरि की बात होय दरिबान । कागत फार भरे परिवान ॥
पर परिवान तो उपिजे सांति । साईंदास फिर जनिम न जात ॥
जोग जुगत अर ज्ञान तावे सहिज समाधी होइ[3] ।
साईंदास उलिट पलिट का पलना विर्ला चीन्हे कोइ ॥
वडि भागी हरि रस जानिआ छाडि क्रोध अर काम ।
साईंदास अष्टधाति सभु यगिस[4] है पारस हरि को नामु ॥

७

जपि तपि संजम कर्म ध्यान । सभ ते ऊंचा तेरा नाम ॥
नाम जपत गज गनका तारयो । नाम जपति प्रहलादि उधारयो ॥
सुति हित नाम अजामल लीना । नाम जपति ध्रू निहचल कीना ॥
नाम जपति नृप कन्या तरी । पनी दंत विप प्रगिट पुकरी ॥

---

१ सर्वत्र एक ही तत्व की प्रधानता है। आगे की पंक्तियों में इसी विषय का प्रतिपादन किया गया है।

२ सभ मैं अपनी जोत पसारी—जड़चेतन में इसी की ज्योति का प्रसार है। गुरु नानकदेव से तुलनीय—जानि महि जोत जोतमहि जान।

३ जोग जुगत अर ज्ञानतै सहज समाधी होई। बाबा साईंदास सहज समाधि के लिए दो बातों को प्रधानता देते हैं—योग युक्ति और ज्ञान।

४ जगित < जगत्।

५ यह संसार अष्टधातु के समान है और हरि का नाम पारस है जिससे ये अष्टधातुएं भी कंचन बन जाती हैं। यहां से नाम की महिमा का वर्णन प्रारम्भ है।

अंतु न पावे अगितगुर हरि जी अगम अगाहि।
दुखिआरै केती पत्री करिती सिफत सलाह[1]॥

६

केते बेद ब्रह्मे मुख गांव। हरि जी तेरा अंतु न पावे॥
केते धारहि धरे धयान। केते बिसन[2] पड़ति निधान॥
केते इंद्रासन सुरि इंद्र। केते वासक सेस फुनेन्द्र॥
केते जोगी धियान लगावे। केते सुरि किंनरि गुनि गावे॥
केते असुरि खड़े दुआरि। अंतु न पावे अलिप अपारि॥
केते रंगरूप बहु भेष। केते दरि दरि बांनी सेष॥
केते धम करम बिचारी। कागिद मसि केते लेषारी॥
साति सिंध करियों मसि बाणी। कागति धर्न गगन का बाणी॥
भारि अठारा लिख्यन लाए। एहु थोड़े बहु गुनि अधिकाये[4]॥
जो लिखिए सो हरि का रंगु। दसम होइ साध के संग॥
सम भतिर भ्रम तेरी बासु। ज्ञानि रतन चीन्हे साइदास॥

मातनि गरियों गर्व मैं ना हरि मजिलि पिआस।
जननी गर्भ किस राखयों पोटि बाँधि दस मास॥

---

१ यहाँ मूल ग्रंथ में शब्द 'दखिआरै' है पर उपयुक्त 'दुखिआरै' ही लगा। हरि के द्वार पर कई उसकी अगाध महिमा को गा रहे हैं। पर कोई भी उसका अंत नहीं पा सका। यहाँ 'सिफत सलाह'—ये शब्द फारसी के हैं। प्रशंसा और गुणवर्णन करना इनका अर्थ है।

२ 'बिसन' यह शब्द विष्णु है इसे प्राचीनकाल में 'ष' को इस रूप में लिखा जाता रहा है।

३ सात सिंधु ही स्याही बनाऊँ धरती तथा आकाश को कागज और सभी अठारह भारयुक्त वनराशि को लेखनी बनाऊँ तो भी प्रभु गुण लिखे नहीं जा सकते। तुलनीय—

कबीर सात समंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ।
बसुधा कागदु जउ करउ हरिजसु लिखनु न जाइ॥
संतकबीर सलोकु—८१ (डॉ० रामकुमार वर्मा)

४ यहाँ से प्रभु के गुणों का वर्णन है तथा प्रभु को भूलकर संसार में लगे जीवों को चेतावनी दी है।

१०

मैं औगिनहारि कोई गुनि नाही। हरि हिरदे ते किउ विसराही॥
तांका नामु नहीं किउ भाख्यो। अगनि कुंड ते जिन प्रभ राख्यो॥
जिउ तबोली राषे पान। इउ तू राषे गुणनिधान॥
तेरा कौन सहाई वाला। जिन गर्भ बीच करि प्रतिपाला॥
नैन नासका श्रविण बणायों। मुषि बोलति बहु साद लडायों॥
करि धरि चर्न गही पग धारे। नषि शिखिरेष सा रोम सवारे॥
जीविन नाम मर्न के ताई। गर्भे भवर जपे गुसाईं॥
गर्भते निकस आयों संसार। हरि भुनि बैठा मूड विसार॥
माया मुष लागी अति मीठी। नेत्री सुर्त पसार्न डीठी॥
रच रहआ अति दुष के स्वादि। बासा अमिम गवायों बादि॥
सार्इदास नाम हरि बेति। भी मनि छूटे नाम के हेति॥
रे बाल काल सरि सोषयों मिर्ग भयों इहु जीय।
अविषम सो विसवास क्या सा मागो जो कीय॥

११

माता पिता भाई सगि बेला। धर्म न सूझे भयो जगि मेला॥
दारा सुतु सो मोह बधायों। भनि भरि धाम देष बहुरायों॥
ममि ममममि मु सोए जाता। बडी बास भव नदि माता॥
नही सूझति कोई मीति न भाई। होमै भनु मति बडी वडिआई॥
राजछत्र चविर सिरि झूला। मनि अभिमान देष करि भूला॥
रे सेर भूमि बिन सकल बिराम। इहु तुम बान लेहु सुनि काना॥
सेति मिले बग उडिर कागा। जोबिन देप देह ते भागा॥
पिछरि केस भए अधिकारी। जूमा षेलति बाजी हारी॥
कबिहू बेति अचेत मनि चूपे अमिम नि षोइ।
पछतावा पाछे रहो दास बोल किति रोइ॥
जिउ बानो तिब ही करों अति कति समरस सार।
साईंदासि नाम हीनि गुनि बाहरा ध्रिग जीवनि संसारि॥
अनाथ जी सम तुम कीए तुम किउ बिम हुये अनाथ।
बर्न नि साको मात्रिकी तेरी कथा अगाधि॥

भापि भापि ते साजि के न्याजि करी बहु भाति।
निभाज विराज पद्यान के सम एक पुप की दाति[1]॥

१२

पून पूरे सम विचारी। कोऊ दाता कोऊ दीन भिपारी॥
कोऊ भूपत को ठाढे द्वारि। कोऊ छत्रपति कोऊ ऊपर ढालि॥
कोऊ प्रस्व गज रथ के ऊपरि चढ़िते। कोऊ उनि के भागे पाएी भरिते॥
कोऊ पहिरे कोऊ उतारे। इक पाएी सेती चर्न पपारे॥
इक पये सेती पौए भुलावै। इकि दुकड़े मगि मंगि भोजन पावै॥
इकि दाते देनहारि प्रभ कीने। इक भ्रातम परिमातम चीन्हे॥
इक जोगी इक जगम ध्यानी। इकि मुनि सिद्ध साध इक ग्यानी॥
इक जटि मुंडि जती सन्यासी। इक तीथ भ्रमत फरित बनिवासी॥
इक मौनी नगिन फरे दगबिर। इकि भगवे करि करि पहिरे अंबिरि॥
केऊ ब्रह्मचर्य केऊ ब्रह्मचारी। कोऊ निहस्वादी कोऊ पौन भहारी॥
कोऊ तपि ध्यामि पटि शास्त्र बकिते। कोऊ पटि कर्म जुगित सो रहते॥
इकि घोती सजम रहसि सुचील। इकि होति प्रसोष सदा जु कुचीलं॥
सुप प्रसुख तुमते नही दूरं। सम मह तुही रहया भरि पूरं॥
सर्व संगि प्रभ कीयो निवास। इहि विष चाचे साईदासि॥
भौगिन राचे गुनि तजे या मनि छठे गवारि।
माइग्रों एक छिन पलक म काल लेत करि वारि॥

१३

तेरा कीघा सम बिमाल तू किसि ना कीघा।
सम से माह बरतिमा जलि थलि जो जीघा॥
जेते जलि थमि जीवि समानं। जेता जा को तेता माने॥
जाको बाघ घाट नहीं देति। पून पूर पूर सम सत॥
मम ही भऊरे तुम ही पूरा। बाज बाजि के फाटे तूरा॥
बाजे फूले रे भम्रा रहे बजावित हारि।
बहुडि बजावे थिर रहे साईदास एक बिमा सम छारि॥

---

१ प्रभु की कृपा के कारण अनेक प्रकार की रचना हुई है। उसी एक पुरुष की सबको देन है। सभी में वही एक पूर्ण है। रूप रूप मलग-भलग है। कोई भी हीन नहीं और कोई भी अपूर्ण नहीं। "पूर्ण पूरे सम बिचारी।"

प्रगिटि चिह्न दिपत्रावनि लागा। राग द्वेष परियों अनिरागा।
झीणा ठा मनि मैं¹ मिले विन अविनि सुन ध्यान।
साईंदास नैन विना जो देषना गुप्तचिह्नि परिवान॥
बिनु देहा ध्यावित रहे विन धुनि धरे ध्यान।
साइदास तवि जानीए ठौडि विना निशान॥
बिमल सरोवरि मनि वसे अनिमै अगिम अपारि।
साईंदास सतिगुरि ही ते जानीए सतिपदि को विवहारि॥

१६

अगम गम्य की कहूज सुनावे। समझ पड कछु कहिन नि आवे॥
कहिन सुनिन ते भया निआरा। सहिज समाय सदा जु युआरा॥
अलिमस्ती लिव लागी जाको। जम जजाल करे क्या ताको॥
बंधन छूटे मुक्त पसौना। घटि सूरि मिल पौन विसौना॥
जाका सीस सोई हो रहया। साईंदास कछु जाय नि कहया॥
सम का दावा धरत है साहुब अलप अमवि।
साईंदास जिनि प्रेम अपना जानआ सोई साध गुरुदेवि॥

१७

सभ को सेवक साध कहावे। सा सेविक जो साहबि भावे॥
साहिबि जागे सेवक सावे। आपनि कहा जु नौरि विसोवे॥
साईं सुत सबिद जो लागी। तत्त विचार भयो वैरागी॥
तवि आत्मा जवि चेतन भया। प्रगिटी जोति तिमर नस गिया॥
अमिहृदि मिल आनन्द हुआ। साइदास तवि जीवित मूआ²॥

---

१ झीणा ठा मनि मैं मिले—यहाँ झीण = अगम ठा = स्थान अर्थात् घट (शरीर) में ही ब्रह्म की प्राप्ति मानी है। उसमें दिव्य संगीत सुनाई देता है। वहाँ विदेह की स्थिति है। वहाँ इन इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं है। इन इन्द्रियों से परमात्मा का दर्शन नहीं होता। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को विराट् रूप दिखाने से पूर्व दिव्य दृष्टि प्रदान की—

दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्॥ —गीता ११-८

२ साइदास जीवित मूआ—साधक का सर्वोत्तम लक्षण है कि वह जीते हुए भी मृत है। जो संसार से लिप्त है वह जीवित है जो अलिप्त है वह मृत के समान है

साहिबु एक अनंत गुनि गिनिति न आवै मोह।
कोटि रसना सौं जपु करौं अंतु न पावै तोहि॥

१४

गुनि अनेक हेरे रूप अनंता। नामि बिपति सो केम अंता॥
अगम अगम्य बिरलें को पावे। जाको सति गुरि बूझ बुझावे[1]॥
बूझ पड़े परिम सुप हाम। तुरीआ ततिकों बूझे कोय[2]॥
अति बिसमाद आत्म रस जाना। अनूपा उलटियां मनि मांहि समाना॥
मन अरि ब्रह्म एक जबि भैया[3]। प्रगटी जोत तिमरि नस गिया॥
पिंड पद ब्रह्मण्ड सु सीना। सुन्न सबिद अपिठी अपतीना॥
आतम भेद परिखा भैया। धिधि नगरी म बास लिया॥
तस अबिद अनेक अनहद बानी। गुनि-गुनि सबिद सो सुर्त पछानी॥
नाम निरंजणि ह्रांति प्रकाश। इहि बिधि जपि साइदास॥

साखि अन्त को आरना करिना बुद्धि विवेक।
ध्यानि ध्यामि सम हरि रहे पसरी किर्म अनेक॥
रजि तम सातक तीन गुनि चौथे पद[4] अमसानि।
सिव भागी पुनि जहां ते साईंदास तहां समाने आनि॥

१५

अब गुनि अकथ पदि चौथ अलिसाना। तुरीआ तत में आइ समाना।
निहि कविन जसि बुनिकी पाई। भ्रम बाहिर तहां पियों बसाई॥

---

१ अगम अगम्य बिरलो पावै—वह परमात्मा अगम्य है किसी बिरले को ही गम्य है अर्थात् उसका ज्ञान होता है जिसे—'जाको सतिगुर बूझ बुझावे।' यहाँ 'गुरु' के महत्त्व का स्पष्ट उल्लेख है।

२ तुरीआ तत—तुरीय तत्त्व चतुर्थ तत्त्व ब्रह्म है। शेष तीन हैं——जागृति स्वप्न सुषुप्ति।

३ जीव और ब्रह्म के ऐक्यभाव का यहाँ वर्णन है। तादात्म्य होते ही एक ज्योति (ज्ञान की ज्योति) प्रगट हुई जिससे अन्धकार (अज्ञान) नष्ट हो गया।

४ चौथे पद अमसानि अर्थात् 'सायुज्य' मुक्ति होने पर रज तम सात्त्विक तीनों गुणों से रहित होना पड़ता है। कारण निर्गुण (गुणों से रहित) ब्रह्म मे मिलने के लिए जीव का भी निर्गुण (इन तीनों गुणों से रहित) होना पड़ता है।

प्रगिटि चिह्न दिपलाविन लागा। राग द्वेष परियों अनिरागा।
भौना ठा अनि म[1] मिले विन अविनि सुन घ्यान।
साईंदास नैन विना जो देयना गुप्तचिह्ननि परिवान॥
विनु देह्या ध्यावित रहे बिन धुनि धरे घ्यान।
साईंदास तवि जानीए ठौडि बिना निशान॥
विमल सरोवरि मनि बसे अनिम अगिम अपारि।
साईंदास सतिगुरि ही ते जानीए सतिपदि को विवहारि॥

१६

अगम गम्य की कहुअ सुनावे। समझ पडे कछु कहिन नि आवै॥
कहिन सुनिन ते भया निआरा। सहिज समाध सदा जु धुमारा॥
अभिमस्ती लिव लागी जांको। जम जजाल करे क्या ताको॥
बधन छूटे मुक्त घलौना। धवि सूरि मिल पौन विनौना॥
जांका सीस सोई हो रह्या। साईंदास कछु जाय नि कह्या॥
सम का दाता धरत है साहुब अलय अभवि।
साईंदास जिनि प्रेम अपना जानआ सोई साध गुरुदेवि॥

१७

सभ को सेवक साध कहावे। सो सेविक जो साहवि भावे॥
साहिवि जागे सेवक सोवे। मायनि कह्या जु नोरि बिलोवे॥
साईं सुर्त सविद जो लागी। सत्त विचार भयो वैरागी॥
तवि जान्या अवि चेतन भया। प्रगिटी जोति तिमर नस गिया॥
अनिहृदि मिल आनन्द हुआ। साईंदास तवि जीवित मूआ[2]॥

---

१ मौना ठा अनि में मिले—यहां मौन = मधन ठा = स्थान अर्थात् घट (शरीर) में ही ब्रह्म की प्राप्ति मानी है। उसमे दिव्य सगीत सुनाई देता है। वहा विदेह की स्थिति है। वहा इन इन्द्रियों की आवश्यकता नही है। इन इन्द्रियों से परमात्मा का दर्शन नही होता। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को विराट् रूप दिखाने से पूर्व दिव्य दृष्टि प्रदान की—

"दिव्यं ददामि ते चक्षु पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ —गीता ११-८

२ साईंदास जीवित मुआ—साधक का सर्वोत्तम लक्षण है कि वह जीते हुए भी मृत है। जो ससार से लिप्त है वह जीवित है जो अलिप्त है वह मृत के समान है

सलोक—जागृति सुपन सुषोपती। सतिगुर मेटो तीनि ॥
तुरिया तति बिसरम न करौं सारि सबद महौ चिह्न ॥
जिहि ते पाइ परिमपद सो गुरि दीयौं बताइ ।
धरि धियान अवि निकमल पद नापै बस माई ॥
जो रसीआ इहु रसि मिले बिछुड़्या कबहु न जाइ ।
सतिगुर ऐसा चाहिए जो दुमता देत मिटाइ[1] ॥

१८

जोगी प्रान पुर्य जब भया[2]। गुटिका पौन सग ते लिया ॥
निज अबिनन में आसन कीना। सभ्या कूली धूज मयम कीना ॥
मिहिकेवल वधि वडू आधारया। जुगति उठानी सीस पिचारया ॥
सबमुद्रा करि मन पहिराई। त्रिकुटी समि त्रिवी दिपसाई ॥
द्वादिसमपाली दसवे द्वारि। पीवै पौनि अंमृत की भारि ॥
अनहदि सबदि किंगरी बाजे। सिंगी सुरति सदा धुनि गाजे ॥
मनि मकरम भयो जु बिचारा। निर्भौ नगरी का इहु बिवहारा ॥
प्राप्त संतोष सुषम कम पाया। साईंदास इमिविधि जोगी जोगु कमाया ॥
सलोक—बसुधा पिगरि नाम बीज रे मनि साईंदास ।
कीर्तयबिनी निद्रा नाम कौं धामु भेंची दैपममा ॥
करि परिदाने गवन कौं सीस संतोष सरीरि ।
साईंदास मुनि वन जमति के ऊपरे पविम जिवे ही नीरि ॥[3]

१६

ज्ञानी गुनी जोगी बैरागी। जुगि-जुगि जिनकौं ताड़ी लागि ॥
जिनकौं माया हरि का रमि। ते भासे साधु का सगि ॥
साध सगि मिम प्रगिटी लोइ[4]। पारिस भेटिआ कंचिन होइ ॥
कचनि होइ सकम भ्रम भाग। घये मिसै फिर धंदै[5] न लागै ॥

---

१ दुख का नाशक—द्विविधा (दुमता) का मिटानेवाला हो ।

२ जोगी जब प्राण पुरुष बन जाता है अर्थात् साधक जब ब्रह्ममय हो जाता है उस दशा का रूपक द्रष्टव्य है।

३ अभिन्न दशा—'समत्वमित्यात्मरत'—गीता ५ १

४ लोई—ज्योति (उजाला) की।

५ धंदै—धूल (मायाजाल)

सचु पाई से सूचा हूआ। हिर्दै अंदरि न जाने दूआ॥
एक रंगि एको घरि बास। ज्ञानी रतनि चीन्हु साईंदास॥
सलोकु—कचुसु काला रे मना जगु कजिल थी न किरठि।
मैं भी अंदिर कज्जल इकि होर भी पीदे डिठे॥
इक पै इक पेड़ निकसे तेरे नाम सगि-सगि तजि-तजि भूपत राजि।
अंदि कछु करिए साईदास पलिके विनसे काज॥
पलिकें अंदिर पलिक है जो इक भाई गज।
अनिम पदाथ पोइयो पिड़ पड़िहै जगि अध॥
पढ़िने नू मतु दोस दे वेदि अकारित सचु'।
साईंदास पल्है पिआ अमिवेनीया कंचन थीआ कचु॥

२०

मनि करि नाथ पच करि चेला[१]। सहिज मदान सदा घरि पेला॥
एक ध्यानि त्रिगुण अतीति। ताका नामु कहो रणजीत॥
मनि रणजीते आश्रम करे। हीआ छाडि सु जीवत मरे॥
जीवित मरे[३] मिले ब्रह्मग्यानी। साईंदास सोई ब्रह्मज्ञानी॥
सलोकु—जोगजुगति अरि ज्ञानि गुन सहज समाधी होय।
साईंदास उलिटि पलटि का देखणा विरला चीन्हे कोई॥

२१

दयाधर्म दया वीचार। मुद्रा मौनी जीम अहार॥
षटिरस स्वादि ज्ञान करि नसे। सम मनि भैसा दुमंत नसे॥
भाउ बभूति अगि जवि लागी। तति कहीए मनि वैरागी॥
नादि बिंद राप इकि ठौरा। अमिते मानें कासे औरा॥
चंचल मनि का मारे मानि[४]। कहु साईंदास जोगी परिवानु॥

---

१ आलस मूठे नहीं—गुरुनानक कबीर आदि के भी यही विचार।
२ मन को नाथ (गुरु) बनाओ पंचेन्द्रियों को उसका शिष्य (अधीन करो)
३ जीवित मरना ही—ब्रह्मज्ञानी का लक्षण।
४ चंचल मन को नियंत्रित करना— चंचल हि मन कृष्ण गीता ६ ३४।
साधना में चंचल मन को नियमित करना आवश्यक है।

सलोकु—साम्र सहित समाधि में छिति मिस सास्त्र दृरति।
साईंदास मध्यम पीवे आपणी सम ते ऊषा दिसति॥

२२

जोगि जुगति[1] मैन गुरि ते पाई। मिटि गिया भ्रम दूसरा भाई॥
रोकया मूल बिछ का पेटु। जो दस ऊपरि राख पेल॥
नाडा उत्त मूल नवि आम्या। चतुर्दस छीन पटिदलि ठहिरान्या॥
अष्ट कंविल दस पौना जाई। सुषम कुंडिली रहयो समाई॥
रोकया सूर साम गृह धाइया। साईंदास पवि गुरुते पाया॥

सलोक—सभे नाती कुबीया तेरी चाहू मनाति।
तू वरि इको जेहवा मुझे नाही जाति॥
जाती को बरजमि परी किस पम करौं पुकार।
नाम उधारे प्रभ पापा के कंइ मारि॥

२३

समिकन्त पप्प की चास अपर्सी[2]। तमि अपर्स होवे समदर्शी॥
लोभ मोह की तोडे फासी। ताकी थिष्ट सकल होय दासी॥
चर्न दिष्ट ते राख नयना। झूठे कबिहू मि बोल बना॥
आरम ते परिमात्म जाने। हरि का मार्ग तांकी पछाने॥
सील सजम जुगत सो रहे। इंद्री पंच आत्मा गहे॥
साईंदास अपर्स कहावन। जो पापा के निर्कटि नि आवन॥

---

१ जोग जुगति और ज्ञान—ये दो सहज समाधि के साधन हैं। यहाँ जोगयुक्तियों का वर्णन है।

२ अपर्स—स्थित प्रज्ञ का लक्षण। वह योग युक्तियों के बिना भी मुक्त हो सकता है। समदर्शी बन सकता है। उसी का वर्णन यहाँ से प्रारम्भ है—
(क) लोभ मोह से रहित होना।
(ख) नीची नजर (चरणों पर दृष्टि)
"दृष्टिपूतं न्यसेत् पादम्" मनुस्मृति।
(ग) सत्यभाषण।
(घ) शील सहज तथा युक्ति से रहना।
(ङ) पञ्चेन्द्रिया तथा मन को वश करें।

सलोकु—जलि थलि मै जो जीमि है सभ तिहारी भास¹।
भाणे भवरि पाईए सुप सुप भोगि विलास॥

२४

भाणे चले पौण भरि पाणी। भाणे बोल अनिहदि बाणी॥
भाणे सूरय भाण सुरता। भाणे नरिकी भाणे मुकता॥
भाणे राज भाणे मुहिपाज। भाणे सर्व सवारे काज॥
भाणे चले अचल होय भाणे। भाणे कर्म अकर्म कमाणे॥
जनिम पाइ ते कहा कमाणा। जो कछु होय सो तेरा भाणा॥
साइदास प्रभ जपिए ईस। जा कछु करे सोई जगिदीसि॥
सलोकु—रचना राची अगम प्रभ धौल धर्म अकास।
जागृति सोवित सुप सुपी भाणे अंतिर सास॥

२५

भाणे मौन रचे ब्रहिमंडि। भाणे सप्त दीप नौपंडि॥
भाणे समिता सिध सवारे। भाणे थमि डुगर² बीचारे॥
भाणे धौल धरे सिर भार। तिस ते परे तुही निरकार॥
भाणे भानि चले करि जोत। भाणे अंतिर ससकी योति॥
भाण नक्षत्र की मास। तिस ते परे तेरी टगिसास॥
तेरा कौनु सरीकु समरथ है कौन। तूं मेटे प्रभ आवा गौन॥
साईदास प्रभ जपीए ईस। जो कछु करे सोई जगिदीस॥
राम नाम हरि सिमरीए मुपि से वारंवार³।
साईदास गुर कृपा ते मनि के मिटे विकारि॥
सप्तदीप नौपंडि मै परिदक्षनि जो देइ।
साईदास समसरि नाही हरिभजिन जो एक बारि कहि लेय॥

---

१ मुक्ति मिलना नरकों में जाना सभी कुछ परमात्मा की इच्छा (कृपा) 'भाणा' पर निर्भर है। इसीका वर्णन यहां से प्रारम्भ है।

२ डोंगर < डुगर < दुर्गम स्थान (पर्वतीय प्रदेश)

३ रामनाम का स्मरण और गुरुकृपा दो ही साधन मुक्ति के हैं। यहां से अब केवल नाम की महिमा का प्रारम्भ है।

२६

जो प्रथिवी सकल प्रदछनि देय। मकर प्राग कासिवसि सिर सेय॥
जीवित बहुत देत जो प्राना। उर्द्धपाउ सो धरै धियाना॥
कोटि धनिम बृछ सो रहै। इही पंथ आतमा गहै॥
एक पलिक हरि सिमरनि कीजै। ता सम सरि कछु अवर न दीजै॥
कोटि असुमेध यग्य जो कीजै। तुल्हापुरष दान करि दीज॥
सिहजा भूम दान जो करै। से बुधिकी मनि काम न सरै॥
जिहि स्वादी नहीं पावै स्वादि। तजिए धनि सम बादविबाद॥
बोलनि छाडि मौन धरि जांह। भी हरि सिमरणि समसर नाह॥
कम करै शिव द्वादस बारा। प्राग देत जहाँ हैहि मझारि।
जोगि जुगित सो राखै ध्यान। पांच भूत का मार मान॥
रेचक पूरक कुंभक साधै। वाउ पच अगनि तटि बांधै॥
उलटि पौन षटि चक को भेदी। अगिन समाध सो भेदि बिभेदी॥
नो धरि राक दसवै धरि जाहू। भी हरि सिमरनि सम सर नाहू॥
बाधि जटा बभूति चढावै। गय जमनि बिच सुरसुरी नावै॥
अंबिरि छाडि दिगंबर होवै। निद्रा जोपि ध्यानि मैं सोवै॥
पीवै पवन सहज धर पानी। अकस गगम चढा बैबानी[1]॥
तासाकसी की गति जाने। अतिर ध्यान साग मनि माने॥
मूड मुडाय होत बैरागी। भिषा भिषा सकली त्यागी॥
तीरथ कोट सकल अरिमाहू[2]। भी हरि सिमरनि समसर नाहू॥
साधै पचअगनि बैकाल। जलि तपि सीत करे परिजाल॥
दिपर धोब हूमनि की धारा। दयाहीनि मनि भ्रमे बिकारा॥
करि पपडि चढावै देहू। बिन बिबेक किउ दहै देहू॥
मनि बच कर्म साध धरि रहै। जैसा हिर्दै तैसा कहै॥
बचनि मुक्त हो जायगो प्रानी। मिटै बियोगि सहजि सिव ठानी॥
जिस सतिगुरि ऐसी मति पावै। तौ धाईदास फिर जनिमन आवै॥

---

१ बैबानी < बिमानी = जहाज।

२ अरिमाहू = भ्रमण किये।

भये निहारे नेम दो रसना पीविम पीव।
साँईदास प्रकास प्याले[1] क्या भ्रमे त भंतिर नरि पीव॥

२७

सो ज्ञानी सो पुर्ष कहावे। हौमें जस विष घर्ते म पावे॥
त्रिगुण मतीत रहे लिवि लाइ। भ्रातम मेटे तौ भ्रम जाइ॥
सभ भ्रातम मैं एको देखा। लपी नि याइ भ्रमिप तेरी सेवा॥
सो सेवक साचा परिवान। जिस के रिदे वसे भगिवानि॥
भय से भक्त भर्म को नास। इहि विष जाचे साईंदास॥
नाविन मैस सो उतरे मसन[2] न उजिल होय।
साईंदास यहि प्रर्वत ससार मनि विवेक मल धोय॥

२८

नाविए[3] सीस सुजती को संसारी को दान।
छत्री नाविए वचनि को सतोप बिप्र को जान॥
राजा नाविए नीति को स्त्री को नाविए लाजि।
भय करि नाविप मुक्त को भ्रपिष्टा परि काज॥
जोगी नाविए जुगत को सन्यासी निरबष।
जुगति न जाणे जोग की किति विष पावे भ्रषि॥
सुर्त विवेकी वासना सजम धरता ध्यान।
साईंदास नावे ता नामु सभाम लय इति विध करो स्नान॥
सलोक—हौमैं चिता जगत को मोह माया जंजाल।
साईंदास साति सहज घरि पीविना भ्रंमृति नाम निहार॥

२९

नावे सचि ज्ञानी सूरा भुरि मति मिले ते नाविए पूरा।
सति सजम भरि सीस विचारे, रिदे ध्याम दुष्टां को मारे॥

---

१ प्याले <पाताम।

२. मसन <मलिन — मैला।

३ नाविम <स्नान (नौपा पजाबी शब्द) यहां बाह्यस्नान को शारीरिक पवित्रता का द्योतक माना है। मानसिक पवित्रता के के लिए प्रत्येक व्यक्ति का अपने कम क्षेत्र में भ्रमण-भ्रमय रूप है। पतिकास्नान-शीलहै। संसारीका दान है। इसी प्रकार भागे वर्णन है।

साध संगि सो धरे धियान साँति से सहज सों मनि मान ।
मछरि नजिरी गुर बचिन मनि बबेक सधु पाय ।
नहीं बंधमि साँकों साईंदास जीवन मुक्त सिधाय ॥
सलोक—मर्म न जाइ भगति बिन मुकति नाही भीति ।
मोंह् निट रखे साईंदास जो कछु कीन्हि मकीति ॥
मकीसि म कवि हू माभिही कीये न मनि किति जाह ।
साईंदास कीति मकीत दोऊ मिटै हरि सनीं जवि पाह ॥

२

धिधि दर्सन की सुर्त समावे । साँति कसा तवि मनूमा पावै ॥
मीतस भया चक्ति बिम जाय । धिधि सोभा इस विध से पाय ॥
सहजे धावे सहजे जाइ । सहजे बोले सहिजे पाइ ॥
सहजे जागे सहजे सोवे । सहजे ते त्रलोक बिलोवे ॥
धिधि नगिरी मैं मासुन कीमा । सबिदि बिचारि निहचस जमु भीमा ॥
सति मर्म भुम सम जाई । धिधि सोभा इसि बिध ते पाई ॥
धिधि सतोप बिध जोग निमास । इहि बिध जापे साईंदास ॥
सलोक—सिपा मुन संजम करम जो कछु मिगम बीचारि ।
साईंदास सति सजम ते जानीए परिवानि कला बीचारि ॥

२१

सिपा मुन सजम गति पाई । धर्म नेम चलो मेरे भाई ॥
जमि इस्नाम मिधम्या मारन । पटि कर्मी बहु बिध बीचारन ॥
मासा मनि दीखा गुर देवा । सगति साध सर्बमय देवा ॥
सासग्राम तुमिसी भी मासा । दया दानि दिज धर्म पपाला ॥
दूर्नब्रह्म सदा भगिवान । मानो बेद कला परिवान ॥
परिवान कला का इह बिस्थार । साईंदास रिदे करो बीचार ॥
सलोक—इह मनि मारि मैदान कर पेमति सहज बिबेक ।
साईंदास कहिन सुनन को बाद है जानिन कों भ्रम एक ॥

२२

एको एक न दूसरा कोई । जाप दर्सन ते ऐसी होई ॥
मिहरिबान मिहिर तै पावे । मिहिर बसो जिस जाप बसावे ॥
होइ निमानि निमे सम माही । छाडि मूढ़ सधु बिस्ठ समाही ॥

रोजा रिदे संतोषि विचारे। क्रुजा कर्म सील भीहारे ॥
भासा एक साहुब की कीजे। गुरु मतर मतर महि दीजे ॥
मुसाबे भाप तो सचि घरि भाव। साईं दास फिर जनम नि भावे ॥
सलोकु—दान पुन्य भरि यग्य होम नेम धर्म व्यवहार।
साईं दास सांति सहिज हरि सिमरना इहि विध दसन चारि ॥

३३

राम नाम रसना हित कीजै। ता सम सरि कछु भौर ना दीजै ॥
धर्म नेम सजम हितकारी। नामु जपे तांसो बलिहारी।
सहज समाध रहे लिव लाइ। भातम भेटे तौ भ्रम जाइ।
मिल सतिगुर ऐसी मति पावे। भहि निस मिल साहुबि गुनि गावे ॥
निर्मल साध संग जो करे। साचा नामु स हिर्दे धरे ॥
साईंदास भजि इह विवहारि। इहि विध दर्सन कहु बीचारि ॥
सलोकु—विप्याधुध व्यापे नहीं भनि इछया विसराम।
साईंदास जती नामु सभ को कहे कठन धराबिन नाम ॥

३४

जती सोई भाने सम माही। घटि प्रकास दूसरा को नाहीं ॥
निर्भ धर्न को पम पसारे। कंवल ज्ञानि रिदे में धारे ॥
भासा ही ते रहे निरास। वहेत सरोवरि रहे उदास ॥
जती नामु कहु विध बीचारा। काम क्रोध से रहे निभारा ॥
जबि धृति भग्नि निकट नही भावे। हठि करि नाम सो जती कहावे ॥
धृति से उलटि भर्मों जवि पानी। सम सीतिल जवि भगन समानी ॥
रहुति देव का करे प्रणामा। सभ रूपनि में तेरो नामा ॥
जिहि सरूप तुम ही को जानो। गुरि प्रसादि दुभदा मत हरि भाने ॥
सर्व भगि भ्रम क्यों निवास। इहि विधि जापे साईंदास ॥
जहां देखो तहा एकु है दूसरा कोई नाइ।
साईंदास करे करावे भाप ही तू मनि कहा भरमाइ ॥

३५

बोध रूप की बुध प्रवीनी। सकल जगित कों जिहि बुध दीनी ॥
जहा देखो तहा एको एका। सम घटि पसर रह्यो जु भनेका ॥
भतिरि बाहरि एको जाने। गुरि प्रसादि साभ करि माने ॥

एक ही विचर कीयो सु पसारा। जगित रचिना कों बहु विस्थारा॥
सहज समाम रहे सिवि साय। हम तुम कौन कहेगो भाय॥
कहा ते आया कहां ते जाही। एह बीचारि देष मनि माही॥
चक्र भेदि घटि मदि बीचारा। अवनी चक्र भयो उजियारा॥
तबे बिल्हाय मिलो पदि माही। तहा आविम बाविग ही कछु माही॥
साईदास परिचे सो जाणे। एहि बिम दर्सम वोच बषाणे॥
सलोक—घटि दरस में लोक सभ मति मार्ग विसवास।
साईदास जित विष जिनहूं जानआ तितिही पूर्न आस॥

३६

घटि दर्सन अनिषेपम गए। अम्भर्य रूप में बिसमें भए॥
किनहू सुम्म हस्त का देखा[1]। उनि जान्या प्रभ एही सरेखा॥
दूसरे बात और जो कही। ताका भर्म हीए ते सही॥
कोऊ दत वेष पतीआना। उनि वाही मे सच करि माना॥
कानि निशानि हाथ जिन परा। उनि जाना प्रभ ऐसा परा॥
अग नीशान हाथ जिह लागा। वांका वाही ते भ्रम भागा॥
किनि हू देषा पाउ पसारा। उनि जाना प्रभ यहि विवहारा॥
पूछ परो गिर तैसा जाना। औरि झूठ वाही सच माना॥
सवमि कों रचना रची अधि सिधनि कों समानि।
साईदास सभ में एकों बसि रह्या समझे ते सधु मानु॥
एको एक सभ मे बसे अविरि न दूजा कोय।
साईदास जो जाने दरि दूसरा दरि दरि कासा होय॥

३७

दरि एको दरिवाम मनेरे। जिनि कों वाहि तेऊ दरि बेरे॥
एक जानि करि चेरा होय। ताकी चाह करे सभ कोय॥

---

१ यहां—हस्ति-अन्धन्याय का कथन है। जिस प्रकार कुछ अन्धों ने हाथी को देखा। जिस जिस अन्धे ने हाथी के जिस भाग को देखा उसी रूप में हाथी को मान लिया। इसी प्रकार जगत् के अज्ञानी लोग जिस रूप से प्रभावित होते हैं उसे ही परमात्मा मान लेते हैं वस्तुतः परमात्मा की वास्तविकता को केवल ज्ञानी ही जानता है।

जिनि सभ ही में एको जाना। बहु विध रंगी रंग पछाना ॥
पालक बन्या धलक के माही। पालिक पेल पाकि होइ जाही ॥
पालक हू ते पाक जिनावे। पुनी पालक की तबिहू पावे ॥
हौमे मेटे ते मलिसाना। जीवित पाक होइ पसमाना ॥
पसिम मने तौ नौ-निध पावे। जिस को अपुना आपु जनावे ॥
साइदास प्रम अकथ नीशानि। मैं तेरी कुदिरत तो कुरिबानि ॥

सलोकु–करि करिवाल जो काल के काटति पलिक पलाहि।
तवि जान्या जवि गिर परा सनिमुप जूझे जाहि ॥
जो जूझे तेऊ भसं अनि झूझति किह काज।
साईदास सवि क्या झूझणा जवि जम के भए मुथाज ॥
निमिपि पलिक नहीं बीसरे हीए तिहारो नामु।
करि पसार दोऊ मांगिते साईदास यहि विसराम ॥

३८

मूल चक्रे मागे बंधि[1]। इन्द्री चक्रे थिर भए कंधि ॥
नाभे चक्रे उलट पौना। याते मिट गियो आवा गोना ॥
रिदे चक्रि मन कविल प्रकाम। कूकी मानें जीविन की आस ॥
कठी चक्रे टूटे ताला। जोगी होइ वृद्धि ते बाला ॥
धपनी चक्र भयों उजिआरा। जो कोन्हे सो जोगी सारा ॥
पटि रस भेद गगिन गहि गाजा। जिह परिचा अनहद बाजा ॥
आदि अनादि भओं ओंकार। जिह मिल सुर्न कीओ सथार ॥
सुर्न नित मिल एको भआ। जीवि सीवि मिल ममा गमा ॥
सखा गिआ भ्रम निहुमम। जित देखो तित एको वमि ॥
उत्तम मधम तहां को माही। साईदास पवि पूर्न घटि माही ॥

सलोकु–मूल रोक पटि चक्र का रिदे पंकज का ध्यान।
संपमी से सधु पाईए तहा ममाने प्रान ॥

---

१ योग साधना द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए साधक को प्राणायाम द्वारा कुंडलिनी को जागृत करना होता है। यह कुंडलिनी शरीर में स्थित छ: चक्रों को पार करती हुई सहस्रदल कमल में पहुंच जाती है यही साधक की परम सिद्धि है। उन्हीं चक्रों का यहा वर्णन है। इनके विशेष ज्ञान के लिए परिशिष्ट देखिए।

ब्रह्मरूप निर्लेप है माया व्यापै न कोय।
साईंदास ताको छेरे भ्रम करै कर्मा नाना होय॥

३९

एको परिमातम निरमाया[1]। आतम उपजि ताकी छाया॥
तपि धरि आतम कर्म कमाया। कर्मा ही ते जीउ कहाया॥
जबि जीउ इति उति डोलन लागा। ताहि कहीए मनि अनुरागा॥
मनि ममिता मिल पेस बनाया। चितवति ही ते चितु कहायौं॥
जबि चितु फेर पिछोटे आया। तौ परिमातिम आय समाया॥
खेचरी साधे चितै चितवनी जाय। भूचरी ते मनि उलिटि समाय॥
अगोचरी त आतम सिखे साम। उनिमनी ते सता सभ भागे॥
चाचरी साधे सहिज निधाम। साईंदास आतम भयो प्रकास॥
कर्म करै सोई नाम ही समझि बिचार बिबेक।
साईंदास कहिन मुनिन का दोय है जानिन कौं भ्रम एक॥
उपजि बिनस कहा कहो सभी रहन भरिपूर।
साईंदास किनहू नेड़े जानया किनहू समझ्यो दूरि॥

४०

किनहू राम निकट करि जाना। किनहू दूर दूर करि माना॥
किनहू साध सीखो घटि माही। किनहू लिट पड़ो बस्तु माही॥
किनहू अपिना आपु पछाना। किनहू जान्या किनहू न जाना॥
किनहू दीपक जोति प्रकासी। किनहू भर्म परे उरि फासी॥
साईंदास जिह इह सुध मानयौं। जान अनतर रहया समायौं॥
भर्म भम सम कौं करै जाति करै नहीं कोय।
साईंदास जप कीजिए जो कुछ होय सु होय॥

४१

राम नाम मनि सह बिचारी। भर्म की भीति चित हू ते टारी॥
राम नाम अमृति फल पायो। राम नाम पनि माहु समायो॥

---

१ यहाँ से ब्रह्म अथ जिस प्रकार जीव बना इसका वर्णन है।
२ खेचरी भूचरी अगोचरी उनिमनी और चाचरी ये पाँच यौगिक अवस्थाएँ हैं। अधिक स्पष्टता के लिए परिशिष्ट में देखिए।

राम नाम जपि निर्मल होय। राम नाम जपि दुर्मति षोय ॥
राम नाम जाके घटि बसआ। घम भावि ताहू मन बसआ ॥
राम माम महिमा कों जाने। सत्य सविद ताहू मन माने ॥
साईंदास राम चित धारि। भौ जलि विषम उतारे पार ॥

ब्रह्म रूप होय पसरआ देषो मैन पसार।
साईंदास अतिर बाहरि निपयो भक्त हेति चिति धारि ॥

४२

देषो मन पसार गुसाईं। राम रमओ है सभनी थाईं ॥
अतिर बाहरि लेहू मिहार। साध सगि मिल भ्रम भूग मार ॥
कुसम माहू बास सचारी। रिदे प्रतीत होय जिन धारी ॥
जो प्रतीति रिदे नहीं आवे। सुनो बेदि सुम्र भाप सुनावे ॥
गुरि जनि बचनि लीयो निज धारी। तौ प्रतीत होय मन मारी ॥
कौन बचन कहिके समझयो। पूछो कोऊ को उत्तरि पायो ॥
बिना जोत क्या माटी बोले। बिना जोत कहू मार्ग खोले ॥
बिना जोति कहु कहा पसारा। बिनु जोते किउ कहा उजिआरा ॥
ब्रह्म जोत सम ही कों जानो। जो दीसे सो साच करि मानो ॥
साइदास जिन ब्रह्म पछाना। वाका पूरा आविन जाना ॥
सलोकु—सरि भरिआ अनिम जले को जानि पीब धाय।
साईंदास जाविस आवन जाविही फिरि सुष रही नि काय ॥

४३

सरि अनिम भरिआ सील्हाईं। जो आवे बस सो धपिआईं ॥
अनिमें जस जिनने अचिवायो। भौ जलि तिनने मनि विसरायो ॥
त्रिह्वा[1] त्याग दीनी विसराही। ताहू मिकटि बिरा कछु नाही ॥
सहिज भयों त्रय ताप मिटाये। चिव नगिरी आसनि हि राये ॥
मानि महति सम दीयो बिसारी। घटि घटि अपिमी जोत पसारी ॥
दूसरा भेद रि?ो मिटि गयों। अपिता आपु पछाने लीयो ॥
सा?राम अनिम पुर माही। विघरति है ससा कछु माहीं ॥

---

१ त्रिह्वा<तृष्णा।

संसा बीमो शार के मिहसंसि मनि होय।
साईदास ताकौ क्या ससय पड़ै जिस रिद वसिआ होय॥

४४

ससा महा पु हरिगुन गावे। नामि जपे दुबिधा मिटि जावे॥
त्रयगुन मनुखा सूत परोवे। स्वास संमाल्ह मणकि नहीं पोवे॥
एक स्वास हरि हरि गुनि गावे। स्वास बिर्था कोई नि जावे॥
कहु साईदास सदा सुप होय। गुरि प्रसादि सपे अमि काम॥
ससोक—जिन के मनि मह उपजयौ मुक्त भयो फुनि सोय।
साईदास गुरि क्या सुप पामयो दुप दरिद्र भ्रम पोय॥

४५

जिन के मनि उपिजी परितीत। निर्मल होवे ताका चीत॥
मावे वेग पड़े गुनि गावे। मावे मनि मंडसि होय मावे॥
मावे उदिर भरि भरि पावे। मावे सूपम भोजिन पावे॥
मावे कपिड़े संगि हुढावे। मावे नागा बनि उठि भावे॥
मावे सुंप सविदि सो रावे। मावे सोहू पदि सो मावे॥
मावे भाप भाप हा भाप। मावे भविगति भसिप सपाप॥
साईदास बिरया जो जाने। सो सुप सागिर मांहू गसतानै॥
ससोक—हरि पनि मय गसतान बनि भविगति विसराय।
साईदास ममता मिटी दुभन्त गई सति गुरि दीयौ बताइ॥

४६

सतिगुर जिन के मनि मह भायौं। पर्म पदार्थ तिसहू पायो॥
सतिगुरि जिन कोदीयो उपिदेसा। ताहू का मिट गया भ्रदेसा॥
सतिगुरि है दीपक की न्याई। पसंति तिमर छिनमें दूर जाई॥
सतिगुरि बमन भटनि दुप गियाँ। महाभमंनि रिदे मह भयो॥
जीवित मुक्ति रिदे मह भायौं। जो बछ दसमा सोन्ने फल पायो॥
गुरि का मत्र राप रिदे माही। रापनि ही सुप सहिज समाही॥
साईदास सतिगुरि बम भामो। तिहि प्रसादि हरि के गुन गायो॥
ससोक—प्रथमि बुद्ध ध्यावन मई भौरि प्रकासयो भाय।
साईदास भादि पूप उतिपत करी सो सभि बिसरयो ताहू॥

४७

अनिम सीयो सागिर भ्रम भायो। कौल करारि सकल विसरायो ॥
अनिनी कों पय अवि ही पीयो। भजिन गुपाल तविही तजि दीयो ॥
ममता क गृह माही भायो। म म वचन मुप ते सुनायो ॥
सुम माता के प्रगिटि भाइ होयो। विसर गियो रस माता सोमो ॥
भय गुनि माही येसन लागा। गोविंद भजन रिवे त भागा ॥
कनिक कामनी हेत वधायो। मपिना मनि ताह चितु लायो ॥
ऊँकारि कों वीयो बिसारी। महा मलीनि मनि से चित धारी ॥
साइदास जिस हरि विसरायो। भत समे बहुत दुप पायो ॥
अनिहदि बाजे रे भमा निसवासरि पल छीन।
साईदास सुत नित ताहू भई गुरि किरपा करि दीन ॥

४८

अनिहदि बार बजे मेरे भाई। निसबासरि ताको लिवि लाई ॥
जांकी लिव लागी फुन तांको। अनिहदि उपज रह्यो घटि वाको ॥
त्रिगुटी मेन रह्यो उरिमाई। उनिमनी म फुनि ध्यान लगाई ॥
तहां रचिति सोह पदि बोले। दसि उति मनुभा मूल न डोले ॥
तहां रचत सभ सूर्त पसारे। अनिहदि सविद होत उजियारे ॥
आवागवन ते भमा निमारा। छाडि दायो सभ सकल पसारा ॥
साइनास गुरि मनि दिढायो। तिहि प्रसादि अभ पदि पायो ॥
लीन भविन म विचरते सूषम भति भस्थूल।
माईदास जब जान्या तबि निकटि है पायो जीविन मूल ॥

४९

ग्यानी ध्यानी की सुन बाति। भरो ध्यानि बहु बेद बखात ॥
मथिर ध्यान बेद मुप भापे। हरि रम माता भमृत चापे ॥
जा भंमृति हरि नाम कहीजे। सो भंमृति मिल भाघनि पाजे ॥
मुप भमृति हरिनामु कहावे। जांके भागि सोई जनि पावे ॥
मिल माघ सगि करे भानंदि। मदा बसे घटि परिमानन्दि ॥
जाके रिद भानंन्दि हुया। सो नरि सन्त सदा जुग जीया ॥
गुरि प्रसादि माईदास बताइयों। पूर्न नाम रिदे में भायो ॥
सलोक—परिम पदाथ पाइयो हरि मेवा बिनु साय।
साईदास गुर प्रसादि भ्रम उतिग्यो तिमर मिटाया जाय ॥

५०

पम पुप का घ्यानि करीजे। गुरि मंतरि प्रतमंह दीजे ॥
गुर मार्ग छिन्न मह दिपलावे। ठौरि ठिकारणा निकटि बतावे ॥
दर्पन न्याई मुप उसिटि दिपाई। दिष्ट पडो ममता मिटि जाई ॥
अविते उसिटि परयो गृह माही। बूझे बूझे आप आप होइ जाही ॥
माईदास गोबिंद गमतान। बूझो जनि जो प्राविरण जान ॥
तुमरी गति अपार है जपी न जावे जाति।
माईदास मा काहु सो उपजयो बिसमर हो तिह गाति ॥

५१

तु दियाल अपार प्रभ होई। जपी नि जाइ अमगति मति सोई ॥
दुपिभंजनि हरि दीनदयालं[1]। करुणामय गोबिंद गोपालं ॥
परिमानंदि सदा सुपदायक। अपित अक्षम हरि सदा सहायक ॥
गुणि निधान माधो मधसूदनि। सकल यमित पसरयो मधुसूदन ॥
निमल जोत उजिआरा रूपा। प्रटल जोत प्रभु सदा अनूपा ॥
गिरधरि धारी नंद के नंदन। सकल जगत ताहू चित बंधन ॥
परिमानंद मुकंद मुरारी। बामन रूप धर्यो उतिकारी ॥
नारसिंघ सूकर अपु धारे। भगितहेत सभ काज सवारन ॥
बिमु रूप जगी रहिराई। सकल सरूप रचना रचाई ॥
मनि मोहनि हरि कुंजबिहारी। श्री गोपाल भगितन हितकारी ॥
पतित उधार दीनदियाला। आदि अति मधि है रपिवाला ॥
मरुटि कामिन दुप निवारन। भपित हेत प्रभ रूप पसारन ॥
मोहन मद मावरधन धारी। पूर्ण पुप श्री कृष्ण बिहारी ॥
दीनिबंध घटिवासि ठाकुर। गुणिन धान सभ के गुनि प्रागिर ॥
मन भपि प्रभ रहयो समाई। कौसापति[2] हरि त्रिभुवन राई ॥
जो जो ताहू के गुनि गावे। मुक्त सहू पवि घाति समावे ॥
माईदास धुपि नाम निधान। गुरि किरपा पायो भगिवान ॥

---

१ यहां मे प्रभु के अनेक अवतारों की महिमा का वर्णन है।
२ कौसापति < कमलापति।

आत्म मनि बुद्ध एकु है यामें भेद नि कोय।
साइदास जौ माने तो मान सेह कहे होत नहीं दोय[1] ॥

५२

एक रुप आत्म सभ माही। कर्मै कर फुनि नामु मदाही ॥
बुधि प्रकास परिमातम होई। आत्म मनि मिल दुमत पोई ॥
सभ ही भीतिर ब्रह्म पछाना। अपिना आपि देष पतीआना ॥
नैनन माही दीयों दिषाई। औरि नहीं कछु नाम सुहाई ॥
एको राम रमयों सभ थाई। साईदास सुष आनदि माहीं ॥
सलोकु—जोग ध्यान पटि कोटि कों आति जोगी होय।
बिन आते घरि ना बसे जतिन कर जो कोय ॥

५३

प्रथमे मूल द्वारि रोकावे। दुतिए सघ दुआरे फुनि आवे ॥
नामि कविल बाउ घरि अहे। सतत अविमुत लीना कहे ॥
उमिटि पविन अवि हिर्दे आवे। आनंदि होइ अनद समावे ॥
जीवित आइ बस्यो तिस मंदर। अतिमुसि रूप बन्यो अति सुदरि ॥
बिसर गियो जो काम कमावित। भरि क्रीडा रवि सुप उपिजावत ॥
जगुनि गियों अगम भरि धावे। जगित मोह सभ ही बिसरावे ॥
पवि द्रुति का कीनो पापु। पकग लियो सोह करि जापु ॥
अवि तो उनिमन माह समायो। भयो कछू था जो जगि आयो ॥
लीयो पछान परिमातम सुप जविही। उनिमनि में राता जनि सविही ॥
मोंहं पदि सो रहुमो उरिमाई। साईदास गुरि दीयों दखाई ॥
चिहू चक्र ना बग कछु दिष्ट पड़ो नहीं भीति।
साइदास अपिना आपु पछानियो निमल हाइयो चीति ॥

५४

चिहू चक्र कछु दिष्ट न आयो। मानि गयो आनिम सुप पायो ॥
जो कछु था सोई कछु भयों। सभा सोग रिदे मिटि गयो ॥
मगिन होय पुरि माहि समाया। अनिहृरि सार बज मनि भायो ॥
बाजिन अजब तारि अमिकाई। नित मत या कह गमभा ॥

---

१ साईदास जी का सिद्धान्त— अद्वैतवाद"।

५०

धर्म पुर्ष का ध्यानि करीजे। गुरि मतरि घंतर्गह दोजे॥
गुर मार्ग छिम मह् विपसावे। ठौरि ठिकाणा निकटि मतावे॥
दर्पन न्याई मुष उलिटि दिषाई। दिष्ट पडो ममता मिटि जाई॥
भविते उलिटि परष्यो गुह् माही। बूझे बूझे भाप प्राप होइ जाही॥
साईदास गोबिंद गमतान। पूछो जमि को माविगए जान॥
तुमरी गति भपार है मयो न जाने बाति।
साईदास मा काहू सो उपजयो विसमर हा तिह गाति॥

५१

तू दिमास भपार प्रभ होई। सपी नि आद्यमकगति गति सोई॥
कृपिर्मनि हरि दीनदमाल[1]। क्र्णामिय गोबिंद गोपाल॥
परिमानदि सन्त सुपदायक। भमित वछल हरि सदा सहायक॥
गुमि निधाम माधो ममसूदनि। सकल यगिस पसरयो मधुसूदन॥
निमल जोत उजिमारा रूपा। घटस जोत प्रभु सदा भनूपा॥
गिरधरि भारो नं‍द के मदन। सकल घमत ताहू चित बमन॥
परिमानद मुकद मुरारो। वामिन रूप बन्यो तरिकारो॥
नारसिंघ मूकर मपु धार्न। भगितहत सम काज सवारन॥
बिमु रूप धर्मी ठहिराई। सकल सरूप रचमा रचाई॥
मनि मोहनि हरि कुंजबिहारी। यो गोपाल भगितन हितकारी॥
पतित उधार्न दीनदिमाला। भादि मति मधि है रपिवाला॥
सकटि काटिन दूप निवारन। भगित हेत प्रभ रूप पसारन॥
मोहन मद गोवरधन धारी। पूर्न पुप श्री कुंज विहारी॥
दीनिबंध वृजिवासि ठाकुर। गुनिम पान सम के गुनि भागिर॥
मर्व भगि प्रभ रह्यो समाई। कौलापति[2] हरि त्रिभुवन राई॥
जो जा ताहू के गुनि गावे। मुक्ति लहे पदि साति समावे॥
साईदास मुपि नाम निधान। गुरि किरपा पायो भगिदान॥

---

१ यहां पै प्रभु के भनेक भवतारों की महिमा का वर्णन है।
२ कौलापति <कमलापति।

बिन जगिनीस कौनु जगि परे। भौजलि विषम जो पार उतरे ॥
बिन गिरधारी को सुषदायक। ऐसा औरि न सूझति लायक ॥
बिनु मुकंदि परिमानंदि स्वामी। बिरिया कोल है अंतरजामी ॥
बिनु श्रीमापति प्रान उधारन। ऐसा औरि नहीं कुपि टारन ॥
साईंदास तो सरिनी आयो। गुरिप्रसादि जसु भाष सुनायो ॥
देषो नैन निहार के कलिमा जाति जगवीरि।
साईं दास बिसम छोड हरि सिमर ले माना गुरि धरि धीरि ॥

६१

जगि कलिमा नैन लिषि आयो। बिसम छाडि जसु हरि का गायो ॥
पिनि पनि जाति अवधि तिहारी। घटि घटि जात मनि सेहु बीचारी ॥
घडी घड़ी घड़ियाल बजावे। अविध घटित सठ समिझ न आवे ॥
आन अचानिक कालि गिरासी। उरि में डारि चलित ले फासी ॥
तबि पछुताउ रह्यो मनि माही। हरि का सिमरन कीनो नाही ॥
इहु पछतावा काम नि आवे। जोर न लागे नीर बुलावे ॥
अबि तो तुमरे प्रान बमाई। काहे ना हरि सिमरहो भाई ॥
बिनु हरि सिमरनि सुषु नहीं कोई। मीन बिछुरि जल बिना न होई ॥
करवतर[1] रविसुत[2] सिर परि धरियो। काटि अवधि तिहारी तरिवरियो
छाडो बिसम मनि सेहु सवार। साईं दास जनि कहिआ पुकार ॥
सलोकु—नरिपति सुरपति सभ भजे अजिन कन्त सिव लाइ।
साईं दास जास पाति पूछ नहीं जो सिमरे सुष पाय ॥

६२

नरिपति बेद भाष अपि जानि। आसि रिख हरि जो की आन ॥
कहा भया नरिपति जो हुयो। ताहु करने हरि ही दीयो ॥
मनि माही बहु सेति बीचारी। मोहु नरिपन कीना गिरधारी ॥
तिह ऊपरि जिनही समतावित। जो दुष देत बहुति दुष पावन ॥
इह प्रजोग काम मनि धारे। हरिपनि हरिपति राज संभार ॥
तिह नरिपति कौं बहु सुषि दिषायो। जिसको अपिना आपु जनायो ॥

---

१ करवतर<करपत्र (आरा) मराठी (करवत)।
२ रविसुत=यमराज।

५८

घर्नं उमिटि मन मगनि धरायो। भम मिर्म तमि ही हव मामा ॥
भूस गिमो मो कछ मा वक्ता[1]। जोगि जुगतर जोग सो जुगता ॥
मह की मीति मुर्न बिसरानी। मनमथ पुर मो परी मिदामी ॥
मिम रपु कहम नहीं मावे। जो मुप कहो कहा नहीं जावे ॥
मनिमत गति कछु मपी नि जावे। बिसम होय सुप माउ मिरावे ॥
मतिभुति मीलहा मीम निहारी। साईंदास मवि मिमे मुरारी ॥
घास पुर्प सुप वेन को दुपि मिमिरायम हार।
साईंदास साकी सेवा मागीए मौर मावि मित टार ॥

५९

निमास पुर्प की सेवा मागो। मजो मोपास मिमि मासर जागो ॥
जागृति मार मुसे महि पर कों। मुर प्रसाद महो हरि दरिको ॥
मो कछु महो सु हरि को मानी। माहीं ता मौन मभा है मानो ॥
ठौर राप मितु नाह समावो। राम मपति सहजे सुपु पावो ॥
हरि की मक्त मह मित मारी। वेद पुरान सम एही पुकारी ॥
मक्त माउ जोग सुप पायो। साईंदास मिस हरि गुनि गायो ॥
सम्तोष—हरि प्रमादि भ्रम उतारियो होवनिहारि पछान।
साईंदास साम सम्य सुपु पाइमा प्रेम मक्त मित मानि ॥

६०

मो कछु कीयो सु हरि ही कीमो। मो सुपु मीमो सु हरिही दीयो ॥
मिन मभिमानि मौर को नाही। गुरि मिल समझि वेप मनि माही ॥
मिनु रघुनाथ सुम्रति को नही। समृति वेद सम भापि सुनाही ॥
मिनु रघुनन्दनि कौन मिहारी। सुम्रति माह जो सूपि दिपारी ॥
मिनु मी क्रम्म मुक्त को पावे। रमिसुति फामी लेउ बिरावे ॥
मिनु मिभवन नागिर सुपि मामिर। कौन दिपावे सुपि मिनु मागर ॥
मिनु भरिमी परि कौन उबारे। ऐसा मनि का कौम उतारे ॥
मिनु मनिमोहमि को महीं दाता। मापि पिता मनिता सुति माता ॥

---

१ वकिता<वक्तव्य=वाचालता।

२ भ्रम के दर्शन से जो सुख मिला वह अवर्णनीय तथा अनिर्वचनीय...

बिन जगदीस कौनु लगि परे। भौजलि विषम आ पार उतरे।।
बिन गिरधारी को सुषदायक। ऐसा और न सूझति लायक।।
बिनु मुकंद परिमानंद स्वामी। बिरिया कोन है अंतिरजामी।।
बिनु कौसापति प्रान उधारन। ऐसा और नहीं दुषि टारन।।
साईं दास तौ सरिनी आयो। गुरिप्रसादि जसु आप सुनायो।।
देषो नन मिहार के चलिआ जाति जगबौरि।
साईं दास बिलम छोड हरि सिमर स मानो गुरि अरि पीरि।।

६१

षगि चलिआ नैन लिषि लायो। बिमल छाडि जसु हरि का गायो।।
पिनि पलि जाति अविष बिहारी। घटि घटि जात मनि लेहु बीचारी।।
घरी घरी घड़ियाल बजावे। अविष घटित उठ समिझ न आवे।।
आन अचानिक कालि गिरासा। उरि में डारि चलित स फासी।।
तबि पछुताउ रह्यो मनि माही। हरि का सिमरन कीनो नाहीं।।
इहु पछतावा काम नि आवे। जोर न लागे नीर बुलावे।।
अबि तौ सुमरे प्रान बसाई। काहे ना हरि सिमरयो भाई।।
बिनु हरि सिमरनि सुषु नहीं कोई। मीन बिछरि जल बिना न होई।।
कसवसर[1] रविसुत[2] सिर परि धरियो। काटि अविष बिहारी हरि हरियो।
छाडो बिलम मनि लेहु सवार। साईं दास जनि कहिआ पुकार।।
सलोकु—नरिपति सुरपति सभ भजे मजिन कर्त लिव लाइ।
साईं दास जात पाति पूछे नहीं जो सिमरे सुष पाय।।

६२

नरिपति वेद आप भषि आने। आसि रिदे हरि जी की आने।।
कहा भया नरिपति जो हूयो। ताह कर्न हरि ही दीयो।।
मनि माही बहु लेति बीचारी। मोहु नरिपत कीना गिरधारी।।
तिह ऊपरि जिनही ससतावनि। जो दुष देत बहुति दुष पावन।।
इहु अजोग नाम मनि धारे। डरिपति डरिपति राज सभार।।
तिह नरिपति कों बहु सुषि दिषायो। जिसको अपिना आपु बनायो।।

---

१ कसवसर < करपत्र (आरा) मराठी (करवत)।
२ रविसुत = यमराज।

जो जो हरिजनि रिदे बसाई। जीवित मुक्त होंति मेरे भाई॥
साईंदास आनदि घटि जाके। हरि का नाम बस्यो घटि ताके॥
सलोक—देवनहारा एक है ताहू के गुनि गाय।
साईंदास परम मुक्त गति पाईए दुमदा देस मिटाइ॥

६३

परासभित[1] जो कछु तिहारी। अमिवाछति है आविनहारी॥
जो बांछति सो मिले ना भाई। परासभत छनि मिसाई॥
ठौकि राप बिनु नाहु डुलावो। जो कछु तुमरा है सो पावो॥
हरि को अपो निसवासर धिआवो। परासभत से मा उकिलावो[2]॥
देवनहारि रह्यो भरिपूर। जाने निकिट अजाने दूर॥
ससा छाडि भजो गोपाल। करिणामै जो सदा दिआल॥
साइ दास हरि नामु ध्यावो। सुपिसागिर घटि माहु बसावो॥
अनेक राग धविनी सुनो नैन रूप समझाइ।
साईंदास उलिटि पड़ो जवि आतमा परिमातम हो जाय॥
धविनि भरो सुनो हरि की बानी। लषी मि जाइ अकथ कहानी॥
अनेक राग बजे मेरे भाई। मगिन हात मनि मति अमिकाई॥
तास मृधगि बीनि धुनकारी। मनिहुवि दाम्ब होति अतिभारी॥
मुन्न सबिन्द की सुर्त सभारे। निरखि करति गोविन्द चितारे॥
मगिन भाउ रिदे माहु बसाई। सहिजे मनि बुभिआ मिटि जाई॥
नाचित निरत करत हरि केरी। काटि देत मनि भ्रम की बेरी॥
छनिमनि माहु सदा मगिन चित। जो गावित सो आप सुणावित॥
आपे बजे सुनित फुन आपे। सर्बमाहु जो रहमा बिआपे॥
साईंदास बिचार करि पायो। उलिटि पड़ा जबि आप सुमझयो॥
जबि लगि रसीआ रस रह्यो होति ध्यान को मूल।
सुधि बिसरति सुध जागही परिसिति अति असथूल॥

---

१ परासभित < प्रारब्ध = भाग्य। यहाँ है भाग्य का वर्णन है। भाग्य से जो कुछ भी मिले उसे सहर्ष लेना चाहिए।

२ उकलावो < अकुलावो। आकुल = व्याकुल होना (धाम धातु)

६४

जबि लगि रसना रस मे रसिमा। तबि लगि जानो दुप मे फसिमा ॥
जबि लगि मनु ना मोंन करावे। कहा भया जिह्वा ठहिरावे ॥
जबि लगि मनु दहदिस भरिमाई। मोन कहा मह मेरे भाई ॥
मनि चचल चतुराई करे। घरि घरि मूसिन सो चितु धरे ॥
मारित मगि हसकरि पच भया। तनि मनि माहि सताप जो दया ॥
नगिर मांह कैसे ठहिराए। रहे सहिज जो रह एा पाए ॥
साईदास विकटि गति भाषे। गुरिकिरपा जनि विर्ला साप ॥
सलोकु—मुनित सकल मुकते भए जिन कीनो परितीत।
साईदास पारिब्रह्म अतर बस्यो निर्मल होयो चीत ॥

६५

सुनिस नाम हरि मह मुकताये। हिरदा रिजनि हरि के गुनि गाए ॥
गोविंद नामु रिदे जिम लीना। तासि काल भ्रम मुक्ता कीना ॥
जाके रिदे बसे गोविंद। सदा बसे घटि परिमानदि ॥
प्रेम प्रीत जाक मनि भाई। उज्जिल भयों मिटी तिमराई ॥
मानो कुसम मिल्या जलधारा। निमल रूप भयो उजिआरा ॥
तीनि ताप सताप चुकायो। ब्रह्म मिल्यो सुप आनदि पायो ॥
सकल माह हरि रूप दिपायों। मिट गयो दुप गुरि नामि दिढायो ॥
सतिगुर धन रह्यो सपटाई। तिह प्रसादि भ्रमि मनि का जाई ॥
साईदास आनद गलतानि। चूको तिम का आविम जान ॥
उरिध। मति जनि त्याग के महा आग्नि पदान।
साईदास बैरभाउ पाछ रह्यो निर्मो पदि सिव ठान ॥

६६

ध्यानि धरो धरि हरि गुन गावा। विष्या सुन सकल बिसरावा ॥
गुनि गोविंद धरो चित माही। जठर अग्न ते जिम उबिराही ॥
दग्ध होन तुम कां नही दीयो। पान-पानि¹ जा रप्या कीया ॥
रे गटि दगि माग बस्यो तू ताही। ताह धगनि हरि के गुनि गाही ॥
भयो प्रगोत नाम दग जबिही। प्रगिटि भयो जगि भीतर तबिही ॥

---

१ पानपति<प्राणपति (ईश्वर)

जबि उरि फांसी रवि सुति डारे। मुगिदरि सेती सीसु प्रहारे ॥
ताहि समे प्रगि नीरि बुलावे। हाथ पछोड़े बहु पछुतावे ॥
ताहि समे कछु नाह सहाई। साई दास जबु हरि मुपिदाई ॥
पूर्न पुप निधान सुपि घटि घटि ताह निवास।
मनि रुचिकरि ता सेवए गुरि किरपा साई दास ॥

६८

जसि वस भीतरि रहुआ समाई। अविगति गत कछु लपी नि जाई ॥
पसु पपी मे ताह निवासा। अस्थावर जगम मह वासा ॥
जो दीसे सो ताहु सरूपा। गहिर गभीरि जो सदा अनूपा ॥
अनति रूप कछु बरिन न आई। जिन को जानो होति सहाई ॥
बिना सहाय कहा कछु होई। साई दास जपु हरि हरि सोई ॥
सलोकु—सूरा सोई भापीए सनिमुप झूमे जाय।
पीठि न देव साई दास हरि गुनि बान चलाइ ॥

६६

सूरा सो सनिमुप जा लरे। सति गुरि शब्द पड़ग करि धरे ॥
पंचि दूत का घाति करावे। निर्भो नगरी माहु वसावे ॥
ग्यान ध्यान मे रहुआ समाय। तिमरि अज्ञानि मिटै सुप पाइ ॥
निज पदि मों जबि ध्यान लगावे। आप सकिल बिसरावे ॥
रवि प्रकास कीयो जबि हूते। तिमर विनास भयो तबि हूते ॥
त्रयगुन मेटे ते अलसाना। बूकी गियो फरि आवन जाना ॥
साई दास अनिर्भे पुरि माही। सदा अनदु भासु कछु नाही
बाजे बजित अनेक भाँति सुत मत ठहराय।
साई दास बिन देपे अचिनी सुनो नृप से भाप सुनाय ॥

७०

बाजे वाजित भाँति अनेका। सर्त निर्त करि समझ विवेका ॥
बिनु पगि नाचे जिहवा बिनु बोले। नादि सने रबिन मही पोले[१] ॥
बिना ताल करतास बजावे। बिन देहा करि जोत दिपावे ॥

१ यहां अनिर्भपुरी (सहज समाधि) की अवस्था का वर्णन है। वहां गुप्त सगीत ध्वनि अनीन्द्रिय ज्ञान से प्राप्त है।

७३

मूप मनि सुम्ह कहू समिम्भ्रक । करि मिवेक सुम्ह नैन दिपाऊ ।।
अवि तै अनिम जगति से पायो । माति गर्भ ते कहा लहमायो ।।
कहा मापि कहा मोह दिपाई । अठिर माति ते अनिम्यो भाई ।।
जिन न धारि इहि यनिठ मनाई । गुनि मविगुन सम नाह सुम्हाऊ ।।
पनिनी मस्थानि पै प्रगिटायो । प्रभिमै पाछ जगि दिपसायो ।।
बहुक बास मवस्था त्यागा । भरि जोमिन नारी मगि मागी ।।
तबि हरि सुम कों ना विसरायो । जा परालभित सो मानपहुमायो ।।
माना भाति रस्मा सुम्ह करी । रिदे विसार चिति नाहै धरी ।।
रे सठ ते एकु गुनि नाहीं मान्यो । रम्यो भौरि चित स विसरान्यो ।।
मनंति स्वाद रसना नवि पायो । हरि के गुनि गावन विसरायो ।।
श्रविनी माद सुन्यो नवि हीस । मञ्जित ध्यानि घूको तबि ही से ।।
नैन पीविस मगिस निहारयो । माति पिता बनिता चित धारयो ।।
जहां हरि मक्त तहां नहीं जावे । जहा ठगित गति तहां सिधावे ।।
मह हरि गुन इहि सो गुनि कीने । मूर्ख सठ स प्रसु न चीन्हे ।।
जो माविस भावित जानो । साईं दास मवि उलिटि पछानो ।।

नाना रगिहो पसरयो जिन जान्या तिनि जानि ।
साईं दाम जिन जानियो सुप पाइयो मानदि में गसतानि ।।

७४

कोई नागा बनि उठि धावे[1] । उनि माही मैं मलिप सपाव ।।
निमिहूं जटा बधाइ सीस । उनि जानियो एमा जगिदीस ।।
जोगी होवे कान पडाए । उनि ऐसे हरि जानि मपाए ।।
कोऊ मस्यायरि क है मामा । काहू प मनि माह हुसामी ।।
कोऊ बरागी बनि भए । ब्रान्मि तिमक मग मैं दए ।।
कोऊ मुप से बचिन न भापे । मोन गहे हरि एम लाप ।।
कोऊ ज्ञानि विज्ञान बिचार । यथा गौतम हरि ज्ञानि विचारे ।।
कोऊ पटि शास्त्र बीचारी । जपे नामु श्री कृष्न मुरारी ।।
जो कबुद्धि है त्यागन हार । गा उधिर मे ज्ञानि बीचार ।।

1 ईश्वर भक्ति अनेक रूपों में की जाती है ।

बिना भानि¹ उजिआरा होवहि । मनिकी मैल सबिद² गुरि धोवहि ॥
भानि भया जबि आपनिहारा । साईं दास तबि भ्रम मृग मारा ॥
महा बिकटि श्रति बाटि है पगि ठहराबिति नाह ।
साईं दास इति बिच पौहुचि न पाईए बिहुगम फासी माह ॥

७१

महा बिगट मार्ग मेरे भाई । किसमति पगि फुनि धरियो नि जाई ॥
पगि ते मगि पगि धरिन न पाई । सुनिउ वकिल गुर होव सहाई ॥
जो तुमरी किरपा जनि पर होई । तारे पार पहो जनि सोई ॥
भव कूप कछु नाह सुझावत । सूझत नाह न कछु दिखावत ॥
होइ हैरान रह्यो थकताई । साईं दास हरिदास सहाई ॥
गुनि आगिर अगिवान है नागिर ताको नामु ।
साईं दास नाम अमंत अमति है सिमरो आठों जाम ॥

७२

गुनि आगिर अगिवान कहोजे । सिमरनि आठों जाम करीजे ॥
एकु पलु बिसम नि करियो भाई । निसबासरि ताहू गुनि गाई ॥
बिमल बुद्धि उजिआरा होइ । जाति पात दूसर नि कोई ॥
रामा पदि के भगति गाऊं । जो गावो तो सरिगा धाऊ ॥
आनि देव फल को है दायक । ताते मुक्त और नहीं लायक ॥
जो आनि देव किरपा जनि धारी । जो निरधाहरि होय बिचारी ॥³
जबि किरपाल होवे जावोराय । तबि फल आन देव जनि पाय ॥
ताते एह भसा मन भावे । राम नाम बिन आन सुनावे ॥
नारायणि निर्भौ सुखदायक । साईं दास भक्ति लायो पायक ॥
सलोकु—मूर्ख मनि समझविहो समझत नाही काय ।
साईं दास हरि प्रसाद सुन सहज मैं संसा चित ते लाहु⁴ ॥

---

१ भानि < भानु = सूर्य ।
२ सबिद गुरि = शब्द गुरु ।
३ अजन्य भक्ति पर बल—ईश्वर ही मुक्ति का दाता और देव केवल फल दायक ।
४ लाहु = उतारना (पंजाबी शब्द)

अनेक भांत भ्रम रूपि पसारा। सम दिष्टी जिन नैम निहारा ॥
साईं दास बिन सम करि आना। तांका भ्रम उतिरयो मनि माना ॥
सलोक—गुमरी गति मैं क्या कहों मति थोड़ी चित धारि।
भमि चित तू करि धारयो अति दीर्घ तिह संधि ॥

७५

गुमरी गति मैं कहा बखानो। मति थोड़ी चितु कहनि न जानो ॥
सम नामि¹ कछु अति ना पायो। सकरि जोगि ध्यानि चित लायो ॥
पन्ति बेद पन्ति पछिताने। नारिद बीन बजाय भुलाने ॥
बम नग्नि परासर पवन कमायो। रिष शृंगारिष पतन करायो ॥
गौतम सरीपा प्रीत रचाए। व्यास प्रमस्त हरि के गुन गाए ॥
मुकि माता विष ज्ञानि बीचारी। अतु ना पायो तिह बनिवारी ॥
साइदास अविगति करि जानो। गुरि प्रसादि चिता उतिरानो ॥
जो निर्भौ बनि मान के साथे पंचो दूत।
निरिमलि होनिरमलि भए मरिपति सकल अविदूति ॥

७६

जिम हरि जाना आप पछाना। आप पछान ताहू रूप माना।
उमिटि बिचार पड़ो जबि हीले। सुधि मिथ्यानि पायो तबि हीले ॥
मानु सहज अमिसाना जाय। मनि की दुबधा सकल चुकाय ॥
रुपि रेप हरि बिछु समानो। भयो गोई वा दिष्ट परानो ॥
सुधि सागिर माहू समायो। परिम पदार्थ तिस ही पायो ॥
प्रगिटि सुगध बसे अगि माही। पर्म जोत सो सहजि मिलाही ॥
साईं दास प्रम घटि मैं पेखा। तत्त सरूप अरूप अरेखा ॥
मूल सम्हालो आपना काहू जो कहा भइयो।
साईं दास कौन रूप हो पसरयो ससा खोगि गयों ॥

---

१ तुलसीम रसखान—
शेष महेश गनेस दिनेस सुरेस हु जाहि निरन्तर गावें।
जाहि अनादि अनन्त अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावें।
नारद सेसु ब्यास रटे पचि हारे तऊ पुनि पार न पावें।
२ प्रभु के दर्शन भीतर ही हुए— पर था वह निर्गुन।

७७

रक्त बिंद तें उतिपति भयो। फुनि दस मास गर्भ में रह्यो ॥
अस्त रोम सुधा फुनि नाडी। उनि सम तू करि देह सवारी ॥
तांके मधि द्वार धरे बनाई। दसिवा गुपत द्वार मेरे भाई ॥
गुपत द्वारा सीस मभारी। सुनि ले हो रम रहियो मुरारी ॥
दोनों श्रवनी भौर सुनीजे। नासका गंध सुगंधे लीजे ॥
दोनों नेत्र धरे बनाई। मुषि दुभारा सुनहो मेरे भाई॥
मूत्रि द्वारा मविर बीचारो। इन्द्री द्वारा रिवे जनि धारो ॥
अस्थन फुन रोम दो भए। होइ अतीत सोहंम पदि गए ॥
माभा द्वार मम पछानो। इहि फुन पौना को अस्थानो ॥
दसों द्वार परिसिद्ध बताई। मीके वाम कछु मिलन न पाई ॥
साई दास इहि करो विचारा। सो जाने जो ज्ञानन द्वारा ॥
गुप्त द्वार की बाति सभ सुनि करि चित्त धरि प्रेम।
साई दास सदा भूको हरि भजो रवि सुति त्रास नि देम ॥

७८

जबि आतम तहा आइ समाया। सुर्त निर्त सम यगि विसराया ॥
अगिहदि सविद उठति जकारा। निस वासर अनिभ भुनकारा ॥
देह सुत कछु रहनि न होम। ब्रह्म जोत सो जाय मिलोम ॥
नाना भांत वर्जंत्र जु बाजे। ताल मृदंग भ्रमरी गाजे ॥
रह्यो विस्माइ तहा जाय समाई। साई दास कछु कहि न जाई ॥
ससोहु—श्रविन द्वार की बात सभ सुनिए जनि परिमान।
कथा कीर्त्तन श्रविनी सुनो पूर्ण पद सुरि ज्ञान ॥

७९

श्रविन सुनो सुन हरि की बानी। कथा कीर्तन सुनो आनंद बानी ॥
भाउ प्रीति हरि जस सुन जाना। मन करों फल नाहन मानो ॥
प्रीति करो हरि हरि जस सुनही। गुर जनि बचिन रिद पुनि धरिही ॥
भला बुरा फुन कर्म विचारा। श्रविन धारि जसि सुनित जैकारा ॥

---

१ देह के नवद्वारों का वर्णन। दसवें द्वार मे प्रभु हैं, इसे ब्रह्मरंध्र कहा है। इसे ही गुप्त द्वार कहा है।

साईं दास अबमम सुनि मीचे। हरि जसु सुनो सुप चाहा जीके ॥
सलोकु—नम शांति सम भायो ही, प्रेम लाहा सुनि सहु।
साईंदास परिमन हरि का सम माह है सुनि चित अथिर न देहु ॥

८०

नैम पसारि रूप हरि देषा। ननन माह यक हरि भेषा ॥
नैम निर्प चखे मगि माही। वस्तु मिप जानि नैन सुमाही ॥
मैन निर्प सकस विषि सूझे। भेद पवति नैननि हर बूझे ॥
नैन निर्प भषा बुरा पछान। नन निय हरि को जसु जाने ॥
साईं दास नैननि की बानी। को जनि जाने बहुा सियानी ॥
सलोकु—गुप्त मवनि नैनम कहे नासिका कहित विपमान।
साईं दास रे नर सुनि मम में करो प्रेम प्रीति नेहो ठान ॥

८१

गंध सुगंध लेति ही रहे। ताका कहि बिउहार यु कहे ॥
लेत सुगंध हर्षे यहु मामे। आतम सुप परिसंन्न पछाने ॥
मानो बिरिख[1] मिलयो जसि धारा। हरिमा होत संगि ले परिवारा ॥
मानो कुस्म पिरपो मेरे भाई। हरिय बदिम तिन दीयो उचिराई ॥
गंध लेत बहु सुकिष करायो। और लेति तांपरि ठहिरायो ॥
कहा मया को ऐसा कीयो। अति सुमध गंध तै पीयो ॥
साईं दास तै आप सुनायो। प्रेम भाउ कछु नाहु दुरायो ॥
सलोकु—सति गुरि नाम मंत्र दीयो[2] कीनो तिमर बिनास।
साईं दास मो भूका मनिमे भयो होयो सहिज प्रकास ॥

८२

सति गुरि जबिही मंत्र त्रिडायो। सकिभी मनि को मीत चुकायो ॥
जबिही मीत चुकी मेरे भाई। दुमता सहिज दीयो हुराई ॥
जबि ही दुमता मिटि गई मनि ते। पांच दूत भाये तम तनि ते ॥
गए दूत नगर सुपु पायो। निर्भौ होय मम लोकु बसायो ॥
गृह गृह माही मंगल गायो। मगिन मैया सुप सहज समायो ॥

---

1 बिरिख<वृक्ष।
2 साईंदास जी की मुक्ति—गुरुमन द्वारा।

मुषि द्वारे हरि के गुनि गावे। हरि रस माता सदा झुम्झये॥
जो योले सो मंवुल बांनी। मुष द्वारे हरि नामु विषानी॥
हरि का नामु सदा मुष माषो। प्रेम पिआला अमृति चाषो॥
मषयन भनिन ही रोम द्वारे। सोहं शबिद सबा उचिआरे॥
नामि कुआर में पविना रहे। सदा सदा हरि के गुन गहे॥
मुषि भाषित जनि मुक्ता होवे। साई दास सुष सागिर सोवे॥
जवि इस्त्री द्वार मै ठहिरसे काम भोगि सुष मान।
साईं दास तिरीआ मतर सभोगही बहु विष हो गसतान॥

८३

जवि इस्त्री मनि मथन करावे। होइ ध्यावल सुष विसरावे॥
मदि माता परि-धर्नं[1] गिराई। सूझति माति पिता नहीं भाई॥
गुर जनि वेद सिमृति विसराया। मतिवारा मदि विषी ग्रायो॥
नैमन माह ममो मपमारा। मूसत विसिर जनि हारा॥
प्रथिमे वचन सो दीयो बिसराई। जवि मतिवारा होय विपु पाई॥
हरि का भजनु तविही भुलानो। दारा सो भितु महु विष मानो॥
साई दास हरि दीयों तजाई। रे सठि तै कछु समझ नि पाई॥
सो०—मूस द्वारे माइयो सहज भयो मन माह।
साईंदास भोगि ध्यान जनि उलिटि परियो मनि माह॥

८४

सहिजे मूल द्वारा सरिही। जो सरिहा दुरगंध निकरिही॥
जो कछु सहिजि माह होइ भाई। सहिजे सहज सहजि बनि आई॥
सहिज समुद्रि शानि कहीजे। गुरि परिसाद राम रस पीजे॥
एते गुन हरि ताह जो दीए। तांको कहा विसारो हीए॥
निसवासरि तांको चितु दीजै। हरि सिमरन आलस नही कीजे॥
कनिक कामिनी मैं उरिझायो। ममिमथ[2] सो हेत बढायो॥
मिथ्या रूप करि निहिचे जांनो। साच कहो करि मनि मैं मानो॥

---

१ परिधर्म=पर स्त्री।

२ ममिमथ<मन्मथ=कामदेव (स्वर भक्ति)

माई दास ध्यवनन सुनि नीके। हरि जसु मुनो सुप माह। ओके ॥
सलोकु—नैन वाति सम भाषी ही भ्रम साहा सुमि मह।
साईंदास बरिसन हरि का सम माह है मुनि बिल मबिर न देह ॥

८

नैन पसारि रूप हरि देया। नैनन माह भये हरि सपा ॥
नैम निर्य भसे ममि माही। बस्तु निर्य जनि नैम मुमाही ॥
नैन निर्य सकल बिधि सूझे। वेद पठति मैननि हर बूझे ॥
मैम निर्य भला बुरा पछाने। नैन निर्य हरि को जसु जाने ॥
साईं दास नैमनि की बानी। को जनि जाने ब्रह्म गियानी ॥
सलोक—गुप्त भवति नैनन कहे मासिका कहित बिपमान।
साईं दास रे नर सुनि मन में धरो प्रेम प्रीति सेहा ठान ॥

८१

गम सुगम मेति ही रहे। तोका हहि बिलहार पा कहे ॥
मेत सुगम हर्ष बहु मामे। श्रातम सुप परिसंन्न पछाने ॥
मानो बिरिख[1] मिलयो जलि भारा। हरिया होठ सगि से परिवारा ॥
मामो कुस्म पिरधो मेरे माई। हरिपरदिन तिन दीयो उभिराई ॥
गम मेत बहु सुकिल करायो। श्रौर मति तापरि ठहिरायो ॥
कहा भला जो ऐसा कीयो। श्रति सुगम गम तैं कीयो ॥
माईं दास तैं माप सुनायो। प्रेम माठ कछ माह कुरायो ॥
सलोकु—मति गुरि नाम मन दीयो[2] कीनो तिमर बिनास।
साईं दास मी चूका भमिमै भयो होयो सहिज प्रकास ॥

८२

सति गुरि जबिही मंत्र द्रिड़ायो। सकिली मनि की भीत चुकायो ॥
जबिही भीत चुकी मेरे मार्ह। दुमता सहिये दीयो हराई ॥
जबि ही दुमता मिटि गई ममि ते। पांच दूत मासे तब तमि ते ॥
गए दूत नगर सुपु पायो। निर्भो होय सम लोकु बसायो ॥
गृह गृह माही मंगल गामो। मगिन भैया सुप सहज समामो ॥

---

१ बिरिख < वृक्ष।
२ साईंदास की भी मुक्ति—गुरुमन द्वारा।

मुषि द्वारे हरि के गुनि गावे। हरि रस माता सदा झुझावे ।।
जो वोले सो अमृत बांनी। मुष द्वारे हरि नामु विषानी ।।
हरि का नामु सदा मुष भाषो। प्रेम पिआला अमृति चाषो ।।
असषम भविन ही रोम द्वारे। सोहं शविद सदा उजिआरे ।।
नाभि दुआर मे पविना रहे। सदा सदा हरि के गुन गहे ।।
मुषि भाषित जनि मुक्ता होवे। साईं दास सुष सागिर सोवे ।।
जवि इद्री द्वार मैं ठहिरले काम भोगि सुष मान।
साईं दास तिरीआ अतर सभोगही बहु विष हो गमतान ।।

८३

जवि इद्री मनि मथन करावे। होइ व्याकल सुष विसरावे ।।
मदि माता परि-धर्न¹ गिराई। सूभनि माति पिता नहीं भाई ।।
गुर जनि वेद सिमृति विसरायो। मतिवारा मदि विष्टी आयो ।।
नैनन माह भयो अमआरा। भूलत विसिर जनि हारा ।।
प्रथिमे वचन सो दीयो विसराई। जवि मतिवारा होय विपु पाई ।।
हरि का भजन् सविही भुलानो। दारा सो चितु बहु विध मानो ।।
साईं दास हरि दीयों तजाई। रे सठि त कछु समझ नि पाई ।।
जो —मूल द्वारे आइयो सहज भयो मन माह।
साईंदास जोगि ध्यान जनि उलिटि परियो मनि माह ।।

८४

महिजे मूल द्वारा सरिही। जो सरिही दुरगंध निकरिही ।।
जो कछु सहिजि माह होइ भाई। सहिजे सहज सहजि वनि आई ।।
सहिज समृद्रि शामि कहीज। गुरि परिसाद राम रस पीजे ।।
एत गुन हरि ताह जो दीए। ताको कहा विसारो हीए ।।
निसवासरि तांको चितु दीजै। हरि सिमरन आलस नहीं कीजे ।।
कनिक कामिनी मैं उरिझायो। ममिमथ² सो हेत बढायो ।।
मिथ्या रुप करि निहिचे जानो। साच कहो करि मनि मैं मानो ।।

---

१ परिधर्न = पर स्त्री।

२ ममिमथ < मन्मथ = कामदेव (स्वर भक्ति)

मान एक घरि ताक चढावो । दसिवा द्वार कपाट पुल्हावो ॥
बिना नैन गुर सिष मनि चीन्ह । गुरि प्रसादि मालस नही कीजे ॥
जा गुरि नाम नाहु दिषाए । सो सो बाव कहा सुष पाए ॥
जबि लगि दीपक करि नहीं हाथ । तबि लगि बस्तु अगोचर पोवे ॥
गुर मंतर दीपक करि जाना[1] । आंषो करि लै राहु पछाना ॥
जो गति मानसी कीया मोहो । साईं दास तब भ्रम मृग मारो ॥
जबि लग मनि सोय नहीं तबि लगि भ्रम करि जान ॥
साईं दास मृग पसु जा बनि मैं फिरि भटकति नहीं निर्बान ॥

८५

जबि लगि मन मोमी नहीं पावे । तबि लगि मनि दह दिस भरमावे ॥
जबि लग साध संग नहीं करे । तबि लग ममता भ्रमता मरे ॥
जबि लगि हरि गुन नाहीं गावे । तबि लग मुक्त न कबिहू पावे ॥
जबि लग भाग्य कीन्हे नाहीं । तबि लगि भ्रमजोनिनि जगि माही ॥
जबि लगि सत नि रिदे बसावे । तबि लग सुपनि महादुषि पावे ॥
जबि त तत मक्म घटि जाना । साईं दास प्रभु अपुना मानो ॥
सलोक—सूप मनि भजान तुं, हरि सिमरन चित धार ।
साईं दास कहिते पदि निर्वानि मैं प्रेम भाव भीचार ॥

८६

र मनि मनि किउ समझ नि आवे । कहा अनिम सु बादि गंवावे ॥
काहे मदि मतिवारा हूयो । बिष्या फल मैं पच पच मूयो ॥
कहा हाथ कछु तुमरे आयो । जो हरि नामि रिदे बिसरायो ॥
कहा भया बिरया उरि मायो । कहा भया जा नाम कहायो ॥
कहा भया सिर जटा बधाई । कहा भया जो मूंड मुंडाई ॥
कहा भया सिरनाम उडायो । कहा भया भगि पग सिखायो ॥
कहा भयो मूप बेर बनाया । कहा भया जो जोग कमायो ॥
कहा भया जो काम छिपाया । कहा भया वामूनि भजायो ॥
कहा भया प्रथिवीपति भया । जु हरि को नाम नि मनि में सियो ॥
साईं दास साईं परिवाम । गुरि का मविन घटि सब पछान ॥

---

1 गुरमत को दीपक की उपमा दी है ।

रे मन हरि भजि लीजिए, तजीए मान गुमान।
साईदास प्रेम भावि सुप पाईए होइ न कबिहू हान॥

८७

हरि का नामु सदा चित धारो। गुनावादि हरि नाहु बिसारो॥
सुप सागिर हरि नामु ध्यावो। पर्म मुक्त गति तबि ही पावो॥
मामि निधान सन्त सुपिन्दाई। रे जनि हरि का नामु सहाई॥
हरि प्रसादि सुप होवे तनि को। कलिपना मूल न ब्यापे मनि को॥
प्रनिहदि नामु नियानि बिहारी। सुपि सागिरि हरि हिरदे धारी॥
कौसापति सुपि नासन नामा। घटि घटि माहु रह्यो बिसरामा॥
साईदास गोविंद गुनि गावो। प्रेम भाउ चित माहु वसावो॥
मनिमथ जबिही नाथयो सहिज भयो मनि माहु।
साईदास तीन ताप सताप सभ चूके दुपि कछु नाहु॥

८८

मनिमथि[1] जबिही नन निहारे। तीन ताप सताप निवारे॥
निप रूप सहज मनि मानो। रूप माहु सुप प्रानदि जानो॥
प्रानि जीवि गोवर्धन धारी। पलि पलि छिनि छिनि मे बलिहारी॥
सोइ सविन्त मदा पुन करति हो। प्रसिवरि ज्यु फुन[2] सुमन्त पढति हो॥
कुसम रूप[3] जबि नैन करति हो। हिरदे प्रौर म प्रान धरत हो॥
तांको बरि मस्तक गुर देवा। तातै प्रगिट भई जगि सेवा॥
सुरि नरि रिप मुन सुप जनि पायो। तानि भाउ दरसन को धायो॥
दरस निप भयो हैराना। प्रप्रज[4] बानि नही जाति बिपाना[5]॥
प्रगिम प्रगोचरि भाप सुनाया। जिन बूझ्या तिन ही सुप पायो॥

---

१ मनिमथ <मन्मथ=यहाँ श्रीकृष्ण भगवान् के लिए आया है। श्रीमद्भागवत में भगवान् श्रीकृष्ण को काम का अवतार माना है।

२ फुन—वैसे इस ग्रन्थ में फुन शब्द पुन के लिए आया है। पर यहाँ इस का अर्थ पुष्प=पुष्प से है। सम्भावना है कि लिपिकार पुष्प के स्थान पर 'फुन' लिख गया है।

३ कुसमरूप—यह शब्द भी भगवान् श्रीकृष्ण के लिए आया है।

४ प्रप्रजं <आश्चर्य।

५. बिपाना <व्याख्यान>बखान।

माठ एक भरि थाक बढ़ायो। दसिवा द्वार कपाट पुल्हायो ॥
बिना नैन गुर सिष मनि जोवै। गुरि प्रसादि आलस नहीं कीवै ॥
जो गुरि माग माह दिपाए। तो लो वात कहा सुष पाए ॥
जवि लगि दीपक करि नहीं हाथे। तवि लगि वस्तु अगोचर पोथे ॥
घर भतर दीपक करि जानो'। वांको करि लै राह पछानो ॥
जो गति आपनी कीआ सोडो। साईं दास तव भ्रम मृग मोडो ॥
जबि लग मनि सोध नहीं तबि लगि भ्रम करि जान ॥
साईं दास मृग पसु जो मनि मैं फिरै बकसि नहीं निर्वान ॥

८५

जबि लगि मन सामी नहीं पावे। तबि लगि मनि दह दिस भरमावे ॥
जबि लग साध सग नहीं करे। तबि लग भ्रमता भ्रमता मरे ॥
जबि लगि हरि गुन नाहीं गावे। तबि लग मुक्त न कबिहू पावे ॥
जबि लग आत्म चीन्हे नाहीं। तबि लगि पुगजोनि बिनि बाणि माही ॥
जबि लगि तत्त सि रिदे समावे। तबि लग सुखगि महासुषि पावे ॥
जबि ते तत्त सकल घटि जानो। साईं दास प्रभु अपुना मानो ॥
सलोक—भूप मनि अमान तू, हरि सिमरन चित धार।
साईं दास पढ़िये पनि निर्वानि मैं प्रेम भावि बीचार ॥

८६

र मठि मनि क्रित ममभक नि भावे। कहा पनिम तू बादि संवावे ॥
काहे मदि मनिबारा हूयो। मिथ्या कस मैं पच पच मूया ॥
कहा भाम नधु तुमर आयो। जो हरि नामि रिदे बिसरायो ॥
कहा भया विदया करि आयो। कहा भया जा मास बधायो ॥
कहा भैया सिर जटा बधाई। कहा भया जो मूंडि मुडाई ॥
कहा भया मिरगाम उठायो। कहा भया बनि पंक सिधायो ॥
कहा भयो भूप भेद बनाया। कहा भया जो जोग धनायो ॥
कहा भया जो काम छिपाया। कहा भया बाभूति चढ़ायो ॥
कहा भया अपिबोपनि भयो। जु हरि को नाम नि मनि में लियो ॥
साईं दास साईं पछियान। गुरि का सबदि घटि भये पछान ॥

१ मरमत को दीपक भी कहता ही है।

रे मन हरि भजि लीजिए, तजीए मान गुमान।
साईदास प्रेम भावि सुप पाईए होइ न कबिहू हान॥

८७

हरि का नामु सत्त चित धारो। गुनावादि हरि नाहू विसारो॥
सुप सागिर हरि नामु ध्यावो। पभ मुक्त गति तबि ही पावों॥
नामि निधान सदा सुपिदाई। रे जनि हरि का नामु सहाई॥
हरि प्रसादि सुप होवे तनि को। कलिपना मूल न ब्यापे मनि को॥
मनिहूवि नामु निधानि विहारी। सुपि सागिरि हरि हिरदे धारो॥
कौसापति दुपि नासन नामा। घटि घटि माहू रह्या विसरामा॥
साईदास गोविंद गुनि गावो। प्रेम भाउ चित माहू वसावो॥
मनिमथ अविही मायथो सहिज भयो मनि माहू।
साईदास तीन ताप सताप सम चूके दुपि कछु नाह॥

८८

मनिमथि[1] अविही नन निहारे। तीन ताप सताप निवारे॥
सिर्प रूप सहज मनि मानो। रूप माहू सुप आनंदि जानो॥
प्रानि जीवि गोवर्धन धारी। पलि पलि छिनि छिनि म बलिहारी॥
साईं सविन मन्न धुन करति हो। अमिवरि ज्यूं फुन[2] सुभर पढति हो॥
कुसम रूप[3] अवि मैन करति हो। हिरदे और न आन धरत हो॥
तांको धरि मस्तक गुर देवा। तासे प्रगिट भई जगि सेवा॥
सुरि मरि रिप मुन सुप जनि पायो। तासि काल दसन को आया॥
रसो निप भयों हैराना। अपरज[4] बानि नही आनि बिपाना[5]॥
अगिम अगोचरि माप सुनायो। जिन बूझया तिन ही सुप पाया॥

---

१ मनिमथ<मन्मथ—यहां श्रीकृष्ण भगवान् के लिए आया है। श्रीमद्भागवत में भगवान् श्रीकृष्ण को काम का अवतार माना है।

२ फुन—वैसे इस ग्रन्थ में फुन शब्द पुन के लिए आया है। पर यहां पन अर्थ पुष्प=पुष्प से है। सम्भावना है कि लिपिकार पुष्प के स्थान पर 'फुन' लिख गया है।

३ कुसमरूप—यह शब्द भी भगवान् श्रीकृष्ण के लिए आया है।

४ अपरज<आश्चर्य।

५ बिपाना<व्याख्यान>बखान।

घाठ एक धरि ताक चढावो। दसिवा द्वार कपाट पुल्हावो ॥
विना नैन गुर सिष मनि जीअ। गुरि प्रसादि आसस नहीं कीजे ॥
जो गुरि माग नाहु दिपाए। तौ सौ बात कहा सुभ पाए ॥
जबि लगि दीपक करि नहीं होवे। तबि लगि वस्तु अगोचर पोवे ॥
गुर मतर दीपक करि जानो¹। बांको करि लै राहु पछानो ॥
जो गति आपनी कीआ लोडो। साईं दास तव भ्रम मृग मोडो ॥
जबि लग मनि सोधे नहीं तबि लगि भ्रम करि बान ॥
साईं दास मृग पसु जो बनि मैं फिरै, चहति नहीं निर्बान ॥

८५

जबि लगि मम सोझी नहीं पावे। तबि लगि मनि वहु विस भरमावे ॥
जबि लग सांध सग नहीं करे। तबि लग भ्रमता भ्रमता मरे ॥
जबि लगि हरि गुन नाही गावे। तबि लग मुक्त न कबिहूं पावे ॥
जबि लग आतम चीन्हे नाही। तबि लगि दुखजीविनि जगि माहीं ॥
जबि लगि तत्त नि रिदे बसावे। तबि लग मुकति महादुपि पावे ॥
जबि ते तत्त सकल बनि जानो। साईं दास प्रभु अपुना मानो ॥
सलोक—मूर्ष मनि अज्ञान तू, हरि सिमरन चित धार।
साईं दास बढिते पनि निर्बानि मैं प्रेम भावि बीचार ॥

८६

रे मठि मनि किउ समझ नि आवे। कहा अमिम तू बादि गंवावे ॥
काहे मचि मनिबारा हूयो। मिथ्या फल मैं पच पच मूयो ॥
कहा हाथ कछु तुमरे आयो। जो हरि नामि रिदे बिसरायो ॥
कहा भया विद्या उरि आयो। कहा भया जो मान बधायो ॥
कहा भया सिर जटा बधाई। कहा भया जो मूडि मुडाई ॥
कहा भयो मिरगान उडायो। कहा भया बनि पंथ सिधायो ॥
कहा भयो मुप बैन बतायो। कहा भया जो जोग कमायो ॥
कहा भया जो काम छिपायो। कहा भया बाभूति चढायो ॥
कहा भयो प्रथिवीपति भयो। जु हरि को नाम नि मनि मे लियो ॥
साईं दास सोई परिवान। गुरि का सविद बढि मये पछान ॥

---

१ गुरुमन्त्र को दीपक की उपमा दी है।

पूरन नामु सुष देवन हारा। सकल सरूप ताहू सिर भारा॥
आपि एक अनेक विपायो। जिन समझियो तिन आप लपायो॥
अपिना आपि आप जिन साख्यो। हरि रस अमृत निज परिचाख्यो॥
हरि रस अमृत जिनही पीआ। ताका सति गुर क्रपा कर दीया॥
सतिगुर किरपा ताहू धारे। रतन ज्ञानि जिन लीया विचारे॥
जाके घटि मय भयो उजिआरा। सो जनि प्रेम सो सदा पुआरा॥
उजिआरा घटि ताहू हूआ। जो नरि जवि ते जीवित मूआ[1]॥
जीवित मूआ सोई जानु। जिन ने मारा अपुना मानु॥
अपिना मनूआ जिन ने मारा। मति गुरि मनु रिदै विचारा॥
साईं दास सहज घरि मांही। सिमरो हरि सताप मिटाहीं॥

कुसम रूप सुष सहजि मे निर्वयो रूप अनम।
साईं दास मैन अतिर निरपयो मानिस जनम दुर्लम॥

११

मानिस जनिम दुरलभ जो पाया। विन हर सिमरन वादि गवायो॥
जवि लग कुसम रहित सगि वेसा। तवि लगि होता रूप सुहेसा॥
वेस सो तोड डार जवि दीआ। औरि रूप निर्वस छिन लीआ[2]॥
कुमलाना फिरि काम न आयो। डारि दीयो घरि राष मिलायो॥
तैसो रूपु मानस को भाई। पुन्न कीए तै देहरी पाई॥
इसि देहरी को सुर मरि ध्यावे। अग्नि कर सौ भी नहीं पावे॥
इहि प्रजोग ही जतन करावे। देह पाई तै भगित कमावे॥
रे सठि तै कछु मत्त[4] नि मावे। आवर वा सभ वादि गवावे॥
सो समझे सो उसिटि पछोजे। साध संग मिल हरि जसु कीजे॥
एहि समा फिर हाथ नि आवे। आलस करि करि जनमु गवावे॥
भजि मनि राम नाम समाई। तिह प्रसादि दुष पासु ना कोई॥
सिमृति वेद पुराण सुनावे। समझि देष गुरि भाप सुमावे॥

---

१ जीवित मूआ—जीते जी मरना साधक का लक्षण है।
२ यहां जीवित मूआ की परिभाषा दी गई है।
३ आवरना मे कुसुम को उपमान चुना है।
४ मत्त<मति।

बेगरी[1] पद आके मनि बसे। नामि पदारथ बिन मैं नाउ ॥
आप कहे कहा सुन न आई। बेगरी पदि मो रह्यो बिल्हाई ॥
अति पवरी पदि मनि माही लागा। नामि पदारथ तिन ते भागा ॥
समझिवि नाहीं क्या समझावे। साईं दास सत सबदि बिल्हावे ॥

हरिजनि सोई आपिए जिह घटि कपिट नि होय।
साईं दास जिह घटि कपिट न होवही सदा सुखी नरि सोय ॥

८९

हरि जनि के मनि सोई भावे। आपा तिआग नीच[3] कहावे ॥
नीच कहावे सो सोमिध पावे। जो निध पावे सुप सहिज मिलावे ॥
सहिज मिलानो जबि ही भाई। मगिरी तसकरि मूल नि पाई ॥
तसकरि तविही त्यागे जाई। मनिपुर मिल जबि बूझ बुझाई ॥
धतिर सोच सीधा जबि तबि ही। मति गभीर दाता जनि जबि ही ॥
संसा सोक ब्यापे कछु नाही। बहु निध पाई सुप सहुज मिलाही ॥
ससा सोग नि कबि हु पावे। जबि ते दुसन्न मनि मिट जावे ॥
दुमिता चूकत है फुन बाकी। हरि सभि प्रीत लगी है जांकी ॥
हरि सा प्रीत ममक जबि लाई। सभ सो अपिनी जोत दिपाई ॥
जबि ही जोगि मिले सग सम ही। उमिटि पड़ो हरि होमो तबि ही ॥
साईं दास जिम आप बुलायो। सुपि आमवि अनंदि समायो ॥

सो —अबिनी नाम निधान हरि, जिह मिमरति गति होइ[5]।
साईं दास बिना नाम नगिबान के और नहीं है कोइ ॥

९

मिमरो नामुनिधानि बिहारी। कौलापति मिभवनि दातारी[6] ॥

---

१ बेगरीपद = अविनाशीपद—जहां के शून्य में रमण करने वाले मुक्ति पुरुष में नाथ का ही नाम है। वहा काल की आवश्यकता नहीं।

२ 'हरिजन' (प्रभु का भक्त) की परिभाषा उसका महत्व दिया है।

३ नीच = नम्र।

४ तसकरि < तस्कर = चोर—काम क्रोध लोभ मोह आदि चोर हैं।

५ प्रभु स्मरण से ही गति (मुक्ति) मिल सकती है।

६ 'दातारी' शब्द यहां 'दाता' के अर्थ में आया है। 'दाता' √दा धातु से 'ता' कर्तृवाचक प्रत्यय (तृच्) से बना है। पंजाबी में इस तृच् कर्तृवाचक प्रत्यय के लिए 'आरी' का प्रयोग मिलता है जैसे सिखारी (सेवक)।

सलोकु—मूंड मुडाय कहा भयो अबि लगि मनि न मुडाय।
साईंदास मनि मूंडे मुड मुडीए इसिविध मूड मुडाय[1]॥

१४

मूंड मुडाय कहा जु भयोही। अबि ते मनि न करोध गयोही॥
मनि नही मूड मुडायो। भेष बनाइ जगति विपिलायो॥
मूंडे मूडे कछ्ा नछु नाही। मनि मूडे मूड सहज मुडाही॥
बैरागी छोवनि उठि धायो। मानो मृगि बनबासा पायो॥
बनि मैं मिर्ग रहति कछु थोरे। कहा जाति बनि दौर बौर॥
विनु भगिवान सकल विष बार। साईंदास गोविंद करि भाव॥

सलोकु—कान पडाय कहा भयो सिंही चर न समाय।
पिष उतारे कपट की जुगत न जोगि कमाय॥

१५

कान पडाए दर्सन करियो। मनि नाहीं चीन्हें परियो॥
नाथ नाथ भूप भाव सुनायो। मलाकर्न नि हेत बधायो॥
भेष धरयो फुन कर्म बिसारयो। नाथ नाथ फुन नाम जितारयो॥
मनि चाहै कछु औरे करे। परि घरि मूसन[3] सों चित धरै॥
अनाहदि सविद न नादि बजायो। हीये मत्र गुर नाह सुनायो॥
पिया क्षमा नि मनि पहिराई। कानि पडाय कहा भयो भाई॥
पत्तर सहिज विचार नि कीनो। डंडा ह्राथ ग्यानि नही लीनो॥
भाउ बभूति अंग न लगाई। गुटिका पौन समाधि न लाई॥
पंपिडी कसा ववेक ना कीयों। मुकन्द[4] परस सुप सहिजे दीयो॥

---

१ कबीर से मिलते जुलते विचार—
केसन कहा बिगारिया जो मूडे बार बार।
मन को क्यों नहीं मूडिये जामे भरया विषय विकार॥

२ पाखंडी साधुओं की यहां निन्दा की गई है। वे कान फड़वाते हैं। मन का वश नहीं करते। साधुओं का भेस धारन करते हैं। मुह से नाथ नाथ कहते हैं। किन्तु मन में कुछ और ही सोचते रहते हैं। दूसरे घर चोरी करने की बात सोचते रहते हैं।

३ मुसन < मुष्णाति = चुराना।

४ मुकन्द = श्रीकृष्ण—मुकन्ददास साईंदास जी के पुत्र।

गरभ देह मधि मैं जो कह्यो। तांते सत कछ थविर ना सह्यो ॥
उमिग उमिग अधिहरि का गावो। दुमत्त मनि ते सकिम मिटावो ॥
जबि ते दुमथा मनि मिटि जाई। सहिज बैकुंठ सदा सुधि पाई ॥
साईंदास सिमरण हरिकारी[1]। धोर तियागि हरि सर्न तिहारी ॥
सलोक—प्रथिवीपति जबि हाइयो कहा भया मेरे मीत।
साईंदास जबि लगि राम ना जानयों कसो निर्मल चीति ॥

६२

कहा भया प्रथिवीपति भयो। जबि लगि राम नाम नहीं लयो ॥
सकिली प्रथिवी भई दुहाई। कहा भया कहु मेरे भाई ॥
सबिस जगित ने सीसु निवायो। महाराज करि नामु बुलायो ॥
भांति भांति के महल उसारे। हाथी घोरे बहु बिस्तारे ॥
सैना अधिक मैं संगि फिराई। अमिक कामनी बेष सुभाई ॥
अंति समै कछ संगि न आई। मात पिता बनिता सुति भाई ॥
जबि रविसुति ने फांसी डारे। मुंमदरि सेती सीसु प्रहारे ॥
रुदनु करे करि हाथ पछोरे। हा हा करत चलित नहीं जोरे ॥
तब ऐ कहा रहिभा सम पाछे। संगि नि चलिति बिना गुन आछे ॥
बिनु भगिवान सकल बिभ वादि। साईंदास गोबिंद करि याद ॥
सलोक—निविसी कर्म कमायो कहा भयो मेरे बीरि।
साईंदास जबि लगि मनि सोधे नही अथल अपल गभीरि ॥

६३

निविसी कर्म कहा भयो करियो। मानि गुमानि रिदे मैं धीयो ॥
आपन को करि साध कहायो। हरि का नामु ना रिदे बिधायो ॥
जगति माह पसरी प्रभताई। महा कठन बहु जतन कमाई ॥
अंतिर बाहर धामे धरी। कठन तपस्या साधन करी ॥
बाहरि अंतिर माही डारे। निवली करम कर ततिकारे ॥
इहि बिध कीए मुक्त नहीं होवे। जबि लगि दुमता मनि नहीं धोवे ॥
बिन भगिवान सकिम बिभ वादि। साईंदास गोबिंद करि यादि ॥

---

१ हरिकारी—हरि बड़ा (ईश्वर) बनाने वाला।

सलोक—जती[1] नामु जगि मैं कहे इद्री वस करि नाह।
साँईदास रूप कामिनी देष के प्रातम को भरिमाह॥

१८

कामिनी रूपि जो निप लुभाही। मिथ्या नाम सो जती कहाही॥
मान महति ना वस नही भ्रान। नामु जती मुपि झूठ वपाने॥
द्रिढ करि रापे नही इद्री ताँई। कौन जुगत ते जती कहाही॥
भ्रिग एह अनिमु विना हर बानी। अवि लग भ्रघ न होवा ज्ञानी॥
करि विवेक इद्री वस करिही। गुरि का सविदु पड़गु[2] से मरिही॥
विना सविद जो सती कहावे। जो झूठी मुप घात बतावे॥
बिना भगिवान सकल विष बादि। साँईदास गोविंद करि यादि॥
सलोक—सुनिहो साधो प्रीत करि अंतर गति लिव लाय।
साँईदास प्रेम प्रवाह सदा वहे बहुविध नीके नाय॥

१९

प्रम प्रवाह वहे घटि मही। मामै भेदु भेद कछु नाही॥
समझि विचारि रिदे जो करिही। गुरि का सविद ले पचन मरिही॥
मनिमैं पदि सो रहयो मिलाय। गुरि प्रसादि सदा गुनि गाय॥
गुनि भ्रागिर भगिवानि नहारे। साध संगि मिल सदा पुमारे॥
ननिनि माह पुमार सदाही। बिना पुमारी कविहू नाही॥
नाम रता मतिवारा होय। बिन मदि पीते सुध मति पोय॥
हरिरस माता अविही भयो। मनिरस तबि ही ते तजि दयो॥
हरि रस माता भ्रौर नि जाने। मापे कहा भु नाम प्रधाने॥
नाम प्रधाने मूप नि लागे। नाम प्रधाने दुभिप्न तिभागे॥
नामि रिदे जाके मनि वसे। सहिज सुमविल रसि म रस॥
साँईदास सुप सागर माही। सदा सदा सुप सहिज समाही॥
सलोक—जो जो सरिनी साम जनि करिते निभागि सम माहि।
साँईदास जगि भीतिर सोभा मिले दरिगा हाय परिवानु॥

---

१ जति > जती यहां इसी जती की व्याख्या की है।
२. पड़गु = खड़ग = तलवार।

सोइ पदि की वाति जु पाई। इमिटि विजारयों भाप सुभाई ॥
बिन भगिवानि सकल बिधि वादि। साईदास करि गोविंद यादि ॥
सलोक—कसि बधाए सीसि पर मनि ना बढाई प्रीति।
कपिटि भक्त मनि मैं भरी धरयो नि हूरि सो चीति ॥

६६

सिखि न भभाई केस वधाए। उमी भुजा करि जमि दिपसाए ॥
मान महे मुख बचन न भाषी। करि पषड अन्न नाहीं चाषी ॥
दधि मे अहार फलाहार करिही। सकरि रूप परितस जो धरिहो ॥
रूप धारि जगि कों यस माने। मूर्ख जगि क्या उत्तर जाने ॥
निर्ये रूप हूरि सकल भुभाए। वाकी मनि की वाति न पाए ॥
मुक्त न होत कपिट मन कीये। जवि लगि साच न धरया होये ॥
बिन भगिवान सकल बिधि वादि। साईदास करि गोबिंद यादि ॥
सलोक—अगिम निगम की बात सम जान करो बीचार।
साईदास मन मे क्रोध नि रापीए मुक्त होत ततकाल ॥

६७

अगिम निगम की वात बीचारो। करि बीचार रिदे मही धारो ॥
मुखि आप मनि ना ठहिरावे। बेदि बके लकि रिदे न लिआवे ॥
चतुर्परबीन आपस कों जाने। दूसरों को सरि आप नि माने ॥
कहा जो हम सरि कौन कहावे। मानि गुमान रिदे में ल्यावे ॥
जगि महि हमसर कौन लखावे। बेद पुराण सम आप सुनावे ॥
मानि महति मैं मह्यों गलताना। रिदे छिपे धरि मान गुमाना ॥
पडति नामु कहाविन लागो। मानि महित के धरि अनुरागो ॥
सूपम पड़ै कहै जग माही। अविगतिगत कछु कहीनि जाही ॥
बेदि पडित ही भर्म भुलाही। निगिम वाति कछु रिदे वसीही ॥
बेदि कहित हरि भजन करीजे। तनि मनि अर्प गोबिंद के दीजै ॥
सब माह भगिवान बिराजे। पसि बिहंग मैं आप समाजे ॥
इहि बिध सो मनि माह न माने। आपस को उत्तम करि जाने ॥
बिनि भगिवान सकल बिध वादि। साईदास गोबिंद करि यादि ॥

रहिता रहिता भ्रम ते रहियो। गहिता गहिता अवि हरि को गहयो
हरि जो उलिटि दिपायो आप। भ्रमि तोरयो गुनि आगिर आप॥
पचि दूत तवि वस करि लीने। अवुद्धि अज्ञान तिमर दूर कीने॥
बिना ज्ञानि कछू करिज न पावे। थकित होय धरिनी लपिटाव॥
सूरा होय काया गढि जीते। साधि सगि मिल वस गति कीते॥
पायो ब्रह्म अप गति माई। उनिमनी माह रहियो समाई॥
अपिना आपु जो दीयो बिसारी। सहिज समाध जो लपे मुरारी॥
साँईदास अननि सो जाने। गुरमुपु लपे अप ब्रह्म पछाने॥
दो०—आनि बूझ बूझे सकल कहि जो कहा नि जाइ।
साँईदास नैन बिसम रसना थकित पगि हारे असिसाय॥

१०१

जानो कैसे आप सुनावो। कहो तवी जो कहिना पावो॥
जिहि नैनन करि रूप निहारा। जिहनि थक सम घटि मैं धारा॥
रूप रेप जो कछु सो भापे। अविगति गति वहु माही लापे॥
सो तो नम रहे बिसमाय। अदभअही कछु कहया नि जाय॥
अदिभुतिवातिनिरिपबिसमाय। इहि प्रजोग बिसमाद समाय॥
जो ननि बिसमा पर होई। नन निर्प रसना जो कहियो है॥
रसना थक भई अधिकाई। कही नि जाम प्रम की अभिलाई॥
मछिस मगिन भयो नही आप। प्रति समे विधि रसना लापे॥
नैनि निप रसना उचिरावे। बिन रसना कहा आप सुनावे॥
कविही नैन रहे असिसाई। पगि थकत जो रहमा उरिझाई॥
रसना कहा जो आप सुनाई। उनि को कछु पमु मा बिसराई॥
निपपस धरि अवि वासा पायो। आविन जान सकलि विसिराउो॥
निर्मो नगिरी मैं पामो वासा। भूक गियो रवि सुति को वासा॥
मगिन भयो निर्मे पुर माही। परिम जोति मंडल असिसाही॥
महिमिसुमंडिसजाय असिसामा। भरिम चूको मिटयो आविन जाना
बसे तहा अनिर्मे पुर माही। मनि मैं भास भास को माहो॥
त्रय गुनि ते जो भया निआरा[१]। अनिर्भे परस्यो भयो उजिआरा॥

---

१ तीन गुणों से रहित होने पर ही मुक्ति। गीता में श्रीकृष्णजी ने भी यही कहा है—'निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन' २।४५।

१००

सुनिहो साधो बात बीचारो। ससिकरि पथा को परिहारो ॥
कहि मन्नि मनि माह जरावो। कुभिदा ममि ते सबिस चुकावो ॥
भापि सहिज मिस भाप सिपावहु। धर्म प्रकास भाप मह सियावहु ॥
धरिनी को प्रभु प्रकासे भायो। सोहू पदि मैं निज चितु लायो[1] ॥
ससा सोक सकल मिटाई। साधि सगि जवि होव भाई ॥
बिन साधि सधि ग्रामि मही पावे। बिन गुरि कैसे बूझ बुझावै ॥
विधि भकर तबिही प्रगिटाइयो। साध संगि सहिज ही पायो ॥
पतित कीए बहु होवति नाही। तनि तीर्थ चौसठ भरिमाही ॥
बीज बोय फल ऐसा कीजै। बिना बीज फलु कैसा लीजै ॥
जो सी बीज म धरिनि बीबाई। कैस फलि बिनु बीज उपिजाई ॥
बीज बोइ फलु लीना भाई। बिना बीज फलु ना उपिजाई ॥
एस विध भकरि की बांनी। बिना भकर क्या ब्रह्म पछानी ॥
ब्रह्म पछाना तबि ही आई। ग्रामि धांच लागे मेरे भाई ॥
ग्रामी भधि कमे करि मागे। सुभ सगि मति भज्ञान सिधागे ॥
अभिमान मति कस तजि दीज। हरि नीके विचार करीजै ॥
ममी भाति सुनिहो चितु लाई। बिना बीजि फल ना उपजाई ॥
कथा कीर्तन भविन सुनि पावहु। गुहि कुटंबि कार्ज बिसरावहु ॥
देसा धारि सेवा चित कीजै। मिहिनित करि काहू कछु दीजै ॥
हरि जसि कासु जहा सुनि पाई। बिलम नि करीयो ततिपिन जाई[2] ॥
जहा साध मिल ग्रानि बिचारै। नाना विधि करि बाति उचारै ॥
श्रविनि धारि बाति सुनि लीजै। हरि रस रसना के सुध पीजै ॥
जो जो कहो मनि टहिराई। मनिमझ विचार रिद मैं धाई ॥
जबि भुमब तमि हुं मैं धाई। भूम्यो मानि सुगंध प्रगिटाई ॥
ऐसे हरिजनि बर्पनि कहिन है। जगिन माहि फुनि कोउ सहित है ॥
पाबि ठे ग्रान रिद बमायो। मनेक बीचारि रिदे मैं मायो ॥
मनि बिधि को जबि जामनलागा। मिटि गियो तिमर भान जबि जागा

१ यहां योग की युक्तियों का भावात्मक वर्णन है।
२ यहां हरिकथा और हरिजन की सेवा के महत्व का वर्णन किया है।

प्रम किङरी को जु बजावहु । प्रम भाव फिर प्राप जसु गावहु ।।
मतिवारा सुम वुम नही काई । कहा मरिमु अवि भापि दिपाई ।।
निय भाप सकिल भमु त्यागे । सुपि मंडलि प्रानंदि मैं जागे ।।
जुप माहु बनि मानद पायो । निजि परि मैं अविनाय समायो ।।
रहियो समाइ सहिज धरि माही । सहिज समाय सदा मुकाही ।।
माईदास ईमरि जो जान । गुरि प्रतीति निहिचै ममि प्रानै ।।
दो०—तरिवरि मो फलु परिजयो तरिवरि माइ समाय ।
घमिद मानिम परिकासीए प्रारम घमिद मिलाय ।।

१०२

तरिवरि बीजि मैं जाइ समाया । तरिवरि सो फुन फलु उपिजाया ।।
भज्ञानि तज सो रहे मिलाय । तत ज्ञान सो रहे समाय ।।
रन दिनम एक करि जाने । प्ररिस परिम जे हित करि माने ।।
जसे निधि वात्त मिल रहे । ता मैं भ्रंतिरि कौमा कहे ।।
ज्ञानि विज्ञान एक घरि माही । दीपक जोति बसे सभ माही ।।
राम रमिया ऐम मेर भाई । सभ म भपुनी जोति दिपाई ।।
कहा ज्ञानि प्रकाम मयो है । वही निकटि निकटि करि गहियो है ।।
ममिता उपिज रहा घटि ताको । सिर्प आपि ममिभ्यो हरि जाको ।।
ताहू गुरि मिल धमप सपाया । माईनाम सहिज घरि भ्रायो ।।
दो —घटि पटी वानि भपारि है घटि पटि होवे जान ।
साईनाम मतिवारा मुप जो रहे विम निर्पे परिवाम ।।

१०३

घटिपटी बानि घटि पटी होई¹ । इसि घटि पटी को बूमे कोई ।।
मगिर बावरा लोकु सुजान । कारजि करे महुत सुप मान ।।
कविहू मगिरी दिष्ट म परिही । कविहू तरिवरि जिउ करि परिही ।।
दैत रूप रहिया उरिमान । बिन पगि पहुच सो पहुचाई ।।
जो जा बम पुनि निविमे माही । वाविरा होत रहित सघ माही ।।
प्रावित जावित ते बहु रहे । निरिभो नगिरी निज परि महे ।।

---

१ करा बक बानें यहा नहीं गई है । यौगिक प्रक्रिया को बताने के लिए इस प्रकार बट बातें सभी मत वनियों ने कही है ।

मनि भौरे रसना ठहिरानी । निरिपति विना ननिन हरि वानी ॥
कोटि सुम नगर अदिभुत होई । कहा कहो भविगति गवि होई ॥
काया कोट दुमारे दस जाके । पांचि भए रपिवारे साँके ॥
रहिव पचीस पांच के सगी । उमिग भमी सदा मन रगी ॥
सो सायाई देह दुमारे । भकिर मावरा सहित सवारें ॥
बाचिन किगुरा है तिस परि मे । तसकरि फिरसे निस विन करिखे ॥
बसिव लोक करि पगिभुपि नाही । निहिन चक्र ते बाहर भाही ॥
रसना तास बासि कछू नाहो । रुप रेप चिहिन भलिसाहो ॥
करित कहा फुनि रहन न होई । भाप हरि भापे है सोई ॥
साँईदास मूगा जो भापे । बिन भगिवानि गति कोई नि साप ॥
नगिरी के बिवहार सुनु बिसम होति मनि माह ।
साँईदास रहिव भनदि बिनोदि म दुमदा ते भलिसाव ॥
भानद सबा कछू नि बियोगा । पर्म बसति सुपि भानवि लोका ॥
भाप भापि इनिही कछु पाया । सुति दारा भति बचन माया ॥
पाँन पान कछु लेन न देना । नाहा भविगुन नाहा गुन बपेना ॥
ना कछ रूप सरूप भरेपा । ना कछू चिहन चक्र तहा देपा ॥
ना कछू मीरि मसक सुमिसताना । ना कछू ब्रह्म मा पौनि पियाना ॥
ना कछु निर्मल मल पखाना । ना कछु ब्रह्म ज्ञान ध्याना ॥
मा कछु भरिन भकास दिपाबे । रवि ससि कछु दिष्टी नही भावे ॥
मा सुगध गध तहा भाही । मा मुप बको जो भाप सुनाहो ॥
मा भातम परिमातम कोई । मा कोई धर्म उपारजि होई ॥
नाह पविमनी सकर बिष्णु । माहो सीत तहा कछ न उष्णु ॥
साँईदास तहा जो कोई गयो । भापा भापु सकल तजि दयो ॥
दो०—बसे सहिज भनंद मै बिसिर्‍यो दूजा भाउ ।
साईदास भापे मिस भापे भयो कछु कौतिक कह्यो न जाय ॥

१ ब्रह्म प्राप्ति की अवस्था का यहां वर्णन है । वस्तुतः यहां विरुद्ध धर्मों का अभाव है । इस बात को साईंदास जी ने इस रूप में कहा है कि—एक कहे तो होवे दूजा—(एक कहूं वे दो ह) दाय होय तो एक बखानो । इसलिए वे कह उठे— "ना एको एको पुप कहो" (दोनों एक है और एक ही दो है) वस्तुतः ब्रह्मजीव का अभेद या भेद कहना अति कठिन अत —"ना कछ कहिया ना भाख्या जावे ।

प्रभै किंकरी को जु बजावहु। प्रेम भाव फिर प्राप वसु गावहु ॥
मतिवारा सुष सुष नही काई। कहा भरिसु जवि प्रापि दिपाई ॥
निर्य प्राप सकिस प्रभु त्यागे। सवि मडमि प्रानदि मैं जागे ॥
हर्प माह जनि प्रानद पायो। निजि घरि मैं जविजाय समायो ॥
रहियो समाइ सहिज घरि माही। सहिज समाध सदा मुक्ताही ॥
साईं दास ईसरि जो जाने। गुरि प्रतीति मिहिये मनि प्राने ॥
दो —तरिवरि सो फलु परियायो तरिवरि जाइ समाय।
पविद प्रातिम परिकासीए प्रातम शविद मिलाय ॥

१ २

तरिवरि बीजि मैं जाइ समाया। तरिवरि सो फुन फलु उपिजाया ॥
प्रज्ञानि उपे सो रहे मिलाय। तत ज्ञान सो रहे समाय ॥
रन दिनस एक करि जाने। प्ररिस परिस जे हित करि माने ॥
जसे शिशि धरुक मिल रहे। तां मैं प्रतिरि कौना कहे ॥
ज्ञानि विज्ञान एक भरि माही। दीपक जोति बसे सम माही ॥
राम रमिया ऐसे मेरे भाई। सभ मैं प्रपुनी जोति दिखाई ॥
कहा ज्ञानि प्रकास भयो है। कहीनिकटिनिकटि परिरगहियो है ॥
समिता उपिज रही घटि तांको। निर्य भापि समिभ्झयो हरि जांको ॥
ताहु गुरि मिल प्रलप लपायो। साईदास सहिज घरि प्रायो ॥
दो —प्रटि पटी बाति प्रपारि है प्रटि पटि होवे ज्ञान।
साईं दास मतिवारा सुप जो रहे बिन निर्य परिवान ॥

१ ३

प्रटिपटी बाति प्रटि पटी होई[१]। इसि प्रटि पटी को बूझे कोई ॥
नगिर बावरा मोकु सुबान। कारजि करे सहज सुप मान ॥
कविहूं नमिरी दिष्टि न परिही। कबिहू तरिवरि जिउ करि करिही ॥
वेप रूप रहियो उरिझाइ। दिन पगि पहुचे सो पहुंचाई ॥
जो जा बसे कुमि निकिसे नाही। बाविरा होत रहित सुप नाही ॥
प्राविम जाविस ते बहु एहे। निरिमी मगिरी मिज भरि प्रहे ॥

---

१ कहा सब बातें उहा कही गई हैं। यौगिक प्रक्रिया को बताने के लिए इस प्रकार रूट बातें सभी सन्त कवियों ने कही हैं।

१०६

तुभिविनकछाकौनिगुनिआगिर। त्रिभवनि माहकि सभिविधिआगर
उत्तम मधम्य नामु तिहारा। सकिमसुरि नरि रिदे धनि धारा ॥
जिगिखित ग्रातम हरि गुनि गाई। साध संगि मिल भानदि पाई ॥
गुरि किरिपा ते साध सगु पायो। पावित ही जसु बहु मुक्तायो ॥
सुने वेद को माप सुनायो। जिनि सुनियो तिनही असु गाइयो ॥
धनि किरपा ततिकाल करीजे। किरिकिरपा अभिक मामु जनि दीजे
माठ भाम जपि हरि का नामु। औरि नही है हम कछु काम ॥
तुमरी भगित हाय चित माही। बिष्याकुम हम मति विसराही ॥
दीनि बचिन हमरा सुणि लीजे। साईदास हरि गुन मन दीजे ॥
दीन दिमाल समरथ हो तुम जाचक सम को।
साईदास तुम जाचक परिवान है जिह घटि परिगटि होय ॥

१०७

हे केशवि हे किरपाल हे ईसनि ईस।
हे दिमाल सूं दया करि, जगि जीवनि जगिदीस ॥
तुम्हे छाडि कासो कहो औरि नि कोई थाउ।
सू दाता सभ भगित का सभ मै तेरो नाउ ॥
कौनि मात्र मै कीटकी हौं किस कीटो माह।
केते दुआर रिष मुनी सिध साध फल माह ॥
मागीं हरि दरि पाईए, बिन मागो कछू नाह।
मानी मागे मित करे तुम्ह मागे सोई करेह ॥
मुक्ति ना पावे नाम बिनु ते तटि तीर्थ भरिमाह।
साईदास जै प्रभ किरपाल होइ ता पतित भी मुक्से जाह ॥

इति श्री बाबा साईदास की विचिरते[१] ज्ञान रतिम संपूरण पुर्न भविज

---

१ विचिरते—यहां लिपिकार का दोष—शब्द विरचते होना चाहिए ।

१०४

भ्रम मिले क्या कहे कहावे। वदि सदि सम करि रहै रहावे॥
पौनि मिले पौन हो सोई। माटी मिल माटी ही होई॥
जागृति होवे मिल जागृत हूआ। एक कहे तो होवे दूआ॥
दोय होइ तौ एक बषानो। एक कही ता दूजा मानो॥
दो एको एको दुय कहो। तौ दूजा इसि माही सही॥
जो नही कहो तो भति यौराजो। जो मुष कहो तो कहि न मावो॥
ताते एह भला मनि भावे। ना कछू कहिया ना मान्या जावे॥
होइ रहियो विसमादि विवाही। निरिपत ग्राप भसिलाना जाही॥
सुनिन वकिन ते भर्यो निग्रारा। मिटी भ्रापि वाणि कीयो पसारा॥
परिस रह्यो अंगि लागे वाही। कहो अचरज किह नाही॥
साईंदास कहा मुष भाये। भाप भयो भपि भ्रापा लाये॥
दो०—कहिम सुनिन गुप है कहा कहेगी कोय।
साईंदास हर भवि भर्म चित टारीए जो कछ होय सु होइ॥

१ ५

हरि ते विना न कोइ सहाई। कहा कहो गति कही ति जाई॥
तुम सभ विध विध रापनहारे। भषि¹ तौरल करि देत सुपारे॥
हौ मतिहीनि सर्न जो भायो। पतित उधारन विरद सनायो॥
मही भोटि रिदे भति भारी। तुम किरिपा गति होइ हमारी॥
भुजा गहे की लाजि परति है। निस दिन सेवक दीन करति है॥
होय कृपाल कृपानिधि भारहु। भापुना नाम चित नाहु बिसारहु॥
जिन भपिना भापि भापु तराना। तिन को बिमली न दरो भुलाना॥
जो टारे जनु टरे न धरि ते। कहा कहो होया प्रति धरि ते॥
दीनि दियाल क्रपाल दियाला। करि किरिपा जन ताहू समाला॥
साईंदास जो मदु हरि भावे। वेग करौ तौ चित उमिलावे॥
सलोक—भपिने नाम की लाजि है पतित उधारन हरिनाम।
साईंदास निमखासरि दिन पल नही मिमरो भाठो पाम॥

---

१ भपि<अच—गात।

मेरा प्रभु सति उधारण आविसी औतारि आवे दसि वारे।
प्रिथिमे होया मछ रूपु वेदु पकड़ समुद्र मझारे॥
बेदि धारि ले आया सीरिनि ब्रह्म धार।
कूर्मि दा रूपु धारि के मथि कटे देत सपारे॥
देसु मनोरथु वेद उनु वैराहु कीया वढाले।
नारसिंघ दा रूपु धारि के हरिनाकसि नयो विदार॥
रसि वावनु बिम दवन परिसराम सहस्र मारे।
सवि त्रिकूटी ओडीआ बमि पाहन सागिर तार॥
दसि सिरि रावणु काटियो नमोर छेदवनि न सपारे।
कसिराइ सो वेला मथरि[1] मझारे॥
दो०—याहि भ्रम माई भाई डगि मगि डोलत चीत।
कहा कहो म कृष्ण जो तुम समना हो मीति॥
पौडी—३
सगि सीए सभ देवते हुरि दर्गा धरि[2] उकिसावे।
वदी पथे देवते मुक्ति वाको कौण छुडावे॥
भासा मीद न सुत्या उसारी रनि विहावे।
समिझे ना सिमिझआ मनि कछा नाहि सुपावे॥
कृष्ण जी कंस दही कर्म कमावे।
दो०—धीरजु धारो जगिपती सुरि सगि कर्त बीचारि।
मोहिनिस प्रियमें हुरि यहि जा वसुधा करि पुकारि॥
पौड़ी—४
मुक्ति पुरी अविनासवसी मथुरा पुरि है कसु राजा।
पच्या वसी[3] न जाणदा मनि माणं करं सु काजा॥
करि पिआए देवते मथुरा दा कर गिवाजा।
सुरि कर्मि देत मनीमन कमराइ सबही साजा॥
दिग्गाहु भया कम राजा॥

---

१ मथरि<मथुरा।
२ धरि=धरती।
३ पच्या वसी न जाणदा—कंस बना है। उसे पथ्य अपथ्य का कोई ध्यान नहीं है। इसलिए मनमानी कर रहा है।

श्री

ओं सति सरूप बाबा साँईदास जी नम:

वारि श्री भागिवत की ।

रागु आसावरी

कई जुगि रह्यो ध्यानि मो कई जुग उदिम कीव ।
साँईदास जिनिही किनही ससरयो निश्चे जानो जीव ॥

पौड़ी—१

जुगो जुगतिर जरिस्या हरि बैठा धुंधुकारे ।
तबि सूरजु चन्दु न होवा नारअयणु कंमु समारे ॥
नाभि कौल ब्रह्मा कीआ तै बैठा बेदु बीचारे ।
ब्रह्मनडि चतुर्दस रचिआ काढि कोढि कीआ बिथारे ॥
धर्त अकास बिस्लोकि के सिरि कूर्म दे धरि भारे ।
सुति दसौं दसि साजआ बनराइ अठारा भारे ॥
नौ खड कीति मेवनी सति दीपि तहा समिसारे ।
सिव सते उत्तपिजआ बंध पाहन दे नीरि धारे ॥
बर्न बिहूनी साजीआ महिमे रूप ससारे ।
सूर्जु चदु चढिगिने दुइ दीप करे आधीआरे ॥
चारी खारि उपाईओ सृष्टि बंसि ब्रह्म पसीआरे ।
इति बिधि जगतु बणाइआ धर्मु पापु कीआ बिवहार ॥
कंसराइ किस सभी अनरूपु अपारे ।

दोहिरा—

धिरति बेद बांमरिपु लै भज्यो निर्भौ तुमि गिरीकारि ।
सनिमुप भूम्भेऊ भेकरि जगपति करी पुकारि ॥

पौड़ी—२

दैतु होआ अभिलाखसी पसि लै ग्रा[1] बेदु सकारे ।
ओंकारि दरिगा[2] जगिपति सो ब्रह्मा जाइ पुकारे ॥

---

१ ग्रा=गया ।
२ दरिगा<दरिगाह ।

सुधि न सवियो कंसराइ सिरि सुमुस वधा पारा।
सो ऐसा वचुन हमारा ॥

दो०—इहि मित रची सकलपति सुरि सगि कीयो वीचार।
निश्चो मारत कस को भूमि उतारनि भारु ॥

पौड़ी—८

ठाकुर कीनी माय्या जदि भादि कथाहे दोऊ।
लछमनि दुर्गा सदयोने कसमारनि नू नरिपेउ ॥
जो जो भाहे देवते वसि जाविव जनम सुभेउ।
प्रथिम जनिममा दवकी सकपण नामु सुचेतु ॥
फिर उदिर समाणा रोहणी वसिमद्र महा वलिदेउ।
दुरिगा उदिर जिसोद के सो कन्या नंदि गृहि सेउ ॥
भापि भावे प्रभु देवकी सो भासित नापु सुचेउ।
ठाकुरि ठादु रचाइमा कसि मारिनि नू निरिपेउ ॥
राया भौतार भाई सभ देउ ॥

दो०—विध सजोग भकर मिले जो कछु होवनि हारि।
साईदास मगल देविकी-वासिदेव वहु तुम कहो वीचार॥

पौड़ी—९

वीवाह् पसाई वासदेव सा वेटी सूरि सैमाणी।
नासि चलाया कसिराइ बीरुप्मा रापविरि कराणी ॥
मथुरा मझे आंशा कसि गगिनो सुमीयो सुवांणी।
वाणी सुण के कसराइ करि ग्रह लई करिमाणी[1] ॥
क्रोध वहुति से भलप्रा घोण कटिन देविकी भाणी।
भरिदासी करे सुवासदेउ देवकी परी भमाणी ॥
तू किउ कपियो कसराइ इकि दह विपानी सामी।
उग्निरि जु भावे देवकी सो पडे वेह कंसानी ॥
कसा वनिता मारी माह असु क्या वजे जगत्र कहानी।
प्रिथमे होवे देविकी सो देवागा सै भाणी ॥

१ करिमाणी=किरपाण (तलवार)

दो०—अभिमानी मति गर्व महि वह कुषि वेम सहाइ।
गर्व प्रहारी सांईदास सिर परि सूझत माह॥

पौड़ी—५

मुक्ति पुरी भविसावली अभिमान भरिया हकारी।
जपु तरिपत भरिदान पुनु हरि मन्दि सुदेत बिसारी॥
बेद न सुणदा भागवत कथा पढति कहिनि बीचारी।
नैमि धरिम न जाणिही नहीं बर्तु रहे निराहारी॥
नर्क स्वम नहीं जाणदा महिमंत करे धरि धारी।
बेटा उगिरिसेण दा कंसिराइ बडा अविचारी॥
पापु कमाव पैसके सिरि सुभु सुनाइ मुरारी।
कंसराइ दहिसिर उसो नेरी वारी॥

दो०—कहियो किष्ण वसुधा सनो जो मैं कहो सुनाइ।
मुक्त करो सुरि सकल की असुरनि भारि चुकाइ॥

पौड़ी—६

हरि के सेवक जेतने सम कंस राजे डरि पाए।
वसुधरीआ भारी भई सो भाव न सक चाए॥
मैं वि विजीरो कोई कंस राजा समिझाए।
कमु राजा मथुरा पुरी जुधि ऐसे ताणाबाए॥
बस्हु स्वाबेआ किया असुरेरा जो धावाई।
द्रोही राजे कंसि दी मरण दा कोडि सवाए॥
गहि भरिया राजु पूरया बिति प्रदिर गर्व हुढाए।
गहबहि न राबषु दा अभिमामी सीस कटाए॥
कंसराइ दिम तेरे भी पोहे आए।

दो—दीनानाथ बिश्राम प्रम कुपि दुर्कामि बिसवाम।
औमिन मेटे गुमि करे पूर्न गुरि सांई दास॥

पौड़ी—७

हरि बहिया मर्ती सुनो इकु मेहा बचुनु हमारा।
तेरा भार उतारिमा मो म्याउ करी तुम्हारा॥
मम छिवाई देवत जो बनि परे बीचारा।
उदिर जु आबो देविकी सरुप्राभु निवासु हमारा॥

सुणि न सखियो कंसराइ सिरि सुभुस वधा पारा।
सो ऐसा मथुन हमारा ॥
दो०—इहि मित रची सकलपति सुरि संगि कीमो वीचार।
निदधो मारत कंस को भूमि उतारनि भार ॥
पौड़ी—८
ठाकुर कीनी धाग्या अदि माधि कमाहे दोऊ।
लछमनि दुर्गा सदयोने कसमारनि नू नरिखेउ ॥
जो यो माहे देवते वसि जादिव जनम सुमेउ।
प्रथिम अनिमग्रा देवकी सकपण नामु सुचेतु ॥
फिर उदिर समारणा रोहणी बलिभद्र महा बलिदेउ।
दुरिगा उदिर जिसौद मैं सो कन्या नदि गृहि सेउ ॥
माषि धावे प्रभु देवकी सो आवित नामु सुचेउ।
ठाकुरि ठादु रचाइभा कसि मारिनि नू निरिखेउ ॥
रामा औतार भाई सम देउ ॥
दो०—विध संजाग प्रकर मिले जा कछु होवनि हारि।
साईदास मगन देविकी-वासिदेव वहु तुम कहो वीचार ॥
पौड़ी—९
वीवाहू बलाई वासदेव सा बेटी सूरि सैमाणी।
नासि चलाया कंसिराइ वीरस्या रापबिरि करारणी ॥
मथुरा मझे आं शा कंसि गगिनो सुनीयो सुवाणी।
वाणी सुण के कंसराइ करि धूह लई करिमाणी' ॥
क्रोध वहुति से चलमा घोग्ण कटिन देविकी मारणी।
करिदामी करे सुवासदेव देवकी परी धमाणी ॥
तू किउ कपिया कंसराइ इकि दह विपानी मानी।
उदिरि जु आवे देवकी सो पड़े वह कमानी ॥
कंसा वनिता मारी नाहू जसु क्या बजे जगत्र कहानी।
प्रिथमे होव देविकी सो दवांगा तै माणी ॥

---

१ करिमाणी=किरपाण (तलवार)

दो०—साम् मघा वसुदेव के वघुनु बीचारियो नाव।
मति उघरि उरि मै भरियो दीयो कस के हाथ॥
पौड़ी—१०
प्रिथमे जनिमया देवकी सो कसे ध्यान दितोमु।
भनदु होया कमराइ ठुसि बालक सो घडियोमु॥
कृद्धि करि क बालदति सो बालक धरि पढियामु।
तिति ही साद् माया कम मासणि धाइ बैठोमु॥
मार्य मास्तु साथ क सम कम जोगु विसोमु।
उदिर जु भावे देवकी रिपु वरा राजु जितयोमु॥
बघुनु गवायोमु भापणा वामु मारियोमु।
चित भरिमामु कमराइ तिति बैसे विराइ धीमोसु॥
दो०—जो कछु भाषा मागु तै इहि पाथे कह्यो बीचाउ।
मवि ठाउ मनुसृति कह्यो वेद बीचारि॥
पौड़ी—११
भौ उव मथुरापुरी चढि सोधे सोइ समारा।
पढति पुरा सास्त्री दे जो इसदे बीचारा॥
देवा कुस स भाया वासुदेउ तितेही वारा।
उदिर जु भाव देवकी कमराय पिकास हुमारा॥
सुणि कसे हाई सारा॥
दो०—निगम बचिन तुम दिज कहा कस पुसे ततकाल।
जो कुछ होमी सो कहो जित बिघ मारो बाल॥
बीचारि बचिनि मवि कहें प्रहि गर्भ रिपु ताहु।
माईदास धर्मी बपमपनि कहो जनिमे मारो जाहु॥
पौड़ी—१२
मारि जु होई कम नु सम पंडति भरी सदाए॥
मास्त्र माथे पढिदो सम पुस्तकि सुध पाए॥
चारे वेद पुकारते दिन ठैरे मदे भाए।
राउ पर तें गाहमा बालिदेव देविको बदी पाए॥
मौ दरिमाजे राम कर मैन मुगुम्रा बकाए।
भानु भुरा कीया कमराए॥

दो०—वासुदेव मरि देउकी को गरास होई ववसालि।
बालक जमनि जोति जे सो कसु मरे दरिहालि॥

पौड़ी—१३

पापी मार पडि नाल हरि करे नही प्रतिपाल।
वसुधरीमा भारी भई हरि होवो तुसी दिमाल॥
भाउ कस देपय काल॥

दो०—जो भो पाधे सुपि दीमा देव भूम महाराजि।
साईदास तुम दुपि निवारन सत को रापु विर्दे की लाजि॥

पौड़ी—१४

मघी राती अष्टमी तिति वेले रोहण सारी।
तिति ही वेले भाया यान्पि वस मुकदि मुरारी॥
भावित ही विरधा भए मनि मोहनि लील्हा धारी।
पुछन लागी देवकी हुमि हैं कौन भाग विहारी॥
तुमरा दर्सनु पाभा हम पूर्व भगत सभारी।
दरिवाजे मुकसे हाहिगे सभ सुर्त पोई पतिहारी॥
जमिना होसी बिमिम जसु हरि धर्नी भागनिहारी।
तवि जमुना जलु पडि सी जलु दीवनि वसी सारी॥
दुर्गा उदिर जसोद के सो कन्या भावि कुमारी।
मुम्कि गोकल से आदयो ले भायो तुम हुकारी॥
हौ बालक दा रूपु धारिसा पीतविर चक्र पसारी।
मति भममूनानेहोइआहु वासुदेव देवकी है महनारी॥
सुणु नवान सुण देवकी इउ बिलवति वाति हुमारी॥
राया इउ बोल्यो मुपो मुरारी॥

दो०—याहि वचिन मोहनि कहे दहि रापो चीति।
साईदास बालरूप वपु धारपा प्रगिटि भए जगिदीसि॥

पौड़ी—१५

देवकी सिपा वासदेउ इकु केहा कहे बीचारा।
देवकी नबिहो वठे पहिरू नविहो चढ किवाड़ा॥
सपनि घसा आपां कंसराइ जो देवन सारा राह उपरे रो रोहीये।
उठि पौनी बहुति बिचारा वसुदेव सिपा देवकी इकु केहा कहे बीचारा॥

पहनावे की हृषि है एह भाप सीमा मौतार।
सो प्रभु वासुक बनिम्या समि संति उधारिण हारा॥
सो प्रभु वासुक बनिम्या बैकुंठ भए बैकारा।
सो प्रभु वासुक बनिम्या त्रैलोकि करे सुधारा॥
भभिबनि इसि से बाह तू सुए के सवबिन हमारा।
राया बदि ईसे वी परिकारा॥

दो०—कति न भूसो याह मतु से बलु सारंग पान।
साईदास छूटे नहीं बिचारि बवि बहु तुम बदि मैं मानि॥

पौड़ी—१६

हरिया वेहा वासुदेउ से चस्या सारंगिपान।
दरियावे मुस्से होहगे सम पाहूर सोंवे बान॥
मथुरा मभ्के आ म्या ममि सुपि कीनो सिवधाम।
मूंद नि परिती स्याविरे बसु वर्षमि धारि इमानि॥
सेसु सहसि फनि तानि के सिप ऊपरि रहहा तान।
जाइ पहूता जमिनि तटि बनि देय हरिय भैमान॥
फेरि मपुठा चस्या सिव पढो सुति तिनै वीनो दान।
जमिना भाइ मगु भारिमा ले जाहो गुणानिभानि॥
जाइ पहूता नदि धाम वे बासक सीनी कानि।
राया सग हृसचरि ते सारंगपास॥

दो०—मोपि बचम सुनि लाल के चले देवि पनि मोरि।
साईदास मोदि पसार देवकी इवनि करे करि जोरि॥

पौड़ी—१७

कुखदि करि के कंन्या बसुदेव जु दई दिपाई।
जमिना के तटि भाया फिर मगु बोधा जमिनाई॥
दरियावे तबि ही भए फिरि पाहरुप सुष भाई।
रोवणि लागो जु कनया जवि देविकी कुखदि भाई॥
पुछगि सभे पाहरू क्या बासु भया रे भाई।
है इसी होई बनमया बसुदेव जा मविर सुणाई॥
पबिरि दितो कसराय मु बमु तदि पहिमा भाई।
क्या बासु भया रे भाई॥

सलोकु—मानदु चित सभ कंस मनि प्रगिट भए जादोराइ।
सांईदास बासदेव भरि देवकी सुपि सो नीव वढाय ॥

पौड़ी—१८
हृपि पड़ा केसी पिसरो वधि साले कंसु मामा।
भाइ मिल्या वसुदेवि देवकी अभिमानी अदिर अभडकाआ ॥
अरिदासी करे सु देवकी वंकि राजे कंसे रामा।
माई मुझ को दीजे वखशा इहि कन्या करों न घामा[1] ॥
पसिलई कंस कनिआ अपिराधी पापु कमाआ।
किसे थो छुटिक आइ कन्या सजोगा वधुनु सुनाआ ॥
रिपु तेरा गोकल माया ॥

दो०—कंस मानु तवि हारिया जवि सुनियोसु गोकल वास।
साईदास वासदेव भरि देवकी तुम बचो हमारे काम ॥

पौड़ी—१९
छुटिक गई जवि कंनआ कंसि भुका माया मोहु।
कंसि पाई गलि पगिडी अपिराधी हों साठोहु ॥
कंसि कटाईआ वेडीआ लोहा भूगर कटे लोहु।
राया वगवसे कीया वछोहु ॥

सलोकु—प्रावितीर जदेबंस भगवान भूति भवानह।
किता न ज्ञान भरिमान तां नह वेद विचरिते ॥

पौड़ी—२०
वधाई वजी नंदि के।
बेन चारो अनद थीएन हरिपे होए देवते ॥
सति साधू जसु करेन जतु सतीआ अठ सिध्य साध
से बैठे ज्ञप्न जपेन।
दपनि सभ महूर्ती मुनि अपे द्वादस एन ॥
ब्रह्मा विष्णु महान सुपु सो बैठे वेदि दुवन।
सुरिपति सरिस इन्द्रापुरी स्याम सुंदिर गू चौर डुलम ॥
गार्नि किंनरि सगती पटि दसम रागु करेन।
सरि मंदिर भरि भरि रवाब असुमडस वहुति बगेन ॥

---

[1] बाव<बामा।

लका तोडी गड लुटिया दसि कटे मिल्या मेतु।
राया जिए सोभा ल्याया खेत ॥
दो०—राविण नूं कहे मदोदरी तेरी मसि हिरी।
मय जान्या लका पुरी झोबी मौरि फिरी॥
छजीमतरि चढि गए साईरु भामा हाथ।
साँईदास काहे रावण गजीए शाह मिलो रघनाथ ॥
लक द्वारे यह्मसाल हरिणवस जु पुटी जोर।
पुत्रि जमे जसिरथि दे सुथे सारि नि कोर॥
घडि दसा दे कटिमनि लक होई होई पड पड।
साईन्दास दसि सिरी कटे राविणे भई मदोदरि रडि ॥
जो जो भावे सकिल मिल वासो महि मति वति।
कस नि माने साईन्दास असरनि की मति लेवि॥
पौड़ी—२८
ममि मैम माहूर उजिल कंसराइ विवानु लगाया।
सो भयासुर मदिया वधासुरि सगि न दाया॥
जानि सुमति मुरष्टि के मनि मगि मही भरि चल श्राया।
परिसंबे भरि त्रपिभासरे कहु होगु तुम्हारा मामा॥
चहूरे भरि पांडवे कैसी जोरि वहुते श्राया।
जमिसा अर्जन पूतना सगि सी धरि अठारह राया॥
वधासुरि भरि धेनि के सब पूछि त्रिपभासरि नाल सदाया।
सभना मूं थापे कंसराइ कोई मारे नंदगा जाइया॥
पहिला वोभी पूतिमा असुरेटी घडगु उठाया।
दामी जे मरेसा बामुकु मदि दा ब पूतना कै कस राया॥
म्हू वेला तेरा श्राया ॥
दो०—कोऊ सठह कोऊ चल जिह विष मारो बालु।
साईदास मिरिवकीने अथमे चढियो कालु॥
पौड़ी—२९
मारिम सुंदिर स्याम मू पूतिना ममवनि जामी।
मैं हलाहल ममथर स भमयनि उते लाखी॥

ढोल दवामे सरा मालि सो मेरी प्रू साहेन।
किन मृवम उपगि सगि सणि मंवृती तास वचेन॥
नारी मगस माइमा मनि ते बालक सगि मचेन।
हरिप होए मविराइ पटि दर्सन मनु परिचेन॥
नंदि जिसौदे वसुदेव दविकी मनंवि मारि मीएल।
बमाई कन्म दी सहिज मुणेन॥

दो०—मभिमानी मति गवमें बहु दुपि देव सहाइ।
गर्वप्रहारी सांईदास सिरि परि सुमति माह॥

पौड़ी—२१
सेंना सम सदाय कै कंसराइ संमूरति सारे।
मने मम जोम सम ते माइ बैठे मतिमारे॥
कंसि राजा सना मिया मुपि बचनु कहे विच प्यारे।
सममा मापे कसराइ इको बासिक मू माइ मारे॥
तिस ही जमा निमाजिसा ठौरि मूमी राज हमारे।
तेहीं गसा होईमा जु मारे वेदि पुकारे॥
कस मते सुणे परिवारे॥

दो०—गवु छाडि सभु कंस जी उहु गर्व प्रहारिस हारि।
उग्रसेण मतु माप्यो तुम मनि मैं करो वीचारि॥

पौड़ी—२२
कसा मायो सुम्हेगेरकिता तिसिनास मि मडियो जाइ।
जरेमी मुमुविणाहमा मारे सी मडिदाइ॥
मारे वेद पुकारिदे हरि मथुरा मैसी माइ।
कसा तैमे राज नूं मुणु सगा पादा माइ॥
रामा सुप लोड़े ता बदि सहाय॥

दो —जो मनि मनिमा मानीए जो माने मनिसा होय।
माईनाम कौस कहारी मा मीए तमि सुपु कैसा होय॥

पौड़ी—२३
कमा ममि मति जेही चलिए मुपु तेहो जेहा होवे।
तिवेहा ही मसु पाईए जिमे हा मीचजु मावे॥

मयी वेपनि चसीए पै मरिए टिवे टोए।
भगी मदी ले वासिना मुण सये विवहु सये॥
दुरिगध मदी भुरी वासुना चग चदन चोए।
जो विहु पाए आए के विणाहु सिरे परि होवे॥
पिछले कम विणाहु के मममानी रामनू रोवे।
फसराइ पछुताण कछु नि होवे॥

दो०—गर्व छाडि सम कस वी उहु गर्व प्रहारन हरि।
उग्रसन मतु माक्ष तुम मनि म करो वीचारि॥
चित्त आनो तिव ही करी नित किन सिमरण सारि।
साईदास माम हीनि गुन वाहरा ध्रिगु जीविन ससारि॥

पौड़ी—२४

साईदास सुणाया वीचारु।
सुणेया करिणा कसा जहा जो वाहिरा भुजि सागिरि
जाइ नि तर्ना॥
जो ममता मारे मति देखो क्रोधु नहो वितु घर्णा।
सुता जाद नि मारीए जो भाइ पव भजि सर्णा॥
जे पित होवे देवणा पुत्रि सिरे परि भावे मर्णा।
पसि मीमा पसि सारगा मकर वषक वस मर्ना॥
जैसो होइ पराक्रमी सिंघ समरथ कविहु नि हर्ना॥
कसराइ मममानु मही कछु कर्णा॥

दो०—कमा पाछे भया मो क्या मया पूछो वेद वीचार।
साईदास जो जो पाछे गर्भा तां को कीयो प्रहार॥

पौड़ी—२५

वेदि जिम चारे पड़े देतु वडा संयासर सोई।
मधि कीटि मनोरथ छेदि उनि हुणरूपु बहा मुणिमोई॥
सिरि पमीमा हरिणापस जिन दिष्ट नि भावे कोई।
मरसिंघ दा रूपु धारि के प्रहिसारे ईंदु कीओही॥
वामिन दा रूपु धार के बलि राजा ग्राइ छलिओई।
पथी मभ सपार के सहसवाहो धेनु भुसिओही॥

लका तोडी गढ लुटिआ दसि कटे मिल्या भेतु।
राम जिरण सीआ ल्याया खेत ॥
दो०—राविरण नूं कहे मदोदरी तेरी मति हिरी।
मय जाल्या लका पुरी द्रोही भौरि फिरी॥
छत्रीवतरि चढि गए साईद भाभा हाथ।
साईंदास काहे रावरण गजीए जाइ मिलो रघनाथ॥
लक द्वारे चढ्यसाल हुरिणवत जु पुटी जोर।
पुत्रि जम जसिरथि द सुथे सारि नि कोर॥
चढि देता दे कटिअनि लक होई हाई पढ पढ।
साईदास दसि सिरी कटे राविरणे मई मदोदरि रढि॥
जो जो भावे सकिल मिल तासो भढि मति देति।
कस नि माने साईदास भसरनि की मति लेति॥
पौड़ी—२८
मनि मैल बाहर उजिले कसराइ दिवानु सगाभा।
सो भघासुर सदिभा बकासुरि सगि न दाया॥
कानि सुभसि मुरष्टि के मनि मगिन मही भरि चल भाया।
परिलवे भरि त्रपिभासरे कहु होगु तुम्हारा भाभा॥
चकूरे भरि चांडवे कैसी जोरि बहुते भाया।
भमिला भर्जन पूतना सगि सी भरि भठारह राया॥
बछासुरि भरि धेनि के संघ चूढि त्रिपभासरि नाल सदाया।
समना नूं भावे कंसराइ कोही मारे नवरण भाइभा॥
पहिला बोली पूतिना भसुरेटी पड्गु उठाया।
दासी जे मरेवा बासुकु नवि दा कै पूतना कै कंस राया॥
भहु वेला वेरा भाभा॥
दो०—कोठ सठह कोक चल जिह बिभ मारो बालु।
साईंदास सिरिवकीके प्रभमे चढियो कालु॥
पौड़ी—२९
मारिन सुंदिर स्याम नूं पूतिना मथवनि भासी।
मैं हलाहल चसकर से मसथनि उते भासी॥

आइ पहुती मंदि ग्राम आइ मंदाएो दिपासी।
भासुणु न्तिोमु जसुदा वडि महरी करि परिवासी॥
माति जिसौन्दा छडि कौर किते कम सिधाणो मासी।
रोवण लगा माइसा इकु मीलहा धमितु दिपाखी॥
उनि फवकी पिछाहाऊ सटी उमि मूडि मस्यनि वे सुपिवासी।
दाखी धसषनि बदनि मुपि हरि रोक समा सभ रासी॥
मिर परिले बठे विकराम विहालि भई जगि हासी।
पहिली साथिसु नदिन मोर मोहन दी पपेढ नपासी॥
राया प्रभिमै से कस वासी॥

दो०—त्रिजि तजि भाए नन्दि जी मिले देव के धागि।
साईंदास बेमहि आवहु मधिपुरी चमो राइमा सगि॥

पौड़ी—१०

आमयि माया नद की मथुरापुरि दमके देरा।
भ्राइ मिले वसुदेव दवकी दुपि सुपि कीमा बाता सेरा॥
नदे भापे बासुदेउ मथुरा तजो संभेण।
ग्राम तुसाडे नदि की कछु उठे उसिकावेण॥
नन्दि पसाया जोल रघु भस्या उडि रेरा।
भये र धि पई मग पूतना रधु जादा भीमा दुपेरा॥
बको विकराल विहास भी तनु कटि कीतो ने छेरा।
राया मुरिएतो ने बालावेरा॥

दो०—जो कछु भा सोई भया कह्यो जु बेद श्रीबारि।
साईंदास माहु बचन सुनि के सुने नदि भसपति द्वार॥

पौड़ी—११

बालि मीलहा विष स्याबरे इकु हरि जी बर्त वियाइमा।
सुकटि सपूत पूर न मदि राजे भाए पजाइमा॥
माति जिसौदा साइसा मौरमु रये ते पाइमा।
रोवण मगा माइमा जसुदा चित कमु बसाया॥
हरिजी भाम उच्चरिमा मनि भदरि क्रोध बसाया।
भजनु सफिटे का होया भम सकटा चूरि गवाया॥

जा लगि भामा मदि राउ रघु भंन्ना ते वालु रधामा
भघुरतु भया व्रजि वासीम्रा सम गोकलि पुछणि भाइमा ॥
पोतिबिम्रा विच नवि सोर मनि मोहनि चिलुनु दिपामा ।
भापि सत उधारनि भामा ॥

दो०—इकि मारी सुनी पूतना भरि रघु भजनि कीउ ।
दस भसरि भैय वानभ्रा धमि धसि कपमो जीउ ॥
कसे पायो त्रिणावर्तु से चल्या तवूल ।
पविन धकि भवि करि चले कीनो रूपु भवूल ॥

पौडी—३२

मारिन सुंदिरि स्याम नू भसुरेटे बीडा लीमा ।
कंसे बीडा चिन के त्रिण राय सिधा णहठीमा ॥
उनि रूपु कीमा विलोहणे भरि गगिने भारि उठीमा ।
मात जिसौदे लाडुला निवलि पीडे मैं दीमा ॥
ओकडि डिठा वत सुति भुजि गह भपिने वस कीमा ।
मचिवनि भोली पै गई कीन्ह नाहो भविरुजि थीमा ॥
सम डूडनि गोप गवारोम्रा हरि पाए थीय पतीमा ।
वेपमि दसु निमात्या नरिवस शा सरणथीमा ॥
भमु नंदि तहा रच्या पदार्थ टिका वीमा ।
हरि त्रिणावर्तु भी लीमा ॥

दो०—भविनाची तू प्रभु अगित गुरि सभ सुरि को परिनाम ।
साँईदास दसु दे सुम गग जी ताह वचनि परिमानु ॥

पौडी—३३

नद सामा वैठा नद सुर गर्ग स्वामी दर्सु दिपाइमा ।
करि कोरि करी तिह वदना वसिदेव जु बचिन सुणाइमा ॥
वजि कुमि मह तुम जाहि जी नाम कर्म भालक वलिकाइमा ।
सतिवादी मुनि दवता नदि ग्राम पहुता भाइमा ॥
करि दडौति मिल्या मुन नन्दि जी सिंघासन दडि विछाइमा ।
चर्न पपासे जसुदा पादोदिक सीसि चडाइमा ॥
गग पूछे देव को मुपि भपिने वचमि सुभाया ।
मवि जिसौदा गग देवि वह सास्त्र सुखिचाइमा ॥

हरि का माननु उमिडभा बिसु[1] भ्रदरि मुप के सारी।
भै षकति होई देप के क्या बरिने मपरि भपारी॥
राया मुप मथे धारिन धारी॥
दो०—इहि ठाढि वचिनि मोहनि कहे सत कमरि दोऊ वीरि।
साईदास दस पर्स मुक्ते भए भेटे द्वारि महीरि॥
पौडी—१६
बेटे दोऊ कुमेरि वे नसि कूमलि ते मनि ग्रीव।
इसनानु सग कुमारि को नार्वे भ्राए उति ही तीरि॥
उनि गवु कीयानगिना रहे भौर सभो कीउ पटि चीरि।
सरापु दितोने ब्रह्मसुति मृति मकभि जाहु सपीरि॥
उधरणु साडा भ्रापदेह वस पासो वलि भद्र वीरि।
बसुवा वांधे कम्न नूं भ्रममानी ग्वार भहीर॥
इऊ उभिरे दोऊ वीरि॥
दो०—द्वारि नदि ठाडे रहे वतस सग भै वालि।
सांईदास व्रजि वानी विच स्याविरे तुम पेलनि चलो गुपालि॥
पौडी—१७
जमना के तटि स्यावरा ले पेसे यादिवराई।
दधि वेचन चली गूजरी सिरि गागर लई उठाई॥
जो व्रिज की सग संग पुस दस सो लई सगाति बुलाई।
सभ चलीभा प्रेम मदोरीभा करितारि गुवाति मुस्काई॥
सुंदरि स्याम हटिकीभा सा ठाडी सक्ो नि जाई।
गिरि गागिरि भरु तक ते दधि वीटे मापनु पाई॥
ही तिस पै आइ पुकारसा जहा भूपति है कंसराई।
समिझ माही नदि सोरु सुणनु वेपी बंनाई॥
भूपु ऐसा है कंसराई॥
दो०—धरती जिवे वनारिसी मथुरा पुरिभा माहि।
जमे मरे जमभ्रीमहि ते वैकुठी जाहि॥

---

१ बिसु > बिस्व।

कोटि मरण के भ्रष्ट भाठ मिले सुमेरे भ्रंस।
सांईबाम बेटा उग्र सेरण दा पास मेटचो कस ॥

पौड़ी—१८

हनु हनु हवे कस दी क्या कहे होवे तेरे।
कूकि बिपाजे कूकना क्या होसी डिस पछेरे॥
सभ चसिया भूजरीआ मधुमाएण नदाएण केर।
बाइ पहुती जसुदा पै प्रति क्रोध बोसन हनिगरे॥
जसुदा नंद उमाहरणे व्रजि बाल सपा मधु केर।
होक तुम्क पहु वाइपुकारोमा महि भगिरा कमु मिबर॥
समिभ्राइ जसुदा बालु भापणा ज कहे सग मरे।
नहीं पूत कस पाविनगे तेरे॥

दो०—तुम नहीं देप मजन करो थबिन सुनोगी बाति।
जाहु सपी ग्रहु भापिम यही न हियो जिसोन्ग माति॥

पौड़ी—१९

हरि जी सोए नीदि भरि दधि मथन कर नंदिरानी।
तकति परि नौनीति चिति तबि मोहन गही मंथानी॥
गिरि सामिर मद महिपती मसोक भए हैरानी।
नीपक हामिठ सुचित सुन सति कहु बेठे चरित बपानी॥
दधि मजनि तबि तोडोठ मिमिति मापन की पछानी।
महि देप माता हैरानी॥

दो०—जोगि ध्यानि पावे नहीं जगि भोग नहीं मति।
ताको मोकसि ग्वारिनी हसि हसि मापनि देति॥

पौड़ी—४

बसिन्ग रूपु धारि क धाइ पवा जिसोदा पाही।
मै मकिरी मै कांबिरी मै भूमरि संगि समाही॥

---

१ तुलनीय—

नारद से सुक व्यास रटे पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे।
ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाछ पै नाच नचावे॥
(रसखान)

जसुदा होई क्रोपवत हो हारी निति उमाहीं।
हरि जी नठे देव के माति निवारो क्रोधु कि याही॥
पकिडिनि कारन भाडले तिहि पाछे दोरतो आही।
जसुदा पकरिम स्यामिरा मुघि ऊपिर करिकी लाई॥
गोकलि सेसो जेतडी ल वांघे ऊपलि माही।
दुह बुह उगिल सभ रही जो गोकलि सेली आही॥
राया विष सेसी भावि सुनाही॥

दो०—यसि नाव कपिलादि उघो दुह ववेकी सोधी।
कस रावण ससेपाम पूतना हनि पाइ विरोधी॥

पौड़ी—४१

जसुदा वलिम दिपाइडो विष सेसी स्याम सरीरि।
उनि क्रोधि वहुते बांधमा मममानी ग्वारि ग्रहीरि॥
जमला अर्जुन दो बडी वृष दोवे आपमसीरि।
तनि मूसलि आ ठहिकया कलिधारी उघरनि धीरि॥
मंजनि कुमसे भजन ने कडि काडि वुहा समसीरि।
वेटे दोऊ कुमेर दे उधिरेहो रसमीरि॥
राया फलि पाए दुहा वीरि॥

दो०—जमिला भर्जनि की सुनी कसि द्वारे बाति।
हठु नहीं छाडे सांईनाम प्रान न निकसे जात॥

पौड़ी—४२

भ्रापु त्याग परिखप होय करि ठाडे भागे जोरि।
होहु दिमामि कृपामि जी मनि की बुभदा मोर॥
गुण वाणो सो गाविद हरि जी क भागि भमोरि।
करि करिमा सो रवि रहे मनु मागा साधा की ओर॥
गया मनि सुति की करिया मोर॥

दो०—जमिला भजन की सुनी कम द्वारे बाति।
हठु नहीं छाडे साईनाम प्रान न निकस जाति॥

पौड़ी—४३

करि बघासुर बध सरपु ग्रमरेटा कंस पठाइया।
बासक हरि सग पेमते बछिरि के सग मिल माइमा॥

पौड़ी—४७

जमुना के तटि लाडुला मनि मोहनि वछे चारे।
बगि सम्पु कीमा बघासरे भाइ ठाढा वनि मम्भारे ॥
मुणु बछ्य सणु गुजरा मुपि मदिरि यादिम पाभारे।
सभ वछु जाणे लाडुला मचेत सुगाप ग्वारे ॥
मति डीरम होया लाडुला मुपि मथे कला पसारे।
दाढा दोवे ऊवाडिमा इकि सोस इक पगि धारे ॥
पादु जियो छोडगिवे फिरि पोदु तिषाऊ मारे।
मारगि झूके सिघ नाल सिघु केहा सुपु गुजारे ॥
कसराइ विधवंस भई दैतनारे ॥

पौड़ी—४८

वहि दावा माया कौन रूप वनि माहु जु अग्नि लगाई।
दहि दिस ते अगिटी अगिन ब्रजिवासी कहे जु भाई ॥
गोरलि सकिल पुकारिया तुमि रायो जादम राई।
पसु पपी धरि कोटि मीनि अकुलाविम अपिनी थाई ॥
हमि वासे नन्हि लाडुला मैन मूंन्दे मरे भाई।
ननि मीटे अगिन समाई ॥

दो०—या मील्हा मोहन करी मुनिद सकलि ब्रजि लोक।
माईनाम मानदि मुरि मकलि पाया कम वियोगि ॥

पौड़ी—४९

ब्रह्मापठिया देविनमा परितावग मदन मुरारे।
तटि जमुना के धाइया पित पधक वेहा धारे ॥
ब्रह्म बन्न दुगाउनि मग्ग बछे गोप ग्वारे।
हरि जी नवि अविनासमा न्हु जगिपति पौन धारे ॥
रूपन उठाई माया धरि अविनासी मील्हा धारे।
जिन्हा रगा धनि मुनि पीए रगी गार ग्वार ॥
गोऊ मातन्हि हिम मिर्गी मन प्यार।
मारी बामकि निते रूप मुनि माता बहु हितकारे ॥
गो मदगा मन्नि मुरारे ॥

दो०—महि लीला मोहनि करी प्रगिटि भए भगिवत।
सांईदास बालक ऐसे स्वर्ग मै षगिपति पायो भंत॥

पौड़ी—५०

भए दिहाड़े चप दिम ता ब्रह्मा कल मल षीमा।
षमिना क माइमा बछि गूजरि देप भुलीया॥
पुनिरपु[1] गमा स्वगलोक बछि गूजरि बैठ उठीमा।
न तिनन हु कों षसिमा सइ माइमा तिनहु सगीया॥
माइ मिलमा मेरे मोहने तजि माए निमारणा षीमा।
च होवा मनि रेएमा षसिदे[2] मर्ने लगावां॥
बछि माल तिम्हा षमि माग वडिमागि मुकरि मुटीमा।
ब्रुम बेली विन मनि माम मनि कावरी नष षसीमा॥
जगिपति मंतु न पायो इहि चलित्र मोहन कीमा।
रामा तमि ब्रह्म षीमापतीमा॥

दो०—तुम पूर्न पारि ब्रह्म हम त्रिण सुष्कि जीवि।
सांईदास कार्न कर्न समरप प्रभ षो कछु कीमा सु कीवि॥

पौड़ी—२१

मति मम भद्र गोप सुति प्रिज पेसति स्याम मुरारी।
मति सुदरि फल पष धजि बालक हितकारी॥
ते बमि भूले सहिज मै फम सूट परे चुनि कारी।
तिहि मुनि षेनक मायो मषर्प की सैंमा षारी॥
तिनिहु उसिटि पमिन्डो निषग्नि धरि चमारी।
मर्ना थे पकिड़ मानद सोरि इकि उसिटै भौढ पछारी॥
उत्तो मना सुटिगने भैं उठा गति प्रहारी।
कसराइ फल मावे गोपग्वारी॥

दो०—जिह बनि नृप धनिक बसे तिह बनि गोप ग्वार।
सांईदास ब्रुम बेली नन्दि साइसे निभो करी गुपाल॥

---

१ पुनिरपु > पुनरपि = दुबारा।
२ षसिदे = बसते हुए।

पौडी—५४

जमना के तटि माहसा म पेले मादम रामा।
वासिक दा रूपु धारि के परिसवु मिल्या वलकामा ॥
मिमवनि माप पद्मानिमा कौ दैत विरोमी माइमा।
जुगि कीने तिहू वालका उहु हूलिधरि सगि गुराइमा ॥
मामक पेमनि चडी प्रथिमे हूलिधरि चडाइमा।
मारी भाई बलिभद्र दी चढि बठो भार सवाया ॥
हूलि नि सके दैति तदि मिरवाया दूर दियाभा।
सिरि परि मुष्टक मारमा दैतु मूमा हूसु सिमामा ॥
इहि लाहा हलधरि भाया ॥

दो०—मन्ही मानी बूद धरि बसु वरिपति वनि की ओरी।
साईदास गोपबाम सपा पेलते माय नंदि किसौरि ॥

पौडी—५५

ग्रीपम रुति पीछे परी वरपा की आदि बिनाई।
ससि ससि चमिकै दामनी झिमि बूंद वरसनि माई ॥
जगि जीविनि हरिये मए पिक चात्रक टेरि सुणाई।
व्रजि के हरिये लोक सम मुपि निर्पत जादमराइ ॥
मिप निर्प सम द्रुप हरे प्रति घनदि सो मुन गाई।
कसराय रुति वेपी कौरि मन्हाई ॥

दो०—व्रजि वाची मिल सपा सम जहा पेलति नदि लालि।
सरिदा रति प्रति बहु वनी तुम पेलनि चलो गोपाल ॥

पौडी—५६

सरिन्ना रुति प्रति सुदरि वनि सोमा प्रति वया कहीए।
सीतिल सुदिर जल पविन ग्रुम वेसी ध्यानि सहीं पेहीए ॥
मधिकरि भुमिरुति पुनम परि हरि जोटि कर्म की गहीए।
कोमल पानि विराजिही बहु रमि पनाविन चहीए ॥
याहमा रुति रूप देप सि रिजहीए ॥

दो०—घति हरि देपो स्यावरे मिले प्रजमि के लोक।
साईदास मानदि उपिजयों सकिल को पारो कंस बियोगि ॥

पौडी—५७

सरिता रति अति सुदरी व्रजिवास वधू बनि आए।
बनि फूले आनदि सो जलि सुदिर भूम सुहाए॥
त्रिण द्रुम बेली सघनि बनि हर्ष सु आनदि भाए।
निर्प निर्प हरि रूपि सो बहु लोचनि अनि अघाए॥
सरिता रति स्याम सुहाए॥

दो०—बनि कुंजि जिह सघनि घनि तिह पलत नदि को लाल।
साईदास लील्हा करी बिच स्याविरे बसी धरित गुपाल॥

पौडी—५८

एक समे नंदि लाडले मनि मोहनि बन बजाई।
अस्थाविर गति जगम भई गति जगम की इस्थरआई॥
रवि रथ थाके अस्रि पाविन पंगि मृग की सुध बिसराई।
ते मोही व्रजि नारियां पहिर उलिटे भूषन लिआई॥
काहू बस्त्र लीए काहू न लीए काहू कंचुकी पाई नि पाई।
काहू एक पग गुथे रहे काहू एक नि पग गुथाई॥
काहू एक नैन अजनु दीआ काहू एक न दई सराई।
काहू मरिआ त्यागया सम लोकनि की बात भुलाई॥
जैसी सी तैसी मिली मेल करो जु बांदी पाई।
जबि मोहन बन दजाई॥

दो०—बहु अविका मजिन चली कालिंद्री के तीरि।
साईदास बस्त्र कर्षण करि लीए हरि हलधरि के बीरि॥

पौडी—५९

करनि सेवा सुरिकनया वर पाविहु नंदि कसोर।
इस्नान कर्न तटि जमिन के सभ सखी आई करि जोरि॥
आए मदनि गुपाल जी संगि बालक नदि किसोर।
बसतरि कर्षण तदि भए जाइ बैठे कदम तरोर॥
नाबे प्रातो मुसमुसे सुनि आने मुरिली घोरि।
जाय देखे तहा नही क्या कहीए चले नि जोरि।
बस्तर देहु मेरे मोहना सभ ठाढी ककत नि होरि॥

मगिना होइहा सै आहु इहि मांगी कृष्न धकोरि।
नगिना होय होय सै गईआ जसु त्याग अंतररि की छोर ॥
बस्तरि दीने किसोरि ॥
दो०—आई नगिन सु से चली वसु दीने नद नदि।
साईंदास इकि मुरिली हक दर्स पर्स भई जु मानंद कदि ॥
पौड़ी—९०
बद्ध चारे माइसा मनि मोहनि वनि के मांही।
पुच्छ्या चाय ग्वार सभ कछु मंगे पाविए ताही ॥
हरि जो मेजे दिजा पहि दिजि देवए ददे नाही।
मसा क्रिया दिज पतिनीआ हरि कीने दोप कि चाही ॥
दिज पतिनी निर्भो करी कृष्न कपाल तिदाही।
हरि माए भाज्ञा माही ॥
दो०—दिजि पतिनी निर्भे करी अनिमै मिले गुपालि।
साईंदास प्रभ भागिर पूर्न प्रगिटि दिआल ॥
पौड़ी—९१
नदे आपे माइसा मुप अपिने बचिन सुनाई।
जगु नि करिसीं इंद्र का इनि बाती कौन कराई ॥
जगु करो के इद्र का हरि जगु निहफल जाई।
बालक परि गोवधने संतोषु करो तिस भाई ॥
तिन लोका व्रजि वासीआ सपूर्न पाकु पकाई।
पकु संपून पूर के तिस बालक नू पहुचाई ॥
जो भांवा व्रजि बासीआ सो बासुकु सै मुह पाई।
नबु पूछे करि बेनिती संतोपु मया किछ भाई ॥
लील्हा परि तिह बोलआ कहु राजिन मैहकया पाई।
वस्तवोनो होमा इंद्र मंगे सेवा जाई ॥
नंद स्याम ममसत माई ॥
दो०—बचन मान बसदेव के जिह मानिति तेतीस।
साईंदास व्रजि परि वरिये कोप करि तुम रापो जगिदीस ॥

पौड़ी—६२

मेटि नि मसभा इद्र नूं रथू हो रोपासा सारी।
गहिर गमीरन पूरके धरि मेरी छउ मारी॥
चारे वेटे सविर्तेस जतु सावतु प्रोणु पुहकारी।
चौहां रचाइमा घार भट पूर्व पश्चम उतिर दखनारो॥
गगुनु गरिजे घरिन परि प्रतिमाघा मोहु मधिकारी।
मूसलधारि वरपणा इहि कोपु करे प्रति गोप ग्वारी॥
प्रम गोवर्धन के उपिट के तल पानि चीये वनिवारी।
बैन वजाई साङ्गे पटि राग रगन मसहारी॥
वरिया मई मह्रा चसी दिन सप्ते रजनी सारो।
गोकम की पति रापी उन व्रजि वस की पज उवारो॥
इद्र पतोणा मेघ त्राणु हरि मगे बाजो हारी।
तवि भए गोवधन धारी॥

दो०—मबिनाशी तुम पारिब्रह्म तुम ईसन के ईस।
सांईदास हम भूले तुम राप से यगि-जीवनि जगिदीसि॥

पौड़ी—६३

सुरिपति भाए मानि तजि लागि चर्नन प्रेम बढाइमा।
वडि जानमा उसि भाप ते सध दीर्घ देय जनाइमा॥
वर्धन लागे पुसम परि प्रम वेकुसु नद रचाइमा।
गोप वधू व्रज वास सम जसु जनिनी सीजोदो राइमा॥
कंसराइ इद्र मोकन द्वारे माइमा॥

दो०—कसा पुसप जम पानि ले दिज देव करम मपेप।
साईदास दर्सन हृति नैमि बिप हरि पूजा सदा विसेप॥

पौड़ी—६४

निस उडिगनि सो सोमते नदिराइ सुमजनि माइमा।
सुप मासरण सुता बरुणु पासु जलु दुलेते मीवज राइमा।
सापी मत्र बेद का नवि पाह पहूता माइमा॥
मंतिरजामी जानिमा नदि राउ प्यास सिधाइमा।
वडि मागो वर्णु पासु घा जसि मीतिरि दर्स दिपाया॥
सुनु ताति छड़ाय सिमाइमा॥

पसत रसी प्रापरणी सपचूड सुदसन भाए।
से के गोपी उठि चलम्रा गोपी टेर सुसविद सुणाए ॥
भावरण भाया चर्न की पडि पिछो देह् समाइम्रा।
टक टूक कीता मद कौरि तबि सभा सकल उजिराए ॥
सो भसा त्रिमबनि राए ॥
दो०—धरि न देह फनिंद्र की प्राइमा बने मझारि।
नाईदास सपचूडि तबि सोडि उनि दीनानाथ मुरारि ॥
पौडी—७०
सब बीडा कस प्रति विपभासर रूपु पसारिम्रा।
दुहि परि बसि मैं प्राइमा मभमानो बहु हंकारिम्रा ॥
जिहि बनि पेलति भाइसा गोप बछ सुनता उचारे।
उसिने धर्म चलाइयो मपुर पकरि सुधर्न पसारे ॥
विपमासरि मुक्त सिधारे ॥
पौडी—७१
जमिना के तटि बासका से पेले जादिव राया।
केम्री बपुमु पसारिम्रा प्राइ मिसमा भाय धाइम्रा ॥
भाग पाहुनि की मुजि क्रस्न जी बलु सुनाहु बनाया।
हरि जी मतिरि जान्या देनु उठ्य सिर तसबाइम्रा ॥
बातिनि गियों तित था सें बीडा जिमो प्राइमा।
हरि दर्सुन केसी पाइम्रा ॥
पौडी—७२
सीसहा स्यामि बिसोकन्ते प्रति पेसति है व्रज सारी।
भानदिम सभ पेसते सम सोहे गोप स्वारी ॥
पुनु महामाई विसया बस भाया बन मझारी।
गोप चला उनि सकस धरि मनि देवे मदिन मुरारी ॥
उम्मामुद दैत निपात उनु व्रजि बस की मैनि उबारी।
कमराइ से माए सारि संभारी ॥
दो—मता मार्ई कमराइ रंगमूम रच भूरि।
साईदास ता सदाइयो मंन सुनि पाठिब देह म कसरि ॥

पौड़ी—७३
पासे ओथे कसराइ मार्द पसोता आइ।
आया उग्र सैण दा उठि मिलयो सनि सुप धाइ ॥
माउ मस्त करि पुछया विप नाद कसराइ।
सभै वस निपात उनि सभ मारेगा धाइ ॥
करि रगा मौतारि तूं असुरेटे सभ सदाइ।
जो व्रजिवासी लोक है सणु नदे मेड्ड बुलाइ ॥
मगिस पुरातनि अक्रूरपु चलि आए स्याम सगाइ।
कसराइ अक्रूरा मधवनि आइ ॥

पौड़ी—७४
सैके पतिमा राजे कस दी अक्रूरा वेव सिघाणा।
आइ पहुता नदि ग्राम दर्सनु मिलउोसु मनिभाणा ॥
अक्रूरे दसन पाइआ पुरातिन तपु कमाणा।
अक्रूरे कीनी वांछना सो सारा रूपु समाणा ॥
नदे आपे अक्रूरा रिपु दतु छठे नाही माणा।
सना सभु सदाई उस वना णा ॥
दो०—अवि हुमारि मागि वडि वस्मु देति दिजिराइ।
साईवास पूछ नि साको रमनि भर तुम आए किहु भाइ ॥
पौड़ी—७५
अक्रूरे पासो पूछटे कछ नदि जिसौदा वाति।
धंककरि यदिन धंनि तुम जो आए अजो की रात ॥
कस सन्दाए नंदि जी सगि कान्हा हलधरि भ्राति।
आधे सगि मिडावन हम नाही कूडि कहानि ॥
मइ पकति होए देपही नद जिसोदा नाति।
किउ जीविन नरपनि माति ॥
दो०—मनि की जीविम स धस किहु विष घीरे प्रान।
कान्हु छाडि सभ धेन हरि नवि मरे कलभ्रानि ॥
पौड़ी—७६
जवि मग चस अक्रूर जी कपु नदि जिसौदे कहूमा।
कौन काजि मेरे साइसे कस सगातो कहूमा ॥

पौड़ी—६५
जो जो सापी दसम की सो संता सुनिद बीचारी।
का रचायो सुराम का मनि मोहनि मदिन मुरारी॥
सुरि नरि देव गवन सुरण मुनि ध्यानों छुटिकी तारी।
बेदिन मडिम प्रानंदि सो तनि कछि गोप ग्वारी॥
मंन्दिर तजि तजि प्रापरणे प्राइ बठ बनुहु मझरी।
गाविनि रंगी प्रापिणी धुनि रंगी रगि मनिहारी॥
इक दे दे बुकिकी गाविती व्रिज की नीमा बनि भारी।
इकि नाचिति इक गाविसे प्रानंदि भई बिसु सारी॥
जती जोगी तपी सकल तजि बैरागी बनि पै हारी।
मोनिदिगबरि धारिनी सन्यासी भरि ब्रह्मचारी॥
पटि बसन भासता बिसु भामी देपन हारी।
देपनि को नब भाइमा प्रानंदि भई बिसु सारी॥
इउ रास रचो बनिवारी॥

दो —पौढ़ सुनि भरि गोप सुनि मील्हा करित बनास।
साईंदास मभिक बीच गोपी बनी मधि पेसन मागे रासि॥

पौड़ी—६६
दसिम सकदे प्रतिरे मनि मोहनि रास रचाई।
नव कौरि भरि स्याम तनि नी जोविन की चतुराई॥
मोरि मुकिटि माथे बने लटिपटी कांछ बनवाई।
भौंहां भरि कौस नैन भरि मोतनि माल बनाई॥
पीतांबरि मसतक कुसम प्रब मगि सोमा कही निजाई।
बीरी दांतो पंगि छबि कछु मतिमुति रूप दिपाई॥
चद बदन छबि कौस नैन इहि सोभा बरिनीनि जाई।
त्रिभवनि नाथ निरंद गुनि मिरंजन की बिध पाई॥
इउ मोहनि रास रचाई॥

दो॰—राजा को बछु सकल जगि तांकहि उपमा दीज।
साईंदास साब सरूपि तिहु बर्षता बर्न रापु महि जीज॥

पौड़ी—६७
मौरगो साम् बुलाइग्रा कहु भाविन सति सरमासि ।
कुसम-ग्रथ सरिभनि परी रचि बेनी सटिकस नासि ।।
उरि कभिकी पटि चीरि सिर कटि वांधे नवे वघाल ।
सारग नैनी चद मुखु सुकि नासक प्रसी भासि ।।
श्रीफल भ्रथ भरु हेमतनि कटि के हरि गौन मराल ।
विन भ्रतर भवे नायका भति सुंदिर रूप रिसालि ।।
तिन के ऊपिर रायका सो पिग्रारी मदिन गोपाल ।
भाहि मिसभ्रा मेरे मोहने प्रम स्यामा स्याम समाल ।।
सग सोभति मद के सालि ।।

पौड़ी—६८
ठाकुरि कीनी भ्रागिभ्रा सुरि किंनरि गाविन भ्राए ।
किंनरी ग्रास रबाव डफ सो झालिरी सबिद सुणाए ।।
सालि पखाविज भ्रंमृती जो सुणिए तौ सुध पाए ।
सभना ऊपरि वसरी भो मदिनि गोपाल बजाए ।।
दिगि दिग ता थेई करे करि ताल चटाके पाए ।
ठाकुरि मोहे तीन लोक जसि वेद पुराननि सुनारे ।।
भ्रस्थावरि जगम मोहीए नही भ्रंत न कोई पाए ।
सुरि मोमी सिव विरच भर ब्रह्मा निगम सुणाए ।।
बछि वास भरि धेनु धुनि भिरए वसी गहे नि पाए ।
स्वर्ग मोह्यो सुरि इद्रासरण रथु सूर्ज का भ्रटिकाए ।।
मावित गावित पेमते विज नारी सो चितु लाए ।
भ्रंतुर राम का हिर सीभा सग राधा दुरख भजाए ।।
सी भेसा भिमवमि राए ।।

पौड़ी—६९
विप्रा बनि बिच पेमते ममि मोहन मदिम मुरारि ।
करित कतूहल भ्रापि मै हरि संगि गोप गवारि ।।
गोप विराजहु मंडिली भति सुंदरि काछ बनाए ।
इकि गावे इकि पेसेवे इकि निरिप जान्मिराए ।।

पसत रगी आपणी सपभूड सुदर्सन आए।
स के गोपी उठि चलया गोपी टेर सुसबिद सुणाए॥
धावण धाया चर्न की पडि पिछो देह भमाइमा।
टुक टुक कीता नव कोरि सचि सैना सकल उचिराए॥
सो भैसा त्रिभवनि राए॥

दो०—धरि के देह फनिद्र की आइमा बने मझारि।
साँईदास सप भूडि तवि तोडि उनि दीनानाथ मुरारि॥

पौडी—७०

लखे दीडा कस प्रति त्रिपभासर स्पु पसारिआ।
दुहि परि बसि मैं आइमा अभमानी बहु हंकारिआ॥
जिहि वनि पेलति लाडला गोप मख सुलता उचारे।
उमिटे चर्न चलाइओ मधुर पकरि सुघर्न पछारे॥
त्रिपभासरि मुक्त सिधारे॥

पौडी—७१

जमिना के तटि बालका सै पेले आविद रामा।
केसी बपुतु पसारिआ आइ मिलआ श्याम आइमा॥
आगे पाहुनि की मुजि कृस्न जी बसु सुनाह चलाया।
हरि जी भतिरि जान्या देतु उठा सिर तलवाइमा॥
वातिनि गियो तित था सै दीडा जिओ आइमा।
हरि दर्सन केसी पाइमा॥

पौडी—७२

सीस्हा स्यामि बिलोकदे अति पेलति है व्रज सारी।
आनदि मैं मम पेलते सम सोहे गोप गवारी॥
पुनु महामाई दिसदा चस आया वने मझारी।
गोप चला उनि सकल धरि मनि देपे मदिम मुरारी॥
कृमासुर दैत निपात उनु व्रजि बस की सैनि उचारी।
कसराइ लै आए सारि संभारी॥

दो०—मता नादे कसराइ रचभूम रच भूरि।
साँईदास ता सदाइयो नद सुति पाठिव देह अकरूरि॥

पौड़ी—७३
पासे जोधे कसराइ मार्द पलोता भाइ।
जाया उग्र सैण दा उठि मिलयो सनि नृप धाइ॥
भाउ भगत करि पुछ्या विप नाई कंसराइ।
सभै दत निपात उनि सभ मारेगा भाइ॥
करि रगा मौतारि सू असुरेटे सभ सदाइ।
जो व्रजिवासी लोक है सणु नदे लेहु बुलाइ॥
भगित पुरातनि अकूररपु चलि आए स्याम सगाइ।
कसराइ अक्रूरा भमवनि जाइ॥
पौड़ी—७४
लके पतिआ राज कंस दी अक्रूरा देव सिभाणा।
आइ पहुता नदि ग्राम दर्सनु मिलठोसु मनिभाणा॥
अक्रूरे दसन पाइआ पुरातिन तपु कमाणा।
अक्रूरे कीनी वांछना सो सारा रपु समाणा॥
नंदे आये अक्रूरा रिपु दलु छडे नाही भाणा।
सना सभु सदाई उस दैना णा॥
दो०—अवि हमारि भागि बडि दरसु देति दिजिराइ।
साँईदास पूछ नि साको रसनि भर तुम आए किहु भाइ॥
पौड़ी—७५
अक्रूरे पासो पूछदे कछु नदि जिसौन्द बाति।
अंककरि यदिन धनि तुम जो आए अजो की रात॥
कंस सदाए नदि जी सगि कान्हा हलधरि आनि।
जाये सगि मिडावने हम नाही कूडि कहाति॥
मइ चकति होए देवही नद जिसोदा तानि।
किउ जीविन नरपवि माति॥
दो०—मनि की जीविम ले चले किहु बिम धीरे प्रान।
कान्ह छाडि सभ धेन हरि तबि मेर कलआनि॥
पौड़ी—७६
जबि सग चले अक्रूर जी कछु नदि जिसौदे कहआ।
कौन काजि मेरे भाइसे कस सगाती कहआ॥

सम कछु देवा कंस जोग जो मगे भूपति चहुमा।
सकल हमारी भेन लेहु प्रभ गोकल जाइ नि चहुमा॥
डरिदा नसो मथूरिरिपु इहु सोडो कार्में न रिपहुमा।
सुपसकिसुतिमुक्ति काटिवारद्रिगजमिमवछोहा रहिमा॥
पाछो सुसु म आए सहमा॥

दो —मम परिपाटी कंस को तुम हरि भूलेहु नाह।
साईदास रामिटि फर ताहू परे तुम काहू डरि नाह॥

पौड़ी—७७

माईदास सहिज बिच कस रग रच्याठोतारि।
जामे सारे मविठोसु महि वेसा है सिरिदारि॥
प्रभूरेटे सम प्रभमान बिच स फौजा करि विसिमारि।
होहोसी इक पासिकी इक जोडि रथा प्रसिमारि॥
कारे कृष्ण मिस पसे हरखति न मारनहारि।
नारद किमका मारीया जोगु कंसाणे पारिवार॥
पर कसे नूं माही सारि॥[1]

---

१ यहां पर "वार भागवत" की रचना समाप्त है। पर इस प्रकार भागवत की कथा की महत्ता समाप्ति ठीक प्रतीत नहीं होती। कवि ने भागवत की कथा को पंजाबी के 'वार' की शैली में प्रस्तुत किया है। इसमें ७७ पौड़ियां हैं मूल ग्रन्थ में पौड़ी संख्या अन्त में है पर सुविधा के लिए उसे आरम्भ में रखा है।

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नम

अथ अम्रत बानी[1]

सो०—अंम्रत हारि को नामु है जो चितु करि मनलाइ।
साँईदास जरा रोग तन ना ग्रसे आवागउन मिटाइ ।।

अम्रत बानी अम्रत हरि नाम। अविनी सुनि पाव विस्रामु ।।
कोटि जनिम भ्रम मुक्ता करै। जो अंम्रत बानी चित ते धरै ।।
जो अठगुन हो सभ मेटे। जो सत गुरि कृपा करि भेटे ।।
आवागउन ते सभे उधारि। अयसी अम्रत बानी सार ।।
अम्रत बानी अमृत रूपु। साँईदास भज भये अनूप ।। १ ।।

आदि अति मग एक ओंकारि। सर्व निरन्तर ति बिस्थारि ।।
आपे साचा साचा नाउ। साचा साहब साचा थाउ ।।
साचा अमर साचा नीशानु। साचा हुकम साचा परिवानु ।।
साचा रूपु साचा भगिवानु। साचा पदि साचा निर्वानु ।।
साची बानी साचा रंगु। साँईदास बसत ति संग ।। २ ।।

साचे कर्म साचो कर्तूब। साची साची साचा खूब ।।
साची प्रीति साचा निरंकारि। साची भक्त साचा दर्वारि ।।
साचा अम्रत हरि को नाउ। साची बुधहरि हरि गुन गाउ ।।
साचा मुक्त साचा बापारि। साची प्रीति तरे संसारि ।।
साचा साचा हरि निज जानों। साँईदास यदि साच समानो ।। ३ ।।

---

१ अम्रतबानी'—उत्तम पाठ अमृतवाणी है। यह बाबा साईदास जी की रचना है। इसमें २४ अष्टपदियाँ हैं। प्रत्येक अष्टपदी के अंत में दोहा आया है। यह पद्धतियों का एक पद है। इस प्रकार आठ पदों की एक अष्टपदी है। "अष्टपदी" छन्द भारतवर्ष जयदेव के गीत गोविंद में सर्वप्रथम प्रयुक्त हुआ है। परवर्ती प्रायः सभी भक्तों ने इस छन्द में प्रभु की महिमा गाई है।

साचे गुण साची मति बुधि। साचे भवन भरे मन सुध ॥
साची प्रीत साची तन जोत। साचे धरिम विष सच होत ॥
साचे सिमरे साचे करतार। साचे हठ हरि सेती प्यारि ॥
साची धर्म साचे ब्रह्मधि। साचे मारि भरे मजपधि ॥
साचो साचा जिसका वर्तमानु। सांईदास तिस्तो कुर्बानु ॥ ४ ॥

साचे तर्ते साचे मा। साचे भान मिले सभ जा ॥
साचा गगन नरायणु साच। साची बुद्ध मउर परिकाम ॥
साची बानी साचा आपु। साच उपाय अपे सभ आपु ॥
साच बरणत बरणाइ साचु। उपिजे बिनसे साचो साचु ॥
सर्व निरन्तर एका एक। गहु सांईदास दास ति टेक ॥ ५ ॥

साच सिद्ध साच हरि ध्यावें। साचे तीर्थ मठ सठ नावें ॥
साच भक्त जो हरि रस राते। साचे जोग युक्त हिललाते ॥
साचे घ साचे पातसाह। राम नाम मधि पावे राह ॥
साच घटि मम सत्त सतोपु। साचे राचे लगे न दोपु ॥
साच जीव जन्त सम साचे। सांईदास सच सर्नी राचे ॥ ६ ॥

साची माया हरि भक्त मिला। साच भक्त बिच राचे मा ॥
साच ऊभा साचे प्रविभूति। साचे जि बस कीमे बूति ॥
साची बानी प्रमिहृदि मधिकार। साचे सो अनि हरि सो प्यारि
साचे सुन्न मदरि सिवलावे। गरि प्रसादि सदा सुप पावे ॥
साची राम नाम की योट। सांईदास जि की हय योट ॥ ७ ॥

साचा पाप साचा ति रुपु। साच भरि मै साच सरुपु ॥
साचा हरि साचा हरि आपु। साचा बापउ थापे बापु ॥
साचा प्रउत सब्द पमा। साचा साचा साच सुभ ॥
साचा साचा साचा साचु। जो कछ कीनो साचो साचु ॥
साचा साचा साचा एक। गहु साईंदास दास ति टेक ॥ ८ ॥

दो —सर्व निरन्तर एक हय सभ दिप्टी गुर एक।
साईंदास मामम कीमा योट हम राम नाम करि टेक ॥

अष्टपदी—२

एको पुपु सकल घट मा। घन प्रकास पतास सभ धा ।।
एको एक एक प्रभ एक। आदि अति लग एको एक ।।
एको पुपु उपावन हारि। जो सिमर सो उतरे पारि ।।
एको नाम एको नीसानु। हुकम चले ति सकल जहानु ।।
एका आप आप फुन एक। सांईदास गहु हर्को टेक ।। १ ।।

एको एक अनका रूपु। नाम अनन्त सरूप अनूपु ।।
एको ब्रह्म ब्रह्म हय एक। सब माहि वेले फुनि एक ।।
एको चिहन चाक ति रंगि। जयसं दीप दसव पतंग ।।
एका एक एक आकार। सर्वमाह ताका विसथारि ।।
एको एक कजनि जो। सांईदास मन उतम मा ।। २ ।।

साहब एक आप दातारि। सकल सिम्र को देवनहारि ।।
एको राम एक गोपाल। एको भक्तां सदा दयाल ।।
एको कहन एक भगिवानु। साध संगि मल एको जानु ।।
एको कर्ता हर्ता एक। प्रान पुप प्रानन की टेक ।।
मय वसहारि सदा बलिहारि। सांईदास ता परि सदवार ।। ३ ।।

एको एनद मदन नदिमास। एको सभ जीयन प्रतपाल ।।
एको महाराजि चलोक। एको कर्ता सम स पोत ।।
एको तिरथा पुप ह एक। अनेक माह जांनो हरि एक ।।
एक हि कीनो सकल पसार। तांको अतु न पारावारि ।।
एको साधा दीनि दयाल। साई दास ति सिम्र निहाल ।। ४ ।।

एक मछ कछ बाराह। एको नरसिंघ भयो महा ।।
एको मदन मुरारी राम। एको पर्स राम हर्नाम ।।
एको विष्न महात्मिवु। एका जौग जुगन्तर थापु ।।
एको ब्रह्म एको इन्द्र। एको मम महस फगिन्द्र ।।
एको सति सरूप गुन्नामु। सांईदास जा करे सु रामु ।। ५ ।।

एको धर्ती अंबर ईस। एको हरि एको जगिदीस॥
एको पवन पानी ससारि। एको एक एक करतारि॥
एको मंत्र माया को माउ। एको ओंकारि पसरयो सम भाउ
एको गुणा निधानि अपारि। अमल्य निरजनि गिनतम पार॥
एको एक अनेकहि रूपु। सांईदास हुम तत सरूपु॥ ६॥

एको मदन मुरारी श्री हरि। एको राम कहन वसी धरि॥
एको रचना राचन हरि। एको कहित समद बीचारि॥
एको ब्रह्म जोति सभ माह। एको सभ मयउ मिटि समाह॥
एको ज्ञानी ध्यानी आपु। एको रह्यो सव बीआपु॥
एको नरकारि नरि रूपु। सांईदास वह तत सरूपु॥ ७॥

एको धर्म पुर्पु सभ ठउर। एको राम रम्यो महि अउर॥
एको कउलापति परिमेस्वरि। एको गोंविद एक महेस्वरि॥
एको सकल कला भरिपूरि। एको एक निकटि नहि दूरि॥
एको करुणामय नवलाल। एको पूर्न पुर्पु गुपाल॥
एको वर्तमान हरि जानु। सांईदास तूं जान प्रमानु॥ ८॥

दो०—आपे आपे आप प्रम दूसरि नाही कोइ।
सांईदास सर्ब रगमय आप हुय जो सोभी मनि होइ॥

अष्टपदी—१

आप करिता हर्ता आप। आपे दाता भर्ता आप॥
आपे साहू आपे चोर। आपे बणियो नंदि किसोरि॥
आपे मानी बोले आप। आपे रह्यो सव बीआप॥
आपे पूत आप पित मात। आपे नीची उत्तम जाति॥
आपे पेस पियाबिनहारि। सांईदास आपे परिवारि॥ १॥

आपे हस्त आप हय घोड़ा। आपे मरयन आप हुम मोरा॥
आपे भू आपे अहलादि। आपे पूर्न आदि जुगादि॥
आपे मूरिष तत ज्ञान। आपे मठसठ को इसनानु॥
आपे अपिनी जाणे बात। आपे उपिजे आप समात॥
आपे सूर आप बलहर्तु। सांईदास ताही समसुर्त॥ २॥

आपे पसु आपे सुर्जात। आपे सरिवरि आपे पात॥
आपे सिद्ध साध अविधूत। आप भूप परि मिले[1] अभूति॥
आपे जोगी अलख कहावे। आप अगम्यतांडो लावे॥
आपे अपिनी कीरति करे। आपे जीवे आपे मरे॥
आपे पवन पानी बसतर। सांईदास जो जाणे अतर॥ ३॥

आपे ब्रह्म उपाविन हारि। आपे गगन गुफा निरधारि॥
आपे दाता आपे भुक्ता। आपे सकल घटामय जुक्ता॥
आप तीरथ तववोवासा। आप अस्थर आप उदासी॥
आपे पूरन जलि थल माह। पूर रह्यो घट घट मय ताह॥
आप ग्यानी ध्यानी आप। सांईदास हरि अलख जाप॥ ४॥

आपे एक आप विसथारि। आपे भउ रा‍ह ‍ड्रणहार॥
आपे जोध महाबल पूरि। आपे ब्रह्म सकल भरिपूरि॥
आपे राज महाबलि राज। आपे दीन सदा मुहस्थाज॥
आपे नागा आपे हंस। आपे उत्तम मध्यम धम॥
आपे ब्रह्मा संकरा। बलि बलि सांईदास सदा॥ ५॥

आपे आपे ऊच आप नीच। आपे न्यारो आपे बीच॥
आपे मनोहरि आपे राम। सकल सिष्ट क साज काम॥
आप पापी पाप कमावे। आपे प्रगट बैकुंठ मिधावे॥
आप महज रहे गलतान। आपे गहरि गमारि सुजान॥
आपे विष्णु कहावे बीरि। सांईदास हरि बस बल धीरि॥ ६॥

आप धूप आप हुय छाउ। आप बसनि महति बिश्राम॥
आप ससि धरि आप भानु। आपे उडगण भयो विमानु॥
आप धर्ती आप अकास। आप धउल धन की धास॥
आपे मौरि मसव सुलतान। आप दीन रक भा जान॥
आपे राम रमयो सभ माह। सांईदास अतर कछ नाह॥ ७॥

---

१ मिले=मने=मणाना।

आपे गोबिंद जमि करपामि । आपे पवित सदा दयाल ॥
आपे धर्म पुर्ण परिमेस्वरि । आपे सांत सरूप महेस्वरि ॥
आपे सिष्ट उपावनि हारि । आपे सकल सिष्ट करितार ॥
आपे आतम आपे जीउ । आपे तिरिआ आपे पीउ ॥
आपे सीस आप ससोपु । सांईदास कछु लगे न दोपु ॥ ८ ॥

दो —सभ जगु बिनसनिहारि हय विनस माही एक ।
साईदास अहिनस हरि गुण गाईये राम नाम की टेक ॥

अष्टपदी—४

एकन बिनसे हरि चितलावे । एक न बिनसे अहनिस ध्यावे ॥
एक न बिनसे परि उपकारी । एक न विनसे सन मुरारी ॥
एक न बिनसे हर्गुण माय । एक न विनसे नाम ध्याय ॥
एक नि बिनसे जिह घटि प्रेमु । एक न बिनस सिमरण नेम ॥
एक न बिनसे हरि की सर्ना । सांईदास प्रभ सबस भर्ना ॥ १ ॥

एक न बिनसे साध के सग । एक न बिनसे प्रभ के रग ॥
एक नि बिनसे जो प्रभ मीत । एक न बिनसे जो हर्मीत ॥
एक न बिनसे साध सग दरहे । एक न विनसे हरि हरि कहे ॥
एक नि बिनसे हरि की सेउ । एक न बिनसे आतम भेउ ॥
एक बिनसे प्रभ असमा । सांईदास उत्तम मत पा ॥ २ ॥

एक न बिनसे बोल हर्बानी । एकनि बिन से सर्ब पछानी ॥
एक न बिनसे सिमरण रीत । एक न बिनसे मन पर्तीत ॥
एक न बिनसे हरि रस पीवे । एक न बिनसे निर्मल थीवे ॥
एक न बिनसे भक्त कमावे । एक न विनसे सर्नी आवे ॥
एक न बिनसे गिमस ज्ञान । साईदास घट सम पछान ॥ ३ ॥

एक न बिनसे पच वस करे । एक न बिनसे जीवित मरे ॥
एक न बिनसे हर्सों प्रीत । एक न बिनसे निर्मल रीत ॥
एक न बिनसे क्रोध निवारे । एक न बिनसे हरि चित धारे ॥
एक न बिनसे बिप्या ते रहे । एक न विनसे हर्गुण कहे ॥

एक न विनसे ब्रह्म पछाने । एक न विनसे सभ सम जाने ॥
एक न विनसे परम पुरासम् । साहीदास जाएो जो भारम् ॥ ४ ॥

एक न विनसे नीच कहावे । एक न विनसे हरि चर्नी धावे ॥
एक न विनसे हर्गुन वानी । एक न विनसे ब्रह्म ज्ञानी ॥
एक न विनसेसाधसगत मोत । एक न विनसे हरगुरण चीत ॥
एक न विनसे परि उपकारी । एक न विनसे नाम विचारी ॥
एक न विनसे जिह हरि सोप्यारी । साहीदास तिस तो बलहारि ॥ ५ ॥

एक न विनसे लोभ गवाए । एक न विनसे हरि चित लाए ॥
एक न विनसे हरि सगत रचै । एक नि विनसे हरि कीतन मचै ॥
एक न विनसे ब्रह्म विचारी । एक न विनसे त्रिभवनि दातारी ॥
एक न विनसे पूरन ज्ञान । एक न विनसे हरि मो ध्यान ॥
एक न विनसे हरि जस कहे । सांहीदास अनमय हो रहे ॥ ६ ॥

एक न विनसे पूरन परमेश्वरि । एक न विनसे सब बसेस्वर ॥
एक न विनसे हरि को नाम । एक नि विनसे आतम राम ॥
एक न विनसे प्रम सगत दाता । एक न विनसे नाम पछाता ॥
एक न विनसे होय निरास । एक न विनसे साध निवास ॥
एक न विनसे हरगुरण गात । सांहीदास ता परि बल जात ॥ ७ ॥

एक न विनसे करि जपतप पूजा । एक न विनस जिह नाही दूजा
एक न विनसे जाने एक । एक न विनसे हर्की टेक ॥
एक न विनसे कथा हर करे । एक न विनस चर्नी परे ॥
एक न विनस सुन्न समाय । एक न विनस अगम अगाध ॥
एक न विनसे जिह आतम जीता । सांहीदास तिह प्रम वस कीता ॥ ८ ॥

दो०—सभु जगु विनसत देषयो चला जात दिन रात ।
सांहीदास विन भक्त हरि धृग परिहाही पात ॥

अष्टपदी—५

विनसे सो जो गुण नहि गावे । विनस सो जा हर्न धियावे ॥
विनसे सो प्रभ को नही जाने । विनसे सो विष्या मनि मान ॥

विनसेसो महि साध समत रहे। विनसे सो जो मिथ्या कहे॥
विनसे सो रहे सदा अचेत। ताकों कबू न उबिरे येत॥
विनसे सो परि निंद्या करे। सांईदास सो जनमे मरे॥ १॥

विनसे सो प्रभ कों नही चेते। बिनसे सो हरि सो नहि हेते॥
विनसे सो बुरा साध को कहू। विनिसे सो मिथ्या रच रहे॥
विनसे सो जो क्रोध मन करे। विनसे सो माया चित धर॥
विनसे सो जा रहे कुचीस। हरि सिमरण विनु कहा सुचीस॥
बिनसे सो हर कथा न जाने। सांईदास प्रभ क्रपा समाने॥ २॥

बिनिसे सो हरि सो ना रच। बिनसे सो हरि गुरण ना मच॥
बिमसे सो हरि गुरण महि गावें। बिमसे सा हरि को नहि ध्यावे॥
बिनसे सो बिष्या को ध्यावे। बिनसे सा जो लोभ लुभावे॥
बिनसे सो जनि भूला आपु। विनसे सो जाएे विष जापु॥
विनसे सो जो सदा बिकारी। सांईदास तिह बाजी हारी॥ ३॥

बिनसे सो जो हर् न पछाने। विन हरि भउरि रिदे करि जारा
बिनसे सो जो ब्रह्म बुलाए। बिन भगवान भ्रानर् बसाए॥
बिनसे सो हरि न नाम लए। भहिनिस भातम बिप को दए॥
बिनसे सो पूजा करि जाने। बिम भगिवान भन्तर चित भाने॥
विनसे सो विकारि कों बावे। सांईदास बहि गत नहि पावे॥ ४॥

बिनसे सो हरि सर्न नही पडे। बिनसे सो पवन नही मडे॥
बिनसे सो हरि सो महि मेटे। विनसे सो हउमा नहीं मेटे॥
विनसे सो जिन रिदे न प्रेम। हरि सिमरण को नही नेम॥
बिनसे सो हरि हेत न जाणे। प्रभ की प्रीत नि मन मयभाणे॥
बिमसे सो हरि सिमरण हीन। सांईदास वह सदा भधीन॥ ५॥

विनसे सो जिन मनि भभमान। बिमसे सो हरि धरे न ध्यान॥
बिनसे सो पापखी होइ। हरि सिमरण ते भूला सोइ॥
बिमसे सो बिष्या फल मोहू। बिनसे सो बिस मन मो ध्रोहू॥
बिनसे सो मन बस ना करे। बिनसे सो बिष्या संग मरे॥
बिमसे सो गुरि चर्न न लागे। सांईदास तिह देपु भभागे॥ ६॥

विनसे सो हर्कीत नहि करे। विनसे सो दुभया चित धरे॥
विनते सो विस सासब दाम। विना भजन धारे भविकाम॥
विनसे सो हर्को विसराइ। विन हरिसिमरण ग्रउध गवाइ
विनसे सो गुरि मत्र विसारे। जनिम ग्रमोल लजान विकारे॥
विनसे सो विस मर्म न जाना। सांईदास वह मर्म भुलाना॥ ७॥

बिनसे सो हरि पथ न जाने। विनसे सो हरि साध न माने॥
बिनसे सो ससा मन करे। विनसे सो हरिचित ना धरे॥
विनसे सो ममता मद माता। विनसे सो जिस हरदन पछाता॥
बिनसे नाम विना तन ग्रध। रोम रोम ग्रावत दुर्गंध॥
बिमसे सो जिस ग्राप भुलावे। वारि वारि जूनी भरिमावे॥
सांईदास विनसे जनि सोइ। हरि सिमरण ते भूला होइ॥ ८॥

सलोक—हरि हरि नाम जनि जो जपे ग्रउर साध दस द्वारि।
सांईदास जरा मर्म ते न ग्रचेता तिविह ग्रपर ग्रपारि॥

ग्रष्टपदी—६

हरि सिमरे सो सदा सुखासा। साके ऊपरि ग्राप दयासा॥
हरि सिमर सठ परिवान। ग्रहि निस हरि सो धरे ध्यानि॥
हरि सिमरे सो कबू न मरे। भउ जल सागर ग्रनिभम तरे॥
हरि सिमरे सो सर्व ते ऊचा। सोई जानो मुक्त पहूचा॥
हरि सिमरे सो सोमावानु। सांईदास तिस्तो कुर्बानु॥ १॥

हरि सिमरे सो जम ते छूटे। ग्रम की मत ग्रतरि ते सूटे॥
हरि सिमरे सो सुंन्न विराजे। ग्रहिनिस गह हर बाको गाजे॥
हरि सिमरे सो राजनराजा। सुंन्न सविद तिह ग्रतिर बाजा॥
हरि सिमरे पावे सुखमानु। दुर्गा माही होय नहान॥
हरि सिमरे सो पुर्य निर्मानु। सांईदास सो पूरन ग्यानु॥ २॥

हरि सिमरे सा मउ जल तरे। गुर के सबद नि जनमे मरे॥
हरिसिमर तिस दुग्न म बिग्रापे। मन घटा हरि हर करि पावे॥
हरि सिमरे मिथ्या ते रहे। गुरि प्रसाद ग्रमृत रस गहे॥

जागे सो जो हर्का मीतु। प्रेम भक्त सो निर्मल चीतु॥
जाग सो जिस ब्रह्म गियान। सदा रप सति गुरि सो धियान॥
जागे सो जिस मनि पतयाना। सांईदास दास दर्माना॥ ५॥

जागे सो जिस सीस न होव। हरि जस सेती मुख को धोव॥
जागे सो जो पचम मारे। तांको वस करि ग्रहि निम रापे॥
जागे सो जिस निर्मल ज्ञानु। पूर्ण पुर्ष सो लगो धियानु॥
जागे सो जिस नाम हुलास। सदा रपे हरि रसकी प्यासि॥
जागे सो जिस मत सतोषु। सांईदास मिटया तिस दोषा॥ ६॥

जागे सो जस घटि मय पीडि। बेदना जाएं सकल सरीरि॥
जागे सो जिस हरि सगत हेत। ग्रहि मिस मिरु ग्रावे हर सेत॥
जागे सो जिस हमुप जामी। सति गुरि मिम ग्रतरि ठहिरानी॥
जागे सो जो ब्रह्म गियानी। घटि घटि भीतिरि ब्रह्म पछानी॥
जागे सो जिस सतिगुरि मया। सांईदास तिह् सर्मी पया॥ ७॥

जागे सो जिस हरि हरि करिया। हर्रस ग्रंम्रत मन मोल्लय॥
जागे सो जिस ब्रह्म रिद माही। दसम बैपत जम डरि जाही॥
जागे सा जिस प्रीत हकम। राम भक्त भट ग्रन्तर्मीन॥
जागे सो जिस दर्मन मायो। हरि भायो भयताप मिटायो॥
जागे सो जिस ग्रनहद बानी। सांईदास घटि माहु समानी॥ ८॥

दो०—हरि का नामु ग्रमोल हय निम्मसुर्त[1] बिप्यान।
साईदास रंचक मम ते मन रखें पायो परिम निधानि॥

ग्रष्टपदी—८

हर्कानाम जप पूरण मानि। तांत मिट गए सकल सताप॥
हरि का नाम सोई जन सेवे। जीविपिनु ग्रर्पे हरि देवे॥
हरि का नाम जपे सुप पावे। बारि बारि जूनी नहि ग्रावे॥
हरि का नाम महा सुपदाई। ग्रादि ग्रातमध्य सदा सहाई॥
हरि का नाम बिनासे पाप। साईदास सदा हरि जाप॥ १॥

---

१ निमम मुनि।

हरि का नाम अगत्र समऊथा। जो सिमरे मुक्त पहूथा॥
हरि का नाम सदा मन वसे। तिहि प्रसादि दूत जन मरे॥
हरि का नाम जपे सो पूरा। ताके मनि के मिटे विसूरा॥
हरि का नाम जपो रे भाई। यही मय सुमरी मतिमाही॥
हरि का नाम सदा सुखदाई। सांईदास दास लिउ लाई॥ २॥

हरि का नाम साध सग पाए। निस वासरि हरिके गुनि गाए॥
हरिका नाम जप गनिकातरी। गजसमानारि जपति निसतरी
हरि का नाम गभीरि सुजान। जो सिमर पूरिए निर्वान॥
हर्कानाम जपे जो कोई। मनिका ससा भारे पोई॥
हर्कानाम मुक्त को दाता। सांईदास भवि पकी आता॥ ३॥

हर्कानाम सत्त जनि ओट। जपि हर्नाम तजो विष पोट॥
हरि का नाम जनि तारण हारि। जो सिमरे सोउ तिरे पारि॥
हरि का नाम भुनाये मीडि। दूरि करे तनि होवे पीडि॥
हरि का नाम जपे वडिभाही। जगि भीतिरि होवे प्रभताही॥
हरि का नाम जपत दुखजाइ। सांईदास पवि सांत समाइ॥ ४॥

हरि का नाम जपे सा भागे। गुरि प्रसादि हरि सेवा लागे॥
हरि का नाम जपति विश्राम। गुरि प्रसादि पूरण सम काम॥
हरि का नाम सब सुखिनाही। मिटे बियोग मन हरि राही॥
हरि को नाम जपे जो कोइ। तीनि लोक ते न्यारा होइ॥
हरि का नाम जपे दिन रयन। सांईदास तिहि घटि महु चैयन॥५॥

हरि का नाम जपे सुरि ज्ञान। गुरि प्रसादि हरि रिदे ध्यानि॥
हरि का नाम जपे सन्यासी। गुरि प्रसादि काटी जम फासी॥
हरि का नाम जपे जोग्रानी। गुरिप्रसादि मिटि भाविए जाणी
हरि का नाम जपे परिवानु। जम वयरी की चूकत कानि॥
हरि का नाम जपे सो पूरा। साईदास मिटि सकल विसूरा॥ ६॥

हरि का नाम जपे वयरागी। गुरि प्रसादि भम सकल तयागी
हर्कानाम जपे मनि माह। गुरि प्रसादि अंतर्कछु माह॥
हरि का नाम जपे नही मरे। गुरि प्रसादि भम सागर तरे॥

हरि सिमरे सोभा जगि होइ । बर्गा ठाक नि साके कोइ ॥
हरि सिमरे सो पाट हुडावे । सांईदास दुःख तज सुप पावे ॥ ३ ॥

हरि सिमरे सो पूरन ग्रान । जाके रिदे बसे भगिवानि ॥
हरि सिमरे निमल हो रहे । कबू न मुप त मिथ्या कहे ॥
हरिसिमरे तिस सम कछु सूझे । गुरि प्रसाद सुभ गूढ़ बिध बूझे ॥
हरि मिमरे मिटया' बागउनु । हरि सिमर पर्से त्रय भवन ॥
हरिसिमरे तिस बातका जानु । सांईदास सदा कुर्बानु ॥ ४ ॥

हरि सिमरे सो मुप का बासी । सन्त सदा मेटे अबिनासी ॥
हरि सिमरे सो भाप भर्मेरे । सकल जगत तिह सर्नी परे ॥
हरि सिमरे सा आप भगिवानु । जा के अंतर हरि रस ग्रानु ॥
हरि सिमरे सो हरि का दासु । हरि सिमर आतम परिकास ॥
हरि सिमरे उत्तम मत ताकी । सांईदास गति क्याकहु यांकी ॥ ५ ॥

हरिसिमर अहि निस गुणि गाइ । गुरि प्रसाद सुख सिव साइ ॥
हरि सिमरे सो रते माया । गुरि प्रसाद छूटे मृग बांधा ॥
हरि मिमरे मेटे अभिमान । सोई होवे दर् परवानु ॥
हरि सिमरे सो निहचल आसनु । गुर्प्रसाद सर्ब दुःख नासन ॥
हरि मिमरे पूरन्ता लमा । सांईदास तिह जगत बया ॥ ६ ॥

हरि सिमरे आतम बस रापे । गुरि प्रसादि अमृत रस चापे ॥
हरि सिमरे सो पदि निर्बानि । राम नाम सो धरे धियान ॥
हरि सिमरे सोई सुरि ग्रान । हरि बर्गा सोई परिवान ॥
हरि सिमरे उत्तम जगिदीस । हरि सिमरे सम जगि को ईस
हरि सिमरे सो साध कहावे । सांईदास दास गति पावे ॥ ७ ॥

हरि सिमरे सोई गत पाइ । सहज समाध रहे लिवलाइ ॥
हरि सिमर सोई अबिनाशी । प्रेम मगन को घट घटि बासी ॥
हरि सिमरे मन माहु समावे । गुर प्रसादि अमृत फल पावे ॥

---

१ 'भा' लिपिकार से छूट गया है।

हरि सिमरे सिस बिघन न मागे । गुरि प्रसादि मनदि भट आगे
हरि सिमर जा ओहा कहे । सांईदास दास सो चहे ॥ ८॥

दो०—सभ जगु सोया देषयो को जागृत हम नाह ।
जा जागृत हय सांईदास सांई सुष के माह ॥

अष्टपदा—७

जागे सा जनि मनि परितीति । आगे सा जिस निर्मल रीति ॥
जागे सो जिस ज्ञानि प्रकास । जागे सो जिस सुंम्न की भास ॥
जागे सो जिस सति गुर दया । जागे सो जिस हर घटि लया ॥
जागे सो जिस मतर पीड । हरि सिमरण बिनु बिकल सरीरि
जागे सो जिस प्रेम रिद मतर । सांईदास कछु नाहू निरंतर ॥ १ ॥

जागे सो जगदीस पछाने । जागे सो हरि दरि को माने ॥
जागे सो जो ब्रह्म गियानी । जागे सो हरि कथा बषानी
जागे सो ममता ते रहे । जागे सो जो हरि जस कहे ॥
जागे सो बोले हरि बानी । प्रेम भक्त घटि माहू पछानी ॥
जागे सो हरि रस मतवाला । सांईदास तिह धर्न रवाला ॥ २ ॥

जागे सो जो सभ सम जाणे । जागे सो जो तत्त पछाने ॥
जागे सो चउरासी वेषा । जागे सो जो हरि रस गेषा ॥
जागे सो जो प्रहि निस जागे । जागे सो जो हरि सो लागे ॥
जागे सो जो हरि रस राता । जागे सो हरि भक्त माता ॥
जागे सो प्राप दे त्याग । सांईदास तिह पूरन भाग ॥ ३ ॥

जागे सो जो निगम बिचारे । प्रहि निस रसना नाम उचारे ॥
जागे सो जो नर बुध्यवानु । निस दिन सिमरे पुर्ष निधान ॥
जागे सो जो मति गुरि सर्ना । ताका चिहन कहा क्या वर्ना ॥
जागे सो जिस हरि जस प्रीत । प्रेम भक्त की उपजी रीत ॥
जागे सो जो निर्मल जोत । सांईदास दास हरि ओट ॥ ४ ॥

जागे सो जिस सम कछ सूझे । प्रहि निस प्रगिमि निगम विध बूझे
जागे सो जिन आतम चीन्हा । कोटि जनम भ्रम मुक्ता कीना ॥

जागे सो जो हर्का मीतु। प्रेम भक्त सो निर्मल चीतु ॥
जागे सो जिस ब्रह्म गियान। सदा रव सतिगुरि सो धियान ॥
जागे सो जिस ममि पतमाना। सांईदास वास दर्माना ॥ ५ ॥

जागे सो जिस सीस न होवे। हरि जस सेती मुख जो धोवे ॥
जागे सो जो पवन माये। तांको बस करिअहि निस राये ॥
जागे सो जिस निर्मल ज्ञानु। पूर्ण पुर्य सो लगो धियानु ॥
जागे सो जिस नाम हुलास। सदा रखे हरि रसकी प्यासि ॥
जागे सो जिस सत सतोषु। सांईदास मिटया तिस दोषा ॥ ६ ॥

जागे सो जस घटि मय पीडि। वेदना जागे सकल सरीरि ॥
जागे सो जिस हरि लगत हेत। अहि निस मिउ भावे हर सेत ॥
जागे सो जिस हर्मुष जानी। सति गुरि मिस भ्रतरि ठहिरानी ॥
जागे सो जो ब्रह्म मियानी। घटि घटि भीतिरि ब्रह्म पछानी ॥
जागे सो जिस सतिगुरि मया। सांईदास तिह सर्नी पया ॥ ७ ॥

जागे सो जिस हरि हरि करिया। हरस अंतर मन मोल्सय' ॥
जागे सो जिस ब्रह्म रिव माही। दर्सन देयत जम डरि जाही ॥
जागे सो जिस प्रीत हर्कन। राम भक्त घट अन्तर्मीन ॥
जागे सो जिस हर्मम मायो। हरि मायो भयताप मिटायो ॥
जागे सो जिस अनहद बानी। सांईदास घटि माह समानी ॥ ८ ॥

दो०—हरि का नामु अमोल हय निम्मसुर्त[1] विष्यान।
सांईदास रचक मन ते मम रखे पायो परिम निधानि ॥

अष्टपदी—८

हर्कानाम जप पूरण भागि। तांते मिट गए सकल सताप ॥
हरि का नाम सोई जन लेवे। जीविपिनु अर्पे हरि देवे ॥
हरि का नाम जपे सुप पावे। बारि बारि जूंनी नहि आवे ॥
हरि का नाम महा सुपदाई। आदि अंतमध्य सदा सहाई ॥
हरि का नाम बिनासे पाप। सांईदास सदा हरि जाप ॥ १ ॥

---

१ निम्म श्रुति।

हरि का नाम जगत समझवा । जो सिमरे मुक्त पहूचा ॥
हरि का नाम सद्य मन बस । तिहि प्रसादि दूत जन मर ॥
हरि का नाम जपे सो पूरा । ताके मनि मे मिटे विसूरा ॥
हरि का नाम जपो रे भाई । याही मय तुमरी भलिभाई ॥
हरि का नाम सदा सुपिग्दाई । सांईदास वास सिउ साई ॥ २ ॥

हरि का नाम साध संग पाए । निस वासरि हरिके गुनिगाए ॥
हरिका नाम जप गनिकातरी । गजतमानारि जपति निसतरी
हरि का नाम गमीरि सुमान । जो सिमरे पूरिए निर्वान ॥
हर्कानाम जपे जो कोई । मनिका सदा गरे पोई ॥
हर्कानाम मुक्त को दाता । सांईदास नवि पडी जाता ॥ ३ ॥

हर्कानाम सत्त वनि ओट । जपि हर्नाम तजो विप पोट ॥
हरि का नाम अति तारण हारि । जो सिमरे सोउ विरे पारि ॥
हरि का नाम चुकाये भीडि । दूरि करे तनि होवे पीडि ॥
हरि का नाम जपे वडिभाई । जगि भीतिरि होवे प्रभताई ॥
हरि का नाम जपत दुखजाइ । सांईदास पदि सांत समाइ ॥ ४ ॥

हरि का नाम जपे सो जागे । गुरि प्रसादि हरि सेवा लागे ॥
हरि का नाम जपति बिस्राम । गुरि प्रसादि पूरण सम काम ॥
हरि का नाम सर्व सुपिदाई । मिटे वियोग मन हरि राई ॥
हरि को नाम जपे जो कोइ । तीनि लोक से न्यारा होइ ॥
हरि का नाम जपे दिन रयन । साईदास तिहि घटि महचैमन ॥५॥

हरि का नाम जपे गुरि ज्ञान । गुरि प्रसादि हरि रिदे ध्यानि ॥
हरि का नाम जपे सन्यासी । गुरि प्रसादि काटी जम फासी ॥
हरि का नाम जपे जोप्रामी । गुरिप्रसादि मिटि आविग्ण जाणी
हरि का नाम जपे परिवानु । जम वयरी की चूकत्त कानि ॥
हरि का नाम जपे सो पूरा । सांईदास मिटि सकल विसूरा ॥ ६ ॥

हरि का नाम जपे बयरागी । गुरि प्रसादि भय सकल तयागी
हर्कानाम जपे मनि माह । गुरि प्रसादि भतकछु माह ॥
हरि का नाम जपे नही मरे । गुरि प्रसादि भम सागर तरे ॥

हरि का नाम परिम पुरियोतम । निराकारि निरवयरनरोतम
हरि का नाम जपे बिसराता । साईदास नहीं जूनि फराता ॥ ७ ॥

हरि का नाम जपे चितु साइ । गुरि प्रसादि दुमत मिटि जाइ ॥
हरि का नाम मुक्त का दाता । तिहि प्रसादि नहीं जून फिराता
हरिका नामु हृय अमृत बाणी । तिहि प्रसादि सभ सुत पछानी
हरि का नाम जीविण का मूमु । तिम सिमर सनि जावे सूमु ॥
हरि का नाम सिउ रिप सम्हाम । साईदास जपिए करितारि ॥ ८ ॥

ससोक—पतिति उधारण मैम मुगम काज सवारण राम ।
साईदास साहउोग गहू पाप जाय सम्य लिये हरिनाम ॥

अष्टपदी—६

सुनियत होय हरि भक्त भन तारन । सुनियत हो हरि काज सवारन ॥
सुनियत हो हरि पतित उधारन । सुनियत हो हरि असुरि सिहारिन
सुनियनि हो गोवर्धन धारन । सुनियति हो हरि दुस निवारन ॥
सुनियनि हो हरि रथपति राइ । सुनियति हो हरि भक्त सहाइ ॥
सुनियनि हो मुरिसी धरि माधा । साईदास प्रभ अन्तर्यामी ।१।

सुनियति हो गोबिंद मुरारी । सुनियति हो हरि कजि बिहारी ॥
सुनिय तो महाराजन राजा । सुनियति हो हरि कारज साजा ॥
सुनियनि हो त्रभवनि क दाता । सुनियति हो घटि घटि में राता ॥
सुनियति हो हरि गगनि निवासी । सुनियति हो हरि प्रभ अबिनासी ॥
सुनियति हो हरि पुप निधान । साईदास सुनि पति निर्बान ।२।

सुनियनि हो त्रिभवनि के राया । सुनियति हो अनभय सुखदाया ॥
सुनियति हो पूरण परिमेश्वरि । सुनियति हो हरि आप महेश्वरि ॥
सुनियनि हो धर्मी धरि गाबिंद । सुनियति हो पूरण परिमानंद ॥
सुनियनि हो बसु दयु कि नन्दन । सुनियनि हो हरि असुरिनकन्दन ॥
सुनियनि हो निरकार अकसहर । साईदास सुनियति हय जसधरि ।३।

सुनियनि हो मुरलि मुरारी । सुनियति हो सन्तन हितकारी ॥
सुनियति हो रावण का मारन । सुनियति हो बभछनि तारन ॥

सुनियति हो हरि सन्त सहाई। सुनियति हो भक्तन सुपिदाई॥
सुनियति हो दुख नासननामा। सुनियति हो घटि घटि विस्रामा॥
सुनियति हो मारन सम भर्ना। सांहीदास रूप क्या वर्ना।४।

सुनियति हो करुणानिधि स्वामी। सुनिमत हो हरि मंतरजामी॥
सुनियति हो भक्तनि सिर ताजु। सुनिमति हो महाराजनराजु॥
सुनियति हो हरि मुक्त को दायक। सुनिमति हो भक्ता के नाइक॥
सुनियति हो हरि मपरमवासी। सुनियति हो हरि सास विलासी॥
सुनियति हो हरि ब्रह्म गियान। सांहीदास पूरण पद जानि।५।

सुनियति हो हर्केवल ब्रह्म। सुनिमति हो हरि निमल धर्म॥
सुनियति हो कउलापति केस्वर। मुनिमति हो पूरण परिमेस्वरि॥
सुनियति हो हरि नदि के नदा। सुनियति हो बिद्रावनि भदा॥
सुनियति हो हर्कोट पछारन। सुनिमति हो हरि बली उधारन॥
सुनिमति हो बृजवासी धाल। सांहीदास भज भये निहालि।६।

सुनिमति हो हरि हरि हरिवर। सुनिमति हो माधो धर्नी धरि॥
सुनियति हो हरि हीसनिहीस। सुनिमति हो जगि के जगिदीस॥
सुनिमति हो हरि राम के रामा। सुनिमति हो हरि पूरण कामा॥
सुनिमति हो निरवयर गोसाही। मुनियति हा व्याप्यो सभ माही॥
सुनिमति हो बावन विपधारी। सुनिमनि हो दुख टारिण हारी॥
सुनिमति हो जन पयज वढावनु। साहीदास सत्त गुण गाविन।७।

सुनिमति हो हरिकेस गुसांही। सुनिमति हो सुदर्ि मधिकाही॥
सुनियति हो हर्नंदकुमारि। सुनियति हो हरि मपरि मपारि॥
सुनिमति हो हरि हरि भगिवान। सुनियति हो हरि पुर्न निधानि॥
सुनियति हो हरि बिस्नु के धारनि। सुनिमति हो हरि प्राण मधारन॥
सुनियति हो सीतापति राम। सांहीदास सुनि मति विश्राम।८।

सलोक्-सुद्ध सबद ममि बूझ के तस पद करि बियुहारि।
सांहीदास महि निस सति गुरि चर्न लग तारे तारण हारि॥

अष्टपदी—१०

निस दिन सति गुरि चर्नी लागो। भगत हरि रस जिप्या को त्यागो॥
सति गुरि चर्न सर्न सो राखो। जिप्या सब भगत सो भाखो॥
सति गुरि चन ओऊ चन राता। सो जनि भवगनि गत में माता॥
सति गुरि चन मिले बडिभागि। प्रम भक्त जिस आतम लाग॥
सतिगुर चर्न धारि मनि माह। सांईदास सति गुरि बसि जाह।१।

सतिगुरि चर्न मुक्त के दाता। तिह प्रसादि हरि के रगराता॥
सति गुरि चर्न अपत निधामु। बहुडो जनम सो नाही काम॥
सति गुर चर्न मय मुर्त समानी। गुरि प्रसाद हरि सो मिउ लानी॥
सति गुरि चर्न प्रीति करि ध्यावे। जम नगरी की तलबि न पावे॥
सति गुरि चर्न धारि मनि माह। सदा रहे सुख आनदि ताहि॥
सति गुरि चर्न पवित्र को तारन। सांईदास प्रम अपरि अपारन।२।

सति गुरि चर्न मिले मल धोवे। गुरि प्रसादि सर्व सुप होवे॥
सति गुरि चर्न जपो रे प्रानी। गुरि प्रसादि मोले हर्बानी॥
सति गुरि चर्न सकल जग तारन। भउ जल कठन सो पार उतारन॥
सति गुरि चर्न रचव सुपदाइ। भय सागर ते पार पराइ॥
सति गुरि चर्न जो परे। सांईदास तकि दुप हरे।३।

सति गुरि चर्न अपति सुख होवे। जनि जम सकले दुख खोवे॥
सति गुरि चर्न रपो घट माह। गुरि नर्गुन तकि बस जाह॥
सति गुरि चन सीस धरि धरा। गुरि प्रसादि निरचम सुप करो॥
सति गुरि चर्न जाम जिन गहे। आविन जाविन ते बह रहे॥
सति गुरि चर्न प्रानि सुख दाई। सांईदास मटि सिठो सदाई।४।

सति गुरि चर्न पेत घटि माहि। सुप समाध रहो लिउ लाय॥
सति गुरि चन जगावे आप। सदा सदा जग मुक्ता होय॥
सति गुरि चन कटे जम फाम। निमवासरि चिति माह हुलास॥
सति गुर चन मम दुपदाइ। जिउ मंय्या जस जगतराइ॥
सति गुरि चर्न जपत न तरे। सांईदास चर्नां पर परे।५।

सति गुरि धन सग पाप विनासा। सति गुरि चरण मन पूरण आसा॥
सति गुरि चर्न हय सर्व निधान। जो सिमरे सो पावे थान॥
सति गुरि चर्न जोड़ी चित भावे। आवा गउन को भर्म मिटावे॥
सति गुरि चर्न ओही चित लावे। आवा गउन को भर्म मिटावे॥
सति गुर चर्न नाइ सुष करे। सांईदास चर्नों दुष हरे।६।

सति गुरि चर्न तीरथ इस्नान। जो सिमरे सो पूरण ग्यान॥
सति गुरि चर्न चत सुष अधक। जिउ पक्षी मुक्ता वस अधक॥
सति गुरि धन मटावे पाप। मुष अहिनिनिसि कीजे यहि जाप
सति गुरि चर्न प्रानि सुषदाता। जो सिमरे त्रयीलोकी आत्ता॥
सति गुरि चर्न निमल नरि जोत। सांईदास चर्नों की ओटि।७।

सति गुरि चर्न सेवे सुरि ज्ञानी। मुष अहिनिस उचिरे हर्वानी॥
सति गुरि चर्न रूप भगवान। जो सिमरे सो सरया जानु॥
सति गुरि चर्न क्या महिमा वर्ना। जो सिमरे हो वृद्ध ते तर्ना॥
सति गुरि चन प्रानि प्राना। सतिगुरि चर्न चेत ना हाना॥
सति गुरि चर्न प्रगिटि नीधान। सांईदास निसबासरि ध्यान।८।

सलोक—नमो नमो हरिकेस[1] हरि पूरण पुर्ष निधान।
सांईदास आदि अग एक हय ओंकारि हरि जान॥

अष्टपदी ११

नमो नमो ओंकारि अकल हरि। नमो नमो पूरण बसी घरि॥
नमो नमो हरि मध्य अविकारी। नमो नमो सतन हितकारी॥
नमो नमो सुषकरि धर्भर्ता। नमो नमो नर्सिंह अपर्ना॥
नमो नमो हरि घटि घटि वासी। नमो नमो पूरण अविनासी॥
नमो नमो बावन विषधारी। नमो नमो सांईदास मुरारी।१।

नमो नमो जगिदिस्वर सुत हरि। नमो नमो श्रीपति सारम्भ धरि॥
नमो नमो कहन करणा सिंध। नमो नमो हरि बोध बिमल सुष॥
नमो नमो गोबिंद बनिवारी। नमो नमो हरि कुंजि बिहारी॥

---

1 हृषीकेश शब्द की सम्भावना है।

नमो नमो त्रिभवन के राया। नमो नमो भनभम सुपदाया॥
नमा नमो रिपकेश गोसाईं। साईंदास नमो हरिताई।२।

नमो नमो मोहन रिदवानी। नमो नमो हरि सारम्प पानी॥
नमो नमो गोवर्धन धारी। नमो नमो हरि पतित उधारी॥
नमो नमो निरकारि निरजन। नमो नमो हरि भग मय भजन॥
नमो नमो प्रान के प्रान। नमो नमो पूरण भगिवान॥
नमो नमो हरि ब्रह्म गियान। साईंदास नमो हरि जान।३।

नमो नमो हरि प्रानि उधारी। नमो नमो घटि घट उजयारी॥
नमो नमो प्रम स्याम सुन्दर हर। नमो नमो सज्मन श्री रघबरि॥
नमो नमो हर्मुक्त के दाता। नमो नमो त्रयीलोकी श्राता॥
नमो नमा दुख भञ्जम राम। नमो नमा हरि पूरण काम॥
नमो नमो श्री हलधर बीरि। साईंदास मनि म हरि धीर।४।

नमो नमो उोपाबिन भोग। नमो नमो हरि पोयमि भोगि॥
नमो नमो पूरण परिमेश्वरि। नमो नमो हरि सर्व बसेश्वरि॥
नमो नमो हरि भादि जुगाद। नमो नमो करि मिटे उपाध॥
नमो नमो हरि गमका बीरि। नमो नमो प्रम स्याम सरीरि॥
नमो नमो हरि दे दनदाम। साईंदास नमो भगिवान।५।

नमो नमो बारिस ब्रह्मडि। नमो नमो कर्ता मडपर्डि॥
नमो नमो हरि साध सहाई। नमो नमो भगतन सुपदाई॥
नमो नमो हरि केवल ब्रह्म। नमो नमो हरि निमधरिम॥
नमो नमो माधो भविनाशी। नमो नमो काटी जम फासी॥
नमो नमो हरि धाम दातारी। साईंदास नमो बलिन बारी।६।

नमो नमो निर्मल हरि जोत। नमो नमो सभ डारी पोट॥
नमो नमो हरि ज्ञानि बिचारी। नमो नमो तारे भधि भारी॥
नमा नमो हरि जोति प्रकास। नमो नमो हरि पूरण भास॥
नमो नमा हरि पतित उधारन। नमो नमो हरि सपट टारन॥
नमो नमो हरि मर्बस मानो। साईंदास नमो हरि जानो।७।

नमो नमो हरि कंस विडारन। नमो नमो हरि रावण मारन ॥
नमो नमो हरिनापस छेदन। नमो नमो दुसासनि वेधन ॥
नमो नमो पतिताको तारन। नमो नमो हरि पयज निवारम ॥
नमो नमो धारिन सम धर्ना। नमो नमो हरि कारिन करिना ॥
नमो नमो हरि एको एक। सांईदास मनि मोहरि टेक।८।

दो०—एको एक मनेक गत नाना रूप मपार।
सांईदास जोगी जम्यम मुनि जना मस्त ना पारावारि ॥

मष्टपदी—१२

के जोगी के जोगि धियान। मत न पावे श्री भगवानि ॥
के जागी के सिद्ध सद्धिकावे। सो भी प्रम को मत न पाव ॥
के मुन जनि जो मुपो न बोले। देस विसतर माही डोले ॥
कय वयरागी मनि को धावे। धाय धाय भ्रम थक जावे ॥
बनि पढि सावे साति नि मावे। सांईदास समझ तै गत पावे।१।

कही उदासी रहे उदास। बनि माही है तार्को वास ॥
कविहू नगिरि माहि नही मावे। भरिमति भरिमत गत नही पाव
जबि लग सतिगुरि दर्सन भेटे। तवि लग तिमर कहा मनि मेटे ॥
धरि को सिद्ध कयसे करि पावे। जो वन मय भर्मे चित लाव ॥
रहे उदास सदा मन माहू। सांईदास सोई गत पाहू।२।

केई रूप सन्यासी हूए। मनि पासनु भ्रमत ही मूए ॥
हउमा मनि से नाह मुसाने। तय से वह पाखंडी जान ॥
जटा धारि भगिवे करि मवरि। भुजा रखी कर भए दिगबरि ॥
मैन मूद बहु धरे धियान। कयसे गति पावे भगिवान ॥
प्रगट रूप हरि सभ घट माहू। सांईदास निज मन धरि ताहि।३।

केई कहे जो हम भगवान। ताक रे मनि डूबा जानि ॥
कही कहें जो हम भए साध। मो बिप्या की फाबी बांध ॥
केई कहे जो जो हम भए पूरे। ताके कबू न मिटे बिमूरे ॥
केई कहे हरि मवरि न कोई। मापन को करि थापे सोई ॥
क मुल्ने बिप्या मभिमानि। सांईदास ममस मज्ञानि।४।

कैही कहै जो हम निर्वानी। सो कयसे मिल सारम्म पानी ॥
कैही कहे जो हम बुद्धवानु। सो मूर्ख करि मंडै जान ॥
कही कहे जो हम सम ऊचे। सोही हम सम ही ते नीचे ॥
कैही कहे जो हम परिउपकारी। सो कबिहू ना मिले मुरारी ॥
कही कहे हम ब्रह्म सम्म राते। सांईदास वह मूठ बकाते ।५।

कैही कहे हम सम के राजे। तांके सदा न पूरे काजे ॥
कैही कहे हम ते कछु होया। तामे सदा सदा सुख खोया ॥
कही कहे हम सरि कौं ना। सोई हम नीच जगत के मौना ॥
कैही कहे हम शानि विचारी। ते डूब मय धार मझारी ॥
कैही कहे हम सम ते रहते। सांईदास विच्या मन महते ।६।

कैनी कहे हम हरि मतवाले। सो भर्मत हम जिउ बरिकाले ॥
कैही कहे हम हम सुध वासी। सो फासे हम जगि की फासी ॥
कही कहे हम सम क दाते। साही मानि लोक ते लाते ॥
कैही कहे हम हम पतवानु। तांको रे मनि धृग कर्जान ॥
कही कहे हम हम सुरि मान। सांईदास ते मूरख जान ।७।

कैनी कहे हम विप्र कहावे। सो हम मध मुक्त नहीं पावे।
कही कहे हम वेवे दान। सो मूरख सबे प्रधान ॥
कनी कहे हम सात सरूप। तिन मय होवे गहरा रूपु ॥
कही कहे हम विद्यावान। पढि पढि भूल वेद पुरान ॥
कनी कहे हम रयत पिडु। सांईदास सो काया झडु ।८।

दो०—माया सम जगि व्याप हम एक रहे अभिलाह।
साईदास प्रेम मक्त मह निस करे सा मनि उत्तम आहि ॥

अष्टपदी—१६

मुख ते बोल मधुर बानी। सोही मुक्ते जानो प्रानी ॥
मुख ते बोले सम ते नीच। तांको लगे न विच्या कीच ॥
मुख ते बोले हरि रस पीवे। सो तो आदि अंत मध जीवे ॥
मुख ते बोले सहज सुभाइ। जिहि निज सुरा सम जगत समाइ
मुख ते बोले राम उचारे। साईदास ताहू बल हारे ।१।

मुष ते बोलै हरि गुनि गावै। सो तो प्रगटि बकुंठ सिधावै ॥
मुष ते बोलै हरि रस राचै। विष फल त्याग सुधा रस माचै ॥
मुष ते बोलै ब्रह्म विचारै। सदा सदा हरि अंतरि धारै ॥
मुष ते बोलै अमृत बयन। जिहि सुनि पावत हो सुष चयन ॥
मुष ते बोलै हरि रस चषै। सांईदास हरि सग्य चिति रषै ।२।

मुष ते बोलै हर हर हरि। ताके सबद सदा हद करि ॥
मुष ते बोलै सम मुष जान। सो तो हरि दर्गा परिवान ॥
मुष ते बोलै हरि मष वानी। सहज सुष्ष घटि माहि समानी ॥
मुष ते बोलै हर्की नाम। जिह सुनि पावै जगि बिश्राम ॥
मुष ते बोलै हरि इक जान। सांईदास तां परि कुर्बान ।३।

मुष ते बोलै आतम चीन्है। सो तो हर्नें मुक्ते कीन्है ॥
मुष ते बोलै उलिटे पउनु। ताके मिट गए आवा गउनु ॥
मुष ते बोलै हरि चित धारै। पवन बस करि ग्यानि बिचारै ॥
मुष ते बोलै दृढ करि ग्यानि। जिहि सुन अगत सहज निर्वान ॥
मुष ते बोलै हरि सिव साई। सांईदास सदा मुक्ताई ।४।

मुष ते बोलै दुर्मत झाड़। विषु फलि कटि सुधा फल गाड़ ॥
मुष ते बोलै पुल्हे कपाट। तांकों सूझे अठसठ हाटि ॥
मुष ते बोलै विष फल त्याग। हरि सिमरै ते पूरण भाग ॥
मुष ते बोलै हरि की गाल। निस दिन सिमरे श्रीगोपाल ॥
मुष ते बोलै सुन्न बिराजै। सांईदास सुष गहरे गाजै ।५।

मुष ते बोलै हरि सग्य हेत। मिथ्या मनि तजि हरि हरि चेत ॥
मुष ते बोलै हर्की बानी। सोई जानो ब्रह्म गियानी ॥
मुषते बोलै अगम्य अथाह। वाह वाह जे को माह ॥
मुष ते बोलै उनिमनि हरे। गुरि प्रमादि अनिमय अस कहे ॥
मुष ते बोल हरि सो ध्यान। सांईदाम तिहु पूरण जानि ।६।

---

१ पाल > बस्त = बात।

मुप ते बोले क्रसन कन्हैया। सो नरि सवा सदा सुखया ॥
मुप ते बोले मनिहृदि सूझै। सो नरि प्रगिमि निगम विष बूझै
मुप ते बोले हरि विश्राम। तिस जनि परि वांईए कुर्बान ॥
मुप ते बोले गुरि पर्न पयामु। तिस अन परि प्रभ ग्राप दियास॥
मुप ते बोले हरि नाम धिम्रावे। सांईदास सोई गति पावे।७।

मुप ते बोले हरि रस पीवै। सो नरि सदा ही जीवै॥
मुप ते बोले हर्षित भर। सो जनि जीवै कबूं न मरे॥
मुप ते बोले सीता राम। तिस जनि सो जम नाही काम॥
मुप ते बोले प्रेम कहानी। हरि सिमिरण मति तिन ही जानी
मुप ते बोले निज परि रहे। सांईदास अविगति गत लहे।८।

सलोक्—अगम निगम सम सोभमा अत माही गति पात।
साईदास एक रूप पसरयो ब्राह्मण पत्री जात॥

अष्टपदी—१४

अत नहीं करुणा निध स्वामी। अत नहीं हरि अतर जामी॥
अत नहीं धरिनी धरि गोबिंद। अत नाही पूरण परिमानंद॥
अत नाही सागर भरि समता[1]। अत नाही जो हरि सग मिलता॥
अत नाही हय सूरज चवा। अत नाही हम मेर मुकंदा॥
अत नाही घटि ज्ञान विचार। सांईदास अंत नहि पार।१।

अत नाही हय अस्म बल बास। अत नाही हय घनै प्रकास॥
अत नाही बोसरण चप कर्मा। अत नही हय जीवन मर्ना॥
अत न उर्वर अत न पसर। अतु न पछम पामी बार्संतर॥
अतु न सुख समाध हम अत। अतु न सांत उपाव हैय अंतु॥
अतु नही जो जल पल थीया। सांईदास य अनंत हर् कीया।२।

अत नही पसीरि कउभास। अत नही हय जोत प्रकास॥
अत नही हम सुरि नरि देवा। अत नाही हम प्रभ की सेवा॥
अत नाही हय हर् के रूपु। अत नाही हम तत सरूपु॥

---

१ समता > सरिता "रलयोरभेदः।

अत नहीं हय वेद पुरान। अत नही हुए कीर्त बपान॥
अत नाही अयुतार्जे कीन्। सांईदास हरि अत को चीन्।३।

अत न सपना अत न मूपु। अत न छाउ अत नहि धुपु॥
अत न मूरप अरि वृषभानु। अत न राम कृष्न भगिवान॥
अत न पढे ज्ञान नहि अत। अत न षोट साध नहि अत॥
अत न तिरया पुप न अत। अत न पुन्न पाप नहि अत॥
अत न षठन पसास नहि अत। साईदास प्रभ अत बिअत।४।

अतहि स्वर्ग नर्क नह अत। अत नहि राग दोष नहि अत॥
अत नहि हस्त अत नह षोड। अत नहि निगम अत नह षाड॥
अत न फुल फलन वृप न अत। अत नहि घाटि बाट नहि अत॥
अत न देव दानू नहि अत। अत न पशू प्रेत नहि अत॥
अत न जुगत अजुगति नहि अत। साईदास प्रभ सदा बियत।५।

अत न भूप तृपत नहि अत। अ त न उतपत पपत न अ त॥
अ त न जीवण हुतन न अत। अ त न सोव जाग नहि अ त॥
अ त न जोगी जोग धियानी। अ त न मूरप अर सुर ज्ञानी॥
अ त नही सागर रतनागर। अ त नही प्रभ सभ गुन आगर॥
अ त बिअ त अ त को पावे। साईदास धन नामि धियावे।६।

अ त न मान माप नहि अ तु। अ त पुरावण कहे न अ तु॥
अ त न धरिए धारए ब्रह्म डि। अ त न सपत दीप नउषण्ड॥
अ त न सेस अ त नहि मागि। अ त अभागि अ त नह मागि॥
अ त न दीप न अ त पतम्या। अ त अनंत अनत तरग्या॥
अ त अनत अनत निहार। सांईदास दर्सन बलहारे।७।

अ त न पेपे अह भगवान। अ त न हरि हर हर जान॥
अ त नही कउलापति के स्वर। अ त नहो पूरए परमेस्वर॥
अ त नहीं हर्नदकुमार। अ त नहो हरि अपर अपारि॥
अ त नही क्या अ त बपानू। अ त नबिन बिध कर्के जानूं॥
अ त नही क्या कहो अ त। सांईदास हर जामि बिअत॥

सलोक्—सभना को प्रभ देत हय वर्षा कोही नाहिं।
मांईदास जल थल जो जीव से सकल्ये सिमरे ताह॥

अष्टपदी—१५

साभ देत हरि चोरिन देत। नरग्देत हरि ओरन देत॥
मूरिप सभ अज्ञानी दत। महा प्रसंस सुरि ज्ञानी देत॥
सिरिमा देत पुप भी देत। पूरण पूर्पूरि सभ लस॥
मम देत हरि सांतक देत। मद्धम देत कुल भागर देत॥
दत देत कथा भाप सुनाऊ। साईदास प्रभ के बल जाऊ।१।

दीना नाथ दयाल दियाल। सभ जीयनि को हम प्रतिपाल॥
या बिनु दूजा अवरि न कोइ। जल थल भीतरि रहा समोइ॥
स्वास स्वास में सभ सम्हारे। एक स्वास नाम नो बिसारे॥
जी जी की हरि सोभी धारे। पल पल छिन छिन काज सवारे॥
ममसे प्रभ पसव मव बार। सांईदास सदा बलहारि।२।

सभ जीयन को भाप सहाइ। कवलापति हरि तृभवन राइ॥
सभ जीयन को जानण योग। वा बिन अवर न होमा होग॥
ममसे ठाकुर परि बल जाऊ। निसवासरि ताके गुन गाऊ॥
गाय गाय गुण भातम तोपू। ब्रह्म अग्नि यह बिष कपोंपू॥
प्राणनाथ को घट मय सय्ये। साईदास प्रभ के बल जय्ये।३।

दीन दियाल दया निध जानूं। पूरण पुर्ष सदा भगिवानूं॥
बन तृण वृक्ष भसता परिवाहु। जल थल भीतर वा हरि ताह॥
या बिनु अवर न सूझै कोइ। हरि समसरि, को दूजा होइ॥
पलि पलि छिनि छिन मा बिसरावो। स्वास स्वास हर्के गुनि गावो॥
प्रम प्रीत करि चित लाए। सांईदास सदा गुण गाए।४।

ममसे प्रभ के बल बल जाईए। उमगि उमग मन हरद जस गाईए
प्रेम प्रीत चित में ठहिराही। प्रम प्रवाह को दिय बहाही॥
देवन हारि निरजमि देव। भाठ जाम लग हर्की सेव॥
साध सग मिम गावो गीत। त्याग डारि चित ते बिपरीति॥
प्रवरि गत हो भज भगिवान। सांईदास निदचे मनि मानि।५।

पल पल प्रम बढाओ राम। आदि अंत सुफलो यहि काम॥
प्रउरि सासता चितवनि त्यागि। राम नाम की सदा लागि॥
प्रगटि निशान बजे जगि माह। पछु सदा चित उपजि माह॥
साहिब मिल जबि साहडु हुआ। सदा तउ जा हावे दूआ॥
ए दुयी का खोवे मूल। साईदास मिल मानव भूल।६।

पउम पदि माही घरि वास। सांत सरोवरि माह बिलास॥
ग्यान पखडी पोल्हे जाइ। सहज कूलएे कूल जाइ॥
करि बबेक मुरिया घटि सयन। चउथे पदि मय मभ भए चयन॥
ग्यानि ववक रहत कछु माह। चउथे पदि मम जाय मिलाह॥
निरबल मारग सांत पदि जानु। सांईदास तत्त लेय पछान।७।

मवल घटा का देत हरी हर। रे मनि सिमरण ताह करी करि॥
तीनों त्याग न प्रउरी लाग। हरि रस रच विप्या सो भाग॥
मम जगि दत कहाउ चिराऊ। प्रयसे हरि सभ माह लपाऊ॥
गर्भ घटा मय ग्राप रहया। विन भगिवानि न दूजा भया॥
प्रम की कथा कहा कवि काह। सांईदास हरि भज सुप लाह।८।

सलोक–मिथ्या विन हरि सिमरन तनि धन जोबिन माल।
सांईदास मिथ्या विप्या चित धरय प्राण ग्रास जञ्जाल॥

अष्टपदी—१६

मिथ्या परि नारी चित राचे। मिथ्या सो विमु हरि कुद भाचे॥
मिथ्या हरि गुण विन कुछ बोल। मिथ्या देग दिसतर डोल॥
मिथ्या सो पन्ध्य चित धारे। मिथ्या सो विप्या रग भरे॥
मिथ्या धनि जोविन विन भाम। मिथ्या विन हरि सकल काम॥
मिथ्या विन हरि सिमरन दर। सांईदास सिमरण विसपर।१।

मिथ्या हर तोर जो व्याप। मिथ्या विन हरि प्रउर जु जाप॥
मिथ्या सुनि दारा परिवार। मिथ्या नाम विना प्रउनारि॥
मिथ्या पहरण पावन भोगि। मिथ्या ध्यानि विना सभ जोग॥
मिथ्या प्रम विना सुप बानी। मिथ्या पर धान बिगानी॥
मिथ्या धाम धनजर बागा। सांईदास मिया सभ धागा।२।

सलोकु—सभना को प्रभ देत हुम धर्मा कोई नाहि।
साईदास जस बस जो जीव स सकसे सिमरे ताह ॥

अष्टपदी—१५

साच देत हरि धारिल देत। नरन्देत हरि डोरन देत॥
मूरिख सम अज्ञानी देत। महा प्रसन्न सुरि ज्ञानी देत॥
तिरिमा दत पुर्ये मो देत। पूरण पूर्पूरि सभ मत॥
भम देत हरि साधक देत। मठम देत कुम धागर देत॥
देत देत क्या आप सुनाऊ। साईदास प्रभ क बस आऊ।१।

दीना नाथ दयाल दियाल। सभ जीयनि को हुम प्रतिपाल॥
या विनु दूजा अवरि म कोइ। जस धत भीतरि रहा समोइ॥
स्वास स्वास में सभे सम्हारे। एक स्वास नाम मो बिसारे॥
जी जी की हरि सोभी धारे। पल पल छिन छिन काज सवारे॥
अयसे प्रभ पर्स मद बार। साईदास सदा बलहारि।२।

सभ जीयन को आप सहाइ। कउलापति हरि त्रभवन राइ॥
सभ जीयन को जानण जोग। वा बिन अउर न होया होग॥
अयसे ठाकुर परि बल जाऊ। निसवासरि ताके गुन गाऊ॥
गाय गाय गुण आतम तोपू। ब्रह्म अगिन मह दिय कर्पोपू॥
प्राननाथ को घट मय सम्ये। साईदास प्रभ के बल जम्ये।३।

दीन न्यिास दया निधि धामू। पूरण पूर्ये सदा भगिवानू॥
बन तृण बृस समथा परिवाह। जल थल भीतर वा हरि ताह॥
या विनु अउर न सूझे कोइ। हरि समसरि को दूजा होइ॥
पलि पलि छिनि छिन मा बिसरावो। स्वास स्वास हरि गुनि गावो॥
प्रभ प्रीत करि चित लाए। साईदास सदा गुण गाए।४।

अयस प्रभ न बल बल जाईए। उमगि उमग मन हरि जस गाईए
प्रभ प्रात बिन मं ठहिराही। प्रम प्रवाह को दिन बहाही॥
केवल हरि निरजनि देव। आठ जाम सम हर्दी सेव॥
साध सज मिल गावो गीत। त्याग डारि चित ते बिपरीति॥
अंतरि गत हो भज भगिवाम। साईदास निश्चे मनि मानि।५।

पल पल प्रेम वधावो राम। मादि मत सुफलो यहि काम॥
मउरि सालसा मितवनि त्यागि। राम नाम की सवा लाग॥
प्रगिटि मिधान वसे जगि माह। मछु सधा चित उपिजे नाह॥
साहिव मिल जदि साहवु हुआ। ससा तउ जो होवे दूया॥
एकु दुयी का पोव मूल। सांईदास मिल मानद मूल।६।

चउथे पदि माही धरि वास। सांत सरोवरि माह विलास॥
मान पखडी पोस्हे जाइ। सहज मूलणे मूले जाइ॥
करि ववेक तुरिया घटि मयन। चउथे पदि मय सभ मए चयम॥
मानि ववेक रहत कछु माह। चउथे पदि मय जाय मिलाह॥
निरमल मारग सात पदि जानु। सांईदास तस सेय पछान।७।

मकल घटा कौं दत हुरी हर। रे मनि सिमरण ताह करी करि॥
सांकों त्याग न मउरी लाग। हरि रस रच बिप्या सा माग॥
मम जगि देस कहाउ बिराऊ। मयसे हरि सम माह सपाऊ॥
सव घटा मय मापे रहया। बिन भगिवानि म दूजा मया॥
प्रभ की कथा कहा कवि कहों। सांईदास हरि मज सुप लहो।८।

सलोक–मिथ्या विम हरि सिमरने तनि धन जोबिन माल।
सांईदास मिथ्या बिथ्या बित भरम भ्राण भ्राण जञ्जाल॥

ग्रष्टपदी—१६

मिथ्या परि नारी बित राचे। मिथ्या सो विनु हरि कुछ माचे॥
मिथ्या हरि गुण बिन कुछ बोले। मिथ्या देस दिसतर डोले॥
मिथ्या मो पर्ब्रम्ह चित धारे। मिथ्या मा बिथ्या सग भरे॥
मिथ्या धनि जोबिन बिन नाम। मिथ्या बिन हरि सकल काम॥
मिथ्या विन हरि सिमरण देह। सांईदाम सिमरण बितपह।१।

मिथ्या हय गोक जो व्यापे। मिथ्या बिम हरि मउर जु जापे॥
मिथ्या सुति दारा परिवार। मिथ्या माम बिमा मउनारि॥
मिथ्या पहरण पावन भोगि। मिथ्या ध्यानि बिमा मुम जाग॥
मिथ्या प्रेम विमा मुप बानीं। मिथ्या परे धान वियानी॥
मिथ्या धाम धमतर वासा। सांईदाम मिथा मभ भामा।२।

मिथ्या भक्त[1] बिना जो करे। मिथ्या परि प्रीता चित धरे॥
मिथ्या बिन हरि सकल काम। मिथ्या बिन रसना हरनाम॥
मिथ्या बिन हरि कथा गियान। मिथ्या बिन हरि भाउना जानु॥
मिथ्या रूप रंग अभमान। मिथ्या माया को करि जान॥
मिथ्या हस्त प्रदत मसिवारी। साईंदास तू सिमर मुरारी।३।

मिथ्या राम नाम बिन बानी। मिथ्या प्रेम भक्त बिन ज्ञानी॥
मिथ्या परनिंदा जो करे। मिथ्या लालच माया धरे॥
मिथ्या बिन हरि नाम जु लए। मिथ्या हरि को तज चित दए॥
मिथ्या ग्रह कारज विमुहारि। मिथ्या हरि बिन मउर विचारि॥
मिथ्या सति गुरि चन न लाग। साईंदास मिथ्या बिन भाग।४।

मिथ्या श्रवण परनिंदा राव। मिथ्या हरि तज किरिया माचे॥
मिथ्या राज बिना हरि नाम। मिथ्या जोबन माने धाम॥
मिथ्या भवरि भग हढावे। मिथ्या परि विकारि का भावे॥
मिथ्या परि घरि मूसन जाइ। मिथ्या चित जो लोभ सुभाइ॥
मिथ्या पिंड प्राण भय होवे। साईंदास हर भज सुख सोवे।५।

मिथ्या साध हरि भतर जाने। मिथ्या काम क्रोध मनि माने॥
मिथ्या भूख प्यास जो व्यापे। मिथ्या सीत घाम जो तापे॥
मिथ्या बहुत नीद सो प्यार। मिथ्या बचनि न हो सच पारि॥
मिथ्या पसि तीरथ नह जाइ। मिथ्या कर्म टहिल कराइ॥
मिथ्या बिन बूझे सम होइ। साईंदास मिथ्या सभ सोइ।६।

मिथ्या काम क्रोध हंकारि। मिथ्या नामि बिना ससारि॥
मिथ्या उपजि बिस जगि माह। जवि लगि हरि सिमरण हो नाह
मिथ्या हरि बिन मउरि निहारे। मिथ्या हरि बिन देहा धारे॥
मिथ्या हरि बिन मउरि जा ओटि। मिथ्या हरि बिन धंधा पोटि॥
मिथ्या बिन भगवान सभ जान। साईंदास सोदी परिवानि।७।

१ भक्त=भक्ति।

मिथ्या साध चोरि जा होवे। मिथ्या तन मन हरि बिन पोवे॥
मिथ्या बहु पुत हित सम्य राता। मिथ्या नरि जोबिन मदमाता॥
मिथ्या मिथ्या उठे तरंगा। मिथ्या बिन हरि राचे रंगा॥
मिथ्या नयन भमे जगि रूपु। मिथ्या सपनि भया जो भूपु॥
मिथ्या हरि बिन तीनों लोक। सांईदास मिथ्या सभ थोक।८।

सलोकु—साधू हरि अंतर्नही वेद पुकारत चारि।
सांईदास हरि साधू अंतिर करे सो ते सदा दुःयारि॥

अष्टपदी—१७

हरि साधू अंतर जो करे। आवे जावे जनिमे मरे॥
हरि मय साध साध हरि होइ। अयसो ग्यान विचारे कोइ॥
ग्यानि विचारे सो मुक्ताइ। ताको हरजी आप सहाइ॥
हरि सहाइ कारज सभ सरे। जनिम जनिम के परि दुष हरे॥
हरि सहाइ होइ मुक्ता करे। सांईदास हरि सर्नी तरे।१।

अंतर नाहू साध अरि राम। साध सर्न पायो बिस्राम॥
साध के संग सदा सुप होवे। लोभ मोह मिल दर्सन पोवे॥
साध का सम्य मिले वडि भाग। गुर प्रसादि हरि सेवा लाग॥
हरि सेवा लागे जो कोइ। आवागउन को ससा पोइ॥
सेवा लाग परिम सुप होइ। सांईदास जनि उत्तम सोइ।२।

सेवा करे सो मयुनिध पावे। साध राम करि एक धयावे॥
साध राम कुछ भेद न जाने। हरि सेवा सेती मनि माने॥
जो नरि हरजी सेवा लागे। पपि भूत ताके उठि भागे॥
हरि सेवा ते सभ दुष जाइ। वहुडि चारि जूनी नहि आइ॥
लागे सेवा हुलस करे। सांईदास भय सागर तरे।३।

सागिर तरे जु सभ सम जाने। साध राम अंतर नहीं आने॥
जो अंतर जाने सो दुप पाइ। चारि चारि जूनी भर्माई॥
जूनी भर्म बिन गुरि पूरे। सो नरि सदा सदा मनि झूरे॥
हरि सिमरे सो बहु सुप पाइ। आवा गउन का भर्म मिटाइ॥
भरिम मिटे लाग हरि भेतु। सांईदास सति गुर मतु।४।

महा कष्ट दुख लागे देहा। त्रिष्या लागन को फल एहा॥
भरिमत भरमत बहु थक जाइ। गुरि बिन कयसे मारग पाइ॥
बूझे हरि गुर सेवा लाग। अमृत रस गह त्रिष्या त्याग॥
जबि त्रिष्या का कीनो त्याग। उदे भए पूरण बड भागि॥
त्यागे त्रिष्या सुखिया होइ। सांईदास जानि मुक्त सोइ।५।

भक्त होइ हरि भक्त पछाने। मोरि कीटि जीयू इक जाने॥
जयसे हस्ती हस्त पून जयसा। जयसे सोवे जागे तयसा॥
जयसे हृष तयसे ही सोग। सदा संग न कबूं बियोग॥
जयसे माटी कंचन जयसा। जयसे पाथर हीरा तयसा॥
सो दर्सा होवे परिवान। सांईदास तिस सो कुर्बान।६।

तिह बियोग शोक कछु नाहं। जो हरि सोध लये घटि माहं॥
सोवे मन हरि अंतर माहं। सहज समाध बिच उरिमाहिं॥
जागे जिबि अरि सागे पउनु। ताके मिटि जा आवा गउनु॥
आवागवन भर्म मिटि जाइ। गुरि प्रसादि हरि दर्सन पाइ॥
आवा गउन मिटे हरि सेवा। सांईदास सर्न गुरि देवा।७।

सर्न गुरा की जो को आवे। जनिम जनिम सोई मुक्तावे॥
मुक्ता होइ परम गति पावे। रामनाम महिं लिव लावे॥
लावे लिव त्रिष्या ते रहे। गुरि प्रसाद मन सम पद गहे॥
भक्त भाव जबि आतम भीना। संत सरोवरि बासा कीना॥
संति सरोवरि को बियुहारि। सांईदास दास चित धारि।८।

सलोक—साधो हरि रस पीजिये तजीए त्रिष्या बिकारि।
सांईदास सोहे हरा आप जप तिह दर्स बलहारि॥

अष्टपदी—१८

साधो पीजे हरि रस नीक। जिहि पीए सुख होवे चीत॥
अमर होइ काल भय जाइ। या जग सोपन रूप दिखाइ॥
महा परिम फलमाए खम्बु। मगल रूपी महा अनंदु॥
जिउ मदिमाते कुंजर डोले। जयसे मृग बाणी मध बोले॥
अयसो हरि रस पी मेरे भाई। सांईदास अचो चित लाई।१।

राम रसायण जिन रे पीआ। सो नहि मूआ जीविन जीआ॥
जीयन जोयन रह्यो समो। वाते नहीं अउर फुनि कोइ॥
सम जीयन कों भेटे सोइ। वायन दूजा अउर न होइ॥
हाथ जोरि करि ठाडे भए। करि डंडउत[1] पाइन पए॥
अयसो हरि रस जो जनि पीए। सांईदास सो जुग जुग जीए।२।

राम रसाइण अयसो जोरि। पीवित मिटि जा पीडि सरीरि॥
सुप भेटे दुप जाय भुलाइ। परिम पुर्प जनि होइ सहाइ॥
पर्म पुप को जाणे जाइ। तांका दुख न लागे कोइ॥
निर्मल पङ्कज जपो सरूपु। पङ्कज पद भज भए अनूपु॥
दुप को मूल काटि तिन दीन। सांईदास सो सदा सुपीन।३।

दुःखु गिया जवि पायो राम। राम मिल्यो भए सुफल काम॥
राम नाम सो लागी प्रीत। भूल गइी सभ जगि की रीति॥
लोक लाजि सभ दीनि डारि। भेटे पर्म पुप इक बारि॥
राम रोम भयो राम सरूपु। कहा कहु कछु अचरज रूपु॥
हर्षी भज हर्षी होइ रहे। सांईदास दास पद गहे।४।

हरि सो अपिना रूपु निहारा। भूल गिया जगि धंधा सारा॥
जित देपो तित पूरण राम। राम भयो पायो विश्राम॥
वाह वाह जी कयसा भया। मति उत्तम कछ जाइ न कह्या॥
अयसो राम भजन परतापु। मिटे भजन हर्षीनो ताप॥
राम भजिन दर्गा मही छान। सांईदास दास परिवान।५।

राम नाम म रापे ध्यान। तांको खेम कुसल कलयान॥
मदा सुपी दुप भयो विनास। आनद मगल सहज हुलास॥
मंगल रूपी आठों जाम। जम वपरो सो करू न काम॥
जम ही दास अधीनि हुय रहा। गुरिबनी जो रापे रिदा॥
चूक गई हरि सीयो पछान। सांईदास नही जम काण।६।

---

१ डंडउत = दंडौत > दंडवत्।

हरि सो अविहीं भेय सयाम। मांनो पायो परिम निधान॥
पूर्ण पुर्य बमे मनि माहु। भूक गए दुख सकले ताहु॥
ससा भूका भ्रम भय भागा। प्रनिभय सेतीमा मनि लागा॥
लागा मन जबि मनमय नास। भूक गए सकले जंजाल॥
महिके भटे भतर सरूपु। सांईदास भए भानंदि रूपु।७।

पङ्कज पदि धरि वासा कीना। डोल डमावरण चित तज दीना॥
गावित गावत गावे फूल। उनिमनी कला भूलसपे भूल॥
भूलति सहज पासपे माहु। तीन ताप की जम ता माहु॥
पानी पउन भग्नि धरि वास। पांच तत्त ते रहै उदास॥
भयसी ठ्उर बिपे मन दीना। सांईदास सहा वासा कीना।८।

दो०—दुप्यि विनासन स्याम धन भाव भनाथन राम।
सा ीदास ताकी मर्नी भा ीये रे मन माठे जाम॥

भ्रष्टपदी—१२

सख्यो राम विना को माहु। या तू समम्क देप मनि माहु॥
निकटि कठन बहु हावे ठ्उर। हरि सहाइ बिन नाही भउर॥
मातु पिता बनता सुति मीत। छिनि मातर हम जमि की रीत॥
जब महु भयानक काल भय होवे। हर्का माम सकल भय पोवे॥
भयसो नाम जपो मनि मेरे। सांईदास सुप होइ घनेरे।१।

प्रथिवी पति राख्यो सुप माहु। हर्कें सिमरण सम सरि माहु॥
दुखि विमापे बिन हर्नाम। हरि सिमरण बिन बिर्थे काम॥
माया मोह तजो हो स्यानु। हरि सिमरण पायो निध ज्ञान॥
गुरि मिल सीजे भयसी सीख। जयसे भमृत उपिजयो ढील॥
भादि पुर्य का पायो भेव। सा ीदास दास गुर सेव।२।

गुरि मिल पायो निर्मल ज्ञानि। प्रेम भक्त कों लियो पछान॥
जात उपिजे निर्मल प्रीत। प्रम भक्त को एही रीत॥
लाप करोडी बधन तोडि। भाए थी जगि पद की ओड॥
मार्ग भभकारि मिट गया। रोम रोम महि मानद भया॥
गुरि मिल लीनो तत्त पछान। सांईदास ास महि ज्ञान।३।

हर्का नामु भपति वुप भाइ। प्रेम भक्ति जिह उपिजे माइ॥
प्रेम भक्त करि गावो गीत। साध जनां की पावो रीत॥
हर के गुण गावो विन रयन। मुप ते बोलो मीठ वयन॥
यह वयनम सो हरि गुनि गाइ। महा मनदि रिदे उपिजाइ॥
मादि म ति हरि जी का ध्यान। सांहीदास दास चित मान।४।

देषो साधो नयन उघाड़। वह्यो जात जग लेहु सम्हाल॥
पल पल घटे वधे नहि माइ। हरि सिमरण मनि में उपिजाइ॥
मार्ग माहि सुहेला था। हरि सर्नी सग ठाकनिपा॥
महासुपी करि हरि हय तुह जपसो। वमनि तोडि वह्री सुप सो॥
मावा गवनि भरिम मिट भा। सांहीदास सदा हरि ध्याइ।५।

हरि ध्यायो पायो निष गियान। राम राम सा लागो ध्यान॥
राम भजन तन मनि सुप हा। वषनि तोडि वही सुप सो॥
वहुडे दुस न लागे था। वाके मदर मग उठा॥
मनेक राग उपिजे छिन माह। जिह समान कछु होवे नाह॥
सुपि पावे सिमरे बनिमारी। सांहीदास दास गत नमारी।६।

एक बुधी को कीजे नाम। तवि निहचल घरि होवे वास॥
पर्मे पुर्ष तवि नयन विसा। माग उसटि माप समा॥
माप समाय भयो तेसो। जाते वहूड हान न हा॥
मातम रूपी रह्यो समाय। जित देषो तित मातमरा॥
कहा कहे हय मयसा जमसा। सांहीदास दास हम तयसा।७।

देषों माही पचरज वानी। या नयनन मय बसा पहामी॥
वाको घटि मय पायो भेवु। जो नरि लागो हरि की सेवि॥
हरि सेवा मय रह्यो समा। हर् मज मापा दीयो तजा॥
पांच मूत का कीना नास्। रोम रोम मय भयो हुलास॥
जवि पायो तवि माप सुसाइ। सांहीदास दास सर्नाइ।८।

सलोक—मविषू पविष मम्हास लय सुफनो सो ससार।
सांहीदास पाउ पलक लागे मही छिनि मय विनसन हारि॥

अष्टपदी—२०

अविधु सीख अविम सम्हारी । पसि पसि घटे वधे नहि बारी ॥
कंचन कोटि बहुत गत से । बिन हरि भजन कहा कर्ले ॥
जिहि वस राग रस सम भोग् । तिह सेती होवे सम्योग् ॥
एक भांत के पत्र कहावन । मनक भांति म बिर मग लायन् ॥
हरि मनि सोमै समा पछान । साईंदास वास सो जान ।१।

माह ममा फिर हाथ नि आवे । मनु पून भर्मे पछतावे ॥
जिउ जानो मन मय रघुराही । अन्म राज महा सुपिदाही ॥
अवि जम के मय रघुराही । राज न टस महासुप पाही ॥
अयमो राज नि कविहू त्याग । जो पनि हुर्की सेवा लाग ॥
बिप्या तजि हरि सो करि प्यारि । दुर्लभ देह का होय उधारि ॥
अमल साजे सत्त पछानि । साईंदास नास गुरि ज्ञान ।२।

अविधू बाल अवस्था बीती । हो अचेत हरि भक्त नि कीती ॥
भरि जोबिन तिरया सङ्ग राता । अति अभिमानि जूए मदमाता ॥
तरन दही बिप्या भरि डाल । सुप ते सीधे बचन न बोल ॥
बृद्ध भया तबि आलस दही । काज न सर भए जबि लोही ॥
भजिए पूरण श्री भगवान । साईंदास हरि लियो पछान ॥

जिहि प्रमादि होय सुप घनेरा । सारा जगत रहे हो चेरा ॥
जिहि प्रमाद पायो रसमाय । पर्मी लाये तीनों लोक ॥
जिह प्रमादि अवरि अ म्य लावे । रे मनि ताका निठ बिसरावे ॥
जिह प्रमादि पाव सुप मान । रे मनि रापा तासो ध्यान ॥
एक निमप हरि ना बिसरा । साईंदास दास सुण मा ।४।

धनि जोबन का तजए मान । सिमि दिन भजए श्री भगियाम ॥
स्वास स्वास गुण गाथा लीन । प्रम भक्त की लीन रीत ॥
एक पमिन बिन भजन न गो । रे मनि अठमरि बीते जो ॥
भजिए पूर्ण पुर्ण निधान । ताके सिमरण कबहूं न हान ॥
अपमा भजिए तजिए मान । माबिद गोबिद गोबिद जानि ॥
अयम प्रम ते मद मद बारि । साईंदास दास बलहारि ।५।

कुल कुटंबि की छोटि तियाग। राम नाम की सेवा लाग॥
जिह् प्रसादि कारज सभ सरे। धरिमराम धरि पायन परे॥
करे बेनती दो करि जोरे। पायन लागे कबूं न झूरे॥
भयसो राम भजिन परितापु। निस बासरि हर्की जप जाप॥
हरि भजिए तजिए अभिमान। सांईदास दास हरि ध्यान।६।

इह अउसरि पाए वडिभाग। कोऊ अक्षर पूरब जाग॥
इह औसर जो राम सम्हारे। आवागवनि को ससा टारे॥
निरधन रहे चले नही कबिही। हरि सिमरे गति पावे तबिही॥
बहु तोह हरि सीज मान। दृढ प्रतीत निश्चे जी जानि॥
इह अउसर भज सय रघनाथ। सांईदास दास सुप साथ।७।

हर्की कथा करो मनि ला। सदा सदा हर्के गुण गा॥
साध सङ्ग सो धारो प्रीति। तिहि प्रसादि होइ निर्मल चीत॥
देह रोग को अउखध एह। साध सङ्ग मिल हर् भज मेह॥
पल पल गावो गुण गोपाल। ततकाल भय करे उधारि॥
निरभय पन्हि भय पायो वास। हरि दर्सन की पूरी आस॥
आदिअत हरि होय सहा। सांईदास दास समहि।८।

सलोकु—यू राजा सभ भयन को तोरो वड परितापु।
सांईदास जिनि तू पाया प्रीत कर मेटे सभ सतापु॥

अष्टपदी—२१

एूं राजा सभ भूम को सभ सयना तेरी।
तुही गरीबिनवाज हय कटि बेडी मेरी॥
निसवासरि तुमरे गुण गावो। प्रेम प्रीति चित माहि बढावो॥
जो जनि तुमरी सर्नी आवे। ततकाल बयकुंठ सिधावे॥
हर्की सन पडो रे भाई। तिहि प्रसादि दुमधा मिटि जाई॥
जो जनि हर्की सर्नीपआ। सांईदास दास तिह भया।१।

पांच भूत का सुनो बिचारि। एक एक कों मनि मम धारि॥
तिस तिस तिह घटि भय बास। जो चित उपिजे सिह् पर्कास॥
फुनि गुमाबि तिन का सुन ले। प्रेम प्रीत करि आतम दे॥

एक एक क पाँचों भेद। सुनो कान धरि कूकत बेद॥
चो जनि पांच भूत से रह्या। साँईदास दास तिह भया।२।

पांच भूत का भेदि बताऊं। रे मनि तुम्हि को कह समझाऊं॥
फुन इह पांच कों करा बीचारि। चित अंतर सियो धरिनी धारि॥
फुन सत पांच सुनो मेरे मान्नी। तांको भेद सभ दियों बताई॥
अँउ पिन निद्रा बस कीन। पुष्या तृषा सुनो परिवीन॥
पाच छस की सिष्ट रचाई। साँईदास प्रभ बनत बनाई।३।

कांनो धरि सुनि लीजै माही। तिह सुमाबि सभ न्यिो बताई॥
इनि पांचों का भेद बषानो। गुरि मुष होइ सोई जनि जानो॥
बहुडि पांच क भेन बताऊं। गुप्त बाति करि प्रगिटि दिषाऊं॥
माया मोह राम रस भोग। पाच भूत कों हुय संजोगि॥
यांको लीज ममि मय धारि। साँईदास फुनि कीयो बिचारि।४।

प्रथिवी को ग्रहि रिदा कहावे। द्वार गता ते बेद बखाने॥
काम पीनि महारि पछानि। सासप लोभ बिउहारि बषान॥
फुनि बानी का सुनो बीचारि। हरि प्रमादि करि अंतरि धारि॥
तुरिमा माह महारि करी म। काम क्रोध ममि बस करि लीनि॥
मीकी बानी हर्मस कीजै। साँईदास सोऊ घटि लीजै।५।

तथा तेज तत ग्रह जांमो। नेत्र माह द्वारि पहिचानों॥
दिष्ट महारि मोह बिउहारि। पच तत कों एही बिचारि॥
नाम कबिस पायो धरि वाम। पंखड़ी कला भयो परिकास॥
घ्रान्म द्वारे ताते कही। गध सुगध महारि हुय बही॥
नरि इछा बिउहारि कहावे। सान्नीदास को गुरि मुष पावे।६।

ग्रहि गृह कि प्रकास पछान। पून ते द्वारे कहो कान्॥
नादि महार ग्रह बिउहारं। सोह हुसा आप बिचार॥
या भूटम मभ मावक मा। तू पैबट हरि पार तरा॥
गुरि मिस लोज मतरि बीरि। तवि भव सागर उतिरे तीरि॥
मय चउरासी भर्म न हो। मजि साँईदास दास गुरि सो।७।

गुरि सेव हर्षी गति जाने। हर्ष शोक मनि महि नही आने ॥
निश्चल राज रहै हुय वीरि। आविनि जाविन की मिटि पीडि ॥
महरि गभीरि गुपाल पछान। आठो पहिरि धरो हरि ध्यान ॥
एक स्वास बिर्था मा खो। हरि हरि सिमर लेय सुष हो ॥
या सम ही को ऊपरि कहो। हरि हरि सिमर सदा सुष लहो ॥
चूक गयो सकिलो भ्रम भारी। साईदास दास हरि ध्याही ।८।

दो०—मनि ते छाडो लालसा हर्षी रिदे बसा।
साँईदास हरि दर्सन चित लाइए रहो तिसी भषा ॥

अष्टपदी—२२

छाडि लालसा हरि गुण गा। हरि दर्सन की प्रीति बढा ॥
सहिज सुभा मिले जो आ। हर्ष मान हो लीजे सा ॥
अउर लालसा मूल नि कीजै। प्रेम प्रीति करि हरि रस पीज ॥
जिहि ठाकुर सो प्रीति अति हो। तिस सो करे बराबिर को ॥
जो भावे तो प्रान दे। साईदास भावे फिर से ।१।

चर्न लागि करि जोरि खलो। जो कछु हरि भावे सो हो ॥
ठाकुर हमरो अपरि अपारि। निमसकार् कीन सवबारि ॥
जाको निमसकार मनि कीजै। कहु कयसे फिर उत्तर बीज ॥
ताकी लीजै आज्ञा मानि। जो कुछ करे सोई भगिवान ॥
या बिध लीज अ तिर धारि। साईदास दास बीचारि ।२।

हर हरि हर हर हर हर हरी। आठ पहरि मनि हरि हरि करो ॥
महा नद अनदि आनद। स्वास स्वास सिमरो गोबिंद ॥
क्षम कुशल अनिरोगी देहु। राम नाम सिमरण कर नेहु ॥
हरि आज्ञा सभ मस्तक धारि। स्वास स्वास हरि करे जुहारि ॥
प्रेम भक्त करि हरि दरि सूझे। साईदास दास यहु बूझे ।३।

मावि पिता भाई सुपिदाई। बिन हरि रे मन कौन सहाई ॥
जम को मारग महा दुखार। हरि सिमरण करि होय उधार ॥
प्रम प्रीत का बीजु बो। अनभय खेती नीकी हो ॥

ए ऐसेती नहि कबू न पूटे। ऐसो भयहि नहि हरि लव चूटे॥
हरि हरि हरि हरि रिदे पछानो। सांईदास दास यहु मानो।४।

निर्धन को धनि तुम भगिवान। रे मनि मेरे ऐसये जान॥
जिन कों मान भाग हरि हो। ऐसो धनिर न होवे कोइ॥
अउरि कउन की कीजे मान। जवि ते पाए श्री भगिवान॥
वेर वेरि हरि परि कुर्वानी। सांईदास दास गति जानी।५।

जो हरि भावे सोई भला। सो अविचल कविहू ना चला॥
ऐसी धारि लेय मन माहू। हरि प्रसादि होवे सुष ताहि॥
फूली वेल लगो फल घना। हरि प्रसादि सुष होवे तना॥
भजिए हरि तजिए अभमान। प्रेम प्रीत घटि अंतर मान॥
हर्मजिए सुष रहो समा। साईदास दास सर्ना।६।

रे मन हरि हरि हर्कोध्या। हर्के सिमरण बहु सुष पा॥
हरि हर् कहते भागिन रोग। प्रावति होय महा सुष भागि॥
महा भोग हरि रस का पावे। नाम हरी यहु वेद बतावे॥
तिहि समानि दूजा नही कोई। तीनि लोक दूजो नहि होई॥
ऐसे गुरि मत लीजै ज्ञानि। भजि साईदास दास भगवान।७।

रे मनि तू भजि भगिवान। जिन भगिवान न दूजा जान॥
ऐसो अउर समरथ हय को। जिहु भजिए आतम सुष हो॥
एक पलक मय जगत उपा। पलिक माहू पर्लय दिखला॥
हर् दर्गा जो पेखन हो। वहुड लामलो रहे नि कोइ॥
हरि सिमरणु मनि मह् उपिजा। साईदास दास नित सा।८।

दो —बिना भजिन भगिवान के विर्थे सकले काम।
साईदास जिहवा काटि नकारोए जो उचिरे नही नाम॥

अष्टपदी—२१

भजिन बिना बिर्थे सम काम। रसना काटो कहे न राम॥
बिर्थ जयमि जु हरबिन देपे। बिन भगिवान न दूजो पेपे॥
बिर्थ काल परि निंघा राते। अंग्रत तज बिष्या सो माते॥

विर्थे हाथ टहल नहि धारे। हरि सतन सेवा न विचारे॥
विर्थे पगि तीथ नहि जाय। सांईदास क्यसे सुप पाइ।१।

विर्था चित जो चले विकारा। तटि तीरथ गुर मनि नह धारा॥
विर्था देह विना हरनामि। विन हरि नाम न कछए काम॥
विर्था राजि माल धनमान। विर्था रग रूप करि मानि॥
विर्था धनि हरि सत न काज। अत काल आवे दर्लाज॥
विर्था अउध विन हरि होइ। सांईदास विर्थे त्रयलोइ।२।

दानि पुन्य तपस्या कर। विना कामन दुखिकी लय मर॥
परिदखनि प्रथिवी सभ द। ऊर्ध पाव करि मूलग से॥
धम्नि विप जो जारे प्रान। पउन अहार कर धरि ध्यान॥
मिहमा भूमि दान जवि धारे। जो को मेरि एही प्रन तारे॥
विना भजिन विर्था सभ हो। सांईदास दास भज सो।३।

निउली कर्म करे वितु ला। चेतम हो जी दया वसा॥
जक्म रुपी सिद्ध सहिकाव। जोगी होक कान पडाव॥
वयरागी वनि पड सियार। कुम कुटवि तज होय नियारे॥
होइ मपर्सन पर्मे काहू। मानि महत मय हूवे वाहू॥
भप सकल विर्थो विन नाम। हर्मेज सोज आठो जाम॥
मनस सिष्ट चेरी हो रह। साईदास दास पदि गहे।४।

पढ़ितु वेद पड़े पढ़ि मूमा। भेदी हर्के भजन न हूमा॥
बद सार कछु हाथ न आयो। वेद सारि को मम नि पायो॥
आपन को पढ़ित करि जाना। हर्को भाग रिद भुलाना॥
पर्रि निंदा सो राता ममा। प्रान पुप दीठो बिसरा॥
हर्मो मन्नि मन मीतर सहो। सांईदास दास पम्नि गहो।५।

हरि विन अउध विहानी ममम। मय विना हो खेती जयम॥
हरि सिमरण विन किते न काज। पय विना हय जयसे बाज॥
जगि मय विर्था आवन भयो। हर्को नाम नि मन भय लयो॥
न धूनी नाम न मनमय थो। वह नहि मिसयो मनमय पो॥
राम क्रोध माया मनि तजिए। सांईदास दास हर्मेजिए।६।

तजो ममानप समस्त सरीर। हर्यो भजि राय निमि दम बोरि॥
बहुत्व वारि महि माबिन हो। वर्णा ठाबि नि साक को॥
माया माह तियागो मीन। हरि सिमरण की सीजै रीत॥
जो भायो क्या संग लियायो। म त कासि मायो उठ मायो॥
माटी दही जब कद हान्। तिहि ऊपरि क्या करहु गुमान॥
विमम छाडि मउमरि बहि जा। सांईदास दास मर्ना।७।

इह मउमरि फरि हाथ न मावे। मानिस देही क्या फरि पावै॥
मबि कै चूक ठबिर न को। सप मउरामी मर्मथ हा॥
मातम हो परिमातम पा। ममि ममिसा नाश करा॥
ना मनूमा ना मनिमा को। जबि ते मीमि परम मत हों॥
क्यम बिन सिमरण कल्यान। गहु साईदास दास की आनि॥

दो —सबिद रूप सरूप हम म त सपे नहि कोइ।
साईदास जो हभजे जमि त न्यारा हो॥

अष्टपदी—२४

सबिद रूप सप जमि सो। रूप रेप ते न्यारा हो॥
जगि कीयाह एर न सागे। ब्रह्म मगिन मटि भीतिर जागे॥
मनाहद धुन सो सागो ध्यान। सो जनि पर्से श्री भगिवान॥
जिह जनि हर्णा दसन पायो। बहुरि बारि जूनी महि मायो॥
पहा वसं हरि चतर प्रबीन। सांईदास दास तहां मीन।१।

सत मना पायो मटि माह। हरि प्रसादि कछु मतरि माह॥
देपो तो प्रम की चतुराई। या जगि क्यसी बनित बनाई॥
का क्यमा को क्यमा कीन। को मूरख का चतिर प्रवीनि॥
को काहू की जामे नाह। सम गलताम माप ही माह॥
मयसे नरि हरि रूप मपार। साईदास दास बलहार।२।

मयसे प्रम ते बल बल जाईए। माठ पहर्ता गुनि गाईए॥
मलो पवि मपवि महि को। पसर रह्यो हय मस वस सो॥
जो दीसं सोही हय मायं। कबिहू सोवे कबिहू जागे॥
जबि सोबे तबि सुत कहा। जबि जागे तबि चेत नरा॥
सोबित जागृत एको जयसा। साईदास दास हो मयसा।३।

ना जागे ना सोवे सो। अयसो सुष समाधी होइ ॥
आतम कों अयसो विसथार। तिहृ घरि चीत हरि थत निहार ॥
कोटि प्रकास घर्न अरु प्यामा। आतम को विसथारि निरासा ॥
जो दीसे सो आतिम राम। विना राम ना दूजो आन ॥
आतम परिमातम इकु माने। साईदास दास यहु जाने ।४।
अयसो आतम जान जो। हरि सो मिले नि विछरा हो ॥
जयसे सलता सिंध मिला। बहुडि प्रवाह नि नकसनया ॥
जबि अयसे आतम जनि जाना। तबि बोल पूरण भगिवाना ॥
तुम निज भक्त भक्त हमारे। तुम हम ते नहि कबू नियारे ॥
निसवासरि हम तुमरे माही। हमय तुमय कछु भेद नही ॥
हरि साध कछु भेदि न जाने। साईदास दास सच माने ।५।
जो जनि तुमरी सेवा करी। तुम वाछति करि मनि मय धरी ॥
साध सत हरि एकोएक। समझ देष चित करो विवेक ॥
हरि साधन मय अतरि नाही। साध जना पायो घटि माही ॥
जयसे जल तरङ्ग महि न्यारा। अयसे साधा हरि चित धारा ॥
सो सेवा तुमरी ठहिराई। साईदास हरि होइ सहाई ।६।
हरि साधा नहि जोत नयारी। आदि पूर्प होविस ततकारी ॥
हरि सोधो मय भेद को नाहु। याहू समझ देष मनि माहु ॥
सेवक स्वामी होवत आयो। जिनमनि बष करि सेवि करायो ॥
इक मति सो सेवा इक कीजै। बिन सेवा कछु अवर न लीजै ॥
अयसो पूर्प भयो मतिकारी। साईदास तिहि मिलयो मुरारी ।७।
दीमा नाम दया निध स्वामी। करि किरपा प्रभ अतिर जामी ॥
अपिना नाम दानि मोहु दीजै। प्रभि जी मो परि किरपा कीजै ॥
अउगनि हमरे महि चितारौ। करि किरिपा पतिता को तारो ॥
तुमरे दर्पर करो पुकार। हो दियाल मोहु करो उधारि ॥
हरि भावे तो होइ अपार। साईदास प्रभ भयो दियाल ।८।

दो०—अवत हर्को नामु हृय जो धचिवे जन को।
साईदास अवुन वानी जो पढ मुक्त पराप्त हो ॥
इति रामाय मम॰ अष्टपदी २४

॥ ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥

अथ भाषा लिखे दश अवतार

कर्त्ता साईंदास के दास नरोत्तमदास मिश्र[1]

ॐ श्री मत्स कच्छ बाराह नृसिंह बावन परसुराम श्रीरामचन्द्र श्री कृष्ण बोध निहकलंकी श्री दश अवताराय नमः ॥ श्री सतगुर देवाय नमः । ॐ श्री सत्यसरुप बाबा साईंदास जी नमः । निरंकार निर्भर अभूनो[2] स्वमु प्रकास मूर्त मुर्ती मनोहरि कर्ता पुर्व शाय धार गदा पीतांबर कौलापति केसर पुंज परमेस्वर ताप छमा को विश्राम धार संतु जनों माही हमिरा तिहि पर्णामु ।

सत्य बाबा साईंदास दस्स सिकदहु ।

नमो नमो प्रभु आदि जुगादं । नमो नमो पाये बिस्मादं ॥
नमो नमो निरंकार अघस हर । नमो नमो भाषी धर्नी धर ॥

---

१ प्रस्तुत रचना 'दश-अवतार' बाबा साईंदास जी के भाषा म लिखे भागवत के प्रथम स्कन्ध का एक अंश है किन्तु रचना के उपोद्घात की यह पंक्ति "कर्त्ता साईंदास के दास नरोत्तमदास मिश्र" संदेह का कारण बन जाती है। पुजारी सम्प्रदाय वाले परंपरा से यह मानते आए हैं कि साईंदास जी का ही नाम नरोत्तमदास था। यद्यपि इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। पर एक बात तो स्पष्ट है वह यह कि इस रचना मे स्थान स्थान पर छन्द की समाप्ति पर "साईंदास" नाम की छाप है। वैसे तो साईंदास नाम की छाप मात्र रचना के कर्तृत्व को सिद्ध करने मे सहायक नहीं है। इतना सब होते हुए भी इस रचना मे प्राप्त दोनों पुष्पिकाएं तथा दश अवतारों मे से भगवान् श्रीकृष्ण अवतार की महिमा के लिए प्रस्तुत श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के हिन्दी अनुवाद का उपोद्घात बाबा साईंदास के कर्तृत्व को सिद्ध करता है। इसी उद्देश से इसे हम बाबा साईंदास की रचना मानकर उनकी शेष रचनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

२. अभूमी<अयोनि।

नमो नमो प्रभ सुभ्र बिराजे। नमो नमो जो अनहद बाजे॥
नमो नमो ईस्वन के ईसा। नमो नमो जग के जगदीसा॥
नमो नमो परमानंद स्वामी। नमो नमो गुरु अंतरजामी॥
नमो नमो ब्रह्मिंड के नायक। नमो नमो भक्तिनि सुपदायक॥
नमो नमो प्रभु धुधूकारा। नमो नमो समहू ते न्यारा॥
नमो नमो रचनि रचाई। नमो नमो धर गगन बनाई॥
नमो नमा पूर्न अविनासी। नमो नमो ताके सभ दासी॥
नमो नमा महाराज गुसाईं। नमो नमो त्रिभुवनि के साइ॥
नमो नमो हरि घ त्रिति वानी। नमो नमो हरि रत्न वपानी॥
नमो नमो गोबिंद सभि माही। नमो नमो हर सकल समाही॥
नमो नमो बाणी रिसाला। नमो नमो हरि सभि प्रतिपाला॥
नमो नमो हरि मुक्ति के दाता। नमो नमो पूर्न बिधाता॥
नमो नमो कौलापति कसरि। नमो नमो पूर्न पर्मेस्वरि॥
नमो नमो निर्मल निर्बोता। नमो नमो तारे सभ स्रोता[1]॥
नमो नमा ब्रह्म ह के दाता। नमो नमो भक्तिनि सग राता॥
नमो नमो करजो कर जोरी। नमो नमो करि गति हर मोरी॥
प्रभि मे जवि ठाकुर मधि होइ माया। तिस का सभ बिर्तंतु सुनाया॥

मत्स्यावतार

श्री मछ की माता सयावती पिता पूर्व ऋषि गुर मानधाता।
खेत्र द्वारका पुर पटण निर्देसंत संपासर बासो।

प्रिथम मछि रूप हरि होए। तांते भक्ति सकल सुख सोए॥
करि, प्रिग सीसु मानस कोकीनो। धौर देहि सम मछ को लीनो॥
ससासुर ब्रह्म पहि आया। करि बोरे मुचि भायि सुणाया॥
किहि विधि पावो पूर्न रामा। किति विधि हरि मिल हो वहि कामा॥
क्यु करि मोह मिले प्रभ पूर्न। क्युं करि गति मेरी होइ मूरनि॥
क्युं तुमि कहो तिवै मैं करिहों। तुमरो कहा हुदे मैं धरिहों॥
इहि अभिलाषा मो मन माही। मैं तुमरे प आयी सोई॥

---

१ स्रोता < श्रोता।

वेद भाणि ब्रह्मे को दीने। हिप मान होइ ब्रह्म लीने॥
वेद लए सचर मन भागो। सचर सोभा तब ही जागो॥
मति मान बु मगल बहु गाए। वेद लोए हरि दसन पाए॥
मनक भनक तिहि बहु सुप पाए। मति मन द मगल जसु गाए॥
सुही तास भ्रात जग केरा। तू समि विधि पून प्रभु मेरा॥
तोहि रूप मै कहा बपानों। तोहि कला को मैं क्या जानो॥
तू समि विधि दाता है जन कों। तुमि प्रसाद होमा सुप मन को॥
पूर्न ब्रह्म सदा भविनासी। कौलापति पूर्न प्रघनासी॥
भक्ति हेत प्रभ इहि वपु धान। भक्ति हेत प्रभ मसुर सिहान॥
भक्ति हेत तुमि इहि विधि कीन। भक्ति हेत तुमि इहि वपु लीने॥
भक्ति हेत दधि महि प्रभ गयो। भक्ति हेत प्रभ पर्गट भयो॥
भक्ति हेत इहि कोने कामा। भक्ति हेत पर्म प्रभ रामा॥
तुमि भगतनि के सदा सहाई। तुमिरी गति कछु लपी न आई॥
कहा बपानो कौतकि तेरे। साईदास जपु नाम सबेरे।९।

प्रभु वे वेद बैकुंठ सिधायो। ब्रह्म त्याग मत्स्यन महि भायो॥
भादि भनीन है प्रभु मोरा। रवि सुत ते छूटै जो हावे चेरा॥
जो जो मछ रूप जसु गावै। जीवत ही बैकुठि सिधावै॥
बहुर बार जन्मे नही मरे। जो हरि मछ रूप रिदे धरे॥
जन्म जनम के बधनि काटै। दसमें द्वार के छूटहि कपाटे॥
रोम रोम सीतल होइ जाए। तपि मिटै सीतल ग्रहि पाए॥
दुपि दरिद्र ताको नहीं लागे। मासु जपति सकला दुप भागे॥
सदा सदा हर को जसु गावो। और बात किसे चितु न लावो॥
जसु जप पार्थ्यो सुप माए। साईदास साई परवाए १०

द्वितीये प्रभ कछ रूप हो भाया। ताको सकल ब्रितातु सुनाया॥

ऐसी बात बतावो मोकौं। आपि सुणाई मैं प्रभ तोकौं ॥
इहि सबद मम समझु चुकावो। पूर्न ब्रह्म तुम तबी कहावो ॥
को विधि कीए मम मिले गुसाईं। किहि विधि राम सर्न थितु साईं ॥
कैसे करि मै गति कौं पावौं। कैसे कर बैकुंठ सिधावौं ॥
कस मुक्ति बंधम तें होंवौं। कसे राम चरन मैं चोवौं ॥
जिसि विधि कीए हरि संत मिसाही। सोई विधि तुम कहो हमांही ॥
एहि प्रश्न हमिरा सुण लीजै। गुर प्रसाद मम उत्तर दीजै ॥
ब्रह्मा ऐसो मुष ते भाषा। प्रभ तर ध्यान धरे मुष भाषा ॥
सुनि सनासर बात हमारी। मोहि प्रतत् नेह मम वीचारी ॥
जो मैं कहो सु मनि महि रोपो। सत्त सत्त बचनि करि मापो ॥
तुमि तं भक्ति प्रराष न होई। भक्ति प्रराध न पावौं सोई ॥
भक्ति प्रराधि कर्नि बहु भारी। तबु होंमौं तब मिले मुरारी ॥
तनु होमो तो भी नही पावो। तनु होमति प्रति मनु मुकिचावौं ॥
विरोध भक्ति तुमि ते छिरण होवै। तब निमौं सुख मदर सोवै ॥
विरोध भक्ति कर्नि चित धारो। जीवधार देपो तिसि मारो ॥
सत जमा को दुख बहु देवो। मार कूट बस्त्र पसि लेवो ॥
जो हरि जपै तिसी सौं झूझे। तुमि कबहू मुष नामु न बूझे ॥
गायत्री आपु कति कोऊ देपो। तांको दड देहु दगि पेयो ॥
सन्ध्या आपु कर्न ना देवो। जो कोऊ करे तिसे हनि लीवो ॥
इहि विधि मोह बताइ तुमकौ। इहि विधि कर्णि मोगु नाहमिकौ ॥
जो तैं प्रश्न कीमा सनि कहयो। महीं त म निदचम सुक्ख पह्यो ॥
इहि विधि करो ति पावो रामा। साँईदास प्रभ पूर्न कामा ।२।

सनासर चित बरेयो विरोधा। मप सप ते मे प्रतर सोधा ॥
प्रवर कवन सग विरोध उठावौं। तांके कीए प्रधिक सुषु पावौं ॥
ऐसो प्रवर नाहि कोऊ सूझै। जासि बैर करि मुक्ता हूजै ॥
साधि प्रतर हीय चित धार्‌यो। ब्रह्म संग विरोध हमारो ॥
नेत्र मूद ब्रह्म ध्यानु धर्‌या। गोबिंद का तब सिमरनु कर्‌यो ॥
तबी सनासर बद उठाए। लीए बेद जा दधि ठहिराए ॥

१ यहां 'इ' होने से सगर इधि—दूर—सेम पर्व होगा।

ब्रह्मा ध्यानु छाड जब देषै। ना सपासुर बेद न पेषै॥
चितवन लागे इहि क्या होया। बेद कवनु मोह् ले मयो सोया॥
मति बिस्वास रिदे मोह् पर्यो। हाथ जोर म तर ध्यानु धर्यो॥
एही पटु मांध्यो मन मानि। साईदास दास सो मयो बषानि।३।

बेद मोह् सखासर लीने। प्रिथमे वर मोहि सग कीनें॥
मोहि कह्यो मोस्यु उठि लागा। ध्यानु छाडि चितवन इहि लागा॥
ममुर बुधि तोंही तें कहीये। सब्द गुरू सो इहि विधि रहीये॥
मति कोधु ब्रह्म मन कीनो। तव बीचार म तर इहि लीनो॥
हाथ जोर कर बिनती करी। हे कौलापति निमल हरी॥
हे प्रभ पूर्न सभ बिधि रामा। सत जना के पूर्न कामा॥
तुमि मविनाशी नासु नि तेरा। तू प्रभ सदा सहाई मेरा॥
तू बिमु तु तेरो म तु न कोई। भादि म त लगि तूं प्रभ होई॥
हौ मति हीन हो एहि मति मेरी। कहा कहौं प्रभ म गति मेरी॥
तुमि मवन वन नही जानो। कहा लगि उस्तति तोहि वषानो॥
रस्ना रच कहैं प्रभ मोरी। किहिविधि करों म उस्तित तोरी
निरंकार निरवर गुसाई। तीन भवन को है तू साई॥
मैं तोहि उस्तति कहा वषानो। किनि बिधि तोहु मामु रिदे मानों
[illegible] कछु [illegible] न भाव। जाको कछु मनि महि ठहिरावै॥
जा [illegible] कछु कहीयै। जिन देष क्या मनि उचिरहीये॥
तुमरी उस्तति कवनु वषानो। तुमिरी गति मिति प्रभ के जानो॥
मम बिमनो प्रभ जी मुण लीजै। साईदास दास का मुस्कल कीजै।४।

मा [illegible] प्रभ मायी। मा सा प्रश्न एहि भाषि मुणाया
किहि बिधि पावो मामु गुसाई। किहि बिधि राम चलजिनु भाई॥
कछु करि मुक्ति माह गति हावै। कय करि मनु मगो प्रभु पोव॥
[illegible] माया दह कमाई। जि[illegible] गनि [illegible] मेरे भाई॥
सो मे उमि पा [illegible] पठाया। बिसेष मगनि बानि बिनु माया॥
सो तुम पावा पुर अविनाशी। जा र मवर जीव है दासी॥
इहि बिधि [illegible] म ध्यान [illegible] भाषा। सो मपासर [illegible] उपाया॥
यह दुराद लीए उगि मरे। कहा कर्ने प्रभ माग तेरे॥

मोको बसु तासो न बसाई। मारो उमि को दभि महि आई॥
बद पमोटन तति स्याबा। किति विधि दधि क भीतर जाबो
मोहि प इहि विधि कोई न जाई। सांईदास दास हरि सदा सहाई।५।

वेद मोहि प्रम माणि कै दीजे। इहि कन्ना प्रम मोहि पै कीजै॥
ब्रह्मो को प्रदम सुनो प्रम पूर्न। दूर कर्न सदा क विसून॥
प्रगट भए बपु मछ हरि धर्‍या। सत हेत इहि कारण कर्‍यो॥
जहाँ जहाँ भीर ससम को होव। तहाँ तहाँ प्रमु मेरा पोवै॥
जिनि जिनि दुप भक्तमि को दीठो। तामि मिहारु मेरे प्रम कीठो॥
भक्ति हेत प्रम महि बपु धार्‍यो। गए गमर्व तब पै पै कार्‍यो॥
तब ही ब्रह्म उसतति करी। जमि देषे सुंदर प्रमु हरी॥
दधि महि जाइ सखासरु मार्‍यो। पकरि दैत कों प्रभु बिडार्‍यो॥
तब संखासर यूं करि बोल। मोहि गत कवन पूर्न प्रभु ममोले॥
इसी प्रयोग विरोध मैं कीठो। ब्रह्म तें बेद चुराइ करि लीठो॥
दर्सुनु पार्वो पुप मिषाना। तौ मुक्ता होवों मनि माना॥
तोहि किपा ततकाल करी। हे किर्पा निधि पूर्न हरी॥
किपानिधानि पूर्ण पर्मेस्वरि। सांईदास दास प्रम सबसेस्वरि।६।

तामि मिटा के भप बनाए। एक दछनि म्यापछमि उपाए॥
मुष्ट मरी सोहि की भगवान। डारी संख ममो तब पान॥
तब प्रम सखासर स्यु कह्या। मुप भपने इह प्रत उचिर्‍यो॥
जो कोई भक्ति मेरी जमु करे। प्रिथम तिल्कु तेरे परि धरे॥
माहि स्नानु पूर्न तब होई। जब भठमठि तीर्थ जमु माने कोई
जो जमु पर निकसे तुमि माह। मठि मठि तीर्थ को जमु नाहें॥
इहि बरु तब सखासर पायो। तब ते साख जम्प परि धायो॥
साख की महिमा प्रमु बखाई। साईदास सुनहो चितु लाई।७।

जो कोई भक्ति ठाकुर की करे। प्रथमैं तिल्कु संख परि धर॥
बमु तिहि पाइ स्नानु कराबे। पाछे तिल्कु से ताहि चिम्हाबे॥
बहुडो चर्णा चर्णाम्रितु म पीवैं। सो बनु मदा मदा सुप जीवै॥
इहि विधि प्रम मुप भाषि बपानी। जो कोई जनु होइ भएपधानी॥
सखासुर हनि बेद ल्याए। तौ साईदास दास बल जाए।८।

वेद आणि ब्रह्मे को दीने। हिय मान होइ ब्रह्मे लीने॥
वेद लए सचर मन मागो। सचर सोभा तब ही जागो॥
अति आनंदु मंगल बहु गाए। वेद लीए हरि दरसन पाए॥
सनक सनक तिहि बहु सुष पाए। अति मन द मंगल जसु गाए॥
तुही तात मात जग केरा। तूं सभि विधि पून प्रभु मेरा॥
तोहि रूप मैं कहा बषानों। तोहि कला को मैं क्या जानों॥
तू सभि विधि दाता है जन का। तुमि प्रसाद होया सुष मन को॥
पूर्न ब्रह्म सदा अविनासी। कौलापति पून अघनासी॥
भक्ति हेत प्रभ इहि वपु धान। भक्ति हेत प्रभ असुर सिहान॥
भक्ति हेत तुमि इहि विधि कीन। भक्ति हेत तुमि इहि वपु लीने॥
भक्ति हेत दधि महि प्रभ गयो। भक्ति हेत प्रभ पर्गट भयो॥
भक्ति हेत इहि कीने कामा। भक्ति हेत पर्म प्रभ रामा॥
तुमि भगतनि के सदा सहाई। तुमिरी गति कछु लषी न जाई॥
कहा बषानो कौतकि तेरे। साईदास वपु नाम सवेरे।९।

प्रभु वे वेद बकुंठ सिधायो। ब्रह्म त्याग मत्स्यस महि आयो॥
आदि अदीन है प्रभु मोरा। रवि सुत त छूटै जो ह्यावे फेरा॥
जो को मछ रूप जसु गावै। जीवत ही बैकुंठि सिधावै॥
बहुर बार जन्मे मही मरे। जो हरि मछ रूप रिदे धरे॥
जन्म जन्म के कर्मनि काटे। दसवें द्वार के छूटहि कपाट॥
रोम रोम सीतल होइ जाए। तप्ति मिटै सीतल अति पाए॥
दुषि दरिद्र ताको नहीं लाग। नामु जपति सकला दुष भाग॥
सदा सदा हर को जसु गावो। और बात कित्ते चितु न लावा॥
जसु जपैं पाव्ये सुष भाएं। साईदास साई परवाए १०

द्वितीये प्रभ कछ रूप हो आया। ताको मङ्गल बितातु सुनाया॥

कूर्म (कच्छ) अवतार

मानसरोवर क्षेत्र कमल अद्भुतास है
पद्मावती सुमात सिरजा गुरु साक्षात है।
क्षेत्र मानसरोवर निर्बसंत मधुकेंठ बालक॥

द्वितीया कच्छ रूप प्रभु धारे। मच्छ रूप होइ असुर संहारे॥
असुर अधिक सुर का दुख देवहिं। मार कूट बन्ध असि लेवहिं॥
जबि असुरों ने बहु दुख दीना। तब सभि देवो मन इहि कीना॥
जमहों प्रभ पहि जाइ पुकारहिं। हमि को असुर काहे कों मारेंहि॥
सभि सुर रूपि तटि जा ठहिराए। मुखि से बचन उचार सुनाए॥
हे प्रभ असुर अधिक दुख देवहिं। मारकूट बस्त्रि ल्यसि लेवहिं॥
तुमि बिनु हमरो कौन सहाई। जामि पामि भागहि हमि जाई॥
जबर बचन ना आप सुनावहिं। कहों ठौर कवम पहि जावहिं॥
हमिरो बसु जिहि सग न समाई। हे प्रभ पुन भक्ति सहाई॥
जब मम दवा बिनती ठानी। ताको प्रभु दीयो आज्ञा पानी॥
तुमि जावो उमि की मनाई। मैं तुमि का इहि बात बताई॥
जदि देवों न्हि बिधि गुण पाई। तब साईंदास हृदय ठहिराई।१।

तब ते सुर सभि ही चलि आए। असुरो सर्न आइ ठहिराए॥
जो कछु असुर कहे सोई मानें। ताके कहें म तद नही मानें॥
तब ते असुर इनि दुख न देवहिं। डर डार इनिको न करेवहिं॥
थी कौमापति सन सहाई। असुरो मनि इहि बिधि ठहिराई॥
मथहि समुद्र रत्न निकारहिं। कौमापति अपर अपारहिं॥
असुरो के मनि महि इह आई। कह्यो सुरों सो सुनहो मेरे भाई॥
जमहो दधि मथन रत्न निकारहिं। अवर बात कछु रिदे न धारहिं॥
जो उनि कह्यो सुरा मनि लीनी। साईंदास ठौर बात म कीनी।२।

असुर चल दधि मथने ताईं। सुर सभ संग लीए अधिकाई॥
जाइ रूपि तटि परि ठाढे भए। मनि म तरि इहि मनिषा भए॥
मेरु पर्बत मथाना कीना। बासुकु उर्ग नेत्रा करि लीना॥
सुरो को कह्यो कवन ठौर लेवो। हमि को कवन ठौर तुमि देवो॥

तब ससि देवों मनि महि धारा। इहो भाव तिन्हों हृदे वीचारा ॥
जो हमि कहहि सीस ओर लेवहि। तब हमि कों पूछ ओर देवहि ॥
सो हमि पूछ लेह सुप होई। हमि को विघ्न न लाग कोई ॥
येही बात सुरों मनि धारी। सांईदास सों कहति पुकारी ।३।

तब असुरों को येहि प्रतु दीना। सीस ओर हमि कर महि कीना ॥
पूछ ओर तुम कर महि लेवहु। तात्काल दध मथनु करेवहु ॥
असुर मत विधि उभ पछानहि। जो सीस गही पूछ करि जानहि ॥
पूछ ओर सभ सुर को दीना। सीस ओर अपने करि लीना ॥
तब ही दधि कों मथन लागे। ओर्वात सबसी उनि त्यागे ॥
जतन कर्ति दध मथ्यो न जाई। महा अधिक असु पावे लाई ॥
कहु कसे दध मथिओ जाई। गर धर्नि परि जा धरिहराई ॥
तब असुरों सुरों मनि महि धारी। महा कठनि जु बनी अति भारी ॥
हाथ जोर सभ विनती ठांनी। हे प्रभ पूर्न शाङ्गपानी ॥
तुमि बिनु इह दधि मथ्यो न जाई। हमिरो कछु प्रभ नाह बसाई ॥
जब सभहू यहि विनती ठानी। कौलापति बेनती मनि मानी ॥
तात्काल कछ्र को वपु लीनो। बेग विलम तबि ना किछ कीना ॥
गिर को जाइ पिठ परि लीओ। तबि उनि सभ दध मथना कीओ ॥
चतुदस रत्न दध मथ निकारे। तवि असुरो न एहि मनि धारे ॥
नीको होइ सो ससि हमि लवहि। बुरो होइ सा इनि का देवहि ॥
म अति चाहसि है इहि लीआ। विपु चाहति असुरों को भ्रेआ ॥
तब मसि देवसि मनि महि धारा। हे कौलापति प्रान अधारा ॥
इहि म अतु पीवहि महा मरहि। मोहि जनि दुरा देवनि बिनु धरहि
हमि तुम सो प्रभु कहो पुकारे। तुमि प्रभ सभि विधि जाननिहारे
हमिरो कह्यो प्रभ जी सुण लीजे। ओर बाति कछु रिदे न दीजे ॥
पाछे सें तुम प्रभ पछतापा। जो तुमि इति ओमर नहो आवा
जब सभि देवस बिनती ठानी। सांईदास सुनी शाङ्गपानी ।४।

मोहनी रूप कीओ हर आयो। असुरो निर्खा बिनु लुभाया ॥
आइ दुह महि ठांडा भया। कौलापति इहि बपु करि गयो ॥
तिन कह्यो काहे झगिरावों। तिहि प्रयाग विरोध चलावों ॥

तब बेदन बितंतु सुनाया। हमि दधि मथिबे को चितु लाया
दधि मथ चतुरदस रतन निकारे। इहि असुरों मन महिं इह धारे॥
मनि ही रतन आप इहि मर्बहिं। हमि को इहि कछु नाही देवहिं॥
असुर मन भ्रम रूप सुनाए। भ्रम न असुर सबही बौराए॥
मम असुरों न सही पुकारा। सुनहो देवो कहा हमारा॥
हमि तुमि भगिरा एक भुरार्ई। जा इहि बहे मनो मेर भाई॥
तब दवा एहि बिधि मुग्ध लीनी। मनि मतरि बिनती उनि कीनी॥
जा इहि कहै सोई मनि मर्वां। उीर बाति कछु नाहि करेवां॥
भ्रम एम[१] उीर असुर टहिराए। एक उीर सम अमर बहाए॥
तब भ्रन न यनी मनि धारा। माईदास सो बहुनि प्रकारा।५।

प्रिथम अम्रतु वन्नि मागा। उीर बात भ्रम सकल त्यागा॥
अम्रनि भरि रतन सुरों ताई। मधु दवत असुरों अधिकाई॥
तब मधु किन असुर क्या कीया। असुर छाडि उीर करि दीया॥
अमरा उीर आइ टहिराया। भ्रनि न करि म अम्रतु पाया॥
प्रनु जी सुर जान्या उमि दीया। ए कारण मधि केती कीआ॥
नव हा पुकार उठे अधिकार्ई। पुकार कीउी सभ असुरा ताई॥
हमि को अम्रनु माहीं दव। छिनीया माठ एहिहमहिकरेवै॥
जब मधु बाट महि बात पुकारी। तब ही आपु कीउी गिरिधारी॥
मरमन चक्र भ्रम मीया बुलाई। ताम कहा सुनहो मर भाई॥
मधुकनी का सीस उतारो। ज्यु बाना त्यु तिस प्रहारो॥
जबि भ्रम की आज्ञा उनि पाई। बग बिम्ब तिनि मूल नि लाई॥
मधु कनी को सीस उतार्या। करि क्रोध ताको प्रहार्यो॥
अम्रनि पीया कैम मरई। निरचल धामम जगमहि करई॥
राहु क्नु तब ही त कीउा। जब भ्रम ताहि संहारण कीयो॥
मामु राहु कनु तन हामा। तब उनि अमृ सकला ही पायो॥
तब सम असुर युद्ध का धाए। मानो घट बादल उमिडाए॥
भ्रम न सम ही असुर सिहारे। एकु एक करि सम ही मारे॥

१ यहां शब्द 'एक' होना चाहिए।

जिनि सकलो हो जगत उपाया। तिहि स्मसर उौर कौनु कहाया ॥
जहां जहां भीर परी सहां भाए। सांईदास सदा जसु गाए ।६।

प्रभ चौदह रत्नि सीए कर मांहा। ताको भेद जाने कोऊ नाही ॥
सब ही सुर प्रभ सीए बुलाई। रत्नि वंडिने सागे भाई ॥
लक्ष्मी कौस्तक मणधाप प्रभ भाप सीठो। इहि कारन प्रभ मेरे कीठो ॥
कामधनि सुरपति को दीनी। भरभा पात्र किर्पा कीनी ॥
ऐरापति गज भी तिहि दीभा। कल्म विछ तिहि किर्पा कीभा ॥
भम्रनि भनूप ताहू को दीनां। एहि किर्पा प्रभ तापरि कीना ॥
चद्रु मे प्रभ गगनि पठायो। तांत उजीभारा पायो ॥
घनतर जगति ऊपरि प्रगटायो। रोगु को क्षय कर्नि बितु लायो॥
भम्बु प्रमि जी रवि को दीनो। एहि किर्पा प्रभ रवि परि कीनो ॥
मदु दीना प्रमि भसुरों ताई। बिपु दीनी शिव को भधिकाई ॥
जब बिपु शिव जी से करि पाई। भीयो जोर बिपु भपना लाई ॥
तब प्रभ चंद सीस ठहिराना। सीतल भयो बिपु बल हिर्वाना ॥
चतुर्दश रत्न प्रभ जी बांडि दीए। जिम जिम किपा करी तिस सीए ॥
सभ रत्न बेरा पतिकार सुनावों। सांईदास गोविंद जसु गावा ।७।

जिम पै मछनो को प्रकासा। सकल जगत ता को करे भासा ॥
कौसक मण जो तिमर महि होई। सकल तिमर उह पिन महि पोई ॥
तिमर मेटि उह करे उजीभारा। इहि कौस्तक मण को पर्कारा ॥
सोभा तब भापि हरि लीने। ताहू प्रकार बताहूर दीने ॥
पष्ट वस्तु सुरपति को दीनी। हिपमान होइ सुरपति लीनी ॥
भवि निम को सुग हा पर्कारा। घटि भीतर सुम लेह बीचारा॥
कामधेम को भिपम सुनावो। एक एक करि सकल बतावो ॥
जहाबि भक होवे भति भारी। त्रिपा गही या भूपि भमकारी ॥
मुप भाजन तांर उह देवै। बेग बिल्म ढोह नाह करेई ॥
जो जमु बाछन सीतम देवै। त्रिपा तोहि छिम महि हिर लेवै ॥
यहि प्रकार कामधेन मांही। सांईदास उौर यहि नाही ।८।

भरमा के परिकार सुमीजें। ठौर वाद कछु हृदे न दीजै ॥
हरि की भक्ति कीयो हरपिवारी। सील बित ते टामेंहारी ॥
ताहि देपि काम बहु भ्यावें। अधिक सुंदर काम अत भरा पै ॥
निर्त बहुत भाति बहु करही। निर्त करी कर मन को हिरही ॥
येह प्रकार भरभा मांही। जो इसिजीतहि सो भक्ति कहांही
महा कठानु जीतनि इसि भाई। साँईदास समिझि मनि मांही ।६।

ऐरापति तिहि बसु परिकाना। तांको बसु ये कहा बपाना ॥
जो तिस चडि रण माहे जावे। हारे नही जीत मरि मावे ॥
ताको मन भी सबल पोवे। जो सबार ऐरापति होव ॥
सदा अजीत तिहि जीत न कोई। जाके गृह ऐरापति होई ॥
ताके धत्र को परिहारे। साँईदास इहि बात बीचारे १०

कल्प वृक्ष परिकार बपानो। सत्य सत्य भवन मन मानो ॥
नग्न होइ तिसि वस्त्रि देवे। जहां धाम तहा छांउ करवे ॥
जिस भेवन की बांछा कीजे। सोई कहे आइ के लीजें ॥
कल्प वृषि ऐसो ही भाई। छाया करे धामु निवांई ॥
कल्प बिछ पर्कार सुमाई। साँईदास को मुनि ठहिराई ११

अम्रति प्रकार सुनो मेरे भाई। भलीभाति चित सेवहु लाई ॥
मूए कों जो मुप महि परे। सो मूमा उठि बाता करे ॥
जो पीवे सो कबू न मरे। निश्चल भासन जग महि करे
रवि सुत को तहु बासु न पाए। जो कोई अम्रतु से पाए ॥
पीवे अम्रतु मेरे भाई। साँईदास प्रभ सदा सहाई १२

बन्य प्रकार सभी सुण लीजें। ठौर बात कछु हृदै न दीजे ॥
जो तिहु बन्य सो बाजु बजावे। अन्यथा बान तासि नही जावें ॥
जिस सार्ग तिस मार चुकावे। जहा कहे तह ही हनि आवे ॥
इहि प्रकार धन्य तिस माया। साँईदास पुकार इह भाषा १३

सख प्रकार सुन हो मेरे भाई। श्रवण धार सुन हो चितु लाई ॥
गगनि चडे बहु होइ उचीमारा। तांका सुणहो समि बीचारा ॥

ता समये जो उत्पति होई। अति मिष्टान्न तासि महि होई ॥
इहि प्रकार है ससि के माही। सांईदास प्रभ सकल समाही १४

अनंतर प्रकार सुनावो। ताहि प्रकार म सभी बतावो ॥
जो कछु राग होइ किस ताई। द्रिष्ट परे सभ दूर कराही ॥
जैसे मृगु सिंह ते भागे। तसे रोग तिम देखे त्यागे ॥
तासि निप रोग सभु भागे। सांईदास तिस पसु ना लागे १५

असु जो प्रभ रचिताई दीना। ताहि बीचार सोऊ है कीना ॥
अति सुंदर सोभा है ताकी। सुंदरता कैसे कहो वाकी ॥
नयन अधिक सुंदर है ताके। सुख अधिक सोभति है वाके ॥
तिम परि चढि जो अनु कही जाव। जहां कहै तहा जाइ पहुंचावै ॥
अदव प्रकार कह्यो ना जाई। सांईदास सो भाव नि भाई १६

मदु जो असुरो ताई दीना। ताहि बीचार सभहू ही कीना ॥
जो मदु को ले पीवे सोई। प्रियमे ताहि बुधि बोराई ॥
देह की सुध ताको ना रहे। जा भाव सो मुख तें कहे ॥
आपवसि ते परिवसि जो जाव। छिनु पल सधि देही ना पावै ॥
इह मद को परकार सुनीजै। सांईदास त्याग एहि दीजै १७

बिषु जो हरि सिवताई दीनी। सिव ने ले पान बहु कीनी ॥
जा उसि बिषु को अवरु कोई पाई। छिन जीवे नाही मरि जाई ॥
पावन कहा कहे मेरे भाई। सिघति ही बहु प्रान तजाई ॥
मिघति कहा हाथ जो लेवे। लेवत हाथ प्रान बहि देवे ॥
द्रिषि कहा द्रिष्टि जो आवे। मिषित ताहू प्रान तजि जाव ॥
सोई बिषु सिवजी ले पाई। सांईदास सभ बात सुणाई १८

सभि ही रतन कढि प्रभ दीए। मेहि कार्न मेरे प्रभ कीए ॥
रत्नि कढि वैकुंठि सिधाए। बसे जसे वैकुंठ महि आए ॥
जहा जहां भीर जनहु को होई। तहू तहु गोविंद जी पोई ॥
मुनिहो सद धरो मनि मांही। राम नाम मुख तें उचिराही ॥
मभि कोऊ प्रीत करो मनि मांही। नाम कीए सभ दुख मिटि जांही ॥
सन्त सदा मनि महि ठहिरावो। सदा सदा हर के गुन गावो ॥

उौर बात कछु रिदे नि मानो। सकल पाए ठाकुर करि मानो ॥
उत्पति सकसी सांते होई। मवर न कर साकति है कोई ॥
मछ रूप भी उनि हो कर्‍यो। कछ रूप उन ही बपु धर्‍यो ॥
जो जो उसि भावै सोई करही। छिन महि धर्न गगन पवि धरही ॥
मवर बात सकसी तुम त्यागो। पूर्ण निधान की सेवा लागो ॥
कछ रूप विर्तंतु सुनायो। साईंदास विधि सकल बतायो १६

दीन दव दुख भंजन स्वामी। सकल घटा के मंतरजामी ॥
पुनि राजा पृक जी को कह्यो। स्वामी मम मनि संचर रह्यो ॥
हमि का मोको वेहु बीचारा। सूकर को बपु क्यूं प्रभ धारा ॥
इहि संचर हमिरे मनि भावै। ताहि किर्पा कर संचर जावै ॥
तब जाने सूकर बपु होए। संत जना के छिन दुष धोए ॥
सूकर रूप कया करि कीनो। सब छाडि बपु इहि बपु लीनो ॥
हम हि बीचार इसि का दीजै। एहि किर्पा प्रभ हमि परि कीजै ॥
एहि विनती तुम पहि हमि करी। प्रभ कित प्रयोग सूकर बपु धरी ॥
बार बार हम कहे पुकारे। तुम बिनु संचर कौनु उतार ॥
हमि घटि मै भयो मधिक बसेरा। उौर त्याग हमि मर कीयो डेरा ॥
गेहि प्रभ हमिरा तब ही जावे। जो तुमि किर्पा उत्तर पावै ॥
निमवासर हमि गमित विहाई। साईंदास को वेहु बताई २०

मिद्र ममि महि इहि मन पर्‍यो। मूस साथ भरमति मति हर्‍यो ॥
दिन निस भ्रमनि बक्ति ना पावे। इहि प्रयोग मनु बहु दुष पावै ॥
इहि मचर हमिरी तनु दाह्यो। मति भैं बकितु मनु होइ रह्यो ॥
मानि मिद्र हमि हृद न भावे। इहि प्रयोग संचर नही जावे ॥
कहो किर्पा कर पूरन स्वामी। सकल त्रिया के मंतरजामी ॥
फिरि फिर संचर येही भावे। सूकर रूप किति बिधि हरि पावै ॥
तुमि पहि एह प्रश्न हम कीमा। जब सचरु हमरे मनि लीमा ॥
जैसे जाना मचर निवारो। साईंदास को पार उतारो २१

तब गुरदेव जो बचन उचारी। सुन हो देवो बात हमारी ॥
तुम प्रश्न का मै प्रभु देवों। संचर तुमरा दूर करेवों ॥

सूकर वपु प्रभ इहि विधि कीनो। हरिनकस्यप मन महि इह लीनो ॥
महापराक्रमी अति बलवंतु। मोहि समसर कोऊ अवर न जंतु ॥
कहा करे कोऊ रीस हमारी। मै बलियंतु मोहि बल अधिकारी ॥
त्रलोक को मोहि मन त्रासा। मोहि त्रास जलु पीय न प्यासा ॥
महा गर्व मनि अंतर कीनो। अति अभिमानु मान मनि लीनो ॥
मही पलटि जस परिसे लोनी। सिंध[1] माहि जाइ अल्पतु कीनी ॥
मही गही चलित दिखायो। तिप ब्रह्मा मनि महि विस्मायो ॥
हे कौलापति त्रिभुवन राया। जोइ जसु सभ तुम्है बनाया ॥
हरिनकस्यप नहीं[2] ले कर गया। ताते लोम प्रगट सभि भया ॥
जब ब्रह्म इहि मनि महि माना। साईंदास मुंग्र मनु माना २२

कीया चीचारु कसे करि होय। किस विधि ब्रह्मा निर्भो सोय ॥
करि बीचारु यहां ठदु धाय्या। सूकररूप होइ सरु साध्यो ॥
प्रगट भए प्रभ सूकर रूपा। ब्रह्म नासका बदनि सरूपा ॥

वाराह-अवतार

साहनिकसि शाइरूप प्रभ तास मात सोल्हा वती।
विजराज गुद येग्र डुगर पुर हर्नाक्स क्षय भावती ॥

ताह निवम सिंध महि परया। अति विस्थार पून प्रभ करया ॥
हरिनकस्यप जिहि देख भयाना। पूर्न प्रभ करि हृदे पछाना ॥
येह रूप अनिभुत रिग भाव। अति अनूप कछ रूप दिखावे ॥
पति दोप जिहि रूप दिखाना। कौलापति पूर्न भगवाना ॥
दरसन उन्मति यन न गारा। किस विधि उन्मति दर्सनि भारा ॥
नाहि लगि मनि महि भो भाव। किस विधि तारो वर्नि न पाव ॥
मंगराज पूर्न प्रभ स्वामी। माय मना हर घ तर जामा ॥
कहा रूप काऊ तार बखाने। किस विधि वाको का गति जाने ॥
मद घना गग गव ममान। भ छिन भार परा तन धारा ॥

---

1 सिंध<सिंधु=समुद्र।
2 'नहीं' यहां 'नहीं' होना चाहिए।

मक्ति हेत सूकर बपु धरिया । मक्ति हेत इहि कारण करिया ॥
मघि मघि रूप तिहि कीनों । असुर सिंहार मतिनि सुष दीनों
तिहि प्रयोग सूकर बपु पायो । जहां जहां भीर तहूं आयो ॥
सदा सदा हरि को जसु गाम्य । साईदास काहे असिसाम्यै २१

हूंनिकस्यपु आ सिद्ध महि गह्यो । इहि प्रयोग सूकर बपु सह्यो ॥
मही ले त दसनि परि राषी । सिद्ध त्याग दी ई बिधि भाषी ॥
मानो षडु त्रिणु लीयो उठाई । सबसी प्रिथवी मेरे भाई ॥
त्रिन को मार असिहू अति होई । यांके भार न लागो कोई ॥
हूंनिकस्यपु तब युद्ध को धायो । दास्य ले सन्मुष हर आयो ॥
अति बिराधु असुर तब कीनो । कौलापति पगु बाहिर दीनों ॥
धाइ तोर्म परि मही बिडाई । जैसे प्रिथम सी ठहिराई ॥
ताहू छाडि प्रभ सन्मुख होए । युद्ध कीतो हर असुरन पोए ॥
असुर युद्ध हरि सो युद्ध कीनों ॥
बर्ष सहस्र बप युद्ध करायो । अत भागि प्रभि मार चुकायो ॥
तब ही मार बकुठ पठाया । बेग बिलम प्रभ मूल न लायो ॥
इहि प्रयोग सूकर बपु धर्‌यो । सुम्र त्याग इहि काणु कर्‌यो ॥
सारी गति मिति लषी नि जाई । बहु प्रभ रचा सबि समाई ॥
करा भक्ति हितु अपना भा । साईदास प्रभ सदा सहाइ २४

असुर मार बकंठ सिधाए । जहां जहां भीर परी तहां आए ॥
मगन को प्रभ एसो राषे । जैसे रसना मुष मैं भाषे ॥
भक्ति जना के कार्ज करे । सन हेत करि हर बपु धरे ॥
एक ही द्रिष्ट सब कर जानों । सूकर घोरा धक इक माना ॥
सब धान को एक पछामा । निर्धन धनवत एक बषानों ॥
ना काऊ निर्धन ना धनवता । ना कोवे पति ना पतिवंता ॥
ना कोऊ उत्पति सुष न कोई । धाम धनतर है प्रभु सोई ॥
जा रूपो सा हर करि मानो । जो देषो सा सम कर जानो ॥
सकल बिस्थार साह का भाई । जा पछ द्रिग महि देइ दिषाई ॥
साम प्रमेव प्रभम बिस्थारा । कहा कर कोऊ ताहि बीचारा ॥
सूकर रूप जब प्रभ मैं कीया । साईदास हरि असत्रुति कीया २५

जिहि प्रयोग नृसिंह वपु धार्यो। हरिनाकस नष उदर विदार्यो ॥
एक एक करि आप सुणावों। बेग बिल्म कछू मूल न लावों ॥
हम श्रवण धरे तिहु प्रभ मेर। कहा कहे हमि आम तेरे ॥
अबर स्याम करीय एहु प्याप्ता। ज्यु तिनि करै छवि परिभाषा ॥
सकल त्रितातु महु मेरे भाई। साँईदास सुमहो सिव माई २७

हनिकस्यप बलि मार भुकाया। तिहि सुत दारा रदमु कराया ॥
हरिनाकस सांकउ यु कह्यो। मारो ताहि प्रतज्ञा लह्यो ॥
जिन मेर भ्रात को माइ सिंहार्यो। करि करोध ताको परिहार्यो ॥
ताहू मार पाछे कछू करहो। नाही तिस पाछे मैं मरिहो ॥
एहु बात करि कर गृह आया। सकल सैन कौं तब ही बुलाया ॥
तिहि कह्यो सुनहो मेरे भाई। बरदाता सुर दह बताई ॥
ताहि सेवा से मस्तक धरिहौं। ठौर बात कछ नाहीं करहौं ॥
सकल सैना मिथि एह बताई। ब्रह्मा बर दाता मेरे भाई ॥
तिहि कह्यो ब्रह्मा कहा रहई। आसम सेती अहा वहु कहई ॥
कवन भवन तुमि ताहि बताबो। बेग बिल्म तुम मूल नि लावों ॥
अस्थावर महि ताको वासा। नामु सुमेरु ताहि परिकासा ॥
मनि ते सुणि आयो महू माही। सिसि समे चितवन लागो ताही ॥
वासुर होवें भक्ति को आंवउ। ब्रह्म अस्थ जाइ भक्ति कमावउं ॥
इहि बीचार हूऐ अतर लीनों। तब ही दारा का सग कीनों ॥
रितवती दारा सी तांकी। चितवन पूर्न भई है बांकी ॥
भक्तिम बास ताहि गर्भ लीनो। हरिनाकसि चितु भक्ती कीनों ॥
प्राति भयो हरिनाकसु भया। ब्रह्म भक्ति सेती चितु गह्या ॥
सकल त्याग मार्ग तब लीना। ब्याप्तु ब्रह्म का असुर मनि कीमो ॥
जहा ब्रह्म मे अस्तमु थाया। धूंवति बूढति तहां ही आया ॥
अस्थित को प्रदक्षिणा दीनी। अति बडौत ताहि कौ कीनी ॥
हरिनाकस कीयो इहि कामा। साँईदास प्रभ पूर्न रामा २८

सुरपति सुनी बाति मनि माही। हरिनाकसु गृहि माहे नाही ॥
केहरि केतकि सग मे आया। आइ नय को घेरा पाया ॥
असुर मार कर पर्सो कीन। जो आये तिम ने सगि लीने ॥

सृटि नगरि सुरपति अधिकाई। ताकी बात कहा परताई॥
दारा हरिनाकस की लीने। सुरपति भगि अपने पग दीने॥
प्राण भार्या अहि महि राखी। ताको अवर नाह कछ आपी॥
छिन तबि ही नारद चलि आयो। सुरपति को सब आपि सुणायो॥
हे सुरपति त भलो न कीना। एह विरोध जा तैने कीना॥
हरिनाकसि की दारा ल्याया। बिन् प्रयोग विरोध उठाया॥
तब सुरपति नै बचन उचारे। सुन नाद गुरुदेव हमारे॥
इहि प्रयोग दारा मै आनी। मन महि इहि बिधि जान पछानी
इहि गर्भु बाहरि आव मारों। इसि क गर्भि को मै प्रहारो॥
असुरो बीज धर्नि से पोखो। तब पाछे मै निरभल सोओ॥
और प्रयोग कछु नाहि हमारा। तुम पहि इहि बिधि कहो पुकारा
बहुरो नाद बात चलाई। सुण हो सुरपति मेरे भाई॥
इहि बनिता तुमि हमि को देवहु। मेरो कह्यो मन महि धरि लेवहु
जिह समे इह गर्भु बाहरि आई। मै तुझे आण दिखालो भाई॥
जब नार्द इहि बात बखानी। साईदास सुरपति मन मानी २६

सुरपति दीई नार्दु से आया। अपुने पह में आण ठहिराया॥
तब उनि बनता बेनती करी। हे नार्द तुम पूरन हरी॥
हमिरी बेनती सुण करि लीजै। किर्पा करि इह हमि कों दीज॥
नार्द कहा ऐसो ई होई। जो तै कह्यो होवे फुन सोई॥
जब लगि मै मुच नाहु बखाना। हुवे अंतरि एह बात नि मानो॥
मोह गर्भु बाहर ना आवै। जब लगि मरे मन ना भावै॥
नार्द कह्यो ऐसो ही होई। जो तै कह्यो होवे फुन सोई॥
पाछे नार्द ने क्या कीया। ताहि प्रबोधिमि कों सिसु दीया॥
कह्यो गोविंद अवर ना जानो। अवर बात कछु हुवे नि मानो॥
कहि तो असुर कहा उह जाने। जो नादु कहे सो कहा पछाने॥
ताके गर्भि महि भक्ति निवासा। जाकी गोविंद परि ही आसा॥
ओह मुना उसिच तार देवे। साईदास उह हुवे धरि मवे ४०

हरिनाकस भसी सिसु लाया। ऊभनि भुजा करि जतनु कराया
सहस बर्ष जब बीते भाई। कठनु महा तब असुर कमाई॥

जिहि प्रयोग नृसिंह बपु धार्यो। हरिनाकस नष उदर बिदार्यो॥
एक एक करि धाप सुणावौं। बेग बिलम कछु मूल न लावौं॥
हम श्रवण धरे सिह प्रम मेरे। कहा कहै हमि ग्रागे तेरे॥
प्रबर त्याग करीये एह प्यासा। ज्यु तिनि करें छबि परिभासा॥
सकल दिखाउ मेह मेरे भाई। साईदास सुनहो सिव साई २०

हरिनकस्यप प्रवि भार धुकाया। तिहि सुत दारा रुन्नु कराया॥
हरिनाकस तांकउ यु काह्यो। मारो ताहि प्रलभा माह्यो॥
जिमभरे भ्रात को भ्राइसिहार्यो। करि करोध तांको परिहार्यो॥
ताह मार पाछे कछु कन्हो। नाही तिस पाछे मैं मरिहो॥
एह बात करि कर ग्रह प्राया। सकल सैन को सब ही बुलाया॥
जिहि कह्यो सुनहो मेरे भाई। बरदाता सुर देह बताई॥
ताहि सेवा ले मस्तक धरिहौं। ग्रौर बात कछु नाही करहौं॥
सकल सैना बिधि एह बताई। ब्रह्मा बर दाता मेरे भाई॥
तिहि कह्यो ब्रह्मा कहा रहई। भाग्रम सेती जहा बहु बहई॥
कवन भवन तमि ताहि बतावो। वेग बिलम तुम मूल नि लावों॥
ग्रस्थावर महि तांको वासा। मामु सुमेरु ताहि परिकासा॥
गमि ते सुणि ग्रायो ग्रह माही। निसि समे चितवन लायो ताही॥
वासुर होवे भक्ति को ज्वांवउ। ब्रह्म ग्रस्थ जाइ भक्ति कमावउ॥
इहि बीचार हृदे मतर सीनों। तव ही दारा का सग कीनों॥
रितवती दारा सी तांकी। चितवन पूर्न भई है बांकी॥
भक्तिन वास ताहि गर्भ सीनों। हरिनाकसि चितु भक्ती कीनों॥
प्राति भयो हरिनाकसु गया। ब्रह्मा भक्ति सेती चितु गह्या॥
सकल त्याग मार्ग तब लीनों। ध्यानु ब्रह्म का ग्रसुर ममि कीनो॥
जहा ब्रह्म ने ग्रस्तमु छाया। ढूंढति ढूंढति तहां ही ग्राया॥
ग्रस्थिल को प्रदक्षिणा वीनी। ग्रति डंडौत ताहि को कीनी॥
हरिनाकस कीयो इहि कामा। साईदास प्रम पूर्न रामा २८

सुरपति सुनी बाति ममि माही। हरिनाकसु ग्रहि माहे नाही॥
केहरि केतनि संग ले ग्राया। ग्राइ मन्न को घेरा पाया॥
ग्रसुर मार कर पर्मो कीने। जो माये तिन ने मथि लीने॥

लूटि नगरि सुरपति अधिकाई। तांकी वात कहा परताई ॥
दारा हरिनाकस की लीने। सुरपति मगि अपने पग दीने ॥
माग मार्गा मधि महि रायी। तांको अवर माह कछु मापी ॥
छिन तवि ही नार्द धसि मायो। सुरपति को तव मापि सुणायो ॥
हे सुरपति ते भलो न कीना। एह विरोध जो तैन कीना ॥
हरिनाकसि की दारा ल्याया। बिन प्रयोग विरोध उठाया ॥
तव सुरपति ने वचन उचारे। सुन नाद गुरुदेव हमारे ॥
इहि प्रयोग दारा म मानी। मन महि इहि विधि आन पछानी
इहि गर्भु बाहरि आवे मारों। इसि के गभि को मैं प्रहारो ॥
असुरो बीज धर्मि से पोवो। तव पाछे मैं निश्चल सोवों ॥
और प्रयोग कछू नाहि हमारा। तुम पहि इहि विधि कहो पुकारा
बहुरो नार्द बात बसाई। सुण हो सुरपति मेरे भाई ॥
इहि वनिता तुमि हमि को देवहु। मेरो कह्यो मन महि धरि लेवहु
जिह समे इह गभु बाहरि आई। मैं तुम्हे माण दिपालो भाई ॥
अब नार्द इहि बात बपानी। साईदास सुरपति मन मानी ३९

सुरपति दीई नार्द ले आया। अपुने ग्रह में आइ ठहिराया ॥
तब उनि वनता वेनती करी। हे नार्द तुम पूरन हरी ॥
हमिरी वेनती सुण करि लीजै। किर्पा करि इह हमि का दीजै ॥
नाद कहा मैसो ई होई। जो तैं कह्यो होवे फुन सोई ॥
अब लगि म मुप माह बपानो। हुवे अंतरि एह बात नि मानो ॥
मोह गर्भु बाहर ना आवै। जब लगि मेरे मन ना भावै ॥
मार्द कह्यो मैसो ही होई। जो तैं कह्यो होवे फुन सोई ॥
पाछे नार्द ने क्या कीमा। ताहि प्रबोधिमि कों चितु दीमा ॥
भजो गोबिंद अवर ना जानो। अवर बात कछु हुदे नि आनो ॥
महि तो असुर कहा उह जाने। जो मादु कहे सो कहा पछानें ॥
तांके गभि महि भक्ति निवासा। जांकी गोविंद परि ही आसा ॥
जाइ सुनो उसिउ तार देव। साईदास उह हुदे धरि लेवे ४०

हरिनाकस भक्ती चितु लाया। ऊभनि भुजा करि जतनु कराया
सहस्र वर्ष जब बीते भाई। कष्टु महा तब असुर कमाई ॥

कंपमान श्रैलोकी होई। ब्रह्म कह्यो कहु भ्रातम सोई॥
जो कुछ मागे इसि को देहो। सुप्रसन्न प्रभ इसे करेहो॥
भ्रधिक भजन इनि ने हो कीम्रा। तोहु भजनु मन महि करि लीम्रा
हमि तो कंपमान सभि होए। इहि प्रयोग निश्चल ना सोए॥
क्या जानो इहि क्या किछु करिही। कहा बीचारु मनि भ्रंतर धरही॥
जो सभ सुर ने इहि बिधि ठानी। साँईदास ब्रह्म मनि मानी ४१

ब्रह्मा प्रगटि भयो तब भ्राया। तब मुखि ते येहि वचन सुणाया॥
मागो कछु काहि तुम पाहो। मैं देवो जो कछु तुमि चाहों॥
हरिनाकस तब बिनती ठांनी। हे पूर्न प्रभ ब्रह्म ज्ञानी॥
भ्रमर होवा मैं बिनसा नही। छुरी कटारी तीरी पाई॥
तीरी सुपने हमि नासे। कंपोई जोत जग को जासे॥
निसिबासर भ्रतरि भ्ररु बाहरि। ना मैं गुप्त मरा ना बाहर॥
तिरीभ्रा पुरुष भी ना मैं मरहों। एहि बिनती मैं तुमि पै करहों॥
ब्रह्म तबि इहि सुणो बपाना। बीम्रा मैं जो तैं हृदे भ्राना॥
जा तैं मांगा दिता साँई। भ्रबि जाबो भ्रपुने ग्रह मांही॥
काहे को तूं बहु दुख पाहो॥
ब्रह्मो हरिनाकस को बर दीना। हरिनाकस दृढ़ मति कर लीना॥
भ्रबि मोहु सम्रसर भ्रवर न कोई। जिन भ्रभिमानु कीउो मुयो सोई॥
तब ही मार्गु भ्रहि को लीनो। इहि बिचार मनि भ्रंतर कीनो॥
इहि बर ब्रह्म हमि को दीनां। जग भीतरि हमि को थिरु कीनां॥
तब भ्रायो भ्रपुने भ्रहि मांही। हरिनाकसु भ्रति मनि सुख पांही॥
ताकें भ्रहि भ्रनदु बहु होया। साँईदास सकल दुख खोया ४२

बधू सकल तब ही मिल भ्राए। भ्रति भ्रनंद मगन गुण गाए॥
जोतकी पंडित सकल सभ्गाए। तासो इहि बिधि भ्रापि सुणाए॥
भलो समा मोहु देहु बताई। जित समे बहो सिंहासन जाई॥
जोतकी पंडित एसे भ्रापी। ब्रह्म महूर्त साइत भ्रापी॥
जब हरिनाकसु भ्रहि महि भ्राया। नाव तिहि बनिता से भ्रामा॥
ब्रह्म महूरत दीयो बताई। तव तुमि बहा सिंघासन भ्राई॥
मन बीचार भ्रहि भ्रंतर भ्राया। महा बली तिसि बलु भ्रधिकामा॥

निस मोती बासुर सच होया। हरिनाकसि सभु बसा पोया॥
सिंघासन परि आइ पगु धरिआ। हुकुमु बसुदिशा परि उनि करिआ
बसुदिसा परि हुकुमु मनाया। है हरिनाकसु आइ नि आमा॥
अन हरिनाकसु यस हरनाक्सु। है हरिनाकसु होइ हरनाकसु॥
सकल जगत मनि जु हुकुमु सवाया।
साईदास तिह प्रभिक वसु बिन भजनु कमाया॥ ४३॥

अन्त की बात मै आया भवि या पुर की आया।
जो कछु हुकुमु इस परि कीमा सोई मुए मावो॥
वसुधा को तत्काल ही तिन लीतो बुलाई।
सम धनु हमिरी अमानतु कछु म लाई॥
भवि ही पकड़ो पकड़ि करि सुम्हे दीयो बहाई।
समि ही जस ऐतकी देखो दिपाई॥
तब अपमान पृथवी भई मेरा क्या चारा।
तूं बलवतु महाबली जगका रखिवारा॥
जो भाव सो तूं कर मै सर्नी तेरी।
जसे जानो रापहो हुबसे बेरी॥
मोह् अवज्ञा ना करी मुभरा तेरा कीआ।
जो सुनआ तेरा ही नामु सो मैं भी लीआ॥
जब बेनती एती सुनी सुप्रसन्न होए।
मेरी आज्ञा मान के निरभौ हो सोए॥
समे समे का फलु हरिआ करकें तूं राखे।
जिह समे मैं तुझ कों कहाँ भाख आगे राखे॥
प्रगट मगो तब प्रगट मोह तू भाख करि देवे।
मेरी आज्ञा मान करि मस्तकि धरि लेवे॥
जा कछु मैं तुमि ते मगो सोई तू धार्में।
जो कछु तुमि ते उपजे सो सत्य कर मार्नें॥
वसु लीतो मान के हरनाकस[1] कहा।
साईदास सदा सदा प्रभ सो रचि रहा ४४

---

१ यहां स के स्थान पर ना चाहिए।

एहु बाति तुम को कही प्रियमें समिझाई।
तू एहि बिधि को समझि देपु आपने मनि माही ॥
बसुधा बात बीचारीआ श्रवि जस की आर्यो।
जो जस कों आग्या करी सोई सुप मार्ये।
जस को सीहो बोलाइके ऐस तिस कह्यो।
बपु माही आप तूं पल्ह रेहु रह्यो।
अस्थावर सम पोद के हारो तेरे माही।
सम बसुधा मैं कर लेहो जानसि तू नाही।
मैं तेरे वर कृपा करि निकट बुलाए।
जो तूं कहे सो मानहों और कछु न करहों।
जो तेरी आग्या होवै सो मस्तिकि धर हों।
जस को एही आग्या करी भ्रित तेस बहाई।
पर्वा मोह सुप पावही दुप मूल न पाई।
जसु इहि बिधि सम मान के अपने ग्रह आया।
भ्रित तेस परिवाह कर उनि तबही वहाया।
सकल जगत् तिह वसि कीआ जस हुकुम मनाया
सोईदास जिन हरि भज्यो तिम बहु सुपु पाया।४२।

जस की बात बताईआ जंगम बपाना।
सुनहो साधो आप हों परिहो तुम काना।
जंगम सीए बोलाइ करि तिह आप सुणाया।
र जबो कवन बात तुम मे चितु आया।
अथि ही मूल उपारि करि तुम को कटि डारो।
मूल साप तुमरी समो अब ही उपारो।
तब जगम बेनती करी हु मर बसवाना।
चित प्रयाग मोषु तै मनि अंतर आना।
जो तैंने आग्या करी सो मस्तिक धरहों।
और बान कछू हमि हुदे धरहों ?

१ यहाँ न लगाना चाहिए अथवा प्रश्नवाचक चिह्न तभी अर्थ स्पष्ट होता है।

तब हरिनाकस म्यु कह्यो सुनहो मेरे भाई।
तुम सुप सेती बस्यहो भपने ग्रह जाई।
जो सुमि ते उत्पत्य हो मेवा सो राषो।
रषिक मेरे हुकुमु विनु सुम नाही चाषो।
जो मांगो सो आए देहो तुम मेरे पांही।
ओर बाति कछु हुदे महि तुमा माने नाही।
भगम भी बिधि जाए के भपने ग्रह भाए।
भायो भपुनी ठौर जाइ भासम उनि लाए।
समि कोहु हुकुम मनाइया तिहु बमु भभिकाए।
सांईदास जो हरि भज बहुता सुप पाए।४६॥

हरिनाकस की भामने सुप बात बषानी।
राम रषि भाहुर भावहो सुनहो मनिमानी।
तब गर्भि महि जो जीउ था सो बाहिर भाया।
गर्भि तजि बाहरि भायो भानंदु सवाया।
ताहि रूप सुदर भति भभिकारे।
ससि भरु भान छपि गए जबि किनि उचारे।
जोतकी पोथे सदि के तब नामु रखाया।
भक्ति प्रहलादु नामु है विधि भानि कर लाया।
विप समि हो स्तदिके तिहु भोजनु दीना।
कहू सुणायो भाइ करि दानु बहु कीना।
बमु समि मिल भाए समि देहु बधाई।
कुंगू केसर माता कहे भस भयो सहाई।
माता गोदी पाइ करि तब छीर पीआया।
भपुने देव मनाइ करि माथे तिलकु लगाया।
पट्ट साल जबि बरस का प्रहिलाद जी होया।
भक्ति भकव मस्तकि लिख्यो निरभो हो सोया।
निसबासर ओहु कृष्न कृष्न मनि भपुने भार्पे।
भक्ति भाउ भाधीमता मनि भतरि रार्पे।

सबमर्के[1] पाडसास वा पढिने पाया।
अमि हरिनाकसु यसि मी इहि जाइ न जाया।
पटीमा सडे सिप्य करि प्रहिसादे को दीनी।
प्रहिसाद भक्ति पटीमा सई के करि सीनी।
पटीमा माहे इही बात उनि बेग सिपाया।
जस हरिनाकसु होइसी ना जाइ न जामा।
प्रहुसाद भक्ति पटीमा सई सागा तिह भापण।
मघर राम रखाइणी सगो मघर रापण।
जब उह पटीमा मैन निहारी।
उौर सिप्यौ कछु उमि हंकारी।
जमि ते तिस से पटीमा भो डारी।
पून भक्ति को ब्रह्म बिचारी।
हरिमाकस माम दूर कीना।
कृप्न कृप्न नामु लिस सीना।
जब सबेगो नेत्र मिहार।
सागो पकिडिन नैन पसारे।
मैं कछु उौर सिप्यो इहा उरें।
इनि कछु माप लिप लीनो पौरे[2]।
सड पटीमा पधि सई सकरि उनि छोई।
जो कछ प्रिथमे सिप्यो सिप्या फुनि सोई।
तब रसना सो य्युं कहो ऐसें जपि लीजे।
जस पम हरिनाकसु हय कछु मधर न कीजे।
प्रहिसादि भक्ति पटीमा सई से पढिने सागा।
है भी कृप्न ही होवसी जसु प्रतिभुत बाका।
बहुरो से करि धायो हरिनाकस मामा।
मतरि मपुने रापयो प्रभ पूर्न रामा।

---

१ सडेमर्के मा सडे पत्र गुरु पत्ता पियक के लिए माया है। सबमत मूल पाठ 'सरीमनि' हो।

२ पौरे=बालक।

पटीआ परि फिर लिप्यो जो कृष्न सहाई।
तिस कौ किस का त्रासु है जो तिस जपु लाई।
सड पटीआ फरि करि पसि लीनो ताही।
मैं तुझे कहा पढावहो तू कहा पढाही।
सडे पटीआ स करि बहुरो उनि धोई।
जो कछु प्रिथम लिखया फुनि लिपयो सोई।
बहुरो धोई प्रहलाद को तूं एही पढिहों।
और काहू का नामु तू मन अतर ना धरहो।
बेग प्रहलाद पटीआ लई अखर उनि दपया।
कहा करे गवार एहि कछु द्रिग ना दपया।
पटीआ बहुरो धोइ करि फिरि लिपयो नामा।
कृष्न सहाई भक्ति को पूर्न प्रभ रामा।
सडे मीता सदिके प्रहिलादे ताई।
और काहू को न जपो हरिनाकसु सांई।
प्रहिलाद भक्ति प्रगटि कह्यो मैं कृष्न पछान्यों।
हरिनाकसु कहु कवन है तिस को उरि आनों।
सडे करि धावकु लीयो मारन तब लागा।
अनेक जतन उहु करि रह्यो उनि कृष्न न त्यागा
सड कह्यो क्या करो येहि समझै नाही।
मति जाइ माधा भूप को एमो मति माही।
अपमे जेहा करि थका इहु कह्या न माने।
क्रोध मान संडा भयो मनि क्रोध मनि मान।
तब ही जाइ पुकारया हरिनाकस पासे।
तेरा नामु म सिमर ही ना मनि कर त्रासे।
पटीआ लिप्य मैं दई मे करि उह धोय।
कृष्न कृष्न तिह लिप्या तग नामु म पोव।
गल मेरा जपि ना जपे होर कवु करि माने।
गभि ही त्यागहि नाम मोह थाना तू जाने।

जितना कितना करि रह्या माने नही कह्या।
मेरे मनि विष एसि तें मोह ही वह्या।
मै सँमू हुए आप ही सुण मेरे भाई।
साँईदास पुकारया जो सी वो पाई।४७।।

हरिनाकस जब इह सुन्यां सडे दे पासा।
प्रहिलाद[1] कीयो बुलाइ करि सुतु करे विनासा।
तब प्रहिलाद को ग्यु कह्यो जपु मेरा नामा।
और बाति सभ छाडि करि करिहो इह कामा।
किस की करे विरोध तू सुण मेरे बाल।
मैं विसु और न कोई दुसरे रषिपाल।
प्रहिलाद भक्ति उत्तर दीयो सुणहो पिता मेरे।
क्रिष्न सहाई मोह है जाके सभ चेरे।
उसेवके आपु सू होरु कित मैं लागा।
जो सुषदाई आद अंत तिस को क्यूं त्यागा।
और नामु सिमरो नही क्रिष्न क्रिष्न पछाना।
बिना नाम मै क्रिष्न के अवर नही जाना।
जबि हरिनाकस ग्यु सुर्यो प्रहिलादि इउ बोल
अति क्रोध मनि होयो अग्नी परि डोले।
तब भुपि ते इउ कहिया आ करि मिरिवाबो।
रषिक रषिक इसि करो करि मार चुकावो।
हरिनाकस इउ आपया सं करयै ताही।
मानो बधिक उसीकिदे फडि सीना ताही।
प्रहिलाद भक्ति को लै गए आं करि चढिवाया।
अस्थावर परि चाड के फिरि तसे बहाया।
क्रिपाण क्रिष्ण भुप ऊबरे सभ जन्त हकारी।
तांको भौ व्यापे नही जो सरनि मुरारी।
प्रहिलादि भक्ति को दुष नहीं लागा।
साईंदास जो हरि भजे तिह सभ दुष भागा।४८।।

---

१ यहां 'उसे बडके' शब्द चाहिए "स" छूट गया है।

सबे जवि इह देष्या प्रहिलादु न मूआ।
पूर्न ब्रह्म गोपाल को अमर इह हुआ।
फिरि ले आयो भक्ति को हरिनाकस पासे।
गिर ते गिराया ना मुआ अति विगसे हासे।
तब हरिनाकस म्यु कह्यो दावा सो आरो।
जैसे आनो तसे ही तुम इसि प्रहारो।
सबे ओझे[1] भक्ति को दावा महि डारा।
दावा भक्ति अंगु ना दहे गोविंदु रषिवारा।
दावा जल बलि बुझि गई प्रहिलाद न मूया।
भक्ति गोविंद की मनि धरी अमर वह हुआ।
मानो सिहजा पुहप परि पगु जन ने दीना।
महा अनदु हुवे महि वाहू ने कीना।
हरिनाकस जब देष्यो इह नाही मरही।
अतर अपना सोचि करि वीचार जु करही।
काली लोह की घडी कूप महि खडि पावो।
तिसि महि इसि को डारि के तुम मार चुकावो।
काठी लोहेकी घडी कूप महि गहि पाई।
प्रहिलादि भक्ति को कूप महि फिर जाइ गिराई।
डार कूप महि भक्ति को वह उठि घरि आए।
तहा पामनलासा जब दीआ पींवदर लाए।
वहा भक्ति ने सुप कियो दुप कोई न लागो।
जो कछु भी सा तिस समे अंतर तें भागो।
निसि बाती भ्यसु भया हरिनाकस कह्या।
जाहो देषो तिस की क्या गति रह्या।
सडामर्का जाइ करि जब देषण लागे।
पासनि महि आनंद माहि झूलेवने पागे।
सबे मर के जाइ कहा पासनि महि झूलै।
ताको दुख न आग ही कैसे करि डोल।

---

१ ओझा > उपाध्याय—धिक्षक गुरु (पंजाबी में पांधा)।

हरिनाक्स तब य्यूं कह्यो उसि को ले मावौ।
मैं उसि कौं कछु पूछहौं तुम बिसम न लावौ।
संडामर्का आइ करि प्रहिलादु ले आमा।
भक्ति हेत भगवान जी सम रूप दिखाया।
हरिनाक्स बहु जतन कराए।
कुंजर वस करि अधिक बुलाए।
भक्ति को बांधि गजि आगे डारा।
मदि मात गज प्रति अमु मारा।
निधित भक्तु गज पाछे भागो।
प्रहिलाद भक्ति के निकट आयो।
गज सार्थी अकस तिस मारे।
गज आगे पग भूमि न औरे।
बहुरो राकस ने क्या कीमा।
ऊर्दै मत्त चित महि ह सीमा।
भक्ति कौ बांधि बसुधर उमीए
महा त्रासु रापस दिखलाए।
वसुधर भक्ति के निकट नि आवहि।
दर्सनु करि पाछे कौ भावहि।
भक्ति गुण ताहि विसहि मेरे भाई।
राकस बेप समिझि ना पाई।
बहुरो भक्ति को उर महि लीना।
वहुनु धूम धूप ले बनु कीना।
है सुत जप लेहु मेरो नामा।
तौर सौं तेरो न कछ कामा।
मम करि कुचरि तोह म मार्‍या।
मनि महि दर्प पाछे पगु धार्‍यो।
मनि मैं कह्यो को मैं इसि मार्‍यो।
अपने प्रान बेग ही जारो।
हरिनाकसु मोकौ प्रहारे।
मृत बियोग करि मो कौ मारे।

वसुधर भी ऐसे हुदे मानी
प्रिथ्वी निश्च करि इहि जानी।
एह जो तुझ को माह डुबायो।
मम हरि करि के मुझे बचायो।
दावा तुझ को जार्यो नाही।
मम हरि से डर्पे मन माही।
मत तू कहै जो कृष्न छुडायो।
हमिरी रक्षा की तां गायो।
मोह नामु हुदे धरि लीजे।
ए सुत और कामु ना कीजे।
भक्ति सुणी अबि इहि विधि काना।
तब ही मुप ते बचनु बपाना।
रे पत कहा तू रछि करावे।
तुमरो बसु कहु कहा बमाव।
रछ्या मोह करति भगवाना।
त हुदे कहा कीयो अभिमाना।
तजि अभिमान सरनि हरि आवो।
अपुने मनि का भ्रांत चुकावो।
कहा तूं भूल पर्यो मनि माही।
तुमरे मन कछु आवै महा।
जिन अभिमानु कीयो सो मूयो।
ताको नामु तात छिरए हूयो।
काहे को तू भमि भुलावै।
राम नामि काहे नही भाव।
बिन हरि नाम थिर नाह न कोई।
जुगा जुगतर थिर प्रभ है सोई।
भमी भक्ति नै बात उचारी।
गोईदास जन को बपु भारी॥४९॥

हरिनाकस जब य्यूं सुन्यो बहु क्रोधु करायो।
अति क्रोधु मनि महि भयो लोचन ललायो।
राकस मे तब भया कीमा।
भक्ति को थम्ह सहित बधि लीमा।
तब ही भक्ति सो बचनु उचारा।
कहा कृष्ण तोह रापनहारा।
अवि तुमरी आइ करे सहाई।
सो प्रभु मोकों देह बताई।
भक्ति कह्यो प्रभु मो महि तो महि।
सकल जगति महि महो इसु थर थंम्ह महि।
थम्हे मामु अवि मति उचारा।
तब ही उनि ते भयो टकारा।
नारसिंह को वपु प्रभु कीमा।
थम्ह मो तब पगु दीना।

नृसिंह-अवतार

चंद्रावती देवी है मात।
बहु ऋषि तांको है तात।
हिवगुरू गबु मुलतान।

हरिनाकस तब ही उठि भागा।
काम सकल देप पिस के पागा।
नर हरि पकिड़यो राकस ताई।
रात दिवस महि को समा नाही।
सन्ध्या परी रवि अंतर बाहर।
द्वार मध्य पकर्‌यो श्रीनरहर।
भर्‌यो अम परि उदर विडारा।
नर नप सों श्री प्रान प्रजारा।
पप्रबि बघु पूर्न करि लीमा।
धस्त्रो अा कोऊ भाउ न दीमा।

कर पसो जोर करि रंगायो।
तांकी सोभा अधिक बतायो।
मानो मीवि फलि देत दिपाई।
अनि ताहू सलसा हरि जाई।
अति सोभा ताहू बनि आई।
तांकी सोभा कही न जाई।
फोसि भातिरी उौर नयावत।
राकसि मातिरी सकल फुरावत।
भक्ति प्रहिलाद प्रस्नु तब कीघा।
हे प्रभ कवन धर्म इनि सीमा।
भतर फोरे जो निर्पावो।
एह किर्पा कर हमिह बतावो।
नरहर प्रभु बीनो जनि साई।
सुनहो भक्ति सुम हितु बिनु साई।
एहि प्रयोग भतरी फोर डारो।
तोह सार्पा कोई भक्ति निहारो।
मनु कोई प्रवल होब इम मांही।
इह उपजी घट उौर कछु माही।
इहि कहि भक्ति को मान बधायो।
अपने जम को भ्रांन चुकायो।
अमरो मे कीमो जै जै कारा।
ज पै नरहर रूप उधारा।
कुसम् वर्षा अमरो आई।
नारसिंह हरि सदा सहाई।
गावो नाम मन्न बिस पारो।
गाईनाम हरि साह बिगारो॥ ५०।
हरिनारस जब मुक्ति मिपायो।
प्रहिलाद भक्ति इहि हृद बसायो।

क्रियाकर्मि करने चितु धारा।
ब्रह्म भोजन कीनो ततिकारा।

बेर मृजाद भक्ति सभ कीमा।
पिता आन इहि मनि धरि सीमा।

धेन प्रथिम विपो कों दीनी।
हाथ जोर कर विनती कीनी।

भक्ति को विपो तिलकु लगाया।
असीर वचनु मुखि ते उचिराया।

नरहरि तब ही वचन उचारे।
सुण प्रहिलाद तूं भक्ति हमारे।

भयो हो क्रपाल मांगु कछ मनहु।
मम महि सका कछु न करहु।

जो तुम मांगों देवो सोई।
और बात न करो न कोई।

भक्ति हाथ जोरे उचिरायो।
हे प्रभ करुणा आन करायो।

भक्ति सदा तुमरी मैं पावों।
नाम जपों अवना प्रभिलावों।

करुणा करि ये ही मोह दीजै।
बिक्षा स्यो जनि को मन सीजै।

तुमरो नाम बसै मनि माही।
और बात कछ जाचो नाही।

नरहरि प्रभ प्रहिलाद सुनाया।
मोहि भक्ति तुम हृदे बसायो।

भक्ति सदा होवै तुम पाही।
अवर मागु कछ मुखचो नाही।

फिरि भक्ति मे बिनती ठानी।
तुमरी गति प्रभु मैं ना जानी।

मम परि किपा करो अधिकाई।
ताकी बिधि कछ कही न जाई।

जो कृपाल भए प्रभ मेरे।
तौ बिनती करो भाग तेरे।
जगत दुखी तिस मुक्ति पठावो।
बेग बिलम हर मूल नि लावो।
जब प्रहिलाद येह बचनु उचारा।
नर हर मन कीनो बीचारा।
भक्ति कउन बरु जाचनु कीना।
पीर अधिक भयो तिहि लीनो।
जो न करौ बच भक्ति पुराइण।
मामु भक्ति होवे किह नराइण।
भक्ति बचन प्रतिपाल करेवों।
मानु भगतिहि कनि म देवों।
बहुरा भक्ति स्युं बचनु उचारा।
सुणु हो भक्ति तुम बचन हमारा।
जगत दुखी जो मे तुम भाखो।
मोसो कोई भाण दिखावो।
ताका म बैकुठ पठावो।
बेग बिलम छिन मूल न लावो।
भक्तु सुनत हर बचन उठि धाया।
तजि ग्रहि अपुनो बाहरि आयो।
भइया पडावन थान तजि दीए।
सिप भगोहा कटि पातो कीए।
जगत दुखी को मैने पायो।
कृपाल भयो प्रभ बचन उचरायो।
चलित चलित भ्रम न नटि आयो।
तहा विष्ट मूल अधिकायो।
एक सूकरी तहू ठौर निहारी।
गहिन कुटंब भोजन धारी।
एग त भवद दुगी कोऊ माही।
महा दुर्गधता महि उभाई।

प्रिथमहि इसि कौ मुक्ति पठावौं।
नर हरि पै इसि ही मैं जावौं।
भक्ति तब ही मुख बचनु उचारा।
हो आतम रूपी सुण चितुधारा।
नर हरि मोह् भए किरपाला।
सुप्रसन्न होए दीन दियाला।
कहति दुखी जो जन्त ल्यावौं।
वेम बिलम कछु मूल न लावौं।
तांको मैं बैकुंठ पठावौं।
ततछिन महि तिहि दुख मिटावौं।
भावो मोह् सम तुम ले आई।
तुम को प्रिथमे मुक्ति पठाई।
सूकरी तब ही कछु न भाया।
भक्ति बचनु तिस हृदे न रापा।
पहुको भक्ति ऐसे उचिरामो।
भातम रूपी सब्द सुनायो।
सूकरी के हृदे एक न भाई।
अति भगद महि बहु उर्झाई।
तीसरा बचनु जब भक्ति उचारा।
तब सूकरी मन कीयो बीचारा।
भक्ति को प्रतु दीयो ततकारे।
हे प्रहिलाद क्या पडा पुकारे।
मैं भ्रनंबहि अति उर्झाई।
मोको दुख भासे नही काई।
सकल कुटंब सहित मेरे माई।
मनि महि बिघ्न उपजे नही भाई।
सभी प्रकार को भोजनुं पर्‌या।
सुत बधू उरि घेरा कर्‌या।
मम सर सुखी जग महि कोई नही।
तौर सर दुखी कोई द्रिष्ट न माही।

सग अगोछा कटि धोती तेरे।
पगि पशवा नृप तुझ को नेरे।
अबर मा जो अग हृडाव।
पर्हो माना जो पग महि पावै।
पिता तोह नर हर हति कीना।
तैने नृप कवनु चिन लीना।
यवि इहि भक्ति सुनी विधि काना।
मति मे चक्रति भयो हैराना।
औरु कवनु दुखी मैं जोहु न जावौ।
जग मह दुखी कोऊ नाही पावौ।
जो मेरे प्रभ उत्पत करी।
मग्नि भई बाहू महि जरी।
इहि हृदे धारि भक्ति फिरि आयो।
नरहरि का डंडौत करायो।
सब प्रभ भक्ति सौ कह्यो सुनाई।
भक्ति प्रहलादि सुनो चितु लाई।
कौनु दुखी जग से ले आयौ।
क्यु नहीं तै मोह आएा दिपायो।
मोह दिपाइ तिह मुक्ति पठावो।
तुमरो वचु मै पूर करावौं।
तवही भक्ति नृपि बात उचारी।
तुमरी गति कछु पार नि बारी।
तुमरी गति को तुम ही जानौ।
तुमरी कथा अगाध पछानौ।
हमि मति हीन थोरी मत मेरी।
तुमे बात प्रभ तुम पै तेरी।
जग महि दुखी कोऊ प्रभ नाही।
सकसे आनंद महि उर्माई।
जो तुम कीआ पूर्न कीआ स्वामी।
सकल बिर्मा प्रभू अ तरजामी।

भक्ति कों नर हृद समझायो।
सुन हो भक्ति तुम हृदे बसायो।
जम महि दुतीया माही कोई।
सम कल्याण हाल महि होई।
भक्ति को मान अधिक बडायो।
अपनो ध्यान करि मुख दिखायो।
जो जो नर हरि सर्नी आव।
साईदास प्रभु सुख दिपावै।२१॥

मकस ऋषीश्वर मे सुण पाया।
हरिनाकमु प्रभ मुक्त पठाया।
मकस ऋषीश्वर मिल कर आए।
ताहि नाम कछुकहे न जाए।
एक एक जो नाम कछु कहे न आए।
एक एक जो नाम बतायो।
का गति कहा जु सिरन करायो।
हरि उस्तित करि क उठि आए।
आगे अपने आश्रम आए।
एक ऋषीश्वर दसनु नां बीमा।
ताहि हृदे बहु आन है सीमा।
बन माही उलिमावत फिरही।
करि गौ करि पटिकारन करही।
धधिरि दाम रगी तिहि ठौरा।
मर हर दर्सन बिनु ऋषु भयो बौरा।
पग मृग जो काही निकट आवै।
ऋषु बोलै पागनि मही पावै।
बपरु मिन गयो बिगमाई।
दर्सन गा कहा गुसा मरे भाई।
दर्सन उनि कहा फिरे उलिमावत।
कहा दुग लोइ कयु न सुनावत।

तोह दुःख कों करो उपचारा।
सुनहो ऋषि तू कहा हमारा।
तोह करि पग मृग फासे माही।
हमिरे मन महि भौ उपजाही।
अबि लगि पग मृग हाथ नि आवे।
सुत वधू वनिता दुःख पावे।
भूप ग्रसे सिंह को उकिलावहि।
कहा करो जवि वहु ना पावहि।
बधिनि को ऋषि कह्यो सुनाई।
रे बधिक सुन हो मेरे भाई।
मोह मृग भाग्यो ताहि हिरावो।
जो हित हों ताहू कौं पावो।
और रोगु हमि को नही कोई।
इहि प्रयोग धारम दुःख होई।
बधिकि जो सुनी इहि विधि काना।
फिरि करि ऋषि सो वचन बखाना।
मिरग चिह्न हमि देहु बताई।
करा प्रतिज्ञा येहि मरे भाई।
प्रथम मिर्गु तोह फधि देवो।
पाछे पग मृग मैं फंधि लवो।
ऋषि बधिक को रूपु बतायो।
बधक मे सुनयो चित लायो।
बट ऊपरि सिंहु है मरे भाई।
नारि तन को देत दिखाई।
नारसिंह ताहू है नाम।
सकल जगत को वहु विश्रामा।
बधिक सुगम प्रत ऋषि को दीना।
भयो रूप मो को दम मीना।
घोन रूप होइ तुम ठहिरावो।
गात्र किये छिन मा उकिसावो।

सत्य सत्य गोबिंद गोपाला।
सत्य सत्य संतनि रपि पाला।
सत्य सत्य मुकंद मुरारी।
सत्य सत्य संतन हित कारी।
सत्य सत्य माधो धर्नीधर।
सत्य सत्य हर सभ कारण कर।
सत्य सत्य पूर्ण पर्मेस्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल बिस्वेस्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल बसेरा।
सत्य सत्य संतनि सुख चेरा।
सत्य सत्य गोबिंद गुसाईं।
सत्य सत्य पूर्न सभ थाईं।
सत्य सत्य सत्य हर रूपा।
साईदास प्रभ सत्य सरूपा॥ ५३॥

बावन रूप कहों क्युं कीना।
कित प्रयोज बावन बपु लीना।
एहि बीचार करुणा कर देवो।
हमिरे मन संशय हरि लेवो।
जो संशय हमिरे मनि आवै।
तुमि करुणा ते सहि मिटि जावै।
तुम प्रबीन बिद्या को पावो।
हमिरा संशय तुमहि चुकावो।
तुम प्रगाढ भर्म हरि भागे।
तुम करुणा त दूषन लागे।
करि किर्पा हमि देहु बताई।
तुम किर्पा करि संशय जाई।
धवम धरौ देवो बीचारा।
साईदास बावन बपु धारा।५४।

राजै बस ने इह मन धारा।
एक साय अम्य करो करितारा।
तौ पाछे इंद्र आसन लेवो।
यो मन भाव सोई करेवों।
इहि वांछा उमि मन महि कीनी।
नृप प्रतज्ञा इहि मन कीनी।
भोजन सहस विपों को देवों।
सुप्रसन चित्त ताह करेवो।
तिलक ले करि मस्तक आवै।
अति मिष्टानु भोजन दसाव।
क्षीर पकि घ्रित बहु डारे।
अपुने कर कर मधी उडारे।
पगि धोवै चर्णाम्रतु लेवै।
इहि विधि सांको सव करेव।
नित्त परित येही उमि कामा।
दधि घ्रित अमृति ब्राह्मण धामा।
सुमसु निसापति बहु करई।
अपुना सीस ब्रह्मण पगि धरई।
जेह मोसुद बुद्धि सुरों की लीनी।
नेम धम्म ब्रतु एहा कीनी।
एक सहस्र घट सपु यमु कीना।
एहि विधि भोजनु ब्राह्मणो दीना।
कंपमान तव सरपति होया।
मामू नीर मुप अपुना धोया।
अति विस्राम मनि अतर कीना।
माईदास मनि सधार लीना ॥ ५५ ॥

दारा सुरपति की यू योनै।
हे सुरपति तू काह डाम।

प्रिथम मिर्गु फंधो मैं ठेरा।
तौ पाछे औरहि म्रानो मेरा।
बधिक ने परितज्ञा कीनी।
एहि प्रतज्ञा द्रिढ करि लीनी।
ऋषु ग्रपुने ग्राश्रम ठहिरायो।
बधिकि मृगु फाहनि चितु लायो।
जो पग मृग होय फाही फासे।
ताहू बेधि बधकु ताहू हांसे।
ततखिण मुक्ति करो तिस ताई।
ताको बंधकु बांधे नाही।
छुवे माहु येही ठहिराई।
प्रिथम ऋषि मृगु लियो फहाई।
पाछे ग्रवर मिर्ग निकट ग्रायो।
माहि तमरौं प्रानि तजि जायो।
कठिन प्रतज्ञ मनि महि धारी।
सब्ब प्रीत मन भई बीचारी।
नारसिंहु प्रभ ग्रतरिजामी।
सब बिधि पूर्ण पूर्न मामी।
नारसिंहु को फिर वपु कीया।
ग्राइ बधिकि पाही पगु दीया।
बधिक तब ही कह्यो पुकारे।
ग्रावो रे ऋषि तुम ततकारे।
सुमति ऋषीश्वर वेग ही ग्राया।
निर्ख्यो प्रभु ग्रानदु बहु पाया।
दयन सौ फांही कटि डारी।
बधिक को प्रभ लीयो उधारी।
उस्तति हर की ऋषि उचिराई।
जो निधि सी सा कह्या सुनाई।
मंधि रूप प्रभ तुमही कीया।
सवासर बेद दुराइ जबि लीया।

कछ रूप प्रभ तुम ही होए।
सुरों सुध दीए असुर तें पोंए।
बैराह रूप प्रभ तुम ही कीना।
हर्निकस्यपि मार पृथवी सुपु दीना।
बसुध्योआ तिह ते मे आए।
ताके पाछे जगत बनाए।
तेरो रूप क्या वनि सुनावो।
अति सरूप कछु कहिति नि पावों।
कुदरति रूप सभ कुदरति कीनी।
कुदरति धार सकल भीनी।
तरो अतु न पावै कोई।
कवन अतु कछु अतु न होए।
सभ उस्तित करि कर के थाके।
धनि आकास को कीयो प्याले।
अतु न किनहू तांको पायो।
मनि विचार थांति धरि आयो।
तांको अतु कहा कोई जाणे।
तांकी लीला कहा वषाणे।
पारावार तांके कोऊ पावै।
रूप होइ ध्यान कोऊ पावै।
बिनु ध्यान कहा नेत्र पसाए।
नारसिंह औतार सुणायो।
साईदास सुनो सुष पायो॥ ५२॥

सत्य सत्य रूप सभ सत्य।
सत्य सत्य सरूप सभ सत्य।
सत्य सत्य कीमो सौं अकार।
सत्य सत्य कीनो विस्थार।
सत्य सत्य करणा निधि स्वामी।
सत्य सत्य प्रभ अतरिजामी।

सत्य सत्य गोबिंद गोपाला।
सत्य सत्य ससनि रवि बाला।
सत्य सत्य मुकन्द मुरारी।
सत्य सत्य सतन हित कारी।
सत्य सत्य माधो धर्नीधर।
सत्य सत्य हर सम कारण कर।
सत्य सत्य पूर्ण परमेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल विश्वेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल बसेरा।
सत्य सत्य सतनि सुख केरा।
सत्य सत्य गोबिंद गुसांई।
सत्य सत्य पूर्न सभ थाई।
सत्य सत्य सत्य हर रूपा।
साईंदास प्रभ सत्य सरूपा॥ ५३॥

बावन रूप कहों कर्मु कीना।
कित प्रयोग बावन बपु लीना।
एहि बीचार करुणा कर देवो।
हमिरे मन संषरु हरि सेवो।
जो संषरु हमिरे ममि भावै।
तुमि करुणा ते कहि मिटि जावै।
तुम प्रवीन किर्पा को पावो।
हमिरा संषरु तुमहि चुकावो।
तुम प्रसाद भर्मु हरि भागे।
तुम करुणा ते दूपन लागे।
करि किर्पा हमि देहु बताई।
तुम किर्पा करि संषरु जाई।
ग्यबन धरौ देवो बीचारा।
साईंदास बावन बपु धारा॥५४॥

राखे बल मे इह मन धारा।
एक आप जग्य करो करितारा।
तौ पावे इद्र आसन लेवो।
जो मन भावे सोई करैवो।
इहि वांछा उनि मन महि कीनी।
नृप प्रतज्ञा इहि मन कीनी।
भोजन सहस विप्रो को देवा।
सुप्रसन चित ताहु करेवो।
तिलक से करि मस्तक लावे।
अति मिष्टानु भोजन खलावै।
खीर पवि घ्रित बहु डारे।
अपुने कर कर मधी उतारे।
पगि धोवे चर्णाम्रतु अचै।
इहि विधि ताकी सेव करेवै।
मिरा परित मेही उसि कामा।
वधि छिरत अमृति ब्राह्मण धामा।
सुब्रतु नितापति बहु करई।
अपुना सीस ब्रह्मण पगि धरई।
चोह औसुध बुधि सरों की लीनी।
नेम धर्म व्रतु एहा कीनी।
एक सहस्र घट अपु यग्य कीना।
एहि विधि भोजनु ब्राह्मणो दीना।
कंपमान तब सुरपति होया।
आंसू नीर मुख अपुना धोया।
अति बिस्वासु अमि अतर कीना।
साईदास मनि सबरु लीना ॥ ५१ ॥

दारा सुरपति की यु बोले।
हे सुरपति तू काहे डोले।

किउ कार्न संचरु मन पर्‌यो।
किन तुमरे मरिआरा कर्‌यो।
तूं भूपति सुरपति अधिकारा।
तुमरा किने न पायो पारा।
तुमिरा चितु किउ बिधि कप गया।
किउ प्रयोग विस्माद होइ रहा।
इसि का उत्तर हमि को देवौ।
संचरु त्याग सुख ममि सेवौ।
तब सुरपति ऐसे करि बोल।
इह प्रयोग मेरा मनि डोले।
वसराजै निदका मेह कीनी।
उौर त्याम मन महि यहि सीमी।
मखु यश कर इद्रासनु सेवौं।
जो मन मार्ग सोई करेवा।
ब्राह्मण को मिष्टानु पोसावै।
अपुने कर कर तिसकु लगावै।
चरन पखार चर्णाम्रितु लव।
हिर्षमान होइ दछिना देवें।
एक सहस्र मखु अवरु जो करिही।
सो इद्रासनु परि पगु धरिही।
एक सहस्र घट सपु मखु कीया।
अति मिष्टानु भोजन बिप दीया।
किन प्रयोग हमिरा थिर राजा।
किन प्रयोग पूर्न होवहि काजा।
इहि प्रयोग मन करो बीचारा।
माईश्याम हर अपर अपारा॥ २६॥

तब दारा सुरपति य्यु कह्यो।
इहि प्रयोग मै चकिनि होइ रह्यो।

तुम देखो मैं क्या कछु करहो।
आसनु तोहि निश्चन मैं धरहों।
मेरे कह्यो मान करि लेवो।
अवर बाति कछु मन ना देवों।
सुर सभ ले ब्रह्म पेहि आवों।
अपुनी बिरथा आप सुणावो।
ब्रह्मा करसी सिस उपिचारा।
एही है मोह मन बीचारा।
सुरपति सुर ले करि सग धाया।
चला चला ब्रह्मे पहि आया।
बिर्था अपुनी आप सुणाई।
ब्रह्म ने तब ही सुण पाई।
वेद पढ्यो बेनती तिह ठांनी।
हे कौमापति सारग पानी।
बलु यक्ष करि इद्रासनु लेवे।
मुगरु मनि बिस्वासु करेव।
सुरपति की बिनती सुण लीज।
अपुने जन परि किर्पा कीजै।
सुरपति मे जब अधिक बनतायो।
महा अधिक मन महि बिस्मायो।
तबि अकाम से बाणी होई।
रे सुरपति जाइ रहो सुप सोई।
कश्यप के ग्रहि मैं लेउो अवतारा।
ऐसी बिधि प्रभ कह्यो प्रकारा।
मोह इद्रासन कोऊ न लेब।
गाईराग परि क्रिपा करेवं ॥ ५७ ॥

औ गागास भखिन गुपदाई।
गन्न गहा अन भीर मिटाई।

तब बैकुंठ बेग प्रभु आयो।
विस्य भूमि महि आइ ठहिरायो।
विस्य केत मही जात प्रकासी।
भयो उजीआरा तिमर बिनासी।
मानो रबि ने कीयो प्रकासा।
कस्यप हृदे महि भयो हुलासा।
पपब सकल सुगुन आमा।
उौर बर्न सभ सहित मिमाया।
न्ति दर्गु देपम को आए।
बहु उस्तित अधिक सुनाए।
ते उस्तित सुण हो मेरे भाई।
प्रीत बध सुप उपिजै भाई।
निरकार हर नामु तिहारा।
अकाल मूर्ति सभ तोहू सिर भारा।
पै समुद्र महि बेद उभारे।
बिनती कीमी बझ्यो पुकारे।
तब तुम काश्यों कसमपि गृह आवों।
सुरपति का सताप् चुकावों।
तब ही हमि मन माहि बिचारी।
ममि सभर लीनो भौ भारी।
कहा बातें क्या भई है बानी।
हे प्रभ हमि ऐसे मनि धामी।
भाव प्रभाग्नी हर तेरो नामा।
गर्मियोन सुमिरा क्या कामा।
भक्ति हेत प्रभ ऐसे कीनो।
भक्ति हेत ऐसे मन भरि लीनो।
पधा कि भाइ उस्तित करि बाए।
आपो अपने पुर महि भाए।
भाद्रो मास तिथ द्वाग्सी भाई।
कपस मुमि जन्म लीयो मेरे भाई।

जनम लियो प्रगटो उजीआरा।
कपल मुन ने लियो अवतारा।
ब्योदस दिन जब भए बतीता।
कस्यप नामकर्न तिहि कीता।
पंडित जोतकी अधिक सदाए।
भले महूर्त ताह सुधाए।
कपल मुन ठाकुर नामु रघायो।
जो कछु वेद माहे प्रगटायो।
दस्न कछे मुख बहु विधि कामनि।
पग सो वेसति कुज के मोहनि।
बडो भयो सभ सुरति समारी।
प्रान पुर्ष जिन रचिनाधारी।
सांचो चितु लावो गुण गावो।
सांईदास लिव हर सो लावो।४८।।

इति विन वलि राजे क्या कीम्रा।
येही भार कीयो उनि जीम्रा।
मधिवापुर ताई उठि धायो।
अधिक सैन मे सग सिधायो।
जाइ घेरा पुर माहे कीमा।
बलि ने गर्भ अधिक मनि लीना।
मधिवा सुर संकर सग आयो।
वलि ने तास्यू युद्ध मचायो।
बलि अपुने रथि को आज्ञा कीई।
मघवा रौरापति को दीई।
बल अरु मघिवा युद्ध करावहि।
सैना सना सों झूझावहि।
उह उस मारे बहु उनि मारे।
दोनों बलि कोऊ नाही हारे।

महा अधिक युद्ध ताहि करायो।
दोनों महि किने नाहि हरायो।
मघवा को भी बसु अधिकाई।
बसु राजा भी अत बल काई।
सैना दोनों के संग मारो।
एक एक सुर बहु असिकारी।
तांको नामु कहा मीचारो।
रसिना रंचक नाहि उचारों।
कहा बुद्धि तिहि नामु सुनावों।
कहा बुद्धि जा सकल बतावों।
सूक्षम वासि मै ले मीचारी।
गुर साईदास किमा जब घारी।२९॥

चलु मघवापुर को तजि आयो।
मघवा अपुने पुर ठहिरायो।
कस्यपि भार्या दित्य है नामा।
गर्भित मजनु कीयो तेहि भामा।
महा कठनि तपु ताहु करायो।
तब प्रभ प्रगटि दित्त पहि आयो।
कह्यो मांग सेवो मेर भाई।
जो कछु तुमरे मन महि भाई।
तब ही दित्त ने बचन उचारे।
है पून प्रभ प्राम हमारे।
नोहु भार्या इनु बाघुक पावो।
अपुना मनु तनु तासो लावो।
अवरु माहि कछ हमरी प्यासा।
येही है हमरे मन आसा।
तब प्रभ तिहु को शीघ्र बताई।
मैं आवा तुमरे गृह मांही।

मति सुगंधि भग कौ सू लाई।
तिस समे अपुने पति पै जाई।
मै तुम गृहि आई लियो अवतारा।
ये ही वचन तुम संग हमारा।
जो कह्यो प्रभ तिस करायो।
पश्चाति वच प्रभ हुवे बसायो।
अथवा कार्ज करनै लाई।
जग मायो आइ त्रिभुवन साईं।
सब समुद्र त्याग करि आए।
भागो अपुनो गृह जाइ ठहिराए।
सुरपति निहचलु आसनु कीनो।
सभर मन का हरि हिर लीनो।
पूर्ण ब्रह्म भक्ति सदा सुखदाई।
संकटि काटन भयो सहाई।

वामन अवतार

पिता कश्यपि अपु प्रभ जी होए।
मात ससावतो सम कुप पोए।
बिलोचन ऋषि गुरु तीर्थ त्याग बावन वपु कीनों।
कर माला तिलक मस्तक परि दीनो।
जिहि नगरी बलु राजा रहे। छपरु छाइ तहां आसनु गहे॥
राजा बलु जगु करनि तिताही। तहा भोजनु ब्राह्मण बहु पाही॥
बल के द्वार ठांढा जाइ भया। अशीर्वचनु चिरजीव कया॥
तिह सम जसु ब्राह्मणा नृपु देवै। पूजा कर कर तिह पगि सेवै॥
जब ही अशीरवचनु इनि कीना। बलि राज भवण सुनि लीना॥
द्वारे परि ठांढा है कोई। मुहि कह्यो अंतरि ल्यावो सोई॥
अंतर लीयो बुलाइ गोसाईं। अति सरूप सुंदर अधिकाई॥
चतुरवेद मुख पाठ सुणावै। राजा बलु भी चकित होइ जावै॥
अनिक भांति रम्या नहीं डोलै। चतुर वेद मुख पाठै बोलै॥
राज बल कह्या कछ मंगो। आदि दाम परि किया करेयो॥६०

हे प्रभ करुणा कर कछु सेवो। छीर घ्रित भोजन अचेवो॥
देहो अनु मैं तुम को देवों। जो तुम भाषो सोई करेवों॥
तब प्रभ इहि बिधि मुखों बखानी। मैं तेरी गति अजहू न जानी॥
न चहु तब करि परि धरि लवों। चतुर वेद मुख पाठ सुणावों॥
तब राजा निश्चल हो बह्मा। चतुर वेद सेती चितु गह्मा॥
चतुर वेद मुख पाठ सुनाए। ताकी महिमा कही न जाए॥
हर्षिमान बहु राजा होया। साईंदास भर्म सभ खोया॥९१

हे बिप तै चतुर वेद सुनायो। मै सुणयो मन बहु सुखु पायो॥
जो कछु माग सोइ देवौ। बेग बिलम कछु नाहि करेवौ॥
तब प्रभ श्री मुख बचन उचारी। सुनहो अब नृप बात हमारी॥
अढाई कदम बसुधा हमि देवौ। सुप्रसन्न मन मनु करि लेवौ॥
तहा छपरि छाइ सुख बसहों। हृदये सतोषहरि गुण उचरहों॥
तब कह्यो नृप अस करि लेवौ। कहां माग्यो हमि जो देवौ॥
अढाइ करो क्या धनि कहावै। और मांगो जो तुम मन भावै॥
तब प्रभ कह्यो अवर ना लेवौ। और याचना नाहि करेवौ॥
तब कह्यो अढाइ करो धरि दीई। इहि प्रतशा मैं मनि कीई॥
जलु चाहत संकल्प करेव। साईंदास हुए बसुधा देवै॥९२

शुक्र प्रोहतु शुक्रमती ताका। छलनु बसनु देख्यो कह्यो बोका॥
रे नृप अब पाछें पछुतावै। पाछे से कछु हाथ न आवै॥
बावन बपु मतु देख भुलावै। त्रिहु लोकनि महि एह न मावै॥
मछ रूप जो है भगवाना। कछ रूप प्रभ पूर्व निधाना॥
बैराह रूप एही ही होया। नारसिंह हरिनाकसु खोया॥
सोई प्राण बावन बपु धरिया। परि प्रयोग कार्ज इहि करिया॥
तोहि छले तू जाणे नाहि। पूर्न प्रभ मुझे देहि दिखाई॥
नृपु बलराजा एव्यं करि बोलै। हे गुर मेरे कहा तूं डोलै॥
इमि ते मसा अवर क्या चहिए। पूर्न प्रभ जो दर्शनु लहीए॥
जाका दीआ मो मागे दाना। ताको दीजहि अपूर्न प्राना॥
शक्र जनी कहि तू जाने। साईंदास कह्यो नहीं माने॥९३

म करि या जसु दवरए लागा। वस सकल भो मन ते त्यागा॥
तब शुक्र जती ने क्या कीमा। कर्म का मुल आकर लीमा॥
जसु ना गिर अस्ति बहु कीने। त्रिपु से तिहि कर्म मुप दीनें॥
उहि त्रिए द्रिग शुक्र जती मायो। ताह त्याग मन बहु पछुतायो॥
तब मुप ते इह वचनु उचारा। हु वल नृप तुम्हे वस अधिकारा॥
मैन भजन करे बहुसर। तू परिहो है घुमरि घेर॥
मेर कह्यो न मन करि लेवै। अढाई कल्ह वसुधा तू देवै॥
तो का कह्या मनि करि लीना। जलते ताह सकल्पु जु कीना॥
अढाई कल्ह स धर्नी दीनी। तो प्रभ जस से स्वस्ति है कीनी॥
सब प्रभ दीर्घ प्रभ वपु धारा। तांका कोऊ न पावै पारा॥
एक पगु ब्रह्म लोक आइ धर्यो। दूजा पगु सभ पृथ्वी कर्यो॥
वसु राजा भ पत्रति हो रह्यो। तो शुक्र जती ऐसे कह्यो॥
तब मरा कह्यो मान नाही। भविकित करि मनि महि पछुताहा
दोब करो सभ पृथवी भई। साईदास भाषा पाछे रही॥६४

तब प्रभ कह्यो सुना बस राजा। तू ना बहू को मोहताजा॥
माधु करा वसुधा हमि देवहु। माहि ति जलु अपना फिरि लवहु
कर्निनि बसो क्या करीये भाई। धम्मु न छाडो राम सहाई॥
तब बल कहा प्रभ जो सुरण लीजे। जगु दीमा फिरि कैसे लीज॥
जो तुमि कहो मनि करि मर्वो। उौर बाति कछु नाह करेवों॥
तब प्रभि तांको दीयो बताई। बल राजा सुगम हो मेरे भाई॥
माधु करों तमु तरा होई। हमि का दबो हो तुमि साई॥
जब इहि विधि प्रभ सुपो बखानी। तब दारा बल की मइ स्यानी॥
नब कह्यो उनि हम तन लबो। जिमे जाना प्रभ तिसे को दबो॥
नब प्रभि कह्या एहि नही कामा। तोहु गरीर अपवित्र भामा॥
तब बल कह्यो एहु तनु मेरा। प्रबि मैं अधिका भया हो नरा॥
तब प्रभि बल का मंत्रा पाया। पगु धरि त्रिष्ट पताम पठाया॥
बल करि मो वगि मुहु रिम कीने। मुहु रिम करि पग कर महि लीन
पग कगने त्याम मरा दवें। गार्ईदास पुन गुर गेव॥६५

तब बलि नृप ते बचनु उचारा । महा बली तिह् बलु अधिकारा ॥
हे पूर्न प्रभ मुक्ति के दाता । तूं ही है पूर्न पुरख बिधाता ॥
मध्य छडाइ प्याल मोह मागा । तुम्है न छाडो मम मनु लागा ॥
बसन कीजे बसु छाडै माही । तब प्रभ बल सो बचन कराही ॥
हमि होवे तुमरे भगवाना । ब्रह्म बिष्णु महेसु समाना ॥
तुमरे द्वार पालक हमि होवहि । तमरे द्वारे आग सोवहि ॥
चतुर मास ब्रह्म इहा रहे । चतुर मास शंकर ईहा गहे ॥
चतुरमास पाछे हमि धारी । साईदास बिधि कही मुरारी ॥६६

बचन कीयो तब बल ने त्यागा । तब प्रभु मन अपने उठि लागा ॥
छलिन भयो आप ही छलाया । द्वारपाल कों तिलकु चढाया ॥
इहि प्रयोग बावन बपु धरया । सुरपति को इन्द्रासनु थिरु करया ॥
तांका अंतु कौण काऊ पावै । वह प्रभ घटि घटि आप समावै ॥
पूर्न पुरख निधान बिहारी । तांकी गति मिति अपर अपारी ॥
बो उसि भावै सोई करही । जल ऊपरि बसुधा वहु धरही ॥
तब सरपति निश्चल कीयो राजा । ताके पूरे कीने काजा ॥
भक्ति हेत करि इहि बपु धार्यो । बलु छल सुरपति को निस्तार्यो
जो जो तिह् धरनी चितु धारे । तातकाल प्रभु तिसे उधारे ॥
प्रेम भक्ति को हरि मोहताजा । जिहि घटि प्रेम सो सब को राजा
ना वहु बिनसे आवे नही जाइ । धान धनंतर रह्या समाइ ॥
इहि बिधि देख दया चित धरहों । नेमु धर्मु अपने चित करहों ॥
जो जा हर की भक्ति कमावे । दुःख नही ब्यापे बहु सुपु पावे ॥
तीन भवनि तां के है वासा । ताके दर्सन की करहि प्यासा ॥
सुर नर मुनि जन सर्भी आवैं । तिस की जोहरि भजनु कमावैं ॥
सदा सदा आनद समावैं । सदा सन्त जो हरि गुण गावैं ॥
सन्त सदा जन मुक्ता होवे । जो जनु भगि की जेवरी पोए ॥
सदा सदा मुक्ता जग माही । हरि भजि तिहि दुख नाये माही
बावन बिपु प्रतापु सुनायो । साईदास प्रभ सब समायो ॥६७

सच्च नामु करतारु गुसाईं । सच्च नामु त्रिभुवन के साईं ॥
सच्च नामु निरकार प्रकास हर । सच्च नाम माधो धर्मी घर ॥

सच्च नाम सतन रपिवारा। सच्च नाम सभ जगत उजारा ॥
सच्च नाम त्रिभुवन के राया। सच्च नाम सभ माहि समाया ॥
सच्च नाम निरकार न्यारा। सच्च नाम सभ ताह पसारा ॥
सच्च नाम कौसापति केसर। सच्च नाम पूर्ने पर्मेश्वर ॥
सच्च नाम मुकद मुरारी। सच्च नाम सतन हित कारी ॥
सच्च नाम प्रभ सकल समान। सच्च नाम तन सुप दान ॥
सच्च नाम महाराज के राजा। सच्चा नाम को सभ मुहिताजा ॥
सच्चि नाम साईदास को दासा। सच्च नाम हरि को भम्यासा ॥६८

गुण निधान भक्तिनि सुपदाई। गुण निधान सदा सत सहाई ॥
गुण निधान सब सुपदाता। गुण निधान सर्व सग राता ॥
गुण निधान करुनानिधि स्वामी। गुण निधान हरि अतरजामी ॥
गुण निधान दुःख को नासा। गुण निधान संतन की प्रासा ॥
गुण निधान प्रेमु प्रधिकाई। गुण निधान सदा सुखाइ ॥
गुण निधान सु प्राण प्रधान। गुण निधान हृदय माह ज्ञान ॥
गुण निधान दुःख सुख ते न्यार। गुण निधान प्रभ भपर भपार ॥
गुण निधान रग सम रार्ब। गुण निधान सर्व सग साथ ॥
गुण निधान पूर्ने भगवार्न। गुण निधान सभ माह समान ॥
गुण निधान सदा सदा सग। गुण निधान भनक सरग ॥
गुण निधान सप्ति मन हिरीर्म। गुण निधान सप्त मुम करीर्म ॥
गुण निधान साईदास जु दास। गुण निधान सर्वसंग वास ॥६६

तुही तुही प्रभ सर्वसमानं। तुही तुही कौसापति रानं ॥
तुही तुही गोबिंद गोपाल। तुही तुही सतन रपिवाल ॥
तुही तुही पूर्नधर ध्यान। तुही तुही पूर्न हरि ज्ञान ॥
तुही तुही मोह गति को जान। तुही तुही इस्थिर करि मान ॥
तुही तुही प्रभ भपरि भपारं। तुही तुही पूर्न करतार ॥
तुही तुही प्रभ गगम बसेरं। तुही तुही सभ तोही बरं ॥
तुही तुही धर्नीधर गोबिंद। तुही तुही पूर्न पर्मानंद ॥
तुही तुही बिर्था सभ पावे। तुही तुही सताप मिटाव ॥
तुही तुही लीला प्रभ पारं। तुही तुही हरि पतति उधारं ॥

से मम बहिण म्हपीसवरि दीने। हिर्ष मान होइ किर्पा कीने ॥
इहि तुम देवो इहि मम को कहया। ओंकार सभ जग रचि रहया ॥
इहि तुम पावों इहि मै पावों। ना तूं भफल न मै भी पावों ॥
या उसि कहयो सो कहयो भणा। ओर माइ कछु मानो वैणा ॥
मबि मै इहि तुमरे पहि स्याइ। सांईदास सुण हो लिवलाई ॥७५

तब बनिता मन महि इहि धारा। सांका सकला कहो बिचारा ॥
अपनो नीको तिह कहयो होई। मोह ममि आपे सेवा सोइ ॥
तब उमि बहिन सों बचन उचारा। मनि हो बचिम तूं बचनु हमारा ॥
अपनो मोह मोह तुम लयो। एहि तुम नेहु ओहु हमि देयो ॥
उमि उसि का उनि उसि का पाया। भूम परा पन्नु किर्पा जाया ॥
पान पत्र पाए ग्रह माइ। नृप सों तब भाइ कहयो सुणाई ॥
हे पति मोह किपा करि कीने। हिपमान पान पत्र दीने ॥
एकु अपनी बनिता का दीनो। एकु हमिरे परि किर्पा कीनो ॥
मरो उमि उसि का मै लयो। सांईदास यहि कार्न कीयो ॥७६

जब बनिता यमि दरस पहि आई। तब यमिदिम्न मे कहयो सुणाइ ॥
उसि का पान पत्र उमि दीना। हिपमान होइ करि उमि लीना ॥
तब बनिता यमिदिम्न की बोली। हे प्रभ पूर्न अवगुण पोल्ही ॥
सुण हो बिनती मोह जु कहो। तुमरे पगि परि मैं सिर धरहो ॥
जो तुम मोह किपा कर दीना। हिर्षमान होइ सो उसि लीना ॥
जो उमि दीधा मो हमि को दीना। इहि कार्ण उसि म प्रभि कीना ॥
तब यमिदिम्न मे बचन उचारे। बुरा कीयो तुमि मे सतकारे ॥
ओह भी अपस तू भी सग ताही। पा उमि कहयो होवे नही याही ॥
उमि न गृहि कछु भुम पयि पावे। सुमर ग्रह भूपति प्रगटावे ॥
एहि बिधि कही गाम परि याया। गोबिन्दास सो प्रगटि सुणाया ॥७७

गभ भय इमि दोना नारि। पनि पनहु भग नाद गमाई ॥
भए प्रबीन मास दस नारो। प्रगटि भए गभ बाहर बारो ॥
प्रथिमे भूपनि बाल सुणावो। एक एक करि गरभ मनावो ॥

१ धावा होना चाहिए।

भूपति अह ऋपीश्वर आए। से करि महल वन को धाए॥
भूपति को माया मोह होया। तांके पाछे बहु मन रोया॥
पाछे रानि के उठि करि बौरा। सुत हित मोह भयो होयो बैरा॥
हे सुत कहो कहा तुम जावो। हिर्दमान होइ यहि बधुन्यावो॥
मोह कारण बहुते दुःख लीने। कौन उपाव हमरे सुत कीने॥
को सूं आयो हमि को छडि जावें। ठाकुर भक्ति तोहु वर नहीं स्यावे॥
तब ही ऋपीश्वर असे बोल। हे पित काहे मन महि डोलै॥
जाहो राजु करो गृह माही। हमिरे श्राम परो तुम नाहीं॥
हमि तो भक्ति करो गोपाला। भाव प्रश जो है रथिवाला॥
एहि बिधि कहि करु बनि को भाए। साँईदास नृप पाछे जाए॥७८

फिरि भागे जाइ बहु उपलोवें। सुप्त समाध मांह जाइ सोव॥
छाडि समाधि बहुरि म्यु कह्यो। मैं तो प्रेम भक्ति रचि रह्या॥
तुमि काहे पाछे मोह आवो। किपा करो अपन गृह जावो॥
जाहा राज करो बहु भांति। रप दया अपनी तुम कांती॥
तब नृप मुख ते वचन उचारे। हे सुत निकसित प्रान हमारे॥
तुम्हे त्याग कैसे ग्रहि जावो। तुमि बिनु कहु कैसे सुख पावो॥
मैं जावो पग मोह न जावहि। जो जावो फिरि करिईहा भावहि
तबही ऋपि सुण करि प्रीत जाती। साँईदास गति कौन हमि ताती॥७९

चमित-चमित फिरि ठाढे भए। तब नृप में जाइ मुचि ते गहे॥
हे सुत तुम्ह बिनु क्यूं सुप पावों। तुम्हे त्याग किति बिधि ग्रहि जावों॥
तबै ऋपीश्वर ऐसे कह्यो। कहा पूत पूत उचिरह्यो॥
मां तू पित मा म सुत तेरो। भाइ सजोग पडे इकि बेरो॥
केती बेर तू मैं सुत होयो। अबि कहा पूत हेत करि रोयें॥
त्याग ऋपीश्वर तांको पासे। राप रहे प्रम जी के दासे॥
तब मुनि को सभु भ्रमु है भागा। ताहि त्याग गहि मग हिनु लागा॥
उसे त्याग अपुने गृह आया। साँईदास सोई आपि सुणाया॥८०

अबि यमदिग्न की बात सुणावो। एक एक करि तोहि बतावा॥
इसि गृहि उत्पत भयो ततकारे। पर्सुराम निह बसु अधिकारे॥

तुही तुही सत्तु सोह प्रमान। तुही तुही सम तोह बिमानं॥
तुही तुही बस्तु दु:ख नि ब्याप। तुही तुही सम्‍ तुम्ह को आपं॥
तुही तुही साईंदास को वासं। तुही तुही हरि बोहत महि वास॥७०

उत्तम तुम उत्तम तुम नामा। उत्तम तुम उत्तम तुम कामा॥
उत्तम ध्यानु मातम तुम कीना। उत्तम प्रेम भक्ति परिबीना॥
उत्तम भक्ति तुम भक्ति कमावहि। तुमरो नामु उत्तम करि गावहि॥
उत्तम नामु निधान तुम्हारा। उत्तम ज्ञान ध्यान हृदय धारा॥
उत्तम कीर्ति नाम तिहारी। उत्तम रसिना बचन उचारी॥
उत्तम निरकार निरधारं। उत्तम ज्ञान ध्यान वीचार॥
उत्तम रसिना नाम उचारे। उत्तम श्रवण हुवे सम्हारे॥
उत्तम द्रिग निषिप हरि रूपं। उत्तम धर्म तिहं सरूपं॥
उत्तम तीर्थ को इस्नानं। उत्तम पूर्न पुर्ब निधान॥
उत्तम बन तिन को है बासा। उत्तम तुमरो नाम प्रकासा॥
उत्तम शब्द भनाहृद झुनिकारा। उत्तम यबु उत्तम बिस्थारा॥
साईंदास उत्तम नारायण। निसिबासरि हर के गुण गायण ७१

सुण हो साधो हितु चितु लाई। पर्शुराम जना सदा सहाई॥
सहस्रार्जन भूपति अधिकारा। जमदिग्न्य ऋषीश्वर जगत उजीआरा
भार्जा ताहि ताहि दोइ भैणा। ताको कहो विचारो बैणा॥
सहस्रार्जन भार्जा सो कहा। अतर सोच बीचार इह सह्या॥
तोह बहिण बमता यमि दग्ना। बहुरूपु गोबिंद सो अति मग्ना॥
हमरे ग्रह सुत सुता न कोई। बन हमि बिनसे मासु कुल होई
अपुनी बहिण सौं ध्यु उ जाइ कहो। ताह द्वारे परि जाइ बहो॥
हे बहिणा मम ग्रहि सुतु नाही। महि प्रयोग हमि बहु दु:ख पाही॥
मोह पति पूर्न है सब नाती। करे भजनु आगे दिन राती॥
ता परि हमिरी बिनती कहो। मोह कहा मनि म तर धर्‍यो॥
इहि मम बहिण आई तुम पाहे। सहस्रार्जन बनिता आहे॥
इनि कौ सुत सुता नही होवे। इहि प्रयोग मम म तरि रोवे॥
तुम पहि ये ही याचन आई। तुम किर्पा कर सुत इह पाई॥
ये ही बेनती आइ करि कीजै। साईंदास को बहु सुत दीजै॥७२

सुनी बात श्रवणो उठि दौरी। सुधन सम्हारी अपनी पोरी॥
चली चली तहा इह आइ। जहा कुटीआ यमदग्नि बनाई॥
निर्पी भैण उठि क उर लाई। कुसल पूछ कुटीआ ले आइ॥
कहो किर्पा किम्र करि तुम कीने। कित प्रयोग कुटीआ पग दीने॥
तब उसने मुख बचन उचारे। सुनहो बहिनीआ बात हमारे॥
हमिरे गृह सुत सुता न कोई। इहि प्रयोग अ तर दुपु होई॥
तुम पति कर्नि कर्नि भगवाना। म अपुने अ तर करि आना॥
मम बिनती अपुने पति करहो। भेट मोह ले आगे धरहो॥
ताहू क्रिपा कर मैं सुत पावों। तो क्रिया ते अफलु न जावो॥
एहि बात तुम आप सुणाइ। सांईदास सुणहों लिव लाई॥७३

तब यमिदग्नि बनता ब्यू बोली। मम मनु भी इह कारण डोली॥
मम गृह भी सुत सुता न कोइ। जो प्रभ भावै सोई होई॥
यमदिग्न पहि भार्जा चलि आई। जहा यमदिग्न राम लिवलाइ॥
हाथ जोर याम दिग्न सौ कह्यो। वहि तो ध्यानमाह रचि रह्यो॥
धर्ने मस्त मस नेत्र निधारे। हे प्रभ पूर्न प्रान हमारे॥
मोह भए तुमरे पहि आई। सहुसाजन बनिता साई॥
मा इचि पूतु न मम गृह कोई। जो मर्त आने तू सांई॥
क्रिपा करो करि इहि कछु देवो। इह मम ऊपरि क्रिपा करेवो॥
आस कीन तेरे पहि आई। सोह क्रिया कर अफलु न जाई॥
तब यमदिग्न कह्यो करो इहि कामा। पान पत्र ल्यावो तुम भामा॥
इहि करों कर्म म देवों। तुम उसि को दो सुत मैं देवो॥
जो म कह्या करो तुम सोई। सांइदास कहे सोई होई॥७४

हर्ष मान पान पत्र ल्याइ। दीए ऋषीश्वर धरि हिर्याई॥
यमदिग्न ले पत्र इष्ट जु कीना। इष्ट कीना फिरि कर तिह दीना॥
इहु तुम पावो इह उस देवो। अधिक सुपु मन महि करि लेवो॥
ले आज्ञा यमदिग्न ते आई। पान पत्र रघु लागा भाई॥
अपुनी बनिती को इहि कीनो। प्रति मञ्जनु भक्ति करि लीनो॥
ताहि दारा को इहि करि दीनो। प्रति भूपति हरारी दीनो॥
दोऊ पान पत्र म आई। हिप मान हाइ मगलि धाई॥

से मम वहिण ऋपीस्वरि दीने। हिर्दे माम होइ किर्पा कीने ॥
इहि तुम देवो इहि मम को कह्या। ओंकार सम जग रचि रह्या ॥
इहि तुम पावों इहि मै पावों। ना तू अफल न मै भी आवों ॥
जो उसि कह्यो सो कह्यो मैणा। ओर नाइ कछु जानो बैणा ॥
अबि मै इहि तुमरे पहि ल्याई। साईंदास सुण हो निवताई ॥७५

तब बनिता मन महि इहि धारा। तांका सफला कहो बिचारा ॥
अपनो नीको तिह कह्यो होइ। मोह मनि आपे सेवा मोइ ॥
तब उसि वहिन सों बचन उचारा। भनि हो बचिम दू बचनु हमारा ॥
अपनो मोह मोह तुम सेवो। एहि तुम सेहु जोहु हमि देवो ॥
उमि उसि का उनि उसि कापाया। भूल पररा फलु निर्मा आया ॥
पान पत्र पाए गृह आई। नृप सों तब आइ कह्यो सुणाइ ॥
हे पति मोह किपा ऋषि कीने। हिर्दमान पान पत्र दीने ॥
एकु अपनी वनिता का दीनो। एकु हमिरे परि किर्पा कीनो ॥
मेरो उसि उसि का मै लेयो। साईंदास यहि कार्न कीयो ॥७६

जब वनिता यमि दम्न पहि आई। तब यमिदिग्न ने कह्यो सुनाई ॥
उसि का पान पत्र उसि दीना। हिर्दमान होइ करि उनि लीना ॥
तब वनिता यमिदिग्न की बामी। हे प्रभ पूर्न अवरण पोस्ही ॥
सुण हो बिनती मोह पु करहो। तुमरे पगि परि मैं सिर धरहो ॥
जो तुम मोह किपा कर दीना। हिर्दमान होइ सो उसि लीना ॥
जो उसि दीया सो हमि को दीना। इहि कार्ण उसि मे प्रमि कीनो ॥
तब यमिदिग्न ने बचन उचारे। बुरा कीयो तुमि मे ठठकारे ॥
उोहु भी अफल तूं भी सग ताही। जो उमि कह्यो होबे नही बाही ॥
उसि क गृहि क्षपु मुन अवि आवे। तुमरे ग्रह भूपति प्रगटावे ॥
एहि बिधि कही दात परि यामा[1]। साईंदास सो प्रगटि सुणाया ॥७७

गर्भ भये इमि दोनो ताईं। अति अनदु अग माह समाईं ॥
भए बतीत मास दस ताको। प्रगटि भए गर्भ बाहर जाको ॥
प्रथिम भूपति बात सुणावो। एक एक करि सकल बतावो ॥

---

१ "भाषा होना चाहिए।

भूपति मह ऋषीश्वर धाए। स करि मंडल वन को धाए॥
भूपति को माया मोह होया। तांके पाछे वहु मन रोया॥
पाछे उसि क उठि करि दौरा। सुत हित मोह भयो हायो घरा॥
है सुत कहो कहा तुम जावो। हिपमान होइ यहि वधुन्पावो॥
सोहु कार्ग बहुते कुल सीने। कौन उपाउ हमरे सुत कीन॥
को तू मायो हमि को छडि जावें। ठाकुर भक्ति सोहु घर नहीं ल्याव॥
तब ही ऋषीश्वर प्रेम बोल। हे पित काहे मन महि डोल॥
चाहो राजु करो गृह मांही। हमिर काल परो तुम नाही॥
हमि तो भक्ति करो गोपाला। याद म त जो है रविवाला॥
एहि विधि कहि के वनि को धाए। सांईदास नृप पाछे जाए॥७८

फिरि धाग आइ वहु उपसोव। सुन्न समाध माह जाइ सोव॥
छाडि समाधि बहुडि य्यु कहयो। म तो प्रेम भक्ति रचि रह्यो॥
तुमि काहे पाछे मोह धावो। फिरा करो अपन गृह जावो॥
चाहो राज करो बहु भाति। रय देखो अपनी तुम छाती॥
सब नृप सुन ते वचन उचारे। हे सुत निकसित प्रान हमारे॥
तुम्हे त्याग कैसे ग्रहि जावो। तुम्हि बिनु बहु कैस सुख पावो॥
मैं आवो पग मोह न जावहि। जो आवो फिरि करिहा धावहि
तबही ऋषि सुण करि प्रीत जाती। सांईदास गति कौन हमि जाती॥७९

पसित पसित फिरि ठांडे भए। तब नृप में चाइ बुधि त गहे॥
हे सुत तुम्ह बिनु क्यु सुप पोवों। तुम्ह त्याग किति विधि ग्रहि जावा॥
तबै ऋषीश्वर एस कह्यो। कहा पून पून उचिराओ॥
मां तू पित ना म सुत तेरा। माइ सजोग भउ इवि बेरा॥
केती बेर तू म सुउ होयो। यदि कहा पूत हेत करि रोय॥
त्याग ऋषीश्वर तांको चाले। राम रहु प्रेम जी के हाल॥
तब नृपि का सभु भ्रमु है भागा। तांदि त्याग ग्रहि मग हितु लागा॥
उत त्याग प्रभुमे रहु धाया। सांईदास सोई धारि सुणाया॥८०

धवि धर्मदिन की यात सुणाया। एव एव करि तांदि सतारा॥
दगि ग्रहि उत्तम भयो नगवारे। पर्दुगम भिह बसु अधिकारे॥

पाछे सात बस का होया। बासक ऋषि पेसनि मनु पोया ॥
बासक सेति पेसन आवै। मुष्ट प्रहार तिहि सीसु फुरावै ॥
तिह पिता मात उसहिना देवहि। तुम सुनु मम सुत को दुख देवहि ॥
जब यमग्निन उसहिना पाया। परसुराम को श्राप सुणायो ॥
ह सुन तुम ईहा ते जावो। बन माही जा करि ठहिरावो ॥
मम महि जाइ तपस्या करहो। मेरो कहा हृदे मर्तरि भरहो ॥
पर्सुराम तब बचन उचारे। तोह आग्या माहति हृदे धारे ॥
मेरी बांछा एही माही। सा त किर्पा करी मोह पाही ॥
जित समे भीर पर तुम ताही। तुम मोह नामु लेहु मनि माही ॥
तातकाल मैं प्रगटि होवों। साईदास सकला दुख खोवों ॥८१

परशुराम अवतार

अगस्तमुन गुरु क्षेम कपलापुर

आग्या स पर्सुराम सिधारे। पूर्न पुप हर ध्यान सधारे ॥
एक बन महि जाइ करि ठहिराए। पूर्न ब्रह्म मुकत गति भाए ॥
महा अधिक भजनु तिह कीना। एको मनु बरसर लीना ॥
ध्यानु धरे निसवासर जावै। छिन रंचिक मन नाह डुलावै ॥
पूर्न नामु मामु पूराइण। सिर्मौ कौसापति नाराइण ॥
ताकी उसतिति कहा बपानो। साईदास उसतिति नही जानो ॥८२

सहसाजन कीयो अपेरा। बन यमदग्नि कुटीआ नेरा ॥
तहा आइ पीतंबर छाए। मति अनद मगन बहु भाए ॥
रेनका पसु भने को आवै। नितापरति पसु वाही स्यावै ॥
लाई महि पसु पोट अभिमाने। येहि बार्ता मोह बेद बपाने ॥
अवि जो गई पसु लेने नाई। सैना अधिक सिर्पी बिस्माई ॥
कह्यो कवन ईहा चलि आयो। कवन भूपति ममानो आयो ॥
इति उतिते येही पूछन करयो। साईदास मन अंतर धरयो ॥८३

नृप सहस्रार्जुन ईहा आयो। अछेर कीतो करके ठहिरायो ॥
तब रेनुका मन महि हहु माना। मम बहुनीआपतु एहु पछाना ॥
चाहित है राम पहि आया। बहिरिण जाण के बिदु सुनाया ॥

तब भगिवानु हसि जाण न देवै। अंतर आण ते मनहि करेव ॥
हसि कौ कहै कहा तोह कामा। अंतर काढो आवो मामा ॥
तब रैणका मुष बचन उचारे। इहि नृप बनिता बहिन हमारे ॥
इहि प्रयोग अतरि म आवो। तांको देषो फिरि मैं आवो ॥
रेणका चली अतरि महि गई। साँईदास प्रगटि जाइ भई ॥८४

बहिण देष के बहु हिर्षाई। अति आतर उठि करि अग लाई ॥
इहि ऋषि बनिता मन्मि उठावै। बहु नृप बनिता अवर हुलावै ॥
सकल सीगार ताहि मे कीन। पान पत्र मुग्नि माहे दीने ॥
अति सरूप कहा रूप बपाना। ताहि रूप सोभा कया जानो ॥
तब रेनका न बात उचारी। सुण हो बहिण तू बात हमारी ॥
तोह गृह सुतु होया कै नाही। इहि बीचार दहि हमि ताहि ॥
तब नृप बनिता बचनु उचारा। सुन हमिरो बमि गर्ढ भिषारा ॥
नृप तिह पाछे उठि करि धाया। नृप का माया मोह घुकाया ॥
तुम अपुनी गृह बात सुणावो। साँईदास छिनु बिल्म न लावो ॥८५

तब रनका तिषि दीयो बीचारा। हमि गृह मृतु भया एह पुकारा ॥
बडा भयो ऋषि सुत दुग देव। जो कछु देष मो पमि सब ॥
उनि ऋषि हमहि उसहिना कीना। तब ऋषि मुन को सगि करि लीना
काढो पूत बन को तुमि जावो। तहा जाइ हरि भजनु कमावो ॥
तब हमि सुन मे बचन उचारा। म इहि भार्दनि मा निरकारा ॥
अवि मैं जावो बनि गर्ढ ताई। जब तुम कष्ट होइ मोह मनि स्याई
हमि गुन मो बनि गर्ढ भिषारा। साँईदास कीनो बीचारा ॥८६

रैणका बहिन तजि जल को स्याई। कुरोधा महि धाइ करि ठहिराई
अति बिसमाद भयो पिनु काया। कहा बीचार कहो म तारा ॥
बर्षाग्नि ऋषीश्वर तिहि छोरि दसा। अति बिस्मात रूप तिह पेषा ॥
कह्यो रैणका कहा बिसमाई। कहा दुग तुम मागो भाई ॥
जो तुम दुग मागा सो पापो। हमि त तुमि दुरा न राखो ॥
तब रैणका मे बचनु उचारा। कहा करो ऋष प्राग पधारा ॥
म गई पमु सगो के ताई। तहा अपिर गमा निर्गा ॥

तिस सैना स्यूं बचनु उचारी । इस बनिता है बहिन हमारी ॥
मैं बहिन अपनी को देखों । इहि प्रिग रूप बोका मैं पेखों ॥
मैं गई चली बहिए के पाहे । अति सरूप सुंदर है बाहे ॥
मोह भंग भस्मि लागी अधिकायन । उसि भंग अवर अधिक उठायनि
तासो विदया न अनु मानो । कुटी महि खाडि करि ठहिरायनो ॥
मोहि बहिनीमा पनु चलि आयो । अखेर कीयो बन महि ठहिरायो ॥
हमिरे गृह माहे कछु नाही । कहा खाइ भाग ठहिराही ॥
एहि प्रयोग ऋषि मैं बिसमाई । साईदास सो कह्यो सुणाई ॥८७

तब ही ऋषि मुख त इउ बोलें । इति कारन मनि माहे डोलें ॥
हमि निर्धन धन राम हमारो । हमि निर्बल बलु प्रान अधारो ॥
आइ करि तिसभोजनु कहि आवों । मेरो कह्यो मन महि ठहिरावों ॥
गोविंद सम कछु भलो करही । अपनी लज्जा आपे भरही ॥
रैंणका इहि सुणि करि उठि आई । चली चली फिरि बहिन प आई ॥
कह्यो आइ सुणु बहिन हमारी । य ही ऋषि ने कह्यो बीचारी ॥
जाहो नृप भोजन कहि आवो । आनु भोजनु तुम हमिरे पावो ॥
मरो कह्यो सुण करि लीजे । साईदास कछु अवर न कीजे ॥८८

तब नृप बनिता कहू यो पुकारी । सुन हो बहिनीमा बाति हमारी ॥
तुम ऋषीश्वर कहा करेगो । कित बिधि भोजनु नृप को देवो ॥
सभ कछु तुम हमि को दीया । जो करणा तम हमि परि कीया ॥
काहे को एता दुख पावो । एहि बात मन महि ना ल्यावो ॥
फिरि करि रैंणका सिह प्रतु लीना । हे मोह भैंग कहा मन महि लीना
मोका ऋषि न दीयो पठाई । इहि प्रयोग मैं तुम पै आई ॥
तब नृप बनिता कहू मो भलो होई । जो तम मन आवै करो सोई ॥
सब भोजनु कहि करि फिर आई । साईदास अपने गृह ताई ॥८९

तब ऋषि गया ब्रह्म पुरी माही । नंदिनी काम धेन सुता ताही ॥
ब्रह्म ते नंदिन ल आया । आइ कुटीमा माइ ठहिराया ॥
जा माग सो तिस ते पावै । नंदिनी काम धेनु सुता कहावै ॥
ऋषि ने नृप ते बचनु उचारा । सुण हां नंदिनी कहा हमारा ॥

चेरी अधिक देहो हमि साईं। जो हमि मागे टहिल कराईं ॥
सब ही चेरी बहु प्रगटाईं। तांकी वाति कहा उचिराईं ॥
पाछे पीतबर बहु दीने। ऋषि ने स विछावने कीने ॥
भांजन कनक के अधिक निकारे। तांकी गणती कौणु बिचारे ॥
रैंणका अधिक वस्त्र जु उढाए। तो संग चेरी अधिक सुहाए ॥
भूपति कौं ऋषि भोजनु दीना। छत्री प्रकार का भोजन कीना ॥
जो कछु वांछे कोई सोई देव। आदर भाउ सभ सना लेवें ॥
नृप सग आए रहे अघाए। तब ऋषि मुख से वचन सुनाए ॥
जिह भाग भोजन सो लेयो। बहुरो भोजन हमिह न देवो ॥
भोजन सभ तुम लेहु उठाई। साईंदास कह यो राम दुहाई ॥८०

भूपति भोजनु ले उठि धायो। केतक मग चलि करि वहि आयो
बीच ही मग के ठांढा के भया। अति विस्माय मन अतर लया ॥
एक कुटीआ ऋषि की ल्पिसाई। एह अडंबर उनि कहा कोई भाई
बहुरो नृपु मगत चलि आया। तिसी ठौर फिरि आइ ठहिराया
दो भर सन सो आदि सुनायो। वेग बिलम सुम मूल न लायो ॥
आवो ऋषी की कुटीआ माह। तहा जाइ दिग सो निपहि ॥
कवन ठौर ते भोजनु दीना। कहा ऋषीश्वर ने इहि कीना ॥
तांको देखि इहा तुम आवो। साइदास तुम आप सुणाओ ॥८१

दो भर सैन क चलि करि आए। जहा यमदग्नि ने कुटीआ छाए ॥
ना कछु अग्नि जल तिहि माही। अति भ चकित होइ मन माही ॥
कामधेनु सुता नन्दिनी पडी। जो मागो सो आगे धरी ॥
इहि विधि निप क फिरि आए। नृप पाहे आद करि ठहिराए ॥
जा विधि दप आ बीचारी। एक एर कर रत्न उचारी ॥
कामधेनु सुत नदिनी जिह माही। जो माग तिस ते सो पाही ॥
सुन महराजुन मे बिधि जानी। तिस प्रन सुन करि मन इहि मानी
नन्दिनी को जिन विधि हमि मंगहु। साईंदास तिस लेव करयहु ॥८२

फिरि नृप आमा वचन उचारे। वान गुणा श्रवण तम धार ॥
ऋषि गा जा करि आप सुनावो। मेरो कह्यो मन महि ठहिरावो

प्रिथमे ऐसे भ्रापि सुनावो। जो नही माने त्यूं उचिरावो॥
नाह त मै पसि करि भी लेवो। मार कुकावो बहु दुःखु देवो॥
चले चले फिरि करि तहां भाए। जहा भ्रपीस्वर भक्ति कराए॥
भाइ भ्रपीस्वर स्यूं इउ कहूयो। नृप धन कारण ठाडा भया॥
धेनु देहु राजा के जावे। जो मांगो भ्रामे ठहिरावे॥
तब भ्रपि कह्यो धेन कसे देवो। ब्रह्म उसहिना क्यु करि लेवो॥
फिरि दोनों नर वचन उचारे। जो ना देवो नृपु मुख मारे॥
तब भ्रपि नदिनी सो इउं बोले। क्रोध वान होइ चरणहि चोन्हे॥
कहे नदिनी ऋषि क्या कीजे। किहि प्रयोग तुम उसि को दीजे॥
इहि भूपति मोह वसु विपसावे। होवे भस्मि बहु बात करावे॥
नदिनी मे प्रतु तांको दीना। कहा विसवासु त मन महि लीना
भाम्या करों सभ को प्रहारो। एक एक को पकिर पछारो॥
तब भ्रप कह्यो सुण सेवहु भाई। एही नृप को तुम कहो सुणाई॥
मै तो नदिनी को ना देवो। ब्रह्म उसहिना नाही लेवो॥
हमिरी हाइ तो तुमि को देवी। मान समान कैसे हिर लेवो॥
हमि तुम को इह कह्यो सुणाई। साईदास कहा तुम ताई॥६१

त्याम कुटीमा दोऊ नर भाए। जो कछु सुण्यो सो भ्रापि सुणाए॥
सुनहो भूपति हमिरी माता। नंदिनी तुमि भाव नही हाथा॥
प्रिथमे हमि तिस सुणाया। नंदिनी देह नृप चितु लुभाया॥
नन्दिनी को नृप ताई देवो। जा तुम भावे सोई लेवो॥
जब विधि उसि को इहि विधि ठानी। तब उसि मे इहि बात बखानी॥
मम माही नदिनी जोई मै देवो। जो माछो तुम चाहे लेवो॥
जब उसि मे इहि बात बखानी। तब हमि उसि को इहि विधि ठानी
जा तुम हिपमान हो देवो। जो मनु मानें सोई लेवो॥
जो तुम हमि को दमो नाही। नृप भाइ मारहि घातु कराही॥
जब इहि बचनु हमि ताह सुणाया। भ्रपु मति क्रोध लोचन समाया॥
मुख ते एही बचन उचारा। नृप कहा करेमो कहो हमारा॥
कामधेनु नन्म कैसे देवो। कैसे ब्रह्म उसहिमा लेवो॥
जो कछु तुमरे मन महि होई। साईदास करो तुम सोई॥६४

जब भूपति इहिविधि सुनी काना। अति क्रोधु उठ्यो मन माना॥
अति क्रोधु करि युद्ध को धायो। यमदग्नि कुटी को उठि धायो॥
घेरा जाइ कुटी को कीना। अपनो शस्त्र करि महि लीना॥
यमदग्नि ऋषीश्वर सब ही कह्यो। कामधन सुता उठि क्या कह्यो॥
एहि पातकु हम युद्ध को धाया। अति आतर होइ कुटी को धाया॥
कामधन सुता कुटीमा तजि आई। सन्मुख सहस्रार्जन धाई॥
सहस्रार्जन सों युद्ध कीना। ताह सेन बहु मार क लीना॥
मार सन ब्रह्मपुरी धाई। एकु भाउ तिनि भागो भाई॥
सहस्रार्जन जोरा कीना। यमदग्नि ऋषीश्वरको घातकीना
यमदग्नि ऋषीश्वर तजे प्राना। साईदास नृप अति बलवाना॥१५

सहस्रार्जन उठि करि धाया। अपने गृह के मग चितु लाया॥
रणका मे अवाहन कीना। पर्शुराम सुतु जान प्रवीना॥
कहा करो तुम पाछे आई। जो तुम अधि ना होहु सहाई॥
जदि रणका इहि मन महि धारी। परसुराम आए तत कारी॥
हे मोह मात कवन दु ख दीनो। कहो मोह जोरा किन कीनो॥
उसि को मोको देहु बताई। मै सग्रामु करों तिस जाई॥
कहा बली प्रगट्यो इहि ठौरा। हमि को तुम बतावो भोरा॥
ताको एक छिन माह प्रहारो। साईदास उसि धर्न पछारो॥१६

तब रैणका ने बचन सुनाए। पर्शुराम सो कह्यो समिझाए॥
सहस्रार्जन बन महि आया। अखेटि कीयो बन महि ठहिराया॥
मैं जल निवापर्त स धाआ। जसु सेन बन माही जावा॥
मैं जसु सैमे को उठि धाई। बन महि मोह सना दिखाई॥
मैं सैना सो बचन सुनायो। कौनु है नामु तुम एहि बतायो॥
तब सना माहु दीयो बताई। नृप सहस्रार्जन इह भाई॥
तब मै मन महि लीयो बीचारा। इहि पतु कहीयै बहिन हमारा॥
मैं जाइ मिर्ये बहिन का भायो। साईदास बहु हेतु बढाया॥१७

मै गई बहिण के मिलने ताई। तिस सरूप सुदर अधिकाई॥
उनि उठि मोको अंग लगाया। महा अधिक उनि हेतु बढाया॥

मै उसि ते विदमा से माई। इसि कुटीम महि माइ ठहिराई॥
विस्म रही विस्म ठहिराई। तवी ऋषीश्वर मै निर्याई॥
मोह कह्यो कित की विस्माइ। कौन दुःख तुम लागो माई॥
सोह वात तुम मोहे वतावो। हमि ते कर्न दुरावो॥
तमि नृप हमि से बचनु उचारा। हे ऋषि पूर्न प्रान आधारा॥
मोह बहिल पतु वन महि आया। असेर कीयो वन महिठहिरामा॥
हमिरे गृह माहे कछू नाही। ताह पसावा पडि वन माही॥
ताको मान्र माउ कैसे सेवो। ताह सैन भोजनु कैसे देवो॥
अव सोह पिता इहि विधि पुण पाई। साईदास सो कह्यो सुनाई॥१८

तब ऋषि नृप ते बचन उचारे। इहि प्रयोग विस्मक चित धारे॥
हमिरे गृह मै मम कन भामा। जा हमिरे गृह गोविंद नामा॥
तुम आइ करिमोजनु कहि आवा। वेग विस्म तुम भूख न लावो॥
मै गई ताह भोजनु कहि आई। वग विस्म मैं भूख म लाई॥
ऋषि गयो ब्रह्म पुरी के माही। म सकस बीचार करो तुम पाही॥
ब्रह्म पुरी ते नविनी ल्याया। ऋषि ने चैन को बचनु सुणाया॥
हे नविनी मेरी हमि देवो। वेग विस्म तुम माह करेवो॥
तब नविनी मेरो बहु दीनी। वेग विस्म उनि भूख नि कीनी॥
पाछे से पीतवर दीने। सो ऋषि ने विछावनि कीने॥
मोजन कनक के प्रथिक निकारे। जो वाछहि वे तत्कारे॥
अनक प्रकार के भोजन कीना। हर्पिमान होइ करि नृप लीना॥
जो सैना मग मभिहू अघाई। उदर भर सभ भूप गवाइ॥
नृप मामगु म करि उनि पाया। केतक मगु चलि करि बहु आया
बोच ही मग क ठाढा भया। कछू सबद मन माहे लया॥
मग न फिरि करि भौ बहु आया। दो नर सैन के तिनहि पठाया॥
नंदिनी को हमि नाई देवो। जो चाहो हमि पाहे लेवो॥
तब ऋषि कह्यो हमारी नाही। मैं मगिमानी ब्रह्म पाही॥
मानि अमानत कैसे तुम देवो। मानि अमान कैसे हिर लेवो॥
जब ऋषि म यहि बचन सुनाया। दो नर तव नृपि करि उठि आया
नृप मा जा करि बचनु उचारा। हे नृप सुनों बचन हम पारा॥

अपु नंदिनी को नाही देवै। हमि सो ऐसे वचन उचरवै ॥
कहे नंदिनी हमिरी नाही। मैं मगि आनी ब्रह्म पाही ॥
वस्तु पराई कैसे देवौ। ब्रह्म उमहिना क्यु करि सेवौ ॥
जब नृप ने एहि बिधि सुण पाइ। क्रोधु कीयो कुटीआ परि धाई ॥
एक धाउ नंदिनी को दीना। नंदिनी ब्रह्मपुरी मगु लीना ॥
पाछे सुमरे पित परि आयो। शस्त्र लीए तिस घाउ लगायो ॥
तोहु पित के हिर लीए प्राना। कहा म तोहु पहि आप बपाना ॥
इहि प्रयोग सुम को पित कीना। तोहु पिता नृप ने हनि लीना ॥
अति म तुम भौ कह्यो सुणाई। साँईदास सुण हो विध साई ६६

पर्शुराम जब येहि सुण पायो। अति क्रोध लोचन ललचायो ॥
अति बलवतु बल कहा बपाना। तांके बल का अतु न जाना ॥
सुंदर रूप सत्य तिह काया। ससी अरु भानु तिस की है छाया ॥
कपमान सुर नर सम होए। आसो नीर सौ तिह मुख धोए ॥
कहा बान इह क्या कछु करसी। कवन संग संग्राम चितु धरसी ॥
सकल सुरो ने भी मन कीआ। साँईदास तिन को सुख दीआ १००

परशुराम आतर होइ आए। करि कुठार ले करि उठि धायो ॥
सहस्राजन को जाइ मारा। सकल सैन को तिहि प्रहारा ॥
नृप की रक्त सो तपन कीना। इहि संकल्प तहा उनि दीना ॥
इकीस बार निसत्राइण करह्यो। तौ कछु मोद बात चित धरह्यो ॥
सम छत्री इकि बार बिडारे। बिर्ला भाग छुटा तिहि वारे ॥
बहुरा तिम ते उत्पन होई। बहुरो पर्शुराम आइ पाई ॥
इकीस बार ऐसे ही कीनो। जिन ने जोरु कीयो वह की जाना ॥
महाबली तांको बल भारा। तिति बल का क्या कहो बीचारा ॥
त्रैलोक को दुःख मिटाव। जो निसबासर हरि गुण गावै ॥
संत जना को बहु सुख देवै। पातक को बहु भागु करवै ॥
जो जो तिह सर्नी चितु लावै। ताके पून होवें कामा ॥
जा जा क्षेम कुशल को चाहे। तौर भार सम सिर ते लाहे ॥
जो जो गोबिन्द का जसु गावै। महा सुखी दुःख भूल मिटावै ॥
हे साधो सकता प्रभु पोवो। राम नाम सिमरो सुख सोवौ ॥

साँति तुम को दुख न लागै। जो दुख होय सभ ही भागै॥
तिस की उस्तिति कौनु बखानै। प्रान पुरख को कौनु पछानै॥
परसुराम पूरन अवतारा। साँईदास कहियो न पारा १०१

राम अवतार

रामायनम

राम नाम नाम हरि रामु। सकल जगति के करतें काम॥
पूरन ब्रह्म ब्रह्म पुरायण। कौसलापति पूरन नारायन॥
गोबिंद सत सहाई रामा। सकल जगत के पूरनकामा॥
रघुबंसी पुरख भगवाना। भयो मुक्ति जिम अंतर भाना॥
अंतर ध्यान ध्यानु तिहि कीना। मुक्त भयो परम पद लीना॥
सकल कारज भुप को दाता। पूर्न पुर्ख हरि आप बिधाता॥
जो जो उस्तिति ताकी करही। बिना नाउ बहु भौजलु तरही॥
क्रिपा निधान क्रिपा जन करही। अपना जान जग पार उतरही॥
सीता नाथ अनाथ को दाता। सदा सदा सतन संग राता॥
जो बाछे हि तिन को देवै। सुप्रसन्न जन को करि सेवे॥
को कहि सके उस्तिति हरि करी। हरि बड रखे मिर्जी की बेरी॥
हो गोबिंद दुख सतन नासा। सवि निरन्तर जाको वासा॥
प्रान अधर्न सत सहाई। कौसलापति सतन सुखदाई॥
महा गमीर कछ अंतु न ताको। कहा करे कोई उस्तित वाको॥
तांकी सर्नी मैं किनु देवो। सुप्रसन्न आन्म करि सेवो॥
राम नाम माधो गुण गावो। साँईदास छिनु ना अलिसावो॥१॥

महाराज मंतिमनि सुखदाई। गुण निधान मै था गर्नाई॥
जग जानो हमे प्रभ रापो। त्याग न देवो अपना भापो॥
तुम हरि ठौमम ठौर न देखो। प्रभ जी अपनी ठार तकि पयो॥
पतनि उधारन नामु तिहारा। सदा सदा जिन बिर्द सम्हारा॥
जो हमि अघ कीए सभ निवारो। अपनी किर्पा हमि परि धारो॥
जा जावकू जाच हर धामा। कीर्त दानु हर बिर समाना॥
परानो बिद हरि तुमहि समारो। साँईदास परि किर्पा धारो॥२॥

एक विनती प्रभ तुम प करही। भपनो सीसु तुम पगि परि धरही।।
एक बात हमिर मन माई। सो तुमि हमि को देहु बताई।।
काल पुरख कहो कमु करि पाई। काल पुर्ख कैसे ध्यानु लगाई।
काल पुर्ख कस जपीए नामा। काल पुर पूर्न सभ कामा।।
इहि विधि हमि को देहु बताई। तुमि बिनु हमिरो कोऊ न सहाई।।
हे माधो मुकंद मुरारी। हे माधो सतन हित कारी।।
हे माधो खिण महि तार्ण हारे। हे माधो सतनि रखवारे।।
हे माधो पूर्न भगवाना। हे माधो सभ माह समाना।।
हे माधो धर्नी धर गोबिंद। हे माधो पूण पर्मानन्द।।
हे माधो त्रिभुवन के नायक। हे माधो सुख सहिज समाया।।
हे माधो विर्था सभ जानौ। हे माधो जोगनि न वपानो।।
हे माधो धार्न सभ धर्ना। साँईदास सभ काण कर्ना।।३।।

निरकार सभ माह समाया। निरकार सभ रचन रचाया।।
निरंकार सभ हूते न्यारा। निरकार सभ माह निहारा।।
निरकार पूर्न रघुराई। निरकार सतन सुपदाई।।
निरकार की गति को जाने। निरकार को कौणु पछाने।।
निरकार पूर्न अबिनासी। निरकार दुख को है नासी।।
निरकार जनु हूवे पछाने। निरकार सभ महि करि जाने।।
निरकार सो मुक्ता कीना। निरकार निर्भो पद दीना।।
निरकार ब्रह्म को दायक। निरकार त्रिभुवन को नायक।।
निरकार घटि घटि समाया। निरकार सभ जगु उपाया।।
निरकार निर्लेपु गुसाँई। निरकार सिमरो मन माही।।
निरकार त्रिभुवन को साँई। निरकार सिमरो दुख जाई।।
निरकार सूक्षम अस्थूलं। साँईदास जीवन वहि मूलं।।४।।

निरभो है निरवैर गुसाँई। निर्भो है त्रिभुवन को साँई।।
निर्भो है मुकद मुरारी। निर्भो है जिन रचिना धारी।।
निर्भो है प्रकास प्रकस हर। निर्भो है माधो धर्नीधर।।
निर्भो है त्रिभुवन को राया। निर्भो है दुख सुख को राया।।
निर्भो है महाराज के राजा। निर्भो है महाराज बेमुहताजा।।

निर्भो है जुग जुग अवतारा। निर्भो है प्रभ तापनहारा॥
निर्भो है बावन वपु धारा। निर्भो है संतनि रखवारा॥
निर्भो है मनाथ को माया। निर्भो है तिसि सब कछु हाथा॥
निर्भो है रघुपति रघुराई। निर्भो है लछमण सग भाई॥
निर्भो है त्रैलोक को दाता। निर्भो है घटि घटि महि राता॥
निर्भो है भी ताहि न ध्यावै। निर्भो है सब को तिस जावै॥
निर्भो है साईदास के दासा। निर्भो है जिन हर की आसा॥५॥

रघिपति को अवतार सुनावों। मम बतांतु मै ताहि बतावों॥
साधा श्रवण धार सुण लीवै। और बात कछु हृदे न दीजे॥
जो श्रवण धार एहि सुण लवै। तांपरि प्रभ जी किपा करवै॥
सदा सदा मुकता जग माही। सो को दुख कोऊ लागै नाही॥
जनम जनम के अघ कटि डारे। डूबनि बंडी पार उतारे॥
जैसे पखाण जलहि तरायो। वेग तिरन कछ भूल न लायो॥
जसे तुम को भी जल तारे। एक छिन मैं पढि पार उतारे॥
जो बाछैहि सोई कछु पावै। जो रघिपति बसु हृदे बसावै॥
माधो तुम को कहीं पुकारी। तुम मनि माहे सेहो बीचारी॥
सदा सदा रघुपति जसु गावो। अपने घट महि सदा बसावो॥
जिहि बिधि रघुपति लियो अवतारा। सकसा तांका कहो बीचारा॥
माधो सुण हो हितु चितुलाई। साईदास मुकति जन पाई॥६॥

रावण देतु महा बलकारी। दस सिर बीस भुजा बसु भारी॥
एकु सदा पूतु मथा भए नानी। कुभकर्ण भाई तिहि सानी॥
ब्रह्म के आश्रम चलि आया। ब्रह्म भक्ति का हेतु बढाया॥
महा कठिन तपु रावण कीना। तब ब्रह्म मन महि ग्रह लीना॥
जो माग गा॰ इगि देवो। मुप्रसन्न मनु इसु कर लेवो॥
मा॰ भजनु ॰नि अधिक कमायो। माह भजन सो बहु हितु लायो॥
बहु अधीन भजनु उनि कीना। रावण अधिक भजनु करि लीना॥
महा कठन तप भजनु कमायो। साईदास ब्रह्म सिव सायो॥७॥

ब्रह्मा प्रगटि भयो तिह पाही। सोच बीचार करी मन माही॥
ह रावण तुमि कछु मग लवो। सका कछु न मन महि लवो॥
जो तुम मांगो सोई देवो। बेग बिलम तुम नाह करेवो॥
तब रावन ने वचनु उचारा। हे प्रभ पून प्रान अधारा॥
हे प्रभ मोको येही देवो। जो मांगो सा कृपा करेवो॥
सुरों असुरो से ना मै मरहो। इह जाचनु प्रभ तुम प करहा॥
मानस कपि कहा निकट आवहि। त्रैलोक मोह बल कपावहि॥
ब्रह्मा कह्या ऐसे ही होई। जो तै माना देघा सोई॥
अवि जाइ सुख बसो गृह्न माही। औरु हृद आनी कछु नाही॥
ब्रह्म जब एहि बात वषानी। साईदास रावण मन मानी।८॥

करि डंडौत रावण उठि धाया। तेह बल ते त्रलोक कपाया॥
कनक पुरी त्रिकूट ग्रह लाका। सागर पाइ है फुन बांका॥
वस्तु कुमेरु तस क माही। ताके मन महि भौ कछु नाही॥
रावण न बहु जोरा कीना। जका गढ़ ताते हिरि लीना॥
आप तहा जाइ लीयो निवासा। नित नित कसु लोको त्रासा॥
कुमेरि को ताथो दीयो निकारे। अति अभिमान हृदे महि धारे॥
कनकपुरी को लीनो राजा। महा बली बहु बेमुहताजा॥
जब जमु पकिड के बंदी पाया। त्रैलोक अपुने बस ल्याया॥
महाबली तिह सरि नही कोई। साईदास सम्मुख कोऊ होई।९॥

असुर बुलाइ लीए सम तब ही। तांको आग्या दीनी जबही॥
जो काइ जमु करे भाई। तहा परो जब ही तुम धाई॥
तिह जगु पूर्ण कण न देवों। मार कूनि वस्त्र धनि लवो॥
येही आग्या तुम को दीनी। एहि बात मन माहि मे लीनी॥
मेर कह्यो मन महि ठहिरावा। और बात कछ हृद न ल्याव॥
बार बार तुम कहा पुकारी। मानि माहे तुम बहु बीचारी॥
एह काम कर्मी पितु मायो। आग्या मम मनि महि ठहिरावो॥
असुरो येहि आग्या मनि लीनी। ताकी आग्या हृदि मन कीनी॥
महाबली तिम असु अधिकारी। साईदास सभ कह्यो बीचारी॥१०

सकल सुरों को हुकमु मनाया। गुर किर्पा ते आप सुणाया॥
सुरपत को तिन लीयो बुलाई। ताहि कह्यो सुण रे मेरे भाई॥
पुहप निसाप्रति तुम ले आवो। हमिरे आगे आण टिकावो॥
सुरपति ने इहि मन महि लीआ। पुहप चुणनि नितु अपणो दीआ॥
बहुर बसंतर लीयो बुलाई। तासो रावण आप सुणाई॥
सूपकारु हमरो तुम होवो। निसचल अपने ग्रह मै सोवो॥
बिसतर[1] मन महि धरि भाई। जो कछु रावण आग्या कीई॥
ससीअर लीयो बुलाइ ततकारा। रावण बैठ महाबलु भारा॥
ससीअर को तिन आप सुणाया। मन करि प्रीति उनि तिसे बनाया
मोहि सिर छत्र तुम कर महि राखो। और बाति कछु ना तुम भाखो॥
ससीअर ने मन महि ठहिरानी। जो कछु रावण मुखो बखानी॥
पौण बुलाइ लीयो बलकारी। ताहि कह्यो सुण बात हमारी॥
तुम बुहना हमरे ग्रह देवो। सदा सदा इहि काम करवो॥
जो तुम हमिरा कामु न करहों। कोई और बात चित धरहों॥
टूक टूक तोहि तुम्ह करि डारो। एकपल माहे तुम्हहि बिडारो॥
पौन कह्यो हे नृप बलिकारी। तुम सुण मेरी बात हमारी॥
जो ते कह्यो सो मन महि लीआ। अपुने घटि अंतरि मै कीआ॥
सदा सदा बोहणा मै देवो। और कामु कछु नाहि करेवो॥
मारति मान लीयो जो कह्या। जोउनि कह्या सो मन महि सह्या
पाछे रावण धर्मु सदाया। तासो ऐसे आप सुणाया॥
तुम हमिरे ग्रह नीर भ्याओ। हमिरे द्वार परि छिड़कावो॥
धर्म हृदे महि धरि करि लीना। जो कछु हुकमु रावण ने कीना॥
धर्म मान गयो ग्रहि माही। ताको बसु कछु लागो नाही॥
रवि को लीनो तबै बुलाई। ताको रावण यही बताई॥
मै पतिहारी तुम को कीना। एहि बात मै मन महि लीना॥
रवि ने मन महि लीयो ठहिराई। तासो बसु न बसावै भाई॥
बहुना दुख देव को दीआ। साईदास उनि सभ बस कीआ॥११

---

१ बिसतर—अग्नि।
२ मार्ति<मारुत—वायु।

सम सुर ब्रह्मे पाह पुकारे। तुम हो महाबली ग्रधिकारे ॥
हमि को बहु दुख रावण दीना। ग्रपुने गृह महि बदी कीना ॥
हमि तुमत्याग ग्रवर किसु पावहि। ग्रपनो दुख हमि किसप भाखेहि ॥
जो तुम हमहि न करो उपराला। कौन होइ कहु हमिरो हाला ॥
हमि बसु ता संग कछु न बसाए। खीर समुद्र को पग धाए ॥
चला चला दधि के तटि ग्रायो। मुख ते बेद चतुर उचिरायो ॥
इति विधि मुख सें बेन्‍ बखाने। तीन लोक महि सभ ही जाने ॥
पाछे से बिनती येहि कीनी। साँईदास मुख से उचिरीनी ॥१२

हे प्रभ सुर बहुता दुख पावहि। तुझे त्याग ठौर कहा जावहि ॥
रावण दस्य ग्रधिक दुख देवें। महा कष्ट देवनि को देवें ॥
तुम भक्तिन के सदा सहाई। सभ प्रकृति है तुम पहि ग्राई ॥
ज्युं जानो त्यु दुख मिटावो। बेग बिल्म तुम मूल न लावो ॥
जब ब्रह्मे येहि बचनु उचारा। त्रिहु लोक महि सुन्या बीचारा ॥
शब्द ग्राकास ते उत्पति होया। म सा सुख मंदिर महि सोया ॥
जब से सेन इहि करी पुकारा। तब ही म मन लीयो बीचारा ॥
ताहा चितु ग्रपना ठहि रापो। राम नाम मुख ग्रपुने भाखो ॥
मैं दसरथ गृह त्या ग्रवतारा। तुम मरिकटि होवो सुर सारा ॥
ब्रह्म जब बाणी सुण पाई। सकल सुरो सों कह्यो सुनाइ ॥
चितु धरि ठौर तुम ना उकिसावो। राम नाम हृदे माह ध्यावो ॥
दसरथ क ग्रहि माह प्रभ ग्रावें। दुख दव तुम सभू मिटावें ॥
तुम सभ ही मर्कटि बपु धारो। राम नाम घटि माह बसावो ॥
जब सभि ही सुर यह सुण पाई। वेग बिल्म उनि मूल न लाइ ॥
ततकार सुर कपि बपु लीना। साँईनाम यहि काएा कीना ॥१३

दसरथ नृप ग्रहि सुतु ना कोइ। ताहि उपिचार म नीम कोइ ॥
त्रबनिता तिस क गृहि माही। तिन गृह सुतु हावे कोऊ नाही ॥
एकि कौसल्या है तिसु नामा। द्वितीया कौकही तिसु भामा ॥
त्रितीया सौमित्रा ही कहीयं। तीनो नाम इम माह सहीयं ॥
दसरथ मे इकु बागु बनाया। धनप बाग म तहा ठहिराया ॥
ताहि ताम रपिवाला रहिही। मिसबामर ऊधु बहु बहरी ॥

जब लगि बाह्मण ना त्र्यु आवा। तब लगि इसि ऊपरि ठहिरावा॥
जो पंथी मृग पाणी ना पीवै। इसि का जसु सूठा ना थीवै॥
इसि प्रयोग ताल परि रहुई। निसबासरि तिसि ऊपरि वहिई॥
अंधी अंधा कांधे लीए। सुरिवण सुत तिह मग पग दीए॥
पूर्ण जसु पिता को नामा। मांइ मुनेती सम घटि रामा॥
चल्यो आवति तिह मग माही। अति अंधु तिहि दुःख को नाही॥
अंधी अंधा त्रिपा सतायो। तब उनिनें सुप बचन सुनायो॥
हे सरवण सुत त्रिपा सताए। तौ बिनु हमि को त्रिपा बुझाए॥
त्रिपा गह्यो हमि को अधिकाइ। जलु आण देवो तुम हमि ताई॥
नाहि ति निश्चित प्रान हमारे। पाछे कछु न होवत पछुतारे॥
तब सरिवण ने मनि ठहिराई। बहिंगी ले ब्रिछ सों अटिकाइ॥
गडिवा ले जल कों पग दीए। आइ ताल भरण चितु कीए॥
तिहि भकभकाट दसरथ कानि परयो। कह्यो किसी मृग जल पगु धरयो
सरु साध्यो सरवण को मारा। तब सरवण ने एही पुकारा॥
हे दशरथ पापी क्या कीआ। तै मुझको घातु करि लीआ॥
तब दसरथ बहुता पछुताना। कहा होइ अब बिपतु बिहाना॥
सरवण कह्यो गडिवा मैं आवो। पछि जलु तुमि जाइ तिनहि पीलावो
मुखो न बोली गडिवा छिणकावो। एहु काम तुम आइ कमावो॥
जो मुप बोले ओहु न पीवहि। साईंदास बहु त्रितक थीवे॥१४

गडिवा ले दसरथु जब आया। चल्या चल्या दोनों पहि आया॥
जलु गडिवे माही छिणिकाया। अंधी अंधे कौ सुणवाया॥
अंधी अंधे बचन उचारे। हे सरवण सुत प्रान हमारे॥
काह ना आवति हमि नेरे। बहु तू क्या आयो चित तेरे॥
मुखि ते बचनु काहे नहीं आयो। मात पिता को बयु ना भायो॥
सरवण कहा जो मुखि ते बोली। साईंदास मन महि बहु डोलै॥१५

हे पापी तू कौनु कहावै। भूत प्रेत हमि क्यों न बतावै॥
तब दसरथ ने बचन उचारा। मैं अपराधी सरवण मारा॥
मैं जाण्यो मृगु कोई आयो। तिह प्रयाग म बाणु लगायो॥
जसु न आया हों न पीवै। हमि ऊपरि पुत्र्यो ना थीवो॥

तब अंधि कह्यो चिपा वणावो। अपने करि तीनों जलावो॥
तब दसरथ कह्यो एहु न करहों। ऐसी बात परि चितु न धरहा॥
होवन होइ सोई कछु होइ। सांइदास और करे न कोइ॥१६

अंधे अंधी कह्यो कसे जीवहि। विनु सुत सरवण किउ सुख पीवहि
सरवण सुत को वेग ल्यावो। हे दसरथ तुमि प्राण दिवायो॥
दसरथु सरवण को ले आया। अंध अंधी को प्राण दिवाया॥
तिनहि त्रिप्र भाम कछु नाही। हाय लाइ बहु रुदन कराही॥
रुदन कीयो करि वचन उचारे। हे दसरथ पातक बहु मारे॥
चिपा बनाई करि हमहि जलावो। वेग विलम तुम मूल नि लावो॥
तब दसरथ ने चिपा बनाई। ले लकिडी वन की अधिकाई॥
तीनों चिपा ऊपरि स पाए। सांइदास माहुति अग्नि लाए॥१७

ताहि चिपा को अग्नि लगाए। तब अंधी अंध वचन सुणाए॥
जिहि वियोग हमि तजे प्राना। इहि वियोग निकसिहि तुम जाना
अब उनि ने इहि बचनु उचारा। तब दसरथ मनि सीयो वीचारा॥
भलो सरापु दीयो हमि ताई। इहि सरापु सुतु हमि गृहि भाइ॥
प्रिथमे तो सुतु मोह ग्रहि भाव। पाछे मोह बियोग लगावे॥
अनद मान होइ ताहि जमायो। तिनहि जलाइ करे गृहि भायो॥
भाइ सिंहासन ऊपरि थवयो। मन अंतर इहि भाण करया॥
तब बशिष्ठ को लीयो बुलाइ। तासो बिनती आप सुनाइ॥
हे गुरदेव कछु करु उपचारा। माहुति कुल होइ नासु हमारा॥
जो माह ग्रहि संतत ना होवे। तब कुल नास हमारा होव॥
एते करा मोह सतत हाइ। तुम विनु अवर न कर्मी कोइ॥
तब वशिष्ट न थाप सुणाया। साईदास मेहि अधनु बताया॥१८

सिंडी ऋषु वनि माहे रहइ। महा ऋषीश्वर पूर्न कहइ॥
किसो बात करि तिस ल्यावो। उसि को प्राण इहा टहिरावो॥
और इहा प्राण करि यज्ञ कराए। तुमको और कछु भलो मनावे॥
तब तुमरे गृह सतन होई। इह वीचार और नही कोई॥
जब दसरथ इहि विधि सुणपाइ। फिरि वशिष्ट सो बात चलाइ॥

बहु सिंङी ऋषु जैसे आव। नगर माह आइ करि ठहिराबै ॥
सब वसिष्ट मे दीयो बताई। हे दसरथ नृप सुण मेरे भाई ॥
सुंदर बनता अधिक पठाबो। मरो कह्यो मन ठहिराबो ॥
अति मिष्टान बा ताहि पसावनि। साम मान करि ताह ल्याइनि ॥
दसरथ बनता अधिक बुलाइ। तिह मिष्टानु देवनहि पठाई ॥
दसरथ तांको कह्यो सुनाइ। तुमि सुएा अबो मेर माई ॥
इहि मिष्टानु ताहि ऋषपहि पसाओ। सिंङी ऋष कों ईहा ल्याओ ॥
इहि मिष्ठानु सिंङी ऋषि दबी। एहि बात तुम मोह करबी ॥
ज्यु आना त्यु तिस बपाया। ज्यु उ जानो उसि कों ईहा ल्याओ
बनता सभि तब ही उठि धाइ। चली चली ऋषि पाहे आई ॥
सिंङी ऋषि प्रभ सो लिउ जोरी। बनता सम आमे धमु हारी ॥
बनिपत स मिष्टानु लगाया। जहा सिंङी ऋषि आसणु छाया ॥
ध्यान छूटो तिह पुष्पा ल्यायी। तोड लीए बनिपति तिह आपी ॥
पात तोड मुख माहे दीने। रस्ना स्वाद अधिक बपि लीने ॥
भूख परयो रस्ना स्वाद लीए। नेत्र पोलह इति उति उनि कीए ॥
बनिता तिहि निर्पी उठि आया। उनि बनिता मिष्टानु पसायो ॥
एक बनिता आग उठि धाई। दसरथ कौं आइ पबर सुणाई ॥
हे भूपनि ऋषि को ले आई। साईदास पो तुम्ह पठाई ॥१६

सुण दसरथ आमे कौ धायो। सिंङी ऋषि पै जाइ ठहिरायो ॥
अति डंडौत ताहि को कीनी। हे प्रभ हम पै किर्पा कीनी ॥
चलि सो गृह सेवक के माही। क्रिपा करी प्रभ तुम अधिकाही ॥
सिंङी ऋषि को गृह ल आया। प्रजंग ऊपरि आए बैठाया ॥
आदर भाउ अधिक तिहि कीनो। करि जौरे बिनती उचिरीनो ॥
हे प्रभ मोको यग्य करावो। मोहु गृह संतत तुम उपजावो ॥
तुमि बिनु ओटि हमि को माही। तोह क्रिपा ते सतति पाही ॥
सिंङा ऋषि कहो बहु नीका। भलो कह्यो मुख चाहो जी का ॥
आन भूपति मे सुण करि पाया। दसरथ मे बहु यग्यु मचाया ॥
आन आन नग्र के भूपति आए। आइ अयोध्या महि ठहिराए ॥

स्त्रिपु तिहि यज्ञ करावन लागा। दसरथ और बात सभ त्यागा॥
सिंगु धरो तुम यज्ञ करावहि। साँईदास सतत उपिजावहि॥२०

कुंडि कीयो तहा अगनि जलाई। घ्रित तिल अक्षत लीयो बुलाई॥
ताह अगनि महि होमु सु कीना। घ्रिततिलअक्षत डार तिह दीना॥
अग्नि से प्रगटयो इकु रूपा। अति सुभ गात तिहअधिक सरूपा॥
कनक थार खीर कर लीआ। कौसल्या कैकेई को दीआ॥
तब ही सुमित्रा मुखा पुकारा। हे प्रभ बाँटा कछू हमारा॥
मो का भी प्रभ जी कछु देवो। हमि परि भो तुम क्रिपा करेवो॥
कछु उन ते कछु उसते लीआ। ले सुमित्रा का उनि दीआ॥
दसरथ की तिहू वनिता पाया। यज्ञ करि सिद्धी ऋपु बन धाया॥
केतक दिन जब भए वितीता। जो दिन से दसरथ यज्ञु कीता॥
कौसलापति पूरन गोसाँई। धरनीधर सुन्दर अधिकाई॥
तजि बैकुंठ गर्भ महि आयो। कौसल्या गर्भ आइ ठहिरायो॥
कौसल्या रूप भयो उजीआरा। रवि ससियो मिटि गया अन्धयारा॥
मानो पुतली कनक बनाई। तिह उस्तित कछु कही नि जाई॥
ब्रह्मा शिव दसम को आए। दर्शन कर उस्तित उचिराए॥
हे प्रभ हमि दधि के तटि गए। तहा जाइ परि ठांढे भए॥
तब हमि करी बिनती त्रिभवनराया। तब तुम गगनि सो बचनु सुणाया
मैं आवो दसरथ ग्रहि माही। दूख मिटावो तुमरो ताही॥
तब हमि लीने हुदे सम्हारा। हे कौसलापति अपर अपारा॥
कथा आमो कथा माही होई। तब हमि विस्म भए अधिकाई॥
तूँ सतम को सरन गहाई। तुमरी उस्तिति सभ बनि आई॥
तुमरी उस्तित कहु को जाने। साँईदास सभ मत्त बखाने॥२१

जहा जहा संतनि भीर होई। तहा तहा प्रभ जा तम पाई॥
तुमि बिनु गगन को सुप दय। तुम्हि बिनु का जनु क्रिपा करवै॥
तुमरी उस्तित कहा बखाने। तमिरी उस्तित हमि नहीं जाने॥
तू अबिनासी मामु म तेरा। अराम सुन गुरम अधिपारा॥
तीन लोक महि ताह प्रकाशा। जोग जप सभ तेरी आसा॥
तेरो अंतु न पावै कोई। जो तुम्हि भावै सोई होई॥

धन को तू सुख देवन हारा। सकल लोक महि तुही उधारा॥
घटि घटि जोत हर तोह समाई। तुमरी उस्तित कही नि जाई॥
कहा कहो उस्तित मै तेरी। रसना थोरी है प्रभ मोरी॥
सदा सदा तू रापणि हारा। आपे एकु आप बिस्तारा॥
जोह जत सभ तुम्हहि बनाए। तुमरि गत को को हर पाए॥
सदा सदा हम सर्न तिहारी। तू दाता हमि दीन भिखारी॥
निर्भो निरकार पूर्न भगवाना। घटि घटि की बिर्था तुम जाना॥
रूप रेख कछु बनि न सावे। मै फिरि उस्तित कैस भाषो॥
मोहि पै उस्तित कही नि जाइ। साँईराम प्रभ सकल समाई॥२२

ब्रह्म सिव दर्सनु करि आए। अपनो अपने ग्रहि जाइ ठहिराए॥
कौकेही सुमित्रा को गर्भु होया। दसरथ ससा मन ते षोया॥
जब त भए सपूरण मासा। कौसापति हरि जनम को आसा॥
चैत्र स्वेत नौमी तिथि आई। तिह दिन जन्मु लीयो रघुराई॥
जन्म लीयो दसरथ के नंदनि। तीन लोक ठाकुर असुरदनि॥
भयो उजीआरा तिमर बिनासा। दसरथ की पूर्न भई आसा॥
निर्त्या सुनु अनद बहु हाया। दसरथ ससा मनि ते षोया॥
ज्यो दस दिन भए बितीता। नामु कर्न दसरथ तिहि कीता॥
बशिष्ट प्रोहतु लीया बुलाई। भूपति तिह सभे लियो सदाई॥
हिर्णमान भोजनु तिहि दीना। धन अपार बर्णाम्रत लीना॥
रामचंद्र की नामु रखायो। दसरथ अग अंग हिर्षायो॥
गऊ अमित बिपो को दीनी। बिपो न स्वस्ति नृप कीनी॥
बहुरा कौकेही गर्भु जायो। तिहि गर्भ ते सुत बाहिर आयो॥
ताका नामु भरत तिहि रापा। बशिष्ट प्रोहति ने जो भाषा॥
बहुरो सुमित्रा ब आए। दो सुत तिहि गभ बाहरि आए॥
दसरथ तिन्ह का नामु रखाया। लछमण् तीर सत्रघनु ठहिराया॥
बड भए नृप दसन निहारे। दसरथ की अति भए प्यारे॥
ग्रहनि फिर्न पेसनि ग्रहि माही। मत मनंदु सीक कछु नाही॥
बहुरा पग सो मग महि चालहि। अधिक सोभति जो मडिमुडि हालहि
धनप लीए कर पेसन जाही। पर नीदाना पाए चलाही॥

धन्य विद्या उनि ने सिप लीनी । धन्य विद्या यहु मन महि कीनी ॥
श्री रघुपति सुदर अधिकाई । साईंदास दर्सन बस आई ॥२३

महाबली तिहि बलु अधिकारा । जिह बल कछु न पारावारा ॥
धरि नीशाना बाण चलावहि । नितापत इहि बात कमावहि ॥
दसरथु देप तिन को हिर्षाए । अंग अ ग महि नाहू समाए ॥
चतुर सुत दसरथ गृहि होए । दसरथ सकले सबे पोए ॥
तिम को देप अधिक सुख पाए । स तिन गोदी माहू बहाए ॥
राम रोम सीतलु तिह होव । शीत सप्त हुदे ते पोवें ॥
जस मोर पुहप निर्पाहिं । अति अनद होवत मन माहू ॥
जैसे मृगु बनु हरिया दप । अति अनंदु व्यापति तिण पेपै ॥
जैसे पंखी फलु ब्रिग धारे । हिर्पमान होवत सत्कारे ॥
जैसे बृद्ध देन जलधारा । हर्यो होत सग से परिवारा ॥
तैस नृपु दसरथ हिर्पाए । साईंदास अभ दर्स न्पिाए ॥२४

रावण दैत्य महा अधिकारा । ताहि भुजा बलु है बहु भारा ॥
जा विष जग तिन्ह नोदु द सीमा । अति अभिमान हुवे महि कीना ॥
विपो को कह्यो हम कछ देवो । मोह मान मान तुम लेवो ॥
तब बिपा कह्यो कछु क्या देवहु । तोहू मान मान करि सेवहु ॥
रावण कह्यो जो कछु तुम पाई । सोई देवो तुम हमि ताई ॥
विपो तन ते रक्ति निकारी । कुभ लीयो तिन्हो तिथि महि डारी ॥
कह्यो सहु नृप इहु हम माहो । अवर कछु हमिरे पहि नाहो ॥
रावण कुभ लीया ग्रह आया । जोतकी पडित तब हो बुलाया ॥
तामा कुभ नृप प्राण न्पिारा । हमि को इमि का देहु वीचारा ॥
जोतकी निप करि कह्या वीचारी । हे नृप इनि का सहु बाधारी ॥
इगो रक्त ते कन्या होव । साईंदास रावण जीउ पोव ॥२५

जपत पवण इहिविधि गुण साई । बिना अधिक हुद महि कोई ॥
अभ रक्त सौ दधि महि डारा । तहा निरकार रचिना इह धारा ॥
एक मानकुमु उन्नर महि कीया । रखा समंत उदर महि सीया ॥
मेनर न्नि उर्नरि महि राखा । ताहि मार मीन मम गह्या ॥

वाही मीन फमकि फहाई। चलु ततिखो वाहिरि बहु भाई॥
मीन अधिक वपु ताह वडेरा। वंधकु निर्प भयो बिस्मेरा॥
जनक विदेही तिह कछु दीना। वाहै मीन जनक मे लीना॥
ताह मीन को उदिर बिडारा। तिस महि इकु कुम निहारा॥
जब नृप द्रिष्ट कुम महि कोई। कंन्या सुंदर द्रिग देपि सोई॥
जनकि तवहि पंडित बुलाए। कमु सीयो से तिसहि दिपाए॥
हे प्रभ मोको उत्तर देवहु। येह अचर्ज देखि द्रिग सेवहु॥
तब सुभ पंडित उत्तर दीना। जन्क विदेही सुण करि लीना॥
एहि कन्या को पर्गटि होई। रावण को मीच एहि पोई॥
रावण मारन को इह भाई। सम पंडित इह बात सनाई॥
जब पंडित इहि बात उचारी। साँईदास तब जन्क बीचारी॥२६

तब कह्यो जन्क सुणहो प्रभ स्वामी। तुम सम विर्षा[१] अ तरजामी॥
इसि की उत्पति कहा ते होई। सम विर्षा सुणावो मोही॥
तब पंडित ने बचन उचारा। सुणहो नृप तुमि बात हमारा॥
रावण दयू महा अधिकारी। ताको बसु भुज है अति भारी॥
तिसि ब्राह्मण को बहु दुख दीनो। सम ब्राह्मण अपने वस कीनो॥
तिन को कह्यो हमि को कछु देवो। मोहि मान-मान करि सेवो॥
तब उनि कह्यो कहा हमि देवहि। तोह मान मान करि सेवहि॥
तब रावण कह्या कछु तुम देवहु। मेरो कह्यो मान तुमि सेवहु॥
तब उन्हों तन के रकत निकारी। कुंभ सीयो मे तिसि महि डारी॥
रावण कुम लीयो ग्रह आया। जोतकी पंडित तिसे बुलाया॥
ताह कह्यो सुण हो मेरे भाई। इसि की बिधि मोह देहु बताई॥
पंडित तिप रावण सो भाषा। तोह काधु है इहि बिधि भाषा॥
तब रावण मै चक्रित हों रह्या। ताकी मति कछ जाइ नि कह्या॥
यम रकत सा धमि महि डारा। धमि महि गोबिंद रचना धारा॥
सो सम बात मै तोह बीचारो। साँईदास सभ संसा टारो॥२७

एक मीन निकस करि मीया। कुंभरक्नि सों उदर महिकीया॥
कनकि दिनतिहि उदर महिरह्या। कुंभ को भार मीन मन सह्या॥

---

१ यहां विर्षा शब्द भाषा के लिए आया है

माही मीन फषकि मे फाही। सोई मीन इहि हम प भाई॥
तिसि रक्त स कन्या होई। हे नप भौर नाह इह कोई॥
जम्पि पडित सभ विदमा कीने। कनक गऊ कछु तिन कछु दीन॥
कन्या पकि रापी गह माही। दुहिता जान करि ताह पलाही॥
तब रोभ्क सीता नामु तिह रापा। और जानकी मुख त भापा॥
दस्त कडे होइ भधिकायन। भपुने कर कर भोजन पायनी॥
भधिक भई पग चलिए लागी। बाल भवस्ता उनि ने त्यागी॥
सदर रूपु कया रूप बपाना। ताह रूप उस्तित कया जाना॥
ससी भद भानु देपत छपि जाई। देपि मिसा कहि मन सुकचाई॥
फिर्त फिरत सपी सग लीए। भरि जोवण चाहति रस कीए॥
भ वर भधिक जो भ ग उजावै। ताकी महिमा कही नि जाव॥
भति सरूप सुंदर भधिकाइनि। साईदास तिहि वस बस आयनि॥२८

सिव को धनुप दरि भागे परिमा। जनु ताह पूजा मित करिमा॥
महा भम्नि जोधे जो भावहि। तौ उसि धन्पि कौ ठौर उठावहि॥
चौका देह ठवर वहा रापहि। जनु ताह पूजा चितु रापहि॥
निता पर्त एही उसि कामा। जनक विदेही नृपु तिह नामा॥
जान्की द्वादश वर्ष की होई। तिहि स्मसर भौर रूप न कोई॥
सखिमा स सग वाहिर भाई। भाई धन्प पाहे ठहिराई॥
ससीमन सों उनि एहि भापा। गोवरु तुम ल्यावौ एहि भापा॥
धन्प ठौर चौका मै दवौ। इसि की सेवा म कर लेवौ॥
मरो कहा मन महि ठहिरावो। साईदास छिनु बिलम म लावौ॥२९

तब सखीमा सीता स्यूं भापा। हे जान्की तैन कया भापा॥
जो केतक जोधे ईहा भावहि। तौ इसि भप कोमसा उठावहि॥
कहु तू कसे इस उठावहि। क्यूं करि तू ईहा चौका पावहि॥
तब सीत कह्यो तुम भई इयानी। मोरी विधि तुमि भजहू न जानी॥
मैं मवि कर सो इसे उठावौ। छिन पल वग बिलम नही लावौ॥
सखीमा कह्यो प्रतीत नि भाव। किति विधि तू इसि धन्पि उठाव॥

१ भोभा < उपाध्याय = पुरोहित।

प्रियमे तू इसि सहु उठाई। तव हमि गोवरु स्यावहु जाई॥
तव श्री जानकी ने इह कीश्रा। करि सो धन्पि उठाइ करि लीग्रा॥
सब सभ सखीग्रा मैं चक्रिति भई। ग्रति मैं चक्रति मन महि हो गई॥
दौरी श्राइ गोवरु ले श्राई। जानकी जी पै श्राइ ठहिराई॥
जानकी गोवरु तिहि सै लीग्रा। एक करि धन्पु ले चौंका कीग्रा॥
वहुरो धन्पु तहा ही राख्या। जान्की कछ मुख ते ना भाख्या॥
धन्पि राप ग्रहि को उठि धाई। चली चली ग्रहि माहे ग्राई॥
पाछे जनकु विदेही ग्रायो। चौका पाया तिन निर्पायो॥
रह्यो मैं चक्रित मनि के माहे। साईदास पूछति सीताहे॥३

कहा किने इहि चौका दीग्रा। एहि कामु कवन ने कीग्रा॥
तिहि सपीग्रा तव भाष सुणाग्रा। जान्की म एहि लेपु कराया॥
तव ही नृप ने वचनु उचारा। इहि तौ धन्पु महा बहु भारा॥
कमु करि जानकी धनपु उठाया। ईहा लेपनु कैसे करामा॥
तब सपीग्रा नृप सो इउ भाषा। एक कर धनपु उठाया राषा॥
एक कर ईहा लेपनु कीग्रा। जानकी ने बिधि करि के लीग्रा॥
चक्रि विदेही मन महि लीनी। ग्रचर्ज की बिधि सीता कीनी॥
बहु भार इहु धन्पु उठायो। एक करि सी ईहा लेपु करायो॥
जो इसि धप का तोड़ चुकाई। कन्या एह ताहू देवहु भाई॥
जनक विदेही ईहो हृदेधारा। मन ग्रतरि इह बाति बीचारा॥
स्वयर सीता का हौं कीना। एहि प्रतग्या दृढि करि लीना॥
जो इसि धन्पि को ना करि डारे। ताहू भुजा बहु हो ग्रधिकारे॥
जान्की को ताहू की देसौ। सेवक होइ करि सेव करेसौं॥
देस देस को पत्री पठाई। ताहू बीचार मैं सकल सुणाई॥
ग्रानि भूपति कौ चिप्यी पठायो। जनकविदेही काजु रचायो॥
तुम ग्रावो भवि मेरे भाई। साईदास हरि सदा सहाई॥११

विस्वामित्र कपु ग्रधिकाई। भजनु कीयो तिन त्रिभुवन साई॥
मखु कर दैत्य ग्राहि बिकारी। ताको कठनि बनी ग्रति भारी॥
मखु पवित्र होन ना देही। पापी ग्रसुर बिरोधु करेही॥
तब विस्वामित्र मन महि इह कीना। कौसलापति ठौताव है भीना॥

किर्पा करि दसरथ ग्रहि प्राए। रामचदि जी नामु रखाए॥
तांको प्राइ इहा म ल्यावौ। पाछे से मैं यग्य रचावौ॥
प्रसुर प्राइ जो मोह सतावहि। श्री रामचदि तिहि मार चुकावहि
विस्वमित्र मन महि इहु धारा। मन माहे उनि सोच बीचारा॥
चल्यो नग्र प्रयोध्या प्राया। दसरथ के ग्रहि प्राइ ठहिरायां॥
दधिरथ कह यो क्रिपा प्रभ कीने। किहु प्रयोग इहा पगि दीने॥
जो प्राज्ञा होइ वहुहि ल प्रावौ। बेग बिलम म मूल नि लावौ॥
तव विस्वामित्र नृप ते इउ भाषा। इसि विधि तुमपहि प्राया प्राया॥
प्रसुर यग्र मोह कनि न देही। हमिरो यग्र बिटार[1] करेही॥
दोनों सुत प्रपुणे मोह देवहु। मोहु प्राज्ञा माल करि सेवहु॥
इहि जाइ यग्र सपूण करही। तिहि प्रसुरों सेती इहि लरही॥
तब दसरथु दोऊ सुत ल्याया। भरत शत्रुघ्नु प्राएा दिपाया॥
हे प्रभ इनि को तुम ले जावौ। जो भावे सो टहिल करावौ॥
भला कीया प्रभ तुम जो प्राए। सांईदास बहुते सुप पाए॥१२

विस्वामित्र ले तिहि उठि धाया। नगर त्याग वाहर वहु प्राया॥
प्रपुन नग्रि को उनि पग दीन। त्याग प्रयोध्या गृह मगु लीने॥
चलित चलित दो मग परि प्रायो। वहु टौर प्राइ करि ठहिरायो॥
तब भरत शत्रुघन वचन उचारे। हे पूर्न ऋप कहा बीचारे॥
प्रागे को पगु कयु म धरहो। प्रागे को काहु ना करहो॥
हमहि बीचारु इसि का तुम देवहु। हमिरा सचन्न हिरि करि लेवहु॥
विस्वामित्र तिहि प्रत दीना। इहि कार्ज में गवनु न कीना॥
मोहु नग्र दोइ मार्ग जाव। एकि धनद इकु ग्रामु दिपाव॥
जो धनदि माग हमि जावहि। सप्त दिनसि मग माहे लावहि॥
तब प्राइ नग्रि परापति होवहि। मम की चिता समही पाबहि॥
जो इसि ग्रास के मार्ग जावहि। तीन न्दिवस को प्राइ टहिरावहि॥
प्रधिक त्रासु है इसि मग माही। जो तुम कहु होइ इसु मार्ग जाही
जो तारिका सा युद्ध करावो। युद्ध करो जो तिहि हिरि प्रावो॥
तब हमि इनि माग पगु धरही। प्रपुने नग्र गवनु हमि करही॥

---

१ बिटार—पर्यवित।

भरत शत्रुघन इहि विधि पाई। विस्म भए कछु कह्यो न जाई॥
विस्म होइ येह वचनु उचारा। मामव माग बसु प्रान अधारा॥
हमि असुरो सौं युद्ध न करही। युद्ध कर्न कौ चितु न धरही॥
विस्वामित्र हृदे इह मानो। सांईदास सो सकल बषानी॥१३

इनि से कार्ज पूर्न ना होइ। इनि महि सूरमा नाही कोई॥
तिन कौ सग से करि फिरि आया। आइ अयोध्या महि ठहिराया॥
कहियो दसरथ को सुत लेवो। रामचद्र लक्ष्मण हमि देवो॥
इनि से हमिरो कामु न होइ। इनि मनि भासु उठित अभिकोई
इनि का तुम अपुने गृहि राषो। जो बानो सो इनि सग भाषो॥
रामचद्रि लक्ष्मण को लेवो। मोहु कार्य पूर्ण करि लेवो॥
तब दसरथ कह्यो इनहि न देवो। एहि बाति मैं नाहू करेवो॥
तब ऋषि कह्यो जु लेहु सरापा। अपुने मुप मांगा तुम आपा॥
तब दसरथु भै चकित हो रह्या। हे ऋषि जी तमे क्या कह्या॥
कौन पापु तेरा मैं कीया। जो तैने चित धारि लीया॥
चित कार्ज आपु देवो मोही। कवन बात मम लीनी तोही॥
सुण हो दसरथ मैं तुह आया। एहि बाति न तुझ सौं भाया॥
कहो राम लक्ष्मण स जावा। नाहि त तुम कौं श्रापु लगावा॥
रामचद्र लक्ष्मण कौ देवो। सांईदास यहि काम करेवो॥१४

दसरथ मन महि कीओ बोचारी। अवि मोह आइ बनी अवि भारी॥
देवो राम लक्ष्मण दुःख पावो। जो न देवो तौ श्रापु उरिभावो॥

एह महा ऋषु भजनु कमाई है प्रभु श्रापु न देवो।
सुत को लेवो जो चाहो सो जाइ करेवो॥

विस्वामित्र तब क्या कीया। रामचद्र लक्ष्मण को लीया॥
अपुर्न नम्र कौं निग पग लीने। त्याग अयोध्या ऋष गवनु कीने॥
चल्यो चल्यो सो मग परि आयो। आइ वृद्ध मग परि ठहिरायो॥
श्री रामचद्रि जी बचनु उचारा। सुण हो प्रभ जी बात हमारा॥
ऐह दो मार्ग कैस आए। हमि को बिर्धा देहु बताए॥

१ बिर्धा शब्द का अर्थ सम्भवतः कथा है।

इहि मागु कहा इहु कहा आई। इहि कैसा इहि कैसो माई॥
तव ऋपि सुण तांको प्रभु दीना। श्री रघुपति मनि महि धरि लीना॥
त्रासु मामु इह है रघुराई। दूसरो मनद को मर भाई॥
रघुपति कह्यो त्रासु क्या कहीये। इह प्रम बिर्पा मोह वसर्म्यै॥
बहुरो ऋपि मे माप मुणाया। इह प्रम पूर्न रघुपति राया॥
दोनों मग मम देस को जाही। तिन की बिर्पा समहु बताई॥
जो हमि त्रास माग पग धारहि। तीनदिनसि हमि पपु निहारहि॥
जो मनन्त क मग महि जाही। सप्त दिवसि मागे हमि ताही॥
तब रघुपति फिरि बचनु सुनाया। हे ऋप त्रासु नामु बताया॥
कवन त्रासु इसि माग माही। इहि सचरु उपज्यो मन माही॥
क्रिपा करो करि मोह बसावो। बेग विल्म तुम मूस नि लावो॥
ताहु क्रिपा करि सचरु माग। सचरु त्याग मन महि सुख लाग॥
क्रिपा करि करि मोह बसावो। साईदास सुम विल्म म लावो॥३४

विस्वामित्र ताहु सुनायो। बग विल्म तिन मूस न लायो॥
तारका राषसी युद्ध को आवै। हमि तुम बहुता दुख दिखावै॥
सूक्ष्म बासि तीन दिन करी। इसि महि त्रासु प्रम है अधिकारी॥
जो तुम माज्ञा होइ सु करहों। तिम मगि माहु म पगु धरिहों॥
सुण रघुपति इहि बचनु उचारा। भास माग चलि हो ततकारा॥
जो हमि त्रासु करहि मन माही। इसि काज कैसे सिद्ध कराही॥
हे प्रम हमि इहि त्रासु दिपावै। इहि सचरु क्या मन महि ल्यावै॥
चलहो निकटि मार्ग हमि जावहि। तारका सों बहु युद्ध मचावहि॥
इहि कार्ज मन कीयो विसवासा। कहा भया मन माहु त्रासा॥
चल हो प्रम इस ही मग माही। भयो राम त्रासु कछु नाही॥
तारिका राक्षसी कहा बसु होइ। हरि स्मसर कहा होय कोई॥
हे प्रम चलिहो इसि मग माही। साईदास दुख लाग नाही॥३५

तब ऋपि ने इहि मन महि धारा। मनि माहु अति मोद बीचारा॥
इहि का तु मोह काजु करिही। असुर अधिक का एही हिरही॥
राम के मग माहे पगु दीना। जिहि कछु त्रासु मन महि कीना॥
आगु धाम रघु पाछे जाही। तिहि को मो उपिजै कछु माही॥

जैसे मामी पुहिप हिराए। जैसे फणकु मिगु फहाए॥
जैसे तपसी वन को धावै। जैसे मिर्गा माद उमर्धाए॥
जैसे पावक भ्रग्नि प्यासा। तैसे सुरपतु काम सुबासा॥
विधि को सग ले करि उठि भायो। तति खिण ऋपि के द्वारे भायो॥
विधि मे भूम दिस को वपु लीना। भपूने मुप ते भाप कीना॥
रैन गई जागो रे प्रानी। भजु ले हो तुम सारंग पानी॥
गोतमु ऋपि जब ते सुण पायो। सुरतवानि भो चित महि भायो॥
समा भयो सध्या को जावो। हरि को जाइ करि भजनु कमावो
गोतमि पग वाहिर धहि दीने। सुरपति पग भतरि तिहि कीने॥
भाइ प्रजक ताहि परि परिभ्रा। पाइति है तासों संगु करिभ्रा॥
गोतम क हृदे महि कछु भाया। सध्या त्याग करे उठि धाया॥
रम भधिक है मेरे माई। मोह दगा दीनो किसे माई॥
चौस्ह भाई विधि के सरि मारी। ताहि जीत लागो तत कारी॥
हनि दोनो ने ताक चढ़ाए। गोतम धाइ कपाट हिलाए॥
मुप त ऋपि ने वचन उचारा। सुरपति सुण लीने ततकारा॥
भ्रहल्या सो कह्यो मोह छपावो। जहा जामौ तहां मोह बैठावो॥
ऋपि भायो उपज्यो मन त्रासा। साईदास वुरी काम प्यासा॥४१

तब भहल्या कह्यो ठौर नि कोई। जहा दुराइ रपौ मै तोही॥
इसी प्रसंग तसे सपि रहहो। मुको न बोसो स्वासु घटि ग्रहहो॥
प्रजक तसे सुरपति को डारा। पाछे भाइ कपाटु उघारा॥
गोतम ऋपु गृहि महि भायो। भाइ प्रजक ऊपरि ठहिरावो॥
वनिता को ऋपि पूछन कीना। कौन स्युं वचनु उचारे लीना॥
एह वाति मोह देहु वताई। जो भवि मै तुझै भापि सुणाई॥
ता पै मिथ्या कह्यो न जाई। गोतम ऋपु पूर्न ब्रह्म ठाई॥
तबो भहल्या वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्राण भधारा॥
हमि मजार सों वाद चलाई। हे ऋपि पूर्न मोह सहाई॥
गोतम ऋपु विधि जानधि हारा। मुख ते सुरिण करि वचनु उचारा॥
हे पातक पावक भ्रधिकाई। प्रगटि हाहु क्या देहि छपाई॥
हे पातक मोह भागै भावो। साईदास किउ देह छपावो॥४२

तब सुरपति आगे चलि आया । गोतम ऋषि पै आइ ठहिराया ॥
गोतम ऋषि सुरपति सों भाषा । कौनु कर्मु कीया पातक माषा ॥
भग भोग कार्म इहा आया । सहस्र भग मै तुम्है लगाया ॥
एही श्रापु मै तुम्ह को दीआ । जो तै औगुण मेरा कीआ ॥
तब सुरपति कह्यो कवि मोह होवै । इहि सहस्र भग कवि माह पौवे ॥
ऋषु अगस्तु तोह स्रापु निवारे । हरि किर्पा बहु तुमहि उवारे ॥
तत्काल सहस्र भग फिरि होई । सुरपति मन माहे वहु रोए ॥
जैसा कीयो तैसा मोह पायो । औगुण कीयो औगुण हरि लायो ॥
सुरपति अहि तजि बाहिर गया । जाइ स्वेत सिंध बास लिया ॥
जैसा कर असा कोई पावै । बिनु कोए कछु निकटि न आवै ॥
बद पुरान सभ भाप सुणाही । रे जन लेहु समझि मन माही ॥
कामु त्याग होवो निहकामा । साँईदास पूर्न प्रभ रामा ॥४१

अमर सकल प्रभ पाहि पुकारे । हे प्रभ तीन भवन को धारे ॥
सुगुरु कहू मोरि उठि धायो । दो दिन बीते पुर न आयो ॥
पुर का कामु प्रभ कौनु कराए । इहि अभोग पर्जा दुख पाए ॥
ताहि बिनु बिर्था कौनु मिटावै । हमिरि द्रिष्ट औरु नही पावै ॥
प्रभ द्वादस ऋषि लीए बुलाए । ताहि कह्यो सुणि हो मेरे भाई ॥
अभिया गुप्त भयो क्या कीजै । तिह पुर को राजु कवन को दीजै ॥
ऐसो द्रिष्ट औरु नही आवै । अषिवापुर को राजु करावै ॥
तिह बिनु सुर सकले उकिलामे । पर्जा धीर्जु नाही माने ॥
गर्ग परासुर और अवकना । अगस्त भ्रिग ऋषि गोबिंद गणा ॥
गोतमु नार्द औरु वस्वासुर । पीताविपद जागे बाछहि निसवासर
कौसादि तुम द्वादस माहे । मास सपूर्ण भये इताह ॥
आज्ञा से हरि की उठि धाए । अभिया जोहनि को चितु लाए ॥
भ्रिपमि बना महि बहु धाए । पात पात तरिवरि निर्पाए ॥
तवि अधिवा प्रगटि नि होया । तिह बिस्मास हृदे महि होआ ॥
मतु त्रिण मध्य अधिवा होइ भाई । हमिह न देख्या सुति सुनाई ॥
त्रिण त्रिण करि कहा सोधहि भाई । हमि पहि इहि बिधि करिनि जाइ ॥
फूकि मारि बनि सकल जलाए । भस्मि भए बन बहु अधिकाए ॥

जब केसकि मग ताईं गए। कछु उनि त्रासु मन महि भए ॥
जब इनि पग भाग को धारे। महा भ्रधिक उठिओ गटिकारे ॥
तारिका प्रगटि भइ मग माही। तब गटिकारु भयो भ्रधिकाही ॥
रघिपति बाण गह्यो कर माइ। ताइ बाणु पासी पबे माइ ॥
बाए मह्यो राकसी को मारा। श्री रघुपति तांकों प्रहारा ॥
सिसे मार भाग पगु दीना। श्री रघुपति मनिहि चित कीना ॥
बनिता गोतम की मग मांहे। सिला परी बहु मग मंमाइ ॥
तांको कितार्थ कर लेवो। सांईदास तिह सम्भ पुरेवो ॥१६

सकल बितांतु म ताहि सुणावो। सकल बात मैं सु भे बतावो ॥
किहि प्रयोग श्रापु तिह पायो। गुर किर्पा ते सकल सुणायो ॥
गोतम भार्जा नामु ग्रहल्या। तिहि सत भंग भयक परिकुलिया
एक नृप के कंन्या बहि होई। महा सुंदर तिह रूप भ्रधिकाई ॥
तिसि नृप ने पर्तञा कीनी। इहि पर्तञा मन महि लीनी ॥
तीन घड़ी महि इह करि लेई। बसुधा सकल प्रदक्षणा देई ॥
इहि कन्या मैं ताकी देवो। बर्न लाग तिह संग करेवो ॥
कन्या रूप महा भ्रधिकाई। तिह उस्तित कछु बर्नि न जाई ॥
सुरपतु माइमु तिह ऊपरि भ्राही। तिसि देवमि को मनु लोभाही ॥
इहि बिधि जब सुरपति सुण पाई। पौन रूपु तब लीयो गुसाईं ॥
चला चला नृप पाहे भ्राया। नृप सो सुरपति भाप सुणाया ॥
सकल प्रिथवी प्रदक्षिणा देवो। सांईदास एहि कामु करेवो ॥१७

पौन रूप परि सुरपति चक्रिमा। प्रदक्षिणा प्रिथवी की चितु धरिमा
गौतम तर्क बहु करि लीना। ताइ माइ सोधनु उनि कीना ॥
बेद में इहि बिधि मिकसाई। सो भी नर की भाप सुणाई ॥
जो ग्राम ग्राम प्रन्दक्षिणा देवै। प्रिथवी परिदक्षिणा कर लेवै ॥
बाढि पशु नृप के करि दीना। तब नृप पत्र पढि के लीना ॥
इहि निकस्यो पत्रि के माही। दूसरी बात भ्रवर कोऊ नाही ॥
जिन ग्राम ग्राम प्रदक्षिणा कीनी। तिन सकल प्रथ्वी प्रदक्षिणा कीनी
गोतम ग्राम ग्राम निवारग। करी प्रदक्षिणा तिम ततकारा ॥
नृप कन्या बानु करि दीनी। गोतम ऋषि कानु करि लीनी ॥

कीतो कामु गृहि महि ले आया। सुरपति नृप आइ आपि सुणाया॥
मै पृथ्वी प्रदक्षिणा कीई। साँईदास सुरपति इह भीई॥३८

तब नृप इद्रि सौ वचन सुनाए। सुण सुरपति तुम वनि अधिकाए॥
कन्या गौतम ऋषि न लीनी। तात कास परिदक्षिणा दीनी॥
तब सुरपति भ चक्रित हो रह्या। नृप त वचनु उचारा कह्या॥
किउ करि उनि पर्दक्षिणा दीनी। किउ करि कन्या उसि न लीनी॥
तब नृप ने मुख वचनु उचारा। सुण हो सुरपति बात हमारा॥
बेदु कढयो तासा निकसायो। जिनि धाम ग्राम प्रदक्षिणा पाया
तिन प्रथिवी सकल प्रदक्षिणा दीई। जिन धामग्राम प्रदक्षिणा कीइ॥
तब सुरपति गृह अपुने आया। अति विस्माद महि ध्यानु लगाया
केतकि दिन ऐसे ही रह्या। तांहि ध्योग बीका चितु दह्या॥
करि बीचार ग्रहि बाहिर आया। गोत्तम के गृह सो हितु लाया॥
तिस कन्या भी हेतु बढायो। सुरपति सेती तनु मनु लायो॥
सुरपति कह्यो कहो कवि धाई। जो हमि तुम दोऊ कामु कमावौ॥
तब कंन्या तिहि दीयो बताई। जिहि समे गोत्तमु बाहिर जाई॥
अवि तुम अपने गृहि महि जावो। साँईदास मम नाह बुलावो॥३६

सुरपति कह्यो मै क्या जानो। किस विधि मै वहु समा पछानो॥
तू मौ को मेहु देहु बताई। किहु समे गौत्तमु बाहिर जाई॥
तिह ना चितु जो ताह बतावै। प्रीत सखी फुन रह्यो न जावै॥
तब ही अहल्या बचन उचारा। सुरपति को तब दीयो बीचारा॥
जब पिछलो पहिर रात को रह। तब गोत्तम ऋषु उठि करि बहे॥
जब चतुर घटी निस ठौरु बिहाव। तब संध्या कर्ने को जाव॥
सुरपति बाति हृद ठहिराई। ग्रहि अपने माहि बैठो आई॥
दिनु बीत्या होई जब रैना। उडिगण प्रगटि भए प्रगटेना॥
सुरपतु कहे कवि रैनि बिहावै। गोत्तमु संध्या को उठि धावै॥
मै तहा जाइ करि कामु कमावो। साँईदास मन इछि पुजावो॥४०

रजनी घटी समा वहु आया। गोत्तमु ग्रहि तजि क उठि आया॥
जैसे चोर हिति परि धन को। साधू हेति जैस मन को॥

जैसे मासी पुहिप हिराए। जैसे फधकु मिर्गु फहाए ॥
जैसे तपसी वन को पावे। जैसे मिर्गा माव उमर्हाए ॥
जैसे पावक अगिन प्यासा। तैसे सुरपतु काम सुवासा ॥
विधि को सग लकरि उठि आयो। सखि खिए ऋषि के द्वारे आयो ॥
विधि मे भूम दिस को वपु लीना। अपूने मुप ते माप कीना ॥
रैन गई जागो रे प्रानी। मजु मे हो तुम सारस पानी ॥
गोतमु ऋषि जब ते सुण पायो। सुरतवानि भौ चित महि आयो ॥
समा भयो संध्या को आवो। हरि को जाइ करि भजनु कमावो
गोत्तमि पग बाहिर अहि दीने। सुरपति पग अतरि तिहि कीनै ॥
जाइ प्रजक ताहि परि परिमा। बाहृति है तासों सगु करिमा ॥
गोतम के हृदे महि कछु आया। सध्या त्याग करे उठि धाया ॥
रैन अधिक है मेरे भाई। मोहु दगा दीनो किस भाई ॥
धौल्हु भाई विधि के सरि मारी। ताहि सीस लागो तत कारी ॥
इनि दोनो मे ताक चढाए। गोतम आइ कपाट हिलाए ॥
मुख त ऋषि मे बचन उचारा। सुरपति सुण लीने ततकारा ॥
अहल्या सो कह्यो मोहु छपावो। जहा जानौ तहां मोहु बठावो ॥
ऋषि आयो उपज्यो मम त्रासा। साईंदास वुरी काम प्यासा ॥४१

तब अहल्या कह्यो ठौर नि कोई। जहा दुराइ रखौ मै तोही ॥
इसी प्रजग तले छपि रहहो। मुखो न बोलो स्वासु घटि कहहो ॥
प्रजक तले सुरपति को डारा। पाछे आइ कपादु उघारा ॥
गोतम ऋषु गृहि महि आया। आइ प्रजंक ऊपरि ठहिरायो ॥
वनिता को ऋषि पूछन कीना। कौन स्युं बचनु उचारे लीना ॥
एह बाति मोहु देहु बताई। जो अबि मै तुझै आपि सुणाई ॥
ता प मिथ्या कह्यो न जाई। गोतम ऋषु पूर्न ब्रह्म ताई ॥
तबी अहल्या बचनु उचारा। हे प्रम पूर्न प्राण अधारा ॥
हमि मझार सों बात बसाई। हे ऋषि पूर्न मोहु सहाई ॥
गोतम ऋषु विधि जानणि हारा। मुख ते सुणि करि बचनु उचारा ॥
हे पातक पातक अधिकाई। प्रगटि होहु क्या देहि छपाई ॥
हे पातक मोहु आगी आवो। साईंदास निज देह छपावो ॥४२

तब सुरपति भागे भसि आया । गोतम ऋषि पै आइ ठहिरायाा ।।
गोतम ऋषि सुरपति सा भाषा । कौनु कर्म कीयो पातक भाषा ।।
मग भोग कार्ण ईहा माया । सहस्र भग मै तुझै लगाया ।।
एही धापु मै तुझ को दीआ । जो तै ऊगुण मेरा कीआ ।।
तब सुरपति कह्यो कवि मोहु हावे । इहि सहस्र मग कवि मोह पावे ।।
ऋषु भगन्तु होहु स्रापु निमारे । हरि किर्पा बहु तुमहि उबारे ।।
तत्काल सहस्र मग फिरि होई । सुरपति मन माहे बहु रोए ।।
जसा कीया तैसा मोह पायो । ऊगुण कीयो ऊगुण हरि लायो ।।
सुरपति ग्रहि तजि बाहिर गया । जाइ स्वेत सिध बास लिया ।।
जसा कर तसा कोई पाव । बिन् कोए कछु निकटि म भावे ।।
बेद पुरान सम भाष सुणाही । रे धन सेहु समझि मन माही ।।
कामु त्याग होमो निहकामा । साईदास पूर्न प्रभ रामा ।।४३

अमर सकल प्रभ पाहि पुकारे । हे प्रभ तीन भवन को धारे ।।
सुगुरु कहू मोरि उठि धायो । बो दिन बीते पुर न आयो ।।
पुर का काजु प्रभ कौन कराए । इहि प्रयोग पर्जा दुख पाए ।।
ताहि विन् विर्मा कौनु मिटावे । हमिरि द्रिष्ट ठौर नही पावै ।।
प्रभ द्वादस ऋषि लीए बुलाए । ताहि कह्यो सुणि हो मेरे भाई ।।
मघिवा गुप्त भया क्या कीव । तिहु पुर को राजु कवन को दीजै ।।
एमो द्रिष्ट ठौर नही आव । मघिवापुर का राजु करावे ।।
तिहु विनु सुर सकले तकिलाने । पर्जा पीर्ज माही माने ।।
गग परापुर भौर जदकना । भगस्त धूमि ऋषि गोबिद गणा ।।
गालमु नाद ठौर बस्वासुर । पीलादिपद जागे भाद्यहि निमबासर
कामादि तुप द्वादस माहे । माम सपूरण मये इताहे ।।
भाना से हरि की उठि धाए । मघिवा जाहनि को लिनु साग ।।
त्रिषमि बना महि बहु भाए । पात पात हरिवरि निर्पाए ।।
ताते मघिवा प्रगटि सि हाया । तिह विस्वाम हृदे महि हाया ।।
मनु त्रिण मध्य मघिवा होइ भाई । हमिहु न वेप्ना सुति भु राई ।।
त्रिग त्रिण करि कहा सापहि भाई । हमि पहि इहि विधि करिनि जाई ।।
फूकि मारि बनि सकल पसाए । भस्मि भए सब बहु अधिकाए ।।

इहि प्रयोग नृपु दुःख ना टारे। इहि विधि इसु मन महि धारे॥
जब देवो ने इह प्रतु पायो। मन को सगर सकल हिरयो॥
निश्चय एहि बिधि मनमहि धारी। सांईदास सुष सिंधु मुरारी॥४६

ऋषि अगस्ति कह्यो सुरपति ताईं। रे सुरपति किउ मन मुरझाई॥
तैं निहारु देषि मोह ओरा। मन महि सगर भाग नि भोरा॥
सुरपति नृप को छोरि तकामो। पांच दुःख बिनु सकल हिरायो॥
नृपु मथिवा को लेकर धामो। उद ममबे तिह बधु उचिरायो॥
पाज दुःख रहे हमिर ताईं। कैसे पुर आइ राजु कराईं॥
दुःख सहित पुर माएग न पावौ। ताते भला ईहा ठहिरावौ॥
मैं देषौ मानि राजु करावै। बहु भी मो पहि सह्यो न जाव।
ऋषि अगस्ति ताको प्रतु दीना। है मथिवा तैं क्या मनि लीना॥
तोहि पुर राज शक्र को करई। जो सुमरे पुर महि पगु भरई॥
जब लगि प्रान हमिरे घटि माही। तोहि पुर मैं पग उौर न जाही॥
नृप वध करि सुरपति से धायो। पहिले ग्रहि महि माएग ठहिरायो॥
जब लगि दुःख निवर्त न होई। कैस जाम मथिवापुर कोई॥
अमरो फिरि कह्या प्रमताई। हे कौसापति त्रिभवन साई॥
अपनि भयो सुरपतु ला प्रायो। सकल सुरो ने बहु दुःख पायो॥
पुर को राजु प्रभ कौनु कराए। इहि प्रयोग अमरो दुःख पाए॥
बार बार प्रभ कहे गुसाईं। साईंदास तुम सदा सहाई॥४७

प्रभ जब अमरो सा सुरा पायो। तब ही ऐसे बचनु भरायो॥
नघि राज को जाइ सुणावो। हमिरो बचु मन महि ठहिरावो॥
मथिवा पुर को राज करावै। सकल सुरो को सुख उपजावै॥
अमरि सुनति प्रभु बचु उठि धाए। ततछिएग नघि राजे पहि आए॥
प्रभ वो बचु तिह माप सुणायो। नघि राजै सुएग करि उचिरायो॥
एक सहस्र धरि यगु कीना। एहि प्रतज्ञा मैं मनि लीना॥
मग यनु जब पूरण करो भाई। पाछे मथिवा पुरि पसो भाई॥
एक महस्र यज्ञ मवर करावौ। तब पाछे मथिवा पुर आवौ॥
अबि तो हमिरा वसु न बसाई। मथिवापुर जावा मेरे भाई॥
एहि बेनती मोहि जाइ सुणावा। दीन बचन कहि करि समिभावो॥

बहुरो सुरि आए प्रभ पाहे। नृप नषि कह्यो सो कहत सुनाहे॥
मसु यग्य मैं प्रसन्ना धारी। मन अपुने मैं लीतो बीचारी॥
रह्यो सहस्र सत यग्य के माही। तुम किर्पा पूर्ण होइ माही॥
जब पूर्ण होइ अधिवापुर आवो। तोहि आग्या प्रभ राजु करावो॥
जो आग्या तुमिरी होइसों करिहौ। स मस्तिक ऊपरि प्रभ धरहो॥
तब प्रभ अमिरो को प्रतु दीना। नगि राजे ने इहु बचु कीना॥
नृप नषि को तुमि जाइ सुनावो। मोहु बचनु तांसो समिझावो॥
द्वादश मनु को भोजनु देवो। मानो सहस्र यग्य पूण करि लेवो॥
रथि अजीत परि चढि पुर आवो। अधिवा पुर को राजु करेवो॥
अमर फेरि फिर नृप प आए। सभ बिधात तिहि आप सुनाए॥
द्वादश मुन को लेहु बुलाई। भोजनु तिहि देवो तितु लाई॥
सहस्र अग तुम पूर्ण होई। तुम वांछा फिरि रहे नि कोई॥
चढि अजीत रथि पुर को धावो। अधिवा पुर चलि राजु करावो॥
जब रथि अजीत कोसुण्या नामा। भयो भै चकित तजि बिस्रामा॥
रथु अजीत कहा सें ल्यावों। तां परि चढि अधिवापुर आवों॥
अमरो को नषि ने प्रतु दीना। हे अमरो तुम क्या बचु कीना॥
रथ अजीत कहो कहा ल्यावो। कौम ठौर एसो रथु पावो॥
तुमि बहुरो जावहो प्रभ पाही। मम बेनती कर होवे गजाई॥
रथ अजीत प्रभ देहु बताई। ताहि चडो पुर को चला धाई॥
अमर सुनत इहि प्रतु उठि धाए। सांईनाम प्रभ पहि बेग आए॥४८

नषि नृप यग्य अरम कीयो भाई। द्वादश मुनि को लीआ बुलाई॥
कह्यो किपा करि भोजनु पावो। मम यग्य पूरा तुमहि करावो॥
तुम प्रसाद अधिवापुर पावो। तुमि प्रसाद जम हर को गावो॥
हरि आग्या म इहि उचिरायो। मुनि मा एसो सब्द सुनाया॥
एकादस मुनि मन महि आनी। जो नषि भूप म अपो बखानी॥
अगस्त हुते कीनो बीचारा। मैं अधिवा महि आए यहागा॥
जो तिह पुर को इहु भूपु होर्ग। अधिवा को फिरि गनि ना कोई॥
मैं तासो बचनु करके आना। अपुन महि माहे ठहिराना॥
मैं कैसा बचु अपना हारो। क्या मुख ले जगि माहि निकारो॥

भमर गए मिल सम हरि पाही। मुख ते वचन उचार सुणाही ॥
नमि को स्रापु अगस्त ने दीना। ताहि स्रापु बसुधर बहु कीना ॥
सुमुरु मुष्ति भयो मा आयो। भमरो में बहुता दुःख पायो ॥
मथवा पुर को राजु करावै। पर्जा को सो सुख दिखावै ॥
भमर को प्रभ ने प्रभु दीना। नथ नृप बसु धरि को वपु लीना ॥
अगस्त ऋषीश्वर लेहो बुलाई। मोह कह्यो सुणहो मेरे भाई ॥
भमर सुमति इहि ऋषि पै आए। छिन मात्र तिन मूल नि साए ॥
ऋषि को कह्यो चलो हरि पाही। तुमको हरि जी आप बुलाही ॥
ऋषु तत छिन ताके संग आया। श्री कौसापति पाहे आया ॥
प्रभ ऋषि सो तब कह्यो सुणाई। सुण हो ऋषि पूर्ण रिषि माई ॥
नमि को स्रापु दइ बसुधर कीनो। भली बात तै मन महि लीना ॥
मथिबा मुख भयो बहु ठौरा। ताहि वियोग भमर भए बौरा ॥
मथिबा पुर को राजु कराए। तास प्रयोग सुर उनि साए ॥
कह्यो अगस्ति सुनो प्रभ मेरे। बिनती आया आमै तेरो ॥
मथिबा को मैं हुण से आयो। तासि प्राण ग्रहि महि ठहिरायो ॥
प्रभ कहा वांको न आयो। अपुनै ग्रहि महि काहु बढ़ायो ॥
तब अगस्त फिरि बचन उचारे। हे पूर्न प्रभ प्राम अपारे ॥
पांच दुःख मथवा क ताई। लाग है दूर न जाई ॥
सुवचित मथिबा आव नाही। दुःख गहिस पुर आए न पाही ॥
ताहि दुःख हिरदो बहु भावै। मथिबा सुर को राजु करावै ॥
प्रभ कह्यो तिह दुःख निवारे। मुख अपन ते कह्यो पुकारे ॥
पाप दुःख पांच को दीए। मथिबा कत मिस दूरि कीए ॥
कह्यो अगस्त पांच को कोई। मोह बता‾ देवो प्रभ माई ॥
एक एक को नामु बतावा। हमिरे मन ते भ्रांति चुकावा ॥
प्रभ ऋषि का कह्यो सुण लीज। और ठौरि बहू थिनु न दीज ॥
एक दुःख दारा को लायो। एक बनासती को उर्भायो ॥
एक अम ताई मैं दीना। एकु मनंतर प्राप्त कीना ॥
एकु बसुधा को दीना भाई। पाचो नाम सुनो मन लाई ॥
ऋषि फिर प्रभ कीयो हरि पाहे। सपद उपज्यो मोह ममि माह ॥
दाराको को दुःख समायो। बनासपती को कौतु उर्भायो ॥

मोको साधु इसि देव न होई। जिति विधि साधु होवै करो सोई॥
जो इसि कै ग्रहि भोजनु पावौ। बहुरो साधु कैसे इसि भावौ॥
हृदै बीचार इहि नृप प्रतु दीना। मम हृदै इही मान करि लीना॥
न भोजन तुमि ग्रहि ना पावौ। इहि विधि मन माहे ठहिरावौ॥
ऐसे हमिरे मन महि आई। नृप बहुरो फिरि प्रश्न चलायो॥
कवन अवज्ञा हमहि करायो॥
मम ग्रहि भोजनु किउ ना पावो। कवन दोसु प्रभ हमहि लगावो॥
जब नृप ऐस बेनती ठांनी। अगस्त दीयो प्रतु ब्रह्म ग्यानी॥
तुमि को दोसु नाहि है काई। हमिरे मन ऐसी ही आई॥
जिहि किए आत्म सुख पाए। सोईदास जन सोई कराए॥४१

नृप नघि मे नीको यग कीना। एकादस मुनि को भोजनु दीना॥
अगस्त ताहि ग्रहि कछू न पाया। कैसे मिटै बिधि बनति बनायो॥
अमरौ आइ प्रभ पाइ सुणाया। जो नघि नृप मे ताहि बताया॥
रघु अजीत प्रभ देहु बताई। जासि परि चढि आवौ बेग धाई॥
प्रभ इहि अमरो को प्रतु दीना। हे अमरो इहि चक्कु नृप कीना॥
द्वादस मुनि रघि के संग जोरे। ता परि चढि आवो होरे होरे॥
यही अजीत रघु अवर न काई। सकल प्रिसांतु प्रभ दीयो बताई॥
अमर सुमति इहि नृप पहि आए। प्रभ बच सकसे आइ सुणाए।
नघि नृप न तब ही क्या कीना। द्वादस मुनि ताई सदि लीना॥
करि जार तिहि कह्यो सुणाई। इहि आज्ञा प्रभ को मोह आई॥
द्वादस मुनि रथ साथ जुडावो। तापरि चढि अवधापुर आवो॥
जो आज्ञा तुम होइ सो करहो। तुमरो बचु मस्तक परि धरहो॥
एकादस मुनि सुण करि ठहिरावो। भलो भयो प्रभ आज्ञा आया॥
मुनि का रथि क सहित जुडावो। अति अनंद अवधापुर आवो॥
अगस्त मन महि लीनो बीचारी। भलो भई अति बात हमारी॥
अबि मे साधु दखो इमि ताई। अवधा काजु मन करि पूजाई॥
बिनु औगण साधु दीयो न जाई। गोप लीयो मन बिधि ठहराई॥
एक अवज्ञा इसे करावौ। जो न करे तब साधु मनावो॥
जब लगि तुम अवधापुर आवो। तब लगि नृप कछु न उचिरावो॥

जो उचिरे कछु स्नापु लगावौं। एही प्रतज्ञा ताहि करावो॥
मनि ठट्ठ बाधि कह्यो नृप ताई। सुणि हो नृप नधि तुम मन माही॥
प्रभ आज्ञा हमि मन ठहिराई। रषि को जाइ सेहु हमि माई॥
एक प्रतज्ञा तुमहि करावो। याह्री निश्चे मन ठहिरावो॥
जब लगि पहुचति तू पुर माही। तब लगि मुखि बचु ना उचिराही॥
जो बोले मुखो स्नापु लगावो। एहि प्रतज्ञा तुमहि करावो॥
नृप इहि सुण प्रतज्ञा कीनी। साईदास निश्चय मनि लीनी॥५०

रषि सौ द्वादश मुनी जुड़ाए। अति अनदु मन महि उपजाए॥
मथिवापुर को चल्यो धाई सुपु। उपज्यो भउ गियो हुताई॥
जब मथवापुर के निकटि आए। बजति बजंत्र अति अधिकाए॥
नीको पुर अमरो बणवायो। निपिति द्रिग सुख भयो अधिकायो॥
नृप नधि सब्द बजत्र सुण पाए। आतुर हो पुर को चल्यो धाए॥
तिहि मन महि बहु भयो हुलासा। अधिक भई पुर देषनि प्यासा॥
परतज्ञा तिनि दीई बिसारे। मुख ते बचन कह्यो तत्कारे॥
सर्पि सर्पि चले हो मेरे भाई। बेग माहि देषो पुर जाई॥
जब नृप न इहि बचनु उचारा। अगस्त ताहि से धर्न परि मारा॥
तब ही स्नाप दीयो नृप ताई। रे पातक सर्पि की योन पाई॥
हमिरा बचु सुने मग कीना। तौ मैं स्नापु इहो तुमैं दीना॥
नृप नधि तब ही कह्यो पुकारा। हे अगस्त ऋषि प्रान अधारा॥
तुमरो स्नापु अन्यथा न जाई। जो तुम बचनु करो होइ साई॥
कवि गति होइ हमारी भाई। एहु किर्पा कर देहु बताई॥
तब अगस्त नृप बचन उचारे। नृप नधि कौं न देखो बीचारे॥
जब पाडो नृप बन महि आवैं। कैरव तिह बनवासु दिवावैं॥
युधिष्टर तुम दर्सनु देवैं। तुमरो स्नापु तही हिर लेवैं॥
तब तुमरो होवै कल्याना। ऐसे बचन अगस्त बखाना॥
नृप यमुपरि को देहु बनाया। एक दहि महि आइ करि ठहिरायो
बन मानर याही दिहि भाई। यमुपर को बपु कीयो अधिकाई॥
ऋषि का बचु अन्यथा ना जावै। भजनु करै हरि नामु ध्यावै॥
माया जन आप्या जा हाई। साईदास तुम करहो सोई॥५१

भ्रमर गए मिल सभ हरि पाही। मुख ते बचन उचार सुणाही॥
मघि को स्रापु प्रगस्त ने दीना। ताहि स्रापु बसुधर बहु कीना॥
सुगुरु गुप्ति भयो ना भायो। भ्रमरो न बहुता दुख पायो॥
मघवा पुर को राजु करावै। पर्जा को सो सुख दिखावै॥
भ्रमर को प्रभ ने प्रभु दीना। नप नृप बसु धरि को बपु लीना॥
भ्रमस्त ऋषीश्वर सेहो बुलाई। मोह कह्यो सुणहो मेरे भाई॥
भ्रमर सुमति इहि ऋषि पै भ्राए। छिन मात्र तिन मूल नि साए॥
ऋषि को कह्यो चलो हरि पाही। तुमको हरि जी भ्राप बुलाही॥
ऋषु तत छिन ताके संग भ्राया। श्री कौसापति पाहे भ्राया॥
प्रभ ऋषि सों तब कह्यो सुणाई। सुण हो ऋषि पूर्ण रिषि नाई॥
मघि को स्रापु देह बसुधर कीनो। मघी भाति तै मन महि लीना॥
मघिवा गुप्त भयो कहू ठौरा। ताहि बियोग भ्रमर भए बौरा॥
मघिवा पुर को राजु कराए। तास प्रयोग सुर उकिसाए॥
कह्यो भ्रगस्ति सुनो प्रभ मेरे। बिनती भाखो भ्रामे तेरो॥
मघिवा को मै हुण से भ्रायो। तासि भ्राए प्रहि महि ठहिरायो॥
प्रभ कहा ताको स भ्रायो। भ्रपुने पहि महि काह बहागो॥
तब भ्रगस्त फिरि बचन उचारे। हे पूर्न प्रभ प्रान भ्रधारे॥
पाच दुख मघवा के ताई। भ्रागे है दूर न जाई॥
सुकचित मघिवा भावै माही। दुख सहित पुर जाए न पाही॥
ताहि दुख हिरदो बहु भ्राव। मघिवा सुर को राजु करावै॥
प्रभ कह्यो तिह दुख निवारे। मुख भ्रपने ते कह्यो पुकारे॥
पाच दुख पाच को दीए। मघिवा क तनि से दूरि कोए॥
कह्यो भ्रगस्त पाच को कोई। मोह बताइ देवो प्रभ सोई॥
एक एक को नामु बतावो। हमिरे मम ते भ्राति चुकावा॥
प्रभ ऋषि को कह्यो सुण लीजै। और ठौरि कहू चितु न दीजै॥
एक दुख दारा को लायो। एक बनासती को उर्मयो॥
एक भ्रम ताई मैं दीना। एकु बसतर प्राप्त कीना॥
एकु बसुधा को दीना भाई। पाचो नाम सुनो मन लाई॥
ऋषि फिर प्रभ कीयो हरि पाहे। संसय उपज्यो मोह मनि माहे॥
दाराको को दुख भ्रमायो। बनासपती को कौनु उर्मयो॥

भ्रंभि को कौनु दुःख प्रभ लाग । वसत दुःख जारे सभु भागे ॥
वसुधा को कौनु उर्मायो । इहि प्रयोग सबद मन भायो ॥
इहु कर्णाकर देहु बताई । मोह मन भ्रांत हिरि लेहु हरि राई
प्रभ फिरि प्रतु दीनो श्रपताई । सुणहु भगस्त हितु चितु वहु लाई ॥
रितवती नारा कौं कीना । छवदि वनासपति कौ मैं दीना ॥
भ्रंम उपर सिवाल बनायो । धूम असतर को उपजायो ॥
वसुधाका कीना । इहि दुःख वसुधा को दीना ॥
मघिवा के हरि दुःख हिराए । इनि पांचो ताईं हरि लाए ॥
मघिवा को भागस्तु त्यायो । प्रभ के भाग भाग पसायो ॥
मघवा ने डंडौत कराई । करि डंडौत पुर को सल्यौ धाई ॥
महा अधिक सुख मघवा पायो । दुःख दर्द सभि ही बिसारायो ॥
इहि पांचो अति दुःख गिरिसाए । ततखिण प्रभ पाहे इहि भाए ॥
हे प्रभ कौए दुख हमि कीना । जो त हमि ताई इहि दीना ॥
बचन वेद इहि वात बनाई । बिन भोगए कीए लागे भाई ॥
प्रभ इहि सुण रह्यो विस्माई । विस्म छोड़ मुख बचन सुनाई ॥
तुमरे दुःख दूर मैं करहो । मनकर ठोर मरम के हिरहो ॥
प्रिथमे वारा को प्रतु दीना । तोहु दुखि मैं नांको दीना ॥
रितवती होवे जबि नारी । मरु भाव परि सेज तुमारी ॥
साम समै तुमरो संगु करही । तोहु दुःख हरि वांको चढिही ॥
बहुरो वनासपती प्रतु दीना । तोहि दुःख दूर मैं कीना ॥
यजधर मे सनड़ी जु कटावे । दोतनु सकरि मुन हि करावें ॥
तुमरो दुःख तास को लायो । तुमरो दुःख हमि दूरि करायो ॥
करि करोरी तुमरे महि डारे । तोहि दुःखु मिट जाइ सरारार ॥
तांता जाइ प्रसे मर भाई । प्रभ को इहि विधि दीई बताई ॥
पावक को प्रभ कह्यो सुणाई । तुमरो दुःख भी विनसे भाई ॥
बिमु बहुती दे भाजनु पावैं । तोहु दुःख तांका प्रमावैं ॥
इहि भासा पावक को दीना । पावक स मस्तिक पर कीनो ॥

---

१ मूल प्रथ में इसी प्रकार [रिक्त स्थान छूटा है । प्रसग से भी जाना नहीं जा सकता क्या शब्द हो सकता है ।

बहुरो बसुधा निकटि सुसाई। ताहि कह्यो प्रम की समिझाई॥
बिंदु मयन करि तुम परि झारे। ताकौ दुख सागै तत्कारै॥
सोहु दुख छिन महि मिटि जाई। तासि पुर्ब को प्रास प्राई॥
असे प्रम सम घिर घिर भायो। सम के मन को भ्राति हिरायो॥
मुगर निदचल भासुन कीमा। महा भविक सुप मन महि सोमा॥
ताल मृदंग वज अधिकाई। मोहिनीमा मिलि निर्त कराई॥
मम भ्रमरो कीनो झंकार। जै जै राम पूर्ण निरकारा॥
प्रहि प्रहि भ्रमरी भई बधाई। सुरपत्तु भायो बहु सुपु पाई॥
धन्य साध जो हर गुण गावहि। धन्य साध जो नाम ध्यावहि॥
धन्य साध निर्भौ पद पाया। धन्य साध जिह्वा हरि गुण गाया॥
धन्य साध निर्भौ पद वासा। धन्य साध जिम्हा हरि की प्यासा॥
धन्य साध जिम्हा मस्त पियाया। धन्य साध पूर्न पद पाया॥
ममिता कौ हरि भ्रापु मिटायो। साँईदास को भामु बपायो॥१२

पाछे ऋषि बनता सो भाया। इहि कर्न काहु कीमो भ्रापा॥
तब भ्रहल्या कह्यो बया मै पायो। कवन दुख भवगुण मै भायो॥
माम भवगण मम्रु न होयो। कामु बीबु तिहु सग न भोयो॥
तब गौतम ऋषि बचनु उचारा। हू बनिता क्या कहे पुकारा॥
एही भ्रापु दीया तुम्हि ताई। सिला होइ पर मम मंभ्राई॥
तब ऋषि बनिता बचन उचारा। हे प्रम कवि मति होइ हमारा॥
तब ऋषि कह्यो राम भवतारा। हार्व सुमरो तब निस्तारा॥
सिला भई ऋषि दीनों स्राया। इसि मे तीगुण कीनो भ्रापा॥
सोई सिला है रघुराई। भ्रवि इसि तीभ निकटि प्रभ भाई॥
तब रघुपति मन महि ठहिराई। गुप्त बाति मै प्रगटि सुनाई॥
इसि कौ मैं किनार्म करहों। मति को बचनु हुदे महि धरहों॥
पग रजि प्रभ जो ताहि लगाई। सुर रूप होइ गगन सिधाई॥
तिहि मम प्रभ की उस्तित भावी। भनेक रंग रस्ना मे भावी॥
जो तिहि उस्तित करा बीचारा। एती रस्ना कहा हमारा॥
तिस त्रिभाष करि हरि पाए। बस बस ससिता तटि भ्राए॥
धीवर को रघुरा पुकारा। रे धीवर सुण कहा हमारा॥

नौका ल्यावौ हमिहू चढावौ। इहि सलिता तें हमहि लघावौ ॥
अब वनिता ऋषि की धूरि छुहाई। धूरि छुहित बकुंठ सिधाई ॥
भीवरि एहि बिधि नन निहारी। उही बाति हृदे महि धारी ॥
मतु माहि नौका भी उडि आवै। मोकौ अपुने सहित उडावै ॥
मम कुटंब सन पाछे रहिई। महा अधिक दुखु मन महि सहई ॥
भीवर भ्रम सों बचन उचारा। सुणु बल जावो प्रान अधारा ॥
तुम पग रज बध्र उडायो। उडयो बध्र गग कों धायो ॥
मतु मोहू नौका भी उडि जाई। मोहि कुटंबु विलापु कराई ॥
नौका कौ मैं निकटि न ल्यावौ। मन माहे इहि बिधि सुकिचावौ ॥
रघिपति भीवर सो तब भाषा। हे भीवर क्या मन महि राषा ॥
उहु बधि जो तुम द्रिष्ट भाया। मोहपग रजि छुहि गगनि सिधाया
गोतम ऋषि की भार्या वाही। स्रापु पाइ बध्र तन पाही ॥
ताको स्रापु निवारण कीना। बध्र ते सुर की वपु लीना ॥
इहि प्रयोग बहु गगनि सिधाया। तुम्हि चिंता क्या मन महि ल्याया
चिंता त्याग नौका ल भावौ। साईदास को पार लघावौ ॥५३

तब भीवर कह्यो हे प्रभ स्वामी। सकल बाति तुम अंतरजामी ॥
पूर्ब जन्म मोहू वेडी काहू। भार्या होइ स्रापु पायो ताहू ॥
जो इहि उडि जावे क्या करिहौं। कौन ठौर प्रभ म चितु धरहौं ॥
बहुरा रघिपति ताहि सुनायो। हे भीवर क्या भ्रम भुलायो ॥
तोहू नौका कहू उडि न जावे। तू काहे मम महि बिस्मावे ॥
तब भीवर कह्यो सुणु रघुनाथ। सकल कुटंब ल्यावो साथ ॥
तांकों इमि महि प्राण वहावौ। पाछे नौका तुम पे ल्यावौ ॥
तुम अपुने पग धाइ कराही। चर्णाम्रितु देवों हमि ताई ॥
जा उडि जावे सभ सग होई। तब हमि कु स ब्यापे नही कोई ॥
रघिपति कह्या जावो ले भावो। नौका परि तुमि प्राण चडावो ॥
भीवर जाइ कुटंबु ल्याया। नौका महि तिन प्राइ बहायो ॥
तिहि मग म रघुपति ओर धाया। नौका आगम करि तीर लगायो ॥
श्री रघुपति क सम पधारे। चणाम्रितु मस्तिक म धारे ॥
पाछ नौका परि प्राण चडाया। तब भीवर ने पार लंघायो ॥

सीर उतार दोऊ करि जोरे। इहि विधि सुणु पून प्रभ मोरे॥
सवा सहाई प्रभ तुम हमि होई। तुमि बिनु अवर न हमिगे काई॥
तब रघुपति मुनीवर सो भाषा। साईदास चितु ठवर हि राषा॥५४

तब रघुपति भी आगे आए। चले चले नगरी महि आए॥
विश्वमित्र ग्रहे माहे गए। अति अनद मंगल बहु भए॥
ऋषि गृहि आ करि यग्य रचाया। असुर अधिक यज्ञ कर्या आया॥
चाहित है यज्ञ कर्म न देवहि। अति विरोधु तब असुर करेवहि॥
राम अनय स्यों वाण सभारे। युद्ध कीयो सभ दानव मारे॥
लछमण वीर सहित प्रभ सीए। सकले असुर सघाण कीए॥
बहुते असुर हने रघुराई। मरीच आदि सर संग उडाई॥
ऋषिको यज्ञ प्रभ पूर्ण कीना। सकल असुर प्रभ ने हनि लीना॥
तब कह्यो ऋषि आज्ञा देवो। अबि तुमि किर्पा हमिहि करेवो॥
जावो नगर अजोध्या माही। दशरथ पिता हमारो चाही॥
तब ही ऋषि ने बाति चलाई। सुण हो राम लछमण दोऊ भाई॥
एकि बात मैं तुमहि सुनावो। अति अनद मंगल बहु पावो॥
तुम श्रवण धरि सुण करि लेवहु। और ठोर कहू चितु न देवहु॥
मेरो कह्यो मन धरि लीजै। साईदास कछु अवर न कीज॥५५

रघुपति कह्यो कहो पुकारे। हे ऋषि पूर्न प्रान हमारे॥
हमि श्रवण धर कर सुण लेवहि। और ठोर बहु चितु न देवहि॥
तब ऋषि नें मुख बचन सुनायो। राम लछमण सुनने चितु लायो॥
जनक स्वयम्बर अधिक रचायो। नगर नगर के नृप सद्यायो॥
मम संग चलो तुमि ले जावो। चलो तमाशा तुमै दिखावो॥
तब ही ऋषु उठियो उठि आया। राम लषन को संग चलाया॥
मिथुला नगरी निकट तब आए। जहा जनक आस्रम सुत छाए॥
तह अधिक फुली फुलबागी। श्री रघुपति बहु नैन निहारी॥
हे ऋषि जी आजु ईहा रहे। इसि फुलबारी महि सुख बहे॥
मेरा कह्या मन धरि लवो। साईदास फुनि सोई करेवो॥५६

बिस्वामित्र मन धरि इहि लीया। जो रघुपति मुख ते अपु कीया॥
भूपति अधिक आगे ते आए। तहं ठौर वहि भी ठहिराए॥

जानकी सहित सखीअनि सेआई। तिस फलवारी महि चलि आई॥
पट्ट करि सभ भूपति निर्पाए। ताहि चित्र किसे नाहि सुभाए॥
बहुरो राम लछन सिहु देप। नैन निहारि रूप तिह पप॥
मुरछ परी हरि रूप पराह। सीता विचार अपने मन माहे॥
ऐसे होइ इह वर मै पावो। अपनो मनु चित्त इसि सग लावो॥
तिनहि निप बहुरो उठि धाई। चली चली पिता ग्रह महि आई॥
जनक विदेही गृहि तजि आया। तिन भूपति महि आइ ठहिराया॥
जनक विदेही नेत्र निहारे। निर्ख रवि सम बीर प्यारे॥
तिहि अति भूपति ऐसे दिष्टाए। जस रवि प्रकास तिमर मिट जाए॥
जब रवि गगन करे प्रकासा। दीपक जोत होइ आत विनासा॥
जसे दीपक जात तिमर मिट जाई। जसे अग्नि समाहि मसि देइ दिखाई
तसे दोऊ बीर आगे दिपतावहि। आनि भूपति ऐसे द्रिष्ट आवहि॥
जनक कीयो हरि को नमस्कारा। करि नमिस्कार हृदे इह धारा॥
कहा प्रतग्या मै मनि कीनी। कौनु बाति मन महि धरि लीनी॥
जो मै परतंग्या न कर्ता। जानकी म इसि आग भर्ता॥
अधि प्रतग्या तजी न जाई। महा कठनि मोह बनी है आई॥
इहि बाल्क कहा विचारे। तोरि धनु धर्नी परि डारे॥
साँईदास संचरु कथा देवे। जिम प्राप्ति होइ सो सेवे॥५७

भूपति सम सो जनक पुकारा। सुनहो भूपति बात हमारा॥
मोह प्रतग्या इह है कीनी। इहि प्रतग्या मन धरि लीनी॥
जो भूपति इमि धन्वि का तोरे। बलु करि अपुना इसि को फोरे॥
अपुनी दुहिता तांको देवो। मात्र भाव तिहि अधिक करेवो॥
भूपति बात सुनी उठि धाए। चलति चलति धन्य निकट आए॥
एकु आइ कर धन्यु हलाए। बलु न लग जो धन्यु उठाए॥
एकु त्याग जाइ दूजा आव। बलु करि अपुना धन्यु उठाव॥
ताका भी बलु कछु न बसाए। लज्जा मान होइ त्याग जाए॥
एकु पसु पीछे दे इकु आगे। इक सन्मुख होअ इकि भागे॥
एसो भांत भूपति सभ आए। बलु ना लागो सभी लजाए॥

कनक प्रसव मोती बहु दीने। घेरे हस्ति बहु संग कीने॥
एक सुहिणी सेमा दीनी। जनक विदेही एहि बिधि कीनी॥
पाछे से बिदा सभु कीए। साईदास सब सुधि लीए॥६२

दसरथ नृपु सग ले करि धाया। केतक मगु मिथुला ते आया॥
परशुराम आग प्रगटि आयो। दसरथ निर्ये अति बिस्मायो॥
कह्यो पुकार तुम कौन हो भाई। हमि को इहि विधि वेहु बताई॥
परशुराम जब बचनु उचारा। दशरथि विस्म रह्यो अधिकारा॥
सुरी भई अबि क्या न कह्यो। कौन ठौर अपना चितु धर्यो॥
मै सकल कुटुब घातु करि लीआ। ईही मार्यो अपुन जीआ॥
दसरथ रगु अवर कछु भया। अति म चकित मन महि ह्वा रहा॥
परशुराम फिरि बचनु बखाना। काज कीव न तुम्है पछाना॥
जिह सम मै मिछत्राइणु कीना। नारी तुम्है बुराइ करि लीना॥
अबि बहु कहा भाग करि जावे। अबि कहु कहा तू आप बुरावै॥
दसरथ का रगु अवरे भया। अति विस्मादु हुवे हो गया॥
सुधि तजि दसरथ भयो हैराना। साईदास मै कहा बखाना॥६३

श्री रघुपति बिधि जानमिहारा। परशुराम सों बचन उचारा॥
हमि छत्रा है प्रभ बसजाया। कहो किस्गुरा करि किर्पा पाया॥
परशुराम तब बचनु उचारयो। धनु संकर को तुम्है बिडार्यो॥
जनक के ग्रहि तुम्है कारजु कीना। शिव को धनु बिडारे लीना॥
श्री रघुपति तब कह्यो पुकारे। सुन हो प्रभ पूर्न पर धारे॥
धनु पुराना पूरा भया। मै उठाइ करि माहि लया॥
जबि म पिच्यो बहु तुटि गयो। दोनो टूक धनु होइ गयो॥
तब अति क्रोध लोचन ललाए। रक्त भुजनि कछु कह्यो न जाए॥
महा बली तिहि बपु अधिकारा। कहा कहो मै ताहि बीचारा॥
कप क्रोधु हुऐ ठहिरायो। मुख ते बचनु उचार सुनायो॥
अग्नि रूप क्रोध अति भारी। ताको धनु भुज महि अधिकारी॥
कह्यो महि माह धनु बिडारा। हमिरे पग्नि को तुम प्रहारो॥
नाहि त अबि सभ ही को मारो। साईदास मै धर्म प्रहारो॥६४॥

पर्सुराम क्रोधु बहु कीना । प्रति प्रभिमानु हृदे महि लीना ॥
दसरथ निर्प प्रधिक बिस्मायो । रघिपति निर्प्यो संचर पायो ॥
हे तात काहे को सुकचावो । संचरु किह कार्ण मन ल्यावो ॥
हमि संग प्रसु कहु किस बसाई । ऐसो कवनु प्रमयो है भाई ॥
भित् रघु ठौर काहे बिससावै । ल्वि प्रयोग मन महि दुःख पावै ॥
पो किसु पै ब्रह्मण हत्या जाई । सोई हमि है सुणु मेरे भाई ॥
प्रवर कोई हमि निकटि न प्रावै । काहे तू मन महि सुकचावै ॥
ताह प्रबोधन बहुता कीना । साँईदास दसरथ सुधु लीना ॥६५

रघुपति धन्यु ताह ते लीना । धन्यु बाण ले कर महि कीना ॥
पच्यो धन्यु बाण करि माही । किस मारो कोऊ प्रागे नाही ॥
तब बसिष्ट सा बचनु उचारा । सुण हो प्रभ गुरदेव हमारा ॥
साध्यो बाणु प्रन्यथा ना जाई । किस को मारो बेहु बताई ॥
तब बसिष्ट रघुपति सो भाषा । स्वर्गपुर काटे एहु प्राषा ॥
रघिपति बाणु करि ते छाडि दीमा । स्वग पुर काट करि लीमा ॥
स्वर्गपुर काट्यो इहि कार्ने । कौसापति प्रभ प्राप प्रपार्ने ॥
मात लोक कोई स्वर्ग न जावहि । स्वर्ग लोक मार्ग ना पावहि ॥
धन्यु फिरि पर्सुराम को दीना । पर्सुराम को प्रंग महि लीना ॥
तांको बसु सभु लीयो हिराई । पूर्ने प्रभ भए रघुराई ॥
पर्सुराम तिहि मति हिर लीनी । महा कठनि बिधि तिन मे कीनी ॥
पर्सुराम फिरि बचनु उचारा । श्रीरामचंद ने लीयो प्रवतारा ॥
चर्ने लाग स्थावर प्रायो । बाह तपस्या सों चितु लायो ॥
तब दसरथ सहित हिपराए । प्रंग प्रंग महि नाह समाए ॥
तब ही प्रागे को पग दीने । नगर प्रयोध्या का मग लीने ॥
जब केतक मगु प्रागे प्राए । तब प्रान भूपति पड़ पाए ॥
जा प्रनकि स्वचर माहे प्राए । तहा बसु ना लागो ठांड भए ॥
सोई प्रति धामे चलि प्राए । चाहति हरि सों युद्ध कराए ॥
तब रघुपति ने बाण प्रम्हारे । केतक भूपति प्रभ ने मारे ॥
केतक भाग गए बचे सोई । रघुपति सर काहा हार्थ सोई ॥
नृप मार धाम को धाए । नगर प्रयोध्या माहें प्राए ॥

इहि वसु किस जो धनपु उठावै । ता सग वलु कहु कौन बसावै ॥
सुभ नृप धन्तु त्याग करि बीमा । सोईदास रघुपति मुख सोमा ॥१८

रामचद्र सदमण उठि धाए । दोऊ बीर धनप प आए ॥
तव ही जानकी नैन निहारे । मम अतर उनि एहु बीचार ॥
हु किर्पासि किपा निधि स्वामी । सकल बिर्दा के अंतरि जामी ॥
किपा करो इहु धपु उठाव । वग विलम कछु मूस न लाव ॥
मोहि परापति इहि पतु होई । और न चाहिती हों मैं कोई ॥
मम मपीधा म इहि पुकारा । हु कौसापति प्रान अधारा ॥
जानकी को पतु एहो देवी । तुमिरो कहो चित्त धरि सबी ॥
जनकि भार्जा भी चितु धारा । हु धर्नी धर सकल भतारा ॥
तुम करुणा अपुनी प्रम करहो । अपनो वसु इमि मुज महि धरहो ॥
ताहू बल कर इमि धमु विछारे । तोहू किर्पा करि बम का अधिकारे ॥
जानकी को पतु एही होई । जानकी और चाहित नही कोई ॥
जब ममनो एहि वचन उचारे । सोम्हाम प्रभ न हुत भारे ॥१९

रामचद मनि भीयो बीचारी । चिता मगन सकल है नारी ॥
अपुनो रुपु कछ और दिखायो । जिन निर्खा सोई बिस्मायो ॥
तिमर ही उजीआरा हाया । श्री रघुपति जब प्रगटि पमाया ॥
जनिक निप मम चितवन कीनी । एहि भाति हुवे धरि सीना ॥
इहि कछ रुपु आछा दपावै । अपुने बस करि इहि धन्तु उगाव ॥
कौन रूप मै इमहि बपानो । इसि का धतु कहा मैं जानो ॥
रवि इहि माप के रवि रमि आया । पर्म पुप कहु रूप दिखाया ॥
कहा बयाना सुदरिमाई । मम पै इहि बिधि बर्न न जाई ॥
गोक कह इह कहा उठावै । धन इसि का क कहा कमाव ॥
मिल मिल सभु मनि महि मुस्कावहि । एहि बालक कहा धपु उठावहि ॥
गम देवनि बाण उरि धाए । मिकटि धन्पि के आइ ठहिराए ॥
सदमण सा हरि बचनु उचारा । सुण हो सदमण बीर हुमारा ॥
तुमि जा धन्पि का मंहू उगर्ई । मैं आज्ञा तुम्हि दीनी भाई ॥
तब सदमण प्रम सो इहि भाषा । करि जोरे मुप ते इहि भाषा ॥

तुम किर्पा ते सयो चठाई। क्या प्रभ एहि जो तुमहि सहाई॥
इहि माह कामु नही तुम कामा। साईदास पूर्न प्रभ रामा॥६०

तब रघुपति कह्या मल भाया। इहि विधि तै जो मुप तै माया॥
अंतर ध्यान होइ तुम जावो। त्रलोक को आइ सुनावो॥
श्री रघुपति बल कर धपु तोरे। बल कर धन्पु साई बहु फोरे॥
तांते शब्द होव अधिकारा। हरिमान होवै ससारा॥
त्रलोक कप करि जाव। धन्पु तूट जब शब्द उठाव॥
लछमण अंतर गवि होइ धाए। त्रलोक को जाइ सुनाए॥
श्री रामचद जो धन्पु विडारे। तांते शब्द उठित सत्कारे॥
तुम मन माहे त्रासु न स्यावो। हिर्पमान हो मगल गावो॥
तब त्रलोक देवनि भो भाए। ठौर ठौर परि भाई ठहिराए॥
श्री रामचद जो धन्पु उठायो। मानो त्रिण करि महि ठहिरायो॥
करि सों खिच्यो धपु बिडार्यो। तांते शब्द उठयो अधिकार्यो॥
तब सभ लोक में धकि रह्यो। साईदास तब बहु सुपु लह्यो॥६१

जानकी बेसुध सिरि परि डारा। अति अनदु मन माहि बीचारा॥
दसरथ को लिप पतीआ पठाई। करो काजु रघुपति को आई॥
जब पतीआ दसरथ ने देषी। अपुन त्रिग सी पतीआ पेषी॥
सभ धाधन लीयो बुलाई। बसिष्ट ब्राहमु सौना माई॥
तिस को सग लेइ उठि धाया। मिथुला नगरी को हितु भायो॥
मिथुला नग्री के निकटि आए। मग मग तिह बहु सुप पाए॥
जनकु देवि लिहि टाल भया। दसरथि को मग माहे लया॥
मरु मडप काजे कीनो। रघपति काजु कर्म लीना॥
धूप दीप आर्ती न आई। मिल नारी बहु मंगल गाई॥
पगन भाग कृपा पुज लप मामा। दा कन्या तांते अगामा॥
लछमण भर्थ सत्रघन भाई। तिह काजु कीनो अधिकाई॥
दसरथ सम सुख काज कीना। जनक विदेही बहु कछु दीना॥

---

१ मूलग्रन्थ में इसके अनन्तर "जनक सुना मैं ता" लिखकर आगे रिक्त स्थान है। सम्भवतः लिपिकार से कोई पंक्ति छूट गई है।

कनक प्रदव मोती बहु दीने। मेरे हुस्ति बहु सम कीने॥
एक भुहिणी सेना दीनी। पन्म विदेही एहि विधि कोनी॥
पाछ से विदा सभु कीए। साँईदास सर्व सुधि लीए॥६२

दशरथ नृपु सग से करि धाया। केसक मगु मिथुला ते भाया॥
पर्सुराम भाम प्रगटि भायो। दसरथ निर्पे भति बिस्मायो॥
कह्यो पुकार तुम कौन हो भाई। हमि को इहि विधि दहु बताई॥
पर्सुराम जब बचनु उचारा। दशरथि बिस्म रह्यो भधिकारा॥
सुरी भई भति भया मैं करह्यो। कोन ठौर भपमा बितु भरह्यो॥
मैं सकस कुटुब घातु करि लीमा। ईही भार्यो भपुन जीमा॥
दशरथ रगु भबर कछु भया। भति भै चकिति मन महि हो रह्या॥
पर्सुराम फिरि बचनु बपाना। काज बीच म तुम्है पछाना॥
जिहू सम म निछनाइयु कीना। मारी तुम्है दुराइ करि लीना॥
भवि कहु कहा भाग करि जावे। भवि कहु कहा तू भाप दुरावै॥
दसरथ को रगु भबरे भया। भति बिस्मातु हुवे हो गया॥
सुधि तजि दसरथ भयो हैराना। साँईदास मैं कहा बपाना॥६३

श्री रघुपति बिधि जामनिहारा। पर्सुराम सों वचन उचारा॥
हमि छत्री है प्रभ वमजाया। कहो किरपा करि किर्पा पाया॥
पर्सुराम तब बचनु उचारयो। भम्पु शंकर को तुम्है बिदारयो॥
जनक के ग्रहि तुम्है कामु कीना। शिव को धम्पु बिदारे लीना॥
श्री रघुपति तब कहया पुकारे। सुन हो प्रभ पूर्न पर भारे॥
धम्पु पुराना पूदा भया। मैं उठाइ करि माहे लया॥
जबि मैं पिच्यो बहु तुटि गयो। दोनो टूक धम्पु होइ गयो॥
सब भनि माथ सोजम लसाए। रक्त पुहनि कछु कह्यो न जाए॥
महा बली निहि धम्पु भधिकारा। कहा कहो मैं ताहू बीचारा॥
कप क्रोधु हुवे टहिरायो। मुप ते बचनु उचार सुनायो॥
भगिन रूप क्रोध भनि भारी। ताको धम्पु मुज महि भधिकारी॥
बाधा नहि मोह धन्पु बिडारा। हमिरे धन्पि को तुम प्रहारो॥
नाहि त भबि मम ही का मारो। साँईदास मैं मर्म प्रहारो॥६४॥

कौशल्या को माप पठाए। रघुपति की कारजु कर ल्याए॥
जो कछु बेद मिर्जा़दा होई। हमहि ले बसों करो तुम सोई॥
भवि हमि तुमि की कह्यो पठाई। सांईदास विधि प्रगटि सुनाई॥६६

कौसल्या बनिता संग लीए। श्री रघुपति उौर तिन पग दीए॥
दास मृदंग बजावति भाई। श्री रघुपति पै भाई ठहिराई॥
बजसि मृदंग उठिति झुनिकारा। तब सभही ग्रहि का पगु धारा॥
सीता को ग्रहि महि ले भाए। अनद मान होइ मगन माए॥
जो कछु बेद मृजाद बताई। कौशल्या न कीनो साई॥
भमो भनदु तकि ग्रहि मांही। भ्रम माहि भावति बहु माही॥
केतकि दिम जबि भए विवीता। दसरथि भूप अतिभाए दिष्टेता॥
कर पल्लव ताके कछु होया। जिस बिन दुःख सुप ना गोया॥
पीक पड़ी तिहि पस्लव माही। अनकि उपाउ कीस छुटे नाही॥
दुःख भयो भूपु निकटि नि आवै। जसे मीन जस विनु तडिफावै॥
कौकेही सुदर अधिकाई। दसरथ निकटि रहे सन्दाई॥
ताहि रूप मै कहां बपानो। सांईदास उस्तिति कहा जानो॥६७

कोकेही कर पस्लव कर लीमा। से अगुष्ट भूप माह कीना॥
पीक सकल तांकी चुम लीमो। भूप स सव ही बार न दीनो॥
पीक चूसी दसरथ भूप पायो। सुख उपिज्यौ दुःख मूल गवायो॥
जैसे कदरा होति अंधारा। दीपर जास करति उजीयारा॥
जैसे विर्छमू कहरिया होइ। जमु तिहि मिल सुप पाव सोई॥
जैसे भूपा भोजनु पावै। भोजनु लइ भूप सजि देवै॥
तैसे दुःख दसरथ तजि भागा। मति अनंदु तकि मन लागा॥
मैन मूद भूप के ग्रहि आया। सकल दुःखु तन मनहु हिराया॥
दसरथ भूप कीनो अधिकाई। कौकीही कर पस्लो भूप माही॥
जाग पर्यो निर्पा तिह चोरा। हे कोकही सुगम कहा मोरा॥
कछु मागी तुम कौ बर दबौ। जो तू कहै मान मै सबौ॥
उौर बानि मै मा कछु करियो। सांईदास मोई मनि धरहा॥६८

कौकही मुपि पीक अधिकाही। तब उनि डारी भनि पराही॥
डारि भनि प र बचनु उचारा। तुम पै रहु बद रहो हमारा॥

मांग लेयो जबि इच्छया होई। जो इच्छया होइ लेवहु सोई॥
दसरथ तव मन महिं धरि लीना। ताहि कहा मनि माहे कीना॥
कर पल्लव छूनी वहु सुणु पायो। सुख भयो सभ दुःख विसरायो॥
देव इकत्र होइ करि आए। दसरथ को तिह आय सुणाए॥
गंधव हमि को पहु दुःख देवै। निसबासर हमि युद्ध करेव॥
हमि बसु नाहि जो सन्मुख होवहि। युद्ध करहि करि तांको पोवहि॥
हे नृप हमिरी करो सहाई। अवि हमि तुमसों कथो सुनाई॥
दसरथ सुनि इहि बिधि उठि धाया। कौकेही को सग चलाया॥
जहां जाइ तहां सग जाई। विनु कौकेई कहू नि जाई॥
इहि प्रयोग सग वहु लीनी। साईदास विधि पर्गटि कीनी॥६९

दसरथ वहिरागी पिछे आवे। दसरथ इहि विधि नामु कहावे॥
अव दसरथु युद्ध को उठि धाया। वेग विलम्ब तिन मूलि न आया॥
मिलि गंधर्व आए अधिकाई। जो दसरथ सों करहि लराई॥
दसरथ धनु धाए करि लीना। गधपर्सो तिह बहु युद्ध कीना॥
रथि भठि टूटि गई बीचाही। कौकेई निर्यो वहु ताही॥
कौकेही थांमहि भुजि दीनी। उमि मन भतरि येहि विधि कीनी
मतु रथु भजे धनि उपिराहें। दसरथ को गधर्व जीता जाहें॥
इहि प्रयोग तिहि महि भुजि दीई। इहि विधि कोकेई मनि कीई॥
जो जोरि दसरथ रथु ले आवे। कौकेही तहू जोरि धावे॥
अधिक युद्ध दसरथ करि लीना। गधव को प्रहारणु कीना॥
केतक गधर्व भागे जाही। पाछे मुडि तांके वहु माही॥
मागे गधर्व रणु तिहि हारा। साईदास रथ नृपु मारा॥७०

दसरथ ले जबि रथि जौर देपा। कौकेई को ऐसे पेपा॥
हा हा कौकई क्या कीया। काहे भुजि तैं इसि महि दीया॥
तब कौकेई बचन उचारा। सुण हो प्रभ जी प्रान अधारा॥
रथि भठि टूट गई बीचाही। निर्यो रथु गिरे धर्नि पराही॥
रथु गिरे धर्नि हार हामि आवै। गधर्व हमि को सभै हिरावै॥
तब मै भुज इसि माहे दीनी। एहि बाति मै कर्म लीनी॥
दसरथ कह्यो मांगु वर रानी। मैं वर देवो इहि बाति बपानी॥

जो कछु मागे सो कछु देवौ। सुप्रसन्न तुम्ह कौ करि लेवौ॥
कौकेई सब ऐसे भाया। एकु बर तुम पै मागे माया॥
एकु बर इहि हमिरो तुम पाहे। रहो भूपति मैं सोवो कहाहे॥
दसरथ जब अयोध्या को आया। बजत बजत्र अनदु सवाया॥
महा अनदु तांक ग्रहि होया। साईदास सकसा दुख दोया॥७१

एक दिन दसरथ के मनि आई। राजु देवौ म रघुपति ताई॥
अति म वृधि भया अधिकाई। मो पै राजु कीयो ना जाई॥
लोक नगर के सभे बुलाए। तांमों इहि विधि आप सुणाए॥
चाहित हो रघुपति राजु देवौ। मैं हरि स्मरनु हुवे करेवौ॥
वृधि भयो सुधि बुधि बौरानी। इहि विधि दसरथ भुपो बपानी॥
मम लोका मिल एही भाया। हे नृप दसरथ बहु भलो भाया॥
कमर रगर भाजन भरि लीना। माला छत्रु बहु विधि कीना॥
कह्यो प्रात समे लीयो राजा। दसरथ कह्यो करो इहि काजा॥
तब रघुपति मनि माह वीचारा। मोह सिर कार्जु है अति भारा॥
म लेवौ राजु कार्जु का करही। कार्ज कर्तन को चितु बरही॥
सब चेरी प्रम लई बुलाई। तांसो इहि विधि राम सिपाई॥
जा कहु तू कौकेई ताई। दसरथ रघुपति राजु बहाई॥
जबि त रघुपति राजा होई। भर्थ को नामु न लेवै कोई॥
कौसल्या को कहिउो होई। तेरो कह्यो माने नाही कोई॥
जानकी होइ वडैमी रानी। साईदास मैं बाति बपानी॥७२

चेरी कौकेई पै आई। तांको आइ करि बाति सुणाई॥
दसरथु राजु रघिपति कौ देवै। रामचद राज को लेवै॥
कौकेई सुणि विधि हिर्पाई। तांकौ कथा वीचार सुणाई॥
मथरा सौं तब बचनु उचारा। हे मंथरा क्या भलो पुकारा॥
एहि बात तुम्है माह सुनाई। सुनति बात सुखु भयो अधिकाई
ऐसो क्या जो तुम्ह कौ देवौ। सुप्रसन मैं तोहि करेवौ॥
अग अंग मैं बहु हिर्पाई। तांकी बाति न कहिणी जाई॥
जैस जस मिल फूलै फूला। विर्छ हरिआ होइ सए मूला॥
ऐसे कौकेई हिर्पाई। साईदास सो प्रगटि सुनाई॥७३

तब श्री रघुपति अंतरजामी। सकल घटा माहे बिस्रामी॥
कह्यो बुरी भई मति कया कीजै। उसि को मनु क्युं करि भर्मीजै॥
बहु बिधि सुरा के बहु हियाई। अंग अग महि माह् स्माई॥
श्री देवा जग की बहु माई। श्री रघुपति ने तब ही बुलाई॥
तिहि आग्या रघिपति न दीनी। एही आज्ञा वांको कीनी॥
कौकेई की सहु भुलाई। वांकी मति को लेई बौराई॥
श्री देवा तब ही उठि धाई। कौकेई पाहे वह आई॥
आवति मति तिहि ने बौराई। वहु मति भूलि उौरे धाइ॥
बहुरो बेरी बचनु उचारा। हु राणी कया मन सुघ धारा॥
जब श्री रघुपति जो राजु पाए। तब पाछ तू कहा कराए॥
भर्थ को राजु माह को देवै। वह दुख तव तू मन महि सव॥
यवि म तुम सो भाई बतायो। सांईदास म प्रगटि सुनायो॥७४

तब कौकई बात चलाई। हु मथरा भली बात सुणाई॥
कहा करों कस करि भापो। दसरथ को मैं कया करि भ्रावो॥
जो तू मो को देह बताई। आई मे नृप पै कहा जाई॥
तब ही मथरा बचनु उचारा। सुण कौकेई कहा हमारा॥
तुमरे दो वर नृप प आवहि। जो तू मागहि माई पावहि॥
जो नृप निसि आव तोह पाहो। तू वह दोनों वर म पाही॥
जा वह कहे माग करि लयो। तो तू वह हमी को देवहु॥
प्रथम भथ को राज वहावो। द्वितीया राम उदास पठावो॥
एही दोवे वर मैं पायो। और बात पछ हुवे नि स्यावो॥
कौकई कह्यो वहु भला कह्या। मन माहे बिधि [illegible] माता॥
[illegible] बौरयो निग मावन हावा। कौकई मन [illegible] स्या पेयो॥
म[illegible] मदि [illegible] म जनायो। [illegible] उारि तिन [illegible]॥
[illegible] दसरथ तब आयो। म[illegible] पधिर निमर निर्दायो॥
दसरथ सवा पुकार सुनायो। ह कौक[illegible] मनु लायो॥
क[illegible] तुम को है मान। [illegible] प्रधान उमीमान भागा॥
[illegible] मारो [illegible] मनै [illegible] बिधि [illegible]॥
महा [illegible] [illegible]। [illegible]॥

दसरथ सों उनि बचन उचारा । सुण हो नृप जी प्रस्नु हमारा ॥
दोई बर मेरे प्रवि देवो । आप बचन पूर्न करि लेवो ॥
तब दसरथ ने बात बसाई । इहि प्रयोग इहि रूनु विचाई ॥
जो तुम बांछा होइ सो लेवो । मुप प्रपुने से कछु उचिरेवो ॥
तब कौकेई ऐसे भाषा । मर्म राजु देवो इहि भाषा ॥
दूजा वर मो की इहि देवो । रामचद कों बनवासु पठेवो ॥
माहि त प्रवि तजों प्राना । साईदास सिहि मन इहि माना ॥७४

तब दसरथ ने बचन उचारा । हे कौकेई क्या मन धारा ॥
जैसो तुमरो रूपु उचारा । तैसा तुम घटि माह प्रमारा ॥
बाहर रूप सुंदर विचाई । अंतर महि विपु कहा छपाई ॥
ध्रिग ध्रिग बुधि तुमारी भामा । मो सो दुजा कीयो तें रामा ॥
इहि बिधि कहि दसरथु मुर्छायो । सकसी सुधि बुधि ताहि भुलायो ॥
मिस बीसी म्रत्तू तब होया । दसरथ तसा मनो न पोया ॥
मत्री दसरथ को तब भाया । हे नृप कहा त कौन समाया ॥
रघुपति को प्रावो देहो राजा । हे दसरथ करि ले इहि काजा ॥
दसरथ कहा जो बिधि सुण सबै । तां बिधि प्रतु तांको बवो ॥
रुदन करति ध्रिग नीर दुरामा । तब मत्री मन महि हैराना ॥
बिस्न भयो कछ रुदनु कराए । मुधि त बचनु जु ना उचिराए ॥
मत्री ने तन बचन उचारा । साईदास सभ कहू यो बीचारा ॥७६

हे कौकेई इहि क्या होया । दसरथ नृप कवन दुःख रोया ॥
तब कौकेई बचनु सुनायो । तब मत्री को तिनहि बतायो ॥
राजु दीयो नृप भरथ क ताई । रघुपति सों बनबास पठाई ॥
सुनि मत्री एहि बिधि उठि धाया । चला चला रघिपति पहि आया ॥
कह्यो पुरार राम जी ताई । तुम बनवास भयो प्रभिराई ॥
कौकेई इहि बचनु उचारा । हे पून प्रभ प्रान प्रयारा ॥
दसरथ रुदन करति प्रभिराई । ताहि पास मैं कहा उचिराई ॥
कौसारनि प्रभ प्रान पयारा । गम ही बिधि हो जानए हारा ॥
चलति चलति दसरथ पहि आया दसरथ को तब धाय सुनायो ॥
हे पति किहि बिधि राजु कराहे । किउ रोवत है तू मन माहे ॥

इहि विधि को प्रतु मो कौ दीजै । इहि करुणा प्रभ मा परि कीजै ॥
कवन प्रयाग दुःख तै पायो । सांईदास सो मोहू बतायो ॥७७

कौकेई तब बचनु सुनायो । रुदन करनि इहि विधि चितु लायो ॥
तुम को कहति आहा बन माहे । चतुर्दश वर्ष रहो तुम ताहे ॥
तुमि ने राजू भर्थ को दीना । इहि कामु तुमि ने है कीना ॥
जो मोहू सुतु मेरो कहूपा माने । और बाति कछु हुदे ना आने ॥
जब रघुपति इहि विधि सुरा पाई । मुपि अपुने ते बाति सुणाई ॥
हे पति[1] तुमि आज्ञा जा होई । हुबे धार करि हौं म सोई ॥
हे पति तुमि प्रभु छाको नाही । मे जावति हो बन के माही ॥
रञ्नु न करु कछु हुबे म आनो । तुमि को निकटि सर्दा तुम जानो ॥
सुतु सोई पति कहूपा करावै । जिसीमा भाई कछु हुदे न त्यावे ॥
तब दसरथ ने बचनु उचारा । सैना सहित लहो अधिकारा ॥
तबे कौकेई कहयो पुकारा । जब दसरथ इहि बचनु उचारा ॥
जबि सैना रघपति ले जावै । भयु राजु कहु कहा करावै ॥
तब श्री रघुपति बात बताई । काहे रुष्ति है मेरी भाई ॥
माहि सना काम नही आवै । इहि सैना मोको नहीं भावै ॥
जो प्रथमे प्रभ बचन उचारा । ताही बचन हुदे मे धारा ॥
ले आग्या दसरथ ते धाया । सांईदास रघपत गृह आया ॥७८

जनक सुता मो बात सुनाई । एक एक करि ताहू बताई ॥
कौकेई बमवासु दिवायो । तुमि पति आग्या मनि ठहिरायो ॥
मी को आज्ञा पति की होई । जो आग्या होइ कर हा सोई ॥
मोहू कहो तुम बन को आवो । मेरो कहूपा हुदे नहि लावो ॥
पति मै जावति हो बन माही । और बाति करहो कछु माही ॥
तुम सुप वसो अयोध्या माही । मानु महतु करवो कछु नाही ॥
भय कहूप। सिरि ऊपरि रापौ । और बाति कछु नाहू नि भापो ॥
जनक सुता जबि विधि सुरा पाई । मूर्छा होइ करि धर्नि गिराई ॥
श्री रघपति भुजा पकरि उठाई । मूर्छा ते फिरि सुधि महि आई ॥

---

[1] पति > पित = पिता—स्वर परिवर्तन ।

तब सीता कह्या मोह सग लेवो। पाछे पग तुम बन महि देवो॥
तब श्री रघपति ताह सुनायो। हे जानकी क्या मनि ठहिरायो॥
तुमि हमिरे सग काहे श्रावो। तुम अपुने ग्रहि महि ठहिरावो॥
महा भै माम है बहु अधिकाई। बन महि कहा करौ तुम आई॥
हमि तो पत की श्राज्ञा पाई। श्राग्या पाइ चले बन भाई॥
बादर उमड उमड के श्रावहि। महा अधिक उह बर्षा लावहि॥
कबहू पवन चले अधिकाई। कबहू सिघ सन्मुष हमि पाई॥
व्याघ्र अधिक फिर्त तिहि ठौरा। दुःख घणो सुष नहि हे मोरा॥
बन महि आहि अधिक दुःख पावहि। तब बन महि बहुता पछुतावहि॥
काहे नगर त्याग बन आई। इसि के संग काहे मै आई॥
तांतें एहि भलो है भामा। रहै अयोध्या इहि भलो कामा॥
तुम रहो नगर अयोध्या माही। हमिरे सग चलो तुम नाही॥
तब ही जानकी बचन् उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा॥
तुम्है त्याग कैसे सुष पावौ। तुम्हि बिनु मनु कहु किम सौ लावौ॥
पवन मेघ ते हमहि डरावौ। सिघ त्रासु प्रभ हमहि पठावौ॥
जो ईहा रहो सिघ दिष्ट ग्राव। जा ईहा रहो दुःख मनु पावै॥
श्री रघुपति फिरि बचनु उचारा। जानकी कहा हुदे त धारा॥
मै कछु भामु तोहि न दिपायो। मोकी भांति मै ताहि बतायो॥
हमि संग काहे बन तुम आई। तू भामा हम नर अधिकाई॥
हमि दमि कोस चले छिण माही। तू हमिरे सग पहुचे नाही॥
हमि ता सिघ सौ करहि लराई। तुम का सिहु पकरि छिन पाई॥
मोह कहा मम महि ठहिरावो। और भांति कछु नाह चलावो॥
जानकी फिरि तारा प्रभु दीना। हे प्रभ कहा उचारे लीना॥
जो तुम किर्पा मा परि होवै। दुःख दर्द व्यापि नही कोवै॥
तुम्हि बिनु दुःख दर्द अगाहा। तुम्ह बिनु प्रान निकसि करि जाही॥
जा तुम माह त्याग जावा। बिरह अग्नि तन हमिरे लावा॥
तुम बिनु प्रान निकसि करि जाही।
इन्हि रघुराई नमि बिनु मोर्प रावो न जाई॥
किर्पा करि हमि को सग लेवा। दुःख दर्द हमि का ना देवो॥
और भांति कछु नाहि चलावो। हमि कौ सग सइ करि प्रभ धावो॥

रघुपति फिरि कह्या जानकी ताई । हे जानकी चलहो बन माही ॥
प्रहु भर भूपन अंग लुटावो । छिन पलु विलम नाहि तुम लावो ॥
जानकी तत्काल इहि कीना । प्रह्म भग भूपन सभ तजि दीना ॥
मालु धनु दीयो लुटाइ खिण माही । पाछे कुछु रायो उनि नाही ॥
रघपति जानकी कौ सग लीना । चाहुति गवन उद्याने कीना ॥
जो नृप कह्या सो मनि ठहिरायो । साईदास चित्त उनि लायो ॥७९

जब रघपति पग आगे दीने । लछमण वीर तबी सुण लीने ॥
लम्मण वीर तबे सुण आया । श्री रघपति सौ आप सुणाया ॥
हे प्रभ मै तुमरे सग आवौ । पलु छिनु तुम विनु ना ठहिरावौ ॥
तुम विन निकसि जाति मोह प्राना । हे पूर्न प्रभ मैं इहि जाना ॥
श्री रघपति कह्यो सुणु वीरा । हमि सग किउ चस चचल वीरा ॥
मोह प्राग्यापत कीसे आवौ । पति आग्या मन माहे ल्यावौ ॥
इहि विधि वधू वेद बताई । पिता समान बडो है भाई ॥
मोह कह्यो मन महि ठहिरावो । बन जावन चितु नाहि ल्यावो ॥
तुम कौ किसै बनवासु न दीम्रा । तुम ह्रदि महि किउ इहि धरि लीम्रा
तुम बसो नगर अयोध्या माही । हमिरे सग चलो तुम नाही ॥
बन महि चलो कष्टु बहु पावो । साईदास इहि मनि ठहिरावो ॥८०

तब लछमन ताको प्रतु दीना । हाथ जोर विनती मुप कीमा ॥
हे प्रभ तुम जाव बन माही । हमि तुम विनु किउ रहो इयाही ॥
मै तुम त्याग इहा ना रहो । नग्र माह आसनु ना गहों ॥
तुम्हि विनु बहु कित काम हमि आवहि । तुम्ह विनु बहु कसे सुप पावहि
तुम्हि विनु हमि प रह्यो न जाई । हे प्रभ पूर्न रघपति राई ॥
किर्पा कर हमि सहित चलावो । बेग विलम्ब प्रभ मूल न लावो ॥
विनु जल ब्रिछ हरया नही हो । विनु नायक चमु सरे न कोई ॥
हे प्रभ तुमि विनु रह्यो न जाई । साईदास मन बहु दुःख पाई ॥८१

रघपति लछमन को समझाई । सुण हो विधि तुम मेरे भाई ॥
महा बिकटि बनु रह्यो न जाई । सिंघ असुर बहु त्रासु दिपाई ॥
भूप प्यासे क्या तू पावहि । सुनहो बंधू बहु दु ख पावहि ॥

तप सीत सहा बहु सताई। तुम पै बहु दुःख सह्यो न जाई॥
मेरो कह्यो मन धरि लेवो। और बाति कछु हृदे न देवो॥
बहुरो लछमन तिह प्रतु दीना। हे रघपति तुम ज्ञान प्रवीना॥
हमि का भूप का त्रासु दिखावे। और धाम प्रभ हमहि बतावे॥
सिम ससुर प्रभ कहा कहावे। तुम किर्पा कछु निकटि न आवे॥
मैं तुमि सग बसो बनि माही। साईदास ईहा रहो नाही॥८२

बहुरो रघपति ताहि सुनाया। और बाति प्रभ प्रशनु बताया॥
बन महि पाट पीतबर नाही। इहि बिधि समझि देखु मन माही॥
कां परसैनु करो मेरे भाई। तुम को दुःख उपजै अधिकाई॥
कहा सिहाने धरि धरि सोवो। हे मोहु बीर महा दुःख होवै॥
किम प्रयागतुम बन महि जावो। हमिरे सग काहे को आवो॥
तुमि दुःख लागे हमि दुःख होई। बन महि सुपु बहु महा कोई॥
कांटे अधिक पडे पग माही। साईदास काहु दुःख पाही॥८३

लछमन कह्यो सुना रघुराई। दुःख कहा लागे तुम ही सहाई॥
पाट पीतबर मोहु तेरा नामा। और बात सों मोहु नही कामा॥
तुम का त्याग रहा कहा ठोरा। तुम्हि बिनु होवति हों मैं बौरा॥
तुम बिनु सुधि बुधि सकसी जाई। तुमि बिनु मनु रप न पाई॥
तुमि बिनु मो को भी अधिकाई। तुमि बिनु मो पहि रह्यो न जाई
जहा तुमि चला तहा मैं आवों। तुमि बिनु नगर भकिउठहिरावों॥
तुम बिनु दग्ध होत मोहु प्राना। हे प्रभ तुम बिनु कहा बपाना॥
तुम बिनु जीउ निकसि मोहि जाई। जसे जल बिनु मीन तडफाई॥
तुमि बिनु हमि पिते काम नि आवहि।
तुमि बिनु दुःख अधिक हमि पावहि॥
तुमि बिनु हमि मोहि कछु न सूझै।
तुमि बिनु इहि मनि बाति न बूझै॥
तुमि बिनु राति दिवस अधारा।
तुमि बिनु बहु न होत उजारा॥
तुमि बिनु सुजनो भाजु न हाई।
तमि बिनु महा दुःख प्रभ हाई॥

अनुदिन तप पाछे फिरि आवहि। काहू का नूं हमि सग आवहि॥
हे मय्या चितु ठउरे राखो। औरु बाति कछु मुखो न भाखो॥
हमि सदा सदा रहै तुमि पाहे। कहू तुमि से दूरि न जाहे॥
ह सुन कहा ते बात बनाई। म रहा मन पहि रहा न आई॥
तब श्री रघुपति ताह बतायो। ह माता काहे चितु लायो॥
तुमि सुप बसा मात इहि ठौरा। गयरु मन स्यावो नही मोरा॥
कौशल्या कह्यो जो तुम आवो। जानकी लछमन को छडि आवो॥
जनक सुता बनु कबहू न दप्या। तमि बनु कबहू न नत्री पेप्या॥
कैसे करि बन को इहि जाव। कसे बन महि पग ठहिराव॥
इस हि छोड जावो रघुराइ। यहा रहि इहि बन महि जाई॥
तब रघुपति ताका प्रतु दीना। ह मय्या मैन कया कीना॥
म इनि कों बहु कहि कहि रह्या। इनि मरो कह्या मनि महि ना सत्या
सिर्पा करि मोह बहु छडाई। इहि बिनसी मुगाहो मरी माई॥
कौशल्या कहा जानकी नाई। ह जानकी यनि बहु दुख पाही॥
बिन प्रयोग इनि क सग जावो। बिन प्रयोग बन का चितु लावो॥
तुम सुख बसो अयोध्या माही। काहू का नूं बन महि जाही॥
तबही जानकी बचन उचारा। बिनु रघुपति कया काम हमारा॥
हमि जु रखो नमि न माहा। रामचन्द्रजी बन को जाहो॥
रघिपति बिनु पहुना दुख पावो। रघुपति बिनु चितु कामो लावो॥
मो पहि मनि महि राखो न जाई। बिनु प्रभ पून रघुपति गई॥
तुमि सिर्पा कर बहु गुरु पावो। मौनिगम जो हरि सग जावो॥८७

कौशल्या फिरि सिहि समझाव। बनेक भाति बहु नाहि बनाव॥
हे जानकी बन सुखु नही कोइ। दुख भूख बा महि बर होइ॥
पग महि काटे चुभित पुडाही। नर दुख पावै बहु मनि माही॥
बन्नु त्याग भस्म धन साव। घ बर त्याग मृगानु उडाव॥
दला भोजन बन प्रकार। ऊग कन्मूर अहार॥
सदा बिचर बन सिप को धामा। निरवासरि बन मार बागा॥
सग बाघा मनि महि धरि मारे। जानकी और म मन महि दीजै॥

मैं तुमि पाछे कहो पुकारा। तुमि मम लेहि बीचारा ॥
हे जानकी जो सुख को चाहे। सांईदास इहि संग न जाहे ॥८८

जानकी फिरि तांको प्रभु दीना। हे माता कहा मनि लीना ॥
बन महि सुख होइ अधिकाई। जबि मोहि रघुपति होइ सहाइ ॥
कांटे हमिरे निकटि न आवहि। जबि हमि रघपति पाछे आवहि ॥
बदन हमिरे धाम न आवें। मिर्ग मृगानु हमा को भावें ॥
सत्री मोजनु कहा करावहि। हमि कंद मूल स ले करि पावहि ॥
सिंघ कहा बलु मोह निकटि आवें। हमि को अपुना आसु दिखावें ॥
निसवासरि जो बन महि बासा। सदा सदा तहा मोग बिलासा ॥
हमि छिनु हरि बिनु रहिणु न पाही। हमि जावहि रघपति सग ताही ॥
तुमि फिरि बाति न कोइ असावो। हे मोह मात हमि काह सतावो ॥
जब कौसल्या इहि सुण पायो। तांसो फिरि माह बचनु सुनायो ॥
बहुरो लछमण को ऐसे भाख्यो। लछमन भी एमे ही भाख्यो ॥
पग धरि सीस गवनु हरि कीआ। लछमन जानकी को संग लीआ ॥
रघुपति चल्यो उद्यान के ताई। सांईदास सोच मन माही ॥८९

श्री रघपति बन जबि सिधारे। दशरथ मंदर परो निहारे ॥
मंदर चढयो रामु निहारे। जानकी लछमन सहित समारे ॥
जबि लगि द्रिष्ट परे रघुराई। दसरथ दूपु न लागो काई ॥
भई म्रीण जबि द्रिष्ट न आई। दशरथ ग्रिग महि कछु न सुहाई
मंदर ते गिर परयो भरायण। पनि बोलि चाह मिल्यो नरायण
छूटें प्राण कामु तिस होया। रघुपतिको मन संसा पोया ॥
इहि बिधि श्री रघुपति सुण पाइ। दशरथु कामु कीयो मेरे भाई ॥
दसरथ नृपु देवलोक सिधारे। तब श्री रघुपति मनि बीचारे ॥
कमि कतूत श्री रघुपति कीआ। बेद ब्रिआधा मनि धरि लीना ॥
कमि कतूत करि आये आए। महा बिकटि बनु सौ दिखलाए ॥
कांटे पुकहि भामु बहु होई। मनि महि सुख नाहि है कोई ॥
चले अगस्त के आश्रम आए। छिन पलु इकु दिनु तहू ठहिराए ॥
सारग धनु अगस्त ने दीना। श्री रघुपति ले करि महि लीना ॥
फिरि बाल्मीक के आश्रम आए। बाल्मीक के दरसन पाए ॥

एसे आस्रम अमिक फिराए। श्री कौसापति त्रिभुवन राए ॥
मिग निर्पि हर को उठि भाग। रघिपति श्रृपि सों मापन लाग ॥
हमि को देपि काहे डरि जाही। किर्पा करि कह्यो हमि सांई ॥
हे प्रभ तुमि को माहि पछाने। इहि प्रयोग भागनि चितु ठानें ॥
भा बन महि रघुपति ठहिराए। सांईदास तिहि सद बस आए ॥१०

मात पिता गहि दोनो भाई। भर्थ सत्रुघनु वहु सुख दाइ ॥
जहा भर्थ रहे तहू सत्रुघनु। देह दोई ताके है इकु मनु ॥
मात पिता के ग्रहि ठहिराए। विद्या पढिने को चितु लाए ॥
अब दसरथ नृप तजे प्राना। तब कौकेई मनि इहु आना ॥
दसरथ सुप लिप पत्री पठाई। सभ ब्रतंतु मै ताहि सुनाई ॥
भर्थ सत्रुघनु वेगही आवो। पत्रीआ निर्पिसि तुमि उठि धावो ॥
एकु कार्जु सुत सिनु बनि आयो। तुमि पत्रीआ देपि बिल्मु न लायो ॥
पत्रीआ तिन महि भर्थि पहि आई। सत्रघरिए को तिन दिपलाई ॥
भर्थ कह्यो सुण हो मेरे भाई। पत्रीआ माई रह्यो नि जाई ॥
चलहो चले अयोध्या आवहि। वेग बिल्म कछु मूल नि लावहि ॥
दसरथ पित हमि पत्री पठाई। ईहा रहि क्या कीजे भाई ॥
भर्थु सत्रुघनु तब उठि धाए। नगर अयोध्या माहि आए ॥
नग्रि को लोकु सभे सोकवाना। तिन के मन आनदु ना आना ॥
दसरथ नृप देवलोक सिधारे। श्री रघुपति पगि बन को धारे ॥
इहि प्रयोग प्रजा सोकवाना। कहा करे कोई ताहि वपाना ॥
भर्थ निर्पे बिस्माभि होइ रहा। तात सभे सुधि ते उभि कहू या ॥
किहि प्रयोग प्रजा सोक लेवो। कौन बियोग माहि चितु देवो ॥
तब काहू ने कहूयो पुकारी। हे प्रभ तुमि लेहो हुये धारी ॥
रघिपति को बनबासु दिवायो। कौकेई इहि कामु कमायो ॥
तिहि बियोग तजे दसरथ प्राना। हे नृप भर्थ हमि कहा बपाना ॥
सभि सभी बिधि ठहिराई। कहा होइ अबि सभा सिभाई ॥
दसरथ कों पढि तिनहि जलायो। कर्मि क्रतूति कुमि तिनहि करायो ॥
कर्मि कीए आयो ग्रहि माही। कौकई को कहूयो ताही ॥
हे मोहि मात कहा ते कीना। रघुपति को बनबासा दीना ॥

बिनु रघुपति कैसे सुख होई। बिनु रघुपति हमि सुप ना कोई॥
रघुपति बिनु हमि तजहि प्राना। रघुपति बिनु जीवनु ध्रिगु जाना॥
हमि कैसे रहे नग्रि के माही। कहु सुप कैसे करि हमि पाही॥
तब कौकेई बचनु उचारा। हे मोहि सुत तै क्या मनि धारा॥
अब मैं इहि बिधि सुख के पाई। दसरथ रघुपति राजु महाई॥
मैं धनदु कीयो मन माहे। ध्रति धर्नदु हुवे माहि स्माहु॥
मा सो मंथरा एहि सिपायो। ध्रति धर्मदु काहे मनि धायो॥
अबि त रघुपति राजा होई। भर्थ नाम लेवे नही कोई॥
राजु तुम्हारे ग्रहि ते आई। तब तूं पाछ कहा कराए॥
हे सुत माको इनि ही भुलायो। मैं इसि कहे इहि कामु करायो॥
हे सुत जो तै मन इहि धारा। साँईदास मोहि कहा बीचारा॥११

भर्थि कहू यो सुण हो मेरे माई। मो पहि राजु कीयो ना जाई॥
श्री रघुपतु मिर्गानु उचारै। भर्थ कहा से वस्त्र हंडाव॥
श्री रामचंदु फिरे बन माहे। भर्थ कैसे कहु राजु कराहे॥
श्री रामचंदु कंदमूल पावै। भथु स्वाद कैसे भोजन पावै॥
रामचंद वसुधा पै सोवे। भथु कैसे सिंघासन होवै॥
श्री रामचंद धाम तन सहे। भथु कहु किउ सुप गृहि बहै॥
इहि बिधि कहो भर्थ उठि धाए। भथु धाअमन बाहरि आए॥
मथरा को तिन हि से बहु मारा। रोम रोम से रक्ति निकारा॥
तेने कहु इहु किउ कर्मु कीआ। एहि सिप्य कौकेई दीआ॥
मार कूट करि फिरि तजि दीई। ठोर भाति कछु हुवे न कीई॥
कौकेई प्रति मन पछुताई। तब सुत को इहु भापि सुणाई॥
कहा होइ अबि समा बिहाना। साँईदास समा पर्धाना॥१२

भर्थु धाअचनु सैना लीने। त्याग ध्रयोध्या बन पग दीने॥
जिहि मग रघपति बनहि सिधारे। सोई मगु तिह हुवे बीचारे॥
जहां जहां रघपति जी ठहिराए। मम ही ठौर देपत बहु धाए॥
भर्थ सत्रघनु जब निकटि आए। सछमए ले नैनो निर्पाए॥
कह्यो सुणो श्री रघुपति राई। भर्थ आयो हमि करहि लराई॥
जो आग्या होइ ता सन्मुख जावो। भर्थु सो जाइ युद्ध मचावो॥

तब श्री रघपत ताहि सुनायो। हे लछमण क्या मन ठहिरायो ॥
प्रिथमे तुम तो युद्ध न करहो। से सतोप हृदे महि धरहो ॥
वैपो भर्थ काहे को मायो। भर्थ क्या मनि महि ठहिराया ॥
तबि श्री रघपति एहि सुणायो। लछमनि वास सुणी ठहिरायो ॥
भर्थ रामघनु नेत्र पसारे। श्री रघपत तिन्हा द्रिष्ट निहारे ॥
सभ सना को तहू पलायो। रघु तजि पग अपने चलि आयो ॥
रघपति कों प्रदक्षिणा कीनी। हाथ जोरि मुष बिनती कीनी ॥
हे प्रभ पर्जा बहु दुख पायो। तोहि ब्योग सभ ही बौरायो ॥
हे प्रभ सभ ही भए हैराना। मै तुमि पाहे कहा बषाना ॥
जबि ते भथ इहि बचन सुनाए। श्री कौसापति ममि ठहिराए ॥
हे मोहि भ्रात कहा बहु कीजे। पिता बचन कैसे तजि दीज ॥
जो पित बचन तजे भलो नाही। निंदा होइ हमिरी जग माही ॥
कहा पूत पित बचन न माने। कहा पूति पति कह्यो न माने ॥
ध्रिगु ध्रिगु होइ हमहि जगमाही। हे मोहि भ्रात सक्यो न जाही ॥
कैसे करि मोहि राजु करावौ। कैसे मम्र मोहि ठहिरावौ ॥
तुमि करो राजु कह्या मोह मानो। और बाति कछु हृदे न आनों ॥
रघुपति भर्थ को भाप सुनायो। साँईदास बिधि प्रगटि बतायो ॥६१

भथ फेरि करि बचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारा ॥
मै कैसे करि राजु करावौ। राज कमि बिनु कस सावो ।
तुमि फिरो डोमत बन क माही। हमि सुप कस राजु कराही ॥
इहि कबहू हमि से ना होई। तुमि बिनु राजु करे ना कोई ॥
श्री रघुपति प्रभ अंतरजामी। घटि घटि म प्रभु है बिसामी ॥
पग पडाउ प्रभ भथ को दीई। इहि करुणा पूर्ण प्रभ कीई ॥
कह्यो भय कोतुमि बहु से जावो। सिंघासन परि इम बहावो ॥
इमि स पूछ करा तुम कामा। तुमि जाना एही है रामा ॥
भथु भाइ इमि पर्नाम सुनायो। इसि के तुमि मना कहावो ॥
भथ पडाउ सीसो उठि धायो। चलनि चलनि सैना पहि आयो ॥
सना का ब्रितांत सुनाए। महति सोई सेना उठि धाए ॥
भाणि सिंघासन परि ठहिराए। पग पडाउ श्री रघुपति राए ॥

आप तसे वहि राजु कमावे। इहि बिधि करि धर्मु काम चलावे
सकल प्रजा को बहु सुपु दीना। अनीत दंड काहू ना कीना॥
जो कछु रघुपति ताहि बतायो। तिसी काम कर्न चितु लायो॥
धर्मु भलीभाति राजु कराव। साईदास प्रभ सुख पावै॥६

रावण बहिन सूपनकि तिहि नामा। इहि बीचार गहु यो मन भामा
चली चली बन माहे आई। जानकी पहि आइ करि ठहिराई॥
जानकी सों तिन बचन उचारा। सुण हो जानकी कहा हमारा॥
म तूं अति सुंदर सुंदरताई। तोहि रूप गति कौन बताई॥
इनहि डिगंबर सों कित रहै। सन्यासी संग काहे बहै॥
माहि बीर रावण तिहि नामा। महा बली बलु बहु तिहि भामा॥
लंका गढि को राजु करावै। तहा बसे तू बहु सुप पावै॥
त्रलोकि तिहि वंगी माही। हे जानकी समझु मनि माही॥
मोहि सम चल तुझै ले आवो। कनकपुरी मै तोहि ल्यावौ॥
महा अधिक सुप त के पावो। जो तुमि बेग सहित हमि आवो॥
इहि औसरु काहे तू षोवहि। औसरु बीते पाछ रोवहि॥
कनकपुरी महि बहु सुपु पावहि। हे जानकी कित बनि चितु लावहि
बेग बिलम तुम भूल न करहो। कनक पुरी बसने चितु धरिहो॥
अति सुभग अबर अधिकाए। भूपनि पचति मणी पहिराए॥
भोजनु मन बाछहि सो पावहि। नाना अवर अंग हढावहि॥
कहा भस्म सो कीया प्यारा। कहा तै मन महि लीयो बीचारा॥
भ्रिगानु काहे ऊपर लेवै। इहि मन महि बहु कहा करेवै॥
और बाति तुमि सकली त्यागो। हे जानकी हमिरे कहे लागो॥
चाएहो मै तुम को ल आवो। नृप रावण पहि ताकि पहुचावौ॥
स्याम देह तू इनि की सगा। कहा भस्म लगावै अगा॥
इस त्यागु मेरे सग आवो। साईदास अधिक सुप पावो॥६

जानकी सौ बात एहि सुणायो। जानकी क्रोध लोचन ललायो॥
लछमन को तब लीओ बुलाई। हे लछमण सुगम आये धाई॥
सूपनक मोसो एसे भापहि। एसे बचन इहि मो सो भापहि॥
मोह बीर तिहि बहु अधिकाई। कनक पुरी को राजु कराई॥

त्रैलोक तासि बंदि माही। हे जानकी उहु रहु सदाही॥
तूं चलु मो संग तुम्है मे जावौ। कनकपुरी पढि तुम्हे दिपाववौ॥
वहाँ महा अधिक अवर हुकाव। भूषन अधिक बहु ताहि पहिरावै॥
जो कष्ट तूं मुघ ते उभिराही। मोहि वीर बहु करे तदाही॥
इहि संयासी सग किउ रहे। बन माहे काहे तू वह॥
मो को ऐसे वचन सुनावै। अति क्रोधु मोहि मन उपिजावै॥
अधिक दुख मोको इनि दीना। एहि बचनु जो मोसौ कीना॥
अबि मै तुम सौ कह यो सुनाई। सांईदास लछमन सुण पाई॥६६

लछमण अबि सुणी इहि विधि बाना। अति क्रोधु उठथा मन माता
उनिहि सूपनकि ताई कह यो। हे सूपनकि कहु क्या तैं कह यो॥
जानकी को चाहित हिरि लीआ। हे सूपनकि त क्या मनि कीआ॥
नाकु कान दोऊ कटि डारे। लछमन चाहनि तिहि प्रहारे॥
जानकी कह या त्याग इसि देवो। आवो प्रभ की सेव करेवो॥
लछमन सूपनक को छाडि दोआ। इहि काणु लछमन ने कीआ॥
सदा अमदु बसे बन माही। नग्र माहि कबहू ना जाही॥
बन फल ले करि उदर भरामण। निसिवासर तिहि ऐसे भायण॥
कुटीआ छाइ रह मन माह। कदमूल बन से ले पाह॥
जैसे तपसी भजनु कमावहि। साईदास प्रभ के गुन गावहि॥६७

सूपनक परदूपनि पहि गई। तासो जाइ करि सभ विधि कही॥
दोवा वीर एकि संग नारी। नाकु कान उनि हमि कटि डारी॥
तुमि होवति हमि इहि विधि होई। तुमि बिनु नाह सहाई कोई॥
तुमि बल करि उनि को प्रहारा। जिउ जानो त्यु तिन को मारो॥
फिरि सुवाहु सौ आपि सुणायो। हे मोहि वीर सुणो बितु सायो॥
श्रवण नाकु हमिरा कटि लीआ। मो सिरि इहि विधि तिन कीआ॥
संयासी रहे बनि के माही। एकि भीआ सुंदर सग ताही॥
मो सो उनि ने एसा कीआ। कानि नाकु हमिरा कटि लीआ॥
अबि म तुमि सो आपि सुणायो। बेग विलम्ब मे मूल नि लायो॥
तुमि जाइ करि तिन को हनि लेवौ। मोहि उपराला तुमहि करेवौ॥
जो तुमि हमिरो बर न पाही। कैसे तुमि पीवो जगि माही॥

सुमहि त्याग कौन पहि धाई। प्रभुनी विर्था किसे सुणाई॥
जो मोहि बिर्था को करो उपरासा। नाहि त हमिरो को नही हाभा॥
मोहि कह्यो मन महि टहिरावो। साईदास बेग उठि भावो॥१८

भर सूपन तिहि वसु प्रधिकाई। ठौद सुवाह सुणो मेरे भाई॥
खर नी भर सीना बलिवाना। ताहि कह्यो इन मनि महि माना॥
रघपत सो युद्ध करने भाए। प्रधिक सना बहु सग ल्याए॥
तिन का नामु कहा बीचारा। भित परि को नामु सम्हारा॥
ज्यूं ज्यूं धर्नी परि पगु धरही। युद्ध कनि को मनसु जु करही॥
मानो स्थावर गिरि परया। धर्नी परि पितु कोमलि धरया॥
धौस्हु कपमान होइ रह्यो। दो पति प्रिष्ट कछु ना कह्यो॥
मो परि भार सह्यो ना जाई। हे कौसापति संत सहाई॥
इहि बिधि धौस मन महि बीचारे। कौसापति बिधि जाणनहारे॥
चमे देति बन माहे आए। महा बली तिहि वसु प्रधिकाए॥
बहु ठौर भाइ घेरा पाया। चाहित हर सौं युद्ध करया॥
रघुपति लखमन कुटीमा माही। जानकी सहित ठांढे है ताही॥
जानकी जबि बनु द्रिष्टी धाया। देति प्रधिक द्रिग सौ निर्पया॥
तब ही कह्यो सुण रघुराई। असुरो सेना प्रति उमिकाई॥
कैसे इनि सौ सम्मुख होई। कौन बीज असुर का खोई॥
हमि मोहे इहि है प्रधिकाई। इनि सग वसु हमि कछु न बसाई॥
तब ही रघपति मन पसारे। असुर प्रधिक बनि माहु निहारे॥
धन्य बाण भ सनमुख आए। मारि बाण सभ असुर हिताए॥
काहू सीसु काहू कर काटा। काहू भुज काहू नकु काटा॥
काहू को प्रभ भ बीज पोया। कोई कुप्त पाइ मन महि रोया॥
काहू के पगि प्रभ कटि डारे। इहि बिधि कर्के सम ही मारे॥
छूटे सो जिमि प्रिप्रि दिखाई। ठौद न छूटे को मेरे भाई॥
हरि स्मसर बहा कोई होई। हरि स्मसर दूजा नही कोई॥
तिन को हनि फिर कुटीमा भाये। साईदास बहुता सुप पाये॥१९

जबि प्रभ इहि सभ असुर सिघारे। धन्य बाण कर्के हरि मारे॥
तब सूपनकि इहि मनि बीचारा। मोहि बीर खड़े बली इनि मारा॥

इसि भुज महि वसु है अति भारी । एही विधि उनि मनि बीचारी ॥
अबि आवो मैं रावण ताईं । उसि बिनु बैर भए कोई नाही ॥
असी बसी रावण पहि आई । सम बिर्था तिहि भाषि सुनाई ॥
दो तपसी बठे बन माहे । तिन सग नारी एक सीता है ॥
अति सुदर मदर उजीआरा । यहां बसे मिटि जाइ अंधारा ॥
रव सस रूप तिहि देष लजावें । ताहि रूपु कछु कह्यो न जावें ॥
मेरे मनि महि एहो आई । अबि मैं देषी सुदर ताईं ॥
इसि स्मसर मोहि वीर भराही । वनिता सुदर तां कोई नाही ॥
किसी भांति करि इसे ले आवो । रावण को पढि के दिपलावो ॥
ताहि नारी सौ प्रभू बमाया । तांसो इहि विधि भाषि सुणाया ॥
काहे ईहा रूपु गवावें । भस्म अग काहे को लावें ॥
इनि तपसी सों कहा प्यारा । मेरो कहा लहु बीचारा ॥
काहे इसि बन महि दुःख पाव । काहे को मिर्गानु उडावें ॥
रावण नृपु तिहि बलु अधिकाई । कनक पुरी तांकी सुखदाई ॥
कनक पुरी महि राजु कराए । उहि तुम सुष देव अधिकाए ॥
मोहि सग चले तुझै ले आवो । कनक पुरी लिएमहि दिपावो ॥
तुमहि वस्त्र उहु अधिक उढाव । नाना रग भूषन पहिरावें ॥
चोभा चवम अधिक लगावहि । महा सुषी सुष बहुता पावहि ॥
जबि मैं उसि कौ एहि सुनायो । एक तपसी को तब ही बुलायो ॥
एही बिधि उनि उसि सौ भाषी । इहि वनिता मोहि इहि बिधि भाषी
तब मोको उनि भुज ते गहया । मो को इहि विधि उनि मैं कहया
हे बनिता कहां इसे सुनायो । चाहिए इमि का चितु बोरायो ॥
इहि कहि नाकु कानि कटि डारा । बाहिति या बहु मो को मारा ॥
तब उनि वनिता उसे सुनायो । तपसी से तब मोहि छडायो ॥
मै खर दूषण पाहे आइ । सकल बाति मै ताहि सुनाइ ॥
औरु सुबाहि पाहे भी भाषा । परनीअर को भी भाषा ॥
बहु सैना ले करि उठि धाए । उनि तपसी सो युद्ध कराए ॥
उनि तपसी उनि को प्रहारा । काहू कर काहू सीसु बिडारा ॥
उनि को बलु तिहि नाह बसायो । उनि तपसी ने जीहू हिरायो ॥
तो बिनु बैर मोहि कौण लेवें । सो बिनु अपु मोको कोण देव ॥

मोहि नासु कानि कटि सीमा। इहि कणु तिहि तपसी कीमा॥
कहा करो कां पहि आइ मापो। तुमि बिनु बिर्या कां पहि मापो॥
मष्कि दुख मैं तासी पायौ। हे बंधू मवि ताहि सुनायौ॥
ह बधू हमिरा बैर सीज। सांइदास कछ मवर न कीजै॥१००

जब रावण मुनी इहि बिधि काना। मति क्रोधु सीमा मन माना॥
मामो सिधु काम पसोया। माना नैन रक्ति सुभोया॥
क्रोधु कीयो लोचन समाए। कप कंप करि फिरि ठहिगए॥
पोसु मधिक मम महि भो माना। रावण क्रोध मनि माहे माना॥
ताहि तजु का गहि माघो न आई। महा सूर्मा मति बसि भाई॥
तिहि भम मे त्रैलाक कपाए। पर हर पर हर मनु डोलाए॥
क्रोधमान हो वचनु उचारा। तांका सकसा कहो बीचारा॥
कह्यो मरीच धुस्याइ स्यावो। बेग बिलम तुम मूल नि लावो॥
तब ही मरीच बुलाइ स्याए। पमु छिनु रचकि बिस नि साए॥
तब ही मरीच सो कहयो सुगाई। सुणहो मरीच हमारे भाई॥
दी तपसी एक सीमा रहे। इमि मन माहे मासमु लहे॥
उनि तपसी न इहि कर्मु कीमा। कानि नाकु सूपनकि कटि लीना॥
तब ही मरीच कह्यो सुणु राया। तपसी किउ इहि कामु कमाया॥
इहि बीचारु नृपि मोहि सुनावो। छिनु पल रंचक बिलमु न लावो॥
तब रावण मम बाति सुगाई। सुणहु मरीच हमहि सुपवाई॥
सूपनकि चली गई बनि माही। जानकी रामचबु सो पाही॥
औरु लछमणु रघपति को भाई। बन महि तिह नै कुटी बनाई॥
जानकी रूपु महा उजीयारा। तिमर को नासु करे ततकारा॥
रवि तासी समसर ना होई। दूजा रूपु ममसर ना कोई॥
ताहि दह कोमल मरे भाई। तासि देहि बनि भस्म लगाई॥
मवर रमाग मृगानु उडाया। मनरस बाछ कदमूल पामो॥
तासो सूपनकि कथनु सुनाया। हे जानकी कया रूपु कराया॥
तब मगु कोमल पुनपुन होई। तोहि स्समर दूजा नही कोई॥
तोहि रूपु देपि माम छपि जावै। ताहि रूप सस वदन दुरावै॥
किहि प्रयोग इहि भेषु बनायो। किहि प्रयोग मंग भस्म लगायो॥

सप्तमनु कनि भावे उपिराजा । जामनी कोई न होइ रखिवाला ॥
म जानका को हिर स भावो । वेग बिस्म तुम मूल न जावो ॥
तब मरीचि तार्को प्रभु दीना । हे नृप कहा तै मनि महि लीना ॥
बिस्वामित्र ऋषि यज्ञ रचायो । हमहि मृष्टि कनि बितु सायो ॥
हमि पापि यज्ञ भृष्टि कराबहि । करि मृष्टि यज्ञ तिहि मर्माबहि ॥
श्री रघपति को ऋषु ले भामा । यज्ञ समे तिहि भाएा बहामा ॥
हमि यज्ञ मृष्टकनि बितु मरथा । रघपति बन्यु बाएा हम मरिमा ॥
हमि को ऐसे बाएा सगाए । हमि बसबान सभे हिरवाए ॥
भवि लगि बलु हमि ठौर न भावे । हमिरो पमु भनि मा ठहिरावे ॥
रघपति नाम सुनहि अवि काना । कंपमान होवति हमि भाना ॥
केस करि तिहि स मुख आवहि । तिहि भागे किछ करि ठहिरावहि ॥
हे मूपति इहि कामु न मेरा । साईंदास मै तुमिरो चेरा १०१

रावण नृप फिरि बचनु उचारा । हे मरीच तै कथा मन धारा ॥
अबि तुमि मृष्टि कनि जगु भाए । श्री रघपति तब बन्म परि भाए ॥
तिहि समे राज को बसु तिहि पाई । भोजनु कोनो तिहि समे पाई ॥
बस्त्र मभे सब भंग हुडावे । मनु माने सोई से पावे ॥
दुख सुप सब कोऊ न लागो । सभ बिस्वासु हुदे दे भागो ॥
भवि बनि रही कंद मूल पावे । से मृगानु बहु भग उडावे ॥
दुख भएो तिह सुप नही कोई । हे मरीच कहो सुएा सोई ॥
मम महि कछु न करो नासा । हुदे धरि गोबिंद को भासा ॥
चल चले बनि माहे भावो मिरमु बनक होइ ताहि सुभावो ॥
इहि बिधि मैं तुमि दीई बताइ । भवण भार सुण से मेरे भाई ॥
मोह कहे मतरा उन धानो । हमिरो कहु यो सद करि जानो ॥
तात्काल भामो बनि माहि । साईंदास तहा मो कछु नाही १०२

फिरि मरीच तिहि बचन सुनायो हे रावण नृप किछ बितु सायो ॥
बैम पवित बाम पढावे । तैस तूं मोको समाभावें ॥
मैं नही मास्नु जो सिक्षा लेवो । तोहि सिक्ष मे बाइ जीउ देवो ॥
एहि जु तेने कहु यो पुकारा । सब इमि राज को बलु भति भारा ॥
छत्री प्रकार को भोजन पावें । भ बर नाना भ ग हुडावें ॥

अबि सो कंद मूल अहारा। अबि को बलु नाहि अधिकारा॥
हे नृप जिहि बसु होइ सो होई। तांको बलु पसि सए न कोई॥
महा गम्भीर पम पुर्पामिए। जाकी उस्तित कही न जायण॥
घटि घटि माही इस प्रकामा। घटि घटि अ तर पसु तमामा॥
मैं इसु सम्मुख फिउ करि जावो। सम्मुख जावो बसु महा पावो॥
मोहि पग आगे को नही जाव। अपिमान होइ पाछे धावहि॥
जसे मृगु निप सिह ताई। प्रह तजि भागनि को चितु लाई॥
भाज को निप जस पगु भाग। तेजवानि होइ उद्धण लाग॥
जमे सत्र मत्र के भाग। भिन्न परी मम ही उठि भाग॥
जस जपक[1] स्वान निहारे। बनि महि भागनि को चितु धार॥
जस नर को रब मुत मामा। ओपद भक्ष करे सुप प्यासा॥
जैस रवि प्रकाम तिमरु मिट जाई। तिमरु को बसु रवि नाहि बसाई॥
तमो बसु मोहि तिहि नही लागे। हे नृप ताहि दपि मनु भाग॥
कहु कैमे करि सम्मुख आवो। कहु कस मनि का ठहिरावो॥
माहि पे धीजु धर्‌या न जाई। हे रावण म आपि सुनाई॥
जासो बसु कछु नाहि बसाई। कहु कैसे तिहि करहि लराई॥
जो आपमि ते होव बलवाना। हे नृप तिहि कम करहि हामा॥
सिह सम्मुख कपि मिगु न होई। मोईन्नाम आपे अबि मोई १०१

रावम कह्‌पा सुणहो मेरे भाई। कौनु बाति तुमि मनि ठहिराई॥
तुमि मग उनि का कछु न बमाई। कद मूल सौ पुप्पा मिटाव॥
ताको बसु एता कहा आयो। जा तुम को बहु मन हिसाया॥
अबि तुमि आवा विस्म न लावा। मरो कह्‌यो मन महि ठहिरावा॥
तब ही मरीच म कह्‌यो पुकारा। तहा रावण नही बासु हमारा॥
मैं जावो मनु नाही जाव। बिनु जाम्या मनि पगि फिउ पाव॥
जबि राजा आजा ना देव। तन को कोणु उठाई करि सेव॥
मना ताहि बाहिर नही आवं। जबि राजा आजा करि भव॥
गैना तिमि घरि उठि मब॥
जहा राजा जाव तहा जारो। तिह बिनु नगर महि ना ठहिरारी॥

---

१ जपक < जबुक = गीदड़।

तसो मनु राभा मेरे भाई। इहि बिधि मैं तुमि भापा सुणाई।।
बिनु भाम्या इस पग नित आवहिं। साँईदास बिधि बेग सतावहिं १०४

अबि मरीच इहि बाति सुणाई। रावण तबि इहि मनि ठहिराई।।
मोहि कहयो माने इहि नाही। इनि कछू डीलसीयो मन माही।।
इसि को त्रासु देवो अविकाई। त्रासु पाइ तब ही उठि धाई।
रावण तांसो कहूया पुकारा। हे मरीच तैं क्या मन धारा।।
बेग न धावो उठि करितुमि धावो। कनक मिर्गु होइ ताहि दिखावो।।
जो आवहिं तौ यहु मनो माई। इहि बिधि तुमि सोई बताई।।
नाहिं त अबि ही मैं तुमको मारो। पकरौं पगो स धर्नि पछारो।।
अबि ही मार जीउ तेरा लेवौ। बेग बिलम कछु नाहि करेवौ।।
जो अपुनो कछु यहु भलो चाहे। कनक मिर्गु होइ तिहि पहि जाहै।।
तहां तोहि दुख मुयु कछु नाही। जो भलो होइ सो से मनि माही।।
मनु पाछे कहे मोहि न कहया। बिनु आपे हमिरो तनु दहया।।
अबि मैं तुमि को कहा सुनाई। साँईदास सुण ले मेरे भाई।।१ ५

तब मरीच मनि माहि बीचारा। नृप रावण मनि महि उर धारा।।
जो नहीं धावौ मारि भकावै। जो जावै मनु यहु दुख पावै।।
दोन करिभ बनी क्या कीजै। कौन बाति मन महि धरि लीजै।।
जो इहि मार तौगति आवौ। बार-बार जूनी भर्मावौ।।
जो रघुपति कर हुनि प्रामा। मुकितिहोवौ मिटै आवण जाना।।
एहि भलो हरि सनमुख जावौ। इहि बुरो इसि थी मिृतु पावौ।।
तब रावण सा कहया सुणाई। काहे क्रोधु करों मेरे भाइ।।
जो तुमि कहा सोइ मैं करिहौ। तोत बाति कितै चितु न धरिहौ।।
जिहि बिधि करि तुमि यहु दुख पावा। मुख त्याग दुख के मरि धावौ।।
सो बिधि हा काहे को करिहौ। सो बिधि कर्न किउ चितु धरिहौ।।
काहे नृप तुमि क्रोध धरि धावो। कित प्रयोग तुमि घाति लगावा।।
हमि तुमि मैना तुमि बड माई। साँईदास तुमि भदा सहाई।।१ ६

अबि रावण इहि बिधि सुणी काना। अति अनंद तब ही मनु माना।।
तब ही मरीच सो बचन सुणायो। हे मरीच चितु बहु भलो लायो।।

और बाति कहि काहे पुराबो। और बाति प्रभ काहू बतावो॥
तब श्री रघपत कह्यो पुकार। इहि बसु बया को जाइ न मारे॥
एक बाण सों इसि हनि लेवो। द्वितीया बाउ इसि मग म देवो॥
तें जानकी बया मन महि धारा। कौन बाति मन सह बीचारा॥
इहि बिधि म तब सोहि बताइ। घटि प्रपुने मैं सोमी पाई॥
अपूब मृग द्रिष्ट मोहि आया। इहि बिधि मृगु मैं नाहि रचाया॥
तब जानकी कह्यो सुण रघुराई। किउ नही हन्यो जो हन्यो जाई॥
तब जानकी एहि बाति चलाई। रघपति तब मनि महि ठहिराई॥
जाण बूझि रघुपति बीराना। कर महि लीया धन्यु अरु बाना॥
धन्यु बाण न तहि पाछे धायो। लछमन जानकी पाहि बहायो॥
मृगु सीए लीसीए केतक गयो। एक बिछ के आड़ ओल्हे भयो॥
तहा जानका लछमन दिष्ट न आवहि। कूक करी तब वहि सुण पावहि
श्री रघुपति तब धन्यु सभारा। चाहुति कनक मृग को मारा॥
जो रघुपति मरघनि दिखावै। कनक मृगु तब गगनि को धावै॥
जौ प्रभ गगनि ओर सर ल्यावै। कनक मृगु पताल को आवै॥
जो प्रभु सर ले पाताल निहार। बहुरो मृगु मध्य चितु धार॥
कनक मृगु तब हन्यो न जाई। साईंदास रघिपति चित आई॥१ ८

पाताल अरु मध्य गगनि चितु राया।
बाणु लीयो न कर महि राया।
कर ते छाडि बानु मृगु मारा।
तिह समे मृग ने एहि पुकारा।
मैं तो रामचद को मारा।
करि बसु अपना ताइ प्रहारा।
तब ही जानकी ने सुण पाया।
लछमन सो तब आप सुणाया॥
हे लछमन कछ बिधि सुणी काना।
हनि लीए जिने मेरे प्राना।
श्री रघिपति के पाछे जावो।
ताहि खबरि मोहि आए सुणावो।

किन ही रघिपति को हनि लीमा।
इहि बिस्वासु मेर मन कीमा।
छिन पल बिल्म तुमि मूल नि लावो।
श्री रघिपत के पाछे जावो।
कहा भयो तहा क्या कछु होया।
मोहि मनि भवि बिस्वासु है पोया।
भवि ही किनि ही एह पुकारा।
श्री रघिपति को मने मारा।
हे लछमन जावो ततकारा।
कहा करति है मनि बीचारा।
मेरो कह्यो ह्रदे महि ठहिरावो।
साईंदास छिनु बिल्मु न लावो।१०९

लछमन फिरि ताको प्रतु दीना। हे जानकी ते क्या भनि लीना॥
ऐसो कौण जो रघिपति मारे। अपुने बलि कर राम प्रहारे॥
ऐसो हमि मूझति कोऊ नाही। सोच बीचार रह्यो मन माही॥
प्रानपति को कौणु हताई। बलकरि रघुपति हन्या न जाई॥
ऐसा को मोहि द्रिष्ट न आव। जो श्री रघपति को हति जावै॥
सकल जोद्ध उतति है ताकी। कौनु बराबरि करे कहु वांकी॥
जो कोई अनल अनीलि को मारे। सो भी रघपति माह प्रहारे॥
भालमु किसि पहि हन्यो जाइ। वह पूर्ण पद रघिपति राई॥
त्रैलोकि मिल करि जो आवहि। सो भी रघपति हन न पावहि॥
ब्रह्म बिष्णु महेस जो आवें। दूरो देव नमिस्कार करावें॥
श्री रघपति तिह सर ना कोई। कहु तिहि हनिमो कैसे होई॥
लछमण ने जमि एहि पुकारा। सांईदास मन महि बीचारा॥११०

जनक सुता कह्यो लछमन ताई।
हे लछमण कछु सुणउो नाही।
मोहि श्रवण इहि बिधि सुनि पाइ।
सो मै तुमि सो भाषि सुणाई।

ओर बाति कहि काहे दुरावो। ओर बाति भ्रम काहु बसावो॥
तब श्री रघपत कह्यो पुकारे। इहि बसु क्या को जाइ न मारे॥
एक बाए सों इसि हनि लेवो। द्वितीया बाउ इसि भ्रग न देवो॥
ते जानकी क्या मम महि धारा। कौन बाति मन सह बीचारा॥
इहि बिधि मैं तब ताहि बताइ। बटि अपुन मैं सोमी पाइ॥
अपूर्व मृग द्रिष्ट मोहि भाया। इहि बिधि मृगु मैं नाहि रचाया॥
तब जानकी कह्यो सुण रघुराई। किउ नही हन्यो जो हन्यो जाइ॥
तब जानकी एहि बाति बताई। रघपति तब मनि महि ठहिराइ॥
जाण बूझि रघुपति बौरामा। कर महि लीमा धन्यु धरु बाना॥
धन्यु बाए स ताहि पाछे भायो। लछमन जानकी पाहि बहायो॥
मृगु सीए सीसीए कैतक गयो। एक बिछ के जाइ ओल्ह भयो॥
तहा जानका लछमन दिष्ट न आवहि। कूक करी तब बहि सुए पावहि
श्री रघुपति तब धन्यु सभारा। चाहति कनक मृग को मारा॥
जो रघुपति सरधनि दिपावै। कनक मृगु तब गगनि को भावै॥
जौ भ्रभ गगनि ओर सर ल्यावै। कनक मृगु पताल को जावै॥
जो प्रभु सरु ले पाताल निहारे। बहुरो मृगु मध्य चितु धारे॥
कनक मृगु तब हन्या न जाई। साँईराम रघिपति चित भाई॥१०८

पाताल धरु मध्य गगनि चितु राघा।
बाणु सीयो ले कर महि राघा।
कर ते छाडि बाणु मृगु मारा।
तिह समे मृग ने एहि पुकारा।
मैं तो रामचन्द को मारा।
करि बमु धपना ताह प्रहारा।
तब ही जानकी ने सुए पामा।
लछमन सो तब धाप सुणाया।
ह लछमन कछु बिधि सुणी कामा।
हनि सीए किमे मेर प्रामा।
श्री रघिपति के पाछे जावो।
ताहि पकरि मोहि भाए सुणावो।

किन ही रघिपति को हनि सीया।
इहि बिस्वासु मेर मन कीया।
छिन पल बिस्म तुमि मूस नि लावो।
श्री रघिपत क पाछ जावो।
कहा भयो तहा क्या कछु होया।
मोहि मनि अबि बिस्वासु है पोया।
अबि हा किनि ही एह पुकारा।
श्री रघिपति को मने मारा।
हे लछमन आवो तत्कारा।
कहा कति है मनि बीचारा।
मरो कहुया हुदे महि ठहिरावो।
सांइदास छिनु बिलमु न लावो।।१०९

लछमन फिरि ताको प्रतु दीना। हे जानकी तै क्या मनि लीना।।
ऐसो कौण जो रघिपति मारे। अपुने बलि कर राम प्रहार।।
अयो हमि मूरूति कोऊ नाही। सोल बीचार रह यो मम माही।।
प्रानपति को कौणु हनाइ। बलकरि रघुपति हन्यो न जाई।।
ऐसा को मोहि द्रिष्ट न आवे। जो श्री रघपति को हति जाव।।
सबस जोइ उनति है ताकी। कौनु बराबरि करे कहु वाकी।।
जो कोइ अनस अनीमि को मारे। सो भी रघपति नाहु प्रहारे।।
भाग्यु किमि पहि हयो जाई। वह पूर्ण पद रघिपति राइ।।
जसोकि मिल करि जो आवहि। सो भी रघपति हन न पावहि।।
बाम्र विष्णु महस जो आव। दूरो दप नमिस्कार कराव।।
श्री रघपति सिह सर ना कोइ। कहू तिहि हनिनो मने होइ।।
लछमण से जबि एहि पुकारा। मा नाग मन महि बाचारा।।११०

जनक सुता कह्यो लछमन ता।
हे लछमन कछु सुनाओ नाही।
मोहि श्रवन इहि बिधि मनि पा।
सो मैं तुमि सो आदि सुनाइ।

किनही रघिपति को प्रहारा।
मोहि श्रवरा सुनि मनु इहि भारा।
जो तमि भला करो तव जावी।
श्री रघिपति को बेग ल्यावो।
नाहि त मिकिस जाहि मोहि प्राना।
उौर भाति मै कहा बपाना।
तिमरु भयौ मोहि मैनो मामे।
बिनु रघिपति कहु नाही भामे।
जैसे बादर रवि को छावै।
सकल जगति मध्यारा पावै।
जबि लगि पवन मंडलु नही भावै।
तब लगि बादर दूरि न जावै।
जवि ते अगनि मंडल प्रगटावै।
अमि अपुने करि बादल बिमरावै।
मोहि द्रिग आइ आइ बैठो है छाई।
मोहि द्रिम मै कछु नाहि सुझाई।
अ रघपति अनल आवै मोहि पाइ।
बियोग बादल हमिरे बिघराहे।
अवि मै तुमि को आपि सुणायो। सांईंगास मै बैठा बतायो॥१११

लछमरण जानकी फिरि समिझावै। अनेकि भाति बहु ताहि बतावै॥
हे जानकी तू भई इयानी। कौन भाति मनि अंतरि मानी॥
सिह को श्रासु कौनु मृगु होई। सिह समान मृगु नही कोई॥
वासु कोनु पग त डर पावै। तिहि स्मरण को श्रमु न धराव॥
श्री गोपाल भक्तिनि सुपदाई। ताइ मर कहु जग कौनु न राई॥
फिरि फिरि कहे तुमहि मवि जावो। श्री रघिपन की मार मिथावो॥
मोहि बिनु मा डोरानि कमे जावो। तुझ त्याग कैसे उठि धावो॥
जबि लछमनि एहि कहपा पुकारा। ता को जानकी दीयो मीकारा॥
हे लछमण न इहु मनि माना। मनि अपुने महिज कर जाना॥
रघिरानि को हत मै इगि मेवो। पूर्न वाछा ममहि करेवो॥

इहि प्रयोग तूं नाही आवै। मनि माहे तू कपट् कमाव ॥
जा तुमि इछा हो करो सांई। सांईदास होवण हो सो होई ॥११२

जवि जानकी इहि वाति सुणाई। लछमन क्रोध कीयो अधिकाई ॥
करि क्रोधु तिनि वचनु उचारा। हे जानकी त इहि मन धारा ॥
एहि विधि मुहि मोहि वाणु लगायो। अतरु बाहर सकल जलायो ॥
लछमण कह्यो पुकारे ताही। करी पुकार ताहि रवि पाही ॥
हे रवि जी मोहि साखी होई। एहि साप मै तै कहोई ॥
कोई कार अतर बहिर हे। बाहर पगु धरे तनु मनु दहे ॥
जानकी इहि मोहि वचनु सुनायो। मोहि कनि को तुमि चितु लायो ॥
इहि प्रयोग आवो तुमि नाही। श्री रघिपति कौलापति पाही ॥
इहि जानकि इमि मोहि लगाई। मो पहि जानकि सही न जाई ॥
जो कछु विघनु होइ नाही जानो। इहि विधि मै तुमि पाहि वखानो ॥
मै जावति हौ रघवीर पाही। अवि इसि ठौर रहो मै नाही ॥
रवि को लछमण साखी कीया। जानकी औरि कार गिनि दीया ॥
कुटीआ त्याग तव हो उठि धायो। सांईदास रघुपति पदि आयो ॥११३

रावण जोग भेषि करि लीना। जानकी हिर्ने को पगु दीना ॥
चल्यो चल्यो आयो कुटीआ पाहे। निर्थो तपसी को धरि माहे ॥
नाथ माथ कर मुखो पुकारा। आगे आपु सो वे समारा ॥
हे माई भिक्षा कछु ल्यावो। भिक्षा कछु हमिरे पत्र पावो ॥
जानकी कछु भिक्षा ले आई। रावण तांको कह्या सुनाई ॥
बांधी भिक्षा काम न आवे। मै नही लवों मनु सुकचावें ॥
जो बाहिर आइ देवे माई। हिपि मान होइ लवों साई ॥
जानकी कह्यो बाहिर ना आवो। बिनु आज्ञा कैसे पगु पावो ॥
लछमन मोहि गयो कह माई। बाहरि पगु देवणा नाही ॥
रावण तव कह्या स्रापु लगावो। बिनु भिक्षा लीनी उठि जावो ॥
जब स्रापु को लीनो नामा। जानकी दुग्मत भई अंतराना ॥
कार त्याग भिक्षा ले धाई। स्रापु न देहि मोहि सह्यो न जाई ॥
चामि पासि महि ले करि डारी। औरु कांति कछु हुरे न धारी ॥
ताहि सीए पग मग महि दीए। कनक पुरी को तिम पग कीए ॥

बेतनि बाटि रावण मं से डारे। गेदहि उदरि महि बहुभए भारे॥
गदहि ठौर उठिणु कुमि त्यागा। रावण तब अपुने मग साधा॥
रावण तब आगे पग दीने। गेदहि त्याग गमनु उनि कीने॥
आगे ससीति प्रगटाए। जानकी ताने द्रिग निर्पाए॥
आइ शुभ रावण सिरि मारी। रावण भाउ भयो तन भारी॥
अधिक दुख रावण का होया। सकल सुपु रावण तब खोया॥
अधिक युद्ध वां सग तिनि कीना। पप तासि रावण कटि दीना॥
पंच कष्ट तिहि वसु न बसाए। कैसे कर बहु युद्ध कराए॥
ताको जीत आगे को धाया। कनकपुरी सेती चितु लाया॥
जानकी मग बासति क्या कीमा। कहूं कुछ कहू कुछ डारि के दीमा
मतु श्री रघिपति इहि मग आवै। मोहि भाता मन महि ठहिरावै॥
इसि मग जानकी खरी दुराई। मतु हमिरे पाछे बहु भाई॥
इहि प्रबोध बहु डारति जाई। इहि चितांतु सुण हो मेरे भाई॥
रावण चलि लंका महि आए। सकल सैन ने इहि सुण पाए॥
रघिपति भर्जा इनि हिरिआनी। कनकपुर सकली इहि जानी॥
सभु सीता को देखिनि आई। निर्पि रूपु सभि आहि भुलाई॥
सीता को तिन जाइ बहायो। एक कुसिधारी माहि ठहिरायो॥
निसबासर सीता उदा रहे। राम ब्योग हृदे महि सहे॥
सुरपति सैना ताही आई। कछु सहाइ तिस भूपि भवाई॥
जानकी भूपि भास ना ग्रासे। छिनु पसु जानकी भुपो न हासे॥
सुर फिरि गयो अपुनी ठौरा। हे साधो सुणो कह्यो मोरा॥
जानकी बचनु सुनाई सिधारे। कछु बिस्वासु हृदे ना धारे॥
है जानकी रघिपतु छिन आवै। इसु पापी को मारि चुकावै॥
दीमो सतोपु सुरपति उठि धाए। चलति चलति अपने ग्रहि आए॥
रावणु भर्जा असर पठेवै। जानकी बुधि फनि चितु देवै॥
जानमी ताको कछु न कहाए। जो कमि तिहि सौ धनि मिराए॥
ताहि मत सीता ना सेवै। ताहि कह्यो ममि नाहि धरेवै॥
जो बहु कहे सो चितु न जाने। ताको कह्यो कछु मनु ना माने॥

---

१ यहां शब्द जानकी चाहिए।

निसि बासरि उनि को इहि कामा । मिलि करि आवहि असुर को मामा
अस को कोई मनु न लाग । सो जनु सदा सुखी जो जाग ॥
साधि भाव चोर सिपि सबै । चोर भाव साधू नहीं सबै ॥
अग्नि माहि जो कछु तुमि डारो । अपुने मन महि यहु बीचारो ॥
सम की छीण महि अगनि जलाए । अगनि कुंज लाग नही पाए ॥
बिनु लकड़ी जो जल महि पावै । तिन महि जसु ताहि रचावै ॥
जस बिनु लकड़ी रुचि आवै । कहु जनक सुता मन ना ठहिरावै
जनक सुता सिमरे रघुराई । माईदास प्रभ मन महाई ॥११८

कहे मदोदर रावण ताई । सुणु मोहि बानि लक के साई ॥
काहे जानकी को ले आया । किहि प्रयोग इहि कामु कमाया ॥
तोहि मति हीण किउ होई । अकस मति तैनं सभु पाई ॥
श्री रामचद त्रिभवन के राया । सकल जगति हि खेलु रचाया ॥
छिन महि उतपति सभ करि लवै । छिन महि सकल सहार करेवै ॥
तांकी भार्या तै हिरिआनी । हे मतिहीण क्या मनि ठहिरानी ॥
अबि ही जावै छोहि सिधारे । कनक पुरी सुमिरी उनु जारे ॥
मारि जोउ सुमिरो बहु सेव । महा अग्नि दुन सुमिको देव ॥
तब पछुतावहिगा मनि माही । तिहि प्रजोग बिरथु कमाही ॥
सीतनिम जानकी ले जावो । रघुपति पाग परि ठहिरावो ११९

रावण फिरि करि बचनु सुनाया । हे महानारि क्या उचिरायो ॥
मोहि घर दूजा कौनु कहावै । इनि परि परि को रिट मि भावै ॥
तै मनि महि कहा सोउ बीचारी । ते बिधि जानो माह हमारी ॥
मैनाक मै बनी पाया । मोहि गम दूजा को महि प्रगटाया ॥
दस सिरि चोम भुजा बनु भारी । यह का रीम करि गरे हमारी ॥
रघुपति नामु तू मोहि सिनाव । बडो बली तू मोह बनावै ॥
छिनि महि मारो मै प्रहारा । करारि बनु उनि कोम मारा ॥
अबि सीता को रंग देखो । रंग तिन को नामु करेखो ॥
रामचन्द माहि नामु सुनावै । नामु सुना करि मोहि डरावै ॥
मै काहू का नामु न कहिआ । नामु काहू का नाम नि पहिरा ॥

श्री रामचन्द्र जबि फीरु निहारा। लछमण सौ तब कहयो पुकारा॥
हे लछमन तैने क्या कीआ। जानकी ढौर त्याग किउ दीआ॥
असुर फिरति बन महि अधिकाई। जानकी को कोऊ हिरि ले जाई॥
जानि बूझ तू मम सुसायो। हे लछमन क्या मन ठहिरायो॥
इमि का मा का दहि बीचारा। साईंदास तै क्या मन धारा॥११४

लछमन मैं ताको प्रतु दीना। हे रघिपति मै इहि मन लीना॥
जबि तुमि कनक मिगु हनि लीआ। इतनि समे मृग माया कीआ॥
मै हति लीओ रघिपति हाई। बलु अपुनो कर्के अधिकाई॥
मिग बचनु सीता सुण पायो। मो सौ तिन ने बचनु सुनायो॥
हे लछमन तू भी उठि जावो। श्री रघपति की ढौरि सिधावो॥
श्री रघिपति को किन हमि लीआ। इहि कार्णु किम ने हे कीआ॥
माहि मन उपज्यौ बिस्वासा। मोहि मुख ते निकसहि नही हासा॥
हे प्रभ मै कह्यो जनक सुता है। रघिपति कह पै हन्यो न जाहे॥
अनेकि प्रमक बिधि कहि समझायो।
मोहि कह्यो तिन मनि नही भायो॥
जानकि बानु ताहि मोहि लायो। मो सौ भ्र से बचनु सुनायो॥
तू चाहित को रघपति मारे। मन माहे तूं एहि बीचारे॥
पाछ जानकी को मै सेवौ। ता सम भोग बिलास करेवो॥
हे प्रभ हमि इहि बचनु सुनायो। रवि की सापी तबि करायो॥
इसि प्रजोग मै तिहि तजि आया। साईंदास मोहि बाणु लगाया ११५

मृगु मारि कुटीआ को आए। सस बुझायो तिमर प्रगटाए॥
क्या निपहि को जानकी नाही। इहि बिधि बहु मन पछताही॥
जाए बूझि हमि कोठो कामा। मुखि ते कह्यो पूर्न प्रभ रामा॥
जैसे पूस जस बिनु कुमलावे। जैसा सूपा मोअनु पावे॥
जैसे बारी रूपु गवाए। मम माहे बहुता पछुताए॥
जैसे पिपुसा कर पग ताई। मनि माहे रोवति अधिकाई॥
जैस सीपाह गोसे पराना। मन माहे होवति हैराना॥
तैसे रघिपति रहे बिस्माई। कहा बीचारु सुनावौ भाई॥
बिस्म भए बिस्मक ठहिरामा। अति बियोग ताहू मन माना॥

कहा होइ पाछे पछुताए । कहा होइ जो समा सिधाए ॥
महा अधिक दुख रघुपति पायो । जनि जानुकी द्रिग ना दिर्पायो ॥
अति वियोग भयो मनि माही । साईंदास कछु कह्यो न जाही ११६

रावण जानकी को ले धाया । केवहि ने इहि विधि निर्पाया ॥
केवहि रावण के सम्मुख आया । युद्ध करनि को तिह चितु भाया ॥
रावण केवहि के दहि भुज मारे । दोई बलवान कोई न हारे ॥
केवहि अनक युद्ध नृप सो कीना । किन्हू तिन ते हार न दीना ॥
केवहि रावण को जान न देवे । आगे पग धरि युद्ध करेवे ॥
रावण कह्यो अवि क्या कीजे । किउ करि पगु अग आगे दीजे ॥
केन्हि मो कों जाण न देई । मो सो युद्ध करनि चितु लई ॥
युद्ध कीए इसि नाह हिरावो । कस करि आगे को धावो ॥
जा रहो ठांढा रघुपतु आवे । छिप माह मोहि मार चुकावे ॥
जानकी कह्यो मै तोहि सपावो । इहि विघ्न ठौर सों पारि परावो ॥
जा मो सो इकु वचन करावहि । ताहि वचन ऊपरि ठहिरावहि ॥
रावण कह्यो कहो जो भाई । जो तुमि कहो करो मै साई ११७

जानकी तब ही वचनु उचारा । सुन हो रावण नृप मति भारा ॥
मै तुमि सो प्रतिज्ञा करहो । तिहि प्रतिज्ञा महि चितु धरहो ॥
मोहि निकटि तू आव नाही । अष्ट मास लग सुणु मैन माही ॥
जा अष्ट मास लगि रामु न आवे । तउ पाछै जो तोहि मन भावे ॥
रावण एहि प्रतिज्ञा धारी । जो जानकी मुख आप उचारी ॥
मन अंतर जानकी सीठो वीचारा । मोहि दी बाद एहि मन धारा ॥
रावन कों निम दोयो पठाई । सुण नृप रावण मनि चितु लाई ॥
रतन जारु तनि अपुने करी । इहि भनि सुण नवहु तुमि मरो ॥
ताहि रतन सों काटि निकारहु । गरभहि के उदरि देगही डारहु ॥
जबहि काटहि पेटहि उपर आवहि । पेटहि उदर बहु भार करावहि ॥
गोद को बमु नय कछ न बनाई । तब मो को मै धनु तू पाई ॥
जबि रावन इहि विधि सुनी बाता । हरिमान होयो निहि प्राना ॥
अपुन तन सो रतिन निकारा । काटि साथो स ताहि निकारा ॥
गरदि ठौरि दारि करि दीमा । गरभहि काटि न उदरि महि पाया ॥

केतकि वाटि रावण म से वार। मेदहि उदरि महि बहुभए भारे॥
गेदहि ठौर उठिणु फुनि त्यागा। रावण तब भ्रपुने मग लागा॥
रावण तब भागे पग दीन। गेदहि त्याग गवनु उनि कीने॥
भागे वर्माति प्रगटाए। जानकी सनि द्रिग निर्पाए॥
भाइ भुप रावण सिरि मारी। रावण बाच सगो तन भारी॥
भग्मि वुध रावण को होया। सकस सुपु रावण तब पोया॥
भग्मि युद्ध बा सग तिनि कीना। पंप तासि रावण कटि दीना॥
पप कटे तिहि बसु न वसाए। कैसे कर बहु युद्ध कराए॥
तांको पीत भागे को भाया। कनकपुरी सेती चितु लाया॥
जानकी मग जावति क्या कीमा। कहू कुस कहू कुस डारि के दीमा
मसु श्री रघिपति इहि मग भाव। मोहि वाटा मग महि ठहिरावें॥
इसि मग जानकी सबी पुराई। मतु हमिरे पाछे बहु भाई॥
इहि प्रयोग बहु डारति आई। इहि बितातु सुण हो मेरे भाई॥
रावण भसि लंका महि भ्राए। सकस सैन ने इहि सुण पाए॥
रघिपति भर्जा इनि हिरिमानी। कनकपुर सकसी इहि बानी॥
सम्रु सीता को वेपिभि भ्राई। निपि रूपु समि बाहि भुसाई॥
सीता को तिन बाइ बहायो। एक फुलिबारी माहि ठहिरायो॥
निसबासर सीता ऊझा रहे। राम ब्योग हुवे महि सहे॥
सुरपति सैना ताही भाई। कछु सहाइ तिस भूपि मवाई॥
बानकी भूपि भास ना प्रासे। बिनु पशु बानकी भुपो म हासे॥
सुर फिरि गयो भ्रपुनी ठौरा। हे साधो सुणो कह्यो मोरा॥
बानकी भपगु सुनाई सिधारे। कछु विस्वासु हुवे ना भारे॥
है जानकी रघिपतु बिस भावें। इसु पापी को मारि चुकावें॥
दीयो संतोपु सुरपति उठि भाए। भसति भसति भ्रपने ग्रहि भ्राए॥
रावणु भर्जा भमर पठेब। जानकी बुद्धि फेरि चितु बेवें॥
जामनी ताको कछू न कहाए। जो फलि तिहि सो मनि गिराए॥
ताहि मत सीता ना सेब। ताहि कह्यो मनि नाहि धरेब॥
जो बहु कहे सो चितु म जाने। तांको कह्यो कछु मनु ना माने॥

---

१ यहाँ शब्द जानकी चाहिए।

निसि बासरि उनि को इहि कामा । मिलि करि आवहि असुर की भामा
जस को कोई भेसु न मागे । सो जनु सदा सुखी जो जागे ॥
साधि भाव चोरु सिपि लेव । चोर भाउ साधु नही लेवे ॥
अग्नि माहि जो कछु तुमि डारो । अपुने मन महि सह बीचारो ॥
सभ को छीण महि अग्नि जलाए । अग्नि दुख लागै नही आए ॥
त्रिणु सकड़ो जो जल महि पाव । पिन महि जसु ताहि रुड़ावे ॥
जैसे त्रिणु सकड़ी रुढि जाव । कछु जनक सुता मन ना ठहिराव
जनक सुता सिमरे रघुराई । साईदास प्रभ सदा सहाई ॥११८

कहे मदोदर रावण साई । सुणु मोहि बाति लंक क साई ॥
काहे जानकी को ले आया । किहि प्रयोग इहि कामु कमाया ॥
तोहि मति हीण किउ होई । अधम मति तने सभु खोई ॥
थो रामचंद त्रिभवन के राया । सकल जगति हि पेसु रचाया ॥
छिण महि उतपति सभ करि लवे । छिन महि सकल संहार करेव ॥
तांकी भर्जा ते हिरि आनी । हे मतिहीण क्या मनि ठहिरानी ॥
जबि ही आवे तोहि बिडारे । कनक पुरी तुमिरी उसु जारे ॥
मारि जीउ तुमिरो बहु सर्व । महा अग्नि दुख तुमि को देवे ॥
तब पछुतावहिगा मनि माही । किहि प्रयाग विरोधु कमाही ॥
साईदास जानकी स जावा । रघुपति आगे पहि ठहिरावा ११९

रावण फिरि करि बचनु सुनायो । हे मदोदरि क्या उचिरायो ॥
मोहि सर दूजा कोपु कहाव । इमि परि परि को ब्रिह मि पाव ॥
ते मनि महि कहा सोडो बीचारी । से विधि आमो माहू हमारी ॥
त्रैलोक मे कंपी पाया । मोहि सम दूजा को नहि प्रगटायो ॥
दस सिरि बास भुजा बसु भारी । पहु का राम करि मरे हमारी ॥
रघुपति जासु तू मोहि दिखाव । घटो बसो तू माहू पनाव ॥
दिसि महि जाको म प्रहारो । केसरि ससु उसि कोम मारो ॥
जबि सीता को कैसे देवो । कमे सिम को आसु करेवो ॥
रामचंद्र माहि नामु सुनाव । नामु सुनाद करि मोहि डरावे ॥
मै काहू को नामु न करिहौं । नामु काहू का मामसि परिहौ ॥

कनक पुरी महि हमिरो डेरा। को माइ सके हमारो नेरा॥
बडो भासु ते मोहि विपायो। सांईदास रावण उचरियो १२०

फिरि महोदरी नृप सो भापा। हे रावण तै क्या चित रापा॥
दसि सिर बीस भुजा को जाने। इहि अभिमानु हुदे महि आने॥
मोहि दसि सीस कौनु विडारे। बीस भुजा मोहि कौनु उपारे॥
हे नृप काहे मर्म भुलावे। मेरो कहु मो किउ मनि नही ल्यावे॥
एकु सरीर सग राम जीत आवे। सकल सैना को एकु हिरावे॥
जैस मिगु होवहि इकि ठौरा। सिंहु जीति ले तिहि इकि ओरा॥
जेवकि अधिक होवहि बनि माही। स्वान एकि तिहि उदर कराही॥
एकु मार काष्ट जो होवहि। रचक दावा सभही पोवहि॥
कष्ट अग्नि भस्म करि डारे। ऐसे रघुपति तोहि बिडारे॥
दसिसिरि बीस भुजा तुमि पोवहि। तब पाछे रावण तै रोवहि॥
जा तू अपनो भला चाहे। जानकी सहित भेट तू जाहे॥
पगि लाइ जाइ राम मनावहि। सांईदास अधिक सुखु पावहि॥१२१

मदोदरि भ जबि बचन उचारा। अति क्रोधु रावण मनि धारा॥
हे मदोदरी मति बौराई। तुमरे मनि महि क्या है आई॥
ऐसो को दसि सीस बिडारे। ऐसो को मोहि भुजा उपारे॥
मोहि नामा त्रैलोक समझाइ। रघिपति भासु कहा मै पाई॥
त्रैलोकि मोहि डर कपावहि। हे मदोदरी मोहि डरावहि॥
मै तो वासु किसे करा नाही। सदा अनंदु हमिरे मन माही॥
मै जानो ताहि मत्ति हिराई। जो तै इहि बिधि मोहि सुणाई॥
मै काहू सीता स आवो। बनि लाग मै ताहि मनावौ॥
इहि बिधि हमसौ कबहू न होई। इहि बिधि कबहू करे न कोई॥
ऐसे आपस महि झगिरावहि। बहु उमि इमि इसि आय सुणावहि
झगिरा अधिक क्यो अपि माही। किसे कहो चीठ माने नाही॥
गइ मदोदरी जानकी पाही। सोच बिचार कियो तिन ताही॥
हे जानकी रावण बलकारी। दसि सिर बीस भुजा बहु भारी॥
ताहि सगु काहे ना सवै। आइ भाउ तिस किउ ना देवै॥
महा बली तुमि की इहि ल्याया। मोहि पति की बसु है अधिकाया॥

मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो। रावन नृप सौ सेगु करावो॥
तबिही मदोदरी एहि सुनायो। जानकी क्रोधु कीयो उचिरायो॥
म इसि को क्षय कर्ने आई। तै कहु मनि महि क्या ठहिराई॥
इसि को बसु मोहि द्रिष्टि नि आवै। श्री रघपति इसि आइ हसावे॥
फिरि मदोदरी बचनु सुनायो। हे जानकी क्या मुख उचिराया॥
जो रघिपति सा बसु अधिकारी। कसे हिनि दीई धरि नारी॥
किसि कारणे मुख कछ अलावै। झूठि बाति तू मोहि सुनाव॥
रावण नृप को बसु अधिकारी। मेरो कह्यो मनि लेहु बीचारी॥
जानकी फिरि ताको प्रतु दीना। कोई प्रस्न मदोदर कीना॥
कहा रावण को बसु अधिकारी। श्री रघुपति छिन माह विडारी॥
मदोदरी जाए बूझि इहि आपे। मनि महि इहि बीचारु इहि आपे॥
जो जानकी कहै होब सोई। और बाति नाहि कछु होई॥
इहि प्रजोग तासो झगिरावै। प्रस्नु करे ताको प्रतु पावे॥
जबि जानिको इहि बचनु सुनाए। मन्दोदरि मन महि ठहिराए॥
जो इनि कह्यो सोई कछु होई। और न करि साके कछु कोई॥
चलति मदोन्दरि ग्रहि महि आई। साँईदास सो सकल सुनाई॥१२२

श्री रामचद लछमण दोऊ भाई। फिर्ते हेति मन महि अभिकाई॥
हेति फिर्ति सीता के ताई। मन अतर बहु ताप दुखाई॥
जनक सुता कहू द्रिष्ट न आवै। तिहि प्रयोग मन बहु दुख पावै॥
रघिपति पूछसि विर्पो ताई। अतु कहू जानकी मोहि दिपाई॥
लछमन कौ प्रभ कह्यो सुनाई। लछमन सुण हो मेरे भाइ॥
तीन कूंटि कुटीया क पेखै। चतुर कूटि मै नाही देष॥
अतु तिह कूंटि महि जानकी होई। चमु देपहि मेमे अतु सोई॥
ऐसे रघिपति विहलु भए। एहि संचरु प्रभ मन महि भए॥
पषि मृग पंछी सौ प्रभ पूछहि। ताहि मम्नि किसि ते ना बूझहि॥
संकर ध्यान धरयो सिव जोडी। सुधि नही ताको अपनी पोडी॥
रघिपति बनि सौ ध्यानु लगायो। संकर ध्यानु अधिक ठहिरायो॥
पार्बती तब बचन उचारा। हे संभू जो तै किस ध्यानु धारा॥

सकल जीह प्रभि तोहि ध्यावहि । यूं प्रभि ध्यानु काहि को लावहि ॥
मम मनि संचर प्रभ हिरि लबौ । साईंग्रास को वहु सुषु देवौ ॥१२१

तब ही संकर वचन उचारा । हे पार्वती सुण हो चितु धारा ॥
म धरो ध्यानु बनि रघुराई । ताहि बाति कछु कही नि जाई ॥
तिहि रबि बनि माहि कोऊ पावै ।
जो पावै फिरि जन्म नि आवै ।
आदि अनादि रह्यो समाई ।
घटि घटि माहि तिहि जोति दिपाई ।
ताहि रूपु कोऊ कहा पछाने । ताहि कला काऊ बिर्ला जाने ॥
हमि उतिपति तिसी ते होए । त संचर अमा मनि महि पोए ॥
मैं तिस बर्ना ध्यानु लगायो । सदा सदा तांको जसु गायो ॥
पार्वती सुण करि बिस्माई । बहुरो मुष ते वाति सुणाई ॥
इही रामु जिन जानकी पोई । हे प्रभु इसि ते क्या कछु होई ॥
पूरण ब्रह्म इहु कहा कहावे । मोहि मनि इहि विधि माही आव
जो पूर्न ब्रह्म प्रभ इहि होता । जानकी को कहु काहे पोइता ॥
जबि देवी इहि बाति पलाइ । संभू फिरि प्रभु दे तिहि स्माझाई ॥
इनि से कोई नाह दुराए । इमि स कोणु दुराइ ले जाए ॥
जीह जत सभ इसे बनायो । घटि घटि माहि इहि आप स्मायो
जैसे रवि करे गगन उजीआरा । महि अहि महि तांको चमिकारा ॥
तैसे प्रभु सभ माहि स्माया । एहि भी प्रभ इहु पेमु रचाया ॥
लछमी बिधि प्रभु जानण हारा । तांके घटि का कहा बीचारा ॥
सकल जन्म की बिर्या पावै ।
बचनि माहि प्रभु बाति नि आवै ।
ताहि मामु लीए दुष सभ भागे ।
बहुरो फिरि फिरि करिया इनि लागे ।
ताहि माभु पप भस्म कराबे । बेग बिस्म बहु मूल नि लावे ॥
बनि कटि बाष्टु को ले आवहि । एक ठौरि सभ को टहिरावहि ॥
पावक छिन इकि तासो लाई । छिन माह सभ भस्म कराई ॥
जैसे मलीन बस्त्र बहु होता । साइ मबूण तांको मैसु पोइता ॥

जैसे त्रिपा गहे जबि आई। पीयो जलु त्रिपा गइ हिराई॥
जबि लगि मंदर दीपकु नाही। महा तिमरु तहा तहा वेह दिपाइ
जबि दीपकु मदर महि होया। तात काल तिमर तिन पोया॥
ऐसे नाम प्रभ अघ को टारे। भागहि अघ मुख नाम सम्हारे॥
ऐसे सभू देवी समझावै। पार्वती कछु हुवे न त्याव॥
अनकि भांति शिव ताहि बतायो। साईंदास विधि सुणायो॥१२४

पार्वती फिरि शिव सौ बोली। हे शिव जो मेरो मनु डोली॥
एहि भरोसा मो मनि नही भाव। इहि रघुपतु जो ब्रह्म कहाव॥
महा काहू प बल्यो न जाई। हे शिव मैं इहि तोहि बताई॥
मैं जाओ इसि को छलि आवौ। पाछे स मैं तोहि सुनावो॥
जो मैं इसि को ना छलि आई। तब मैं जानों रविपति राई॥
पूर्न ब्रह्म तब ही कर जानो। द्वितीआ भाउ फिरि हुवे न आनो॥
जो सभू मैं इसि का छलि आई। तब ब्रह्म शिव जी कहा कहाई॥
पार्वती को शकर कहाा। कहा सचर तैं मन महि सह या॥
तोहि वसु कहा जो तिसि छलि आवहि।
ताहि छलनि तु माहि पावहि॥
पार्वती क्या भर्म भुलावें। कहा बाति तु मनि ठहिरावें॥
पूर्न ब्रह्म सभि ही को जाने। बीच जन्त महि सभ हु पछाने॥
पाछे से तूं ममि पछुतावें। काहे एहि विधि मन ठहिरावें॥
पार्वती कह्यो शिव ताईं। इहि उपिजी है मोहि मन माही॥
जबि लगि मैं उसि देखिनि आवौ। तब लगि धीर नाहु मैं पावौ॥
इहि विधि शंकरि सौ भगिराई। साईंदास छलनि को आई १२५

पार्वती तब ही क्या किआ। जानकी रूपु तबही करि लीआ॥
आइ करि बन माहे ठहिराई। छलिनि गई श्री रघुपति ताईं॥
पूछति पूछति रघिपति आए। तहु जोरि प्रम पग दे धाए॥
पार्वती मों बचनु उचारा। तौबा सकसा कहीं भीचारा॥
माता कहि के ताहि सुनायो। पार्वती मुप ते उचिरायो॥
पार्वती कहु जानकी देपी। मोहि बतावो जो तुमने पेपी॥
पार्वती सचर हिरि लीआ। करि डंडौत भजि बिनु दीआ॥

पार्बती तब बचनु उचारा। हे पूर्न ब्रह्म प्रान प्रधारा॥
तोहि दर्सन ते सभ दुख भागे। तोहि दर्सन कोई दुख न लागे॥
त्रैलोक तुमिरो बिस्थारा। तूं त्रैलोक ते रहे न्यारा॥
सकल जगत महि तुमिरो बासा। तूं प्रभ सत जना की भासा॥
जहां जहां भीर परी जन ताईं। तुमि प्रभ भावति हो छिन माही
सत हेति करि तू बपु धारहि। संत हेति करि असुर सिंहारहि॥
अनाम अनिम ध्याम चित धार्म। तूं कौसापति अपर अपार्म॥
बेद कतेब कथा महिम बखानें। तुमिरी महिमा को प्रभ जाने॥
अनमि अनीस अतीत गुसाईं। तोहि स्मसर दूजा कोई नाईं॥
चिह्न चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। ताको कहु कोऊ कहा बतावै॥
जोति प्रकास सकल घटि माही। सकल माहि रमि रहयो सदाही॥
मै तोहि उस्तिति कहा बखानौ। तोहि उस्तिति प्रभ मै कहा जानौ
रस्ना रचि कहा कछु कहे। किस बिधि उस्तिति तुमि उचिरहे
मोहि अवग्या राम मिटावो। मोहि अवग्या हृदे न ल्यावो॥
जान किर्पा प्रभ मो परि कीजै। साईंदास छिन बिलम न कीजै १२६

पार्बती लगि चर्नि सिधाई। तात्कास शिव पाहे आईं॥
शिव पहि उस्तिति आप सुनाई। पार्बती मुख ते उचिराई॥
आदि अनाद रह्यो स्माई। ताकी भक्ति कछु लखी न जाई॥
अकास मूर्ति त्रिभुवन के राया। सकल माहि प्रभ आपि स्माईं॥
जो जो तांको नामु ध्यावै। धर्म मुक्ति गति को बहु पावै॥
जो जो तिहि चर्नि चितु धारै। तात्कास बहु ताहि उधारै॥
जो जो तिहि परे सर्नाईं। ताकी लिएत महि तप्ति हिराईं॥
ताहि प्रकार मै कहा सुणावौ। कहा बुद्धि जो कहिणा पावौ॥
हे शिव जैसा तोहि बतावा। तैसा ही प्रभ मोहि द्रिड़ाया॥
हे शिव जी ताहू ध्यानु कीजै। साईंदास कछ और न कीजै १२७

रघिपति हेति है मनि माही। मतु कहू पर करि जानकी पाही॥
रघिपति चकिकी चलिबे सो भाया। जानकी कहू तुम देपी माया॥
तिहि मे कहू मा क्या हमि जानहि। जानि कौपु हमि कहा पछानहि॥
हमि अपुने ग्रहि मानद माह। हमि तो काहू जानति माहे॥

तब रघुपति ताको स्रापु दीमा। रैनि बिम्रोरा तिन महि कीमा ॥
दिन इकि ठौरि होवै निस नाही। रैनि बिम्रोरा कीयो तुमि ताई ॥
ताहि स्रापु बिम्रोरा तिहि पाहो। रघिपति वचु मन्यथा ना आयो॥
मिस इकमि इसि विधि ना होवहि। सांईदास निस बहु सुखु होवहि १२८

तिहि स्रापु देहु माने थारे। ताहि कहु यो क्उि मन्यथा जाए
मंब बिख कोकला ठहिरानी। मति रसालि बोल बहु बानी॥
मति भलो सब्द सदा मुख बोलै। विहंगम को शब्द प्रमोलै॥
ताहि कहु यो प्रभ रघिपत राई। कहु जानकी तोहि मिपाई॥
एहि शब्दु तमि मोहि सुणावो। हे विहगम तुमि वेग न लावो॥
तब ही विहगम सब्द उचारा। हे रघिपति सुण बाति हमारा॥
मै सुख बस्ति हो मपुनी ठौरा। मोहि म्योग माही है मोरा॥
फल वेपै मनि महि कुकसावो। महा मधिक सुख मगल गावो॥
मौर कोई मोहि द्रिष्ट न मावै। हु रघिपति कछ ठौर न भाव॥
मै जानकी द्रिग नाहि निहारी। कैसे तुमि सो कहों मूठारी॥
ताहि कहु यो श्री रघिपति राए। मुख कालो तुमिरो हो जाए॥
स्याम बदनु प्रभ करे तुम्हारे। इहि मम मन महि भयावीचारो
जो कहु राम सोई फुन होई। ताहि कहु या मेटे नहो काई॥
पूर्न पुर्ष जो मुखो उचारे। साई होवति है तत्कारे॥
स्याम बरनु ताहू तब होमा। मति ग्रनदु ताको प्रम पोया॥
ताहि स्रापु दियो रघुराए। सांईदास बिधि ग्रापि सुणाए १२९

सुग्रीम बाल कपि दो भाई। किकंधा नगरी राजु कराई॥
सुग्रीम बडो बाल कपि छोटा। बडो सूक्ष्म सूख्म है छोटा॥
सुग्रीम तहा राजु कराई। बाल कपि छोटो तिहि भाई॥
बालु महा बली तिहि मारा। ताकै बल का कहा बीचारा॥
त्रैकाल संध्या बहु करही। ताहि त्रिताल सेह बितु भरही॥
प्रथमे पूर्व जाइ करावै। मध्यान्ह दखिएा इमि मावै॥
सांकाल पछम प्राइ करई। बधि तटि जाइ मैसे बितु भरई॥
मिता प्रति एही उसि कामा। सुनबधू तिहि ग्रहि महि मामा॥
इकि दिन रावण बधि तटि माया। बाल कपि संध्या करनि चितु माया

निर्थ वाल को मनि सोभाना। एहि वाति हृदे उनि माना॥
इसि कपि को मैं पकरि म ल्यावों। सुत वंधू को पडि दिपिसावों॥
चलितिचलितिवाल निकटिम्रामा। पकरिन को कर तासि चलाया॥
वाम कपि महा बली बलवाना। उनि भ्रम सेती भरो ध्याना॥
जवि रावण म हाथ चलाए। बाल ध्यान छाड पकड़ाए॥
म लनूंनी सो पटिकामो। रावण वसु कछु नाहिं बसायो॥
वाम कह्यो मुख पसनि ताई। इसि को मैं ग्रहि मे म आई॥
रावण यतन् कर नहीं छूट। जोर करे लनूंनी नहीं टूट॥
वधिन गयो बन्न महि पर्यो। म्रागे मायो जैसा कर्यो॥
वासु कपि सध्या करि म्रायो। विसर गयो लनूनी घटिकायो॥
षट माम तहु रह्यो उर्भाई। रावण छूटनि मूल न पाई॥
जत्न कीए लनूमी मंम पुछ्ही। सीस काढि भागा ताहा हउसी॥
भाग गिम्रा लका क माही। वास कपि पाछे नाह न जाही॥
कछु प्रजोग तासो उनि नाही। कवि प्रजोग तिहि पाछे जाही॥
एकु प्रमुर सडे वपु लीने कपि गमा नग्री को पग दीन॥
चला चला नग्री निकटि म्राया। म्रति उपाय तहा म्रसुर उठाया
वालि कपि जब इहि मुण पाई। एक सडे बहु धूम रचाई॥
वाम उन्नास नग्री तजि म्राया। तासो म्राइ करि युद्ध रचाया॥
म्रसुर कहा बसु इमि सरि होई। वालि सर जोधा नही कोइ॥
सीसु म्रसुर का कर महि लीना। ताहि मरोर मरोडे दीना॥
जव ही वालि म्रसुरे को मारा। म्रधिक बपु तब म्रसुर पमारा॥
वाम कपि उनि सीयो उठाई। ताहि देहि गिर के तल पाई॥
ताहि गिरि परि जो रषीस्वर रहे। तासु सपहुसि तासि को म्रहे॥
जबि ही वालि म्रसुर को मारा। ताहि मृतुतु गिरि के तल डारा॥
मृत की दुर्गंधिना होइ। सपहुस रहे तहु धवर न कोई॥
वह या ऋषीस्वर जिन एहि कीना। तांको इहि थापु मैं दीना॥
जा बहुरो इत वहु मावै। गोबिंद तांको मासु करावै॥
जो ऋषि मुनि ने वचन उचारे। साईदास होव तरारे ११०

बहु कदरा गुल कपि सिभाए। एही कर्मु सुग्रीमु कमाए॥
बालि क्रोधु कीयो उठि धायो। कसिति बसति किंकिधा आयो॥
सुग्रीम को मारि निकारा। राजु आप लीयो तस्कारा॥
ताहि भर्या पकि करि लीनी। इहि बिधि बालि कपने कीनी॥
सुग्रीम ताते भजि आया। धाइ करि गिरि ऊपरि ठहिरावा॥
चतुर मंत्री तिनि सग लीने। गिरि ऊपरि धाइ करि पगि दीने॥
तिन महि हनूमानु बलभारी। सुग्रीम सग मंत्री चारो॥
कहा कपीस्वर सब हलु रहे। राम नामु मुख ते उचिरहे॥
तहू धाइ इसि बासा लीना। सुग्रीम इहि कार्जु कीना॥
रहि न सके सुग्रीमु जु जावै। बालु धाइ इसि मुष्ट लगावै॥
षष्ठ मास रत्त इहु कहे। इहि प्रयोग मन अंतर महे॥
षष्ट मास जबि पूर्न होही। सुग्रीम मुष्ट दुःख मोही॥
बहुरो धाइ द्वारे ठहिरावै। कछ अपन मुख ते उचिरावै॥
बालु निकसि के बाहिरि आवै। एक मुष्ट बहु इमे लगावै॥
दूसरी मुष्ट जबि मारण लागे। सुग्रीमु तब ही उठि भागे॥
भाग धाइ गिरि ऊपरि चरे। सुग्रीमु इहु कार्य करे॥
स्याबर महि ताको बासा। सोईदास भ्रम पूरे आसा॥१२

रघिपति ढूढति ढूढति धाए। तहू ताहि होइ करि भ्रम धाए॥
सुग्रीम मै द्रिष्ट निहारी। हनूमान सो कहा पुकारी॥
हनूमान इन्ह पकरि स्यावो। इनि को पूछ हमहि पहि धावो॥
कौनु है इहि कहा को जावहि। चतुर होइ कहा की धावहि॥
हनूमान जबि आज्ञा पाई। तात्कास तिन मनि ठहिराई॥
बसति बसनि रघपति पहि आया। करि जोरे नृप माथि सुनाया॥
है भ्रम अपुनो नामु बतावो। पाछ कहो कहा तुम जावो॥
तब रघपति हनूमान सुनायो। रामु नामु मोहि मृग बिनु लायो॥
जानकी को किनी पह्यो चुराई। ताहि चिर्तत हो हेरनि भाई॥
हनूमान बिपि मृग उठि धाया। सुग्रीम को भाए सुनाया॥
रामचन्द्र इरि नामु धरावै। जानकी को इहि ढूढनि जावै॥
सुग्रीम कहा नाहि स्यावो। हनूमान तुमि बेग न लावो॥

हनूमानु तब ही उठि धायो। ततिछिण महि रघिपति पहि आयो
कह्यो चलो सुग्रीमु बुलावै। हे प्रभ पूर्न बात सुनावै॥
श्रीरघिपति कह्योबहुभला भाई। तुमि हमि को भली बाति सुणाई॥
चकित रहे गिरि चरचो न जाई। हार परे बलु कछू न बसाई॥
जबि श्री रघपति बाति बीचारी। हनूमान मन अतर धारी॥
श्री रामचद लछमण कौ लीना। एक इति एक उत्ति काम कीना॥
ततकाल सुग्रीम पहि आया। रघपतु लछमणु आण दिखाया॥
अब हनूमान काधे प्रभ कीए। साईदास ठौर मत लीए॥१३३

सुग्रीम जबि दर्सनु पाया। हाथ जोरि मुख बचन सुनाया॥
हे प्रभ कहा कहा तुमि आवो। एहि बाति प्रभ मोहि बतावो॥
तब श्री रघिपति बात सुणाई। सुणु सुग्रीम हमारे भाई॥
मै जानकी को ढूढणि आवो। मतु काहू ठौर सोझी तिहि पावो॥
किनही जानकी पडी चुराई। हे सुग्रीम हमारे भाई॥
सुग्रीम इहि सुण बिस्मायो। तब रघिपति ने बचनु सुनायो
हे सुग्रीम क्या समरु लीयो। कवन प्र्योग मन महि कीयो॥
तब सुग्रीम कह्यो रघुराई। मोहि बनिता पसि लई मोहि भाई
इहि प्रजोग रह्यो बिस्माई। मोसो बिधि कछ कीई न जाई॥
रघिपति सुण प्रसु प्रशन चलायो। सुग्रीम सौ एहि सुणाई॥
तुमि सो कैसे उनि हठु कीमा। बनिता पसि तुमिरो राजु लीमा॥
मै तिहि सुणु करि हो उपिचारा। साईदास रघिपति बचु मारा॥१३४

सुग्रीम तब कह्यो सुनाई। सुण हो कौसलपति रघुराई॥
मै बडो बालु छोटो मोहि भाई। मै करो राजु तिहि बलु अधिकाई
किकधा नगरी के माही। राजु करहि बहुता सुख पाही॥
एक असुर किकधा आवै। ताहि प्रयोग सैना दुख पावै॥
बालु तबि ताके पीछे जावै। असुर जाइ किंदरा ठहिरावै॥
एकि दिन बालि कह्यो सुणु भाई। प्रजा असुर्में अधिक दुखाई॥
आजु तो मै इसि असुर कौ मारौ। पकरि असुर कौ धनि पछारौ॥
तुमि सम सहित चलो मेरे भाई। मै इहि तुमि सौ कहो सुनाई॥
तब ही असुर प्रगटि धाइ भया। बालु ताहि सम्मुख होइ गया॥

सभि सैना मे मै भी आया । असुर भाग कंदरा चितु लाया ॥
कदरा के मुखि परि सभु गए । तहा आइ करि ठाढे भए ॥
बालि तब ही कह्यो सुनाई । तुमि ईहा ठांढे रहो हे भाई ॥
मै प्रवेसु करो इसि मांही । जाइ प्रहारौ असुर के ताई ॥
असुर मारि फेरि मै आवौ । छिनु पलु विलमु नाहि मै लावौं ॥
हमि हिटिकाइ गयो तिहि माही । हमि तहा ठाढे मनि विसमाही ॥
क्या जाने हमि क्या कछु होई । इसि कंदरा महि मुख नहीं कोई ॥
छिनु एकु बीते हे रघुराई । रक्त कदरा से उमिड आई ॥
हमि जाना किसी बालि को मारा । किनी असुर इसि को प्रहारो ॥
हमि कदरा मुपु मूद कराही । चले आए किकधा माही ॥
पाछे मारि बालि तिहि आया । मुखु मूदा तिन मे मिर्पाया ॥
कदरा को मुख दीयो गिराई । कदरा सौ बाहिरि परयो भाई ॥
देषमि लागा सैना नाही । अति क्रोधु कीनो मनि माही ॥
ताकी भुज महि बलु अति भारी । तिह बल को क्या करौ बीचारी
तब ही चला किकंधा आया । मो सौ प्रभ तिहि राजु छिनाया ॥
मोहि बनिता भी षसि करि लीई । एहि बाति मो सौ तिनि कीई ॥
तिहि बल से भाग ईहा आया । हे प्रभ आइ ईहा ठहिराया ॥
तिहि प्रयोग मोहि सुपु न भावै । निसबासर हमि भिराया जावै ॥
हे प्रभ कहा मै कहो पुकारी । साईदास बली अति भारी ॥१२५

सुण रघिपति फिरिबाति चलाई । सुग्रीम सौ कह्यो समिझाई ॥
जो बालि भुजा महिबलु अधिकायो । तुमि ईहा बासा कैसे पायो ॥
सुग्रीम फिरि तिहि प्रतु दीना । सकल बीचारु राम तिहि कीना ॥
हे रघिपति इकु असुर षु आया । केसिर्गंधा महि धूम रचाया ॥
असुर ने सडे को बपु लीना । युद्ध कर्नि को तिम चितु दीना ॥
बालु निकिस बाहिर को आयो । सडे सो तिनि युद्ध मचाया ॥
बालि ताहि सीसु करि लीना । दीई मरोरी मरोर तिनि दीना ॥
असुर मारि ईहा उनि डारा । दुर्गंधिता भई तिहि अधिकारा ॥
सदहसि ऋपीस्वरको ईहा बासा । सदा सदा बहु हरि संग रासा ॥
जबि ऋषि को दुर्गंधिता आई । तबी ऋपीस्वर मुषि उचिराई ॥

बिनते एहि दुर्गंधिता उठाई। जोईहा फिरि प्रावे हत्या जाई ॥
हे प्रभ तास त्रास नही प्रावै। इहि बसुधा परि पाव न पाव ॥
इहि प्रजोग हमि वासा पायो। माहि हतासौ असु न बसायो ॥
रघिपति तब ही प्रगिन जलाई। इहि प्रतना मनि ठहिराई ॥
प्रिथम तोहि कार्जु मै करिहौ। पाछे जानकी ढूढनि चरिहौ ॥
एहि प्रतज्ञा रघिपति कीनी। तोरु वाति समु तजि करिदीनी ॥
सुग्रीम तब वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान प्रधारा ॥
जो तुमि एहि वाति प्रभ करहौ। वालि हतिन को जो चितु धरिहा ॥
मै भी तुमिरो काजु करिहौ। जो तुमि कहू यो सति चितु धरिहो
करि प्रतज्ञा रघिपति प्राए। सुग्रीम तौरि सहिनि चलाए ॥
जिहि तौरि कुरगु प्रसुर को पर्‌या। तेहू तोरि प्रभ को इनि पठिमा
जो प्रिथमे इमि कुरग उठावै। तौ जानो मै वालु हतावै ॥
जो इमि को ना सकै उठाई। वालि सो इसि बलु कहा बसाई ॥
चलति चलति प्राए तिहि पाहु। सुग्रीमु सुकचे मनि माहु ॥
कहाँ राम सौं कै ना कहो। इहि प्रतज्ञा सहो कि ना सहों ॥
जो रघिपति बिधि जानरण हारा। मनि माहे तिनि लीयो वीचारा ॥
जो कछु सुग्रीम मनि प्रायो। कौलापति सभ बिर्था पायो ॥
प्रन्य सौ कुरगि को लीयो उठाई। श्री कौसापति पूर्ण रघुराई ॥
कै सहस्र जोजन डारि दीग्रा। इह कार्ण कौसापति कीग्रा ॥
सुग्रीम तब भर्मु निवारा। सांईदास निश्च मनि धारा ११६

श्री रघुपति प्रागे तब प्राए। किकंधा नग्री निकटि प्राए ॥
कहू यो सुग्रीम कौ प्रामो जावो। वालि को गृहि से वाहिरि स्यावो ॥
जबि वाहिरि प्रावै तिहि मारो। वानु साथ तिहि धर्नि पछारो ॥
तब सुग्रीम ने बिनती ठानी। हे पूरम सभ सारग पानी ॥
मोहि उसि वपु बनिति एकु दिखावै। हे प्रभ उसि कैसे बाणु लगावै ॥
मनु तोसि स्याम मोहू को मारे। हे प्रभ धाए सौ धर्नि पछारे ॥
इहि प्रयोग मनि महि सकुचावो। डरिता प्रभ प्रागे नही जावो ॥
पत्रो की प्रभ माल बनाई। सुग्रीम को उरि महि पाई ॥
इमि देखि तुमै माहि भुलावो। बानु मांधि मै ताहि लगावो ॥

तबि उधारु तुमिरो म देवौ।
एहि बाति मैं तब ही करेवौ।
श्री रघिपति ने बालि कौ मारा।
साँईदास सम कह्यो वीचारा॥१३९

लछमन को प्रभ कह्यो ताही। लछमन समझ देवु मनि माही॥
चतुर्दश वर्ष होवन मैं ताही। पिता वचन हमि को इह माही॥
मैं तो नगि माहे नही जावों। जाइ नगि इसि राजु वहावों॥
सुग्रीम कौ तुमि ले जावों। पढि किसंधाराज बहावों॥
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। बेग बिलम्ब तुमि मूल नि लावो॥
लछमन आज्ञा मनि ठहिराई। वहुरो रघिपति बाति चलाई॥
सुग्रीम सौ कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तू वीर हमारे॥
तुमि जाइ नग्री राजु करावो। जबि हमि कहे तब ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिर राखा। मुखि अपने ते इहि कछु भाखा॥
हे रघिपति आज्ञा जो होई। मोहि मस्तक परि करहो सोई॥
लछमनु को प्रभ तिहि सग दीना। सुग्रीम कौ प्रभ विदया कीना॥
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कौसलपति तहु ठहिराए॥
दोनों केतगमा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज बहाए॥
ताहि राजु दे करि उठि आयो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना॥
हे प्रभ जो आज्ञा तुमि होई। साँईदास ने मानी सोई॥१४०

लछमन हनूमान सग लीना। गवनु तबै रघिपत ने कीना॥
चले चले समिता परि आए। सीपा वस्त्र जोवति निर्पाए॥
कह्यो वहु तुमि जानकी देपी। मोहि कहो जो तुमि द्रिग पेषी॥
तबि सीपे ने बचनु उचारा। हे रघिपति हरि प्रानि अधारा॥
रावरण दैत्य ने पड़ो बुराई। हे माधो बन सदा सहाई॥
तब रघिपति सीपे बर दीना। तोहि सीतु दूरि मैं कीना॥
सीतकाल तुमि असु न सतावै। करो कामु तुमिरे मनि भावै॥
जल सौ सदा होइ तुमि कामा। तौ मैं बर दीनों विसामा॥
सीपा बर देइ आगे जाए। साँईदास रघिपति परि बल जाए १४१

रघिपति पग आग को दीनें। पग घटाई प्रभ ने दपि लीने ।।
ताहि कह्या सुग मरे भाई। जनक सुता कह्न मे निर्पाई ।।
कह्यो घटाई श्री रघपति राई। जानकी आवति म द्रिष्टआई ।।
रघिपति ताकों अंक महि लीमा। फेर करि तासो प्रतु दीना ।।
हे घटाई ब्रितांतु सुनावो। सकल बाति तुमि मोहि बतावौ ।।
तब ही घटाई कह्यो रघिराए। म सभ विधि तुमि देयो बताए ।।
गएत्री त्याग मी सो पितु देवो। मेरे कह्यो मनि धरि लेवौ ।।
कनक पुरी नृपु रावण नामा। हे प्रभ पूर्ण सुण हो रामा ।।
जानकी ताहि दुराइ करि आनी। जानकी सो म सीओ पछानी ।।
म तासो बहु युद्ध करायो। हे प्रभ उनि मोहि दगा कमाया ।।
रघिपति कह्यो कहो क्या कीम्रा। तुमि सौ कौएण दगा उनि दीम्रा ।।
तब ही घटाई आपि सुनायो। हे प्रभ मोसो एहि करायो ।।
अपुनी देहि पम्र रक्त निकारी। बाटि लोए से ताहि सिवारी ।।
बाटि सिवारि मोह छोरि डारि दीए।
हे रघिपति मैं उदरि महि कीए।
जबि मोहि बाटि उदर महि डारे।
बसु भयो क्षीण मोहि सत्कारे।
पाछे बसु मोहि कछु न बसायो।
हे प्रभ बहु जानकी से पायो।
हे प्रभ अवि मोहि निक्सति प्राना।
तुमि सत्ति करि सहो मन माना।
मोहि दागु दे करि तुमि जावो।
भवरप ठौर तुमि मोहि जरावो।
इहि बिधि कहि घटाई तजे प्रामा।
साइदास बह्म जोत समामा ।।१४२

जब ते घटाई प्रान तजि दीए। श्री रघपति सचर मन लीए ।।
ब्रह्मपुरी हमि ध्यानु लगायो। तहू अदरप ठौरि नही पाए ।।
भवरप ठौर कहू द्रिष्ट न आवे। जहा घटा को रामु जलावे ।।
सोच बीचार देख्यो मन माही। सो गुर किपा ते आपि सुणाई ।।

एक हीं बाएा सो प्राण निकारो। एकि ही बाएा सो धर्नि पछारो॥
तुमि मनि महि काहे सकुचावो। तुमि सबरु मनि महि मा ल्यावो॥
जो मै तुमि सो कह्यो भाई। साईदास करो मै साई॥१३७

सुग्रीम भाग को धाया। निकटि हारि बालि के धाया॥
बासु कपि यमु विपि पोसाए। करि अपुने तिहि तिलकु लगाए॥
सुग्रीम तब बचनु उचारा। बाल धाउ बाहिरि ततकारा॥
धाइ करि मो सो युद्ध करावो। अवरि वहिनि नाहि बिनु लावो॥
जबि सुग्रीम इहि बचन सुनायो। बालि कपि तब ही सुए पायो॥
धाहुति यज्ञ त्याग करि धावै। सुग्रीम सो युद्ध मचावै॥
ताहि भार्जा तारा नामा। अति बहु स्यामी हे बहु नामा॥
बालि के ताई कह्यो पुकारे। हे वामी मम लेहि बीचारे॥
यज्ञ त्याग बाहिरि ना जावो। ईहा बहि करि यज्ञ करावो॥
जो उनि कह्यो कहा कछ होई। तोहि स्मसर उसि बनु ना होई॥
बालि कह्यो उसि कों हति आवों। पाछे आइ करि मधु करावो॥
फिरि तारा न बचनु सुनायो। हे पति मोहि कहा चित आयो॥
बिनु सहाइ इहु ईहा न आवै। बिनु सहाय इस बसु न बसाव॥
इसे सहाइ होई हैं भारी। तब तुमि सो इमि बाति उचारी॥
बाल कह्या तारा ना माना। अति अभिमानु हृदे महि आना॥
करि अभिमानु बाहि को धाया। सुग्रीम तानै निर्पाया॥
सुकचि गयो सुग्रीम तब ही। निर्प्यो बालु नैन सों जबही॥
जैसे मृग केहरि निर्पाए। सुकच आइ त्रिग नीर ढुराए॥
जैसे चपकि निर्पे स्वाना। मनि माहे होवै हैराना॥
जैसे पग संमकु द्रिष्ट आए। भागनि को अपुना चितु लाए॥
जैसे चोरु परिग्रहि मै जाई। बस्तु हिति बहु मनि सकुचाई॥
मतु ग्रहि को धनी जाम पराए। मोहि पकरि करि बासु कराए॥
जैस काल रूपु द्रिष्ट आए। जीउ बार समि ही सुकचाए॥
तैसे सुग्रीम मनि सुकचाना। साईदास बहु भयो हैराना॥१३८

बाल कपि तिहि पाछे धाया। सुग्रीमु ताहा किरए ठहिराया॥
जबि ते बालु निकटि तिहि आयो। सुग्रीमु भागनि चितु लायो॥

बालि दौरि सुग्रीम को गह्या। मुख अपुने ते एही कह्या ॥
हे सुग्रीम काहे अबि भागो। युद्ध करनि काहे नहीं लागो ॥
उाति पोति जबि दोनो होए। रघपति बाणु साधि बासु पोए ॥
सुग्रीमु तब ही भजि आया। श्री कौसापति आइ ठहिरायया ॥
बाल तब ही बचनु उचारा। हे प्रभ तै मोको किउ मारा ॥
था तूं मोहि कहित रघुराए। सका कहु माहि प्राण दिवाए ॥
जैस एकु भाजनि कोई स्याम। माएण कहू आग ठहिरावे ॥
तुमि आग सभ प्राणि भर्ता। हे प्रभ इह कार्एण म कर्ता ॥
सुग्रीम सो करो भलाई। जाके तुमि आइ भए सहाई ॥
म तरो नाहि ऊगुणु कीना। तै मोको काहि हनि लीना ॥
रघपति तासौं बचन उचारा। त ऊगुणु कीना बहु भारा ॥
भाबज बडो भात सरि होई। भार्जा तन कोनी सोई ॥
इसि तै ऊगुणु होए कहा कहावे। इहि ऊगुणु हमि माही भावे ॥
बालि कोप फिरि बचनु उचारा।
हे रघुपति जन प्रान अधारा।
तुमि पसू हमहि दापू माही।
इहि बीचारु सेहु मनि माही।
जबि रघपति इहि बिधि सुणी काना।
तब सत्य कर के मनि महि आना।
कह्या तब प्रभ बास क ताई।
इहि बीचारु सहि मनि माही।
मनि माहि बामु अन्यथा ना जाही।
तुमिरो पान देउ माह आयो।
इहि बिधि मै मन महि ठहिरायो।
बालि कह्यो प्रभ कबि मैं पावो।
ध्रबि तो म दब लाक सिधावो।
तब कह्या श्री रघपति राए।
क्रिष्ण अवतार सबी जबि जाए।

तबि उधारु तुमिरो ^ मैं देवौ।
एहि बाति मैं तब ही करेवौ।
श्री रघिपति ने बालि कौ मारा।
साईंदास सभ कह्यो बीचारा॥१३९

लछमन कौ प्रभ कह्यो ताही। लछमन समझ देपु मनि माही॥
चतुर्दश बर्ष होवन मैं ताही। पिता बचन हमि को इह आही॥
मैं तो नग्रि माहे नही आवौ। जाइ नग्रि इसि राजु बहावौ॥
सुग्रीम कौ तुमि लै जावौ। पहि किक्रमाराज बहावौ॥
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। बेम बिल्म तुमि मूल नि लावो॥
लछमन आग्या मनि ठहिराई। बहुरो रघिपति बाति चलाई॥
सुग्रीम सौ कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तू बीर हमारे॥
तुमि जाइ नग्री राजु करावो। जबि हमि कहे तब ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिरु राषा। मुषि अपने से इहि कछु भाषा॥
हे रघिपति आग्या जो होई। मोहि मस्तक परि करहो सोई॥
लछमनु को प्रभ तिहि संग दीमा। सुग्रीम कौ प्रभ बिदआ कीमा॥
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कौसापति तह ठहिराए॥
दोनों केतगधा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज बहाए॥
ताहि राजु दे करि उठि आयो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना॥
हे प्रभ जो आग्या तुमि होई। साईंदास ने मानी सोई॥१४०

लछमन हनूमान सग लीमा। गवनु सबै रघिपत ने कीना॥
चले चले ससिता परि आए। छीपा बस्म ओवति निर्पाए॥
कह्यो कहू तुमि जानकी देवी। मोहि कहो जो तुमि द्रिग पेषी॥
तबि छीपे ने बचनु उचारा। हे रघिपति हरि प्रानि अधारा॥
रावण दैत्य ने पडी दुराई। हे माधो बन सदा सहाई॥
तब रघिपति छीपे वर दीमा। छोहि सीतु दूरि मैं कीना॥
सीतकाम तुमि जमु न सतावै। करो बामु तुमिरे मनि भावै॥
जस सौ सदा होइ तुमि कामा। तौ मैं वर दीनों बिसामा॥
छीपा वर देइ आग आए। साईंदास रघिपति परि बल जाए १४१

रघिपति पग भ्राम को दीनें। पग घटाई प्रमें ने देपि लीन ॥
ताहि कह्यो सुग्र मेरे भाई। जनक सुता कहू म निर्पाई ॥
कह्यो घटाइ श्री रघपति राई। जानकी जावति म द्रिष्टमाई ॥
रघिपति तांका धक महि लीना। फेर करि तांसो प्रभु दीना ॥
हे घटाई ब्रितांतु सुनावो। सकल बाति तुमि मोहि बतावो ॥
तब ही घटाई कह्यो रघिराए। म सभ बिधि तुमि दयो बताए ॥
गएत्री त्याग मो सो चितु देको। मर कह्या मनि धरि लेको ॥
कनक पुरी नृपु रावणु नामा। हे प्रभ पूरए गुण हा रामा ॥
जानकी ताहि दुराइ करि भ्रामी। जानकी मो म साता पछाना ॥
मैं तासो बहु युद्ध करायो। हे प्रभ उनि मोहि दगा कमायो ॥
रघिपति कह्यो कहा कया कीमा। तुमि सी कौए दगा उनि दीमा ॥
तब ही कन्धह भ्रापि सुनायो। हे प्रभ मोमो एहि करायो ॥
मपुमो देहि पद्य रक्त निकारी। बाटि लीए स ताहि सिकारी ॥
बाटि सिकारि मोहु छोरि डारि दीए।
हे रघिपति म उदरि महि कीए।

जबि मोहि काटि उदर महि डारे।
बसु भयो क्षीण मोहि तत्सार।

पाछे बग्रु मोहि कछु न कमायो।
हे प्रभ बहु जानकी से भ्रामो।

हे प्रभ भ्रबि मोहि निश्चिमनि माना।
तुमि सति करि सहो मन माना।

माहि दागु द करि तुमि भ्रावो।
भ्रम्प टोर तुमि मोहि करावो।

इहि बिधि कहि घटाइ तब भ्रामा।
शान्दाम कक्ष जोत समाना ॥१४२

भ्रब ते घटाई प्रान तजि दीए। श्री रघपति गवर मन सीए ॥
कस्तुरी रमि ध्यानु लगाया। तहू भ्रम्प ठौरि नहीं पाए ॥
भ्रम्प ठौर कहू द्रिष्ट न भ्राव। जहा जहा को रामु जनावे ॥
सोच बीचार देख्यो मन माही। मो गुर क्रिया ते भ्राति गुसाई ॥

तबि उधारु सुमिरो म देवी।
एहि बाति मैं तब ही करेवी।
श्री रघिपति ने बालि कौ मारा।
साईंदास सभ कह्यो बीचारा॥१३९

लछमन कौ प्रभ कह्यो ताही। लछमन समझ देषु मनि माही॥
चतुरदश वर्ष लोचन मैं ताही। पिता बचन हुमि को इह माही॥
मैं तो नग्रि माहे नहीं जावौ। जाइ नग्रि इसि राजु बहावौ॥
सुग्रीम कौ तुमि स जावो। यहि किसकाराज बहावौ॥
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। बेग बिलम तुमि मूल नि लावो॥
लछमन आज्ञा मनि ठहिराई। बहुरो रघिपति बाति चलाई॥
सुग्रीम सो कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तूं बीर हमारे॥
तुमि जाइ नग्री राजु करावो। जबि हुमि कहे तब ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिरु रापा। मुषि अपने ते इहि कछु भाषा॥
हे रघिपति आज्ञा जो होई। मोहि मस्तक परि करहो सोई॥
लछमनु को प्रभ तिहि सग दीना। सुग्रीम को प्रभ बिदया कीना॥
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कौसलपति तहू ठहिराए॥
दोनों केसगधा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज बहाए॥
ताहि राजु दे करि उठि आयो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना॥
हे प्रभ जो आज्ञा तुमि होई। साईंदास मे मानी सोई॥१४०

लछमन हनूमान संग लीना। गवनु तबे रघिपत ने कीना॥
चले चले सलिता परि आए। छीपा बस्त्र धोवति निर्पाए॥
कह्यो कहू तुमि जानकी देपी। मोहि कहो जो तुमि न्गि पथी॥
तबि छीपे ने बचनु उचारा। हे रघिपति हरि प्रानि अधारा॥
रावण दैत्य ने पकी दुराई। हे माधो जन सदा सहाइ॥
तब रघिपति धप बर दीना। तोहि सीतु दूरि मैं कीना॥
सीतकाम तुमि जमु न सतावै। करो कामु तुमिरै मनि भावै॥
जल सौ सदा होइ तुमि कामा। तो मैं बर दीनों बिस्रामा॥
छीपा बर देइ आगे आए। साईंदास रघिपति परि बल जाए १४१

रघिपति पग आगे का दीनें। पग घटाई प्रभ मे देपि लीने ॥
ताहि कह्यो सुण मेरे भाई। जनक सुता कहू ने निपाई ॥
कह्यो घटाई थी रघपति राई। जानकी जायति म द्रिष्टभाई ॥
रघिपति ताकौं ग्रक महि लीना। फेर करि तासो प्रसु दीना ॥
हे घटाई व्रितांतु सुनावो। सकल भाति तुमि मोहि वतावो ॥
तब ही घटाई कह्यो रघिराए। मैं सभ विधि तुमि देया वताए ॥
गएम्री त्याग मो सो चितु देवो। मेरे कह्यो मर्मि धरि सबौ ॥
कनक पुरी नृपु रावण नामा। हे प्रभ पूरण सुण हा रामा ॥
जानकी ताहि दुराइ करि ग्रानी। जानकी सो म लीऊ पछानी ॥
म तासो बहु युद्ध करायो। ह प्रभ उनि मोहि दगा कमायो ॥
रघिपति कह्यो कहो कया कीमा। तुमि सौ कौण दगा उनि दीमा ॥
तब ही घटाई ग्रापि सुनायो। हे प्रभ मोसो एहि करायो ॥
ग्रपुनी देहि पद्य रख निकारी। काटि लीए स ताहि सिवारी ॥
काटि सिवारि मोह ओरि डारि दीए।
हे रघिपति म उदरि महि कीए।
ग्रवि माहि काटि उन्र महि डारे।
बसु भयो क्षीण मोहि तत्कार।
पाधे वसु मोहि कछु म बसायो।
हे प्रभ बहु जानकी से पायो।
हे प्रभ ग्रवि मोहि निकिमति ग्राना।
सुमि सत्ति करि सहो मन माना।
मोहि दागु दे करि तुमि जावो।
ग्रदग्घ ठौर तुमि मोहि जरावो।
इहि बिधि कहि घटाइ तज प्राना।
सोइदास ब्रह्म जात समाना ॥१४२

जब ते घटाई प्रान तजि दीए। यो रघपति मंधर मन मीए ॥
ब्रह्मपुरी इमि ध्यामु समामा। तहू ग्रदग्ध ठौरि महो पाए ॥
ग्रदग्घ ठौर कहू द्रिष्ट म ग्राव। जहा घटा को रामु जमावै ॥
सोच बीचार रच्यो मन माही। सो गुर क्रिपा ते ग्रापि सुणाई ॥

तबि उभारु सुमिरो म देवौ।
एहि बाति मैं तब ही करेवौ।
श्री रघिपति ने वालि कौ मारा।
साँईदास सम कह्यो वीचारा॥१३९

लछमम कौ प्रभ कह्यो ताही। लछमम समभ्भ देपु मनि माही॥
चतुर्दश वर्ष होवन म ताही। पिता वचन हमि को इह माही॥
मैं तो नग्रि माहे नही जावौ। जाइ नग्रि इसि राजु बहावौ॥
सुग्रीम कौ तुमि ल जावौ। पडि किकंधाराज बहावौ॥
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। बेम बिलम तुमि मूल नि लावो॥
लछमम आज्ञा ममि ठहिराई। बहुरा रघिपति वाति बसाई॥
सुग्रीम सौ कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तू बीर हमारे॥
तुमि जाइ भयो राजु करावो। जवि हमि कहु तब ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिर रापा। मुपि अपने ते इहि कछु भाषा॥
हे रघिपति आज्ञा जो होई। मोहि मस्तक परि करह्यो सोई॥
लछमनु को प्रभ तिहि संग दीमा। सुग्रीम कौ प्रभ बिदमा कीमा॥
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कोसलापति तह ठहिराए॥
दोना केतगंधा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज बहाए॥
ताहि राजु दे करि उठि आयो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना॥
हे प्रभ जो आज्ञा तुमि होई। साँईदास ने मानी सोई॥१४०

लछमन हनूमान सग लीना। गवमु तबै रघिपत ने कीना॥
चले चलम मलिता परि आए। द्रोपा वस्न भोवति निर्पाए॥
कह्यो बहू तुमि जानकी देपी। मोहि कहो जो तुमि द्रिग पेपी॥
तबि द्रोपे मे बचमु उचारा। हे रघिपति हरि प्रामि अपारा॥
रावण दैत्य न पढो दुराइ। हे माधो जम सन्त सहाई॥
तब रघिपति ऐसे बर दीना। तोहि मीनु दूरि मे कीना॥
सीतकाल तुमि जमु न मनावें। करो नामु तुमिरे ममि भावें॥
जस सो सदा होइ तुमि नामा। तो म बर दीमों बिग्यामा॥
द्रोपा बर देइ आगे आए। साँईदास रघिपति परि बम जाए १४१

उोर प्रदग्ग ठौर कोइ नाही। जहा दागु देवी इसि ताही॥
कर प्रदग्ग पावौ मेरे भाई। उोर ठौर कहा द्रिष्ट नि आई॥
रघिपति करि परि तिसहि असाया। कर्म कसूत प्रम तिसे कराया॥
जो कछु वेद कहो मेरे भाई। श्री रघिपति ने कोनी सांई॥
जस सुत पित को कर्म करही। क्रिया कमि सभे चितु धरही॥
तैसे रघिपति ताके कीने। एहि वाति मन महि धरि लीने॥
पिता सथा प्रभ ध्यान कराहो। एहि वाति लीनी मनि माही॥
जैसे को पित को कहा माने। द्रितोया भाउ पिति कहे न माने॥
चटाई कहा ऐसे माना। पिता सथा करके प्रभ जाना॥
धर्मि मुक्ति पदु पग ने पायो। सांईदास रघिबर चितु लाया॥१४३

श्री रघपति तब आगे भाए। जबि केतक मगु चलि करि आए॥
लछमन सौ तब वचनु उचारा। सुग्रीम कथा मनि महि धारा॥
तुमि जाइ करि सुग्रोमु ल्यावो। मेरे कह्यो चित महि ठहिरावो॥
लछमन क्रोधु कीयो उठि धाया। जो आग्या होई वही कराया॥
ताको वधु कैसे सह्यो जाई। लछमन को वधु है धविकाई॥
निकटि किकधा नग्री आया। सकल कपो ने द्रिग निर्पाया॥
लछमन देखु कपि देखि कराही। यहि ते भजति हे धनि पराही॥
सुग्रीम तब ही सुण पाया। रघिपति बीर लछमनु है आया॥
सुग्रीमु तव सनमुख आया। लछमन को डंडौत कराया॥
लछमन तासौ कह्यो सुनाई। हे सुग्रीम सुणो मेरे भाई॥
श्री रघिपति तुमि को चिति कीना। तुमि ईहा सुख मनि महि लीना॥
महा क्रोधु कीयो रघुराई। सुग्रीम बिल्म बहु लाई।
इहि प्रजोग मोहि दीयो पठाई। सुग्रीम सो कहो तुमि जाई॥
छिनु बिल्म न लावो तुमि बुलाया। तुमिरे पाछे मोहि पठाया॥
दो दिन तुम ईहा बिल्मु करावो। क्रिपा करि ईहा ठहिरावो॥
नग्रि नग्रि के कपहु बुलावो। रघिपति कार्ज उठि सिधावो॥
दो दिन महि सम ही कपि आवहि। सहित लीए हमि उठि करि आवहि
लदमण कह्यो रघुपति उकसावहि। मम तुमि परि बहु क्रोधु करावहि

सुग्रीम कह्या दो दिन मानै। कोपु न करौं अपर अपान॥
भरो कह्यो सुए करि सेवहु। सार्ईदास सुप मीत की देवहु॥१४४

लछमन दो दिन तह ठहिराए। दो दिन पाछे बंतरि आए॥
क सहस्र बांतरि उमिआए। ताकी गणिती गिणी न जाए॥
सुग्रीमु सना ले धायो। चलतिचलति रघुपति पहि आयो॥
करी डडोत धाइ असि ताई। ताक सग सना अधिकाई॥
बाम को सुतु अगद बलकारी। जाम वानु ताकी वलु मारी॥
नल अरु नील दोऊ बलिवाना। दिवद महँ इ सुषेण प्रधाना॥
केसरी कपु उौवहु बलिवाना। सभा नाम म कहा बपाना॥
जो इकु इकु नामु कहा भरे भाई। वसुधा ऊपरि लिप्यो न जाई॥
कपि अठारा पघ उमिडाए। ताकी गणिती कौनु कराए॥
एक एक कवि को बलु सुण लीजै। उौर बाति कछु चित न दीजै॥
दस सहस्र गज को बलु भाई। एहि बाति मोहि वेद बताई॥
मम कपि सुरो उौतारा लीना। जो आज्ञा रघिपति ने कीना॥
इहि प्रयोग बलु है अधिकाई। हे साधो सुग हो चित लाई॥
उौर बाति तजि इहि चित लावो। राम नामु मनि महि ठहिरावो॥
कोटि जन्म भ्रम मुक्त कर्मी। साईदास जो नामु उचर्मी॥१४५

श्री रघिपति सुग्रीम सौ भाषा। हे सुग्रीम कहा चितु राषा॥
चतुर्दिसा बतरि[1] पैठावो। मास मास एहि कानि करावो॥
जानकी की कहूं पवरि स्यावहि। एहि पवरि मोमो पहुचावहि॥
सुग्रीम कह्यो वहु असा भाषा। हे रघिपति मनो चित राषा॥
एक एक दिसि बत्र पठाए। दस सहस्र सुग हो चितु लाए॥
हनूमान को कह्यो सुनाई। श्री रघपति कौसापति राई॥
हे हनूमान तू भी चल जावो। दस सहस्र कपि सग लिआवो॥
बन बन मधि मधि गुपि लवहु। एहि कानि तुमि चित करवहु॥
मुद्रा रघिपति ताकी दीना। एहि सदेसे काग कीना॥
जानकी देपि आगे धर्मीना। उौर हा दनाइको कीता॥

1 बतरि—बानर।

इहि प्रयोग मुद्रा तिहि दीना। इहि कार्णु श्री रघुपति कीना॥
हनूमान पगि सीसु ठहिरायो। साईंदास आज्ञा पाइ भायो॥१४६

हनूमान सैना सग सीए। जानकी बूझसि को पग दीए॥
नघि नघि बनि बनि बूझाही। मनु कहू ठौर खबरि तिहि पाही॥
बूझति एकि कदरा आए। हनूमान मनि इहि ठहिराए॥
कह्यो हृदे कछु आसु न होई। मेरो कह्यो क्या करसी कोई॥
दस सहस्र कपि स बलिवाना। इनि सै कौनु होइ सत्राना॥
अगद सुत है बालि को भाई। महाबली तिहि बलु अधिकाई॥
जाम वानु ताको बमु मारा। नल अरु नील तिहि बसु अधिकारा
हमि स्मसर कहा कौनु कहावें। जो हमि सम्मुख युद्ध को आवें॥
ताहि कंदिरा महि पग दीने। अधिक मवनु ताहू महि कीने॥
ताहि बिच भए सुधि औरानी। कौन ठौर परे सारग पानी॥
बिस्मिक होइ आगे को धाए। कनकि मंदर निर्ख बिस्माए॥
कनकि ता अम्बम भरे सिल्हाई। फल माना तिहि वृक्ष उर्झाई॥
तहा त्रिजा ने आसमु कीना। दिब्य जोति देखी रूपु लीना॥
बतरि निर्ख भई हैराना। तब देवी नृप बचनु बखाना॥
हे बतरो कहू कहा ते आए। इहि बिधि मौको देह बताए॥
हनूमान तब बचन सुनाए। सुण हो देवी देउ बताए॥
जानकी किन्हू पडी दुराई। ताहि बूझणि को हमि धाई॥
तब त्रिजना सुन बचनु उचारा। श्री रामचद्र को भयो अवतारा॥
रावण जानकी पडी दुराई। होएगी हो हमो कौणु मिटाई॥
हनूमान कह्यो ऐसे होई। रावण पडी होइगी सोई॥
तब त्रिजना कह्या हनूमाना। फल पावो अपना मनु माना॥
बानर पसि पाइ रहे अघाई। उदरि भरयो सुधि फिरि पाई॥
त्रिग मूंद निहि नैन उघारे। सकल बार्ता ताहि चितारे॥
पग पाइ बनरि ठहिराए। साईंदास त्रिजना सुनाए॥१४७

हनूमान त्रिजना सौ भाषा। करि जोरे नृप ते इहु भाषा॥
ह मम्या माहि राहु बतावो। अपुनी किर्पा हमहि करावो॥
जबि हनूमान इहि बचनु सुनायो। त्रिजना तब नृप ते उचिरायो॥

राहु वर्सो तौ तुमि ना पावो। जलु करो वाहरि नही आवो ॥
ब्रिग सेहु मूदि कहा मोहि मानो। चौर वाति कछु हूदे न आनो ॥
सभ वतरि मे नैन मुदाए। फेरि उघारे वाहिरि आए ॥
भए म अक्रित अधिक मनि माही। हे रघिपति कहा ठौर दिपाही ॥
कहा वहु कनक मदिर रचराए। कहा ब्रछ जो फल उपजाए ॥
कहा रूपु तुमि हमहि दिपाओ। हे प्रभ क्या ब्रिग सौ निर्पायो ॥
तुमिरी गति रघपति को जाने। तुमिरी गति कहा वेद वषाने ॥
तू प्रभ सदा सहाइ जना केरा। किन हू अतु न पायो तेरा ॥
हे प्रभ तुम हमि भए सहाई। सांईनास तुमि परि वल आई ॥१४८

कदरा त्याग वाहिरि सभ आए। जानकी को दूढण उठि धाए ॥
वन वन ब्रिक्ष ब्रिक्षि दूढाही। एथि चोति ठोर ब्रिग निर्पाही ॥
आगे चौरु कदरा आई। सभ वतर ने ब्रिग निर्पाई ॥
सभ प्रवेसु कीयो तिन माही। महा तिमरु कछु द्रिष्ट न पाही ॥
चलति चलति सभु आगे आए। कनक मदिर सुदर निर्पाए ॥
वनि सुंदर तहा ब्रिक्ष अधिकाई। तिहि वन महि फल वहु उपजाई ॥
मैन सुता बैठी मदिर माही। ताहि रूप गति कही न जाही ॥
वतरि निप रहे विस्माई। मैन सुता तिहि कह्यो सुनाई ॥
हे वंतरो तुमि कहा से आए। कौनु चोरि तुमि वतरो आए ॥
हनुमान तिहि वचनु उचारी। मैन सुता सुनु वाति हमारी ॥
हमि जानकी कौ दूढनि आए। श्री रघपति अवतारु है सीना ॥
मैन सुता कह्यो सेहि फलु पावो। इहि फल सौ तुमि उदर अघावो ॥
तहा अधिक फल किनहू पाए। पाए फल तिहि उदर भराए ॥
मैन सुता तवि कह्यो सुनाई। रावण जानकी पकी दुराई ॥
प्रगटि भयो राम अवतारा। मैन सुता मुख वचन उचारा ॥
हनूमान ताको प्रसु दीना। श्री रघपति अवतारु है सीना ॥
मैन सुता सो वचनु उचारा। हनूमान वसु ताको भारा ॥
मार्गु कोई हमहि वताओ। है मैन सुता वेरि नही लाओ ॥
तवि उनि कह्यो नम मुदाओ। वेग बिस्म कछु मूल नि लाओ ॥
सम ही कपि मैन मूदि लीने। मैन सुता सभ वाहरि कीने ॥

पोन्ह पीए द्रिग बाहिरि माए। तजि कंदरा आगे को माए॥
हेरति फिरति सम जानकी ताई। महि महि बनि बनि विर्प ममाई
कहू जानकी द्रिष्ट न आवै। बतरि इति उति अधिक डुलावै॥
बतरि ढूढति भए हैराना। साँईदास ढूढति मनु माना॥१४६

ढूढति ढूढति ढूढति माए। निर्प्यो दधि मनि महि विस्माए॥
पृथ्वी सकल ढूढी ना पाई। जानकी किने पकी दुराई॥
पारि जोजन बसु धनि ते ऊथा। हमिरी आगे नाह पहूचा॥
महा समि बसु हमिरो बसाया। भरु परे बसु सभ ही माया॥
आगे कहा जाहि मेरे भाई। हनूमान कहति समझाई॥
पसु मृगु ईहा नाही जावै। कहो कहा बसु हमहि बसावै॥
जो फिरि जाही रघपति पाही। सुग्रीम हमि घातु कराही॥
मवो होय ईहा तजो प्राना। जोग मार्ग मनि मेहि पछाना॥
जामवत कहयो सुण मेरे भाई। जोग साधिना करी न जाई॥
कहा जोग साधना हमि ते होई। जो ना होइ कहो तुमि सोई॥
हनूमान फिरि करि इहि बोले। सुणो बाति तुमि श्रवणाहि पोल्हे॥
बसि भेस करि चिपा बणावहि। साँईदास सम प्राण तजावहि १५०

[illegible] इहि विधि मनि ठहिराई। हनूमानि जो दीई बताई॥
[illegible] सुण करि से पावहि। अपो अपुनी चिपा बणावहि॥
[illegible] जो सीई बनाए। चाहित अपुने प्रान तजाए॥
[illegible] तब ही प्रगटाया। बतरि समु तिमि द्रिग निर्पाया॥
[illegible] इहि विधि पारो। पूर्न भई अबि इछा हमारी॥
[illegible] लायी। बम अरु मति हृदे त त्यागी॥
[illegible] करहो। पाछे उोर बाति बिनु बरहों॥
[illegible] बार्न। भाग दीए इहि अपर अपार्न॥
[illegible] निर्पेया। दीर्घ रूप बसु कहा न आया॥
[illegible] हैराना। एहि बाति उनि सुपहु बषाना॥
[illegible] माया। राम कार्ज करि प्रान तजाया॥
[illegible] ग्यानी। पग सुमति मनि सई पछानी॥
[illegible] पटाई नामु मोहि कहा सुनाया॥

नीस कह्यो मै आवण आवो। बसु गहो सागे फिरि मै भावो॥
एहि बिधि भी ग्रनस बीचारी। हे साधो तुमि केहि बीचारी॥
जोइ नि इहि बिधि कही पुकारे। जामवंत तब बचन उचारे॥
जब प्रभ ने बावन वपु धारा। बलि को छलिमि गयो मरकारा॥
प्रढाई करो वसुधा आचाई। बलि कह्यो मै दीनी साई॥
बलि छलने मन सकल्पु जु कीना। कह्या प्रढाई करो मै भर्ती दीना॥
प्रम छलिते दीर्घ वपु धारा। बसु बहु विस्म हुदे सकुधारा॥
एवी विल्म जु प्रम ने कीई। मै सप्त वारि प्रदक्षिणा दीई॥
सकल पृथ्वी कौ मेरे भाई। मति बुद्धि भयो बसु नाहि बसाई॥
हनूमान कछु नाहि उचारा। विस्म होइ बिस्मकि बिनु धारा॥
जामवान हनूमान सुनायो। हनूमान क्या बसु बिसरायो॥
अबि तेरी बासि अवस्ता साई। तुमि को बसु था प्रति अधिकाई॥

अबि कहा भयो को बसु बिसिराना।
तू तां बोलीए प्रति बलिबाना॥

हनूमान बछु ना उचिरायो। स्रापु पाइ तिहि बसु बिसिरायो॥
एक समे ऋषि मगु कराही। अग्नि जलाइ बहु होमु कराही॥
तिहि समे पौन पुत्र क्या न ग्रा। अग्नि जलति सकली कढि लीआ॥
ऋषीश्वर ने तब बचनु उचारा। अति बसु इहि बस लीम तुम्हारा॥
जबि तुमि राम कार्ज को जावो। बहुरो बलु अपना तुमि पावो॥
जामवानि तब कह्यो सुनाई। सुरा हो पवन पुत्र बाति कहाई॥
जबि तुमि बालक मेरे भाई। तब तुम सौ बसु सा प्रति अधिकाई॥
तोहि मात केसरी तिहि नामा। तब केसरी इहि कीनो कामा॥
तुमि को पालनि माहि पायो। अपुनो बिनु उनि बन को सायो॥
फल लेने गई बन क माही। तबि तै सोच लियो मनि माही।
रवि प्रकाशु भयो तत्कारा। तब मनि महि तुमि लोयो बीचारा

तब तै फलु करि रबि कों जाम्यो।
तब ही इहि बिधि मनि महि ग्राम्यो॥

श्याम पालिना गगनि सिधाए। अपुने करि जाइ रबि को पाए॥
भर्मि त्याग गगनि को धाया। जाइ रबि को तै हाथ बसाया॥

रवि कीओ तेजु तुमि वियो गिराई।
तोहि पितु ठटकि रह्यो अधिकाई॥
जब लगि पवनु न होइ सहाई। कहु कैसे कोऊ मग महि धाई॥
सम हू सोक कष्ठु बहु पाया। ब्रह्म पाहि तिन्हा आप सुणाया॥
हे प्रभ पौनु रह्यो ठटिकाइ। कहो कवन पहि आप सुनाई॥
बिनु पवन कैसे सुख होई। बिना पवन सुखु नाह कोई॥
ब्रह्म पवन को लीओ बुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई॥
काहे तुमि इहि कामु करायो। किह प्रयोग तुमि इहि चित आयो
पवन ब्रह्म पहि कह्यो सुनाई। सुण हो ब्रह्म पूर्ण ब्रह्म ताई॥
मम सुत को रवि धर्नि गिरायो। हमिरे पुत्र बहुति दु:ख पायो॥
इहि प्रयोग मै इहि कमु कीआ। सम हू ते न्यारा कीयो हीआ॥
तब ब्रह्मा कह्यो सुणु मेरे भाइ। इहि बिधि कीए नाहि भलाई॥
सुत को आण रवि पाह बैठावो। विद्या सभ तुमि ताहि सिखावों॥
अपुने आपु न करो न्यारा। मेरो कह्यो मनि लेहु बीचारा॥
पवन पुत्र रवि पाहि बहायो। रवि मे विद्या तोहि सिखायो॥
जोहु बलु तुमि काहे विसिरायो। हनूमान बलु चित ल्यायो॥
जबि इहि बिधि पवनु सुत सुन पायो। स्रापु मिटयो बरु प्रगटायो॥
जामवंत असा कह्यो सुणाई। साईदास बलु अति प्रगटाई॥[१]

हनूमान कपति करि परिआ। अति दीर्घ अपुनो बपु करिआ॥
कह्यो सुनो भाई मै जावो। जानकी की जाइ खबरि ल्यावो॥
तुमि सुपसती ईहा रहो। रामु जपौ कछु अवरु न कहो॥
हनूमान स्थावरि परि चडयो। चतुर जोजन स्थावरि धस्यो॥
उतिमाति देवनि की आई। आगे आइ करिहि ठहिराई॥
कह्यो मै इसि प्रसन्ना लखो। हीरो पविनि चितु परेखो॥
मोच बीचार लीओ मनि माही। म हनूमान ताई पतीआही॥
राम काजु इसि ते होइ आवै। को काजु कर्ना मा पावै॥
दीर्घ रूप कीयो आगो आई। हनूमान ने द्रिग निर्पाई॥
हनूमान बपु दीर्घ कीआ। जोति उसि त सुगणा करि लीआ॥
बदन पसार आगे को आई। अति दीर्घ तिहि रूप देखाया॥

१ मूलपत्र में १२१ संख्या दो बार आई है।

नीस कह्यो मैं आवण आवो। बसु नहीं लागे फिरि मैं आवो॥
एहि बिधि भी भनस बीमारी। हे सामो सुमि केहि बीमारी॥
कोइ नि इहि बिधि कही पुकारे। जामवंत तब बचन उचारे॥
जब प्रभ ने बावन बपु धारा। बलि को छलिनि गयो मरकारा॥
भढाई करी बसुधा आवाई। बलि कह्यो मैं दीनी सांई॥
बलि छलने मन संकल्पु जु कीना। कह्या भढाई करो मैं भर्ती दीना॥
प्रभ छलिते दीघ बपु धारा। बलु बहु बिस्म हृदे सकुचारा॥
एती बिस्म जु प्रभ ने कीई। मैं सप्त बारि प्रदक्षिणा दीई॥
सकल पृथवी को मेरे माई। अति बृद्धि भयो बसु नाहि बसाई॥
हनूमान कछ माहि उचारा। बिस्म होइ बिस्मकि चितु धारा॥
जामवान हनूमान सुनायो। हनूमान क्या बसु बिसरायो॥
अबि तेरी बासि अवस्ता साई। तुमि कौ बसु या अति अधिकाई॥
अबि कहा भयो जो बसु बिसिराना।
तू तां बोसीए अति बलिबाना॥
हनूमान कछु ना उबिरायो। सापु पाइ तिहि बसु बिसिरायो॥
एक समे ऋषि यज्ञ कराही। अग्नि जलाइ बहु होमुकराही॥
तिहि समे पौन पुत्र क्या आमा। अग्नि बसति सकली कढि लीमा॥
ऋषीश्वर ने तब बचनु उचारा। अति बसु इहि बल पौम तुम्हारा॥
अबि तुमि राम कार्ज का जाबो। बहुरो बसु अपना तुमि पावो॥
जामबानि तब कह्यो सुनाई। सुएा हो पवन पुत्र बाति कहाई॥
अबि तुमि बालक मरे माई। तब तुम सो बसु सा अति अधिकाई॥
ताहि मात कमरी तिहि मामा। तब केसरी इहि कीनो कामा॥
तुमि कौ पालनि माहि पायो। अपुनो चितु उनि बन को लायो॥
फल लेन गर्भ बन के माही। तबि तै सोच लियो मनि माही।
रबि प्रकाशु भयो तत्कारा। तब मनि महि तुमि मोयो बीचारा
तब तैं फल करि रबि कौं जाम्यो।
तब ही इहि बिधि मनि महि भाम्यो॥
त्याग पालिना गगनि सिघाए। अपुने करि आइ रबि को पाए॥
धनि त्याग मगनि को धाया। जाइ रबि को तै हाथ बसाया॥

इहि प्रजाग पग कटि डारे। सुण हो देवहु बीर हमारे॥
मकम दवो को मर्मु कटि डारा। वाल्मीक जव भैयो बीचारा॥
इस्यावर कवि वचन उचारे। पवन पुत्र तिहि दीयो बीचारे॥
मांव ता म काज को आवौ। राम कार्ज कर्न नितु लावौ॥

राम काजु जवि कर्ने आवौ।
तौ तुमि परि आइ करि ठहिरावौ॥

फेरि कौई इस्यावर वानि। पवन पुत्र सुण हो चित मानी॥
तोहि पिता का हमि सिर भारा। याहति हमि तिहि भार उतारा॥
पवन पुत्र फिरि ताहि मग आयो। सांईन्दास फिरि आगे धायो १८१

हनूमान आगे को धायो। कनक पुरी सौ तिन चितुलायो॥
छामा राकसी तव प्रगटाई। छामा राकसी बसु अधिकाई॥
जो कोऊ गगन के मार्ग आवे। तिहु परिवस्त धर्नि परि आवे॥
ताहु परिवस्तु की वहि दव लेवै। गगन त्याग वहु धर्नि परेवै॥
ताहि लेकरि भछन बहु करही। इहि वलु छामा राकसी धरिही॥
हनूमानु मग गगनि का धामो। तिहि परि वस्तु छामा मिर्धामो॥
वल्ल करि तवहि दम्यो न जाई। हनूमान तिहि बसु अधिकाई॥
हार परी बिसमकि ठहिरामी। गगनि ठौरि तिहि द्रिष्ट करानी॥
देप्यो तिहि कपु उडियो जाई। देपि कपि को गगनि को धाई॥
हनूमान जाइ सम्मुख होए। तासो युद्ध कीयो अधिकाए॥
हनूमान राकसी को मारा। ताहि मारि कूदयो अधिकारा॥
लका त्याग पलका माही। जाइ परयो कपु वसु बहुताही॥
भयो मै चकित कहा मै आयो। कनक पुरी पहुचिम ना पायो॥
एक बनिता बुढी भासा देपी। नैन निहारि पवन तनु पेपी॥
बनिता उपले बीए मिलाई। जल्न करे वसु नाहि बसाई॥
जो उपम्यां वेषा लेहु उठाई। उपल ले ग्रहि को बहि जाई।
कह्यो पूत इहि मोहि चठावो। एति की ठौरि मो पहि आवो॥
पवनपूत तव कह्यो पुकारे। हे मम्या हमि भी है हारे॥
मै आवनि लका के माही। चकित परयो वसु नाहि बसाही॥
तव बनिता ने बचन सुनायो। हे बनितारि इहि विधि सकुचायो॥

हनूमान सूक्ष्म वपु पाया। कपि वदिन हा" बाहरि गया॥
अस्यावरु धसि गयो तलाही। जैस धर्नी वह दिपाई॥
असुधा सो तवहो रसि गया। हनूमान मूरति बितु बया॥
तब उनि मे मुप वचनि उचिराए। अन्त माति जिन तुम स आए॥
हे हनूमान मैं ओति सी भाई। तोहि पतीप्रातिणि कानि भाई॥
तुम रघपति को काजु सवारो। सका को गढ़ तुमि ही जारो॥
श्री रघुनाथु होइ तोहि सहाई। उति वचनि मुप ते उचिराइ॥
हनूमान दण्डोत कराए। जबि ओत मे यहि बचन सुनाए॥
हे पून माता तमि होइ सहाई। मो को होवति बसु अधिकाई॥
श्री रघिपति क कार्ज जाओ। तोहि किपा सिद्ध करि आओ।
ओति असीसे वचनु तिहि कीमा। मार्ईराम सुन पवन क सीमा १२०

जबि हनूमान अकास सिधायो। एक गिरि वधि महि प्रगटायो॥
पवन पुत्र सो वचनु उचारा। सुन हो पवन सुत कहा हमारा॥
तुमि हारे होवाग भाई। मम परि आम्यु सबहु भाई॥
तोहि पिता हमि सो असा कीना। जासि मने मपिवे पु स दीना॥
हमिरे पपि मपव कनि वारे। चाहित था हमि को बहु मारे॥
तोहि पिता हमि करी सहाई। ताहि प्रजोग छुटे हमि भाई॥
सुरपति से करि त ईहा आए। बधि मा अपुना आपु दुराए॥
अमरो अस्तु किया ऋपि पाही। बाल्मीक ऋपि बिधि पूराही॥
अस्यावर को पापु करायो। अपवे तिहि पंप कटिणि बिनु सायो॥
इहि बिधि हमि को देहु बताई। पूग ऋपि तुमि गदा गहाई॥
बाल्मीक हि अमरो अतु कीमा। जो कछु प्रश्न देवहु न कीमा॥

अस्यावर उडग बिनु सावहि।
पडि अकाम पिरि धरनि परि धावहि॥

पर्जा को बहुता दुग्व देवहि। मग को दपि बिदारहि सबहि॥
प्रजा अधिका पाहि पुरारी। हमि कोव न दीनो अति भारी॥

इहि अस्यावर हमहि दुग्पावहि।
ग्मि क हाय हमि बहु दुग्व पावहि॥

जबि अपव इहि बिधि गाल पाई। काय कीया मनि महि अधिकाई॥

इहि प्रजोग पग कटि डारे। सुण हो देवहु वीर हमारे ॥
मकस देवो की मर्मु कटि डारा। वाल्मीक जब दीयो वीचारा ॥
इस्थावर जबि वचन उचारे। पवन पुत्र तिहि दीयो धीधारे ॥
अवि तो मै काम को आवो। राम कार्ज कर्ने चितु लावो ॥
राम काजु जवि करके आवो।
तो तुमि परि आइ करि ठहिरावो ॥
फेरि मोई इस्थावर वानि। पवन पुत्र सुण हो चित मानी ॥
सोहि पिता का हमि सिर मारा। चाहति हमि तिहि भार उतारा ॥
पवन पुत्रु फिरि ताहि मग धायो। साइदास फिरि आगे धायो १४३

हनूमान आगे को धायो। कनक पुरी सो तिन चितु लायो ॥
छामा राकसी तब प्रगटाई। छामा राकसी बसु अधिकाई ॥
जो कोऊ गगन के मार्ग जाव। तिह परिवस्त धनि परि आवै ॥
ताहु परिवस्तु को वहि दव लेवै। गगन त्याग वहु धनि परेवै ॥
ताहि लेकरि भछन वहु करही। इहि वसु छामा राकसी धरिही ॥
हनूमानु मग गगनि को धायो। तिहि परि वस्तु छामा निर्पायो ॥
जतन करि तबहि दव्यो न जाई। हनूमान तिहि बलु अधिकाई ॥
हार परी विस्मकि ठहिरानी। गगनि ठौरि तिहि द्रिष्ट करानी ॥
देख्यो तिहि कपु उडियो जाई। देखि कपि को गगनि को धाई ॥
हनूमान जाइ सन्मुख होए। तांसो युद्ध कीयो अधिकाए ॥
हनूमान राकसी को मारा। ताहि मारि कूदयो अधिकारा ॥
लंका त्याग पलका माही। जाइ पर्‌यो कपु बलु वहुताही ॥
भयो मैं चकित कहा मै धायो। कनक पुरी पहुचिन ना पायो ॥
एक वनिता बुडी आसा देखी। नैन निहारि पवन तनु पेखी ॥
वनिता उपले कीए मिलाई। जतन करे वसु नाहि वसाई ॥
जो उपल्यां बेधा लेहु उठाई। उपले ले प्रहि को वहि जाई।
कहयो पुत्र इहि माहि उठावो। एति को ठौरि मो पहि धावो ॥
पवनपुत्र तब कहयो पुकारे। हे मय्या हमि भी है हारे ॥
मै आवनि लंका के माही। चकित पर्‌यो वसु माहि बसाही ॥
तब वनिता ने बचनु सुनायो। हे बनिचरि इहि विधि सकु आयो ॥

हनुमान सूक्ष्म वपु पाया। कूदि बदिन होइ बाहरि गया॥
अस्थावरु घसि गयो तहाहीं। जैसे धर्मी देह दिपाईं॥
बसुधा सों तवही रसि गया। हनुमान कूदनि चितु दया॥
तब उनि ने मुष वचनि उचिराए। धन्न मातिं जिन सुम से जाए॥
हे हनूमान मैं जोति सी भाई। तोहि पतीप्राविधि कानि भाई॥
सुम रघपति को काजु सवारो। मका को मडु सुमि ही बारो॥
श्री रघुनाथु होइ तोहि सहाई। जोति वचनि मुप ते उचिराइ॥
हनूमान डडौत कराए। अवि जोत ने यहि वचन सुनाए॥
हे पुत माता तमि होइ सहाई। मो को होवति वसु भधिकाई॥
श्री रघिपति के कार्ज जावो। तोहि किपा सिद्ध करि आवो।
जोति भघोरी भवनु तिहि कीमा। साँईदास सुत पवन क मीमा ११२

कवि हनुमान प्रकास सिधायो। एक गिरि दखि महि प्रगटायो॥
पवन पुत्र सो बचनु उचारा। सुन हो पवन सुत कहा हमारा॥
तुमि हार होवोगे भाई। मम परि भासमु लेवहु धाई॥
तोहि पिता हमि सो मला कीमा। जासि समे मधिके दु ख दीना॥
हमिरे पपि मघवे कटि डारे। चाहित था हमि को बहु मारे॥
तोहि पिता हमि करी सहाई। ताहि प्रजोग छ्पे हमि भाई॥
सुरपति से डरि ते ईहा भाए। बधि मो मधुना भापु दुराए॥
धमरो प्रस्नु किया ऋषि पाहीं। बाल्मीक ऋषि बिधि पूराहीं॥
भस्थावर को पापु करायो। मघवे तिहि पंप कटिनि चितु लायो॥
इहि बिधि हमि को देहु बताई। पूर्ण ऋषि तुमि सदा सहाई॥
बाल्मीक हि धमरो प्रतु दीना। जो कछु प्रस्न वेवहु न कीमा॥
भस्थावर उडणे चितु लावहि।
चढि भकास फिरि धरनि परि भावहि॥
पर्जा को बहुता दुःख देवहि। भन्न को वेपि बिडारहि सेवहि॥
प्रजा भधिका पाहि पुकारी। हमि को दु:ख दीनो भति भारी॥
इहि भस्थावर हमहि बंग्रावहि।
इमि क हाथ हमि बहु दुग्य पावहि॥
जबि मघव इहि बिधि सुग पाई। कोपु कीया मनि महि भधिकाई॥

श्री रामचंद लक्ष्मण भवि भावहि।
हे मति हीन यहु मुझे हतावहि।
तुमिरी औधि निकटि है भाई।
त मनि माहे क्या ठहिराई।
रावणु इहि सुण के उठि धाया।
चला चला वनिता पहि भाया।
मदोन्दरि को तिहि कह्यो सुणाई।
मै जानको सो इहि उचिराई।
तुमि बसिहो हमिरे ग्रहि माही।
किहु प्रजोग कछु तू पाही।
जा म इहि कह्यो प्रतु दीना।
ह रावण क्या मनि मह लीना।
भवि ही राम लछमनु ईहा भावहि।
सांईदास जोह तोहि हतावहि ॥१५५

मन्दोदरी रावन सो भाया। एकु सुप्ना निसि मै भी भाया॥
मानो रामचंद जो भाया। तुमिरा रघिपति मूडु मूडाया॥
मुपु कीचो स्यामु गर्भ परि धारा। लका मूटी तुमि को मारा॥
हे नृप मै इहि सुप्ना पायो। सोई तुमि को भाप सुणायो॥
जो भपुनी चाहे भलिभाई। एती त्याग देहि बुरिभाई॥
जानकी सहित सेइ उठि जावहि। धन लाग जा रामु मनावहि॥
नाहि ति तुमिरो होइ विनासा। तुमिरी पूरण होइ नि भासा॥
रावण सुण इहि बचनु उचारा। हे मदोदरी क्या हृद धारा॥
मै रघुपति लछमन को मारो। वस करि भपुने ताह प्रिहारो॥
क्या सुप्ना तू मोहि सुणावै। काहे इतिना भर्म भुलाव॥
तुमि बिनु रायो भपुनी ठौरा। मनि विस्वासु सुम सेहा मोरा॥
तिन को मै पल माहि बिडारो। सांईदास तिन को मैं मारो॥१५६

मंदान्दरी फिरि तामि सुणायो। हे रावण क्या भर्म भुलानो॥
तुमि पहि बहु कोई हमे न जाही। काहे एते भर्म भुलाही॥
जो कोई भारमे को प्रहारे। तो रघपति लछमन को मारे॥

सका पाछे रही अधिकाई। तुमि आइ पर पसका माही॥
अडे दूनि पग तहा जावा। किहि प्रजोग मन महि सुकचायो॥
तब हनुमान सुनी इहि बिधि बाना।
मनि बहु सुख होयो आनंदु माना॥
उपस बनिता को उठिवाए। साँईदास तिहि बमु अधिकाए १२४

अेठे ही हनूमान दूराए। तातकाल सका महि आए॥
कह्यो कौन ग्रहि बूझिनि आयो। जानकी पूछ कहां ते पाया॥
सूख्म रूपु कीयो हमूमाना। ग्रहि ग्रहि फिरि मुमाना॥
दूरति चल्यो सोक बनि आयो। जानकी को तहा आइ निर्पायो॥
राकसी पडी अधिक इहि पाही।
चतुरदिसा सीता ठहिराही।
मुप करि जानकी के पूछहि टोरहि।
ताको छोड तिना ही भोरहि।
जानकी को बहु कहै सुनाई। हे जानकी रावणु बलिकाई॥
रावण नृप का तुम संगु लबहु। तपसी को मनि ते तजि बेबहु॥
जानकी सेह कह्यो हृदे न आमें। ताका कह्या कछू नि जानें॥
रचिक बीत रावणु आयो। जानकी सौ तिनि आप सुणायो॥
हे जानकी हमिरे ग्रहि आवो। काहे को एता दुख पावा॥
मम ते नायक तुमें करावो। पटिराणी तुमि नामु रपावो॥
सुरें असुर हू हमि कन्या दीनी।
सेषनाग दुहति सहिति कोनी।
भैसाकि मोहि बल कपावहि।
दर्पमानि होइ सर्नी आवहि।
कहा रामु लदमणु तू आपहि।
राम लक्ष्मनु मया चित महि रापहि।
मेरो कह्यो मनि महि धरि सेवहु।
तौब कहू चित नाहि दुसेवहु।
जानकी रावण कह्यो सुणाई।
हे मति हीन कहा चित आई।

अगनि लगी रावण तन माही। लोचन तिहि देहि रक्त दिखाई॥
क्रोधु कीयो सुत बडो बुलायो। इंद्रजीत तिहि नामु बतायो॥
इंद्रजीत कौ तवि समझायो। हे सुत कपि बहु घातु करायो॥
तुमिरे बीर अधिक उनि मारे। असुर सैन के बहु परिहारे॥
तुमि जाइ करि तिहि बधिल्यावो। मेरा कह्यो मनि ठहिरावो॥
इंद्रजीति जवि आग्या पाई। सैन अधिक तिहि संग चलाई॥
पवन पुत्र बाधिनि पग दीए। बेग विलंम तिन मूल न कीए॥
इंद्रजीतु शोक वन को धाया। साँईदास तिहि वनि महि आया॥१२६

इंद्रजीत आइ युद्ध रचायो। पवन पुत्र तिहि सन हुलायो॥
इंद्रजीत ब्रह्म फांसी डारी। इंद्रजीत की बसु अधिकारी॥
पवन पुत्र को लीयो फसाई। बाधि लीयो कछु बसु न बसाई॥
बाधि ताहि रावण पहि ल्याहा।
रावण कौ तिहि धाण दिखाया।
इनि बंधर ने इहि कर्मु कीआ।
अति क्रोधु फिरि मनि महि लीआ।
नृप कह्यो बनचर को मारो। इमि कर्मु एहि कीआ प्रहारा॥
तबी बभीछन बचनु उचारा। हे नृप मनि माहे क्या धारा॥
अवि लगि दूत किने ना मारे। इहि तीक्षण बचन कहति अति भारे
तीक्षण बचन जु ना उचिराए। हे नृप तू बहु कहा कहाए॥
रावण तब कह्यो सुण भाई। इमि मेरी सना सकल हताई॥
तिहि प्रयोग मैं इसि कौ मारो। इसि बंधर को धनि पछारो॥
बिभीषण फिरि तिहि प्रभु दीना।
दूत सो बैरु किम हू नही कीना।
जो तुमि अबि इमि दूत कौ मारो।
करि विरोधु इसि कौ प्रहारो
जग महि तुमहि कलूपति होई। बहुरो दूत आवे नही कोई॥
बभीषणु कह्यो नृपु ना माने। जो इहि कहे क्रोधु हृदे याने॥
फिरि कह्यो बंधर को मारो। पकरि बंधर को धनि पछारो॥
जवि रावण एहि आग्या दीई। सकल सन न एही कोई॥

हनूमान प्रभिस तजि तसे पाया। करि जोरे भुप वचनु सुनाया॥
श्री रामचद्र लछमन जो पाए। तिहि संग सना है पधिकाए॥
मम तोहि पबरि लन पठायो। इहि प्रजोग ईहा मै मायो॥
जानकी कह्यो संदेसा कोई। रघपति कह्यो तुमि सोई॥
हनूमान मुद्रा करि सीमा। जानकी को तिन मे बहु दीमा॥
जानकी देष्या भधिक हिर्पाई। अंग अंग महि नाहि समाई॥
पवन पुत्र तब कह्यो सुनाई। मोहि भुष्या लायो है माई॥
मोहि पावनि को तुमि कछु दवो। चेम विलम मय्या कछु न करेवो॥
जानकी कह्यो मो पहि कछु माही। जो म नाहि देवो तुमि वाही॥
भमि मिर्‌मा फमु से करि पावो। उदर पूर्न तुमहि करावो॥
पवन पुत्र माम्या पवि पाई। बिदमूल से सेहि उठाई॥
मूम ऊपरि सापा तसे करही। फमु ताको गिरि धनि पु परिही॥
जो फमु सबे भरु पावे। पवन पुत्र इहि कमु करावे॥
सम विछ तिमि मूम मपारे। फस सभ उदिर की बिछ डारे॥
मसोका बनि पवन पुत्र उजारा। हे तानो सुण सेहु बीचारा॥
दम सहस्र मसुर तिहि माहि। सोका वन महि रहनि सदाही॥
पवि हनूमान इहि कमि कराए। सम ही मसुर तबे उठि धाए॥
पवन पुत्र सो युद्ध मचावा। जो मसु था पवन सभ ही सावा॥
पवन पुत्र बहु मभी बिडारे। दस सहस्र मसुर तिह मारे॥
त्रिजटा राकसो तजि दीमा। जास बिर्छ तसे जानकी बीमा॥
एक बिछ की छामन पछा। सुन मासमु वहा बहु सहपा॥
रावण ने इहि विधि सुग पाई। इसु बमर मायो भूमि रचाई॥
मोका बनि तिहि सकल उपारा। दम मास्स जोधा उमि मारा॥
मतछि सत तिहि दीए पठाई। तांमो युद्ध करो तुमि जाई॥
बहु सना तिन के सग कीई। रावण नृप ने इहि विधि कीई॥
सेना मे बहु युद्ध को धाए। पवन पुत्र जहा तहू हो धाए॥
पवन पुत्र तिहि सम्मुख हाग। पवन पुत्र बहु सभ ही षोए॥
रावण सेना मवर पठाई। हनूमान सम सैन हनाई॥
मपिन सहाए पवन पुत्र कीना। तब रावण मनि माहे लीना॥
इहि बनर बहु सुत माहि मारे। मर मोहि सैन भपिन प्रहारे॥

जो त्रिजटा सुन्यो बीचारा।
पवन पुत्र एहा चित धारा।
जिहि समे रावण बचन उचारे।
पवन पुत्र क्रोधु मन धारे।
मनि महि कह्यो जो असि इसि मारो।
असि ही इसि मति हीन प्रहारो।
फिरि कह्यो आगिआ नाही पाई।
बिनु आगिआ रघपति हन्यो न जाई।
सुण सुण विधि मनि महि ठहिराई।
तिहि सम बचनु न कोई उचिराई।
अवि रावणु गयो उठि ग्रहि माही।
राकसी रही जानकी पाही।
त्रिजटा सौ फुमि तिनहि सुणाया।
तिहि जानकी तजि सोबनि चितु लाया।
हनूमान रघपति नामु लीया।
उस्तित अधिक राम की कीया।
जानकी सिर ऊपरि करि पेख्या।
बनचरि को ब्रिग सौ उनि देख्या।
निर्ख्यो बनचर सिर तले कीया। मनि अंतर जानकी इहि लीया॥
असुर रूपु बहु धरि करि आवहि। नाना रूपु बहु करि दिखलावहि॥
हनूमान फिरि उस्तत कीनी। अधिक उस्तित रस्ना उचिरीनी॥
स्री रामचंद्र दसरथ सुत भाई। लछमण बीर तांके सग सहाई॥
बालि रूपु तिहि बनु अधिकाई। बीर भार्जा सु लई छिनाई॥
सुग्रीव सो मारि निकारा। बाली कपि को बलु अति भारा॥
स्री रघुपति जी चलि तहा आए। सुग्रीम सो बचनु कराए॥
बालि मारि बनिता स देवो। इहि मै कार्जु ताहि करेवो॥
रघुपति बाल को मार बिडारा। सुग्रीम परि किर्पा धारा।
कैतरंगा मयो राजु दीया। एहि कारणु थी रघपति कीया॥
जानकी बचनु सोऊो सुण काना। मुख ते बचनु तब ही उचिराना॥
जो कोई राम को नाम उचारे। प्रगटि होउ आउ आगे हमारे॥

रावण बनिता कहयो सुणाई । कहा बाति तै मुख उचिराई ॥
रघपति लछमन को ब्रह्म कीमा । कौनु बाति तै मनि महि लीमा ॥
ब्रह्म कहा योनि महि आवै । ब्रह्म कहा दुःख सुख को पावै ॥
ब्रह्म सीता को कहा कराए । ब्रह्म सदा आनंदु बहु पाए ॥
मंदोदरी ताकौं प्रभु दीना । हे मतिहीन कहा चित लीना ॥
जहा जहा कष्ट संतनि को होई । रूप धारि तहु प्रगटि पमोई ॥
भक्ति हेत करि दुःख सुख पावै । भक्ति हेति योनि भ्रमावै[1] ॥
मोहि कहा मन महि ठहिरावो । जानकी सहितल करि उठि धावो ॥
मनदी आइ करि मुखो उचारो । सांईदास तीगण न बिचारो ॥१२७

रावण ताहि कहा नहो माना । आपु कहा मनि महि ठहिराना ॥
त्रिजटा राकसी सेवक रामा । जानुकी पहि रहे इहि कामा ॥
तिन्ह उनि राकसी आप सुनायो । हे राकसीयो चित चितु लायो ॥
काहे जानुकी को दुःख देवो । कह प्रयोग इहि कामु करेवो ॥
मै इकु सुपनो निसि महि पायो । महि सुनहो कछू कह्यो न जायो ॥
तब सभ राकसी कह्यो पुकारा । सुपने को सभु कहो बीचारा ॥
त्रिजटा राकसी कहति सुनाई । सुण हो मै कहो हितु चितु लाई ॥
मानो एकु बनिचर आयो । तिहि असोक बनु सभ ही उपाड्या
कनकपुरी लोक तिम दग्धाई ॥
एहि स्वप्ना मैंने है पायो । सो मै तुम सो आखि सुणायो ॥
राकसी सभु जबि इहि सुणपायो । मांसु कटिए तै चितु उठायो ॥
मोह भई निद्रा बहु आई । सांईदास भ्रम माया छाई ॥१२८

हनूमान वृक्ष परि चरिया । सूक्ष्म रूपु अपुनो तिह करिया ॥
जो रावणु कहि करि उठि धाया ।
पौत्र पुत्र बहु भी सुण पाया ।

---

1 "ब्रह्म कहा योनि महि आवै" यहां से "भक्ति हेति योनि भ्रमावै" तक निराकार कभी साकार होता है, यह स्पष्ट किया गया है । वैसे बाबा सांईदास निराकार और साकार ईश्वर के दोनों रूपों को स्वीकृति देते हैं ।

1 इस छन्द की पूर्ति नहीं हुई है ।

अग्नि लगी रावण तन माही। लोचन तिहि देहि रक्त दिखाई॥
क्रोधु कीयो सुत वडो बुलायो। इद्रजीत तिह नामु वतायो॥
इद्रजीत को तवि समझायो। हे सुत कपि वहु घातु करायो॥
तुमिरे वीर अधिक उनि मारे। असुर सैन के वहु परिहारे॥
तुमि जाइ करि तिहि वधिल्यावो। मेरो कह्यो मनि ठह्रिरावो॥
इद्रिजीति जवि आग्या पाई। सैन अधिक तिहि सग चलाई॥
पवन पुत्र वाधिनि पग दीए। वेग विलम्ब तिन मूल न कीए॥
इद्रजीतु शोक वन को आया। साईदास तिहि वनि महि आया॥१५१

इद्रिजीत आइ युद्ध रचायो। पवन पुत्र तिहि सैन हतायो॥
इद्रिजीत ब्रह्म फांसी डारी। इद्रजीत को वलु अधिकारी॥
पवन पुत्र को लीयो फसाई। बाधि लीयो कछु वसु न वसाई॥
बाधि ताहि रावण पहि ल्याहा।
रावण को तिहि आण दिखाया।
इनि बंचर ने इहि कर्मु कीया।
अति क्रोधु फिरि मनि महि लीया।
नृप कह्यो वनचर को मारो। इनि कर्मु एहि कीया प्रहारो॥
तवी वभीछन वचनु उचारा। हे नृप मनि माहे क्या धारा॥
अवि लगि दूत किनै ना मारे। इहि तीक्षण बचन कहुतिघाति मारे
तीक्षण वचन जु ना उचिराए। हे नृप तूं वहु कहा कहाए॥
रावण तव कह्यो सुण भाई। इनि मेरी सैना सकल हताई॥
तिहि प्रजोग मै इसि कौ मारो। इसि बंचर को मनि पछारो॥
विभीछण फिरि तिहि प्रभु दीना।
दूत सौ वैर किन हू नही कीना।
जो तुमि अवि इसि दूत कौ मारो।
करि विरोधु इसि कौ प्रहारो
जग महि तुमहि कलुपति होई। वहुरो दूत आवै नही कोई॥
वभीछनु कह्यो नृपु ना माने। जो इहि कहे क्रोधु हृदे माने॥
फिरि कह्यो बचर को मारो। पकरि बचर को मनि पछारो॥
अवि रावण एहि आग्या दीई। सकल सन मे एही कीई॥

हनूमान व्रक्ष तजि तसे धाया। करि जोरे मुप वचनु सुनाया ॥
श्री रामचंद्र लछमन जी भाए। तिहि सग सना है अधिकाए ॥
मम तोहि पवरि सेन पठायो। इहि प्रजोग ईहा मै भ्रायो ॥
जानकी कह्यो सदेसा कोई। रघपति कह्यो तुमि सोई ॥
हनूमान मुद्रा करि सीमा। जानकी को तिन ने बहु दीमा ॥
जानकी देख्या अधिक हिर्पाई। अंग अंग महि नाहि समाई ॥
पवन पुत्र तब कह्यो सुणाई। मोहि पुष्या लागी है माई ॥
मोहि पावनि को तुमि कछु दवो। बेम बिलम मव्या कछु न करेवो ॥
जानकी कह्यो मो पहि कछ नाही। जो मै काढि देवो तुमि ताही ॥
धनि मिर्‌या फमु से करि पावो। उदर पूर्न तुमहि करावो ॥
पवन पुत्र भाग्या जवि पाई। व्रिछमूल से लेहि उठाई ॥
मूल ऊपरि साथा तसे करही। फमु ताको गिरि धनि जु परही ॥
जो फलु लेवे भख पावे। पवन पुत्र इहि कर्मु करावे ॥
सभ बिर्छ तिनि मूल मपारे। फल सभ उदिर की बिर्छ डारे ॥
असोका बनि पवन पुत्र उजारा। हे साधो सुण लेहु बीचारा ॥
दस सहस्र असुर तिहि माहि। सोका बन महि रहनि सदाही ॥
जवि हनूमान इहि कर्मि कराए। सभ ही असुर तबै उठि धाए ॥
पवन पुत्र सौ युध मचावो। जो बमु था पर्वो सभ ही सामो ॥
पवन पुत्र बहु सभी बिडारे। दस सहस्र असुर तिह मारे ॥
त्रिजटा राकसो तजि दीमा। जास बिर्छ तले जानकी थीमा ॥
एक बिर्छ को हाथन गह्या। सुख भावमु उहा बहु लह्या ॥
रावण ने इहि बिधि सुए पाई। इकु बानर भायो धूमि रचाई ॥
सोका बनि तिहि सकल उपारा। दस सहस्र जोधा उनि मारा ॥
केतकि सत तिहि दीए पठाई। तांसो युध करो तुमि जाई ॥
बहु सेना तिम के सग दीई। रावण नृप ने इहि बिधि कीई ॥
सैना से बहु युद्ध को धाए। पवन पुत्र बहा तहू ही भ्राए ॥
पवन पुत्र तिहि सनमुप होए। पवन पुत्र बह सभ ही पोए ॥
रावण सैना भवर पठाई। हनूमान सभ सैन हताई ॥
अधिक सहाय पवन पुत्र कीना। तब रावण मनि माहि ली[illegible]ना ॥
इहि बानर बहु सुत मोहि मारे। भर मोहि सैन अधिक प्रहारे ॥

अग्नि लगी रावण तन माही। लोचन तिहि देहि रक्त दिखाई॥
क्रोधु कीयो सुत बडो बुलायो। इंद्रजीत तिह नामु बतायो॥
इंद्रजीत को तबि समझायो। हे सुत कपि बहु घातु करायो॥
सुमिरे बीर अधिक उनि मार। असुर सैन के बहु परिहार॥
तुमि जाइ करि तिहि बधिस्यावो। मरो कह्यो मनि ठहिरावो॥
इंद्रिजीति अबि आग्या पाई। सैन अधिक तिहि संग चलाई॥
पवन पुत्र बाधिनि पग दीए। बेग बिलम छिन मूल न कीए॥
इंद्रजीतु लोक बन को धाया। सांईदास तिहि बनि महि आया॥१२६

इंद्रिजीत आइ युद्ध रचायो। पवन पुत्र तिहि मन हुलायो॥
इंद्रिजीत ब्रह्म फांसी डारी। इंद्रजीत को बलु अधिकारी॥
पवन पुत्र को लीयो फसाई। बाधि लीयो कछु बसु न बसाई॥
बाधि ताहि रावण पहि ल्याहा।
रावण को तिहि प्राण दियाया।

इसि बानर ने इहि कर्मु कीमा।
अति क्रोधु फिरि मनि महि लीआ।

नृप कह्यो बनचर को मारो। इसि कर्मु एहि कीआ प्रहारा॥
तबी बभीखन बचनु उचारा। हे नृप मनि माहे क्या धारा॥
अबि लगि दूत किने ना मारे। इहि तीक्षण बचन कहति अति मार
तीक्षण बचम पु मा उचिराए। हे नृप तू बहु कहा कहाए॥
रावण तब कह्यो सुण भाई। इसि मेरी सैना अधिक हनाई॥
तिहि प्रयोग मे इसि को मारो। इसि बानर को अनि पछारा॥
बिभीखण फिरि तिहि अतु कीना।
दूत सौ बैर किम हू नही कीना।

जो तुमि अबि इसि दूत को मारा।
करि बिरोधु नृप सो प्रहारो

जग महि तुमहि कलुपति होई। बहुरो दूत चल नही काई॥
बभीखणु कह्यो नृपु ना माने। जो इहि बद बात दूत मान॥
फिरि कह्यो बानर को मारो। पकरि बानर को अनि पछारा
जबि रावण एहि आग्या दीई। सकल मन न एसो कर्म

हनूमान को मारने लागे। मार थके तिहि बसु सम त्यागे॥
पवन पुत्र कछु आने नाही। ताको वर शिव का अधिकाही॥
ना तूं ब्रह्म शस्त्र ते मरही। ना शिव शस्त्र घाउ तोहि करहा॥
कर प्रजोग करि दुःख न पाव। ताके मनि महि कछु ना भावे॥
एक मारि क बसु हिराई। ताहि मुआ महि बसु रहे नाहा॥
मारि मारि करि सम ही हिराए। साईंदास गोविंद जसु गाए॥१६

पवन पुत्र तब वचन सुनायो। तोहि माहि मारने को चितु लायो॥
जो तू जतन करे मरों नाही। सोच बीचार देखु मन माही॥
अवि उपिचार म तोहि बतावों। तिहि प्रजोग प्रान तजि जावों॥
जवि लगि जोहु होवे मरे भाई। तब लगि मोको हन्यो न जाई॥
तब रावण मुख वचन उचारा। हे बंतर तुमि देहु बीचारा॥
कौन कीए तूं प्रान तजाए। किहु बिधि करि तूं मृत्यु को पाए
सो बिधि मोको देहु बताई। जो नि कहै तुझ राम दुहाई॥
तब हनूमान ने कह्यो पुकारा। तोहि प्रतज्ञा मोहि कीनी भारा॥
श्री रामचन्द्र को नामु सुणायो। एहि प्रतिज्ञा मोहि बतायो॥
अबि मैं तुमि सो कहो सुनाई। सुण हो चितु लगाइ मेरे भाई॥
रई भाण इकत्रि करहो। तेल सम ताको तुमि भरहो॥
मोहि पूछ संती लपटाओ। पाछे ताको अग्नि लगाओ॥
इहि बिधि कीए प्राण तजावौ। उौर कीए किते दुःखु न पावौ॥
इहि बिधि अबि मैं कह्यो सुणाई।
जबि तुमि मम कह्यो राम दुहाई।
इहि उपिचार कहु कौयु बताई।
साईंदास जो कह्यो सुणाई॥१६१

रावण वचन धार सुम लीनी। पवन पुत्र जो आज्ञा कीनी॥
रई अधिक तिहि सीई लगाई। ताते तेलु लीयो अधिकाई॥
ताहि पूछ सौ क लिपिटाया। तेलु अधिक तांमो उनि पाया॥
पावक म करि तासि लगाई। अति भड़िकाऊ भयो तबि भाई॥
सीता का राकसी इकि माया। बंतर जलायो मूप इहि भाया॥
सीता वन्हि भराय के कहुधा। कपि रापो लंका गढु दहुधा॥

पवन पुत्र सूक्ष्म वपु कीग्रा । फांसी त्याग कूदनि चितु लीग्रा ।।
कूद भरयो रावण मग्रायण । मदरि सकले साह जलायरण ।।
पवन को तब ही लीओ बुलाई । हे मोहि पित अवि होउ सहाई ।।
जिहि जिहि मदर महि म जावौ । तासि मदिर्मा अग्नि लगावौ ।।
तुमि तहा आइ प्रवेसु करावौ । वहु मंदर तुमि बहुसु जलावौ ।।
पवन भाइ तब भयो सहाई । कनक पुरी सकली दग्धाई ।।
भई स्याम कंचन ते वाही । त्रिग सौ बहुतो वेप न जाई ।।
वठकि नृप की कुम कर्नि द्वारे । इद्रजीत गृह त्र नही जारे ।।
सुरो जोरि करि बचनु उचारा । वाल्मीकि सुणु प्रान प्रधारा ।।
कनक निकटि अवि पावक प्रावे । कंचन रूपु प्रधिक दिपसावै ।।
स्याम वर्नु नही प्रभ होवे । एहि सचरु मनि महि वहु होवे ।।
वाल्मीक तब कह्यो सुनाई । भलो प्रस्नु कहो मेरे भाई ।।
बृहस्पति सुतु रावण गृह माही । फांसी परा दर्पे प्रधिकाही ।।
पवन पुत्र तिहि लीओ छुडाई । बृहस्पति सुत तब दृष्टि चलाई ।।
ताहि दृष्टि करि स्याम ही होई । हे देवो औरु दू्स न कोई ।।
अवि देवो मे इहि प्रतु पायो । सचरु मन का सकल हिरायो ।।
पवन पुत्र तिहि लक जराई । पावक लागी पूछ को माई ।।
कूघो पनि लगा दधि माही । पति पति दधि कह्यो सुनाई ।।
पवन पुत्र तुमि तटि ठहिरावो । मोह जल तुमि कीहु जलावो ।।
मै तुमरी अग्नि लेओ हिराई । तुमि परि पावौ सीतल ताई ।।
पवन पुत्र दधि तटि ठहिरायो । दधि मे नीरु अधिक उमिडायो ।।
पवन पुत्र अग्नि लीई बुझाई । ताकौ उमिडी सीतलताई ।।
रविक मीन सौ भयो प्रवेसा । अग्नि दधो तनु ताको ग्रैसा ।।
तब ही पूछ मीन लमिताई । अग्नि तापु लागो तिहि आई ।।
रावण तब ममि बहु पछुताना । कहा होइ अवि समा विहाना ।।
प्रति विस्वासु हृदे महि धरयो । साँईनास सचरु चित धरयो ।।१६२

पवन पुत्र मनि सोयो बीचारी । मतु म जानकी भी म जारी ।।
कूदि परयो जानकी पहि आयो । सम ब्रितातु तिहि आप सुणायो ।।
ऐसे करि लंका मै जारी । सकल सैन रावण की मारी ।।

रघिपति की प्राशा नही पाई। बिनु प्राशा तुमि परयो न जाई॥
मोहि प्राशा देसो मैं जावो। रघिपति जाइ पवरि सुनावो॥
जानकी तब ही बचनु उचारा। देहु संदेसा राम हमारा॥
हे प्रभ निसबासरि तोहि ध्याना।
तीन माहि कछु मनि महि माना।
तो बिनु हमिरो कोउ न सहाई।
हे प्रभ पूर्न ब्रह्म तांई।
एक समै प्रभ तुमि मोहि ताइ। निकटि आपुने सीया बुलाई॥
मोको अपुनी उोरि बहायो। हे रघुपति इहि कमु कमायो॥
काग महाबली एसे आयो। मोहि पगि मांभ चुंचि लगायो॥
रक्त अधिक निकसी पग मेरे। तब बहि ढ्रिग परी प्रभ तेरे॥
तब तै मोसों बचनु सुनायो। हे जानकी इहि मोहि बतायो॥
तुमि पग रक्तु कहा से लाई। इहि बिधि मोको देहु बताई॥
तब मै तुमि सौ बचनु उचारा। काग चुंच लागी अति भारा॥
ताहि चुंच करि रक्त चलाई। मैं तुमि सौ प्रभ कहयो सुणाई॥
तब तुमि धनु बाणकरिलीमा। ताहि तिह बही नाम हतु कीमा॥
कागु भाग भयो ब्रह्म पाहै। मतु मोहि रक्षा एहु कराहै॥
ब्रह्म तिहि रक्षा ना कोई। काम को प्रमि बिवमा दीई॥
बहुरो शिवपुरी महिचलि आयो। शिव भी ताको नाहि रखायो॥
त्रैलोक कागु भाग कराही। फिरि आयो प्रभ तुम सर्नाई॥
असे जामो तस राखा। हे प्रभ पूर्न अपुने भाखो॥
तब तुमि कहयो काग के ताई। मोहि बाणु अन्यथा ना जाई॥
एकु द्रिगप्रभ तुमि ताहि दिखायो। एकु बाण द्रिग ताहि गवायो॥
कागको एको द्रिगु प्रभु राखा। जीउ दीयो ऐसो उनि भाखा॥
ह प्रभ छोहु ममा चित ल्यावो। पातकी को तुमि ना बिसरावो॥
एकु बर्ष प्रतज्ञा कोई। रावण सो प्रभ इहि मनि लीई॥
तिहि महि अष्टि मास प्रभ गए। चतुर मास प्रभ पाछे रहे॥
जा चतुर्मास को तुमि नही आवो। जानकी प्राण घातु करावो॥
हे हनूमान संदेसा दीजै। एहि कामु तुमि हमिरो कीजै॥
पवन पुत्र आयो जानकी तांई। हे जानकी चिन्त नाहि इसाई॥

श्री रघपति तबिही चलि भाव। रावरण को प्रभु हतनु कराव ॥
सदा जो बोले रघिपति राम। साईंदास पूर्ण होइ काम १६१

पवन पुत्र पग सीसु धरायो। जानकी ते माज्ञा तिन पायो ॥
कूद पर्‍यो दधि के तटि भायो। जहा भंगदु कपो सहिति ठहिरायो ॥
पवन पुत्र जबि इनो निर्पायो। भानदमान होइ बचनु सुनायो ॥
है हनूमान खबरि ले भाए। लंकपुरी प्रिंग सौ निर्पाए ॥
सकल बाति तिह ताहि सुणाई। पवन पुत्र छिनु बिलमु न लाई ॥
सभ ही बनचरि तब उठि धाए। सुग्रीम के मधिबन महि भाए ॥
त्रिसो सो फल रहे उमर्झाई। नाना फल लागे मेरे भाई ॥
हनूमान कह्यो ले पावो। सुग्रीम राजा ते नाहि सकावो ॥
सभि बनचरि पुरण फल ले पाए। सुग्रीम सना मे निर्पाए ॥
सना जाइ कह्यो नृप ताई। पवन पुत्र पर्‍यो बनि माही ॥
बचरि मध्नि सहति तिहि लीए। बनि फल पाएं को चितु दीए ॥
सुग्रीम कह्यो पुन तिन ताई। कछु न कहो समिझो मनि माई ॥
जानकी की यह खबरि ल्याए। तब मनिमय होइ तिन फल पाए ॥
पवम पुत्र बंधरि संग लीए। श्री रघपति भागे पग दीए ॥
भाइ डडौत करी नृप ताई। रघपति तब इस्नानु कराई ॥

बचनु कीतो जिहि समे तुमि भावो।
जो महि भग होइ तुमि पावो ॥

करि इस्नानु भ ग कछु नाही। बच्च मुंग प्रभ कीयो मंझाही ॥
सुग लाहि हनूमान को दीनी। इहि कार्णु प्रभ तांपरि कीनी ॥
लछमन को तब बचन सुनायो। श्री रघपत ने ताहि बतायो ॥
तीन परा करी जाइ पकावो। दोने ते इकि बडो करावौ ॥
हनूमान को सहित पसावहि। भपुनो बधु बीर पूर करावहि ॥
लछमन मे ऐसे ही कीना। जो भाज्ञा रघपति मे दीना ॥
पवन सा कह्या सुनाई। तुम सौ बचनु हमरो भाई ॥
भावो भोजनु संग हमि पावो। पवन पुत्र छिन बिलमु न लावो ॥
हनूमानु भागे जो भाया। तीन पिरा करी तिन निर्पाया ॥
दोनो पहि इकि है अधिकाई। चंचल बुधि हनूमानि चित भाई ॥

बही पिराकरी सई उठाई। कह्यो सुरणो प्रम रघिपति राई ॥
मैं बिना रह्यो इसि को पावौ। तुमिरे सहित ता माजनु ना पावौ
रघपति सछमन मोजनु पायो। पायो मोमनु उन्र भरायो ॥
त्याग रसोई बाहिरि भाए। साईदास तिहि परि बनि आए १६४

पवन पुत्र को सीयो बुलाई। आमकी पवरि देहु मेरे माई ॥
जो कछु आमकी ताहि सुनायो। रघिपति को हनुमान बतायो ॥
रघिपति अवि सम बिधि सुरण पाई। सुग्रीम को सीया बुलाई ॥
कह्यो चलो लका को आवहि। रावरण असुर को माइ हनावहि ॥
सुग्रीम तब बचनु उचारा। हे रघिपति भलो सीयो बीचारा ॥
रघिपति हनूमान कांधे चरिमा। सछमन चधिमुख ऊपरि चढिमा ॥
सुग्रीम भी ऐसै कीमा। कनक पुरी का तिहि मगु सीमा ॥
सना अधिक कछु गरणी न जावै। वेद कतेब तिहि म त न पावै ॥
चलित चलित दधि के तटि भाए। निर्यो असु दधिबहु अधिकाए ॥
दो दिन रघपति तटि ठहिराए। मागे मग पगु धनि न पाए ॥
धनिपु बारण करि माहे सीमा। दधि को चाहिति प्रभु हनि सीमा
दधि मूर्ति होइ भागे भाए। बानि मानि करि तिम भागे ठहिराए
हे प्रभ मै तुमिरी सर्नाई। तौ विनु हमिरो कौन सहाई ॥
रघपति कह्यो दो दिन हमि होमो। तुमि तटि परि हमि माइ चसोयो ॥
तूं हमि पहि काहे न भायो। तै मनि महि अभिमानु करायो ॥
तब ही दधि मे बिनती ठानी। हे कौसापति सारग पानी ॥
मै अभिमानु हुबे ना धर्यो। हे प्रभ कछु ऊौगणु ना कर्यो ॥
नृप सगर तात तोहि मोहि कहायो। मो सो ऐसो बचनु सुनायो ॥
तोहि उदरि को पार कराही।
इसि ओरि ते उसि ओरि न चाही।
इहि प्रयोग मै रह्यो बिस्माई।
हे रघपति कछु कह्यो न जाई।
सगर बचनु कैसे तजि देवौ। तोहि कहा कैसे न करेवौ।
इहि बोइ बिधि मोह बनि भति भारी।
कहा करो तुमि पाहि बीचारी।

रघपति फिरि करि बचनु उचारा। अन्यथा न जाई बानु हमारा॥
फिरि कर बधि रघपति सौ भाषा। हे कौशलपति तुमि भलो भाषा॥
दमरु दतु महा बसिकारी। तांकी भुज महि बसु बहु भारी॥
अपुन सिरि परि नग्र बसाए। इहि कमु प्रभ ओहु कराए॥
जास ओरि बहु जाइ गिरावै। तिस नग्री कौ नामु कराए॥
है प्रभ बाणु ताहि कौ मारौ। मो परि प्रभ किर्प इहि धारा॥
तब प्रभ बाण छाडि करि दीआ। तस सर असुर ताईं हनि लीआ॥
रघपति बानु अन्यथा न जाव। जिस कहे तिस मारि चुकावे॥
प्रभ ने कह्यो फिरि दधि के ताईं। ऐसौ मागु तिहि हमि जाहीं॥
मोहि सिरि कार्जु है अति भारी। को मगु दस्स मन बीचारी॥
वेग बिल्म तुमि भूस नि लावो। तात्काल कोई राहु बतायो॥
म अवि कह्यो सुमिरे ताईं। सोचि वीचारु देपि मनि माही॥
ऐसो मार्गु हमहि बतावो। तात्काल हमि पारि लघावो॥
अवि कह्यो म तोहि पुकारी। साईंआस सहु मनि धारी १६५

दधिरूप कह्यो सुणो रघुराई। कौनु मार्गु मै दउ बताई॥
एक प्रतज्ञा मैं प्रभ करहो। सा प्रतज्ञा मनि महि भरयो॥
यो रघपति कहा कहो सुणाई। कौनु प्रतज्ञा करहो भाई॥
दधि रूप तब ही बचनु उचारा। हे रघिनदन प्राण अधारा॥
हे प्रभ गिरि अधिक अणिआवो। इसि ही ठौरि तुमि सेतु बधावो॥
मैं इनि के तल प्रान लगावो। तिहि गिरि को नाहि रुड़ावा॥
जल माहे तिहि असिनि न देवो। इहि प्रतज्ञा म करि लवो॥
रघपति कहा बहु भलो भाषा। हे दधि रूप नीका त भाषा॥
बहुरो दधि रूप कह्यो सुनाई। हे रघपति सर्वति सुपदाई॥
इहि नील नल भलो सेत उसरावै। विस्वकर्मा के सुत जु कहाव॥
हे प्रभ इनि कौ आज्ञा देवो। इस ही परि प्रभ किपा करवो॥
गिरि कपि ठौरि ल्याव उठाई। नील नल अधिक सतु जु समाई॥
यो रघपति हनूमानु बुलाया। तासो सब बितांतु सुनाया॥
पवन पुत्र कह्यो कया कीज। कसे पग आगे को दीजै॥
आप मूत्र जल बिन न्पिावै। किउ करि मना तांधा पावै॥

पवन पुत्र कह्‌या सुण रघुराई। जो आज्ञा होइ तो कह्‌यो सुभाई॥
ताहि क्रिपा सम सैन संभाओ। ताहि क्रिपा इहि कर्म कमाओ॥
अवि हनूमान बचन उचिराओ। रघिपति ठांको बहुर्सुणायो॥
कैसे करि तूं पार लगावहि। सभ सैना को तीर पढावहि॥
पवन पुत्र तब कह्‌यो पुकारी। हे रघपति मैं इहि मनि धारी॥
सिरइसि तटि पगइसि तटि रायो। तोहि क्रिपा सों इसि विधि भायो॥
जब रघपति इहि विधि सुण पाई। कहा ताकुतुमि ते होइ भाई॥
सुण हो बाति कह्‌यो इकु मेरी। पवन पुत्र चंचल मति तेरी॥
जबि सैना तुमि ऊपरि आवै। मतु उठि डूबै सकल डुबावै॥
इहि प्रजोग सचर मनि करहो। इहि सचरु मै मनि महि धरहो॥
जो म कहो सोई तुमि करहो। ओही बाति हृदे महि धरहो॥
पवन पुत्र तब बिनती ठानी। हे पूर्न पद सारग पानी॥
जो आज्ञा तुमिरो प्रभ होई। हुमि चित धार करहि प्रभ सोई॥
रघिपति कह्‌यो गिरि लै ले आओ। आण करि तुमि सेतु बंधाओ॥
तिहि करि सैना पारि उतारहि। रावण को तब जाइ सहारहि॥
पवन पुत्र मन महि धरि लीनी। जो आग्या रघिपति ने कीनी॥
महाबली बधरि से भाया।
गिरि अधिक तिहि धाइ उठाया।
गिरि फुकि करि दधि के तटि आने।
सेत बंधावनि को चितु माने।
गिरि लीए न दधि ठहिराए।
जसु जोरा करि सकल रहाए।
श्री रघुपति दधि रूप सो भाया॥
हे दधिरूप कहा तै भाज्ञा।
गिरि टिके नाही जसु रहाए।
कैस गिरि जल परि ठहिराए।
तब दधिरूप कह्‌यो रघुराए।
मै तुमि पहि को गिरि टिकाए।
मोहि आज्ञा दैवो मै जावौ।
कर दे गिरि को मै ठहिरावौ।

तां पहि राम नामु लिख सवो।
पाछे तुमि जल माहे देवो।
रघपति तांको आगा दीई।
जां दस रूपहि बेनती कीई।
दधि रूपु अपुन आसमि आया।
श्रीराम काज सेती चितु लायो।
पबरि गिरि अधिक ले आवहि।
राम नाम तस्य ताहि लिखावहि।
पाषाण ले दधि माहे डारहि।
सेतबधि पुल भयो सवारहि।
नितापत एही उसि कामा।
आगा दीनी पूर्न रामा।
जिउ जिउ पषाण आण टिकावहि।
मानो पखिन कीए जुड जावहि।
चौदा जोजन प्रथम दिन आया।
छत्री जोजन द्रिती दिन आया।
पचवन जोजन तीसर दिन कीआ।
दस जोजन चौथ हूआ कीआ।
दुइ तोर मूल जिउ रापा।
दस जाजन चतुसाथा आया।
सभ पुन जारि परावरि कामा।
जा आगा श्री रघपति दीनी।
तीस नमु साजनि पुलि कौ लागा।
ठौर बाति गजमी निन त्यागा।
श्री रघपति नामु बिनु बैं पारे।
साईनाम प्रभ गाहि उधार ॥१६६

श्रीरघपतिजविदहिस्यिा कामा। सुग्रु पाई विधि रावन मामा ॥
पाया रघपतु गेगु बंधायें। गेगु बांधि सभा पारि पाय ॥
राक्स झूठनु नव सीता चुराई। तांसौ रावरा बाति सुनाई।

हे कोई तिन के सम्मुख आवै। युद्ध करै तांको बधि ल्यावै॥
महीरावण तब बचन उचारे। हे बम आवो तत्कारे॥
मैं दोनों को बधि से आवौ। एहि कामु नृप मैं करि आवौ॥
रावण कह्यो भ न मेरे भाई। भली भांति मुप ते उचिराई॥
एहि कामु मेरो करि आवो॥
मही रावण विधि सुण प्रहि आया।
रावण को कह्यो मनि ठहिराया।
कह्यो कौण समे मैं आवो।
आसि समे मैं उनि को पावो।
एही तिनि मनि महि ठहिरायो।
मनि महि सोच समा म सिधायो।
निस समे दोनों सैनु कराही।
साईंदास तहा जाइ फिराही॥१६७

मिस भई मही रावणु उठि धाया। चला चला दधि के तटि आया॥
बंचर अधिक तहा नैन निहारे। सबस मन भीठो तत्कारे॥
कवन ठौरि मैं उनि को पावौ। कित बिधि मैं तिन को ले जावौ॥
हनूमान को नैम निर्धायो। देख्यो उसि मनि महि सुकचायो॥
बंचर अधिक फिर्त रपिवारे। सूक्षम रूप मही रावण धारे॥
जो कासू की द्रिष्ट न भावै। हेरि हेरि भागे जावै॥
हेरि हेरि उहू ही आयो। रच मस सैनु जिहि ठवर करायो॥
सोए परे विहि पास न कोइ। तिह समे बाको राया को होई॥
मही रावण दीर्घ वपु धारा। रच सम को बध्या तत्कारा॥
जब रच सस दोई लीए दुराई। अधिक तिमस भयो मेरे भाई॥
दोनों को लेकरि उठि धाया। अपुने नग्र को मार्गु पाया॥
मग महि राकस अधिक बहाए। पाषाण राये अति अधिकाए॥
मनु कोई इति मार्ग पगु धारे। राकस तांको उचरि बिडारे॥
पाषाण मग महि इव ठहिराए। जो मार्ग साऊ मगु नही पाए॥
इहि बिधि करि अपुने ग्रहि आया। महीरावण इहि कर्मु कमाया॥
रच ससि बनिता को देपाए। तिहि बनिता मुप बचन सुमाए

हे निदया तोहि दया नि आई। बालक तोहि वधि आने जाई॥
असे सुंदर को दुख देवहि। एहि कम् कहु कौनु करेवहि॥
वनिता अधिक कीयो अधिकारा। हे निदय कहा चित धारा॥
अही रावण तब वचन उचारे। हे वनिता मैं इहि मन धारे॥
इनि का रूपु तू देखि सुभाइ। तौ मोसो इहि वाति सुनाइ॥
फिरि कह्यो वनिता तिहि ताई। इसि को रूपु तू जानहि नाही॥
पूर्ण ब्रह्म लीयो अवतारा। भक्ति हेत करि इहि वपु धारा॥
भला करे कह्यो मोह माने। साईदास मनि अवरु न आने॥१६८

अहीरावण फिरि वचनु उचारा। हे वनिता मुख कहा पुकारा॥
पूरण ब्रह्म तू इसि को आखहि। असी वाति तू मुख ते भाखेहि॥
पूर्न ब्रह्म फासी नही फासे। पूरण ब्रह्म को दुःख न ग्रासे॥
पूरण ब्रह्म किसे हत्या न आई। पून ब्रह्म सभ माहि स्माई॥
देखो म इनि को हनि लेवौ। पूर्न ब्रह्म तुझै करि दिखलेवौ॥
फिरि वनिता तिहि वचन उचारे। हे मतिमूढि कहा चित धारे॥
तोहि कहा बलु इन्हि हति सवै। काहू अभिमानु तू हृदे करेसै॥
इनि स्मसर तू कहा कहावहि। हे मति हीन क्या चितु डुलावहि॥
सुमिरी जौध निकटि है आई।
तौ सुनि इहि विधि मन ठहिराई।

मोहि कह्या माने तू नाही।
अबि ही देखु बहुत दुख पाही।

अहीरावण तिहि कह्या न माने।
ताहि कह्या हृदे महि नही आने।

दोनों बीर को तिन दुख दीआ।
साईदास तिहि लीयो जीआ॥१६९

पवन पुत्र के मन महि आई। राम लछमन को देखो जाई॥
कहा भयो बाहरि नही आए। रवि चढयो सस गयो दुराई॥
चलति चलति जबि अंतर आया। रवि सस दोई ना निरखायो॥
रवि ससि गयो दुराइ मेरे भाई। तिमर भयो कछु द्रिष्ट न आई॥
मैन महि अधिक भयो बिस्वासा। भूलि गयो तिहि भोग बिलासा॥

पवन पुत्र बहु रुदनु करायो। पक्ति रह्यो मनि महि बिस्मायो॥
जबि इहि सबर मानु पसोयो। राम बियोग ग्रधिक बहु रोयो॥
बसुधा गौ रूपु धारि करि ग्राई। पवन पुत्र सौ कह्यो सुनाई॥
हे हनूमान किउ रुदनु करावै। निति प्रयोग मनि महि बिस्मावै॥
इहि बिधि मोसौ कह्यो सुणाई। पवन पुत्र तुमै राम दुहाई॥
पवन पुत्र सब बचन उचारे। हे मय्या सबद प्रति भारे॥
राम लपन किने पडे दुराई। ताकी सुधि मैं मूस नि पाई॥
गौ कह्यो इहि बिधि सुकचायो। इहि प्रयोग तुमि रुदनु करायो॥
मैं इहि तुमि कौ देयो बताई। रुदमु न करह्यो मेरे भाई॥
पवन पुत्र तब बिनती ठानी। कहु किन पडे हैं सारम पानी॥
गौ कह्यो महीरावण भायो। महीरावण इहि कर्मु कमायो॥
लपन राम तिम पडे दुराई। इहि बिधि म तुमै दीई बताई॥
पवन पुत्र जबि इहि सुण पायो। सांईदास रचिकि सुपु पायो॥१७०

पवन पुत्र तिहि बलु ग्रधिकाई। जबि ते इहि बिधि सुख करि पाई
मुनति बाति तब ही उठि धामा। महीरावण मारन को धामा॥
हनूमान जबि मग महि म्राए। राकस ग्रधिक ताहि निर्माए॥
राकसो सों बहु युद्ध करायो। सम ही राकस ताहि हुतायो॥
तब ही गवनु ग्रागे को कीने। प्रति पषाण निर्य करि लीने॥
पषाण उठाई लीए तबकारा। ले पषाण मग से म्रोडि डारा॥
एकु पषाणु ताहि पुछ परयो। ताहि पुछ रचिक नोक गिरयो॥
इहि बिधि करि ग्रागे को धायो। बसा बसा मग्री महि ग्रायो॥
सूदम रूप तब ही करि लीना। किसहू ब्रिग सौ निर्य म लीना॥
नग्री महि सम बाति बतावहि। राम लछन को मासु उपराहि॥
महीरावण बोई बंधि माने। तिहि मार्ग सो चितु ठहिराने॥
देवी भवनि तिहि रस्त चढावहि। तहू ठौर तिह आइ हुतावहि॥
हनूमान जबि इहि सुण पायो। देवी भवन महि चसि करि ग्रायो
पगु जाइ तिहि भूमि परि दीना। देवी मूर्त कौ तले कीना॥
ताहि ठौर ग्राप ठहिरायो। पवन पुत्र इहि कर्मु कमायो॥
महीरावण पर्जा बहु ग्राई। मिष्टान पान ले ताहि चढाइ॥

जो कछु कोऊ आगे ठहिरावै। पवन पुत्र सभि ही ले पावै।।
जो आए सभ ही बिल्मावै। अति मै चकित होइ चित भुलाए
आगे दवी कबहू न पायो। आजु कहा भयो अति बिस्मायो।।
अति बिस्माद रहे मनि माही। साईस्यास कछु कह्यो न जाही।।१७१

इहि बिधि महीरावण सुण पाई। मन महि एही भाण लगाई।।
देवी बसु आहिति मै दवौ। सुप्रसन्न तिस को करि सेवौ।।
श्री रघपति लछमन सग लीए। देवी भवन को तिन पग दीए।।
अति मिष्टनु तिहि सग चलाए। चलत चलिति देवी भवन आए।।
मिष्टान आए आगे चढाए। हनूमान बहु लेकरि पाए।।
फिरि रघपति लछमण को पढा कीना।
महीरावण मुप बचनु बचीना।
जो सुमिरो कोई बिस्त करावो।
नाहि ति पाछे ते पछुतावो।
तुमि को बल मै ईहा चढावो।
छिन पल बिल्मु कछु नाह करावो।
जो कोऊ प्रीत्म तिहि चित मानो।
महीरावण ऐसो बसु ठाना।
श्री रघपति मुप बचनु सुनायो।
हे महीरावण क्या चित ल्यायो।
पवन पुत्र पकरि जो पावै। सकल भग्र को मातु करावै।
पकर कवन को चित ल्यावहि। बार बार क्या मुप उचिरावहि।।
जबि श्री रघपति बचनु उचारा। हनूमान कीनी नमिस्कारा।।
नमिस्कार करके उठि धायो। महीरावण को तब ही गह्यायो।।
सभ जान्यो देवी उठि आई। देवी कोपु कीयो अधिकाई।।
सकली सैना तब उठि भागी। आपो अपुमे ग्रहि मग लागी।।
पवन पुत्र महीरावण गह्यो। महीरावण को ऐसे कह्यो।।
हे पातक तै क्या मनि माना। श्री रघिपति को क्या करि जाना।।
तसे कीजो वे मुनि उपिजाई। डार दीइ परी लका आई।।
रावण बनिता सो धु चलाई। भुजा पकरी बहुत दुही पाई।।

पवन पुत्र बहु रुदनु करायो। चकित रह्यो मनि महि बिस्मायो॥
अवि इहि सबर मानु पसोयो। राम म्योग अधिक बहु रोयो॥
बसुधा गौ रूपु धारि करि आई। पवन पुत्र सौ कह्यो सुनाई॥
हे हनूमान किउ रुदनु कराव। किति प्रजोग मनि महि बिस्मावे॥
इहि बिधि मोसौ कहो गुसाईं। पवन पुत्र सुभै राम दुहाई॥
पवन पुत्र सब बचन उचारे। हे मय्या संकट अति भारे॥
राम लपन किने पडे दुराई। तांकी सुधि मैं मूल नि पाई॥
गौ कह्यो इहि बिधि सुरुचावो। इहि प्रजोग तुमि रुदन करावो॥
म इहि तुमि कौ देयो बताई। रुदनु न करह्यो मेरे भाई॥
पवन पुत्र तब बिनती ठानी। कहु किन पडे है सारंग पानी॥
गौ कह्यो महीरावण आयो। महीरावण इहि कर्मु कमायो॥
लपन राम तिन पडे दुराई। इहि बिधि म सुर्भ दीई बताई॥
पवन पुत्र अबि इहि सुण पायो। सांईदास रंचिकि सुपु पायो॥१७०

पवन पुत्र तिहि बसु अधिकाई। अबि ते इहि बिधि सुण करि पाई
सुगति बाति तब ही उठि धाया। महीरावण मारण को आया॥
हनूमान जबि मग महि आए। राकस अधिक ताहि मिर्पाए॥
राकसो सों बहु युध करायो। सभ ही राकस ताहि हुतायो॥
तब ही गवनु आगै को कीने। अति पषाण निर्य करि सीने॥
पषाण उठाई दीए ततकारा। ले पषाण मग से आडि डारा॥
एकु पषाणु ताहि पूछ पर्यो। ताहि पूछ रचिक मोक गिर्यो॥
इहि बिधि करि आगे को आयो। बसा बसा नग्री महि आयो॥
सूखम रूप तब ही करि लीना। किसहू द्रिग सौ निर्ये न भीना॥
नग्री महि सभ बाति बसावहि। राम लछन को नामु उचराहि॥
महीरावण सोई बंधि आने। तिहि माए सो चितु ठहिराने॥
देवी भवनि तिहि रक्त बहावहि। तहू ठौर तिहि बाइ हुतावहि॥
हनूमान अबि इहि सुण पायो। देवी भवन महि बसि करि आयो
पगु जाइ तिहि मूर्ति परि दीना। देवी मूर्त को तब कीना॥
ताहि ठौर आप ठहिरायो। पवन पुत्र इहि कर्मु कमायो॥
महीरावण पर्जा बहु आई। मिष्टान पान ले ताहि चढाई॥

तूं रघपति सर कहा कहावै । तुमरो बलु तिह कहा बसावै ॥
एक प्रतञा तुमि सौ करहो । सो प्रतञा निश्चल धरहो ॥
मोह पग को जो तुमहि बलावो । बलु करि अपुना तिसे हलावो ॥
मैं जानो जानकी तुमि माही देवौ । एहि प्रतञा मनि धरि लेवौ ॥
तोहि जोर युद्ध आइ करहो । श्री रघपति सेती आइ लरहो ॥
जो तुमि से इहि होइ न आवै । तौ काहु को भर्म भुलावै ॥
रावण कह्यो भला ते आपा । इहि प्रतञा मैं मनि राषा ॥
अगद पदु धर्नी ठहिरायो । रावण पगु को टार्न आयो ॥
रघपति मनि महि लीयो बीचारी । महा कठनि बनी अति भारी ॥
मोह सेवक प्रतञा कीई कठनि प्रतञा मन महि लीई ॥
जो रावण तिस को पगु टारै । तौ मोह सेवकु प्राण को हारै ॥
मोसे इहि विधि सही न जाई । बसुधा सब प्रभ लई बुलाई ॥
बोल्ह बुलाइ लीयो सत्कार । गुननिधान प्रभु अपर अपार ॥
बाहु भीत बही उठि आया । जबि श्री रघपति ताहि बुलाया ॥
हे बाकस पगु धौल्ह को गहु तू । बलु अपुनो को तहा वहु तू ॥
धौल्ह गयो बसुधा के ताई । बसुधा पग अगद उर्भाई ॥
बल करि पग को पिसरण न देवौ । जो मैं कह्या मनि धरि लवौ ॥
इनि सभ ही ऐसा ही कीना । जो रघपति ने आज्ञा दीना ॥
रावणु आइ पग को करु लायौ । अगद तब तिहि आप सुणायो ॥
हे रावण इहि मति कुमारी । मोहि पगि आइ लगो सत्कारी ॥
मैं सेवकु रघपति को आयो । मोको पकर्यो धर्मि लगायो ॥
मोह सेवक सौ सर्मा आयो । रघपति रीस तू कहा करायो ॥
रावण बलु अपुनो वहु लायो । हारि पर्यो पगु नाहि हलायो ॥
रघपति तिहि पग परि क्या कीआ । त्रैलोक भारु आण दीआ ॥
रावण बस कहा ताहु हलावै । पगु न हलायो मन बिसमावै ॥
कह्यो कहा भयो मोहु बस ताई । हसि पग को टारि न पाई ॥
अति भै चकित मन महि बिस्मायो । साईदास बल नाहि बसाया १७६

अंगद मुकुट सिरि ते पकि लीआ । तजि ताको गवनु उनि कीआ ॥
तातकाल रघपति पहि आयो । मुकुटु कनक को आण दिखायो ॥

अंगद सो तिन भाष सुणाया। तूं सुतु बाल भयो प्रगटाया॥
तोहि तात को राम सिहारा। तुमि सौ बैर कीओ प्रति भारा॥
ताहि छोरि होइ युद्ध को भायो। भलो मरह ते पित का पायो॥
एसो पुत्र म हामो भसो है। गर्भ माह बह गल्या भलो है॥
जो पित करा वैर न लेई। पित बैर लेम बिनु न देई॥
हे अगद सुन हो मेरी बाता। बिधवा करी इमि तुमिरी माता॥
तुमि भावो हमिरी सर्नाई। तोहि पितु बैर लेवो मरे भाई॥
मेरी कह्यो सुण मनि लीजै। सांईदास कछु भवरम कीजै १७४

जबि रावरण इहि बचन सुमाए। भ गद ताहु कह्यो समझाए॥
हे मतिमूढ कहा चित आना। तै किउ रघुपति नाही जाना॥
मोहि पित मै ऐसे की कामा। भ्रहि रापी बधू की मामा॥
बधू को तिन मार निकारा। तब श्री रघुपति ता को मारा॥
मो को तुमि इहि बात सुणाओ। हमिरी सर्नाई तुमि आवो॥
भबि ही मै तुम ताई मारों। पकरि सीस ताहि भुजा उपारों॥
श्री रामचन्द्र आज्ञा नही पाई। इहि प्रजोग मोह कछु न बसाई॥
जो भपुनी भलि भाई लौडै। गर्बु गुमानु हृदे ते छोडै॥
जानकी संग से करि उठि भावो। श्री रघुपत की सर्नी आवो॥
नाहि त रघुपति सेतु बंधावो। हे रावण रघुपतु है आयो॥
किहु प्रयोग भपुनो कीउ देखै। किहु प्रयोग यु बसमत महि लेवै॥
मैं तुम को इहि भाष सुणायो। सांईदास रघुपति है भायो १७५

रावण क्रोधु कीयो उचिरायो। हे बबरि मनि क्या ठहिरायो॥
भबि ही तुमि को पकरि सहारों। रामचंद को सहिति ही मारों॥
मो सरि ताको बमु कहा होई। मो सरि दूजा भवर न कोई॥
मैं कैसे जानकी से जावो। रामचंद की सर्नि भावों॥
सिहु मृगु सर्नी कहा आवै। स्वानु जंपक ते कहा डरावै॥
बाजु पग ठ किउ करे भासा। मोह रावण को नाहि बिनासा॥
बिछ छाया ते कैसे भागे। सूरा रण कहु कैसे त्यागे॥
हे भगद क्या बचन सुनावै। महा क्रोधु काहे उपिजावै॥
भगद फिरि रावण सौ भाषा। हे मतिहीन क्या अंतर राषा॥

सूं रघपति सर कहा कहावै। तुमरो बसु तिह कहा बसावै ॥
एक प्रतज्ञा तुमि सौ करहो। सो प्रतज्ञा निश्चल धरहो ॥
मोह पग को जो तुमहि चलावो। वसु करि अपुना तिसे हलावो ॥
मैं जानो जानकी तुमि नाही देवौ। एहि प्रतज्ञा मनि धरि लेवौ ॥
तोहि ओर युद्ध जाइ करहो। श्री रघपति सेती जाइ लरहो ॥
जो तुमि से इहि होइ न भाव। तौ काहू को मर्म भुलावै ॥
रावण कहयो भला ते भाषा। इहि प्रतज्ञा मैं मनि राषा ॥
अगद पदु धर्मी ठहिरायो। रावण पगु को टार्न आयो ॥
रघपति मनि महि लीयो बीचारी। महा कठनि बनी अति भारी ॥
मोह सेवक प्रतज्ञा कीई कठनि प्रतज्ञा मन महि लीई ॥
जो रावण तिस को पगु टारै। तौ मोह सेवकु प्राण को हारै ॥
मोष इहि विधि सही न जाई। बसुधा तब प्रभ लई बुलाई ॥
बोल्हू बुलाइ लीयो तत्कारे। गुननिधान प्रभु अपर अपारे ॥
काकु भीत वही उठि आया। जवि श्री रघपति ताहि बुलाया ॥
हे काकस पगु धौल्हू को गहु तू। बलु अपुनो को तहा वहु तू ॥
धौल्ह गयो बसुधा के ताई। बसुधा पग अगद उर्माई ॥
बस करि पग को पिसण न देवौ। जो मै कहया मनि धरि लेवौ ॥
इनि सभ ही ऐसा ही कीना। जो रघपति ने आज्ञा दीना ॥
रावणु आइ पग कौ कर लायौ। अगद तब तिहि आप सुणायो ॥
हे रावण इहि मति कुमारी। मोहि पगि आइ लगो तत्कारी ॥
मैं सेवकु रघपति को आयो। मोका पकर्‌यो धनि लगायो ॥
मोह सेवक सौं लर्ना आयो। रघपति रीस सूं कहा करायो ॥
रावण बसु अपुनो वहु लायो। हारि पर्‌यो पगु नाहि हलायो ॥
रघपति तिहि पग परि क्या कीना। असोक भार आण दीना ॥
रावण बस कहा ताहू हलावै। पगु न हलायो मम बिसमावै ॥
कहयो कहा भयो मोह बस लाई। इसि पग को टार्नि न पाई ॥
अति भ चकित मन महि बिस्मायो। साईदास बस माहि बसायो १७६

अगद मुकुट सिरि ते पसि लीना। तजि ताको गवनु उनि कीना ॥
तत्काल रघपति पहि आयो। मुकुट कनक को आण न्पायो ॥

रावण भुजा न त्रिग सो देपी । सम विनासनु तिह मूल न पेषी ॥
बनिता सो तिन बचनु उचार्यो । जो तू कहति रघपति है आयो ॥
महीरावण सोई बधि माना । हे मदोदरी त मही जाना ॥
महीरावण तिन कौ मे मारा । महीरावण तिह भुजा उपारा ॥
फिरि मदोदर ताको प्रतु दीना । हे मतिमूढ कहा चित कीना ॥
एहि भुजा महीरावण देप लेवौ । पाछे कछु मनि और करेवौ ॥
जबि रावण मे भुजा निहारी । अति बिस्वासु सीता हुवे वारी ॥
मदोदरी फिरि ताहि सुनाया । हे रावण अबि कछु बिस्माया ॥
अबि ही जानकी को ले जायो । नृप महि त्रिण मे सर्नी आयो ॥
नाहि ति तुमि कौ भी एहि होई । महीरावण को कीनी सोई ॥
रावण कह्यो कहा उचिरावै । हे बनिता क्या मंनि मुसावै ॥
मोह सर ताको बमु कहा हाई । माहि सर अवर बली नही कोई ॥
मदोदरी बहुरो कह्यो सुनाई । हे नृप अजहू प्रतीत न आई ॥
एक बंचरि तोहि लक जराई । महीरावण की भुजा उपिराई ॥
तुमि कहिति मो सर ना कोई । इसि धर्ती परि अवर न होई ॥
एक बचर तोह एहि करायो । घैसे बचरि कैसे आयो ॥
जा तू अपुनो बहु भसो सोह । तिमर गुमानु हुवे ते तोहे ॥
रावण कह्यो ताहि नही माने । अति अभिमानु हुवे महि मानै ॥
मंदोदरी ताहि चेता समझावै । साईदास नृप समझि न पावै १७२

पवन पुत्र महिरावणु मार्यो ।
ताकी भुजा उनि पकिर उपार्यो ॥

ताकी सैना सकल हताई । पवन पुत्र धन्न धन्न ता भाई ॥
रघपत की फांसी कटि डारी । पवन पूत को बसु अधिकारी ॥
रव मन को हनूमानु त्यागो । एहि कामु हनूमान करायो ॥
महारावण बनिता बसि आई । धनि सभी रघुपति के भाई ॥
मुग ते उस्निनि अलक उचारी । ताकी बातन जाइ बीचारी ॥
परन साम गृहि मे ठहिराई । श्री रघपति तिह भए सहाई ॥
पवन पुत्र रघपति सग सोए । लछमन सहित सबनु तिन कीए ॥
चम चम दधि क तटि धाए । आइ सिघासन परि ठहिराए ॥

सकम सन तव ही मिस माई। रघपति को डरोत कराई।।
महा भक्ति सुपु ताको होया। मति व्योग तिन्हा मनि ते पोया।।
तिमरु गयो उजीभारा मायो। रव सस ने अवि मुपु दिपलायो।।
मान्र मडस पवनि विचारा। रव निकस्यो होयो उजीमारा।।

जोति प्रकास भई रव केरी।
तिमरु तव ही हुटि गयो मधिकेरी।।

हे साधो रघपति जसु गावा। जसु गावति छिनु ना मलिसावो।।
जो सेवा रघपति की करीं। तिहि मुख सनु प्रम वहुता धर्मी।।
जैसे हनूमान वसु दीमा। वमु माधिक प्रम किर्पा कीमा।।
धन्न धन्न जो हरि जसु गावहि। नाम अप्त ओ ना मलिसावहि।।
श्री रघपति लछमन दोऊ माई। साईदास सेवा चितु साई १७३

मंगद कह्यो रघपति के ताई। हे प्रम पूर्न त्रिमवन साई।।
जो माशा होइ सका जावो। कनक पुरी देवे प्रम मावौ।।
श्री रघपति तिहि माशा दीनी। मंगदु गवनु सक पुरी कीनी।
तातकाल लंका महि मायो। कनक पुरी महि धूम रचायो।।
ईहा कूद करे ऊहा मावें। कनक पुरी को मासु दिपावें।।
मधिक मसुर मगद ने मारे। युद्ध कीमो करि योधि प्रहारे।।
रावरा ने इहि विधि सुण पाई। कह्यो बन्दरि का लेहु बुलाई।।
दंपिमाम छोड करि बहु धाए।
मगद सो कह्यो नृप तुमहि बुलाए।।

मगद तिहि सग उठि करि धायो।
चलति चलति रावन पहि मावो।।

रावण कह्यो क्या धूम रचाई। हे बन्दरि क्या मन ठहिराई।।
तव मगद तिस कह्यो सुणाई। हे मतिहीन क्या बाति उचिराई।।
मम ताई तूं जानति नाही। मैं मगद सुत बास पुछाही।।
नाम महाबली को नही जाने। ताहि मासु मन महि नही माने।।
जिन तुझि को तनूनी मटिकायो। षट मास तुझि छूटण नि पायो।।
ताहि बली को म सुतु मायो। तैं मन महि कहु क्या ठहिरायो।।
जवि मगद इहि बात उचारी। रावणतब मनि सीता बीचारी।।

अंगद सो तिन आप सुणाया। तूं सुतु बालि भलो अगन्याया॥
तोहि तात को राम सिंहारा। तुमि सो वैरु कीओ अति भारा॥
ताहि तोरि होइ युद्ध को आयो। भलो वैरु ते पित का पायो॥
ऐसो पुत्रु न होयो भलो है। गर्भि माहि बहि गल्यो भलो है॥
जो पित केरा वैरु न लेई। पित वैरु मन चितु न देई॥
हे अंगद सुन हो मेरी बाता। विधवा करी इनि तुमिरी माता॥
तुमि आवो हमिरी सर्नाई। तोहि पितु पद देवो मेरे भाई॥
मेरो कह्यो सुण मनि लीजै। साईंदास कछु अवरु न कीजै १७४

जबि रावण इहि बचन सुनाए। अंगद ताहि कह्यो समझाए॥
हे मतिमूढ कहा चित आना। तैं कित रघुपति माही जाना॥
माहि पित ने ऐसे की कामा। अहि रावी बधू की मामा॥
बधू को तिन मार निकारा। तब श्री रघुपति तां को मारा॥
मो को तुमि इहि बात सुणावो। हमिरी सर्नाई तुमि आवो॥
अबि ही मै तुम ताईं मारों। पकरि सीस तोहि भुजा उपारो॥
श्री रामचंद्र आज्ञा नही पाई। इहि प्रजोग मोहि कछु न बसाई॥
जो अपुनी भलि चाहै लीजै। गर्बु गुमानु हृदे ते छोडै॥
जानकी सम से करि उठि आवो। श्री रघुपत की सर्नी आवो॥
नाहि त रघुपति सेतु बनावो। हे रावण रघुपतु है आयो॥
किह प्रयोग अपुनो बीच दयै। किह प्रजोग दुःख मन महि लेवै॥
मैं तुम को इहि आप सुणायो। साईंदास रघुपति है आयो १७५

रावण क्रोधु कीयो उपिरायो। हे बंदरि मनि क्या ठहिरायो॥
अबि हो तुमि की पकरि संहारों। रामचंद को सहिति ही मारों॥
मो सरि तांको बलु कहा होई। मो सरि दूजा अवर न कोई॥
मैं कैसे जानकी से जावा। रामचंद की सर्नि आवों॥
सिंह मृगु सर्नी कहा आवै। स्यानु जंपक ते कहा डरावै॥
भानु पंथ ते किछ करे आसा। मोहि रावण को नाहि बिनासा॥
जिम छाया ते कछे भागे। सूरा रण कछु कैसे त्यागे॥
हे अंगद क्या बचन सुणावैं। महा क्रोधु काहे उपिजावैं॥
अंगद फिरि रावण सो भाषा। हे मतिहीन क्या अंतर राखा॥

तूं रघपति सर कहा कहावै। तुमरो बसु तिह् कहा बसावै ॥
एक प्रतज्ञा तुमि सो करहो। सो प्रतज्ञा निश्चय करहो ॥
मोह् पग को जो तुमहि चलावो। बसु करि अपुना तिस हलावो ॥
मैं प्रामा जानकी तुमि नाही देवो। एहि प्रतज्ञा मनि धरि लेवो ॥
ठोहि ठोर युद्ध आइ करहो। श्री रघपति सेती आइ लरहो ॥
जो तुमि से इहि होइ न प्रावै। सो काहे को मम मुलावै ॥
रावण कह्यो भला ते भाषा। इहि प्रतज्ञा मैं मनि राषा ॥
अंगद पगु धर्नी ठहिरायो। रावण पगु को टारन आयो ॥
रघपति मनि महि लीयो बीचारी। महा कठनि बनी अति भारी ॥
मोह् सेवक प्रसज्ञा कीई कठनि प्रतज्ञा मन महि लीई ॥
जो रावण तिस को पगु टारै। सौ मोह् सेवकु प्राण को हारै ॥
मोस इहि बिधि सही न जाई। बसुधा सब प्रभ लई बुलाई ॥
धोल्हु बुलाइ लीयो सत्कारे। गुननिधान प्रभु अपर अपारे ॥
वाकु मील वही उठि आया। जबि श्री रघपति ताहि बुलाया ॥
हे वाकस पगु धौल्हु को गहु तू। बसु अपुनो को तहा बहु तू ॥
धौल्हि गयो बसुधा के ताई। बसुधा पग अगद उर्माई ॥
बस करि पग को पिसरण न देवो। जो मै कह्या मनि धरि लवो ॥
इनि सभ ही ऐसा ही कीमा। जो रघपति ने आज्ञा दीना ॥
रावणु आइ पग को कर लागो। अगद तब तिहि आप सुणायो ॥
हे रावण इहि मति तुमारी। मोहि पगि आइ लगो तत्कारी ॥
मैं सेवकु रघपति को आयो। मोको पकर्या धनि लगायो ॥
मोह् सेवक सौं सर्न आयो। रघपति सीस तूं कहा करायो ॥
रावण बसु अपुनो बहु लायो। हारि पर्‍यो पगु नाहि हलायो ॥
रघपति तिहि पग परिवया कीमा। त्रैलोक भार आण दीमा ॥
रावन बस कहा ताहि हलावै। पगु न हलायो मन बिसमावै ॥
कह्यो कहा भयो मोह् बल ताई। इसि पग को टारि न पाई ॥
प्रति मैं चक्रित मन महि बिस्मायो। साईदास बल नाहि बसाया १७६

अगद मुकुट सिरि ते पसि लीभा। तजि लोको गवनु उमि कीमा ॥
तातकाल रघपति पहि आयो। मुकटु कनक को आण दिखायो ॥

मगद सौ तिन माप सुणामा। तू सुणु बात भयो प्रमदाया॥
तोहि तात को राम सिहारा। सुमि सौ बैरु कीऔ प्रति भारा॥
साहि ठौरि होइ युद्ध जो भायो। भलो बैरु ते पित का पायो॥
ऐसो पूतु म होयो भलो है। गभि माह् वह् गल्यो भलो है॥
जो पित केरा बैरु न लेई। पित बैरु लेन बिनु न देई॥
हे मगद सुन हो मेरी बाता। बिधवा करी इनि सुमिरी माता॥
तुमि भावो हमिरी सर्नाई। तोहि पितु बद लेवौ मेरे भाई॥
मेरो कह्यो सुण मनि लीजै। साँईदास कहु अवरु न कीजै १७४

जबि रावरा इहि बचन सुनाए। मगद ताह कह्यो समझाए॥
ह मतिमूड कहा चित माना। तै कित रघुपति माही जाना॥
मोहि पित ने ऐसे की कामा। प्रहि रापी बंधू की भामा॥
बधू को तिन मार मिकारा। तब श्री रघुपति ता को मारा॥
मो को तुमि इहि बात सुणाओ। हमिरी सर्नाई तुमि आवो॥
प्रबि ही मै तुम ताई मार्रों। पकरि सीस तोहि भुजा उपारों॥
श्री रामचंद्र आज्ञा नही पाई। इहि प्रजोग मोह् कछु न बसाई॥
जो अपुनी भलि भाई सौडै। मर्व गुमानु हुवे तै छोडै॥
जानकी सग लै करि उठि धावो। श्री रघुपत की सर्नी भावो॥
नाहि त रघुपति सेतु बधावो। हे रावरा रघुपतु है भायो॥
किह प्रयोग अपुनो औठ देवै। किह प्रजोग वु रुस मम महि लेवै॥
मैं तुम को इहि भाप सुणामो। साँईदास रघुपति है भायो १७५

रावरा क्रोधु कीयो उपिरायो। हे बंचरि मति क्या ठहिरायो॥
भबि हो तुमि को पकरि सहारों। रामचंद को सहिति ही मारों॥
मो सरि वाको बसु कहा होई। मो सरि दूजा अवर न कोई॥
मैं कैसे जानकी ले जावों। रामचद की सनि भावों॥
सिंहु मृगु सर्नी कहा जावै। स्वानु पंचन ते कहा डरावै॥
बाजु पग ते किउ करे मासा। मोह रावरा को माहि बिनासा॥
बिछु छाया ते नसे भाम। सूरा रण कहु कैसे त्यागे॥
ए भगा क्या बचन सुनावै। महा क्रोधु काहे उपिजावै॥
अमद फिरि रावरा सौं भाषा। हे मतिहीन क्या अंतर रापा॥

जानकी संग लइ तुमि आवौ।
रघुपति ताई जाइ मनावौ।
मोहि औगण बहु सकल मिटाव।
हे नृप जो इहि कामु कमावै।
रावण अवि इहि विधि सुणी काना।
अति क्रोधु मनि माहे आना।
हे मंदोदरी तूं कहा जाने।
मोहि गत को तू कहा पछाने।
आगे पाछे काहे आय्यौ।
जो आगे तिहि क्या डरि पाय्यौ।
जो तिहि वनचर बलु सा भारी।
काहे भाग गिया सतकारी।
तू इसि विधि को पावै नाही।
काहे फिरि फिरि बाति अलाही।
रावणु अस कहि बाहिर आया।
आइ सभा माहे ठहिराया।
अति धनसु तिहि भी नही कोई।
साईदास होणी होइ सु होई॥१७८
अवि रावण सभा आइ ठहिरायो।
बभीखण तिहि बचनु सुणायो।
हे नृप सुणहा बात हमारी।
कौणु बाति तुमि मन महि धारी।
जानकी से करि ग्रहि ठहिराई।
अति उपाधि नृप तोहि उठाई।
श्री रघुपति ने सेतु बधायो।
कनकपुरी तोडनि को आयो।
जानकी छाडि न नृप जीउ चाहो।
जानकी न जाहि जे नृप चाहो।
माहि न माणु कुल सुमिरा होई।
हे बंधू छुटै नहीं कोई।

हे प्रभ रावण को स पाया। ताहि किर्पा करि ताहि हरायो॥
तहा प्रतज्ञा मैं कीई मारी। तोहि क्रिपा करि मूल न हारी॥
तू प्रभ सदा सहाई मेरा। त्रैलोक करा है तेरा॥
रावण मति अभिमान करायो। हे प्रभ मो प्रतज्ञा पायो॥
तुमि किर्पा करि पूर्ण होई। जो प्रतज्ञा मैं कीई सोई॥
तू सेवक को सदा सहाई। भीर परे तहा तुमि ही मोटाई॥
तू जन का प्रभ दुख निवार्न। भक्ति हेत तू रूप पसार्न॥
तोहि कसा को प्रभ को जान। तोहि कसा प्रभ कौनु पछानें॥
सकटि काटनि सुख को दाता।
घटि घटि माही आप है राता।
जहा जहा भीर परी रघुराई।
साईंदास तहा तुमहि मिटाई॥१७७

कह्यो मदोन्दरी रावण ताई।
हे मतिमूढ़ि समझु मनि माही।
एक बंदर जो प्रथमे आयो।
कनकपुरी को तिन हि जलायो।
अधिक सन ताहू ने मारी।
तोहि सुत तिन ने लीए बिदारी।
अबि दूजे बंदरि इहि कीआ।
छत्र मुकट सिरि तुमि पसि लीआ।
इनि भी सैना पर्ण कीनी।
इहि प्रतज्ञा तुमि को दीनी।
तो का पाउ न सक्यो उठाई।
कहा मूढ़ मति मनि ठहिराई।
तू निहि सवक सरिना होयो।
मति अभिमानु रिउ मनि महि पायो।
उर याति गवनी तजि देवी।
मादि कहा मनि महि धरि सेवी।

सभि को रघपति मार संघारे।
बीस भुजा दस सीस बिदारे।
काहे कुल का नासु करावै।
काहे को इहि कर्मु कमावै।
तब रावण बीभीखण प्रति कहा।
ह बधू क्या मनि डरि पर्‍या।
कहा रामु मोहि सरि जो होई।
मो सरि दूजा नाहीं कोई।
मो सी इहि बिधि काहू सुनावै।
मो पहि इहि बिधि किउ उचिरावै।
तूं भी जाइ तिहि होउ सहाई। मै नहीं क्यों मेरे भाई॥
सकल सैन राम की मारौ। तब पाछे करि तोहि पछारौ॥
ससी जाति तू मोहि सुणावै। मृग जाति करि सिंहु डरावै॥
सिंहु कहा मृग को भउ करही। बाजु कहा पगुल ते डरही॥
हमि तिह ते क्यों नही भाई। हमि पहि इहि बिधि कोई न जाई॥
जबि बभीखणि इहि प्रभु लीना। क्रोधुमान होइ मुख उचिरीना॥
जबि मै आखति हो मेरे भाई। जो तुमि मो सी इहि उचिराई॥
देखो कैसे सीता मार। ताको कैसे पकरि पछारे॥
रावणु कह्यो बेग न लावो। छिनु पलु ईहा ना ठहिरावो॥
जा कछु तुम स होइ सो करहा। गोंईदास चित चित न धरहो॥१७८

बभीखणु तब ही उठि धाया। गगन मार्ग तिनि चितु लायो॥
आइ रघपति सो कीओ प्रनामा। घटि घटि पूर्न जान्यो रामा॥
श्री रघुपति तिहि बचन सुनायो। हे लंकेस भला कीओ आयो॥
जबि सबन रघुपति भाषा। पवन पुत्र तब एम भाषा॥
रावण ने सिउ निज परिवारा। लका राजु मयो अधिकारा॥
बभीखन जबि ही जो आया। प्रभ लंकेसुर नामु धराया॥
एम रघपति पवि बनि जाया। निसबासर ताके गुन गाया॥
ह प्रभ कौण सबा इनि कीनी। कनकपुरी जो इमि को दीनी॥
जबि हनूमान प्रभु इहि कीना। रघिपति ताको उतर दीना॥

वाही बूटी को सुमि ल्यावो।
पवन पुत्र छिनु बिल्मु न लावो।
सभ बिधि म तुम्है दीई बनाई।
सांगिास सुण हो बिलु लाई॥१८३

पवन पुत्र तब ही उठि धाया।
गगन माग छिन मनु ठहिराया।
त्याग अयोध्या आग आया।
भय तब ही हमि को निर्पाया।
कह्यो गया बहुर जु आवै।
मोहि बाणु नीको इहि पावै।
असुर अधिक है तिह मग माही।
ताहि त्रास को जाएण न पाही।
पवन पुत्र सभ असुर सघारे। तब पाछे आगे पगु धारे॥
गधिमावनि पर्वत परि आयो। बूटी तिन ने बहु निर्पायो॥
अकसो बूटी बहु चमिकावै। पवन पुत्र मनि महि बिस्माव॥
एहि बूटी सभ एकि दिखावै। माह मनि बूटी पचि न आवै॥
जो इकि तोरि परों मेरे भाई। वहि ना होई अवर होइ जाई॥
बहुरो कौणु कहो ईहा आवै। बार बार किसे बलु आवै॥
सभ पबतु ले जाउ उठाई। तौ काजु पूण होइ भाई॥
गधिमा बन तिनि मूल उपारा। लेकरि अपुने सीस मझारा॥
जनक पुरी को तब उठि आयो। नग्र अयोध्या के निकटि आयो॥
भर्थ जोहति मगु इहि ठहिरायो। इहि आवे पिख बाएण लगायो॥
पवन पुत्र गिरि सहिति गिरायो। राम राम कहि बसुधा पर्या॥
भय राम को नामु सुण पायो। तात्कास बबर निकटि आयो॥
कौशल्या कौकेही धाई। हनूमान पहि आइ ठहिराई॥
कह्यो बचनु तू राम जु भाषा। श्री राम नामु त मुष ते भाषा॥
इमि का मोको देह बीचारा। हे बबर तुम करो मबारा॥
तुमि अरु राम कहा बनि आई। तू बबर बहु त्रिभवम राई॥
ताका मगु कहे तै सीमा। ताहि नामु कमे उचिरीना॥

औरु अधिक दानव चलि आए। श्री कौसलपति सम ही हताए॥
जिहु प्रभ करि सौ प्रान तजाए। तत्काल बैकुंठि सिधाए॥
एकि मरे औरे चलि आवहि। श्री रघपति सो युद्ध करावहि॥
प्रभ ने मारे छिण मे माहे। छिन मात्र महि और उपजाहे॥
जो जो दैत आण प्रभ मारे। असुर बुद्ध प्रभ कीए उधारे॥
हे साधो हरि नामु ध्यावो। सांईदास प्रभ के गुण गावो॥१८१

रावण ने तब ही सुण पायो। वन्न वासी को राम हतायो॥
ताहि सैन सकसी तिन मारी। तब रावण मन सोई बीचारी॥
इन्द्रजीत को सीयो बुलाई। हे सुत मेरे बहु सुपदाई॥
तुमि रघुपति के सम्मुख जावो। तांसौ जाइ करि युद्ध करावो॥
वन्न वासी को सभि ने मारा। हे सुत तिन मं बहु प्रहारा॥
इन्द्रजीत तब ही उठि धायो। चमित चलित बहु रण महि आयो
त्रिष्ट म भाव युद्ध कराए। इन्द्रजीत को बसु अधिकाए॥
अग्नि वसे मन कर परहारे। अत्रिष्ट होइ सैना को मारे॥
इन्द्रजीत अधिक युद्ध कीना। राम सैन को बहु दुख दीना॥
सकल सैन तिन ने मूर्छाई। को मूर्छे को प्रान तजाई॥
हनूमानु मन नील मूर्छायो। और सैन सम प्रान तजायो॥
इन्द्रजीत जान्या सभु मारे। सांईदास तब लंक सिधारे॥१८२

सुत असुनीकुमार को भाई। नील नाम तिहि आप सुनाई॥
तिहि हनूमान सौ आप सुणाया। पवन पुत्र अबि क्या बिस्माया॥
लछमन सहति सैना मूर्छाई। कहा कीजै कहु मेरे भाई॥
को उपिचाव कहो सो करहो। तोहि कह्या मनि भतरि धरहो॥
नील तब ही बचनु उचारयो। पवन पुत्र सौ आप सुणायो॥
सुरजीवणी बूटी पर्बत माही। गंधिमादनु तिहि नामु अपाही॥
वहु बूटी जो तुमि ले आवो। सकल सैना को तुम जीवावो॥
हनूमान कह्यो उसि कैसे पावो। गधिमादि पर्बत परि जावो॥
ताहि चिहनि कछु देहु बताई। मै बूटी को ल्यावो जाई॥
नील कह्यो सुण हो मेरे भाई। अग्नि चिणकार वांको चमिकाई॥

वाही बूटी को तुमि ल्यावो।
पवन पुत्र छिनु विलमु न लावो।
सभ विधि मैं तुझै दोई बताई।
सांईदास सुण हो चितु लाई ॥१८३

पवन पुत्र तब ही उठि धाया।
गगन माग तिन मनु ठहिराया।
त्याग प्रयोध्या भागे धाया।
प्रय तब हो इसि को निर्पाया।
कह्यो गया बहुर मु प्रावै।
मोहि बाणु नीको इहि पावै।
प्रसुर प्रधिक है तिह मग माही।
ताहि त्रास को त्राण न पाही।
पवन पुत्र सभ प्रसुर सघारे। तब पाछे भ्रागे पगु धारे॥
गधिमाधनि पर्वत परि प्रायो। बूटी तिन ने बहु निर्पायो॥
सकली बूटी बहु चमिकावै। पवन पुत्र मनि महि विस्मावै॥
एहि बूटी सभ एकि दिपावै। मोह मनि बूटी परि न प्रावै॥
जो इकि तोरि परों मेरे भाई। वहि ना होई प्रवर होइ जाई॥
बहुरो कौणु कहो ईहा प्रावै। बार बार किसे बसु भावै॥
सभ पर्वतु ले जाउ उठाई। तौ कार्जु पूण होइ भाई॥
गंधिमा वन तिनि मूल उपारा। लेकरि प्रपुने सीस सम्भारा॥
कनक पुरी की तब उठि धायो। नग्र प्रयोध्या के निकटि प्रायो॥
भर्थ जोहति मगु इहि ठहिरायो। इहि प्राये पिख बाण लगायो॥
पवन पुत्र गिरि सहिति गिरायो। राम राम कहि बसुधा परूया॥
भर्थ राम को नामु सुण पायो। तात्काल बचर निकटि प्रायो॥
कौशल्या कौकेही माई। हनूमान पहि प्राइ ठहिराई॥
कह्यो बचनु तू राम जु भाषा। श्री राम नामु तैं मुख ते भाषा॥
हमि का मोको देहु बीचारा। हे बचर तुम करो नचारा॥
तुमि प्रद राम कहा बमि प्राई। तू बचर बहु त्रिभवन राई॥
ताका सगु कैसे तैं लीना। ताहि नामु कमे उचिरीना॥

छिन पल बिलमु कछु नाहि करावो।
इहि बितांतु तुमि मोहि सुणावो।
मैं तुमि सौ इहि आप सुणायो।
साँईदास तुमि मोहि बतायो॥१८४

पवन पुत्र तब कह्यो गुसाईं। सुण हो भवि रघपति के भाई॥
रावणु दैतु महा बलदाई। जानकी तिन ले पछी दुराई॥
रघपति जानकी हरति आयो। नृप सुग्रीमु जहा ठहिरायो॥
मैं मंत्री ताको मा भाई। सुग्रीम मोह कह्यो सुणाई॥
इहि दो बीर को लहु सुभाई। इमि पाहे जाहो तुमि भाई॥
मैं चनि रघपति पाहे आया। लछमण बीर सहित रघुराया॥
म इनि दोनों को ले धाया। सुग्रीम पाहे स आया॥
बाल कपु सुग्रीम को भाई। महाबली तिहू बमु अधिकाई॥
सुग्रीम को मारि निकारा। राजु आप लीयो तत्काला॥
ताको बनता भी पनि लीई। इहि बिधि बालि कपु ने कीई॥
सुग्रीमु आइ बनि महि ठहिरायो।
जहा मदहम महि धाग्रमु छायो।
थो रघपति ताको कह्या भाई।
सुग्रीम मोह देहु बताई।
कहु कैस बन महि ठहिराए।
बनि माह आसणु किउ छाए।
सुग्रीम तब सकल बीचारी।
हे प्रभ मोह बनी अति भारी।
मोहि राजु बल पलि लीया।
मो परि अधिक जोरा उनि कीया।
माह बनिता उनि लीई छिनाई।
मोहि बसु तासौ नाहि बसाई।
इहि प्रजोग ईहा ठहिरायो। हे प्रभ ईहा आसुमु छायो॥
रघपति अमि बमाई कराए। तासौ प्रतग्या कीई अधिकाए॥
कह्या बालि कवि को मैं मारहो। पाछे उौर बाति चित धरिहो॥

श्री रघपति जाइ बालु सहार्‌यो। साधि बाणु प्रभ ताको मार्‌यो ॥
सुग्रीम को राजु दिवायो। श्री रघपति इहि काजु करायो ॥
सुग्रीम को सग प्रभ लीए। कनक पुरी को गवनु प्रभ कीए।
सब त मैं रघपति सर्न आया। रघपति कार्ज सो चितु लाया ॥
इंद्रिजीत सभ को मूर्छायो। मुरजीवन बुटी लेन मै आयो ॥
भवि तुमि मोको धनि गिरायो। हमिरो बलु तै सकल हिरायो ॥
कसे करि पर्बतु ले जावो। सुरजीवन बूटी तहा पहुचावो ॥
बिनु बूटी सभि तजहि प्राना। हे नृप भर्थ सुर्णो मनि माना ॥
तबि ही भर्थ न बचनु उचारा। पवन पुत्र बलु भटयो तुम्हारा ॥
पर्बतु बाण ऊपरि ठहिरावो। तुमि भी इसि के सहिसि ही आवो
मै तुम्हि रघपति पहु पहुचावो। छिन्न पलु बिलम नाहि कछु लावो
पवन पुत्र सब ही मन धारा। भर्थ की भुज माहे बलु भारा ॥
फिरि भर्थ सो बिनती ठानी। तुमिरी गति मै नाही जानी ॥
तुमि को बलु ऐसो है भाई। मै सेवकु तुमिरी सर्नाई ॥
तुमि किर्पा ते मम बलु होया। जाग पर्‌यो सचरु सा सोया ॥
तुमि किर्पा करि मै ले जावो। पल माहे चढि के पहुचावो ॥
भथ से आज्ञा लेकरि धाया। साईंदास रघपति पहि आया ॥१८५

पबतु मीस को आण दिपायो। नील सुरजीवनी बूटी पायो ॥
सकल सैना को ताहि सिघाई। सैना जाग परी अधिकाई ॥
श्री राम नाम मभि मुखो उचारा। राम नामु है प्रान अधारा ॥
जाग परे सना सुप पायो। श्री राम नाम जी को जमु गायो ॥
जबि सम सैना प्रगटि पलोई। मूर्छा होयो रहयो न कोई ॥
रघपति पवन पुत्र सौ कहया। हे हनुमान कहा बहि रहया ॥
गंधमादनि पबतु ले जावो। तहू ठौर पढि करि ठहिरावो ॥
नाहि त सुर बहुता दुःख पाही। मूर्छा होई माहि जीवाही ॥
पवन पुत्र पर्बतु ले धायो। बहुर आण करि तहू टिकाया ॥
ताहि टिकाइ आयो प्रभ पाही। हरि सिमरति दुःख लागै नाही ॥
जो जो हरि सेवा चितु धारे। तात्काल प्रभ तासि उवारे ॥
बेद पुरान सिमृति जमु गावै। साईंदास सर्नी जो आवै १८६

श्री रघपति सभ लीए बुलाई। जिह कौ बधु सा बहु अधिकाई॥
बभीखन सुग्रीमु बुलायो। हनूमान अगद चलि आया॥
जामवानु नल नील भी आए। बडे बड वली सकल सदाए॥
तिहि कह्यो श्री रघपति राए। ऐसी विधि को देहु बताए॥
जासु कीए लका गढु टूटें। रावण कभकरण सिर फूटें॥
तबी बिभीखण बचनु उचारा। सुण हो बिनती प्रान अधारा॥
इद्रजीतु अबि नाहि हरावौ। लका नासु लेने कहा पावौ॥
हे प्रभ इंद्रिजीतु बलिकारी। तांकी मुज महिं बसु अधिकारी॥
बलि करि बहु तुमि हत्यो न जाई। मैं हकि विधि तुमि देवौ बताई॥
अबि इहि करि तासि कौ मारो। पाछे रावण भुजा उपारो॥
अबि लगि इद्रिजीतु ना मारौं। न का नास प्रभ हुवे न सारो॥
मैं विनती प्रभ आप सुणाई। सांईदास सुण स मेरे भाई १८७

श्री रघपति तब कह यो पुकारा। हे बभीखण बीर हमारा॥
वहि विधि हमि को देहि बताई।
जिह कीए इद्रिजीतु हत्यो जाई॥
बभीखन तब आप सुणाया। सुण हो रघिपति त्रिभवन राया॥
मैं सभ विधि तुमि देउ बताई। तुमि सुण लेहो हितु चितु लाई॥
ब्रह्म महूर्त उठि बलि जावें। इद्रिजीतु आइ मगु करावें॥
अगिन को अधिक अहूति देवे। सुप्रसन्न तांकी करि लेवे॥
अगिन रूप वाहन मग आवे। तिहि करि प्रभ बहु हार न पावे॥
अबि बहु मग करि को जावे। शस्त्र अपूर्न इसि दे जावे॥
इहि शस्त्र ताक से आवे। तुमि सेना सग न अमिवाम॥
वाको मगु न करने दवो। एहि करो तबि निसि हति सबो॥
रघिपति कह्यो बहु भला आपा। हे स केसरि बहु भलो भाया॥
जो तुमि कहो करहि हमि सोई। सांईदास विधि सिष्यो सु होई १८८

ब्रह्म महूर्ति जबि ते भया। इंन्द्रिजीतु यम करने गया॥
श्री लछमन सेना सग लीए। इंद्रिजीतु डारि चित दीए॥
बभीखण सहू ठौर स्यापा। इंद्रिजीत जहा मगु रचाया॥
रघपति सैना वाण चलाए। इद्रिजीत के अंग समाए॥

इद्रिजीत यज्ञ करनि न पायो। बिनु यज्ञ कीए युद्ध को आयो ॥
बिनु यज्ञ कीए बस न बसावै। कहु कैसे बहु युद्ध कराव ॥
बिनु बस युद्ध कहा को करई। बिनु भुज कहु कसे कोऊ लरई ॥
इद्रिजीत को इनहि हतायो। बलि करि अपुने मारि चुकायो ॥
ताहि मार रघपत पहि आए। श्री रघुपति गुण बहु हिर्षाए ॥
नमा कीओ पानकि को मारा। भला कीया पातकु प्रहारा ॥
जात भई रणु तिहि कर आयो। अति अनद हो मगल गायो ॥
श्री रघुपति स्मसर को होई। साईनाथ हरि सरि नही कोई १८९

रावण न इहि विधि सुण पाया। इद्रिजीत को तिन्हहि हतायो ॥
क्रोधु कीओ मनि महि अधिकारा। ताहि भुजा माह बस भारा ॥
सन सग ले युद्ध को आया। श्री रघुपति इहि ओरि ते धाया ॥

अधिक युद्ध रावण सो कीना।
बीस भुजा दसि सीस कटि लीना ॥

जबि सिरु कटे और प्रगटावे। एकु कटे एकु और उपिजाव ॥
दसि ही बार ऐसे भ्रम कीना। रावण के सिर कटि कटि लीना ॥
रावण फेरि गयो गृहि माहे। कुंभकरण सुख सोया आहे ॥
कुंभ अधिक मदि सग भराए। भैसिके सुत बहु घातु कराए ॥
जो जाग तब इसि को पाए। त्रिपा गह इसि पान कराए ॥
कुंभकर्नि और आण टिकाए। रावण ने इहि कम कमाए ॥
बाजन बहु भांति बजावै। कुंभकर्णु कहू नीद उघिराव ॥
कुंभिकरण सोया अधिकाई। ताको देहि सुति नही काई ॥
हस्ती सो बहु तास बजायो। कुमकर्न कछु सुर्त न पायो ॥
म[illegible] करि कम्पि ताहि की मारे। कुंभकर्न तब नैन उघारे ॥

रावण बहु बिलापु करायो।
हे मोहि बीर बितु सोण की लायो ॥

मघमन [illegible]न्द्रिजीत को मारा। माहि मीमु यह तिम कटि डारा ॥
सुनि कथा मोए हो मेरे भाई। उठो युद्ध करो रघराई ॥
कुंभकरण तब उठि पलोया। हे मोहि बीर बड़ा मद्द होया ॥
मद अधिक तब ही उनि पाए। मद को तिन मे पान कराए ॥

श्री रघपति सम लीए बुलाई। जिह कौ मनु सा बहु प्रधिकाई॥
बभीखन सुग्रीमु बुलायो। हनूमान अंगद चलि आया॥
जामवान् नल नील भी आए। बडे बड बली सकल सदाए॥
तिहि कह्यो श्री रघपति राए। ऐसी विधि को देहु बताए॥
जासु कीए मका गढु टूटै। रावण कुमकरण सिर फूटै॥
तबी बिभीखण बचनु उचारा। सुरण हो बिनती प्रान अधारा॥
इंद्रजीतु अबि नाहि हताबौ। सका नामु लेने कहा पावा॥
हे प्रम इंद्रिजीतु बलिकारी। ताकी मुज महि बसु अधिकारी॥
बसि करि बहु हमि हत्यो न जाई। मैं इकि विधि तुमि देवी बताई॥
बबि इहि करि तासि को मारो। पाछे रावण मुजा उपारो॥
जबि लगि इंद्रिजीतु मा मारों। म का नाम प्रभ हवे न सारो॥
मैं बिनती प्रम आय सुणाई। सांईदास सुण से मेरे भाई १८७

श्री रघपति तब कह यो पुकारा। हे बभीखण मीत हमारा॥
कहि विधि हमि को देहि बताई।
जिह कीए इंद्रिजीतु हन्यो जाई॥
बभीखन तब आप सुणाया। मुण हो रघिपति त्रिभवन राया॥
मै सभ विधि तुमि देउ बताई। तुमि मुण लेहो हितु चितु लाई॥
ब्रह्म महूर्त उठि बमि जावै। इंद्रिजीतु जाइ यगु करावै॥
अगिन को अधिक अहूति देवै। सुप्रसन्न ताकौ करि लवै॥
अगिन रूप ब्राह्मन प्रग आवै। तिहि करि प्रभ बहु हार न पाव॥
जबि बहु यग कर्नि को जावै। शस्त्र अपूने इसि दे जावै॥
इहि सस्त्र ताके से आवै। तुमि सेना सग ले अधिकावै॥
वाको यगु न कर्न देवौ। एहि करो सवि तिसि हति लेवो॥
रघिपति कह्यो बहु भला आपा। हे ल केसरि बहु भलो भाषा॥
जो तुमि कहो करहि हमि सोई। सांईदास विधि लिख्यो सु होई १८८

बहा महूर्ति जबि से भया। इंद्रिजीतु यग कर्न गया॥
श्री लछमन सना सग लीए। इंद्रिजीतु उोरि चित दीए॥
बभीखन वहू ठौर ल्याया। इंद्रिजीत जहा यगु रचाया॥
रघपति सैना बाण चलाए। इंद्रिजीत के अंग लगाए॥

तह। ब्यासी इहि सुण पाई।
प्रगट भए श्री रघपति राई।
असुरों को रघपति आइ मारे।
सकल सुर को वह सधारे।

काहे को विरोधु चलावो।
अपनो कौ तुमि काह दुखावो।
इहि विधि नार्द मोहि सुनाई।
सोई रामु अवि आयो भाई।

कहु कसे तिहु युद्ध करावै।
तिसि सन्मुख कैसे हमि यावै।
रावण कह्या सुण हो मेरे भाई।
जो तुमि मन महि एहि टिकाई।

कहु मै अवि और कौन पहि जावा।
ताहि ताहि सहाई संग ले आवा।
जा तुम अपित संग न आवो।
युद्ध करनि को नाही धावो।

मै तो युद्ध करा जाइ भाई।
तुमि हमिरे ना होइ सहाई।
रावण जवि इहि बचनु सुणाया।
सुर्णो बचनु करि क्रोधु उपिजाया।

कुंभकरणु तब उठ आया।
हमि कउ कहु चित न लागा।
जा तुमि ने इहि बचनु सुनाया।
अधिक क्रोधु मारो उपिजाया।

अवि म आउ करि युद्ध करावा।
श्री रघपति के सन्मुख जावा।
कोपु कीने कुंभकरनि अधिकाई।
जाइ भरा महि धप कहु भाई।

उठि चला नया युद्ध को धाया।
रघपति की सैना निर्वाया।

ताहि पाइ पांत भरि श्राया। रावरण सौ तब बचनु सुरणाया॥
हे मोहि बीर कवन दुःख पायो। कहो कवन तुमि श्राण सतायो॥
एहि बिधि मोको देहु बताई। फिर विस्माव मेरे भाई॥
जा कोई तुमि कौ दुःख देवें। सांईनाम तिहि हवनु करेवे ११

रावरण तिहि सौ कह्यो सुनाई। सुन हो बंधू माहि सुघराई॥
रामचदि लछमरण दोऊ श्राए। इ द्रिबीतु तिहि श्रावु कराए॥
सैना मोहि श्रधिक तिहि मारी। सीस भुजा हमिरी कटि डारी॥
कुमकर्ण जबि इहि सुण पाई। सना बहु भारी रघुराई॥
रावरण सौ तब बचनु सुरणायो। हे बंधू त क्या चित लायो॥
थी रामचद सौ युद्ध कराबहि। रघपति सरि कैसे तू श्राबहि॥
रघपति सौ मै युद्ध न करहो। युद्ध करनि कौ चितु न बरिहो॥
रावरण फिरि करि ताहि सुनायो। हे माहि बीर कहा उचिरायो॥
मै ताहि बल करि कर्म कमायो। तोहि बल परि बिरामु उठायो॥
किहि प्रकार तू युद्ध न करही। रघपति सेती फिर ना लरही॥
इहि बिधि माको देहु बताई। है बधू मोहि बहु सुखदाई॥
माह मनि महि सघर बहु श्रायो।
हे बधू तै क्या उचिरायो।
इसि का मोको देहु बिचारा।
सांईनास सघर मनि भारा॥१९१

कुमकरण तब बचनु उचारा।
सुण हो रावरण बीर हमारा।
एक दिन गयो म बनि के माही।
श्रघेरि कमि मृग के हरिवाई।
मार्दु बंम बजाबनि श्रायो।
मादि मोमी श्राप सुणायो।
मै गयो ब्रह्मपुरी के माही।
श्रसुरीं से सुर बहु दुःख पाही।
श्रमुरा मे बहु धुमि रचाई।
तांसों किसको बनु न बसाई।

कुंभकर्ण को अवि प्रभ मारा। रावण तब ही नन निहारा ॥
सका त्याग युद्ध को आयो। रघुपति सन्मुख आइ ठहिरायो ॥
अधिक युद्ध रावण ने कीमा। बवरि अधिक ताहि हनि लीमा ॥
श्री लछमण तिहि सीसु कटि डारे। और सीसु आव तत्कारे ॥
सौ सीसु रावण कटि डारा। श्री रघुपति रावण को मारा ॥
गए गधर्व कीयो जै कारा। भला कीयो प्रभ प्रान अधारा ॥
जैसे पातक ताई से मारा। सुमिरी तुमि को है नमिस्कारा ॥
अनेक उस्तति सुयो उचिराई। हे प्रभ सुमिरी सुमि बनि आई ॥
कर उस्तित अपुने गृहि आए। अति अनद मंगल बहु गाए ॥
भक्ति हेति तांको हति सोभा। सांईदास इहि काणु कीया १८३

श्री रघुपति लछमण सौ कीहा। हे मोहि बीर कहा तू वहा ॥
भमीछन को सग ल आवो। लका महि पडि राज बहावो ॥
जानकी को अवर बहु दीए। मो पहि आना तुमि सग लीए ॥
लछमन बिभीछन को ले आया। लका महि लडि राजु बहारा ॥
जानकी को अवर बहु दीए। लका त्याग गवनु तिन कीए ॥
बभीछन संग ही फिरि आया। जानकी को प्रभ आए दिखाया ॥
जानकी अवि निर्पी रघुराई। अ ग अ ग महि माहि समाई ॥
अति अनदु भयो मन तांके। रोम रोम हर्षति भए वांके ॥
सकल कष्ट तिन ममहु बिसारा। जब श्री रघपति नन निहारा ॥
जैसे पग पिंजर मुक्तावै। पिंजर त्याग अधिक सुप पावे ॥
जैसे मृग फाही तजि भागे। बन महि तांको बहु हितु लागे ॥
अति अनदु बन माहे पाव। जिहि ठौरि चितु होइ तहू धावै ॥
जैसे रोगी रोग तजाए। अति सुप मन माहे बहु पाए ॥
जैसे कमलु रवि क्रो निर्पाए। सुप दोन्हे अनंदु बहु पाए ॥
तैसे जानकी प्रभ निर्पाई। अग अ ग तिहि बहु सुप पाइ ॥
जानकी हरि देख्यो सुपु पायो। सांईदास मनि मगलु गायो १८४

रघुपति जानकी को संग लीमा। इयि तटि त्याग गवनु उसि कीमा
सैना अधिक ताहू संग धाई। बभीछन भक्ति महा सुपदाई ॥
बवरि अधिक रास संग आवहि। जैसे बादर घटि उमिडावहि ॥

कपमान बचर सभ होए। कुंभकणु जमि उठि पलोए॥
लका त्याग युद्ध को घायो। रघुपति की सैना महि मायो॥
बचरि पकरि पकरि मुख डारे। भक्षनु कर ताहि को मारे॥
बचरि अधिक ताहि मे धाए। मारि कूटिति भागे धाए॥
सुग्रीम को पकरि तिन लीमा। ताहि दाब कांख तले दीमा॥
नृपु जाम्यो तिहि को स धाया। कनकपुरी सौ तिन चिहु सापा॥
स पायो दरबारे माही। सुग्रीमु मनि महि बिस्माही॥
है रघुपति मोहि बाधि बसायो। कुमकण इहि कर्मु कमायो॥
जबि सुग्रीम हुवे इहि धारी। श्री रघुपति तब सोयो बीचारी॥
श्री रघुपति तब रचना धारी। सुग्रीम देह तब बहु भई भारी॥
कुमकर्ण पहि चुकी न आई। तिन ने यत्नु कीठो अधिकाई॥
सुग्रीम सूक्ष्म बपु कीमा। कूदि नाकु ताको कटि लीमा॥
नाकु काटि ताका उठि धाया। कुमकर्न मनि महि बिस्माया॥
कहा मुप ते मतरि आवी। कहा मुख मे आइ दिपावो॥
लज्जावानु होइ करि फिरि धाया। मनि महि क्रोधु कीयो अधिकाया
बचरि अधिक पुन भाइ मारे। श्री रघुपति जोरे पग धारे॥
रघुपति धन्यु बाण करि लीमा।
कुंभकर्न के पग कटि दीमा।
जबि रघुपति तिहि पग कटि दीए।
कुम कर्नि गोडी गवनु कीए।
फिरि बामि सौं कद्दू कटि डारा।
तब भडि सौ धस्यो तत्कारा।
मुखु पसारे धामे धावे।
रघुपति सो बहु युद्ध करावे।
रघुपति और बाणु तिहि मारा।
कटि रहओ धड़ ताहि बिचारा।
बाणु मारि मुण्डु तिहि फिरि लीमा।
रघुपति तिस का हनमा कीमा।
कुंभ कर्नि को रघुपति मारा। श्री रघुपति की बसु अधिकारा॥
ताहि मार बैकुंठि पठमा। साईंदास बिधि प्रगटि सुनायो॥१६२

मानो समिता माहि ठहिराई। तांते निकटि अगिन नही आई॥
सम सैना की द्रिष्ट न आही। लोक कहित इसि मग्न असाई॥
जानकी भस्म भई इसु माही। अति सचरु सेना मनि माही॥
जानकी का सतु किनहू न टार्यो। इसि पावक तांको नयु जार्यो॥
अति मैचकित्त सभु मनि विस्मावे। ताकी विधि कछु कही नि जावे॥
सम ही मन महि करति बीचारा। हे प्रभ इहि क्या रचना धारा॥
जानकी को दूपना नही काई। जानकी ते प्रभु काहू जसाई॥
हे प्रभु कौनु सपासु त कीना। कौनु बाति प्रभ मन धरि लीना॥
तीन दिवसि निस भई विदीता। जानकी रही अगिन के भीता॥
हे प्रभ हमि तो सभ बौराए। सांईदास कहा कहो सुनाए॥१९६

सभ सना अति मनि विस्माई। तात्काल सीता निकसि आई॥
अति सरूपु क्या रूपु बपानो। ताहू रूप असतुति क्या जानो॥
त्रलोक तिहि सरना कोई। ताहि रूप समसरि ना कोई॥
तब सभ ही रघपति सौ भाषा। कहा हमारा तुमि चित राषा॥
जानकी की तने पतीआयो। अपुने मन का भमु चुकायो॥
जानकी की सील ते टारे। जानकी को बात उचारे॥
जो को बुरा मम महि ल्यावे। तांको प्रभ मोहू नर्कि पठावे॥
हे प्रभ अबि तो सचरु भागा। अबि तो तने संचरु त्यागा॥
जानकी को प्रभु गृह ले आयो। अति अनदु सभु भमु चुकाया॥
रघपति भर्मु हृदे ते त्यागा। सचरु सोया तब ही जागा॥
संचरु त्याग अधिक सुपु पाया। श्री रघपति ने भमु गवाया॥
जो कछ हरि भावे सो होई। सांईदास ढौर कर ना कोई॥२००

ऋपि सो दयो कह्यो सुनाई। वाल्मीक पूर्ण ऋपि माई॥
हमिरे मन महि सचरु आयो। ताहि बितु बहु भमि भुनाया॥
तुमि किर्पा करि संचर जाव। तुमि किर्पा मनु हमि सुप पाव॥
वाल्मीकहि बिपी सौ भाषा। कवन सचरु मन माहे राषा॥
मोहि कह्यो तुमि सचरु निवारो। तुमिर मनि का भमा टारो॥
तब देवी ने बिनती ठानी। सुग हा ऋपि जी ब्रह्म ग्यानी॥
बिनती तुमि पहि आप सुणावहु। सो हमि सचर मोई बनावहु॥

द्रिष्ट करे तो प्रान उतारै।
भस्म होइ फिरि द्रिष्ट न आवै।
द्रिष्ट परिति उपजित मन आसा।
भूमि जात बहु भाग बिलासा।
जानकी सौ प्रेम कह्यो पुकारे।
हे जानकी आवो हतारे।
अग्नि माहि प्रवेसु करावो।
इसु पावकि महि पगु ठहिरावो।
जो तुमि महि कोऊ दूषणु होई।
तुम को आगु लागे मी सोई।
जो तुमि को दुषणु नही कोई।
तुम को अग्नि न लगगी ऐ होई।
जो दूषणु होइ भस्म करावे।
साईंदास एहि बात बतावे ॥१८७

जानकी जबि इहि बिधि सुण पायो। जमु से करि इस्नानु करायो ॥
बहु भूषण अग को पहिराए। अंबर बहु तिस अग लगाए ॥
आहुति तिह प्रवेसु कराए। तब ही सुर सकसे चलि आए ॥
दसरथु रघुपति पहि आए। बिबाए चडयोमुषमन्य सुनायो ॥
जानकी मध्य अग्नि ना देवो ॥
सकल सुरो ने एहि पुकारा। जो कछु दसरथ कह्यो बिचारा ॥
जानकी मे तब बचन उचारे। सकल सुरो को दीयो बीचारे ॥
तुमि काहे इहि बचन सुनावो। जिह प्रजोग तुमि इहि उचिरावो ॥
इहि महि माइ भलो है भाई। मोहि दूषणा सभ मिटि जाई ॥
मैंने ही दसरथ मो आपा। हे पित काहे इहि तुमि भापा ॥
नाहि बिना करि कोइ गर न लाग। तोहि बिना गयसा भ्रमु भावे ॥
मे प्रवसु करो इमि माही। साईंदास दुःख माहि मंझाही ॥१८८

जानकी तिनि प्रवसु करायो। अग्नि माहि जा पगु ठहिरायो ॥
तनि तब ही सीतलता होई। जानकी दुःख ना लागो काई ॥
[illegible] अगनि ठहिराए। मानो गमु ही पुष्प बिछाए ॥

१

मानो सलिता माहि ठहिराई। ताके निकटि अग्नि नही आई॥
सभ सैना की द्रिष्ट न आही। लोक कहित इसि अगन जलाई॥
जानकी भस्म भई इसु माही। अति सबरु सेना मनि माही॥
जानकी का सतु किनहू न टार्‌यो। इसि पावक तांको क्यु जार्‌यो॥
अति अचक्रित सभु मनि बिस्माव। ताकी बिधि कछु कही नि जावै॥
सभ ही मन महि करति बीचारा। हे प्रभ इहि क्या रचना धारा॥
जानकी को दूषना नही काई। जानकी तै प्रभु काह जलाई॥
हे प्रभु कौनु तपासु त कीना। कौनु बाति प्रभ मन धरि लीना॥
तीन दिवसि निस भई बितीता। जानकी रही अग्नि के भीता॥
हे प्रभ हमि सो सभ बौराए। साईंदास कहा कहो सुनाए॥१९६

सभ सना अवि मनि बिस्माई। तत्काल सीता निकसि आई॥
अति सस्पु क्या रूपु वपानो। ताहू रूप अस्तुति क्या जानो॥
त्रलोक तिहि सरना कोइ। ताहि रूप समसरि ना कोई॥
तब सभ ही रघपति सो आया। कहा हमारा तुमि चित राषा॥
जानकी को तने पतीआयो। अपुने मन का भमु चुकायो॥
जानकी को सीस ते टारे। जानकी को बात उधारे॥
जो को बुरा मन महि ल्यावै। तांको प्रभ मोह नकि पठाव॥
हे प्रभ अवि तो सबर भागा। अवि तो तने सबरु त्यागा॥
जानकी को प्रभु ग्रिह ले आयो। अति अनदु सभु भमु चुकायो॥
रघपति भमु हृदे तै त्यागा। सबर साया तब ही जागा॥
संघरु त्याग अधिक सुपु पाया। श्री रघपति न भमु गवाया॥
जो कछ हरि भावे सो होई। साईंदास और कर ना कोई॥२००

ऋषि सो देवो कहयो सुनाई। बाल्मीक पूरा ऋषि नाई॥
हमिरे मन महि सबर आयो। ताहि चितु अह भमि भुनायो॥
तुमि किर्पा करि सबर जावै। तुमि किर्पा मनु हमि सुर पाव॥
बाल्मीकहि बिपा मो आपा। कथन सबर मन माह राषा॥
मोहि भयो तुमि सबर निवारो। तुमिरे ममि का ममा टारा॥
नय दवो म बिनती ठामी। सुण हो ऋषि जी ब्रह्म ज्ञानी॥
बिनती तुमि पहि आप सुणावहु। तो हमि मगर मार्ग बतावहु॥

बसति बसति वन माहे आए। ताही कुटी महि आइ ठहिराए॥
जासि वाहि वासा प्रभ कीना।
अबि भी ताहू महि आसमु लीना॥
सुप वसे आइ प्रभ रघुपतिराई। सोईवास सदा गुण गाई ११२

श्री रघुपति मन सोचो बीचारी। मतु कोई हमिरो करे बिचारी॥
रावण जानकी पकी दुराई। पहि स का माहे ठहिराई॥
तांसो फिरि रघुपति म आए। अपुने ग्रहि महि आइ ठहिराए॥
मतु कोई जानकी की कछु कहई। मामु बुरो कहि ठांको सहिई॥
मतु काहू के ममि भ्रमु परई। मतु काहू का चितु डोलतु करई॥
समि ही का मै मर्मु बुलावो। जानकी दूपनु दूरि करावो॥
रघपति जानकी सौं सब भाषा। सुन हो जानकी मै इहि चित राषा॥
अग्नि जलाइ इसि महि तुमि डारी।
तुमरी दूपना सकल निवारी।
अबि जानकी इहि बिधि सुण पाई।
भला कह्यो तुमि रघुपति राई।
अग्नि जलाई मोहि तिहू डारो।
तासि अग्नि सौ हमि कौ पारो।
जो मोहि अवगुन भस्म होइ जावै।
नाहि त अग्नि से बाहिरि आवौ।
रघुपति इहि बिधि मन ठहिराई।
सकली सैना लीई बुलाई।
रघुपति तिहि सो कह्यो पुकारे।
सुन हो इहि बिधि बीर हमारे।
ईंधन को तुमि मेल स्यावो। ईहा आग के अग्नि जलावो॥
मोहि मनि संचर है पर्यो। मम मन संचर बहु ही कर्यो॥
तब सैना बचनु उचारा। हे प्रभ क्या संचर मन धारा॥
किहि प्रजोग ईंधनु बुलावो। किहि प्रजोग ईहा अग्नि जलावो॥
एहि बीचार हमि को प्रभ कीजै।
इहि करुणा हमि परि प्रभ कीजै।

एहि विधि सुणु सचरु मन पर्‌यो।
इहि तुमि कौनु बाति प्रम कर्‌यो।
इहि संचरु प्रम हमहि सुनावो। सांईदास को भमु मिटावो ११६

श्री रघपति तिन को प्रतु दीना। तुमि काहे सचरु मनि लीना॥
मोहि मन संचरु इहि विधि पर्‌यो। जानकी को रावण ले पकर्‌यो॥
भम्मि दिवस म का ठहिराई मतु को इहि दूपनु लागे काई॥
इसि को प्रगनि माहे मैं जारो। मनि को सचरु सभ ही निवारो॥
तव सैना ने मनि महि भानी। हे रघपति क्या बाति बखानी॥
जानकी को दूपनु नहीं लागे। जानकी दूपन सकल त्यागे॥
तांका सीसु किनहू ना टार्‌यो। ताहि धर्म किने नाहि बिचार्‌यो॥
प्रग्नि माहे तुमि काहे जारो। जानकी को तुमि काहे जारो॥
जवि सैना सभ एहि उचारी।
रघपति तांको कह्‌यो बीचारी।

मोहि मनि माहे य्युं ही बाई।
मोहि मन से एही ठहिराई।

मै मनि को सम सचरि निवार्‌यो।
इहि प्रजोग इसि प्रग्नि सौ जारौ।

तुमि जाइ ईधनि को ले भावौ।
सांईदास इहि मनि ठहिराई॥११६

जवि सभ सैना प्राग्या पाई।
ईधनि लेन धम बनि धाई।

जाइ ईधनि कौं सभ ही ल्याए।
कुटीमा निकटि म्राण ठहिराए।

तिहि ईधनि मौ प्रग्नि जलाई।
मापति पंगार को पगु ठहिराई।

पगु क्या कहीए निकटि को भावे।
निकटि कहा जो द्रिग निपवि।

द्रिग निपनि क्या कहीये भाई।
तांको हेतु है मति प्रधिकाई।

द्रिष्ट करे तो प्रान तजावै।
भस्म होइ फिरि द्रिष्ट न प्रावै।
द्रिष्ट परिति उपजित मन भासा।
भूमि पाव बहु भाग विमासा।
जानकी सौ प्रभ कहयो पुकारे।
है जानकी ग्रावो तत्कार।
ग्रगिन माहि प्रवेसु करावो।
इमु पावकि महि पगु ठहिरावो।
जो तुमि महि कोऊ दूषणु होई।
तुम को भाणु लागे गी सोई।
जो तुमि को दूषणु नही कोई।
तुम कौ ग्रगिन न लगेगी ऐ होई।
जो दूषनु होइ भस्म करावै।
साईंदास एहि बात बतावै॥१९७

जानकी जवि इहि बिधि सुणि पायो। जसु से करि इस्नानु करायो॥
बहु भूषण ग्रंग को पहिराए। ग्रंबर बहु तिन ग्रंग सजाए॥
ग्राहुति तिहि प्रवेसु कराए। तब ही सुर सकल चलि ग्राए॥
दसरथु रघुपति पहि ग्राए। बिबाएा चढयो सुप सब्द सुनायो॥
जानकी मध्य ग्रगिन ना देवो॥
सकल सुरो ने एहि पुकारा। जो कछु दसरथ कहयो बिचारा॥
जानकी मे तब बचन उचारे। सकल सुरो को दीयो बीचारे॥
तुमि काहे इहि बचन सुनावो। किह प्रजोग तुमि इहि ठचिरावो॥
इहि महि मोह भलो है भाई। मोहि दूषणा सम मिटि जाई॥
ऐसे ही दसरथ सो ग्रापा। हे पित काहे इहि तुमि भापा॥
तोहि क्रिपा करिकोदुख न लागे। तोहि क्रिपा सकला भ्रमु भागे॥
मै प्रवेसु करो इसि माही। साईंदास दुख नाहि संताही॥१९८

जानकी तिहि प्रवेसु करायो। ग्रग्नि माहि जा पगु ठहिरायो॥
ग्रगिन तब ही सीतलता होई। जानकी दुख ना लागो कोई॥
जानकी तिहि महि पगि ठहिराए। मानो सभु ही पुहप बिछाए॥

मानो सलिता माहि ठहिराई। तांके निकटि अग्नि नही आई॥
सभ सना की द्रिष्ट न आही। लोक कहित इमि अग्न जलाई॥
जानकी भस्म भई इसु माही। अति सचरु सना मनि माही॥
जानकी का सतु किनहू न टार्यो। इसि पावक छांको वपु जार्यो॥
अति भचक्रित सभु मनि विस्मावै। ताकी विधि कछु कही नि जावै॥
सभ ही मन महि करति बीचारा। हे प्रभ इहि क्या रचना धारा॥
जानकी की दूपना नही काई। जानकी त प्रभु काह जलाई॥
हे प्रभु कौनु तपासु त कीना। कौनु वासि प्रभ मम धरि सीना॥
तीन दिवसि मिस भई बितीता। जानकी रही अग्नि के भीता॥
हे प्रभ हमि तो सभ बौराए। मांईन्स कहा कहो सुनाए॥१९९

सभ सैना अति मनि विस्माई। तात्काल सीता निकसि आई॥
अति सरूपु क्या रूपु बखानो। ताहू रूप अस्तुति क्या जानो॥
अलोक तिहि सरता कोइ। ताहि रूप सममरि ना कोई॥
तब सभ ही रघपति सो भाखा। कहा हमारा तुमि चित राखा॥
जानकी की तमे पतीआयो। प्रभुने मन का भमु चुकायो॥
जानकी की सीस ते टारे। जानकी को बाल उभारे॥
सो को बुरा मन महि ल्यावै। तांको प्रभ मोह नरकि पठावै॥
हे प्रभ मवि तो सगर भागा। मवि ता तन सगर त्यागा॥
जानकी को प्रभु गृह ले आयो। अति अनन्द सभु मम धुरायो॥
रघपति भमु हृदे त त्यागा। सगर माया तब ही जागा॥
सपद त्याग अधिक सुखु पाया। श्री रघपति न भमु गवाया॥
जो कछु हरि भावे सो हाई। मांईन्स और करे ना काई॥२००

ऋषि सो देखो कह्यो गुसाई। वाल्मीक पूरा ऋषि साई॥
हमिरे मन महि सगर आया। ताहि सिगु पार भाम सुनायो॥
तुमि किरपा करि सगर जाप। तुमि किरपा मन हमि सुख पाय॥
बाल्मीकि किरपा सो भाखा। श्रवन सबद मन माहि राखा॥
माहि कथा तुमि सगर निहारा। तुमिर मनि का सगा टारा॥
तब कहो म किनका रनो। सुन हा ऋषि जो प्रभ ठाना॥
किनकी तुमि पहि पार सुनावन। सो हमि सगर गाई बनावन॥

जानकी जबि पावक महि टारी। पावक न तब ही बहु जारी ॥
भस्म भई तिन प्रान तजाई। भस्म ते रूप कहा प्रगटाई ॥
सूकी लकरी हरी न होई। भस्म ते रूपु भयो ना कोई ॥
कहा भस्म ते मानसु हाई। भस्म ते मानसु भयो न कोई ॥
क्रिपा करि हमि संचरु निवारो। साँईदास परि क्रिपा धारो ॥२१

बालमीक तांको प्रतु दीना। एही संचरु तुमि मनि महि लीनी ॥
सुण हो संचरु तुमि निवारो। तुमिरे मनि को भमु टारो ॥
श्री रघपति जबि बनि को धाए। त्याग अयोध्या बाहिरि भाए ॥
जानकी पावक महि ठहिराइ। इसे रापु सुं भेर भाई ॥
माया की जानकी सग लीए। रघपति गवनु माग को कीए ॥
बन कुटीआ छाइ करि ठहिराए। रावण देत तहा चलि भाए ॥
रावण तांको पस्यो बुराई। पडि लंका माहे ठहिराई ॥
रघुपति तांको मारि ले भायो। रावण की सिहि हतनु करायो ॥
बिधि मे इहि बिधि धुरों बनाई। रावणु जानकी क पडे बुराई ॥
श्री रघपनु तिहू जाइ बिडारे। रावण देत को रघुपति मारे ॥
श्री रघपति मे भगनि बसाई। जानकी माया दी तहा पाई ॥
जानकी माया दी तहा जारी। तात्कास बहु पावक जारी ॥
जानकी जनक सुता निकसाई। जो रघपति तिहि पाहि टिकाई ॥
जबि देखो इहि बिधि मुनी काना। संचरु त्याग भए भनद माना ॥
श्री रघुपति कुटीआ ठहिराए। सांईदास मनि बहु सुख पाए ॥२२

चतुर्दस बर्ष जबि भए बितीता। तब को भाइ परी इहि चीता ॥
प्रतग्या चहु सो पूर्ण भवि होयो। चतुर्दस बर्ष रघुपति बन खोयो ॥
भबि जाइ रघुपति का स भावहि। भाए अयोध्या राज कहावहिं ॥
भरत प्रजा कों कीयो बुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ॥
मैं आवति हो रघपति पाहे। ताहि ल्यावहि नग्रि क माहे ॥
भाग नग्रि महि राज कहावहि। ताके भाग टहिल कमावहि ॥
जबि पर्जा इहि बिधि सुणपायो। सम ही भर्थ के संग उमिडायो ॥
कह्यो धन्न धन्न मति तुम्हारी। हे भ्रत इहि बिधि भली बीचारी ॥
हे भ्रम हमि भी तुमि सग जावहि। रघपति को जाइ दर्सनु पावहि ॥

हे नृप जी कछु विल्मु न लावहु । श्री रघपति जी की ओरि धावहु ॥
आइ राम कौ नम्र ल्यावहि । सांईदास वहुता सुष पावहि ॥२०३

अथ शत्रघन लीयो बुलाई । ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ॥
चलहो रघपति कौं ले आवहि । आए करि रघुपति राज वहावहि
सत्रघनु कह्या वहु भलो भाई । भली बाति तुमिरे मनि आई ॥
भर्थ सकल प्रजा संग लीए । श्री रघपति ओरि तिन्हे पग दीए ॥
चलति चलति रघुपति पाहे आए । सभहू आइ डंडौत कराए ॥
रघुपति भर्थ कौ अंग महि लीना । शत्रुघन को वहु हितु कीना ॥
वहुरो लछमनि मे उर लाए । अधिक भयो सुष मंगल गाए ॥
भर्थ को पूछति श्री रघुराई । अधिक अनंद है कुशल है भाई ॥
भर्थ ने तब ही विनती ठाना । तोहि कृपा सुख सारंग पानी ॥
प्रजा सभ प्रनामु सुनायो । सांईदास तिहि राजु सवायो ॥२०४

भर्थ जोरि करि मुर्षो पुकारा । हे श्री रघपति प्रान अधारा ॥
किर्पा करि चलहो ग्रहि माही । मध्रि अयोध्या त्रिभवन सांही ॥
चलहो चलि करि राजु करावो । हे कौसलपति धूप मिटावो ॥
तौ विनु मौ कोऊ सुखु न पायो । तौ विनु हमि दिनु गणति विहायो
सकल प्रजा तब कह्यो पुकारे । हे प्रभ चलिहो किर्पा धारे ॥
चलहो मध्रि अयोध्या माही । तौ विनु हमि प्रभ वहु दुःख पाही ॥
भर्थ अधिक दुःख हमि कौ दीना ।
जोर जुल्मु प्रभ वहुता कीना ।
रघुपति भर्थ की ओरि तकायो ।
भर्थ तब ही मुख ते उचिरायो ।
हे प्रभ तुमि सभि विधि की जानो ।
मैं तुमि पाह कहा वखानौ ।
प्रजा कौ प्रभ थापु दिखायो ।
कूर कूर तुमि कूक सुनायो ।
भर्थ ब्रह्म भक्त अधिकाई ।
काहू ना ना आसु दिषाई ।

तुम्ह कबहु सुप माही पायौ।
तुमि को कृकति सदा विहायौ।
प्रभा आपु तब ही ते पायो।
अबि कछु कृकणि चितु न लायो।
श्री रघुपति तिहि दीयो थापा।
साईंदास तिहि लीनो भापा॥२०८

भर्थ ने अबि इहि विधि सुण पाई।
हिर्थमाम होठो अधिकाई।
श्री रघुपति मोह आपु न कीना।
इहि करुणा हमिरे परि कीना।
बहुरी प्रभ सौ बिनती ठानी।
मैं बस आवौ सारंग पानी।
किर्पा करि के प्रभ उठि धावो।
मम्रि अयोध्या सौ चितु लावो।
मात कौशल्या बहु दुख पायो।
तोहि अयोग प्रभ बिसबस रायो।
बिल्मु न लावो हो रघुराइ।
मैं तुमि पहि विधि आप सुणाई।
सकल लोक तोह पथ निहारहि।
पसु चिनु मम महि आति बीचारहि।
कवि आवेंगे रघपति राए।
जौ सकसी बिर्पा की पाए।
बार बार प्रम बिनती करहीं।
तोहि पग ऊपरि सिर धरहीं।
मोहि बिनती होइ प्रवाना।
साईंदास तुमि बर्न ध्याना॥२ ६

भय ने अबि इहि वचनु सुनायो।
श्री रघपति मन महि ठहिरायो।

कह्यो भलो वलि हो मेरे भाइ । सोतुमि कह्यो सो मन ठहिराई ॥
श्री रघपति सैना सग लीए । नग्रि अयोध्या को पग दीए ॥
सकल तपसी सो विदथा कीए । नग्रि अयोध्या को मगु लीए ॥
नग्रि अयोध्या के निकट आए । कौसल्या सव ही सुरण पाए ॥
अति अनदु तिन ने सुपु पायो । ग्रहि ग्रहि मगल सभ हू गायो ॥
नग्र अयोध्या भयो सवायो । सूपे विर्छो न फलु पायो ॥
पुहप अधिक तिह त प्रगटायो । कौशल्या जी ले अग लायो ॥
भभ ने तव ही डडोत करायो ॥
जानकी को कौशल्या लीआ । अग माहि आनदु वहु कीआ ॥
लछमण मुखो प्रनामु सुनायो । माता ने ले करि अग लायो ॥
भयो नासु दुख को भेर भाई । आए प्रभ जी रघुपति राई ॥
रोम रोम नग्रि सुप पायो । सांईदास ने हरि जसु गायो ॥२७

श्री रघुपति सिघासन धर्यो । तिलकु राम मस्तकि परि धर्यो ॥
ताहि राज सना सुपु पायो ।
निकटि काहू के दु:ख न आयो ।
जानकी को गर्भु होयो भाई ।
सोई प्रिथम गर्भु है याही ।
धसुर्मास को वह गभु भया ।
जानकी वहु सुपु मनि महि लीआ ।
श्री रघुपति निसि सुप्ना पायो ।
सकल व्रितांतु तिह आप सुरणायो ।
जानकी तटि गगा वनि माही ।
फिर्ते फिर्ते कलोल कराही ।
निसि बीती जवि भअलू होया ।
रघुपति जाग पर्यो तवि सोया ।
करि स्नानु वशिष्ट पहि आया ।
सुप्ना रैन को आपि सुनायो ।
तव वशिष्ट तिहि आपि सुनाई ।
सुन हो प्रभ तुमि रघपति राई ।

तुम्ह कबहु सुप नाही पायौ।
तुमि कौ झुकति सदा निहारौ।
प्रजा थापु तब ही त पायो।
भवि कछु झुकणि चितु न लायो।
श्री रघुपति तिहि दीनो थापा।
सांईदास तिहि लीनो थापा॥२०८

अर्ष ने जवि इहि बिधि सुण पाई।
हिर्षमान होतो अधिकाई।
श्री रघुपति मोह थापु न दीना।
इहि करुणा हमिरे परि कीना।
बहुरो प्रभ सौ बिनती ठानी।
न बल आवौ सारंग पानी।
किर्पा करि के प्रभ उठि आवो।
मग्नि अयोध्या सौ चितु लावो।
मात कौशल्या बहु दुख पायो।
तोहि ब्योग प्रभ बिलख रायो।
बिस्मु न लावो हो रघुराई।
मै तुमि पहि बिधि आप सुणाई।
सकल लोक तोहु पथ निहारहि।
पशु सिशु मन महि बाति बीचारहि।
कबि आवेंगे रघपति राए।
जौ सकली बिर्धा कौ पाए।
बार बार प्रभ बिनती करहीं।
तोहि चर्न ऊपरि सिर धरहीं।
मोहि बिनती होइ प्रवाना।
सांईदास तुमि चर्न ध्याना॥२०९

अर्ष मे जबि इहि बचनु सुनायो।
श्री रघपति मन महि ठहिरायो।

जो भूपनि कहे ताहि करावो। नाना वस्त्र सुम्फ उठावौ॥
जानकी तब ही वचनु उचारा। म वसि जावौ प्रान अधारा॥
जो तोसौ प्रभ मो सिरि होई। मोहि याछा अवरु नाही कोई॥
जो आज्ञा होइ वचन सुनावौ। जो मनु माग सो उचिरेवौ॥
गंगा तटि ऋषि वनिता रहु। तहा तपस्या सौ चितु गहे।
तांके अवर भए पुराने। फाटि गई प्रभ औषि सराने॥
जो आज्ञा होइ तहा मै जावौ। तिहि को अवरि दे फिरि आवौ॥
मेरो मनु प्रभ एही चाहु। साईदास कछु और न चाहे॥२०६

श्री रघपति तब वचनु उचारा। जानकी तो सौ कहो पुकारा॥
चतुदस वर्ष रह्यो वनिवासा। अवि लगि मन की करे प्यासा॥
तुमिरो मनि वांछति वनि ताई। कौनु वाति तै मनि ठहिराई॥
एहि बाति प्रभ दीई वहाइ। केतकि दिन भए मेरे भाई॥
एकु असुर तांको वसु मारो। शिव त्रिसूलु करि तिहि अधिकारी
जवि लगि तिहि कर होइ त्रिशूला। ताहि कोऊ न उतारे भूला॥
सकल प्रजा को बहु दुःख देव। अति विरोधु वहि असुर करेवै॥
रघपति कह्यो कोइसि को मारे। अपुने वलि करि इसहि प्रहार॥
भथ कह्यो प्रभु भी म जावौ। वही असुर सौ युद्ध मचावौ॥
श्री रघपति सब वचनु सुनायो। हे मोहि वीर त बहु दुःख पाया॥
बहुरो लछमन वचन उचारे। म जावो प्रभ प्रान अधार॥
रघपति कहयो तुमि भी न जावो। इहि विधि कर्म चित्तु न लावो॥
तै मे वन महि बहु दुःख पाया। महा कष्टु है तहा कमाया॥
शत्रघनु आइ तिस को मारे। ताहि दैत्य को पकरि पछार॥
शत्रघनु कहयो प्रभ म जावो। तोहि कृपा वाको हति आवा॥
रघपति कह्यो सुना मेरे भाइ। मज्जन को जवि असुर सिधाइ॥
तुमि बाहू क अतरि जावो। शिव त्रिशूलु ले करि ठहिरावो॥
जबि मज्जन करे वहि आव। तुमि सती बहु युद्ध मचावै॥
मारि त्रिशूलु तिसे प्रहारो। ह मोहि वीर जाइ उसि मारो॥
शत्रुघनु सुण इहि उठि धाया। ताहि असुर क आश्रम आया॥
असुर मज्जनि करनि को धायो। शत्रघनु अस्नास तिहि आयो॥

जो सम वनिता लहु बुलाई।
जिपो करी है रमराई।
तिहि ताइ तुमि मोजनु देवौ।
एहि वाति तुमि मनि धरि सेवौ।
एकु मंत्रु मै आपु करावौ। पाछे होम करनि चितु लावौ॥
श्री रघुपति लछमन बुलायो। तासौ प्रस्न मे भाप सुनायो॥
तुमि मिथुला नग्री महि जावो। जनिक कौ इहा बेग ल्यावो॥
जनकु भाइ यस जानकी देपै। अपुन द्रिग भाइ बिधि पेपै॥
गुर सकल मी भाए बुलाई। तुमि जावो हो मेर भाई॥
लछमनु इहि बिधि सुए उठि धाया।
केतकि दिन मै संगु ले भाया।
यग अरंभु करनि चितु भायो।
पडति जोतकी अधिक बुलायो।
पन्ति बेद अधिक उचिरावहि।
अति आनंद सदा सुप पावहि।
चतुर कुंभ जल क भरि रापहि।
पंडति बेद पडनि चितु भापहि।
जमु उमिड्यो दा कुंभ त भाई।
निकस परा बाहिरि बहु भाई।
तव ही वसिष्ट न मुपो उचारा।
हे रघपति सुणु प्राए भभारा।
तोहि ग्रहि बालक दो बलिधाना।
महा पराक्रमी होहि सुजामा।
इहि बिधि कहु यगु पूर्ण कीना।
साईदास सुपु मनि महि लीना॥२०८

पाच मास गर्भु जानकी हायो। जानकी सगु सभा मनि पोयो॥
एकि दिन रामचंद ग्रहि माही। भालसु कीनो मन सुख पाही॥
जानकी पासा है करि माही। अति अनंद बहि पोएण मुमाही॥
श्री रामचंद्रि जी तासी कहृया। हे जानकी तोहि मन क्या सहृया॥

जो भूपनि कहे ताहि करावो। नाना वस्त्र तुम्है उढावौ॥
जानकी तव ही वचनु उचारा। मैं बलि जावौ प्रान अधारा॥
जो तोसौ प्रभ मो सिरि होई। मोहि वाछा अवरु नाही कोई॥
जो आज्ञा होइ वचन सुनावौ। जो मनु मांगे सो उचिरेवौ॥
गगा तटि ऋषि वनिता रहे। तहा तपस्या सौ चितु गहे।
तांके अवर भए पुराने। फाटि गई प्रभ जीथि सराने॥
जो आज्ञा होइ तहा मै जावौ। तिहि को अवरि दे फिरि आवौ॥
मेरो मनु प्रभ एही चाहे। साईदास कछु और न चाहे॥२०१

श्री रघपति तव वचनु उचारा। जानकी तो सौ कहो पुकारा॥
चतुदस वर्ष रह्यो वनिवासा। अबि लगि वन की करे प्यासा॥
तुमिरो मनि वांछति वनि ताई। कौनु बाति तै मनि ठहिराई॥
एहि बाति प्रभ दीई वहाइ। केतकि दिन भए मेरे भाई॥
एकु असुर तांको वसु भारी। शिव त्रिसूलु करि तिहि अधिकारी
जवि लगि तिहि कर होइ त्रिशूला। ताहि कोऊ न उतारे मूला॥
सकल प्रजा को वहु दुख देव। अति विरोधु वहि असुरु करेवै॥
रघपति कह्यो कोइसि को मारे। अपुने बलि करि इसहि प्रहारे॥
भर्थ कह्यो प्रभु जी मै जावौ। वही असुर सौ युद्ध मचावौ॥
श्री रघपति तव वचनु सुनायो। हे मोहि वीरत वहु दुख पायो॥
वहुरो लछमन वचन उचारे। मै जावो प्रभ प्रान अधारे॥
रघपति कह्यो तुमि भी न जावो। इहि विधि कर्ने चितु न लावो॥
तै मे वन महि वहु दुख पाया। महा कष्टु है तहा कमाया॥
शत्रघनु जाइ तिस कौ मारे। ताहि दैत्य को पकरि पछारे॥
शत्रघनु कह्यो प्रभ मै जावौ। तोहि कृपा वाको हति आवौ॥
रघपति कह्यो सुनो मेरे भाई। मज्जन को जवि असुर सिधाइ॥
तुमि वाहू के अतरि जावो। शिव त्रिशूलु ले करि ठहिरावो॥
जवि मज्जन कर्के वहि धावे। तुमि सेती वहु युद्ध मचावै॥
मारि त्रिशूलु तिसे प्रहारो। हे मोहि बीर जाइ उसि मारो॥
शत्रुघनु सुण इहि उठि धाया। ताहि असुर के आश्रम आया॥
असुर मज्जनि कर्मि को धायो। शत्रघनु अस्तल तिहि आयो॥

करि मज्जनु असुर फिरि आया। दाग्रमनु को तिन निर्पाया॥
तासो युद्ध कीनो अधिकाई। विनु दास्त्र किछ बसु न बसाई॥
दाग्रमनु ताहू को मारा। मार त्रिशूल तिहि सीसु विडारा॥
ताहि मार रघपति पहि आयो। साँईदास प्रमाणु सुनायो॥२१०

इकि दिन एकि ब्राह्मण कथा कीमा।
भिक्षा मांगन को चितु दीमा।
माग भिक्षा कछु हाथ नि आयो।
ब्राह्मण अधिक क्रोधु करायो।
दाहुमि भंग स्वानु तिहि आयो।
ताहि बिप बहु क्रोधु उपजायो।
ले सपोटी तांके सिरि मारी।
स्वान को पीड़ भई अति भारी।
कूकति कूकति प्रभ पहि आयो।
प्रभ सौ सभ बिधि आप सुनायो।
मोको इमि ब्राह्मण न मारा।
इसि पूछो तुमि प्राम अधारा।
श्री रघपति बिप को लीडो बुलाई।
हे बिप इसि किउ चोटि लगाई।
कौणु औगुण तेरो इमि कीना।
जो इसि को इहि दुख तै दीना।
बिप कह्यो सुण हो रघुराई। इनि अवज्ञा मोह कीई न काई॥
म्यु ही प्रभ इसि को मारा। इहि सपु तुमि पहि आइ पुकारा॥
तब ही स्वान ने बचनु उचारा। हे प्रभ इसि देहि बडु हमारा॥
ठाकुरि को पूजारा होई। औरु दड देवो नहीं कोई॥
बसिष्ट कह्यो इसि को वर दीना। ठाकुर का पूजारा कीना॥
ब्राह्मण को कह्यो रघुराई। जाहि पूजा ठाकुर कर जाई॥
तुम को स्वान ने इहि बर दीना। जो तै ताहि अवज्ञा कीना॥
ब्राह्मण सेवा का उहि भाया। बसिष्ट स्वान सो फिरि पूछाया॥
हे स्वान तै इमि बर दीना। कहा बड इसि को तै कीना॥

स्वान कह्यो सुण हो गुर मेरे। मै बिधि आयो आगे तेरे॥
म सेवा हरि जी की कर्ता। हरि चरना सेती चितु धर्ता॥
जो कछु प्रभ को आण चडावै। ठाकुरि आगे आण टिकावै॥
सो मै ब्राह्मण अपहि पचावौ। तांसो रखिक मै भी पावौ॥
तिहि रषिकि ते इहि योन पाई। स्वान भयो ही जग परि आई॥
इहि लोभी सभ ही आपि लेव। ब्राह्मण रूपि कौ कछू न देव॥
ठाकुर इसि को योन भ्रमावहि।
चौरासी सप महि उर्भावहि।
इहि प्रजोग म इसि वरु दीना।
हे सतगुर जी मै इहि विधि कीना।
हृदे प्रबोध भइ मति भारी।
ठाकुर इसि बहु योनि दिपारी।
जैसा इनि मोसो प्रभि कीना।
साईंदास ऐसा करि लीना॥२११

इकि दिन श्री रामचद जो सोए।
पहिरि रही निसि उठि चमोए।
पुरि के तब रषिवारे आए।
श्री रघपति सौ डंडात कराए।
श्री रघपति तिहि वचन उचारे।
सुण हो अयोध्या के रषिवारे।
तुमि सदा फिर्ते हो पुर के माही।
मम नामु कैसे लोक उचिराही।
तब बिनती करी अपुने करि जोरे।
हे श्री रघपति जीवन मोरे।
तुमि को नामु जो मुखि उचिराए।
मुक्ता होइ फिरि योन न पाए।
लोक कहा प्रभ तुमि को ध्यावहि।
सुमिरे उस्तति गमु हो आवहि।

करि मज्जनु असुर फिरि आया। सत्रघनु को विन निरषाया॥
तासौ युद्ध कीनो अधिकाई। मिसु सस्त्र किछ वसु न बसाई॥
सत्रघनु ताहू को मारा। मार त्रिसूल तिहि सीसु बिडारा॥
ताहि मार रघपति पहि आयो। साईंदास प्रनामु सुनायो॥२१०

इकि दिन एकि ब्राह्मण क्या कीआ।
भिक्षा मांगन को चितु दीआ।
मांग भिक्षा कछु हाथ नि आयो।
ब्राह्मण अधिक क्रोधु करायो।
दाहुनि मग स्वानु तिहि आयो।
ताहि निर्ष बहु क्रोधु उपजायो।
ले सपोटी ताक सिरि मारी।
स्वान को पीड भइ अति भारी।
कूकति कूकति प्रभ पहि आयो।
प्रभ सौ सभ बिधि आप सुनायो।
मोको इनि ब्राह्मण ने मारा।
इसि पूछो तुमि प्रान अधारा।
श्री रघपति बिप को लीओ बुलाई।
हे बिप इसि किउ चोटि लगाई।
कौनु औगुण तेरो इनि कीना।
जो इसि को इहि दुख तै दीना।
बिप कह्यो सुण हो रघुराई। इनि अवज्ञा मोह कोई न काई॥
य्यु ही प्रभ इसि को मारा। इहि सुनु तुमि पहि आइ पुकारा॥
तब ही स्वान ने बचनु उचारा। हे प्रभ इसि देहि दंड हमारा॥
ठाकुरि को पूजारा होई। और बड देवो नही कोई॥
बसिष्ट कह्यो इसि को बर दीना। ठाकुर का पूजारा कीना॥
ब्राह्मण को कह्यो रघुराई। जाहि पूजा ठाकुर कर भाई॥
तब को स्वान ने इहि बर दीआ। जो तै ताहि अवज्ञा कीआ॥
ब्राह्मण सेवा का इहि भाया। बशिष्ट स्वान सौं फिरि पूछाया॥
हे स्वान तै इमि बर दीना। कहा दंड इसि को तै कीना॥

प्रात भई वधू चलि भाए। रघपति को डंडौत कराए॥
रघपति की विस्मिकि निर्पाया। इनि सबरु मनि माहि लगाया॥
हमि भरि जोवनि है मेरे भाई। प्रात समे हमि उठ्यो न जाई॥
संध्या आपु हमि पहि ना होई। इहि औगुण हमि औरु ना कोई॥
करि जोरे इनि विनती ठानी। हे प्रभ रघुपति सारग पानी॥
जो औगुन हमि ते कोऊ होई। हे प्रभ जी तुमि मेटो सोई॥
हमि बालक कछु बूझहि माही। कहा कहे हमि तुमिरे ताही॥
हे प्रभ हमि परि क्रिपा करावो। साईदास मनि सुप उपिजावो॥२१३

श्री राम चत्रि वधू को भापा।
ह मोहि वीरो कहा चितु रापा।
हमिरी जान प्रान तुमि माही।
तुमि औगुण कीनो कछु नाही।
मैं तुमि को इकि भाज्ञा करहो।
मोहि भाज्ञा मनि मतरि धरहों।
जानकी ते निंद्या हमि होई।
एहि संबरु मनि औद न कोऊ।
इहि निंद्या हमि सुणी न जाई।
तुम सो कह्यो इहि मेरे भाई।
तुमि जानकी की बनि मे जावो।
पहि करि बनि माही छडि भावो।
भर्थ सत्रघन इहि सुण पाई।
करि जोरे मुप भापि सुणाई।
तुमि प्रभ हो भापो जो भावै।
जो काऊ औद इहि बिधि उचिरावै।
ताको खंड खड करि डारहि।
पल माहे हमि ताहि बिडारहि।
सीता सीम कोऊ रीस करावे।
जानकी सर औव कौनु कहावे।

---

१ यहाँ भक्ति की इच्छा करने वाले नवयुवक हृदयों का चित्रण है।

एकनि सा महि आप सुनायो।
हमि इहि ठोरि आवन विनु भायो।
एकि ठोरि कछु भयो ककरा।
हमि ताहू आइ परे तरकारा।
एकि पीछे वनिता क्या कीमा।
आज्ञा पतिकी ना उचि लीमा।
बिनु आज्ञा गइ पित ग्रहि माही।
तिहि पति रोसु कीयो अधिकाही।
ताहि लेन को बहु ना धाया।
तिहि ससुरा दुहिता से आयो।
लोक बडे बडे तिहि संग लीए।
दुहिता पति के ग्रहि पग दीए।
बहु ना आयो मै से आवौ।
ठोहु बडो मै छोटो कहावौ।
इहि प्रयोग दुहिता ल आयो।
अधिक दीनता तिमे करायो।
तिहि दुहिता पति माने नाही। नृप ते बहु इहि ताहि सुनाही।
मै रघपति नाही इहि करहो। जानकी जिउ इसि को ग्रहि बरहो
जानकी असुरो पकी दुराई। षष्ट मास ग्रहि महि ठहिराई॥
रामचंदु तिम को ले आयो। फिरि करि ग्रहि महि आप बहायो
बहु राजा इहि तिहि बनि आवें। राजद्वार इहि बात समावे॥
मै गरीबु मो सौ नही होई। ऐसी बाति करे नही कोई॥
वांको है भ्रम कछु न आपा। आज्ञा बिनु कछु मन ना रापा॥
नाहि त हमि वांको प्रहार्त। सांईदास इहि बात उचार्त॥२१२

जबि रघुपति इहि बिधि सुणपायो। अति मै चकित ममि मनि बिस्मायो
अपुने ममि महि लीयो बीचारी। मोकौ कठनि बनी अति भारी॥
जानकी कछ औगुणु ना कीयो। कछु औगुणु ना ममि महि लीयो॥
कैसे करि इसि को तजि देवो। इसि को बूप कैसे मैं सेवी॥
ऐसे ममि महि भत बीचारा। थी कौसापति प्रान अधारा॥

प्राति भई वधू चलि आए। रघपति को डंडौत कराए॥
रघपति कौ बिस्मिकि निर्पाया। इनि सचरु मनि माहि लगाया॥
हमि भरि जोवनि है मेरे भाई। प्राति समे हमि उठ्यो न जाई॥
संध्या आपु हमि पहि ना होई। इहि औगुण हमि औरु मा कोई॥
करि जोरे इनि विनती ठानी। हे प्रभ रघुपति सारग पानी॥
जो औगुण हमि ते कोऊ होई। हे प्रभ जो तुमि मेटो सोई॥
हमि बालक कछु बूझहि नाही। कहा कहे हमि तुमिरे ताही॥
हे प्रभ हमि परि क्रिपा करावो। साईदास मनि सुख उपिजावो॥२१३

श्री राम चद्रि वधू को आपा।
हे मोहि वीरो कहा चितु राषा।
हमिरी जान प्रान तुमि माही।
तुमि औगुण कीनो कछु नाही।
मै तुमि को इकि आज्ञा करहो।
मोहि आज्ञा ममि भतरि धरहों।
जानकी त निषा हमि होई।
एहि सचरु मनि औरु म कोऊ।
इहि निषा हमि सुणी न जाई।
तुम सौ कह्यो इहि मेरे भाई।
तुमि जानकी को बनि ले जावो।
पडि करि बनि माही छडि आवो।
मर्थ सात्रघन इहि सुण पाई।
करि जोरे मुख आखि सुणाई।
तुमि प्रभ हो आपो जो भावे।
जो काऊ औरु इहि बिधि उचिरावे।
ताको खड खड करि डारहि।
पल माहे हमि ताहि बिडारहि।
सीता सीस कोऊ रीस करावे।
जानकी सर औरु कौनु कहावे।

---

१ यहां भक्ति की इच्छा करने वाले नवयुवक हृदयों का चित्रण है।

एकनि ता महि स्राप सुणायो।
इमि इहि ठोरि मावत बिदु सायो।
एकि ठोरि कछु भयो फकरा।
इमि साहु भाइ परे तत्कारा।
एकि पीछे पनिता भमा कीमा।
माझा पतिकी मा उसि मीमा।
बिनु माझा गइ पित ग्रहि माही।
तिहि पति रोसु कीया ग्रधिकाही।
ताहि सेन को यहु ना भाया।
तिहि ससुरा दुहिता ले भायो।
लोक बडे बडे तिहि सग लीए।
दुहिता पति के ग्रहि पग दीए।
यहु ना भायो मै ले जावौ।
छोहु वडो मै छोटो कहावौ।
इहि प्रयोग दुहिता ले भायो।
भधिक दीनता तिने करायो।
तिहि दुहिता पति माने नाही। नृप ते यहु इहि ताहि सुनाही।
मै रघपति नाही इहि करहो। जानकी जिउ इसि कौ ग्रहि बरहो
जानकी ससुरो पडी दुराई। पष्ट मास ग्रहि महि ठहिराई॥
रामचंदु तिन को ले भायो। फिरि करि ग्रहि महि भाय बहायो
यहु राजा इहि तिहि बनि भावै। राजद्वार इहि बात समावै॥
मै गरीबु मो सौ नही होई। ऐसी बाति करे नही कोई॥
ताको है भ्रम कछु न भापा। माझा बिनु कछु मन ना रापा॥
नाहि त हमि ताकौ प्रहार्त। साईदास इहि बात उचार्त॥२१२

जबिरघुपतिइहिबिधिसुणपायो। मति मै चक्रित मनि मनि बिसमायो
भपुने मनि महि लीयो बीचारी। मोकौ कठनि बनी भति भारी॥
जानकी कछु औगुणु ना कीयो। कछु औगुणु ना मनि महि लीमा॥
कैसे करि इसि को तजि देवो। इसि को दूप कैसे मै सेवौ॥
ऐसे मनि महि करत बीचारा। श्री कौसापति प्रान भधारा॥

अवर प्राण रथ ऊपरि डारे। बहुरो मनि महि सोयो बीचारे॥
लछमनि सौ फिरि बचन उचारे। सुण हो लछमनि बीर हमारे॥
कौशल्या पग पर्स के आवौ। पाछे हमि तुमिरे संग जावौ॥
जानकी कौशल्या पहि आई। बिनती मुख ते आप सुणाई॥
गंगा तटि जाणा हो जावौ। छिन मात्रि माहे फिरि आवौ॥
कौशल्या जानकी सौ भाषा। हे जानकी तें क्या चिति राषा॥
नागे पग कैसे बनि जावहि। बन माहे कैसे पग चलावहि॥
जानकी तांको इहि प्रतु दीना। मै बन गवनु अधिक है कीना॥
कौशल्या से आज्ञा पाई। तात्काल रथ परि तब आई॥
लछमन धौल्ह पूत को मारे। धौल्ह पूत पग आगे न डारे॥
बसुधा ते उठि चले न होही। मनि माहे बहुता बहि रोही॥
जबि लछमन बहु जतन कराए। धौल्ह पुत्र आगे तब आए॥
चलति गंगा तटि परि आए। लछमन रथ कौं दीजो तजाए॥
त' रथु तटि त्याग औरु ठौर आए। तब जानकी ने बचन सुनाए॥
बनिता ऋषि की उति ठौर रहे। करति तपस्या ऊहां माहे॥
तूं मोको कहु कहा ले जावे। मोको इहि बिधि किउ न बतावे॥
असगुन बुरे सीता मग होही। जानकी मन माहे बहु जोही॥
दाहुणा द्रिगु सीता कपावे। जानकी मन महि सोचु करावे॥
एहि असगुन मोको दुख देवे। कछु चिंता मोको उपजेवे॥
महा बिकटि बनि माहे आए। तब लछमन ने बचन सुनाए॥
सीसु तले करि मुष ते भाषा। श्रीराम बनिवासु दीयो तुझे भाषा
जानकी सुमति गई मूर्छाई। ब्याकल होइ धनि गिराई॥
तांके प्राण गए निकसाई। लछमन तिसों बहु दुख पाई॥
छाया करि सिरि परि ठहिराजो। तांके द्रिग सों नीर बुराजो॥
रुदनु करे अरु पवनु झुलावे। मन माहे बहुता बिस्मावे॥
जानकी फिरि आई सुधि माही। रुदनु करति द्रिग नीर बुराही॥
लछमन सौ चित बचनु सुनायो। कौनु अवज्ञा मो तम लायो।
रघपतिमोहु बनवासु किउ दीयो। मो सौ रघपति इहि क्या कीयो॥
हे लछमन मोहि देहु बताई। सांईदास तुझे राम दुहाई॥२१

जबि इनि ने इहि बाति उचारी।
श्री रामचंदि सिहि कीठो बीचारी।
दो कार्ज तुमि देखौ भताई।
जो नीका सो करहो माई।
क सीता को बनि मे आवो।
मही सो हमिरो सीसु कटावो।
इनि से औरु बाति कछ नाही।
इहि मे भापी है तुमि ताही।
जबि रघुपति इहि बचनु सुनायो।
तब बहु सभ मन महि बिस्मायो।
लछमण रवम कति बितु सीठो।
जानकी ओरि गवनु तिन कीठो।
चलति चलति जानकी पहि भायो।
जानकी ने लछमणु निर्पायो।
ममि माहे इहि लीठो बीचारी।
एहो हुदे भतरि उनि बारी।
एक दिन मैं रघपति सो भापा।
सोई रघपति मन महि रापा।
गंगा के तटि प्रभ म जावौ।
ऋषि बनिता भंबरि देइ भावौ।
इहि प्रजोग रघु भायो है माई।
भनरि जामी रघुपति राई।
एहि सीता मनि महि धारी।
औरु ताहु मनि माहु बीचारी।
लछमम सो तिन बचनु सुनायो।
हे लछममि बहु मला कीठा भायो।
तुमि पता होउ मैं भंबर स्थावौ।
साईंदाम तुमिरे संग भावो॥२१४

जानका कहि गई प्रहि के माही। भति भनदु ताहू मनि माही॥

भवर भाए रथ ऊपरि डारे। बहुरो मनि महि सीयो वीचारे॥
लक्षमनि सौ फिरि वचन उचारे। सुए हो लक्षमनि मीर हमारे॥
कौशल्या पग पस के भावो। पाछे हमि तुमिरे सग भावौ॥
जानकी कौशल्या पहि भाई। विनती मृप ते भाप सुणाई॥
गगा तटि भाया हो जावौ। छिन मात्रि माहे फिरि भावौ॥
कौशल्या जानकी सौ भाषा। हे जानकी तै क्या चिति राखा॥
नागे पग कैसे वनि जावहि। वन माहे कैसे पग चलावहि॥
जानकी ताको इहि प्रतु दीना। म वन गवनु भधिक है कीना॥
कौशल्या से भाज्ञा पाई। तात्काल रथ परि तब भाई॥
लछमन चौल्ह पुत्र को मारे। चौल्हु पुत्र पग भागे न डारे॥
वसुधा ते उठि पड़े न होही। मनि माहि बहुता वहि रोही॥
भवि लछमन बहु यत्न कराए। चौल्ह पुत्र भागे तब भाए॥
चलति गगा तटि परि भाए। लक्षमन रथ कों दीठो तजाए॥
त रथु तटि त्याग चौरचोर धाए। तब जानकी मे वचन सुनाए॥
वनिता ऋषि की वति ठौर रहे। करति तपस्या जहां भहे॥
तू मोको कहु कहा ल भावे। मोको इहि विधि किउ न बतावे॥
असगुन बुरे सीता भग होही। जानकी मन माहे बहु जोही॥
दाहणा द्रिगु सीता कपावे। जानकी मन महि सोचु करावै॥
एहि भसगुन मोको दु ख देवें। कछु चिता मोको उपजेवें॥
महा बिकटि बनि माहे भाए। तब लक्षमन मे वचन सुनाए॥
सीसु तले करि मृप ते भाषा। श्रीराम बनिवासु दीमौ तुम्हे भाषा
जानकी सुनति गई मूर्छाई। व्याकल होइ धनि गिराई॥
ताके प्राण गए निकसाई। लक्षमन निर्पो बहु दु ख पाई॥
छाया करि सिरि परि ठहिरानो। तांके द्रिग सों नीरु बुरानो॥
रुदन करे भरु पवनु भुलावे। मन माहे बहुता विस्मावै॥
जानकी फिरि भाई सुधि नाही। रुदनु करति द्रिग नीर बुराही॥
लक्षमन सौ चित बचनु सुनायो। कौनु भवज्ञा मो वन लायो।
रघपति मोहु बनवासु किउ दीयो। मो सौ रघपति इहि क्या कीयो॥
हे लक्षमन मोहि देहु बताई। सांईनाथ तुम्हे राम दुहाई॥२१२

लछमन छांडी दीओ बीचारा। जानकी रघपति इहि मन धारा॥
कह्यो हमारी निंदा होई। जानकी ते बिधि औरु न कोई॥
इहि प्रयोग बनबासा पठायो। हमिरो कह्योमनि मा ठहिरायो॥
पगधरि सीसु लछमन उठिआयो। जानकी को बन महि छडि आयो॥
बन महि जानकी रुदनु करावै। इति उति जोरि उठि करि धावै॥
मृग बनिता सम ही मिल आई। जानकी पहि आइ करि ठहिराई॥
मोरि अधिक ताहू पहि आए। निसि इकि ब्रिछ तले ठहिराए॥
तीन दिवसि निसि ऐसे भए। जानकी बन माहे ही रहे॥
चतुरदिवसि पाछे ऋषु आयो। बाल्मीक तिहि नामु सुनायो॥
कंद मूल बन ते चुण लयै। उदरि पूर्ना जाइ करेवै॥
बाल्मीक ऋषि नेत्र निहारे। स्त्री निर्पी तिन तत्कारे॥
डोलति फिरति है बन के माही। कौनु रूप फिरे बनि मंझाही॥
बाल्मीक चल्यो निकटि आयो। जानकी सो तिन बचनु सुनायो॥
हे पुत्री तू कौनु कहावहि। इसि बन माहे काहे आवहि॥
जानकी ने तब बचनु उचारा। हे पिता सुण हो बाति हमारा॥
रघपति बनिता सीता नामा। म फिरहो बन महि इहि ठामा॥
रघपति मोहि बनिबासु दिवायो। एहि कामु तिनि मोहि करायो॥
बाल्मीक ऋषि इहि सुण पाई। मुख अपुने इहि उचराई॥
तोहि काज महि मै भी आयो। तोहि कार्जु ऋषि जन्म रचायो॥
चिंता कछ मन महि मा धरहो। मनु डोलाबन भूल न करहो॥
गोबिंदु समु कछु मनो कराए। सांइदास सम दुख मिटाए॥२१५

ऋषु सीता को संग ल्याया। ऋषि के सुत तिन अधिक बुलाया
तिन को आग्या दीनी। एहि आग्या ताहू सो कीनी॥
कछु कंडा जाइ बन ते ल्यावो। ईहा तुमि इकि कुटी बनावो॥
जहा आस्रम सो सीता रहु। जानकी श्रीराम भर्ता महे॥
बालक कछ कंडा ले आए। ताहू आइ तिह कुटीआ छाए॥
बाल्मीक कह्यो सीता ताई। हे पुत्री तू रहु इसि माही॥
जो कछु कंदमूल ले आवहि। प्रिथमहि सीता पहि ठहिरावहि॥
पूरण दिवस भए गर्भि ताई। जानकी गर्भु पूर्न भयाही॥

रोहणी नक्षत्र निस समे माही। जानकी को गर्भ बाहिरि आही ॥
जन्म लीयो बालकु प्रगटायो। वनिता ऋष की मगलु गायो ॥
बालक ऋषयो फेरे दौरे आए। बाल्मीक सो आइ सुनाए ॥
ऋषि तोहि दुहिता बालकु जायो। बाल्मीक तब ही चलि आयो ॥
सऊ नामु बालक का राषा। बाल्मीक ऐसे ही भाषा ॥
जानकी ने बहुता सुष पाया। साँईदास तबि मगलु गायो ॥२१७

बाल्मीकु स्नान को धायो। प्राति समे इहि बचनु उचिरायो ॥
हे पुत्र कुंभु जल भरि आने। मेरो कहयो हुदे मांझि पछाने ॥
इहिविधि कहि स्नान को धायो। जानकी इहि विधि मन ठहिरायो ॥
जानकी कुम को लीयो उठाई। जमु लेने ताई वहु धाई ॥
मनि माहे तिनि सोओ बीचारी। अवि ही भावनि इसि ने धारी ॥
जो बालकु पासनि पाइ जावो। मैं जलु लेने ताई धावौ ॥
फिर्ते ब्याघ्र अधिक इहि ठौरा। मतु उठाइ पडहि सुतु मोरा ॥
गोद कीए ले करि मै आवो। इहि कुंभु जल सो भरि ले आवौ ॥
सीता गोद लीए उठि धाई। चली चली जल के तटि आई ॥
बाल्मीकु स्नानु करि आयो। करि स्नानु अपुने ग्रहि आयो ॥
पासनि महि बालकु ना देषा। बालिक कौ ऋषि ने ना पेषा ॥
बाल्मीकि मनि महि बीचारा। महा कठनि बनी अति भारा ॥
जानकी कौ पति दीयो निकारा। सुतु इसि को अवि ही किनमारा ॥
जो गोबिंद इसि क्रिपा करिदीना। तासौ जानकी बहु हितु कीना ॥
अबि उसि कौ किने पडयो दुराई। जानकी सुण विधि बहु दुःख पाही
ताहि ब्योग उहु प्रान तजावे। इहि मोको मा बणि आवे ॥
बाल्मीक मन महि इहि धारी। साँईदास प्रगटि बीचारी ॥२१८

बाल्मीक ने कुशा मंगाई। ले कुशा करि माहे ठहिराई ॥
ऋषि ने पुतला ताहि बनायो। बहु पुतला पासनि महि पायो ॥
अंबर ले तिहि ऊपरि डारा। तांकौ पासन माहि सवारा ॥
दौ घरी पीछे सीता आई। जमु भरि कुम कौ सग ल्याई ॥
बाल्मीक जानकी सो भाषा।
पुत्री बालकु तोहि कहा भाषा।

जानकी ने सब बचनु उचारा।
हे पिता इहि है बालकु हमारा।
मैं इसि को सग म करि भाई।
तब बाल्मीक बिगस्यो अधिकाई।
हिर्षमान हो बचनु उचारा।
हरि किर्पा ते मै इकु धारा।
इहि कुपा ही ते प्रगटायो।
इसि को नामु मै कुसू धरायो।
जानकी सुण बिधि बहु हिर्षाई।
भलो भयो पिता धाइ सुणाई।
इसि बालक ताइ भी पारो।
इसि सा हेतु अधिक म धारौ।
जानकी महा अधिक सुपु पायो।
साईदास कुसू द्रिष्ट आयो॥२१६

बालक चतुर्बरपि के होए। सीता ससे मन ते पोए॥
बाल्मीक ने भापि पठायो। सुरपति ताई एहि सुणायो॥
कामधेनि को देहि पठाई। एहि आग्या हमिरी तुमि भाई॥
सुरपति जबि इहि बिधि सुण पाई। कामधेन तिन दीई पठाई॥
बाल्मीक ऋषि सीठो बुलाए। औरु अधिक बिधि ताहि सदाए॥
यग्य कीया ऋप ने अधिकाई। जो कोऊ मांगे सोऊ पसाई॥
कामधेन त वाछ्या करै। कामधेनि से आगे धरै॥
अति मिष्टन भोजन पसायो। जो जो किन्हू बांछ्यो सोऊ पायो॥
रषि सो ऋप ने बचनु सुनायो। जानकी के गर्भ ते उपिजायो॥
श्री रामचद के सुत है भाई। इहि बिधि मैं तुम्है आप सुणाई॥
ज्नो तुमि धन्य देवो हमि ताई। एहि बिधि समभिसेहु मनि भाई॥
रव अपुने बालक सो भापा। द्रितीया धन्यु ल्यावो भापा॥
जो सम धन्य से भाछा होई। तुमि भावो मेरे पहि मोई॥
जबि रव की आग्या उनि पाई। धन्य आइ आने उनि भाई॥
आण दीए उनि बालक ताई। धन्य भले नीके अधिकाई॥

बाण ऋषीश्वर औरहि दीने। आसर्वादु सब ही उनि कीने।।
धर्मसि से जेते बाम बनावै। अधिक होहि फिरि घटि ना जावै
इहि असीर्वादु तिहि कीना। साँईदास तिहि विद्या दीना ।।२२०

लछमण जानकी को ले आया।
बन महि छाडि ताहि उठि धाया।
श्री रामचंद मन महि इहि मानी।
सा गुर किर्पा ते सकल बपानी।
जानकी प्राण तजे होवहिगे भाई।
इकि दिन तिह पाप मोह ग्रासे आई।
गुरि बशिष्ट सों आप सुणायो।
अस्वमेध मोहु यज्ञ करावो।
पुत्र सीता को हमि लेजाई।
नाहि ति इकि दिन आइ असाई।
वशिष्ट कह्यो रघपति भलो आपा।
मम माहे विधि आछो रापा।
बिनु बनिता यज्ञ होवै नाही।
हमि तुमि को कैसे यज्ञ कराही।
रामचंद तब बचनु उचारा।
सुण हो गुरु जी बात हमारा।
जानकी पुतली कनक बणावो।
बांवे अंग हमिरे ठहिरावो।
जब रघपति इहि बचनु सुनायो।
गुर बशिष्ट सब ही सुण पायो।
कनक पुतली तब हि बणाई।
श्री रामचंद बांवे अंग ठहिराई।
जो कछु बेद मिजाद बताई।
श्री रघपति ने कीना साई।
जो कोई गति अपूनी कीया सोरहि।
साँईदास हमि होमै लोरहि ।।२२१।।

जानकी ने तब बचनु उचारा।
हे पिता इहि है बालकु हमारा।
मै इसि को सग ले करि भाई।
तब वाल्मीक बिगस्यो अधिकाई।
हिर्षमान हो बचनु उचारा।
हरि किर्पा ते मै इकु धारा।
इहि कुशा ही ते प्रगटायो।
इसि को नामु म कुसु धरायो।
जानकी सुण बिधि बहु हिर्षाई।
भलो भयो पिता बात सुणाई।
इसि बालक ताई भी पारो।
इसि सो हेतु अधिक मै धारो।
जानकी महा अधिक सुखु पायो।
साईदास कुसु ब्रिह्म आयो॥२११

बालक चतुर्बर्षि के होए। सीता सखे मन ते पोए॥
वाल्मीक म आपि पठायो। सुरपति ताई एहि सुणायो॥
कामधेनु को देहि पठाई। एहि आज्ञा हमिरी तुमि भाई॥
सुरपति जबि इहि बिधि सुण पाई। कामधेन तिन दीई पठाई॥
बाल्मीक ऋषि सीझो बुलाए। औरु अधिक बिधि ताहि सदाए॥
यज्ञ कीयो ऋष ने अधिकाई। जो कोऊ माथे सोऊ पसाई॥
कामधेन ते वाछा करें। कामधेनि से आये धरें॥
अति मिष्टन भोजन पसायो। जो जो किन्हूं बाछ्यो सोऊ पायो॥
रबि सौ ऋप ने बचनु सुनायो। जानकी के गर्भ ते उपिजायो॥
थी रामचद के पुत है भाई। इहि बिधि मै तुम्है आप सुणाई॥
दो तुमि धन्य देवो हमि ताई। एहि बिधि समझिलेहु मनि माई॥
रब प्रभुने बालक सौ भाया। द्वितीया धन्यु ल्यावो आपा॥
जो सम धन्य स आज्ञा होई। तुमि भालो मेरे नहि सोई॥
जबि रब की आज्ञा उनि पाई। धन्य बाह माने उमि भाई॥
बाण दीए उमि बालक ताई। धन्य भले नीके अधिकाई॥

बाण ऋषीश्वर औरहि दीने। आसर्बादु सब ही उनि कीने।।
वर्गसि ते जेते बाण चलावै। अधिक होहि फिरि घटि ना आवै
इहि अशीर्वादु तिहि कीना। सांईदास तिहि विद्या दीना।।२२०

लछमण जानकी को ले आया।
बन महि छाडि ताहि उठि आया।
श्री रामचंद मन महि इहि मानी।
सो गुर किर्पा ते सकल बपानी।
जानकी प्राण तजे होवहिगे भाई।
इकि दिन तिह पाप मोह ग्रासे भाई।
गुरि वशिष्ट सौं आप सुणायो।
अस्वमेध मोह यज्ञ करायो।
तुम सीता को हमि तेजाई।
नाहि ति इकि दिन धाइ प्रसाई।
वशिष्ट कह्यो रघपति भलो आषा।
मन माहे बिधि भाख्यो राषा।
बिनु वनिता यज्ञ होवै नाही।
हमि तुमि को कैसे यज्ञ कराही।
रामचंद तब बचनु उचारा।
सुण हो गुर जी बात हमारा।
जानकी पुतली कनक बणावो।
बावे अंग हमिरे ठहिरावो।
जब रघपति इहि बचनु सुणायो।
गुर वशिष्ट तब ही सुण पायो।
कनक पुतली तब हि बणाई।
श्री रामचंद बावे अंग ठहिराई।
जो कछु बेद म्रिजाद बताई।
श्री रघपति ने कीना साई।
जो कोई गति अपुनी कीआ लोरहि।
सांईदास समि हौमैं छोरहि।।२२१।।

भभ महूर्ति भस्तु निकारा। श्री रघुपति प्रान पधारा॥
छोडि दीयो वसुधा जिण भावै। तिहि पाछे प्रभु यग्र करावै॥
दक्षिण पश्चिम सभु फिरि भायो। कहु ठौरि तिनि ठाकि नि पायो॥
धनधनु तिहि भयो सहाई। जहा भस्व जावै पाछे जाई॥
ताहि सग समा बहु भारी। ता की उस्तति कहा बीचारी॥
महा बलो तांबे सग भाए। नामु कहा कहा चित न भाए॥
मो पहि नामु कहा गिणे पाही। हे साधो समझो मनि माही॥
पडिति किनी न मोहि सुणायो। गुर किर्पा यहु भाणु बनायो॥
मिभ अपार कवनु गति पावै। रामग्रम कहा उपिभावै॥
बिनु किर्पा कछु होवै नाही। बिनु सतगुरु के भए सहाही॥
जो कहू भूल परी होइ भाई। साईदास तुमि लेहु बनाई॥२२२

भस्तु बाल्मीक भाश्रम भायो।
छिनु इकि भस्तु ताहू ठहिरायो।
कुसू बालि ब्रह्मण सग लीए।
एकि पुसवारी महि पग दीए।
भस्तु ताहू के भागे भायो।
तिहि मस्तक परि पतीआ लिपाया।
जग महि गर्भ कौशल्या भाई।
तिन जाए श्री रघुपति राई।
उौरि गर्भ कैसे काम नि भावहि।
कौशल्या सरिमाहि कहावहि।
भवि कुसू इहि लिख्यो पडि लीआ।
महा क्रोधु हूवे महि जीआ।
सीता गर्भु कहो क्या भया।
कौशल्या गर्भु जो सिरा सया।
भस्व पकिरि पट केसौ बांधा।
जैस मीन बधक ने फांधा।
ब्राह्मण सुत वहु इहि क्या करही।
काहू इहि बिधि मनि महि भरही।

मसे महूर्ति भस्व भिकारा। श्री रघुपति प्रान भधारा॥
छोडि दीयो वसुधा जिण भावै। तिहि पाछे प्रभु यज्ञ करावै॥
दक्षिण पश्चिम सभु फिरि भायो। कहूँ ठौरि तिनि ठाकि नि पायो॥
शत्रुघनु तिहि भयो सहाई। जहा भस्व जाय पाछे भाई॥
ताहि संग सैना बहु भारी। तां की उस्तति कहा बीचारो॥
महा बली तांके सग भाए। नामु कहा कहा चित न भाए॥
मो पहि नामु कहा गिर्ने जाही। हे साधो समझो मनि माही॥
पढिति किनी म मोहि सुणायो। गुर किर्पा यटु भाणु वनायो॥
सिध भपार कवनु गति पावै। रामग्रंथ कहा उपिमावै॥
बिनु किर्पा कछु होवै माही। बिनु सतगुरु के भए सहाही॥
जो कहू भूल परी होइ भाई। सांईदास तुमि लेहु बनाई॥२२२

भस्वु बाल्मीक भाश्रम भायो।
छिनु इकि भस्वु ताहू ठहिरायो।
कुसू बासि ब्रह्मण सग लीए।
एकि पुसबारी महि पग दीए।
भस्वु ताहू के भागे भायो।
तिहि मस्तक परि पतीभा लिपायो।
जग महि गर्भ कौशल्या माई।
तिन जाए थी रघिपति राई।
ठौरि गर्भ कैसे काम नि भावहि।
कौशल्या सरिमाहि कहावहि।
जवि कुसू इहि लिख्यो पढि लीभा।
महा क्रोधु हुवे महि कीभा।
सीता गर्भु कहा क्या भया।
कौशल्या गर्भु जो लिख सया।
भस्व पकिरि पट कैसो बांधा।
जैसे मीन बमन मे फांधा।
ब्राह्मण सत कहे इहि क्या करही।
काहू इहि बिधि मनि महि भरही।

सेना मे इकु लोक पठायो।
अस्व पोल्हणि की तिम चितु लायो।
कुसू बाणु मे तांसो मारा।
मारि बाणु तिसि सीसु उतारा।
बहुरो और पु आगे आयो।
कुसू बाणु सधि हाथु कटायो।
दस सहस सैना जो आई। सगली कुसू ने मारि चुकाई॥
बहुरो तिस को भाई आयो। ताकी सेना है अधिकायो॥
तिन आइ युद्ध कीनो अति भारी। अत समे कुसू वहि भी मारी॥
केवल आप फिरि पीछे आए। शत्रुघन पहि आइ ठहिराए॥
शत्रुघन को तिनहि सनायो। एक बालक सभ सैन हुतायो॥
है अस सभ सैना उनि मारी। साईंदास कहा कहो बीचारी ॥२२३

शत्रुघन जबि ईहि सुण पायो। सेना संग लई उठि धायो॥
आइ कुसू को बाणु लगायो। कुसू बाणु पायो मूर्छायो॥
ताहि भागि रथ ऊपरि डारा। अस्व ले आगे को पगु धारा॥
बालक आए सीता पाहे। हे जानकी सुण ले मनि माहे॥
कुसू अस्वु काहू बधि लीआ। हमि बहुता प्रबोधनु कीआ॥
काहे परि अस्व को करु पावै। काहे को इहि कामु कमावै॥
हमिरो कहा तिन मनि ना कीना। परि अस्व को तिन ने बंधि लीना
पाछे से सैना बहु आई। सकल सैन तिहि मारि चुकाई॥
पाछे से इकु राजा आयो। तिन ने कुसू को बाणि चलायो॥
जानकी इहि सुण करि मूर्छाई। मूर्छा होइ करि धरनि गिराई॥
छिन एकि महि फिरि सुधि महि आई। मन अंतरि बहु बहु बिस्माई॥
कहा करो जबपि भी ग्रहि माही। लऊ गियो है बनि के माही॥
ऐसे ही संचरु मनि धारा। लऊ आइ निकस्यो ततकारा॥
सकली आण करे ठहिराए। जानकी सौ तिन बचनु सुनाए॥
हे माता काहे बिस्मावै। किहि प्रजोग तू हृदे डुलावै॥
तब जानकी ने बचनु उचारा। हे सुत संचरु इहि बिधि धारा॥
तोहि बधु अस्व किसे बंधायो। पाछे अस्व को साईं धायो॥

प्राण जानकी आगे डारे। जानकी न लीने तरवारे॥
जानकी सुख देखि हिर्याई। साइदास कछु कहा न जाई॥२२६

जो जीवति रहे सना माही। आए अयोध्या रघपति पाही॥
तिनहि पुकारि कह्यो रघुराई। हमि तुमि को कहु सुणाई॥
तोहि अस्व पूर्व दक्षिण धायो। पश्चिम सौ उत्तर फिरि आयो॥
चतुदिसा प्रभ श्री फिरि आए। कहू ठौर हमि ठाकि न पाए॥
जिन देख्यो तोहि मामु पठायो। नमिस्कार कीनो हितु लाया॥
जहा जाइ कोऊ निकटि न आवै। दूरि से देखे सीसु निवावै॥
है प्रभ प्राग निकनि अवि आए। ईहा प्रभ हमि बहु विस्माए॥
एकु बाल्कु बन महि ठहिरायो। द्वावश बप अवस्ता पायो॥
तिन ने अस्व पकरि बधि राषा। तासौ हमि ने बहुता भाषा॥
अस्व न दीना युद्ध करायो। सकल सैन तिनि मारि मुकायो॥
पाछे शत्रघन तहा आए। युद्ध करनि को तिन पितु दए॥
शत्रघन बाहि बाण चलाया। जसि बाल्क ताई मुर्छायो॥
ताहि बांधि के रथ परि डारा। हे प्रभ इति आवन पितु मारा॥
पाछे एक बधू तिहि आयो। एक बर्षु छोटो के अधिकायो॥
बाण सांधि सना बहु मारी। ता की भुज महि था बलु भारी॥
शत्रघन कौ हनि मूर्छा कीना। अपुनो बीर छडाइ करि लीना॥
जोर साइ प्रभ गृह को धायो। साईदास विधि आप सुणाया॥२२७

श्री रघपति जदि इहि सुण पायो। कह्यो मूठ काहू उचिरायो॥
भूत प्रेत तुम देख्यो होई। ऐसा और उहा नही कोई॥
शत्रघन के को निकटि आवै। एहि कमु कहु कौनु करावै॥
फरि तिन्हूं ने बात चलाई। हे कौसलपति सत सहाई॥
भूत प्रेत भ्रम कहा ठहिरावै। ताहू दर्सन रहिणा ना पावै॥
हमि सच्चु कहित हो रघुराइ। झूठ न कहिति हो तुमहि दुराई॥
श्री रामचद सबरु मन धारा। शत्रघन को बलु बहु भारा॥
महाबली तिनि असुर बिडार्यो।
ताको मूर्छा जिनि करि डार्यो।

धजा गिरी रथ ताहि पराई। धनि परे आपे ही भाई॥
टूटि गई जो गिरि करि परी। सैना सम विसमक मन भरी॥
धनमथणु भाग को धायो। मांईनास सऊ मिकटि आयो॥२२५

सऊ थाप करि बांण चलाए। सग्राम ठौरि आइ ठहिराए॥
इहि मना तिहि बाण चलाए। सऊ बाण तिहि टूकि कराए॥
सऊ बाण पिच करि मार्या। सनापति का रथु कटि डार्यो॥
तीक बाण तिहि श्रवणहि मार्यो।
बहुरि मारि तीहि सीसु उतार्यो।
सभ सैना ताकी सऊ मारी।
सऊ की बसु भुज मे अति भारी।
ताहि बीर गज परि चढि आयो।
प्रिथमे तांको मजिंद्र गिरायो।
पाछे से तिहि सीसु उतारा।
बाण सभि ताहू को मारा।
जबि यह गिर्यो धनमथणु धाया।
चतुर बाण तिन आण चलायो।
सऊ के मस्तिकि परि तिन मारे।
तब सऊ तांसो बचन उचारे।
एही बसु तुमि को सा भाई।
पेख्यो बाणु अधिक बसु साई।
पुहपु समा माना माहि ताई।
तोहि बाणु जो जोद करि धाई।
जोद कीतो तै बाणु चलायो।
मानो पुहपि बर्षा तै लायो।
पहुरो सऊ न बाणु चलायो। धनथन को बलि गिरायो॥
सऊ चस्मा रथ पाछे आया। त्रिसि रथ महि कुसू बधि पाया॥
जाइ कुसू को कर पकिडायो। हे मोहि बीर उठो मै आयो॥
सऊ कुसू को लीतो सहाई। चस चसे आए दोऊ भाई॥
लूट मैग को उठि करि आए। मोती माणक अधिक स्याए॥

हे अबू चित का ठौर रापो।
और बाति कछु तुमि ना भापो।
हमिरी द्रिष्ट नाग सम भावहि।
सांईन्सस काहि ख़ुदा बुलावहि ॥२२८

कुसु सऊ सो कह्यो पुकारी।
हे अबू सुण बाति हमारी।
मोहि धन्पु नाही कहा करह्यो।
कैसे मै इनि सेती लड़ह्यो।
सऊ उस्तित रवि केरी कीनी।
मुप ते उस्तति बहु उचिरीनी।
तोहि रथ अस्व सप्त मेरे भाई।
तुमि का हुमि अडौत करांई।
रवि इकु रथु इकु धन्पु पठायो।
अशीर्वादु कुसू करि तिन पायो।
सऊ कुसू धस्त्र सग लीए।
सग्राम ठौर भाइ ठहिराए।
अधिक युद्ध ताहू मे कीना।
सैना लछमण की हति लीना।
रक्ति सिध प्रवाहु भसायो।
नर गज अस्व तिहि अधिक हतायो।
इकि ओरि सऊ सग्रामु करावे।
इकि ओरि कुसू बहु सैन हतावे।
सऊ ताई तिन्हा घेरा कीना।
घेरा करि ताकी बिच लीना।
इक् घेरा हस्ती को कीना।
बहुरो एकु रथ को करि लीना।
एकु असवार को कीनो भाई।
एकु पैक ऐसो बनि भाई।
सप्त घनी तिषि ताई पाया।
सऊ ताहि वधि बाहिरि आया।

हे अघू चित का ठौर रायो।
ठौर वासि कछु तुमि ना आयो।
हमिरो द्रिष्ट कांग सभ आवहि।
साईदास काहि हुदा डुलावहि ॥२२८

कुसू सऊ सो कह्यो पुकारी।
हे अघू सुण वाति हमारी।
मोहि धन्पु नाही महा करहा।
कैसे म इनि सेती लटहो।

सऊ उस्तित रवि करी कीनी।
सुप ते उस्तति वहु उचिरीनी।
तोहि रथ अस्व सप्त मेर भाई।
तुमि का हमि डकौत कराई।

रवि इकु रथु इकु धन्पु पठायो।
असीर्वादु कुसू करि तिन पायो।
सऊ कुसू शस्त्र सग लोए।
सग्राम ठौर आइ ठहिराए।

अमिक युद्ध ताहु मे कीना।
सैना लछमण की हति लीना।
रक्ति मिध प्रवाहु चलायो।
नर गज अस्व तिहि अमिक हलायो।

इकि ओरि सऊ सग्रामु करावै।
इकि ओरि कुसू बहु सैन हलावै।
सऊ ताई तिन्हा घेरा कीना।
मरा करि तांको मिच लीना।

इकु परा हस्ती को कीना।
बहुरो एकु रथ को करि लीना।
एकु असवार को कीनो भाई।
एकु पैक ऐसो कमि भाई।

सप्त घडी तिसि ताई पाया।
सऊ ताहि बचि बाहिरि आया।

लछमण को प्रभ आज्ञा दीनी।
लछमण ने सो मन महिं कीनी।
पचाह सहस हस्त ले धायो।
सठ हजार असवार बसायो।

इकु लछु पैकु लीओ तत्कारे।
लछमण सहिति सनां अधिकारे।
केतक दिम तिनि माहे आए।
सग्राम ठौर आइ करि ठहिराए।

सऊ पुकार कह्यो कुमू ताई।
हे मोहि बीर अबि कहा कराही।
सैना अधिक आई मरे माइ।
इहि मै मै तुमि को आप सुणाई।

कुमू सऊ ताई प्रतु दीना।
हे मोह बीरु कहा सैना भीना।
कांग अधिक वाजु इकु होई।
तुमि सबरु मनि सह्यो न कोई।

स्याम अधिक सिंहु इकु होई।
सिंह की रीस वहि कहा करोई।
सूरा एकु काइरि अधिकाई।
मूरे मरि कहा होवहि भाई।

कांग अधिक जो मिलि करि आवहि।
बाजु परे सभ ही भजि जावहि।
स्यामु सिंह पहि कहा ठहिरावै।
काइर सूरे निकटि न आवै।

मैं छोटी तू मैं अधिकाई।
अैसी बाति तै किउ उचिराई।
जो मै अपुना बीर इसावों।
ताहि क्रिपा करि धीजु पावों।

जो तुमि ऐसी बाति सुणावो।
माहि ताई काहे उकिसावो।

सना के नर बहुते आए।
हाथ कटे बहु रक्त वहाए।
रघपति अवि इनि को निर्पायो।
अति क्रोधु मन महि उपजायो।
भवि को कह्यो श्री रघुराई।
सना ले सग मेर भाइ।
जाइ करि उनि बाल्क सौ झूझै।
मोहि कहा मन अतर बूझै।
हनूमान सुग्रीम ल आवौ।
सांइदास जाइ युद्ध मचावौ ॥२३०
भवि हनूमान सुग्रीम को भीभा।
त्याग अयोध्या तिन गवनु कीआ।
चले चले आए छिन माही।
लऊ कुसू ठांडे स जाही।
लऊ कुसू सो बचनु उचारा।
कहा नामु है तात तुम्हारा।
लऊ मर्म ताई प्रतु दीना।
सग्राम ठौरि तुमि क्या चित कीना।
सग्राम माहि सुण हा मेरे भाई।
मात पिता कहा जाति अपाई।
वाल्मीक हमिरे पित नामा।
जानकी माता को है मामा।
भवि पवन सुत सौ इहि भापा।
हे सुत पवन तै कछु भी सापा।
बाल्क रघपति सुत द्रिष्ट आवहि।
श्री रामचन्द्रि को रूप दिपावहि।
हनूमान तब कह्यो सुणाई।
सुण हो भवि राम के भाई।

अधिक मन लछमनि की मारी।
को मायस तौर भेद प्रहारी।
सऊ कह्यो कुमू दिष्टि म भाव।
इहि प्रयोग मनि महि बिस्मावै।
एकु असुर प्रकास मौ मायो।
सऊ करि ते तिन धन्यु छिनायो।
सऊ तगमु समसेर निकारी।
ताकी पहुंचि जाइ करि मारी।
कंठ पकरि ले धर्नि गिरायो।
ताहि असुर की मारि चुकायो।
बहुरो ताहि असुरि मुतु आयो।
तिमि ताई भी सऊ हतायो।
बहुरो लछमणु आप ही आयो।
सऊ सौ तिनि युद्ध करायो।
केतर बाण लछमण ने मारे। सऊ ताहि बाण कटि डारे॥
बहुरो सऊ जो बाणु चलाया। लछमण की तिन ने मूर्छाया॥
सैना बहु ताकी उमि मारी। जो भाग्यो छुट्यो तत्कारी॥
सऊ कुमू एहि कर्मु कमाया। ताईदास लछमन मूर्छाया॥२२६

जो मर सैना जीवण पाई। आए नग्र अयोध्या थाई।
श्री रघपति पाहे चलि आए। सकल बितांतु तिम आप सुणाए
हे प्रभ लछमण को मूर्छायो। दुहूं बालक बहु जारा पायो॥
श्री रामचन्द्र कह्यो झूठि बनावो। एहि बाति जो मोहि सुणावो॥
लछमन रावण ताई मार्‍यो।
तिसि को बहु किनि मूर्छा डार्‍यो।
असुरि अधिक की ताहि सिंहार्‍यो।
महाबली असुरी जो मार्‍यो।
को बालकु जो तिनि मूर्छावे।
लछमन बहू के निकटि न आवै।

सास छूटि बसुधा लपिटाए।
को जाने इन्हा प्राण तजाए।
माणक मोती रत्नि घनेरे।
लाल जवाहरि मणी बहुतेरे।
गज भरु अश्व अधिक तिहि लीए।
लऊ कुसु एहि कार्ज कीए।
हनूमान सुग्रीम को लीआ। सब गबनु अपुन ग्रहि कीआ॥
चलति चलति जानकी पहि आए। जानकी सौ तिन्हा बचन सुनाए॥
दो बचरि दलनि को आने। लऊ कुसु इहि बचन बखाने॥
जानकी बचर छोरि तकाओ। बचरि देखि मुप ते उचिराओ॥
हनूमान सुग्रीम पछाने। तब जानकी मे बचन बखाने॥
हे सुत मोहि हनूमानु प्यारा। तुमि से प्यारा बहु अधिकारा॥
मोहि द्रिष्ट आगे ना आनो। मेरो कह्यो सत्त करि जानो॥
अबि मोहि द्रिष्ट परे मरि जाई। हे सुत पाछे कछु न बसाई॥
अबि महा तज कोध द्रिष्ट मेरी। जो करो इसि होइ भस्म की ढेरी॥
छाडि देहु मेरो कह्यो मानो। मोह कहे अतुर ना आनो॥
जबि जानकी इहि बचन उचारे।
लऊ कुसु मन माहे धारे।
तिन को त्याग कीयो सत्कारा।
हे साधो कहयो सकल बीचारा।
जानकी माणक मोती लीने।
मणी रतन से गोदि महि कीने।
जीत भई सुत बहु सुप पायो।
साईदास बिधि प्रगटि सुनायो॥२३३

बाल्मीक आमे ही आए। प्याम गए बसि लीए बुलाए॥
यानि यज्ञ करावण धाए। वानि को जा यज्ञ कराए॥
यज्ञ संपूरण ताका कीआ। पाछ ग्रहि आवनि बिदु दीआ॥
भावति भ्रमति को ले आया। रमपति को मूर्छा निर्पाया॥
सबस सैन सौ द्रिष्ट पसारी। सभहि मूर्छा मैन निहारी॥

जानकी कछु औगुण नही कीना।
रघपति तिहि वनिबासा दीना।
सोई बाति तै आमे आयो।
ताहि पाप तुमि एहि करायो।
जैसा करै तैसा कोऊ पावै।
सांईदास कीतो आगे आवै ॥२३१

पवन पुत्र इहि कह्यो गुसाई। अपि वमीकनि मनि ठहिराई ॥
युद्ध करनि कौ तिन बितु लायो। अधिक युद्ध तब अपि करायो ॥
लऊ कुसू ने जोरा कीना। अर्घु सहिति सैना हति लीना ॥
श्री रघपति जवि इहि सुण पायो। महा अधिक मन महि बिस्मायो ॥
ऐसे कौण प्रगटि भए भाई। मोहि सैन जिन सकल हताई ॥
अर्घु धातमनु लछमनु मार्यो। सना तांकी तिहि प्रहारयो ॥
क्रोधु कीतो रघपति उठि आयो। अधिक सन प्रभु सम ल्यायो ॥
आइ संग्राम ठौर ठहिरायो। अधिक युद्ध तिनि अगनि रचायो ॥
लऊ कुसू को बलु बहु भारी। सकल सन रघपति की मारी ॥
जवि सभु सैना तिनहि हताई। श्री रामचद मन महि बिस्माई ॥
बिस्मकि होइ करि युद्ध को आयो। लऊ कुसू सौं युद्ध करायो ॥
रघुपति को तिन मूर्छा कीना। सांईदास सम उत्तर दीना ॥२३२

लऊ पुकार कह्यो कुसू ताई। इहि भाई हमिरे मनि भाई ॥
बचारि पेसनि कौ ले जावहि। इनि से पेसनि कौ बितु लावहि ॥
कुसू कह्यो भलो सब्द सुनायो।
भली बाति तुमि मोहि बतायो।
जवि सभ सैना इन्हि प्रहारी।
सुग्रीम पवनसुत इहि मनि भारी।
जा हमि फिरहि हम को मारहि।
साथि बाणु हमि अनि पछारहि।
ताति अनि ऊपरि परि रहीए।
नहि बाए हमि इनि के सहीए।

सास भूटि बसुधा सपिटाए।
को आमे इन्हा प्राए तजाए।
माणक मोती रत्नि घनेरे।
लाल जवाहरि मणी बहुतेरे।
गज अरु अस्व अधिक तिहि लीए।
सऊ कुसू एहि कार्ज कीए।
हनूमान सुग्रीम को लीमा। तब गवनु अपुने ग्रहि कीमा॥
बसति बसति जानकी पहि आए। जानकी सो तिन्हा बचन सुनाए॥
दो बचरि पेलनि को आने। सऊ कुसू इहि बचन बखाने॥
जानकी अभर जोरि तकाठो। बचरि देखि मुख ते उचिराठो॥
हनूमान सुग्रीम पछाने। तब जानकी ने बचन बखाने॥
हे सुत मोहि हनूमानु प्यारा। तुमि ते प्यारा बहु अधिकारा॥
मोहि द्रिष्ट आमे ना मानो। मेरो कह्यो सत्त करि जानो॥
यदि मोहि द्रिष्ट परे मरि जाई। हे सुत पाछे कछु न बसाई॥
यदि महा तेज क्रोध द्रिष्ट मेरी। जो करो इसि छोड़ भस्म की ढेरी॥
छाडि देहु मेरो कह्यो मानो। मोह कहे अतुर ना मानो॥
यदि जानकी इहि बचन उचारे।
सऊ कुसू मन माहे धारे।
तिन को त्याग दीयो ततकारा।
हे माता कह्यो सकल बीचारा।
जानकी माणक मोती लीने।
मणी रत्न स गोदि महि कीने।
जीत भई सुत बहु सुख पायो।
साईंदास बिधि प्रगटि सुनायो॥२३३

बाल्मीक आगे ही धाए। प्याल गए बलि लीए बुलाए॥
बानि यग्न करावण आए। बानि को जा यग्न कराए॥
यग्न संपूर्ण साका कीमा। पाछे ग्रहि आवनि चितु दीमा॥
आवति अभ्रति को ले आया। रघपति को मूर्छा मिरपाया॥
सकल सैन सो द्रिष्ट पसारी। सभहि मूर्छा नैन मिहारी॥

प्रभृति से रघपति सुष पायो। बहुरि लखमन सुख धुमायो॥
अर्ध घानधन के मुष बारे। तब इनि सम ही नैन उघारे॥
प्रभु सभ सैना सुष पायो। बाल्मीक ऋषि सकल जीवायो॥
मानो साए से सभ जागे। उस्तति प्रभ की करनि लागे॥
हे माधो भगतिनि सुषदाईकि। गुणनिधान संतनि सुषदाइकि॥
सदा सदा प्रभ धति सहाई। सदा सदा संतनि सुषदाई॥
भक्तिनि को प्रभ ऐसे रापहि। जैस रसना मुष महि भाषहि॥
दसरथ को नंदन रघुराई। सोईदास जामे सुषदाई॥२३४

रघिपति ऋषि सौ बचनु उचारा।
ऋष जी सुण हो प्रश्न हमारा।
इहि दो बालक कौनु कहावहि।
जो तुमिरे प्रस्तम ठहिरावहि।
बाल्मीक इहि सुण मुसिकाना।
मुष अपुने ते प्रतु उचिराना।
रघपति सुत है एहि तुमारे।
जानकी के गर्भ उतिपति धारे।
श्री रघपति एहि बिधि सुण पायो।
बाल्मीक सें फिरि उचिरायो।
जानकी जीवति है भवि ताईं।
भली बाति तुमि मोहि बताई।
बाल्मीक सुण करि प्रतु दीना।
जीवति जानकी प्रासम लीना।
जबि लखमनि बनि महि छडि आयो।
पाछे से मै बन महि आयो।
कद मूल लेने के ताई। जानकी बन महि लिपाई॥
ताको ले करि धग आयो। तिहि कारण आइ मठ बनायो॥
ऋषि बनिता ईहा अधिकाई। जानकी रहसि तिहि महि रघुराई
ऋषि बालक कदिमूल ल्यावहि। जानकी ताई भी पहुचावहि॥
जो कछु हमि षावहि रघुराई। जानकी भी सोई ले पाई॥

जानकी पितु नृप जानक विदेही। वहु सेवकु मेरा भलो स्नेही ॥
जबि जानकी को काजु भया। तिह समे मैं भी मिथला गया ॥
उसि दिन ते जानकी ईहा रहे। साँईदास आस्रमु ईहा अहे ॥२३५

श्री रघपति फिरि बात चलाई। जानकी आवति है मेरं भाई ॥
मै अरम यग्य तौ कीना। एहि बाति मन महि भरि लीना ॥
एहि बात जो मो को होई। अपि दहि जानकी प्रगट पलोई ॥
हे ऋषि जसु जानको पहि आवहि। जानकी को जाइ दर्सनु पावहि ॥
ऋष कह्यो आग्या रघुराई। बसहो आस्रम महि सुप पाई ॥
बस बसे आस्रम महि आए। बाल्मीक ऋषि अति अभिनाए ॥
जानकी सक कुसु कों स्यायो। श्री रघपति पहि आण चलायो ॥
रघपति जानकी सुत दोऊ लीए। तांते गवनु अयोध्या कीए ॥
आए चले अयोध्या माही। ग्रहि ग्रहि महि सभ मगलि गाही ॥
नग्र अयोध्या बहु सुपु पाया। अंग अग महि बहु हिर्पायो ॥
जैसा भूपा भोजनु पावै। दुःख मनि ते सम ही विसरावै ॥
जैसे वृक्षि मूल जलु आए। फसु उपिज साया उमिआए ॥
जैसे दीपक मै तसु पायो। अधिक जोत दीपक प्रगटायो ॥
जैसे अघिसा त्रिग को पावै। अग अग महि नाह समावै ॥
जैसे निर्धनु धनि को पावै। दुःख बिसार महा सुप पावै ॥
जैसे बालक दूधि पीआए। महा अधिक सुप मन महि पावै ॥
जैसे सतु राम गुण गाए। मन्नि होइ सभ किछु बिसराए ॥
जैसे कमल रवि के प्रकासा। भुख पोल्ह पावति सुपु वासा ॥
जैसे लोक अयोध्या होए। सकल बियोग मनो सिनु पोए ॥
रघपति ग्रहि माहि चले आए। साँईदास मनि बहु सुप पाए ॥२३६

श्री रघपति ने यग्य करायो। जो कछु वेद भिजाद बतायो ॥
जानकी बांवे अग बहाई। कनक पुतली बनि समाई ॥
दसरथ सुत यग्य पूर्ण कीना। दक्षिणा बहु विपो को दीना ॥
बशिष्ट भोहवि यग्य करायो। वेद चतुरि भूप ते उचिरायो ॥
जो कोई अस्व मेघ यगु करही। तिहि कुसहत्या सकली टरही ॥
महा कठनि यग्य है मेरे भाई। बिनु सहाइ हरि कीतो न जाई ॥

जो श्री रघपतु किर्पा धारे। तौ यह यग होइ तत्कारे॥
यग न होव तो हरि जसु गावी। साधि संनि सदा मपिटावी॥
का इकि साघ को भोजनु देई। मानो पूर्ण यग करेई॥
साधि माहि हरि सग्न बसेरा। साघ जना का है प्रभु चेरा॥
एकु साघ प्रश्नोक समाना। श्री रघपति मुष एहि वषाना॥
यग पूरण कीनो रघुराई। सांईदास प्रभ सदा सहाई॥२१७

ब्रह्मा रघपति पाहु आयो। एकि दिना इहि बचनु सुनायो॥
हे प्रभ औधि सपूरग होई। भ तरि गति होउ बिस्म न कोई॥
श्री रघपति ब्रह्मा प्रतु दीना। ब्रह्मा ने मनि महि धरि लीना॥
सहस्र बप जबि औधि बिहावहि।
तब हमि भ तरि ध्यानु लगावहि।
ब्रह्मा ने फिरि बाति चलाई।
रघपति को ने बाति सुनाई।
किहि प्रजोग इहि बाति वषानी।
कौनु बाति तुम मनि महि आनी।
औधि तुम्हारी पूर्ण होई।
किहि प्रजोग रहा बिधि कहो कोई।
श्री रघुपति फिरि आप सुणायो।
सुण हो ब्रह्मा हितु चितु लायो।
मोहि पिता दसरथ तांको नामा।
एहि बिधि आपी पूर्ण रामा।
दश सहस औधि थी ताकी। सबली बिधि मै आपो बांकी॥
नौ सहस्र बर्ष भोगाई। मोह ध्योग तिहि प्रान तजाई॥
एकि सहस्र औधि ताकी रही। सोई ही मै मनि धरि लही॥
वाही भोग करि मै आवो। भतरिगति होइ बैकुंठि सिधावो॥
ब्रह्मा इहि प्रतु सुण करि आयो। साईंदास आसम महि आयो॥२१८

सहस बर्ष पूर्ण जबि होए। श्री रघपति इहि मन महि पोए॥
भ तरि ध्यान होइ बैकुंठि जावो। सकल सुरो को दर्स दिखावो॥
राजु दीयो प्रभ श्री लछ ताई। तुमि सुत राजु करो अधिकाई॥

प्रजा को बहुता सुख देवो। ओर जुल्मु किसे परि न करेवो॥
इस ही भांत राजु करावो। पर्जा को बहु सुखु दिखलावो॥
मै तुम्हि को सभ दीयो बताई। सुण हो सुत हमिरे सुखदाई॥
बार बारि मैं तोहि समझावो। राजनीत मै तोहि बतावो॥
श्री कोसलपति न राजु दीआ। तिलकु राज सऊ मस्तक लीआ॥
सऊ राजु कनि चितु लायो। सांईदास पर्जा सुख पायो॥२३९

श्री रघपति अब गति होण लागे।
राजुभागु सभहू तिन त्यागे।
वैकुंठि बेग बिबाण जुमाए।
तिहि चढि भर्यु धावधन धाए।
जानकी धसि गई धर्नि के माही।
तब बन्दरि मिलि आए अधिकाही।
श्री रघपति सौ तब विनती ठानी।
हमि वसि जावहि सारंग पानी।
हमिरी गति प्रभ कौनु करावौ।
हमि कौ हमिरे संग बसावौ।
तब श्री रघुपति ताहि सुनाया।
मै तुमि को इहि भाति बतायो।
करि स्नानु वैकुंठि सिधावौ।
चढो बिबाणौं बिलमु न लावौ।
एक बंधरि स्नानु कराव।
चढि बिबाण वैकुंठि सिधाए।
पवन पुत्र तब कहयो सुणाए।
प्रभ जो मै वैकुंठि न जावौ।
बसुधा परि कूदनि सुख पावौ।
रघपति कहयो भला एसै होई।
जो तै कहा होवै फुनि सोई।
सहसमन सेस भाग हाइ धायो।
अपुने आसम जा ठहिरायो।

श्री रघपति बिमाड चढाए।
प्रतरि गति होइ बैकुंठि सिधाए।
गए गधर्व कीयो ण कारा।
कौसापति बर्कुंठि सिधारा।
भकित हेति करि बपु हरि पायो। भक्ति हति इहि कर्म कमायो॥
गुर साँईदास कृपा जबि भारी। सत दया मनि सीटौ बीचारी॥२४०

मन प्रबोधि प्रभु बनायो। माया कीयो मनु रहिरायो॥
महा समुद्र कोऊ पार न पाई। रघि को पार लिव्यो न जाई॥
दधि को पार प्रमहू कोऊ पाव। श्री राम प्रप को हाथ न आवै॥
प्रसि अगाहु हाथ का पावै। कहा बुद्धि जो हाथ ल्यावै॥
जा कहू चूक परी सुधि करहो। मो परि कोऊ दोसु न धरहो॥
श्री रामप्रथ भया पूरायण। साधो सन्त भजो नारायण॥
श्री राम नामु भवतार्न हारा। एहि बाति सुन वेद बीचारा॥
पूर्ण पुष पुर्ष भविनासी। कौसापति पूर्ण प्रज्ञासी।
निरकार निर्वैद गुसांई। सन्त सदा पेखति बहु ताई॥
त्रैलोकि सभु ताहि पसारा। घटि घटि रचिना रावनिहारा॥
पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म पुरातम। निर्मल जोति सदा जीवन भातम॥
ताहि प्रकास तिमर मिटि जाई।
दुख भाग सुप साम भाई।
सुपदायक प्रभ दुख निवार्ण।
महा बिकटि सकटि को तार्ण।
निर्मल ज्योति सदा उजीयारा।
सत जना को बहुता प्यारा।
भूत प्रेत सकल डरि जाए।
श्री रामनाम को सुप उचिराए।
श्री रघपति को पूर्ण प्रवतारा।
साधो सुए सहो चित धारा।
सदा सदा रघिपति जसु गावो।
साँईदास पभु मा प्रसलावो॥२४१

मैं मति हीन सत निस माई।
त्याग सकल विधि परमो पाई।
सत भनि रजि जो मैं पावौ।
उमिडि उमिडि के टहिल कमावौ।
मत कृपा जो मोहि करावहि।
अपुने दासो सग रलावहि।
प्रभ की इहि विधि दासु जनाए।
करुणा होइ तब ही इहि पाए।
मदा सदा हरि को जसु गावौ।
छिन मात्र मनि ना मलिसावौ।
प्राप्ति भक्ति टहिल की होवै।
उौर टहिल आवों नहि कोवै।
मन्न भाम मतिवारा होवा।
उौर बाति सकनी प्रभ पोवा।
प्रमहृदि धाम्म मो एहि मनु लाग।
तोहि क्रिपा सकसा ममु भागै।
करो निर्त बहु प्रीति लगाई।
सुण हो विनती जम रघुराई।
पायो सुधु जो किर्पा धारी।
श्री कौमापति प्राम मपारी।
जाके माईदास गुर स दया।
अपुनी करुणा दास परि करया।
श्री रघुपति की जबि मनि भाया।
माईदास का ममु सुनायो॥२४२

इति श्री रामायण कन अवतार श्री मन्म कम बराह नृसिंह
वावन परसुराम रामचंद्र अवतारि चरित भाषा माईदाम
कृति संपूरण समस्तम् सुभमस्तू॥
श्री रामाय नमः

कृष्ण अवतार

॥ ॐ ॥ ॐ स्वस्ति श्री ससिगुरि गणेश सरस्वत्य श्री बाबा साईंदास श्री सहाय नम: अथ दसम स्कंध श्री भागवति श्री सुकदेव परिक्षति संबाद भाषा साईंदास क्रित लिखते ॥ छं ॥

घास पूर्य पूर्ण अविनासी । सब निरतरि जोति प्रकासी ॥
सदा सदा मुक्ता मुक्तायनि । कौसापति पून मुरायनी ॥
आत्म रूप सदा उजीआरा । आनंद पुर्ण निर्लेपु धारा ॥
प्राण पिता दुःख सुख ते न्यारा । सभि ते न्यारा सभहू पसारा ॥
चिन्हि चक्रित आवर्न गुसांई । रूप रेख तिन्ह तिहि नाही ॥
घटि घटि माहि ताको प्रकासा । सदा सदा संतन की आसा ॥
सकस भूति ते रहति न्यारा । जैसे रवि प्रति किरनि उजारा ॥
जो देखे रवि ताहू पाही । करि पसोनि महि आवे माही ॥
ऐसो प्रभु सभि माहि समाया । घटि घटि माही ज्योति दिखाया ॥
मीरि परी बन को तहू आया । इहि प्रबोध आइ बपु पाया ॥
किष्न किष्न साचो उचिराबौ । स।ईदास ताहूं बसु गाबौ ॥१॥

राजा परीक्षतु सुतु इहि धर्मा । माती अर्जुन पांडव धर्मा ॥
एक समे बनि कहु बहु आया । अहेरि बृत्ति कर्मे चितु लाया ॥
महा बिकटि बनु अति अंध्यारा । जिनि रविका ना पति उजारा ॥
ता महि बीह बन बहु रहे । केहरि मृग चीते बहु अहे ॥
परीक्षिति की तप्त आइ ग्रासा । उत्पत होई ताको प्यासा ॥
अमृ जोहति बसु हाथ नि आवे । नृपु मीना जिउ मनु तड़िफावे ॥
सिद्धी ऋषि तिहि बनि के माही । सहित सदा हरि ध्यानु लगाही ॥
ऋषि के आश्रम नृपु चलि आयो । एहि बाति तिन मनि ठहिरायो ॥
मैं उतीपतु अति बलिबाना । औरु न कोई मोहि समाना ॥
मो को ऋषु प्रनामु तो करई । मोहि आज्ञा मनि माहो धरई ॥
सिद्धी ऋषि प्रम ध्यानु लगाया । अपुने बपु की सुधि न पाया ॥
ताहि ध्यानु हरि सेती भाषा । द्वितीयो भाउ बाहू को भाषा ॥

राजे को प्रनामु न कीमा। नृप बहु क्रोधु मन महि लीमा ॥
मैं पृथ्वी प्रतु नृपु हौ मायो। ऋषि ने मोहि प्रनामु न सुनायो ॥
प्रति क्रोधु कीनो मनि माही। ताहि क्रोधु किसे सह्यो न जाही ॥
तब हि मुख ते बचन सुनायो। प्रति क्रोध होइ करि उचिरायो ॥
मूआ उर्गु ऋषि के गरि डार्यो। मोहि कहा मनि महि बोचार्यो ॥
अवि नृप मै मुख वचनु उचारा। सना सर्पु ऋषि क उरि डारा ॥
नृप करि एहि नग्रि महि भाए। साईदास कहुति समझाए ॥२॥

सिकी ऋषि सुतु प्रपगि हे नामा। सदा जपे हरि गोविंद रामा ॥
कंदिमूल कार्एा बनि माही। गयो भपगु बनि बंकि मझाही ॥
कदि मूल बनि ते ले प्राया। ऋषि पाहे आइ करि ठहिराया ॥
नैन निहार दय्यो ऋषि ताई। मूआ उर्गु निर्ख्यो उरि माही ॥
तिहि देपति मै थकित होइ रह्या। मुख ते बचनु उचारे कहया ॥
कौसापति पूर्ण अबनासी। मैं बिनती करहो तुमि पासी ॥
बिन मोहि पिस उरि उर्गु है डारा।
बिन औगुएा बिन इहि कर्मु भारा।
तोहि माज्ञा प्रभ जी मै पाई।
ताको स्रापु देवौ प्रधिकाई।
एहि तक्षकि ताको मारे। सप्त दिवसि पाछे प्रहारे।
अपग स्रापु नृप ताई दीना। मनि प्र उरि इहि निश्चा कीना ॥
सिकी ऋषि तब नैन उचारे। अपग सकल बितांतु बीचारे ॥
सिकी ऋषि कह्यो सुत बुरा कीनो।
ऐसे नृप को ते स्रापु दीनो।
महा बज्ञाथ धम को पालकु।
दयावानु बहु सदा पालकु।
अपग कह्यो सुण हो पिति मोरे। मैं बिनती करो प्रागे तेरे ॥
जो यह धर्मि' पख करे सहाई। इहि कर्मु कहु काहे कराई ॥

१ उर्गु <उरग=साप। २ धर्मि—संभवतः यह शब्द 'धर्मि' है। लिपिकार का दोष है।

एहि बाति मोहि मनि मा भावै । धमि परख बहु नृपु ठहिरावै ।।
तोहि उरि उर्ग मूया किउ डारा । जो उनि धमिपक्ष मनि धारा ।।
मिरी ऋपि सुत को प्रतु दीना ।
त बिधि भजहु न मनि महि लीना ।
सम विरतातु मै तोहि सुनावो ।
तुमिरे मन को भर्मु चुकावो ।
भलग कह्यो पिता देह बताई ।
नृप इहि बिधि किउ मनि ठहिराई ।
सुण हो सुत तुमि श्रवण धारी ।
तुमि पहि भायो सकल वीचारी ।
कल्युग माइ प्रवसु करायो ।
इहि महाधमि धर्म दर भायो ।
परीक्षति नृपु मवरि परि भायो ।
धम्मि पुत्र बई पगि निर्धायो ।
तात्कास तहु पहि भायो । धम्मि पुत्र सौ बचनु सुनायो ।
कह्यो चतुरि पग को क्या भया । तीन पग परि जो ठाडा भया ।।
धर्म्म पुत्र तांको प्रतु दीना । नृप सुण करि मन माहे लीना ।।
कलि युग म प्रवसु करायो । एकु पगु मेरा तिने उठायो ।।
नृप सुण करि मन महि भकुलाना । भधि क्रोधु मनि माहे भाना ।।
माहि राज महि उनि इहि कीमा । भति क्रोधु मनि म तरि सीमा ।।
धम्मि को बमु तिम को भधिकाई । कलि प्रवेसु कहा सके कराई ।।
चाहति कल्युग को वहु मारा । तब कलियुग तिहि कहयो पुकारा ।।
नृप तुमि मोको काहे मारो । विनु औगुण कीए किउ प्रहारो ।।
काई ठवरि मोहि दहु बताई । ताहू ठौरि रहो मैं जाई ।।
जबि कलियुग इहि कह्या पुकारे । तब नृप सबद मन महि धारे ।।
कौनि ठौरि म इमि को देवो । जहा रहे इहि बहु दुख देवो ।।
माच बिचार कीयो मनि माहे । कवनि महि इमि को ठहिराहे ।।
कह्यो रहो तुमि कचन माही । ठौरि ठौरि तुमि देवो नाही ।।
जबि कलयग इहि बिधि सुण पाई । मनि माह एहि ठहिराई ।।
ठौरि ठौरि बहु मैं भरमावो । काहे को ठौरे मैं जावो ।।

कनक छत्र नृप के सरि मेरा। तह प्रवेसु वहु मेरा डेरा॥
कीयो प्रवेसु तासि के माही। कल ताहू महि रहित सदाही॥
जबि नृप छत्र को सिर धरही। मदसमत औरु कछु करही॥
कल्युग ने इहि कर्मु कमायो। इहि कर्म्मि करने चित लायो॥
नाद ति वहु कहा इहु करावै। इहि विधि करने किउ चितु लाव॥
अबग सुनति ही भर्म निवारा। सत सत मनि महि करि धारा॥
कह्यो सुणो चित सदा सहाई।
जो विधि लिपी सो कौणु मिटाई।
जो कछु होवति होइ सो होइ।
औव न करि साकहि कछु कोई।
तिकी ऋषु सुण करि बिसमायो।
साईदास समु आप सुणायो।
नृप परीक्षतु जबि ग्रहि महि आयो।
छत्रु कनक तिनि दूरि करायो।
प्रिथम मति भई प्रकासा। मनि माहे कीनो बिस्वासा।
मै कहा कर्मु कीयो वन माही। मति हीन भई ताहि स्माही॥
ऋषि उरमहि जो उगु डारयो। एहि कर्म मैं आणि करायो॥
लोक पठाइ दीए ऋषि पाही।
नृपति हि बहु विधि कह्यो सुनाई।
मोहि विनती ऋषि पहि जा कहीं।
मोहि औगुणु चित परि ना धरहा।
तिहि समे हमिरी मति बौराई। तुम पूरण ऋष सन्त सहाई॥
लोक चले आए ऋषि पाही। करि जोरे सुप आप सुनाही॥
तिही ऋषि सुप बचनु उचारा। सुणहु नृप माह मनि प्यारा॥
तुमि नृप को जाद आप सुनावो। होवरा होइ सो कव न मिटावो॥
म तुमि ताई स्रापु म दीना। इहि कार्णु हमिरे सुत कीना॥
लोक सुमति गत नृप पहि आए। गनल व्रितांतु तिहि आप सुणाए॥
नृप भीक्षति जबि इहि सुन पाया। महा अधिक मन महि बिस्माया॥
नपमी कह्यो होवै पुनि भाई। नाहि स्रापु न मट कोई॥

ताहि श्रापु फिउ अन्यथा जाइ। मोहि ताई भाई तक्षकु डसाई॥
सोच बिचार एही मम भारी। गच[1] मदर कीजे तरकारी॥
नृप सैना को आज्ञा दीनी। ताहि सैन मनभ्रम हर लीनी॥
गच मदिरि पस माहि बनाया। महा सम्य बन्यो अधिकारा॥
मोर कीट अमगर जा आवै। नाहि छपे सभु द्रिष्ट दिपाव॥
इहि प्रजोग गचि मंदर कीना। नृप प्रक्षति तहा बासा लीना॥
तिस मदरि निसवासर रहै। सांईदास भै तिहि मन महै॥४॥

सकला श्रपों इहि विधि सुरा पाई। प्रीक्षति श्रापु पायो बनि साई॥
बसही ताहि देप क आवहि। ग्यान गोष्ट करि तिह् पर्चावहि॥
ब्यास चल सुक सहित बसाए। नृप परीक्षति पाहे बहु आए॥
सनक सनदन भति अपारा। उौर सनातनि सनत कुमारा॥
इहि प्रकाम परीक्षति पहि आए। निगम बाति मोह एह बताए॥
प्रभु सुनो तुमि भूप बसवाना। नृप पहि तक्षक बिधि सकल सुनाना॥
तक्षकु डसे बहि नकि सिधावै। बहुर बहुर योनी महि आवै॥
एहि बिधि आए सकल रिप आए। तिहि दर्सन दुःख सकल भगाए॥
नृप परीक्षति नें सीसु निवामो। नमिस्कार कीनो उचिरायो॥
कीयो अनुग्रहि मो परि आए। भलो कीयो प्रभु दर्सु दिपाए॥
मो को श्रापु अक्षय मे दीमा। मोहि पतिष्टयो जो मै कीमा॥
अयेरि दिन कीयो मै बनि माही। सिकी श्रपु रहे सदा तहाही॥
मोको तप्ति गहृयो अति आई। त्रिपावंत भयो सुधि बौराई॥
तिहि समे मूढि मति होई। मना बीचार न आयो कोई॥
श्रपि मो को प्रनामु न कीना। मै तिहि समै क्रोधु चित लीना॥
मूया उर्ग तिहि उरि महि डारा। मूड मति होइ गयो अपारा॥
मै श्रप त्याग आयो ग्रहि माही। जो कछु बिधि सिप्यो सो पाही॥
सिकी श्रप सुन अक्षग है नामा। महा तपीसुर गोबिंद रामा॥
कद मूल बनि से ले आया। इहि विधि तिम ने वैपि सुभि पाया॥
मूया उर्ग किसि इसि उरि डारा। मोहि पित श्रपु पूर्न निरकारा॥
मा औगुण बहु इनि मे कीमा। बिनु औगुए कीए किन दुःख दीमा॥

---

[1] गच<वच=काच

बिनती करि तिहि आपि सुनायो। सुन हो प्रभ त्रिभवन के रायो॥
जिन धन मे इहि कर्म कमायो। तोहि आग्या तिहि स्रापु भगायो॥
एही तखकु डस मरि जाई। सप्त दिवसि याते मेरे भाई॥
ऐसी बिधि कछु मोहि बतावो। साईदास सागर सुख सोई॥५॥

श्री सुक सुमि की कथा सुनावै। जो सख नागु सहस्र मुप उचिराव॥
पताल मध्य शेष नागु जो रहै। तहा वस्त उस्तति हरि कहै॥
ब्रह्मे के सुत सुणाने जावहि। सुण करि ब्रह्म पुरी ठहिरावहि॥
पताल माहि ब्रह्मपुर भाई। ताको मार्ग सकल बताई॥
एकु करोडि जोजन मेरे भाई। ताको मार्ग देवहु बताई॥
नृप परीक्षति ससा मा करहो। सुण हो कथा फुनि श्रवन धरहो॥
सोई कथा सुकदेव बयाने। सकल वार्ता शुकजी जाने॥
कथा सुनति बहुता सुपु पावहु। मति बिचारु वकुठि सिधावहु॥
ब्रह्मपुरी जो पताल के माही। नैमिषार सनकादक ताही॥
सात पुरान कथा तहा होय। सनकादक सुण बहु दुख खोय॥
तब नृप परीक्षति ऐसी भाषा। करि जोरे बिनती मुप भाषा॥
सुण हो मोहि पूर्न प्रभु दाता। मुख से कहो सुणो मुप दाता॥
एहि कथा तुमि मो पहि भायो। कृष्ण चरि की उस्तित भाषो॥
वसुदव ग्रहि काहे की आया। यादव वस किउ नामु रपाया॥
मद के ग्रहि आइ प्रास्त्रम लीना। मथुरा त्याग गोकल पगु दीना॥
तब धुकदेव जी ऐसे बोले। तू भाषा तुम्हे धारम डोले॥
केतक दिन निस भए वितीता। नृप सुमि कछु भोजनु नही कीता॥
भूप सकल सुति वौराए। भूप कछु सुन्यो ना पाए॥
जबि इहि विधि सुकदेव बपानी। नृप परीक्षत तब बिनती ठानी॥
हे सुकदेव कहा तुमि कहा। कौनु भांति मुप त उचिरहा॥
एहि कथा अमृति अति मीठा। ताहि प्रसाद अप्रतु द्रिग डीठा॥
जो कोई पाइ सो एहु अपाई। ताको भूप गहे नही भाई॥
अति अनंदु मै बहु सुपु पायो। एहि कथा सुण आषमु भायो॥
नृप कहा हमिरे निकटि आवै। साईदास मुप इहि उचिरावै॥६॥

तब सुकदेव कह्या नृप ताई। सुण हो नृप समझो मन माही ॥
मथपुरी नग्र तहां नृप रहे। उग्रसैनु यादव सुख महै ॥
ताहि ग्रहि कन्या देवकी नामा। प्रतिभृति सुदर सुंदर रामा ॥
ताहि सयुक्त बसुदेव सौ कीनी। कार्जु करि बहु ताको दीनी ॥
गज अस्व रथ कंचन बहु दीना। चीरी अधिक तांके सग कीना ॥
मानक मोती बहुते दीने। इहि विधि कर्के विवाहा कीने ॥
एक असुर भुव महि बहु भारी। ऋषि मुनि कौ बहुताहि दु खारी ॥
सुर नर नाग बहुत दु:ख देवै। जो कछु निर्बे सो पसि लेवै ॥
बसुधा रूप गौ का कीना। अति सूक्ष्म ताहू बपु लीना ॥
कपमानु ब्रह्म पहि आई। मुख ते बसुधा बाति चलाई ॥
एकु असर हमि का दु:ख देवै। हमि परि बहुता जोर करेवै ॥
मैं इसि भार उठाइ न सांकौ। तुमि पाहे प्रभ इहि विधि भाषों ॥
जबि ब्रह्म इहि विधि सुण पाई। मथबाकौ तिन लीतो बुलाई ॥
भूपति बनि सब ही बहु आए। भए इकत्रि बहु मति ठहिराए ॥
चलहो क्षीर समुद्रि जावहि। तहा जाइ करि भजनु कमावहि ॥
असवर दु:ख पृथ्वी बहु दीना। ऋषि मुनि जन को भाजनु कीना ॥
क्षीर समुद्रि के तटि सभ आए। वेद पवित्र कौ तिनि चितु लाए ॥
एही बेनती मुखो बपानी। श्री कौलापति सारंग पानी ॥
असुरी अति बिरोधु प्रभ कीना। सकल प्रजा कौ इनि दु ख दीना ॥
संध्या जापु करनि ना देवहि। जो कछु देवहि सो पसि लेवहि ॥
तुम्हे त्याग और किसि धावहि। अपुमी बिर्था किस पहि भावहि ॥
हमिरा असु तुमि ही परि लागै। तुमि किर्पा करि सभ दु:ख भागै ॥
जबि बिपिन इहि अथनु उचारा। गगण गंभीर कीयो धौ कारा ॥
होई तब ही प्रकास ते बानी। धीर्जु धरो मोहि प्राया जानी ॥
बसुदेव यादव के ग्रहि पावौ। ताहि असुर को आइ मिटावौ ॥
बसुधा का सब भार उतारो। एकही एक असुरु महि मारो ॥
अपुने भक्ति कितार्थ करहो। बैकुंठ माहे तिन कौ धरहो ॥
अबि तुमि अपमे ग्रहि महि जावौ। हिर्यमान होइ भजनु कमावौ ॥

---

१ चीरी—चेरी [दासी]

बहुरो भला ब्रह्मपुरि महि आया। अथवा इन्द्रपुरी सिधाया ॥
भूपतु सर्न पताल का राजा। गया पताल बजेमान वाजा ॥
आपो अपुने पुरि महि आए। हिपमान हरि मगस गाए ॥
आजु काल प्रगट बनवारी। असुरो मार भार उतारा ॥
कौलापति पून प्रभ साँई। साँईदास घटि घटि विर्या अतर जामी।
सभ ही आनंदु मंगस गावहि। श्री जदुनाथ वसुदेव ग्रहि मावहि।
असुरो मार करि आतु करेव। धर्मि सुखी दवी करि सर्व ॥
सभना क मनि एहि बीचारा। प्रगटेगी हमि रापनि हारा ॥
किप्न भजा भिला न करहा। श्री रामनाम मसि अतरि धरहो ॥
विपों कोनी गोबिंद आसा। साँईदास पूर्ण अभ्यासा ॥७॥

एकु दुष्टु गसु तिहि वसु भारा। महा असुर गुर दइन हारा ॥
वहु पसु देवनि की दुःख देव। जा देवै तिहि पहि हिरि सवे ॥
दवी मन महि कीचो बीचारा। नामु कहा इसि होइ सतारा ॥
सोई करहि जिउ इसि हवि होई।
होइ नामु जिउ इसि करहि सोई।
सकल दव वहु भए इकि माई।
कीया बिचार इहि मति ठहिराई।
नैमिसार धिगु ऋपु रहे।
अति मगनन पूण ऋपु धहे।
सो पहि जाइ अस्त्र तिस ल्यावहि।
ताहि अस्त्र स बाग लगावहि।
तिस ही बाण करि पसकौ मारहि।
एहि बानि करि तिस हि प्रहारहि।
सभ देवहु इहि मनि ठहिराइ।
छिण माहे ऋषि तिस पहि आए।
ऋषि आगे तिन्है धाप सुणाया।
एक सम ते हमि बहु दुःख पाया।
ताहि मामु होइ गुर पावहि।
माहि नि महा कष्टु उपजावहि।

ऋषि कह्यो कहु कैसे होई। जो तुमि कहो करहि हमि सोई।।
सबसहि देवो कह्यो पुकारा। सुण हो ऋषि तुमि प्रान मधारा।।
जो तुमि मस्व देवो हमि ताई। एहि क्रिपा करहो हमि पराई।।
तुमिरे मस्व वाण मुख मावहि। वही दुप्ट को नासु करावहि।।
मिग ऋषि तब वचन उचारे। मोहि जीउ मावे मपि तुमारे।।
इसि ते मवरु भला क्या कहीए।
इसि ते मवरु कहा क्या चहीए।
एकि बेनती तुमि परि करहो।
जीउ पिंड तुमि मागे धरहो।
मजहूं म तीर्थ ना कीए।
मति मलीन हो मारम हीए।
केतकि दिन मोहि माशा दवौ।
मम बिनती तुमि सुण करि लेवौ।
जावौ मैं तीर्थ भरि मावौ।
मग्नि भाग तुमिरे ठहिरावौ।
तित समे तुमि जानो सौ करहो।
साईदास इहि बिधि मन धरहो।।८

तब ही देवो तिहि प्रतु दीना।
तुमिरो कहा हमि मनि धरि लीना।
ऋषि मिगि तुमि तीर्थ जावौ।
ढील परे जो तुमि फिरि मावौ।
तुम जो कहो करहि इकु कामा।
पूर्ण मुक्ति सदा हरि नामा।
सुर सकले जाइ जल कौ स्यावहि।
भिन्न भिन्न तीर्थ जमु मावहि।
दिन थोरे महि कार्जु सरही।
बहु पसु दुप्ट नासु मधिक करही।
तब फिरि बिग कह्यो तुमि जानौ।
जिन जानो तीर्थ जमु मानौ।

से करिमडल् सभ सुर धाए। तीम असु भिन्न भिन्न करि स्याए॥
मसरवतास माही असु डारा। भर्यो तासु अति बहु ठभीमारा।
बिगि ऋपि कीनो इस्नाना। धम्या आपु कीठो भगवाना॥
सकल देवो सो तिन मे कहा। लेहो सुमि जो कछु तुम चाहा॥
भिउ जानौ सुरो करहो तैसे। भाप तुमारे ठांठा ऐसे॥
सकल सुरो मन भया बिस्वासा। एकु ब्रह्म महा भस्तु प्रकासा॥
कैसे बिग ऋपि की हमि मारहि। कैस हमि ब्रह्मण प्रहारहि॥
सकल देवो इहि मनि भाना। तब बिग ऋपि बचनु बखाना॥
काम धेनि सुरि को सगि सेवो। भवि भावै तव भाज्ञा देवो॥
तुधा मांसु बहु हिरे हमारा। भस्ति रहे होइ काजु तुम्हारा॥
भस्ति लेइ भाइ कार्जु करहा। भाए मुसि करि दानो मरहो॥
कामधेनि सुर भाए बुमाई। कामधेनि छिए माहे भाई॥
सुचा मांसु ऋपि को हिरि लीना। काम धनि सुरि न इहि कीना॥
भस्थि भाणि भाए मुख बाना। तब बहु दुप्टु हन्यो बलिबाना॥
भवि कार्जु देवकी का कीना। वसुदेव तब मागु ग्रहि लीना॥
रथि को डोरि कसु करि लीने। चले भावि मग बाठे कीने॥
तब ही बाणी भई भकामा। मूढि मति कस कथा हासा॥
कहा डोरि लीने रथ केरी। इहि देवकी बैरनि है तेरी॥
भप्टमु गर्भु जो इसि को होई। सुमिरो नासु करे फुनि सोइ॥
काहे डोरि लीए रथि भाव। इहि बिधि कीना हुदे बमावै॥
भवि त कंस सुनी इहि बामी। डोरि त्याग दोई भभिमानी॥
दमकी केम कम करि लीने। भिरिमानी मूठी करि कीन॥
चाहति दुप्टु देवकी मारे। कम गहे करि धनि पमारे॥
बमुदेव तासो कह्यो सुणाई। सुणु नृप कम महाबसकाई॥
तू नृपु तुमिपे सरि नही कोई। जा तू करहि हुोवे फुनि सोई॥
तोहि पित दुहिता है मरे भाई। छाडो इमि तुमि राम दुहाई॥
गाविद भमि करि इस म मारो। मोहि कहा मनि मतरि धारो॥
महा क्रोधी कहा म मान। बमुन्व को कहा हृदे न भाने॥
बहुरि मार बमिदेउ पुकारे। सुण हो कम मूपति भवि मारे॥
इपि ताई मारो तुमि माही। माहि कहा मेको मम माही॥

मै प्रतग्या तुमि सौ करहो। जो इसि ते होइ मागे मरहो॥
जो तुमि मावै तिसे करावौ। मोहि कहा घटि महि ठहिरावौ॥
जबि बसुदेव इहि बात बपानी। सांईदास नृप सुए करि मानी॥६॥

बसुदेव देवकी को ग्रहि ले आया। ग्रहि आए मंगल बहु गाया॥
जबि केतक दिन भए बितीता। जन्मु ताहि ग्रहि बालक लीता॥
बसुदेव बालकु गोदि महि लीमा। कंस दुष्ट ताई इनि दीमा॥
कंस बालकु ले मारि चुकाया। रचक आसु न मनि महि आया॥
भयो बितीत समा बहु ताही। बालकु मार्‌यो रोसु कराही॥
इकि दिन नारद ऋषि चलि आए। बैन हाथ ले सब्द सुनाए॥
दुष्ट कस कौ कह्यो सुनाई।
सुए हो नृप तुमि बसु अधिकाई।
सभ यादव सत्र है तेरे।
श्रवण धारि सुए हो बचि मेरे।
एहि विधि तुमि निश्चै करि जानौ।
इहि महि द्वितीया भाउ न आनौ।
देवकी अष्टम गर्भु जो आवै।
वाही तुमिरे प्राए हतावै।
जबि ऋषि ते नृप इहि सुण पाई।
मन अंतर एही ठहिराई।
सकल असुर तिन निकटि बुलाए।
मुषि ते बचनु उचार सुनाए।
जहा जहा जादवि कौ पावौ।
ताहि हनो तिहि बसु गवावौ।
एहि आग्या असुरौ को दीना।
सांईदास नृप इहि मनि लीना॥१०॥

इति श्री भगवते महापुराणे दसम स्कंधहि श्री शुकदेव परीक्षति संबादे प्रिथमो ध्याय॥ १ ॥

कस दुष्ट इहि मनि ठहिरायो। उग्र सैन तैं राजु हिरायो॥
देवकी सहिति बसुदेव बुलायो। तिहि कौ बदी माहि बसायो॥

तिहि पग महि वेरी ले डारी। अति क्रोधु चितवनि उनि धारी ॥
षष्ट गर्भ देवकी के मारे। करि बिरोधु मनि महि प्रहारे ॥
सप्तम गर्भु देवकी जो आयो। सेषनाग तिहि नामु अपायो ॥
आपि अप्रमु देवकी गर्भ लीना। बलिभद्र इसि को नामु कीना ॥
प्रिथमे देवी को उपिजायो। तिहि आज्ञा करी त्रिभवन रायो ॥
राम को तुमि गोकल ले जावो। रोहणी गर्भ माहि ठहिरावो ॥
रोहणी भर्जा बसुदेव केरी। सुण हो देवी इहि विधि मेरी ॥
तू गर्भि जसमति सेहि निवासा। देवकी के गर्भि मे लेगो वासा ॥
दुष्ट कंस विरोधु चलाया। सुरि ऋषि मुनि जन बहु दुःख पाया
इसि को दूरि करो तत्कार। एही उपिजी हुव हमारे ॥
देवी को प्रभ इहि वर दीना। तोहि आसुन स्थिर मैं कीना ॥
प्रथम तोहि दुर्गा सभ भापहि। इहि प्रयोग मन अतरि रापहि ॥
जो जो तेरी सेवा कर्सी। सोहि किपा करि मौजभु तर्सी ॥
दुख दर्द ताहू प्रहि नासा। जो कोई तेरी करे आसा ॥
द्वितीया चंडिका नामु तुम्हारा। त्रितीया अंबिका जगत उजारा ॥
चतुर विजीआ तोहि नामु बषानहि। पचम अपसा वसी पछानहि ॥
भवानी त्रिपुरसुदरी माया। अष्टभुजी बहु रूपु दिपाया ॥
इहि वर प्रभ ताहू को दीना। इहि करणा प्रभ ता परि कीना ॥
देवी मे मन महि ठहिरायो। स्याम सुदरि जो कछु उचिरायो
बसिदेउ लाडि रोहिणी गर्भि डारा। एहि कर्मु की सत्कारा ॥
आपि जसोधा गर्भि निवासा। लीतो बाइ बहु ज्योत प्रकासा ॥
श्री देवी मे इहि कर्मु कीया। साईदास सुप आयमु लीया ॥११

कंस भर्जा सभ मिल धावहि। मिलापति देवकी देपि जावहि ॥
इकि दिन देवकी को मिलिआई। दुष्ट कंस सो आपि सुणाई ॥
देवकी गर्भु छे[illegible] है कीआ। द्रिष्ट नि धावै तिहि कछु बीआ ॥
दुण सुनति विधि हिर्दै जु कीआ। अति अनदु मंगल मन लीना ॥
कतक दिन जबि भए बितीता। इहि विधि होई निमल रीता ॥
कौमापति पूर्ण भगवाना। त्रिभवन नायक पदु निर्बाना ॥
मुर्लीधरि प्रभु यादव राइ। अकाल मूर्ति हरि संत सहाइ ॥

अबुनी स्वंभू भी त्रिभनाथ। सदा सदा संतन के साथ ॥
स्याम बैकुंठि गर्भ देवकी भाए।
सीमो निवासु तहू ठहिराए।
तिहि समे अति प्रगटयो उजीआरा।
मानो रवि की किर्न पसारा।
देवकी रूपु सवर अधिकाई।
कनक पुतरी देत दिपाई।
जो दुहिता छीम देपि जो आवे।
कस दुष्ट सो आइ सुनावे।
इहि गर्भ देवकी बहु उजीआरा।
हुदयो तिमर रवि ज्योति पसारा।
कहा उस्तति तिह रूप बपाने।
तुमि उस्तति को कहा न जाने।
कस बाति श्रवण सुग पाई।
मन महि भी उपज्यो अधिकाई।
नृप मन महि भी भयो बसेरा।
साईदास त्रिभवन कीयो डेरा ॥१२

दुष्ट देवकी देपणि आया। तत्काल देवकी पहि आया ॥
दपि रूपु महा बिस्मायो। कास सरूपु तासि दिष्टायो ॥
रविवारनि सौ कह्यो सुणाई। सुणहो रे तुमि मेरे भाई ॥
मोहि हतनि कलिहार गर्भ मायो। मोहि सम भाय यत्न करायो ॥
तुमि मोहि बीर सखा हो मेरे। मै बसो दूरि तुमि बसहो नेरे ॥
आयनि रहो माहि तुमि सोबो। छिनु पलु तमि गाफल ना होवो ॥
जो प्रथम मोहि आए सुनावै। बालकु जन्म्यो एहि बतावै ॥
मै ताहू को बहु कछु दवो। सुप्रसन्न भारम करि लेबो ॥
इहि बिधि रविवारनि कहि भास। कपट हुद उपज्यो भौ नास ॥
जाति ग्रहि माहे जाइ ठहिरामा। मनि महि त्रासु अधिक उपिजाया
जो भाजनु करे तिहि महि दपै। मतु इमि महि आमा होइ पेप ॥
जौ करि सोवै चैनु न आवै। मनु इहि बस्तु चैन महि आवै ॥

अैसा अर्मु भयो चित ताके। निसि दिन भर्म न चूके वांके ॥
बिधि[1] अधावा[2] सोवनि जी धाए। देवकी पहि आइ ठहिराए ॥
करनि लगे उस्तति हरि केरी। कहा कहे हमि गति मिति तेरी ॥
महाराज पूर्ण भगवाना। गहरि गंभीर अरु चतुर सुजाना ॥
गर्भि चून तुमिरा क्या कामा। जन्म लीओ पूर्न प्रभ रामा ॥
भक्ति हेति करि कार्नु कीना। असु दुष्ट बहु दुख सुर दीना ॥
इहि प्रयोग औतारु स लीआ। भक्ति हेति करि इहि बिधि कीआ ॥
उस्तति प्रभ की एहि बिधि भाषी। बहुरो सुगर[3] धकरि इहि भाषी ॥
उस्तति अनकि करी हरि केरी। सार्दिनास सर्नी प्रभ तेरी ॥१३

बिधि अरु सुगर शम्भु देवा। प्रबोधनु कीनो है वसु देवा ॥
पारब्रह्म सुमिरे अहि आया। सदा तुमारी होइ सहाया ॥
भक्ति बछल प्रभ असुर सिहारनि। सुर सुख देवनि दुष्टनिवारनि ॥
दुख दर्इ सम तुमिरे टारे। सकल अधना तुमि कटि डारे ॥
मन महि कछु न करो बिस्वासा। तुमरी भक्ति पूर्न करे आसा ॥
बहुरो बहुरहो प्रभ आपि सुणायो। दीनानाथ त्रिभवन क रायो ॥
क्षीर समुद्रि तुमि प्रतु कहा। तहा वेद पढिने मै नि कहा ॥
बसुदेव यादव के ग्रहि आया। असुर सिहारर्ण पसु ना लावा ॥
हमि अपुन हुवे एहि बिधि भानी। कहा लपहि कैसे भई बानी ॥
तूं प्रभु दीनानाथ गुसांई। तेरै करति लपे ना जाई ॥
भक्ति उधानि तेरो नामा। हरि प्रान पके इकि कामा ॥
पारब्रह्म है रूपु तिहारा। घटि घटि माहे तोह पसारा ॥
मे तोय परि धर्नि टिकाई। तोहि गति कछु प्रभु लपो न आई
माटी कैसे जल ठहिरावै।
तुमि किर्पा करि इहि बनि आवै।

तुमि बिनु प्रभ इहि करे नही कोई।
जो तू करहि सोई प्रभ होई।

---

१ बिधि—ब्रह्मा।
२ अधवा—इन्द्र।
३ सुगुर—बृहस्पति। कहीं कहीं "सुगुर" इन्द्र के लिए आया है।

इहि विधि प्रभ की उस्तति कीनी।
उस्तति प्रभ की मन धरि लीना।
बहुरो सुगर शंकर नृप वर्ना।
नमिस्कार हरि पग सिर धर्ना।
करि उस्तति बैकुंठ सिधाए।
ताहि उस्तति को पार न पाए।
जो कोऊ गर्भि उस्तति सुण लेवै।
सांईदास तिहि बहु सुख देवै॥१४

इति श्री भगवते महापुराणे दसम स्कंधे श्री सुकदेव परीक्षत संवादे द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥

मास भाद्रो प्रगटे बनवारी। थित अष्टमी कुंज बिहारी॥
मध्य रैण प्रभ जोत दिखाई। श्री गुपाल सुंदर सुखदाई॥
रोहणी नक्षत्र जन्म हरि लीना। बसुदेव हर्खि हर्खि मन कीना॥
चतुर भुजा करि पीत पीतांबर। कमल नैन अति बहुतु है सुंदर॥
कौस्तक[1] मणि मस्तक परि लीने। मोर पख सिरि ऊपरि कीने॥
शंख चक्र करि तांके माही। लक्ष्मी बांवे[2] अंग है बाही॥
बसुदेव कह्यो क्या उस्तति भाषा। किहि रसना उस्तति हरि भाषा॥
प्रकास मूर्ति लोक सभ भासहि। पारब्रह्म तुमरा नामु भासहि॥
मो पहि कही न गति मति जाई। इहि प्रभ पूर्न सर्व समाई॥
बहुरो प्रभ देवकी हिग देवै। अति सरूप कछु भ्रसि मुख पेवै॥
बचन उचार कह्यो बलि जावाँ। मै ताका प्रभ मनि महि ध्यावा॥
सिष्ट सकल मुखि एहि पुकारे। पारिब्रह्म निरभय निरकारे॥
धर्म योन देवकी माए। तहा भाइ जन्मु जग पाए॥
मै ताका एही मन मानो। किहि बिधि सुत मै तोहि बखानो॥
षट बालक हमिरे नृप मारे। त्रासु होवत अति चित हमारे॥
पारब्रह्म निर्भो निरकारा। दीनानाथ हरि अपर अपारा॥
देवकी सो तब बचनु उचारी। सुणे हो माता बात हमारी॥

---

१ शब्द कौस्तुभ होना चाहिए।
२ बावे>बामे।

सुरए होमात तुमि कछु चित आवै । पूर्ब जनम तुमि भक्ति कमावै ॥
बहुरो तुम बसुदेव को कह्या । स्रिष्ट करो उतपत क्या बह्या ॥
तब तुमि भए भै भक्ति दोई । हमि से उतपति कैसे होई ॥
तब तीर्थ तटि तुमि दोई आए । स्रिष्ट तपस्या सौ चित लाए ॥
सीत काल सीतलु बलु लीना । ग्रीष काल स्नानु जु कीना ॥
तप्ति काल ऐस तुमि कीआ । चतुदिशा दावा तुमि दीआ ॥
तुमि सिरि परि रवि कर्ता घामा[१] । तुमि तपस्या करी पूर्ण रामा ॥
तब मैं तुमि पहि प्रगटि पखोआ । तुमिरे मनि अंतरि मै पोया ॥
तुमि इहि बचन उचारे ताही । तोहि सार्या इकु बालक चाही ॥
ताही समा तुमि बात सम्हारो । अपुने घटि अंतरि बीचारो ॥
ताही बचनु मैं चित करि आया । तुमि मेरा बहु भजनु कमाया ॥
तुमि मनि महि कछु ना सुकचावो । सांईदास निरभौ सुप पावौ ॥१२

कौसापति पूर्न अघनासी । गज अनंत कीओ काटी जिन फांसी
सो बसुदव सा बचनु सुनावै । सुरए हो पित किउ दुदा इसावै ॥
मोको तुमि अबि लोह उठाई । गोकल बेग बसो तुमि धाई ॥
मोको तुमि गोकल पहुचावो । नदि महिरि ग्रहि पा ठहिरावो ॥
मंदिर महिर ग्रहि दुहिता होई । पित तुमि बेग स्यावो सोई ॥
बसुदेव सुकथ रह्यो मन माही । मन महि अति बिस्वासु कराही ॥
पषास द्वार कैसे ले आवा । गोकल महि किउ करि पहुचावा ॥
ताहि कपाट सगे अधिकाई । बो मरा के अंद्रासा भाई ॥
क सहस्र रपिवारे तां परि । रहित सदा जाग्रति हमि परि परि
किति बिधि मैं बाहिरि ले जावौ । पहि गोकल माहे पहुचावौ ॥
तब माधव दो भुज तन धारे । सत जना की प्राण अधारी ॥
इहि बिधि सुकथि गोदि महि लीना । बसुदेव गवनु गोकल को कीना ॥
अबि निर्पे पूम्हे सभ द्वारा । सम रपिवारि सुदि बिसारा ॥
माया मोह बीच सभ सोए । मानो मृति भए प्राण पाए ॥
बसुदेव प्रम से बाहिर आए । कालिंद्री तटि आई ठहिराए ॥
रवि दुहिता बसु है अधिकाई । तिहि उस्तति कहु कहा बताई ॥

---

१ घाम=धूप या पसीना ।

वसुदेव तिहि निरपित बिस्माना। ताहि प्रवाह देपि सुकचाना॥
सुकचि सुकचि मन बहु बिस्मायो। कहा होइ अबि भ्रम इहि मायो॥
जो फिरि जावौ बालकु मारे। मा को सहित बालकु प्रहारे॥
जो जमुना पवौ तौ बुवि जावौ। कठनि बनी भ्रम कहा करावौ॥
बहुरो मनि माहू इहि धारा। बूवो इसि महि होइ निस्तारा॥
इहि विधि कहि जमुना पगु दीआ। हृदे भरोसा हरि का कीआ॥
रवि दुहिता अर्गी भ्रम लागी। सूदम भई प्रहुमत्ति त्यागी॥
वसुदेव तीर भव्यो भी त्यामा। गोविंद उस्तित कर्मे लामा॥
तुमि हो यमुना तीर बढायो। महा अधिक जसु तुमि सभायो॥
करि उस्तति गोकल महि आयो। नदि महिर ग्रहि आइ निर्पायो॥
सुप्न गयो सम ही सुप माही। गोकल महि जाग्रति को नाही॥
जसुमति सुप्न गयो अधिकाई। कन्या आई सुति न पाई॥
बसुदव कन्या को हिरि लीआ। ताहि ले उमि गोदि महि कीआ॥
कृष्नचंदु तिहि आगे डारा। जो सकल सृष्टि को रापनहारा॥
कंन्या ले देवकी पहि आया। सकल द्वार कपाट चढाया॥
सकल कपाट दीए जड़ाले। प्रजहू जाग्रति ना रपिवाले॥
बेडी ले अपुने पग डारी। कंन्या रुदनु कीयो तदकारी॥
कन्या अधिक रुन अबि कीआ। साँईदास सभ ही सुण लीआ॥१६

इति श्री भगवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री शुक परीक्षति संबादे तृतीयोध्याय॥ ३॥

अबि कन्या बहु रुदनु करोयो। सभ रपिवारनि ले सुप पायो॥
तात्काल दुष्ट पहि आए। हाथ जोरि करि आप सुणाए॥
जन्मु लीयो गर्भ बाहिरि आमो। दुष्ट सुनति विधि बहु हर्षायो॥
किर्पानी ल करि करि धामा। ततकाल देवकी पहि आया॥
देवकी निर्पति उठि धसोई। तकि बस न बसावै कोई॥

---

१ यहां वसुदेव के हृदय का द्वन्द्व दर्शनीय है। "बूवो इसि महि होइ निस्तारा" इन शब्दों में दुःखी हृदय के भावों का चरमोत्कर्ष है।

२ रविदुहिता—यमुना।

रचनु कह्यो सुण हो मेरे भाई। तूं नृपु तुमि कौ वसु प्रधिकाई।।
अष्ट बालक तैं मेरे मारे। मन विरोध करि तैं हारे।।
प्रबि इसि कंन्या को त्यागो। मोहि कहु नृप जी तुम लागो।।
इसि के हाथ कहा कछु प्रावै। इसि कन्या वसु कहा वसावै।।
मोकौ जम्त न लाई कलका। दूरि करो मनि ते इहि शंका।।
इहि दुहिता बालकु कोऊ नाही। जगत तोहि बहु निंद कराही।।
देवकी विनती बहु विधि कीनी। दुष्ट कंस कन्या पसि लीनी।।
ताकौ तमि वाहिरि ले प्रायो। पाहन पर्यो जहा प्रधिकायो।।
इदे कीयो पाहन सो मारौ। कन्या को इसि सग पछारौ।।
कन्या तहि करि ते छुटिकायो। गगनि चढनि कौ तिन चितु लायो
रूप चडिका तब ही विथारा। ग्रष्ट भुजी तिन मूल सवारा।।
चौद सहस्र चक्र करि लीने। गगनि मंडल कौ तिन पग दीने।।
देवी सकस कीयो जकारा। ज जै देवा रूप तिहारा।।
चढी गगनि तब ऐसे माप्यो। दुष्ट कस तैं क्या चित राप्यो।।
प्रगटि भयो जो तोहि प्रहारे। कंस दुष्ट मोकौ तूं मारे।।
सुर सभ त्याग स्वगि को प्राए। कुसम माल देवी गल पाए।।
ताहि सहित ले स्वर्ग सिधाए।
कंस भै चकित मनि बिस्माए।
बिस्म भयो मन इहि बिधि ठानी।
साईदास घटि महि एहि भामी।।१७-

दुष्टि वीचार कीओ मनि माही।
मै तो पातु कीयो प्रधिकाही।
वसुदेव देवकी को बंदी कीना।
मै पापी इन बहु दुःख दीना।
पष्ट बालक हनि के म मारे।
भांति कीए मै प्रापि बिकारे।
प्रबि देवी मोहि एहि सुणायो।
प्रिपु मोहि एहि बिधि कर्मु कमायो।

वसुदेव देवकी को तजि दीमा।
तिसे समे मुक्ते महि कीमा।
मम सरि और पावकु नही होई।
इहि बसुधा परि दूजा कोई।
अपने जीय कार्ज इहि कीमा।
पष्ट सुत बहिण के हमि मीमा।
बहुरो देवकी सो म्यु कह्यो।
मुक्तो पुकार्‌यो तिह वर पह्यो।
एही आयु गन्तक से आए।
फिर ठहिरावन बरल कराए।
अबि तुमि आयो हो अहि माही।
होवण होइ सो कवन मिटाही।
वसुदेव देवकी कौ ले आए।
श्री गोपाल हदे महि ठहिराए।
दुष्ट असुर सम लीए बुलाई।
तांको कहित सुनो मेरे भाई।
अबि क्या कीजे इसि उपिचारा।
प्रगटि भयो मोहि मारन हारा।
सकल पसो नृप सौ इउ कह्यो।
कित कार्ज मैं चक्ति होइ रह्यो।
दसि दिन का जहा बालकु पावे।
धग जाइ तिम को हमि मारे।
जो समि बालक कौं हमि मारहि।
तांको कौनु हनि माहि प्रहारहि।
एहि बाति हमि ते सुएा सीजें।
कछु बिसबासु न मनि महि कीजें।
नारायण इहि यही कहावें। मछ रूप जो आप बनावें॥
कछ रूप ताहू बपु धारा। बैराह रूप होयो ततकारा॥
नृसिंह रूप ताहूं बपु पायो। बावमि को तिन भेपु बनायो॥
परसुराम को ही जो भयो। सहस्रार्जन को भी जु हतयो॥

श्री रामचद्र सोई होइ आयो। नेम धम्म सौ बहु चितु लायो॥
प्रथम तोह आज्ञा इहि करही। नेम धर्मु पडनि चितु धरही॥
होम मन्न किसे करनि न देवहु। जे कोई करे तिसे हति लेवहु॥
कहु वर हो बसु कहा कहिज्जै। कहु भिक्षकु तिस भिक्षा दिज्जै॥
वहु आवन ग्रहि ग्रहि महि जाई। ता कहु बसु कहु कहा समाई॥
जो अथवा हमि हाथु अबावे। जो बहु करे सोई छिन पावै॥
प्रथमे सुरग कौं प्रहारहि। पाछे ते बालक को मारहि॥
महादेउ कछु बाति न कहे। वहु अतीत निरभौ पद गहे॥
जो कहु भांति भांति चलावहि। बेग मारि महि जीउ गवावहि॥
जोष कोई हमि को ना सूझै। रण महि पग होद हमि झूझै॥
इहि मति दुम्री सकल ठहिराया। सुरण नृप कसु अधिक हर्षाया॥
साधो श्रवण धार सुण लीजै। सांईदास आलसु ना कीजै॥१८

इति श्री भागवते बस्म स्कंधे महा पुराणे
श्री शुकदेव परीक्षित संवादे चतुर्थोध्याय॥ ४॥

नंदि महिर ग्रहि मगल गाए। निर्प्यो प्रभु बहु आनंद पाए॥
नंदि महिर बालकु करि जाना। अपुना सुतु साचि करि माना॥
पडति जोतकी अधिक तिन आने। एकि भांति मुख वेद बखाने॥
लग्न महूर्त आछे देखे। कमल नैन सुंदर प्रभु पेखे॥
सहस्र बीस सुरभि नंदि बुलाई। निमल ब्राह्मण को दीनो साई॥
जसे बेद मित होइ मेरे भाई। नदि महिर कीनी विधि गाई॥
सुरभीयनि थ्रिग कचनु सभु धारे। पग रूपे के ताहि सवारे॥
पृष्टि ताहि तांबन सौ जरी। नदि महिर ने इहि विधि करी॥
तिल ताके सग बहु कछु दीने। नदि दाम एसे तब कीने॥
नदि महिर चोकी परि बइया। अति जडाउ कीनो नृप सइया॥
कंचन चौकी मणी जडाई। ताहि उसतति कहु कहा बनाई॥
सभ आपदा गायनि मिल आई। अति सिंगार सुदर अधिकाई॥
कनक माली ऊपरि बहु पहराए। अति अनंद होइ मगल गाए॥
मारब केसर सौ भरि ल्याई। नदि महिर ऊपरि छिरकाई॥
जो कछु उनि ताई है सरिआ। नदि आग तिन म पदि धरिआ॥

ताल मृदंग बजावनि हारे। भए इकत्रि नंदि के द्वारे॥
अति अनंद मगल बहु गावहि। सुप्रसन्न मृदग बजावहि॥
नदि महिर ताकैहु बहु दीना। सुप्रसन्न ताकहु करि लीना॥
बंदी जन मे मगल गाए। नंदि बिदधा पाइकरि ग्रहि आए
ऐसे नंदि प्रभु बिदिआ कीने। बंदी जन को बहु कछु दीने॥
नंदि महिर न बहु सुपु पायो। साईदास मन महि हिर्पायो॥१६

नंदि गोप सम लीए बुलाई। तिन सा कह्यो सुनौ मेरे भाई॥
हमि परि प्रभु ने किर्पा कीन्हा। बालकु हमिरे ताई दीन्हा॥
नृप को भी कछ हमि पहि आवै। भाजु काल वहि हमहि बुलावै॥
चलह्हो हमि उसि पाइ जावहि। जो देवनि हा इनो देकरि आवहि
एही मत्तु सभि हूं ठहिराया। नदि महिर जो ताहि सुनाया॥
गोप सकल नदि मे सग लीए। मथुपुरी कौं तिन मे पग दीए॥
गोप सहित पुर माहे आए। नृप पाहे सम जा ठहिराए॥
नृप ताई प्रनामु सुनायो। जो आन्यो आगे ठहिरायो॥
करि प्रनामु नृप कौं तजि आए। एकु ग्रहि म पुरि महि ठहिराए॥
बसुदव नदि महिर पहि आया। अंग अंग मिल आनंदु पाया॥
ताकी उस्तति कहा बपानो। मैं तो उस्तिति कहा पछानो॥
बहुरो बसुदेव नदि महिर सुनाया। हियमान होइ करि उचिरायो॥
है कल्याण गोकलि के माही। तिरण तो अधिक भयौ गौवनि ताही
बलिभद्र को है कल्याना। इहि बिधि बसुदेव बचनु बपाना
हमि तो बदि रहे अधिकाई। पुत्र भि माकहि मेरे भाई॥
कमु बुध्द पावनि बहु भारी। ताकहु नासु करे गिरधारी॥
मतु उसि के मनि डौरहि आवै। इहि प्रयोग मन महि सकुचावहि॥
बसुदेव प्रति नंदि सौ रापहि। ऐसे बसुदेव नदि सौ भापहि॥
राम को पितु तू है मेरे भाई। भाजनु देइ कीजो अधिकाई॥
अबरि पहिरनि को तू देवहि। तू प्रतिपालकि ताहि करेवहि॥
राम कौं मैं ग्रिग मा निर्पायो। मा उनि मोकौं देप नि पायो॥
धन्न धन्न नदि मति तिहारी। कहा कहो मै बाति तिहारी॥
इहि बिधि बसुदेव नदि सुनायो। साईदास मिलि तिहि सुपु पायो॥२

नदि महिर वसुदेव सुणाव । करि करि वचन लिखे परभावे ।।
हे वसुदेव सुनो मेरी वाता । मतु इहि मनि मानो मेर भ्राता ।।
षष्ट बालक मेरे नृप मारे । करि विरोधु नृपु कंस प्रहारे ।।
जो विधि लिख्यो कहो क्यु टरे । ताहि लपु सीस को ना धरे ।।
यहि बालक एही आयु ल्याए । तुम को अपने सहिम दिखाए ।।
मतु तू कछु हृदे अंतरि आने । गुर प्रसाद मेरो कह्यो मान ।।
महुरा वसुदेव वचनु सुनायो । सुण हो नदि प्रीतम सुखदायो ।।
तने कछु सुणहो मेरे भाई । मै मैं तुम को कहौं सुणाई ।।
नदि महिर वसुदेव सो भाया ।
मै कछु श्रवण सुनो नही भाया ।
जो कछु होइ सो मोहि सुणावौ ।
बग विलम तुम मूल नि लावौ ।
कंसु दुष्टि इहि मतु ठहिरायो ।
बालकु मारण को चितु लायो ।
दुष्टि सखो को आज्ञा दीनी ।
पातक कसि इहि विधि है कीनी ।
दसि दिन को जहां बालकु पावो ।
तिसि ताई तुमि मारि चुकावो ।
तातकालि तुमि गोकसि जावो ।
बालक की आइ सोभी पावो ।
इहि अवस्था प्रभ किर्पा कीनी ।
इमिहि आनदु पायो सुण लीनी ।
तातकालि अपुने ग्रहि आवो ।
माईनाम आइ करि सुप पावो ।।२१

इति श्री भगवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचमोध्याय ।। ५ ।।

पूतना राकसी कस पठाई । ताहि वितांतु कहो मेरे भाई ।।
गोकसि आइ बालकु तुम देखो । ताहि सिधारो द्रिष्टी पेखो ।।
वकी उमिट करि इहि वपु कीनो । द्वादश बर्षि कन्या को लीनो ।।

अति पीतांबरि अंग उढाए। भूषन सभ अंग कौ पहिराए॥
से करि कुसम केस महि डारे। करि सिंगार गोकल पग धारे॥
जो देषे मैं चकित होइ रहे। बहुरो सुधि देहि ना लहे॥
इहि बिधि होई है मेरे भाई। सुण हो नदि महिर सुषदाई॥
बसुदेव नद सौ यहु समिझायो। मामा भांति करि ताहि बतायो॥
बकी गई नंदि महिर द्वारे। अति सुदरि सुंदरि बपु धारे॥
कहियो आइ मैं कंस पठाई। नदि के ग्रहि बहु भयो सवाई॥
नदि महिर प्रभ बालकु दीना। नृप बहु हरषि मानु मनि लीना॥
इहि प्रयोग ग्रहि मोहि पठायो। ऐसो मैं बालकु जसमति जायो॥
तुमि बालकु हमि कहु दिषलावो। कहा सवायो ठौर बसायो॥
जसुमति तिहि को ना दिषलावै। बकी डीठ आपे चली जावै॥
तालकाल प्रभ पाहे भाई। जहा सोए प्रभु यादव राई॥
लीयो उठाइ बकी गोदि माही। कुचु बिषु लाइ दीयो मुष माही॥
पारब्रह्म निर्मो निरंकारा। सकल बिस्व ताको बिस्तारा॥
छिन उपिजाए छिनि हि बिडारे। तांकहु कहो कवनु कोई मारे॥
संत हेत करि प्रभु बपु धारे। सांईदास सदा बलिहारे॥२२

जबि बकी कुच दीयो मुष माही। प्रभ अपुनी लील्हा कीनी ताही॥
ऐसी रचना तहा रचाई। रगि रगि पिची मुक्ति पठाई॥
देहु ताहि दीघ होइ पर्‌यो।
कृपानिधान इहि रचना कर्‌यो।
सभ गोपता ग्रहि मिलि करि धाई।
कहति जसौदा सौ समिझाई।
बालकु सेहि तहा तू देषहि।
भई मैं चकित क्या कछु पेषहि।
बडो कोई यहु इहि परि आयो।
करुणानिधि प्रभ आप मिटायो।
एहि बिधि कहि बिप मंगल बुलाए।
महा पंडित जो बेदि सुनाए।

तुम गोकलि माही पनि भारो। नंदि के तात ताई जाइ मारो॥
तुमि मोहि बीर काम मोहि करहो।
पसु छिनु रधिक बिलमु न करहो।
त्रिणावर्तु इहि सुण करि भाया।
वेग माहि गोकलि महि भाया।
जसुमति कानु करति ग्रहि माही।
कान्हिरि छाड्या धनि पराई।
त्रिणावति बिधि एहि निहारी।
मनि महि ताहि कीडो बीचारी।
प्रथिमे गाकलि पौणु भ्रमायो।
महा अधिक कछु कह्यो न जायो।
प्रबल बहुतु भई अंधारा। काई न सकै नैन पसारा॥
महादुष्ट ओउ देवनि माया। पवन सहिति भी कृष्ण उठावा॥
कान्हिरि को न बहयो प्रकासा। दुम्मति ताहू ताहू प्रकासा॥
जसुमति जोहति कान्हिरि ताई। द्रिष्ट नि आवै रुदनु कराई॥
खोहति फिति कहू न पावै। मुख ते बचनु उचार सुनावै॥
मै बालकु को ईहा बहाया। जोहि थकी कहूं ठौर न पाया॥
रुदनु करति सिर धनि पछारे। करि सौ अपुने करि पटिकारे॥
गोप जोपता सभि सुण पाई। रुदनु करति है जसुमति माई॥
मूखे गन कछु द्रिष्ट न आवै। सकल जोपता मन महि बिसमावै॥
करि सौ करि सभि फिति पछारहि। हाहा करै बचनु उचारहि॥
पारब्रह्म सभि बिर्था जाने। हमि तुमि पाछे कहा बखाने॥
नदि महिर परि किर्पा भारी। बिधि प्रबल्ल है बनिवारी॥
बालक दीया किर्पा कीनी। इहि बिधि किर्पा कर के लीनी॥
अपुनी पेज राखो प्रभ पूर्न। दूरि करनि सतनि के बिसूर्न॥
गोप जोपता सभि इही पुकारा। कान्हिरि सभि इहि लीन्हा भारा॥
सकल बितांतु कहो मेरे माई। साईंदास प्रभु सग्न सहाई॥२४

त्रिणावर्ति का उरि से लीना। कठ पकरि अति निहूबलु कीना॥
मारण दृष्टि पसु धनि गिरायो। पाहिनि पर देहु ताहि हतायो॥

पटिक रह्यो भाले ततकार। जबि ही कान्हरि बल धरि मारे॥
गोप भार्जा नन पसार। श्री कौसापति तिन हि निहारे॥
पिअरि बल के परि ठह्रिरायो। पेसवि है बहु मानदु पायो॥
वेग भाइ तिहि लीतो उठाई। भग भापुने लीतो भाई॥
समि भापता मिमि बचनु उचारे। दुष्टि भसुर गोकल पगि धारे॥
कान्हरि मो ले गगिन चरहाया। ऐस प्रभु बहु चरति दिपायो॥
जो तेजि सेतो ना रह्यो बलि बाना। रहे म चकित भति हैराना॥
याडे सो तिहि बसु न बसाव। जा वसु कर्के ताहि हसाव॥
भए भै चक्ति समि नरि नारी। दपि चरित्र श्री गिरधारी॥
जसुमति एक दिवस सुप पायो। बडि प्रजकि परि दौनु करायो॥
स्याम सुंदरि को भागे लीभा। मरवनु प्रभु के मुप महि दीभा॥
श्री कृष्ण चव ले पोवरग लागा। बहुनि गिभा पीवरि भति धागा॥
कवहू ले मुपि बाहरि डारे। कवहूं हिर्दैवि बदनु उचारे॥
जसुमति प्रभु का बदनु निहारा। जासु समे प्रभु भापि उभारा॥
सकल विस्व ताको द्रिष्टि भाई। देप रूपु जसुमति विस्माई॥
द्रिग मीए भूर भै चकित हो रही।
तांकी विधि कछु जाइ नि कही।

इहि बालकु भति रूपु न्पिाव।
नारायण प्रतक्षि द्रिष्ट भाव।

हमिर परि क्रिपा इनि धारी।
प्रांन पुपि श्री कुंज बिहारी।

जसुमति दपि विस्मक चितु धारा।
साईदास प्रभ रूपु भपारा॥२५

इति श्री भागवत महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तमोध्याय॥ ७॥

नंदि महिर तब बचनु उचारा।
जिहि दिन मै मथुरा पगु धारा।

बसुदेव तब ही मोहि सुनायो।
प्रीति भाव करि मोहि बतायो।

गोकलि महि प्रवतिषि प्रहु होवहि।
तूं मयुन प्रहि चायति सोवहि।
वसुदेव वचनु क्यं पन्यथा होई। जो सम्द कह्यो होइ सोई॥
मथुर माम को मयो मुरारी। प्रति सुंवरि बहु रूप उचारी॥
ताको कोइ न सके उठाई। प्रति सरूप प्रगटि जदुराई॥
प्रवरि नौतनि ताहि उढाए। प्रभु की चरित्र प्रधिक सुहाए॥
बसुन्देव गगि की कह्यो गुसाई। सुणु स्वामी पन सदा सहाई॥
गोकलि महि प्रपुन पगि धारो। मोहि कहा मनि माहि बीचारो॥
ऐस प्रम जी कोई न जाने। वृष्टि लोक सुभ नाहि पछाने॥
ऊहा दाइ बालक है प्रम मोरे। हे गुर जी यहु तुमरे चेरे॥
गगि सुनति गोकलि का माया। नदि महिर के प्रहि महि प्राया॥
नदि महिर दोऊ करि जोर। किपा करी प्रायो प्रभु मोरे॥
चरन पपार चर्नाम्रितु लीना। प्रादर भाउ नदि बहु कीना॥
दु भउ बहुताहि करायो। पूर्न प्रभु करि ताहि पहायो॥
गोबिद हमि परि किर्पा कीने। गर्गि चर्नि हमिरे प्रहि दीने॥
नन्दि महिर ऐसे प्रति बौल। बोजन न मांति की भोलै॥
वेनती कीनी गगि गुसाई। मुण हो प्रम मैं तो समांई॥
इहि दुइ बालक को करु नामा।
ताहि प्रसाद पूरण पूर्ण हाहि कामा।

गगि बोयो प्रति नदि के ताई।
सुन हो नदि महिर मनु लाई।

जो मैं इनि बालक धरो नामा। सुण्ये कमु होवे बुरे कामा॥
वकी क बालक करि जाने। प्रति क्रोधु तब मनि महि प्राने॥
वकी हमि त सए दुराए। नन्दि महिर प्रहि जाइ छपाए॥
देवकी बसुन्देव को दुख देवै। प्रति उपाधि नृपु कंसु करेवै॥
मन्दि महिर बहुरो बिधि ठानी। नाम धरो तुम बहा ग्यानी॥
हमि इनि बालक को ल जावहि। बनि माह इनि पदि जु छपावहि
गगि फेरि बहु विप बसाए। ताकी भोजन प्रधिक पचाए॥
नारायण प्रभ नामु रखायो। उग्रसैन नृप ते उधिरायो॥
स्वत बर्नि प्रभु बदनु दिखावे। कृष्ण नामु इहि बिधि उचिरावे॥

चौर नामु गोबिंद कहिज्जै। इहि प्रसीर वचनु थिर जिज्जै॥
वहुरो बलिभद्र को कहा। इहि बालकु देवकी गर्भि ग्रहा॥
ताहि त्याग रोहुणी गर्भि ग्राया। ग्राइ जन्मु रोहुणी गर्भि पाया॥
सेस नाग का इहि अवतारा। सुण हो नदि संधु मनिधारा॥
इसि को नामु मै भलो धरावौ। बलभद्र मनि करि उजिरावौ॥
चौरु नामु इसि राम बखानो। बसिदेव नामु वहु पर्वानो॥
गर्गि नामु बालका को राया। सोईदास विधि सबसी भाया॥२६

गर्गि नामु प्रमि राय सिधायो। नदि मद्दिर वहु सेव करायो॥
सुरि वहु दीनी गर्गि के ताई। चौरु दिपो को दीनी प्रधिकाई॥
गर्गि नामु रक्ष करि धाया। मथिपुरी मार्गि चितु लाया॥
एक वर्षि को कान्हरि होए। नदि मद्दिर सभि सखे पोए॥
राम मास धोइ है अधिकाई। कान्हरि ते सुण हो मेरे भाई॥
थोऊ बीर पेमति नदि द्वारे।
सामति रवि ससि जोत पसारे।
चमक माहि करि पगि सो चालहि।
घति अनदि सोभति सीस वालहि।
बहुरो पगि सो फिर्त फिरही।
प्रति कलास मनि प्रतरि करही।
बस्न कढे तिन ने मुपि माही।
पांच वर्षि पूर्न भए वाही।
बछरे सभि गोकलि क ले जावहि।
बनि माहे पढि ताहि चरावहि।
गोप तान वहुतिहि सग जाही।
फिरि फिरि मदा बनि माही।
गोपनि क ग्रहि भो दोरा राही।
मापनि को पडिक पहि पसाही।
सभि जायता गोपनि मिलि भाई।
जमुमति को यहु कहिवि सुनाई।

इहि दुइ बासकि हमहि दुप राने।
तुमि पहि असुमति कहा बषाने।
मापनु हमिरा पडति दुराई।
पड मकटि की बेम पसाई।
असुमति ताहि कहा नही मानहि।
बात सकस मिथ्या करि जाने।
गोपि ओपता फिरि घरि माई।
साईदास प्रभ ताहि पिमाई॥२७

एक दिन गोप ग्वाल मिलि माए।
असुमति कौ तिहि माप सुनाए।
तोह पूत मे माटी पाई।
हमि बरजहि हमि करे लराई।
असुमति कान्हरि पूछनु कीना।
कर से पकरि मंग महि लीना।
साचु कहो तुमि माटी पाई।
हमि पहि तोहि सपा कह्यो माई।
प्रभु गोप ग्वाल को नैन निहारे।
सभि भाग जवि मिथे मुरारे।
मुकरि परयो माटी नही पाई।
इहि बासकि मिथ्या कह्यो माई।
जो तुम हृदे भरोसा ना मावै।
मुपु देपो मोहि बयु बिस्मावै।
मुपारबिंद असु मति जवि देपहि।
धनि गगनि सभु मुप महि पेपहि।
सप्त समुद्रि है मुप ही माही।
सप्त दीप फुनि ताहि ममाही।
मोखंड प्रथवी ताहि समाई। निपि बदनु असुमति बिस्माई॥
तब मुप से इहि बचनु उचारा। मै इसि को सुत जानि कै मारा॥
मनि निरबै करि मै सुतु जाना। मूल परी मनु कूडि भुमाना॥

इहि तो पारब्रह्म निरकारा। सकल सिष्ट को साजन हारा॥
इहि सुत कहो कवन को होई। नरकार निरवैर है सोई॥
इसि की गति को मैं कहा जानो। इसि की महिमा कहा पछाने॥
भलोक सम इनु बिस्थारा। त्रिभवन राया जगित उजारा॥
जबि असुमति इह ग्यान बीचारा। कांन्हरि तब ही माया धारी॥
ग्यान सुरति ताकी मुलि डारी। बिआ सुति भई ततकारी॥
पूत पूत कहि करने लागी।
इहि काणु कान्हरि ने कीआ। सति हेति करि जगि बपु लीआ॥
साधो जपहो नामु निधाना। साँईदास पूर्न भगवाना॥२८

इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टमोध्याय॥ ८॥

स्याम सुंदर रामु सग लीए। बनि माहे बाछनि पगि दीए॥
बछे से बनि को बहु धाए। मापनु गोपनि ग्रहि पकहि दुराए॥
मापनु पढि मरिकटि कौ देवहि। मर्कटि मापन सहित भषेवहि॥
गोप जोपता भति उमिमाई। बेग माहि जसु मति पहि भाई॥
नन्दि जोपतासो तित मे भापा। हमि मापनि चोरे कान्हर राया॥
मापनु क्षीर सहिति ले आवे। पढि करि मर्कटि हाथ पलावे॥
जैसोच नाथ सनि भाए। मय्या पुम्या भति संताए॥
हमि को मस्यनु देहि ले पीवहि। ताते भानद मनि महि थीवहि॥
नंदि जोपता गोद महि लीना। भस्यनु ले तकि मुषि दीना॥
दधि को वेग बिलोबनि लागी। ठौर जाति सकली तबि त्यागी॥
मापनु ले भाजन महि डारे। श्री कृष्णचंदु तिहि ठोरि निहारे॥
छोर कहिहति चूल्हनि परि भाई।
भगिन भधिक भई उभर्यो जाई।
श्री कृष्णचंदि को मनि बहाई।
मवि जोपता उठि करि धाई।
निकटि छोर के जाइ पभोई।
दीर को सीति करति है सोई।

श्री कौसापति मे मया कीमा।
दधि मट्ट गेरि धनि परि दीमा।
मापनु माखन सो मे मामा।
ग्रहि को त्याग बाहिरि चितु लागा।
जसुमति जबि ग्रहि भतर माई।
निप ताहि मति मनि बिस्माई।
किन फोर्‌यो है मट्ट दधि केरा।
किन मायनु पड्यो है मेरा।
जसुमति लकिरी कर महि लीनी।
मति भारी लकरी करि लीनी।
पाछे स्याम सुदरि के दौरी। दौर दौरि के होई हौरी॥
श्री कृष्णचंदिको पकिर न साका। ठांढी भई मुष ते कछ भाषा॥
दीनानाथ अपार गुसांई। कौसापति सुंदरि ग्रभिकाई॥
तांको कौष्‌ पकरि कोई लेवे। जांको सकल बस्तु मुनि सेवे॥
नंदि ग्रोपता तहू ठांढी भई। थकित रही कछू जाइ न कही॥
श्री कौसापति मनि ठहिरायो। साईंदास अमिनी दुःख पायो॥२

ठांडा भया जसुमति गहि लीथा। मुष अपुने ते ग्रहि प्रतु दीमा॥
काहे मट्ट दधि को फोरि डारा। दधि मापनु तै कहा बिडारा॥
गोप ग्रोपता सकल बुलाई।
तांसो कह्यो सुणो मेरी बाई।
नितापति तुमि मोहि सच्चु भाषो।
जो तुमि कहो सोई सच्चु भाषो।
दामिनि ग्रानो इसि र्बाध डारो।
पूषिमे बाधि करि तमि फिरि मारो।
दधि मापनु मोहि धनि गिरायो।
एहि कर्म पुनि कांम्ह कमायो।
जबि जसुमति इहि बात बपानी।
सकल ग्रोपता मनि महि ठहिरानी।
तां कह्‌ कान्हरि बहु दुख दीमा।
तिहि ग्रहि मापनु दधि हरि लीमा।

इकि इकि दौरि गई ग्रहि माही।
अति अनदु उपज्यो मनि माही।
दामिनि हाथ कीई सम माई।
नवि जोपता मनि महि मुसकाई।
जसुमति प्रभु बधिन चितु दीआ।
गांठि न परे जतनु बहु कीआ।
अवहू दामिनि उह घटि जावहि।
जतन कर तौ गांठि न पावहि।
कमल नेन तबि इहि हृदे धार्‌यो।
जसुमति थकित भई बलु हार्‌यो।
मोकौं कहा बांधि हौ माई।
इहि विधि गोविंदि मनि ठहिराई।
मुष अपुने स्यु कह्यो सुणाई।
मोको बांधो मेरी माई।
जवि प्रभि एहि विधि मुषो बषानी।
जसुमति तबि ते हृदे पछानी।
प्रम को ऊपमि सहिति बषायो।
पाछे सो इहि बचनु सुनायो।
मोह भांजनु तैं काहि बिसार्‌यो।
दभि मापनु बसुधा परि डार्‌यो।
श्री कृष्णाचद तव कह्यो सुणाई।
मैं नि बिसार्‌यो मेरी माई।
जसुमति बांधि गई ग्रहि माहे।
सांईदास प्रभु चरित्र कहाहे॥१०

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे नवमोध्याय ॥ ६॥

श्री कौलापति के मनि आयो। करो उधारु प्रगटि दिषमायो॥
जुमला अर्जन के तनि केरा। ताहि श्राप को करो नबेरा॥
पाछे मंदि महिर ग्रहि आही। दीयो स्रापु नारदि ऋषि ताही॥

नृप परीक्षति शुकदेव सुनायो। मोहि वृतांतु इहि सकल बतायो॥
कौन स्राप करि जंगम होए। जडिताई महि क्युं कहि सोए॥
नारदि स्रापु ताहि क्यं दीना। जड़ि देहा काहे को कीना॥
राज प्रश्न शुकदेव सुणायो। भलो प्रश्नु नृप आपण बताया॥
एक दिनि ऋषि सुत मद को पीधा।
गोपता अपुनी तिहि संग लीधा।
गंगा माहि स्नानु कराही।
नग्नि होइ इहि क्रम कराही।
नारद ऋषि तब ही चलि आए।
अति किरपरि हरि जसु गाए।
सकल गोपता तजि जसु आई।
गंगा तटि परि बहु ठहिराई।
कुबरि रही कछु कह्यो न जाई।
तिहि निलज्ज मनि काइ न आई।
इहि प्रयोग नारद स्रापु दीना।
अति क्रोधु मनि अंतरि कीना।
तुमि दोनों गोकल के माही।
जनमि देहि धरो तुमि जाही।
जिहि समे कृष्ण जी भए अवितारा।
तिस समे तुमरा करे उधारा।
इहि प्रयोग जगम वपु धर्यो।
नारदि वचनु तिहि मनि महि कर्यो।
निपि परीक्षति को भ्रमु हिरामा।
सांईदास जसु हरि का गायो॥२१

पारब्रह्म चिति महि ठहिरायो। जुमला अर्जुन जब देह पायो॥
जानो अधि कृतार्थु करहो। अपुने भक्ति वचन मनि धरहो॥
दावकाल विरक्षो परि आया। तिन दोई बीच आइ ठहिरामा॥
ऊखलु वाके बीच अड़ायो। मूल से दोनो बिरख गिरायो॥
नारद ऋषि एही वपु कीना। जिह समे स्रापु इनि ताई दीना॥

ऊ्पसु जिहि समे तुमि को मागै। इहि स्रापु तुमिरा तवि भागै॥
अवि प्रभि वोऊ बिख गिराए। दो वालकि सुंदरि निकसि ग्राए॥
वस्तति गोविंद जी की भाषहि। देइ प्रदक्षिणा जय जय भाषहि॥
नृप परीक्षति श्रप वचनु सुनायो। सुक श्री एक सचरु मनि ग्रायो॥
नंदि महिर कौनु तपु करायो।
जिहि ग्रहि श्री कृष्णचंद जी ग्रायो।
करि क्रीडा नंदि कौ सुपु दीना। महा सुपी नवि को करि लीना।
एहि वीचारु प्रम मोहि बतावो। करि करुणा इहि संचरु गवावो॥
सुकदेव कह्यो भले उजिरामो। वहु नीको त प्रष्णु चलायो॥
सुण हो नृप घरहा सुमि काना। तुमि पहि सकली बाति वपामा॥
नंदि विपदहि भ्रष्ट श्रुपि पाही। महाभनदु ताकौ दुख नाही॥
बरह्यौ तातु नवि को भाई। वह्या ताहि कह्यो समिझाई॥
जावो वरह्यो तुमि वहु माही। वहु लोक आइ भबिक सुपु पाही॥
वरह्यो कह्यो विधि को समिझाई। सुण हो वह्य पूर्ण मेरे भाई॥
मै वहु लोक माहु ना जावौ। कसे वहु माहे ठहिरावौ॥
वहुरि कह्यो बिधिसुमि वहु जावो। मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो॥
वरह्यो कह्यो वहुते बिधि ताई। माहि बिनती सुण हो मेरे भाई॥
जो तुमि एहि करो सवि जावौ। वहु साक महि जाइ ठहिरावौ॥
ब्रह्म कह्या जो तुमि कोई भाई। सुख हो वरह्यो करो मैं साई॥
तवि ही वरह्यो कह्यो पुकारे। मै वसि जावों प्राण भधारे॥
क्रिष्ण सदा मोहि द्रिष्ट दिपाई। मै तवि वहु विच जावौ भाई॥
जिधि कह्यो ग्रैसे ही होई। जो तै वरह्यो कह्यो हो सोई॥
तब वरह्योजन्मुगोकलिविच पायो। नंदि महिर ईहा नामु रपायो॥
ब्रह्म वच पूरण कनि ताई। जन्म लीयो ग्राइ त्रिभुवन साई॥
बिधिवधुकरिनंदि कौ सुपु दीना। इहि कारण कौलापति कीमा॥
सुत करो उस्तति गिरिधाई। ताहि उभारु कीयो जदुराई॥
जो इहि जनमु हिति करि सुण सेवै। माईदास प्रम वहु सुपु देवै॥३२

इतिश्री भगवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षत संवादे दशमोध्याय ॥ १० ॥

प्रम अदि दोऊ ब्रिम गिराए। तवि प्रतिकार उठ्या प्रभिकाए॥
भयो प्रचनु गोकलि के माही। नरि जोपिता मिलि भाई ताही॥
गोपनि सुत प्रम पाहि जु परे। सकल बीर तिम हू मे करे॥
नदि महिर सुन इहि कर्म कीना। दोई ब्रिछ गिराइ करि दीना॥
सकले मोक रहे बिसमाई। भए भ पक्रित बिधि निर्वाई॥
तवि मुप ते उन्हा बचनु उचारे। सो गुर किपा ते सकल बीचार॥
गर्गि प्रोहिति ने य्युं भाषा। नारायण इनि को नाउ राषा॥
ताहि कह्यो कहु कौणु मिटावै। ताहि कह्यो मेट्या नही जावै॥
तव ही नदि महिर जी आए। बाबा हरि देख्यो मुसकाए॥
नदि महिर तव ही बचु कीना। बिस बालकि बाबा दुख दीना॥
सकल गोप नदि कह्यो सुनाई। तौहि जापिहा बाबा मेरे भाई॥
नदि महिर प्रभि कौ उरि लीना। लेकरि गादि गवनु ग्रहि कीना॥
मंदि महि लेकरि ग्रहि आया। जसु मति लोनी ओरि तकाया॥
तू इसि कौ बधु पोल्ह ल्याया। इनि कान्हरि इहि कर्म कमाया॥
दधि भाजन इनि ने फारि डारा। कान्हर ने इहि कर्मु सवारा॥
मापनु पवि मर्कटि पवाया। इनि बालकि इहि कर्मु कमाया॥
स्यामसुदरिजसुमतिओरिदेपहि। मूदे नैन कर सौ भ्रत पेपहि॥
नन्दि महिर सौं जसुमति लीया। पूरि भ्रारि भ्रस्पनु मुप दीया॥
नदि गोप सभि लीए बुलाई। ताहि कहा सुए हो मेरे भाई॥
गोकलि महि भ्रपतिप्रो होई। हमि बालक दुख देवै सोई॥
प्रबि तकि गोबिद कीई कल्याना। मए बितीत दिनसि मै जाना॥
भ्रावो प्रबि हमि गोकलि त्यागहि। ओर नपि के मार्गि लागहि॥
जब हि नदि इहि बाति वषानी। सकल गोप मनि महि ठहिरानी॥
ईहा त्याग बिद्राबनि जावहि। उहा जाइ भ्रधिक सुप पावहि॥
सकल गोप मनि इहि ठहिरायो। साईदास बिधि असी बतायो॥१३

गोप सकल मनि मति ठहिरायो। बिंद्राबनि जावनि चितु लायो॥
गोकलि तजि बिंद्राबनि भाए। सुरिह बछे तिन सग चलाए॥
सत दारा बधू पित माता। नदि महिर बिपभानु सुहाता॥
सभि बिंद्राबनि माहे भ्राए। भ्राइ तहा ग्रहि सभहू बनाए॥

श्री कौसापति त्रिभवनि राया। नदि महिर सौ वचनु सुणाया॥
जो आज्ञा होइ वछे चरावहि। आज्ञा बिनु वनि मांझि न आवहि
नदि महिरि तवि तिन प्रतु दीया। स्याम सुंदर को गोदी लीया॥
पंडिति वहु विन्नरिजु बुलावौ। छांत भला महूरति पावौ॥
तवि आज्ञा तुमि साई देवौ। जो तू कहे सोई करि लवौ॥
नदि महिर वेदपाठ बुलाए। भल महूरति तिनहि वताए॥
गोपनि के सुत सकल बुलाए। तिन सौ प्रभ ने कह्यो सुणाए॥
वछिरे ले चलिहो वनि माही। वनि महि चडि करि वछे चराहो॥
यो तात सभि वछे ल्याए। एमि ठौर फकें वनि धाए॥
करि सौं करि सभिन्ही नें ओर। कति क्रीडा वनि की सभि ठौर॥
तवि कह्यो कान्हरि मुर्ली बाजे। मनकि तरगि मधि मुर्ली गाज॥
मुर्ली मनकि तरग वजाए। जो श्रवणु सुने सभ सुधि विसराए
श्री कृष्णचंदि तवि द्रिष्ट निहारी। वछासुर वपु वछा आयो धारी॥
धाइ गउ सुति महि उरझायो। श्री कौसापति तिन निर्पायो॥
बसिदेव सौ सव कह्या पुकारी। सुण हां राम बीर हितकारी॥
आवौ तुमि इकु चरित्र दिषारौ। तुमि आगे इकि वाति बिचारौ॥
इहि जो वछा तुमि द्रिष्ट आवे। इसि को रूपु तू भी कछु पावे॥
इसि कौ पातक कस पठायो। वछासुर वछे रूप बनायो॥
चति मै तुमि कौ कहौ पुकार। सुण वसिदेव हां बीर हमारे॥
काहि धारि वछिरा से आवे। तिहि समे तू मोहि एह सुनावे॥
अवि तुमिरी प्रमि बारी आई। उौर कौन मै देउ वताई॥
वसिदेव एही वचमु सुमावो। साईदास उौर मा उचिरावौ॥३४

कमलि नैन त्रिभवन के रामा।
बसिदेव सौ तिन आप सुणामा।
वछे गए दूर कौनु हेरि ल्याव।
बछुरे हेनि को कहु को जावे।
जासि मारी होइ सोई जावे।
बछिरुमो को जाइ करि फिरि ल्यावे।

प्रम जगि दोऊ द्रिस गिराए। तबि प्रतिकार उठ्यो प्रभि
मया मबनु गाकलि मे माही। नरि आविता मिलि भ्राई
गापनि मुत प्रम पाहि जु परे। सकम बीर तिय हू मे
नदि महिर मुत इहि कर्म कीना। दोई द्रिस गिराइ करि
मवम मोर रहे विसमाई। भए भ भक्ति विमि
तबि मुप त उन्हा मबनु उचारे। सा पुर किपा ते सकम
गगि प्रोहिति मे म्यु भाषा। नारायण इमि को माउ
ताहि कह्या बहु कौण मिटावे। ताहि कथा मद्या न
तब ही नंदि महिर जी माए। बाथा हूरि देप्यो
नदि महिर तब ही बहु कीपा। किम बालकि बाधा
मकम गोप नदि कह्यो सुनाई। ताहि आविता बोधा म
गदि महिर प्रमि को उरि लीना। सेकरि गादि गवनु
नदि महि सेकरि घहि माया। जसु मति तांकी छोरि
तू इमि को म्यु पोम्हु स्याया। इनि का हूरि इहि कर्म
वमि माजन इनि ने फोरि डारा। कोम्हूर ने इहि कमु
मापनु पटि मर्कटि पवाया। इमि बालकि इहि कर
स्यामसुदरिजसुमतिछोरिदेपहि। मूंदे मैन कर सी
नदि महिर नौ जमुमति सीमा। भूरि मझरि मस्यनु
नदि गोप समि सीए बुलाई। ताहि कह्यो सुए ह
गोकलि महि मपतियो हाई। इमि बालक दुम
भवि तकि गोबिद कीर्ई कल्याना। भए विरीत विनमि
भावा भवि इमि गोकलि स्यामहि। डोर भग्नि के मां
बब हि गवि इहि बाति बपानी। सकम गोप मनि मां
ईहा स्याग बिंद्रावनि आवहि। ऊहां जाइ भधिक
सकम गोप मनि इहि ठहिरायो। माईवाल विधि भ

गोप सकल मनि मति ठहिरायो। बिंद्रावनि आवनि
गोकलि तजि बिंद्रावनि धाए। सुरिह मझे तिन
सन दारा बहू पित माता। नदि महिर प्रिय
मभि बिंद्रावनि माहे भाए। भाइ तहा प्रहि

गोप सात मिथि भापि सुमाईं।
नदि महिर पहि मेग नि साईं।

हमि बनि महि पछि बछे चराए।
तटि रवि दुहिता भा ठहिराए।

बकासुर असुर तब ही बलि भायो।
बगि रूपु तिनि भाइ दिपायो।

हमि कह्यो इसि निकिटि न आवो।
जो भावो तौ बहु दुखु पावो।

हमि सभि चले निकटि भए तांके। सभि ही उदरि परे हमि वांके॥
हमिरे पाछे क्रिष्ण भी भाया। वांके हृति हरि हमहि छुडाया॥
तब ही भबेर भई हमि ताईं। इहि बालकौ ने भाप सुणाईं॥
नदि महिर भरु सभ बिस्माए। गोकल त्याग ईहा हमि भाए॥
इसे त्याग उौर कहा जावहि। उौर कहा जाइ वासा पावहि॥
फिरि सकल्यों मनि सोचो बीचारी। मनि माहे सभि ही इहि धारी॥
गगि प्रोहति हमि सो भापा। नारायण इसि कौ नामु रापा॥
बड उपाधों को इहि टारे। पृथ्वी कौ बहु सुप मनि धारे॥
जो कछु गगि कहा सो होई। ता महि भेदु नाहि है कोई॥
नदि महिर सभु ग्रहि महि भाए। श्री कृष्णचंदि के मगल गाए॥
जो इहि जसु सुने बहु सुपु पावै। साईंदास तिहि परि बलि जाव॥३१

इति श्री भगवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे एकादसो ध्याय॥११॥

श्री कृष्णचंद ने क्या कछ कीया। प्राति समे बछे ग्रहि ते लीया॥
बछिरे से करि बनि को धाए। तात समे गोपी सुत भाए॥
सज्जन ग्वारि मिलि एहि पुकारे। भामु भाई इहि हुवे हमारे॥
हमि तो क्रिष्ण सहित न जावहि। हमि प्यारे करि बछे चरावहि॥
इनि ग्रहि बछे भए भमिनाई। हमिरे बछे थोर है भाई॥
कान्हरि हमि पहि कामु करावै। भाप ते समसर कामु न भावै॥
श्री कृष्णचंदि तब कह्यो पुकारे। सुण हो बालक सपा हमार॥
जो तुमि कहो सोई मै करहो। तुमिरा कहा मस्तकि परिधरहो॥

श्री कृष्णचदि प्रवेसु करायो। ताहि उदिर महि बिरम न लायो॥
कठु ममुर की करि सौ मीना। महा दुसी प्रम तसि को कीना॥
सिरु फेरयौ तौ निकिस्यौ तिहिस्वासा।
जाइ बैकुंठि महि मीठो मिवासा।

नाराइण निर्भो सुपदाता।
घटि घटि माहे माप ही दाता।

सकल बालकि तबही निकार।
तांकी सोल्हा मपर मपारे।

माघासुर को मुक्ति पठायो।
तांकौ हतु कीयौ बवरायो।

हस्त पसति तबि ग्रहि म्राए।
मातमि सभि बिर्तंत सुनाए।

मसुर मघासुर बनि महि मामा।
हमि सभि तांके उदिर समाया।

श्री कृष्णचदि तिहि कुप को मार्यो।
ताको मार्यो हमहि निकार्यो।

मदि महिर जबि इहि बिधि पाई।
सकल गोप तिन लीए बसाई।

गोकलि त्याग ईहा हमि माए।
ईहा नृप कारंण ठहिराए।

इसे त्याग ठौर कहा जावहि।
ईहा मति मपति घहि म्रावहि।

महा बठनि हमि नौ बनि म्राई।
सकल गोप सुए हो मनि लाई।

जो जो दुष्ट मत्ति सत्रु मावै।
साईंदास प्रमु मुक्ति पठावै॥२७॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीखति संबादे द्वादसोध्याय॥ १२॥

एक दिवस कमल नन क्या कीआ। बछिर गोकलि लै बनिपगि दीआ
गोप तात को कह्यो सुनाई। सुण हो इहि बिधि हमिरे भाई ॥
आ ग्रहि से सबो सहित बसावो। और दिवसि ज्यु ईहा न पावो ॥
बनि माहू मनि बहु सुख पावहि। सभु इकि ठौर बैठ के पावहि ॥
किन ही कछु किन ही कछु लीआ। सभि तैठहू इकथि कीआ ॥
चलिति चलिति जमुना तटि आए। तहू ठौर आइ करि ठहिराए ॥
पाति पंथि केल के लीए। रबि दुहिता तापरि धारे दीए ॥
तहू पासि परि तिन पग दोए। तहू बैठ करि भोजनु कीए ॥
एकि ग्रासु लै उसि मुख देव। एक ठौर इसि मुख पचि लेव ॥
इहि बिधि करी अधिक चिर लागा।
आत सुरंग तिह के इकि नागा।

बछिरे चलि तिण को गए दूरि।
द्रिष्टि न आवै तिन मग धूरि।

सकल ग्वारि मिलि एहि पुकारे।
सुणो कृष्णचंदि मीति हमारे।

बछिरे दूरि गए तुमि जावो।
सुमिरि चारी तुमि हेरि ल्यावो।

कमल नैन बछुरे हेरनि धाया।
मैन सम्भ्रम तब ही सुणाया।

भोजन करि लीए पाता जाई।
ताकी सोभा कौनु बताई।

मैन प्रसन्न बिधि तहा आयो।
बछर बाल तिनि सकल] दुरायो।

तहा आइ प्रभ ने निपायो।
द्रिष्ट न आए मनि बिस्मायो।

अंतरिध्यानु कीयो सुधि पाई। पदमनि हुमि ताई पतीआइ ॥
श्री कृष्ण अवतार भयो के नाही। माच बिचार दर्प्यो मनि माही ॥
कमल नैन फिरि तटि परि आए। फुनि ईहा बालिक द्रिष्टि नि आए ॥
स्याम सुंदरि मैं चकित हो रह्या। अपुन मुख सेती इहि कह्या ॥
असुर कबहू इहि कामु न करही। बछुरे बालकि सी बैरु न धरही ॥

उनि को है हमिरे सम कामा। इहि बिधि बोले पूर्न रामा॥
पद्मजि ने इहि कामु करायो। चाहति पद्मजि हमि पतीआयो॥
श्री गोपाल इहि सोच बीचारा। साईदास बिधि आएनहारा॥३८

श्री गोपाल मन महि ठहिराई।
सो गुर किर्पा ते कहो सुनाई।
जो भवि चतुराननि पहि जावहि।
बछुरे ग्वार को मांग ल्यावहि।
पद्मज मन महि करे गुमाना।
पद्मज मन महि परे भुलाना।
क्रिष्ण अवतार प्रतीति न मानहि।
मन महि द्रितीआ गति बहु आनहि।
ताते इहि मता मोह भाई।
लीला करि ब्रम्हा मेह बनाई।
यहि बछरे ग्वारि रहिनि तिहि पाही।
पद्मज पहि मांगनि ना चाही।
भवि लीला करि और बनावहि।
चतुरानन अभिमान चुकावहि।
श्री कृष्णचंद लीला सवि धारी।
बछरे ग्वार हरि लीए सवारी।
बैन बजाती चले ब्रहि ताई। बालकि गए अपुने ग्रहि माही।
तिन को देख जननी हिर्पाई॥
बछुरे गए सुरहीअनि के पास। सुरहीअनि अधिक कीनी इसे प्यासे॥
ऐसे ही एकु बर्षु बिहामा। चतुराननि मनि महि इहि आया॥
ग्वार बछरे मतु से ल्यो होई। मै जावौ जाइ देखो सोई॥
जिहि स्थावर महि दुराए। पद्म देखए ताहि सिभाए॥
तिहि कबिरा माही मिर्पाए।
बहुरो ग्वारि सकले द्रिष्टाए।
मनि अतरि बिधि एहि बीचारा॥
कौनु हमहि क्या वसु है हमारा॥

पारावार तांके मैं पावो।
इहि बिधि कहा जो तिहि गुण गावो।
लज्जामानु होइ पद्मज आया।
श्री कृष्णचर्दि चर्नी लपटाया।
करि डंडौत मुष वचन उचारे।
प्रान पूर्ष हमि प्रान अधारे।
मै कहा सुमिरी गति पावो।
मै मतिहीन कहा उचिरावो।
तू अपार गति तोहि अपारा।
तुमि गति कहा म जौनु वीचारा।
जो कोई इहि जसु सुणे सुषु पावै।
साँईदास गर्भि योन नि आवै ॥१८

इतिश्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षिति संवादे अष्टादशोऽध्याय ॥१३॥

श्री गुपालि ने लील्हा धारी। दस सहस्र विधि कीयो तत्कारी॥
चतुराननि की भ्रम निर्वाए। पद्मज निप रह्या विस्माए॥
मै भक्ति तवि ब्रह्मा हो रह्या। चतुमुर्ष ब्रह्मे मुष कह्या॥
एक एक च्यारि पहि वेद बषानहि। पद्मज सुकदेव ब्रह्म मानहि॥
उस्तति कमलापति की भाषहि। स्यामसुदरि की लील्हा भाषहि॥
तवि इहि पद्मज इहि प्रतु कीना। त्याग अभिमानु नीच ग्रहि लीना॥
सुण हो कृष्णचदि विधि मेरी।
कहा करौं मैं उस्तिति तेरी।
मै तो किस गिणति महि नाही।
इहि विधि आयो हों तुमि पाही।
त्रिण बिरछ बिद्रावनि के जीव।
हमि मतिमूड असरि से कीवे।
मै ता पद्मज माहि कहावो।
इहि बिनती प्रभ तोहि सुणावो।

मोहि क्रिपा करो बिंद्राबनि माहि।
नाहि त त्रिभवनि ताहि मझाही।
तुमि हो सदा फिरति तिहि माही।
तुमिरो गवनु है सदा तहाही।
तुमिरो पगु मस्तक परि धारै।
हमिरो आवागौनु मिटावै।
मै चतुराननि नाहि कहावौ।
इहि बिधि निस्चै ममि ठहिरावौ।
तुमिरे दर्सन ते दूर आवा।
ब्रिगु इहि जन्मु जो तराहो कहावा।
मै इहि बिधि भ्रम सर्न महि मानी।
औरु न चतुराइन इहि जानी।
मै काहू गिणती महि नाही।
तुमिरी गति कछु लपी न जाही।
जो कोऊ रहति बिंद्राबनि माही।
सदा सघा बैकंठी मझाही।
सघा सदा दर्सनु तुमि करही।
चर्नि कमल छुवे भ तरि घरही।
मोको माटो कद इहि ठौरा।
इहि बिनती सुण हो मोहि भोरा।
इहि बिधि पदमज बिनती ठानी।
मनबा मानु छाइ मनि इहि मानी।
बछुरे ग्वारि सकल ले आया। जमुना के तटि भ्राए टिकाया॥
श्री करुणा निधि ऐसे कीमा। भोजन सहिति ग्वारी लीमा॥
जैसे प्रिथम कीतो मुरारी। तैसे भवि कीनी गिरधारी॥
पदमज ग्वारि पछे दुराई। तास सम लील्हा जो धारी॥
तसी लील्हा भवि भ्रम कीनी। प्रिथम वाति चिति धरि लीमी॥
लील्हा धरि जो ग्वारि बनाए। औरु बछे तबि ही उपिजाए॥
मम लील्हा करि ताहि बपानें। श्री क्रिष्णचदि पूर्न परमानें॥
जो बछे ग्वारि प्रिथमे से माई। साई सग लीए जदुराई॥

प्रह्ले प्रह्लातु त्यागा। बर्नी कौलापति की आगा॥
प्रभ पद्मज परि किर्पा धारी। ताहि परि करुणा करी मुरारी॥
जो इसि ग्रस को मनि ठहिरावै। साँईदास पर्म गति गति पावै॥४०

इतिश्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चतुर्दशोध्याय॥१४॥

एक दिन श्री कृष्ण कह्यो नदि ताई।
सुण हो पित मैं तोहि सुणाई।
एकादश वर्ष भई प्रायु मेरी।
थी कौलापति भूपि इहि टेरी।
जौ प्राज्ञा करो सुरह्यौं स पाम्रो।
जाइ वनि माहे ताहि चरावहु।
नदि महिर कह्यो प्रति नीका।
पूछ पंडितु प्रमु त्यागो जीका।
भलो महूर्त देहि बताइ।
सुमि सुत सुरह्यौ कौ पठो चराई।
नदि महिर पंडतिजु बुलाए।
लम्न महूति भल पुछाए।
पढति भलो महूति कीम्रा।
वीरवार की आज्ञा कीमा।
कांन्तूरि जाइ करि धेन चरावैं।
धेन प्रधिक होहि बहु सुप पावैं।
जबि ही वीरवार दिन भाया।
बलिदेव गौम्रा ले वनि भाया।
तबि ग्वारो सुप बचन उचारे।
सुण हो बलिदेव सषा हमारे।
ताहि वनि फिरण मेवा प्रति नीका।
बहु भखो सुप होवै जी का।
सकल ग्वार इहि मति ठहराया।
उमहि सकल तब वनि को धाया।

राम सहित ग्वारो उठि भाए।
येसति सभ बनि माहे भाए।
भिषावति सकसी सुरहो होई।
दति उति ते बहु जसि को जाई।
एक सालु अमु है तिहि माहो।
कालि नागु रहे ताहि मझाही।
सम पानी बिपु काली केरी।
सुण हो साधो एहि बिधि मेरी।
नीस कुंडि नामु तिहि भापही।
सकस स्रिष्ट एसे ही भापहि।
येन ग्वारि तहा पानी पीआ।
पानी पीय भपुना जीउ दीआ।
बसिदेव तवि ही मनि बीचारा।
नित्रा पति ईहा गवनु हमारा।
सीलहा करि बहु बहुरि जीवाए।
करि महि से पसवि ग्रहि षाए।
उत्तम ग्राम त्रिक्ष हलाए।
तिन के फल सभ धर्नि गिराए।
सकम ग्वारो मे स करि पाए। ताहि पाइ करि बिस्रामु पाए।
मिक दैतु तहा भसि भाया। गधिप रूपु तिहि दुष्ट बनाया॥
गधिप रूप कीओ हन्कारे। दो पग दुष्ट राम को मारे॥
तवि ही राम दो पगि सो लीना। फेरि फेरि बिस्त सेती दीना॥
धन्कि दुष्ट को राम बिडारा। साईदास बस को प्रहारा॥४१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम सकन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे पञ्चमोध्याय ॥१२५॥

राम महित ग्वानि फल पाए। मुरिहु सकसे ले ग्रहि को भाए॥
चसे चसे भ्राए ग्रहि माहि। राम महित ग्वारो सुप पाही॥
जमुमति प्रम भ्रग तेस मसाए। ताकी सोमा भधिक बनाए॥
जमु सॅवरि इस्नानु कराया। परिजंगमि परि सैनु कराया॥

सुप भायमु सीनो अनुराई।
धनु कीयो प्रभ कौर कन्हाई।
और दिनसि वसि मद्र भाया।
इहि विधि राम कीई भुप भाया।
भाजु न आवौ मैं वनि माही।
मोहि पगि भाजु न वनि कौ धाही।
श्री कौसापति राम सुनाया।
वसिदेव तै ने वहु दुस पाया।
तुमि रहो ग्रहि मैं सुरिह् ले आवा।
पढि वनि माहे ताहू चरावा।
श्री कृष्णाचंद सुरिह् ले करि धाया।
तासि वनि के मार्ग वितु साया।
ताव काल गयो वनि के माही।
नीसि कूंडि परि पगि ठहिराई।
एही मनि महि कीतो विचारा।
श्री गोपाल मम प्रान अधारा।
इहि अमु समु विपु मोह दिपावै।
जो पीवे सो प्रान तजावै।
मीठा करो मैं इसि असि ताई।
एही भाई मोहि मनि भाई।
कासी नाग को ईहा निवासा।
सदा सदा तांको ईहा वासा।
उसि विप के प्रजोग कराही।
एक जोजन परि त्रिण न जमाही।
जोमन प्रजति पछी न उडाए।
जो उड सो भस्म होइ जाए।
कदमि बिक्षु कूडि के तटि माही।
हरियो साथ पत्रि सग माही।
इहि प्रजोग मह हर्‌यो भाई।
सुण हो इहि विधि देउ वताई।

इकि दिन गई वैकुठि सिधाए।
अम्रति फल बकुठि से ल्याए।
आइ कदमि की ऊपरि बइठा।
अंम्रति फलु तजि मुप महि गइठा।
अम्रति फल से रस जु धुमाई।
कदमि मूल महि जाइ समाई।
इहि प्रजोग करि हुरतो बाही।
माईदास विधि कहिति सुनाई॥४१॥
श्री गुपाल कदम परि चढिया।
तांतौ कूदि कुंडि महि परिया।
पर्तु लागा तिहि के माही।
मति कलोल करे ताहि मम्भाई।
ऐसा पर्तु तिहि महि कीया।
अघु कोसु जमु बाहिर दीया।
कासी नागु मनि महि बिस्माया।
होइ विस्माइ मूपा उचिराया।
मोहि विपु बलि त्रिमु रह्यो न जाई।
इहि प्रानी आइ पर्यो कोई।
कासीनागु तबि ही निकसि आयो।
कमलनैन के पग उर्झायो।
नंदि महिर जसमति ब्रिपमानु।
मनि काहे वहि करति धयानु।
मम के ग्गि तबि तपने लाग।
मनि प्राति महि मोए जागे।
राम मो सकसे कहिन सुनाई। एक एक मुख ते उचिराई॥
कृष्ण महिन नु आनु न गया। कछु अपित ग्रह मनि महि भया॥
हमि को कृष्ण पाहे म आवा। श्री गुपाल हमि दिष्ट दिवावो॥
तबि बलिदेव ऐसो भाप्यो। कांन्हरि जोरहि थित ठौर राप्यो
कछु मनि महि बिस्मामु न करह्रो। मथुरा हुवा ठौर तुमि धरह्रो॥
कौनु मगुर ताके निकटि आवे। प्रभ सौ तांकी आणु बमावें॥

रामु ताहि कौ बहु समिझावै। नदि गोप धीर्ज नही पावै ॥
नदि गाप सभ बचन सुनाए। राम सुनति मनि महि ठहिराए ॥
श्री कृष्ण हमिर प्रान अधारा।
ता बिनु इहि तनु होई छारा।
हमि तिहि बिनु कछु कामु न भावहि।
बिनु उसि हमि बहुता दुःख पावहि।
हमि को कान्हरि पहि ले जावो।
बसिहो हमि सग हमहि दिपावो।
बसिदेव पैर सुरहो का लीमा।
गवनु कमसनन चोर कीमा।
ततकाल कासीकु डि आए।
श्री कृष्णचदि तिन मे निर्पाए।
ठाढे कृष्णचंद दपे जल माही।
काम भागु उर्फी पगि ताही।
इहि बिधि देपि रम्नु बहु कीम्रा।
महा दुपति भयो तिह को जीम्रा।
तिम का बसु कछु नाह बसाए। साँईदास बहु रदनु कराए॥ ४२

श्री कृष्णचन्द्र जबि नदिनिहार। गोपो सहित रदम बिस भार॥
कासी का तीसु तबि करि लीना। जल ते ले बाहिर डारि दीमा॥
जल को तजि करि बाहिर आए। अमिरो तबि ज कार कराए॥
मिर्ने करी तबि प्रभ मिर्पारी। कासी क सिर परि अधिकारी॥
पतिरा इबि मुप कासी कहीए। इहि बिधि तारा रूप बनहीए॥
चतुर भीग तिहि कृष्ण बिदारे। अपुन पगि करि प्रभि प्रहार॥
एक मास पाछे जबि रहा। काही गामु चाहिति प्रभु गहा॥
दा बमिता कासी की आई। सुन दुहिता मम सग स्याई॥
कुन्दपि महिलि बिमतो निहि ठानी।
हमि पति भार्वा गारंग पानी।
महा अर्पति प्रहु हमि जबि काना।
नर्बाह भुजगमि के बप मीनो।

इम त्याग देह त्रिभवनि राया।
इहि विधि हमि तुमि भापि सुणाया।
तबि श्री कृष्ण ताहि प्रतु दीमा।
तुमि वेनती करि मुक्ता कीमा।
एहि ठौरि तजि करि तुमि आवो।
पमु छिनु भी ईहा मा ठहिरावो।
जाइ रहा तुमि दधि के माही।
ईहा ठौर तुम्हारो नाही।
गर्डि क भाम ईहा जो पामा।
जमना के तटि भाइ ठहिरामा।
भवि कछु गड कह तुमि नाही।
जाइ करि मुख बसो दधि माही।
काली सकल कुन्मु सम कीमा।
सागर सिम को मार्गु लीमा।
जो जो हरि सर्नाई भाए।
साईदास तिहि बहु सुप पाए॥४२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंधे
श्री शुकदेव परीक्षति संबादे पोडशोध्याय ॥ १६ ॥

मद महिम जमु मति नन्द नंदनु। सकल गोप चिर तनि चिनु बदनु॥
सकल रम रङ्ग कु डि माही। तांकी लीला बर्नि न जाही॥
तिहि कुन्नि को जमु मीठा कीमा। जिन त्रिपा गही तिन ही स पीमा
जमुनमि कान्ह को सम कीमा। मग मंग ताके सुप कीमा॥
हरपिमानु जमुमति बहु होई। हिर्दमान होइ करि बहु रोई॥
स्नतु कमि नृप त इहु भापा। हमि प्रहि भागु भयो मुतु भापा॥
नृप परीक्षति गुप दन्न सुनाई। स्वामी हमि मनि मचरु भायो॥
जमुना तटि कछ बासा पामा। जो काली नागु ईहा ठहिरामा॥
जबि नृप नें इहि बाति चलाई। ताको प्रतु शुकदेव सनाई॥
दमि महि रह उगि मधिकाई। गई बाति सागर माही॥
सागर महि जाइ बहु सर्प मारे। कछु पाए कछु ऐसे डारे॥

कासी भजनु न सीमा निवासा। ऋपि सपूर्वि को जपि ते वासा॥
एक दिन गज इहि कूंडि पर्‍या। जीव वस सकल उनि मर्‍या॥
तवि ऋपि गडि को माप सुणाया। इसि तटि परि मै वासा पाया॥
हमि ते लज्जा ना तू करिही। इहि कडि मांहे तू पगु धरही॥
अधिक अवज्ञा तुम हि कराई। अवि लगि तुमि की लीयो बचाई॥
जो वहुरो ईहा पग धारे। भस्म होइ जावे ततकारे॥
मोहू कह्यो तुमि जानो माई। सांई करो जित होइ भलाई॥
सवि ते गडि कूंडि इहि त्याग्यौ। तिसि ऋप डर ते गई घु भाग्यो॥
पगु धर्‍यों ईहा ना आवे। ऋपि के साप ते बहु सुकिपावे॥
इहि प्रजोग कासी ईहा रह्या। आश्रम सेती ईहा वहु मा॥
नृप परीक्षिति जवि इहि प्रतु पायो। सांईदास मन मर्मु पुकायो॥४१॥

गोप ग्वारि मदि लहि नाइणि। रहे मम तटि सहित नराइणि॥
रजनी भई धेनु तह कीना। निरभय होइ हरि हर भज लीना॥
जवि ते मद्धि भई आइ रता। धसि उौर उडगनि ही प्रगटैना॥
सस ने अधिक उजारा पायो। उडगनि तिम संग मन्कि सुहायो॥
दावा अग्नि बुद्धि अति भारी। ताको कस ने कह्यो पुकारी॥
तटि काली कूंडि गोप ग्वाल। धेनु कीऊो नदि के मदि लाल॥
तू तह जाइ हमारे माई। चतुर उौर दावा देह लाई॥
तवि वहि सकल अग्नि महि जरही।
इहि प्रजोग करि उहु समि मरही।
दावा अग्नि सो बुद्धि समिभ्रमो।
तम वहि सतु अनि महि वलि आयो।
चतुरि उौरि दावा उनि दीई।
दुष्ट असुर इहि विधि इनि कीई।
नदि महिरु जसुमति सभ लोक।
विरस भए दावा को बिसोक।
धेनु त्याग हा हा सभु करही।
हा हा प्रभु मुप ते उचरही।
श्री कृष्णादि सौ कहे पुकारे। कौलापति हमि दावा आरे।

तबि कला पति वधु भूप कीना।
मूधो द्रिग सुमि कौ कहि दीना।
सुनति सकल ने द्रिग मूंदाए।
प्रभु वधु तिन ने मनि ठहिराए।
चतुरति दिस की दावा अग्नि सोई।
इहि विधि नाराइण तबि कोई।
मानो जल को अधि लेवै।
जलि कौ अचति अजहूं सुकदेव।
गोविंद दावा कौ अधि लीना।
पभु छिनु बिलमु न गोविंद कीना।
सदा सदा प्रभु सुख उपिजावै। साईदास दुःख मूल गवावै ॥४६॥

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीखति संवादे सप्तदशोध्याय ॥१७॥

तबि ही बिस्मे गोप ग्वार। लीला प्रभ की नेत्र निहार॥
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा। सुख उपिज्यो दुख मूल विनासा॥
सुरहो सकल ले गोकलि आए। हिरिमान होइ मगन गाए॥
श्री कृष्णचंद सुरयो को ले आई। विंद्रावनि महि आइ ठहिराए॥
उष्ति अधिक बनि महि सो आई। विंद्रावनि महि बहु सितलाई॥
कुसम अनेक भांति के फूले। तिन संग भ्रिंग अधिक है झूले॥
बादरि उमडि करि आए। तिन बादर बहु वर्षा लाए॥
पवन महल आमो ततकारे। बादरि दौर गए अति भारे॥
बादरि गए रवि दई दिखाई।
घ्रपि भूमि सम बनि कौ उठ धाई।
श्री गोपाल सुंदरि अधिकारि।
कन्या निधि प्रभु गिरवर धारी॥
गोप तात सम लीए बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
हमि तुमि चलहि युद्ध करावहि।
मिलि करि सम तरि तरि उर्मावहि।

कह्यो ग्वारिनी को चतुराई। जो इहि विधि तुमरे मनि माई॥
दौरि प्राइ एकहि उरि लागे। मुष्टि मारि पाछे भागे॥
भात्री फल ले युद्ध करायो। प्रबिक पेलु प्रभु स्याम बनायो॥
जो वेदहि सौ बैकुंठ जाव। जन-मर्म प्रभु सकल चुकावें॥
प्रवि श्रुति पेलु बन्यो मेरे माई। ताकि लीला कही न जाई॥
इहि बिधि पेलु कीउो बनिवारी। ताकि लीला अपर अपारी॥
गोप तात सो पेलनु कीना। सखा जाण सांसौ हितु लीना॥
भात्री फल ले करि बहु मारी। ऐसी बिधि प्रभ लीला धारी॥
एहि विधि पेलु कीनो मंद नवन। श्री गोपाल ठाकुर मकरदन।
मुख्य होइ बंमनु ना पावै। साईदास जो इहि सुपु गावै॥४७

प्रलंब को नृप बुष्टि पठाया। सकल वाति यभु ताहि बताया॥
बिंद्राबनि महि सहित गुपाला। येन चरावत हैं नदराला॥
सुनि जाइ करि तिस को हति भावो।
येम बिलमु कछु मूल न लावो।
प्रलबि ग्वल वपु ग्वार को कीना।
मार्ग श्री बिंद्राबनि को लीना।
प्राइ ग्वारौ महि ठहिरायो।
सभ ग्वार ले संग मिलायो।
ताको गोबिंद लीउो पछानी।
सभि बिधि जाने सारगपानी।
तब ही राम सौ भाषि सुणायो।
बार एकि फिरि पेलु रचायो।
जो हारे कांधे परि धारहे।
उसि बिदा ताई जाइ उतारे।
जुगल सपा मिलि-मिलि कर धावहि।
इहि बिधि करि हमि पेलू रचावहि।
राम कृष्ण दोऊ ठहिराए। उोर जुगम सपा होइ दो प्राए॥
एकु सैद रामु इकु न गिरधारी। ऐसी लीला करी मुरारी॥
प्रलबु असुर प्रभ की उोर प्रायो। उौर सपा बसिदेव उरि धायो॥

प्रथम राम सपा न हार्यो। कांधे चारिहू ग्रिस पाहि उतार्यो॥
बहुरो प्रभ की हार हरायो।
बलवि राम को कांध चरायो।
इहि विधि असुर ने मनि ठहिराई।
सकली विधि मैं देउ बताई।
एहि समा मौका प्रभ दीना।
बलिदेव माहि कांध पग कीना।
एकि ओर इसि को पकि मारो।
कवरा महि पकि करि प्रहारा।
तब प्रकाष तिन ने हे कीधा। इनि पल ले आमे पगु दीधा।
बलिदेव ने तबि मनि ठहिराई। सकिल बितांत सुन हो मेरे भाई॥
तबि धान्यो एही मनि माही। दुष्ट पेस उपाष उठाई॥
एक मुष्टि बल के सिर मारी। ताहि कपाल लीमो प्रहारो॥
टूक-टूक तांको सिर कीनो। तांका सीसु फूका करि लीनो॥
मुख ने रिकत बली अधिकारी। बीउ दीठो तिन ने ततकारी॥
असंनु मुक्ति भयो छिण माही। सांईदास गोबिंद सनाही॥४८

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति सम्बादे अष्टदसोध्याय ॥१८॥

एक दिन श्री कृष्ण बिंद्राबनि माहो।
धेन चरावति ताहि मझाही।
सकल ग्वार सो पेल मचाई।
श्री गुपाल अगठमि सुपदाई।
सुरिहू गई दूरि द्रिष्ट न आवहि।
प्रभु तब मन महि सोभी पावहि।
गोप तात सो कृष्ण सुनाया। हुमि सभि पेलनि सो चितुलाया॥
सुरिहू गई दूरि बहुधो क्या कीजे। सुरहो ताई कैसे फिरि लीजे॥
कर्ताक तुमि तिन क पूरि जावो। सुरहो ताई तुमि फिर ले आवो॥
गोप तात तबि बहुधो पुकारे।
हमि बिनती कर्यहि सुणहो मुरारे।

दुष्ट अधिक बिंद्रावनि माही।
फिरति सदा हमि कैस आही।
तुम को त्याग कैसे हमि जावहि।
इहि बिधि बहु मन महि सुकचावहि।
तबि श्री नंदि मदनि ग्वार लीए।
कतक पगि बसुधा परि दीए।
महा बिकट बनु आग आयो। ग्वार सहित प्रभाग भुमायो॥
तप्ति अधिक प्रगटो तिहि ठौरा। त्रिपावत भए नंदि किसौरा॥
सकिस ग्वारि की त्रिपा सतायो। अधिर सूके रस्ना ठहिरायो।
आ कृष्णचद सौ कहयो पुकारे। त्रिपा मह छुटहि प्रान हमारे॥
चल हा जमना क तटि आवहि।
असु जा अबहि नाही मारि जावहि।
जब ग्वारो भुपि एहि उचारी।
जमुना तटि का चमे मुरारी।
दावा अग्नि असुर तहा आयो।
दुष्ट असुर मनि एहि बनायो।
सुन नंद महिर ग्वार सम तांके।
त्रिपा गहे निकसहि प्रान बांके।
त्रिपमे तिन मे पौगु भुसायो। पाछे दावा बनि का लायो॥
अग्नि बहू दिस ते निकट धाई। ग्वारो पुकार कहयो जदु राई॥
सकि बहुन बिसबनि के राया। इनि अग्नी हमि असु जलाया॥
तुमि बिनु ओटि नाहि हमि कोई। ज्यूं जानो प्रभ राखो सोई॥
चरनि कमल सौ जा दूरि होवै। तारो बिकट बने तू षोवै॥
तुमि किर्पा करि दुग्ग निवारा। अपुनी चरणा हमि परि धारा॥
हमि मम निकटि चलि तुमि रहे। तुमरे चरणकमल निज गहे॥
महाराज तुमि अन्तरि यामी। गरस पग्न माहे बिस्रामी॥
एननि उपानि तर ही पुकारे। सुग्ग हा बचि मोह सवा हमारे॥
सुना नि असुने तुमि भाई। श्री गोपाल सुपि एहि बनाई॥
गवन ग्वारि नि ग मूल सीए। अपुने निम ऊपरि करि दीए॥
भा नन्दनन्द गिवरधारी। बहू दिस अग्नि अवा तलकारी॥

सकल अगिन पानी ज्यूं पीई। ग्वार सबहू की रक्षा कीई॥
गोप तात फिर नैन उघारे। विस्म भए प्रभ चरित निहारे॥
करुणानिधान कौनु गति जानै। तुमिरी लील्हा कौनु बखानै॥
मथुरा जमना के तटि आए। अचि पानी आतम सुख पाए॥
जो इहि लील्हा कौ मनि धारे। सांईदास प्रभ ताहि उधारे॥४१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षित संवादेनववशोध्याय॥१९॥

श्री मुरार माधो धर्नी धरि। धर्मनिधि सभा कारण करि॥
गोप तात सौ बचन सुनाए। सुरिहि गई दूरि कह्यौ चदुराए॥
चार पाछ दखन ओर आवो। चतुर पाँच पश्चिम को जावो॥
सकल गोप सुत एहि पुकारे। हमि नही जावे प्रान अधारे॥
तुमिरे चर्नि कहा तजि जावहि। कहू ठौर हमि आन न पावहि॥
हमि बिनती करहो तुमि पाही। तुमि सुरा लेवहु प्रभ मनि माही॥
इसि बटि ब्रिक्ष ऊपरि तुमि चडिहो। मुर्ली मधुर अधिर महि धरहो॥
बैन बजावो प्रभ गिरधारी। एहि विधि नीकी हमहि बीचारी॥
बैन सब्द सुरि सभ सुण पावहि। त्रिणु न चरहि प्रभ बेगही आवहि॥
चकि ग्वारो मे इहि विधि ठानी। श्री कृष्णचंद्र मनि अंतर जानी॥
तबि ब्रिक्ष के ऊपरि जाइ चडिआ। बैन सब्दि कान्हरि मे करिआ॥
दहुरी दहुरी मेरी सुधौ पुकारी।
श्री गोपाल जिन रचिना धारी।
बैन सब्दि सुरहो ने सुण पाया।
त्रिणु तजि करि तिह ठौर निर्धाया।
बैन सब्दि धुनि सौ सुरहो धाई।
कदम ब्रिक्ष के मूल पहि आई।
अपनु अंगु बटि मूल छुहावहि।
चतुरि ओरि तिहि ब्रिप उर्मावहि।
चाटति बटि के मूल बहुताई।
ऐसी उपिजी सुरह मनि माई।
श्री जदुनाथ कदमु तजि आए। सोभति सखा संग अधिकाए।

जैसे ससि उड़गनि के माही।
सोमति है भलो देति दिखाई।
जैसे प्रभ सोमति अधिकाई।
मानो मूर्ति देति दिखाई।
गोप तात सकले संग लीए।
श्री गोपाल ब्रिज को पग दीए।
बेन सब्द मग महि उचिरावहि।
ध्रमरि सकल सुण करि सुध पावहि।
कति कलोल भाए ब्रिज माही।
तिन्ह लीला कछ बर्नि न जाही।
जो हित सो दहि जसु सुण लेवै।
साँईदास तिहि प्रभु सुघु देवै ॥५०॥

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीखति सवादे बीसमोध्याय ॥२०॥

गोपि दुहिता बेन सुण पाया। ताहि मात ढहि बचनु सुणाया॥
पारब्रह्म निर्मो मरंकारा। सकल जगति को रापण हारा॥
श्री गोपाल भक्तिन सुखदाई। सदा सदा सुख कहु उपजाई॥
श्री कृष्णचंद सर्नी जो आवै। ताको प्रभु सभु दुखु मिटावै॥
करुणा निधि दुख कर्नि बिनासा। सत जना की पूर्ण आसा॥
सोई मथि महिर ग्रहि आया। सभ कन्या मनि करि सुण पाया॥
सभ दुहिता होइ करि इकि ठौरा। मन महि सिमरहि नंदि किसोरा॥
माघ मास इसु ही करही। श्री कृष्णचंदि को नामु उचरही॥
ब्रह्म महूर्त्त तटि आवहि। आइ जमुना स्नानु करावहि॥
करि स्नानु तटि परि ठहिरावहि। श्री जदुनाथ को नामु ध्यावहि॥
कातिकी मूर्ति जमुना नही बनावहि। पार्बती कर्के तिस ध्यावहि॥
धूप दीप तिस अधिक धरावहि। तिहि सेवा सो बहु हितु लावहि॥
करि दडौत सभ बिनती ठानहि। हे देवी तूं मन बिधि जानहि॥
जो हमि प्रीति कृष्ण सभ देवहि। तोहि पूजा नितापति करेवहि॥
माघ मास सभ सेवा करे। प्रीति अधिक मन माहे धरे॥

श्री मुरार बिधि आरणनहारा। मनि माहे इहि कीओ बीचारा॥
शिव भार्या सौ ,पाप सुणाही। श्री कृष्णचद सग प्रीति बढाही॥
ताहि बाछा म पूर्न करही। तिहि कन्या चितु सम ठौर धरही॥
तिहि सेवा अफलु ना जाई। जो उनि हिति करि सेव कमाई॥
श्री गुपाल मनि महि इहि धारा। सकल लोक तांको विस्तारा॥
एही विधि मन महि ठहिराई। जान प्रबीन त्रियां सम पाई॥
डाधो भजनु करो चितु लाई। सांईदास अफलु ना जाई॥८१॥

इकि दिन कंन्या समु मिलि आई। भई इकनि फिरि जमुना धाई॥
जमुना तटि जाइ बस्त्र उतारे। नग्न होइ पग जलि महि धारे॥
राम सहित ग्वारो उठि धाए। मुरिह सम ले बनि महि पग पाए॥
श्री गोपाल सखिदेव सुनायो। नीक बानि कहि तिहि समझायौ॥
तुमि चलि हो मैं पाछे आवो। बेग बिलम कछ मूल न लावौ॥
मौहि इकु कार्जु है मरे भाई। कार्जु करि आवो तुमि पाही॥
राम धेनि स बनि पग धारे। ग्वार सहित लीने ततकारे॥
श्री कृष्णचदि जमुना तटि आए। ग्वारिनि बचु प्रभु मनि ठहिराए॥
ग्वानि सभ निर्भिनि अभ माही। अबरि तजि इस्नानु कराही॥
श्री गोपाल अबरि तिहि लीए। अंबरि ले करि माहे कीए॥
एक बिछ ऊपरि जाइ चरिहुआ।
इहि कारणु गिरधारी करिआ।

ग्वानि सभ स्नानु करायो।
तजि जसु तटि अबनि चितु लायो।

जमना तटि तिनि नम पसारे।
अबरि ना तिहि नैन निहारे।

अति भ चकित मम महि बिस्माई।
अंबरि हमि किम पडे दुराई।

अमि टोइ इति उति भिर्माया।
इहि बिधि तिहि मनु बहु भुरमायो।

धा कृष्णचंदु दयो मुसकाई।
सज्जामान मन महि ठहिराई।

श्री नंदिदास सों बचन उचारे।
तुमि बसि आवो प्रान पधारे।
अंबरि तुमिरे प्रभ तुम देवो।
हमिरी बिनती मन धरि लेवो।
श्री गोपाल ग्वारिन समझाए।
वसिन मेहु घमि बाहिरि आए।
सज्ञामाम होइ बहु सुकपावहि।
धंभि को तजि बाहिरि मा आवहि।
कपनि है ठांडी घ नि माही।
श्री कृष्णचंदु मनि महि मुसकाही।
तबि इकि ग्वारि क्रोधु कराई।
श्री गोपाल सौं बचन सुनाई।
तुमिरो पित भूपति तो नाही।
किउ हमि परि तू जोरु कराही।
सभ ग्वारिनि ऐसे ही भाया।
सांदिदास प्रभ अ बरि राघा॥२२

ग्वारि मागेहि प्रभु देवै माही। ऐसे आपसि महि झगिराही॥
श्री कृष्ण कह्यो अबरि लेउो भाई। काहे मंभि महि तुमि ठहिराई॥
जबि कान्हरि ने इहि विधि बानी। केतकि ग्वारि महि जो स्यानी॥
तिनि समहू मिलि मतु ठहिरावो। हमि देवी सो एहि बतायो॥
हमिरी प्रीति कृष्ण सग देवहू। हमि आतम सुप्रसन्न करि सेवहु॥
पार्वती हमि किर्पा धारी। दर्सनु आइ दीनो सिर्धारी॥
इहि कहि बसु तजि बाहरि भाई। आइ गोपाल आगे ठहिराई॥
श्री कृष्णचंदि अबरि तिहि दीए। सुप्रसन्न आतम तिहि कीए॥
ताको कह्यो ठौर चितु राख्यौ। श्री नारायण मुख ते भाख्यौ॥
जबि बहुरो कातिक फिरि आवै। दुःख दर्द सभि ही मिटि पावै॥
इहि जमुना के रे तटि माही। रास लील्हा कर है अधिकाही॥
हमि तुमि रास लील्हा तबि करही। प्रीति भाउ हुवे अंतरि धरही॥
ग्वारि की वांछा सी एही। श्री कृष्णचंद हमि होइ सनेही॥

इहि प्रयोग सेवा करी देवी। एही वांछा करि इनि सेवी।।
जो सेव सोई फलु पावै। सांईदास दुखु निकटि न आव।।५३

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे एकबीशमोध्याय ॥ २१ ॥

ग्वानि गीति मगल बहु गाए।
श्री कृष्णचंद मिलि आनद आए।
ऐसति हासति अहि महि आई।
भिन्न भिन्न अहि जाइ ठहिराई।
तहा ग्वानि कुस्म विछाई।
अति सुरंग तिहि मालि बनाई।
सकिस ग्वानि मिलि मगल गाही।
अति सोभति है कुस्म तिन्हाही।
तिन्हो कुस्म ऊपरि पग दीने।
ग्वानि ने इहि कानि कीने।
चहू ओरि तिहि कुस्म की माला।
रायी निर्विति श्री ब्रिज बाला।
श्री गोपाल तिहि बचन सुनाए।
करि चोरे मुष से उचिराए।
हमहि अगमि सती द्रिड आवहि।
कामु सहे हमि छाइ करावहि।
इमि से अधिक सोकि बरतावहि।
धन्न ब्रिस इहि कामु करावहि।
बहुरि कह्यो ग्वानि प्रभताई।
सुण हो बिनती त्रिभवनि सांई।
हमि को भूप अधिक प्रम लागी।
चरन करहि हम माहि त्यागी।
प्रानु न अहि ते हमि कछु पायो।
कहा करहि हमि भूपि सतायो।

थी नंद नंदन वचन उचारे।
सुण हो सषा तुमि बचन हमारे।
मौको भी इनि भूषि सतायो।
भूप हाथ से बहु दुख पायो।
अमुना तटि ब्राह्मण बहु रहिही।
होम यज्ञ करें बहु महई।
तुमि तिन बिर्पा पाइ जावो।
मोहि नामु तिनि जाइ सुनावो।
एहि कहो तुमि जाइ करि माई।
जो न तुमि कह्यो सुनाई।
हमिर ग्रहि ते मा कछु आयो।
हमि को पुभ्या अति सतायो॥
रचिक मातु देहि हमि ताई।
सांईंदास मनि बहु सुपु पाई॥ २४॥
ग्वारि चले विपो पहि आए।
जहा बिर्पों ने यग रचाए।
जो कह्यो प्रभ सो आपि सुनायो।
बिर्पों सुणि भुप बचनु नतायो।
अबि हमहि होमु यज्ञ न कीना।
आहुती हमहि माही दीना।
ग्वारि सबि हीते फिरि आए। श्री जगदीस सौ आइ सुनाए॥
बिर्पों भोजनु हमहि न दीना।
अति अभिमानु तिनहा मन कीना।
तबि थी नद नदन इउ बोले।
इहि प्रजोग तुमि मनु ना डोले।
द्विज पत्नी पाह तुमि जावो।
तिन पहि जाइ करि मातु ल्यावो।
ग्वारि गए द्विज पत्नी पाहे।
बहि बैठी अपुने ग्रहि माहे।

पत्नी को तिनि भाषि सुनाया।
श्री गोपाल तुमि पाहि पठाया।
श्री कृष्णजवि विंद्रावनि माही।
गो चरावहि ताहि मझाही।
भासु न पाने को कछु भायो।
अधिक भुषि ने ताहि सतायो।
जो कछु तुमि देवौ से जावहि।
महुसु भला हरि भोजनु पावहि।
जवि सभ जग पत्नी विधि पाई।
त्तवि ही इहि विधि भाषि सुरा हिर्याई।
हमि सुराति श्री कृष्ण को नामा।
कमल नैन भातम विस्रामा।
विंद्रावनि महि धेन चरावति।
सहिति ग्वारा बेन बजावति।
हमि भपुने हृदे माहि इहि ठानी।
दर्सनु पावहि सारग पानी।
ग्वारो को कह्यो यहु भला भाए।
श्री मुरारी ने तुमहि पठाए।
हमि भी सभ तुमिरे सग भावहि।
जाइ कृष्ण को दर्सनु पावहि।
भमकि भनकि तिहि भोजन लीने।
ताहिति गमनु बिंद्रावनि कीने।
तवि ही द्विज पत्नी पति भाए।
देपि ताहि ममि महि विस्माए।
कहति कहा घावति हो नारी।
मूढि मति कछु भई तिहारी।
जग पत्नी पति इउ उचिराए।
साईदास प्रभ ऐसे भाए॥२२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे द्वाविंसमोध्याय॥२२॥

दिज पत्नी पति को समिझावहि । हरि दर्सनु देपनि को जावहि ॥
हरि दर्सनु हमि देपि कराही । फिरि आवति हो तुमिरे पाही ॥
इहि मति बीठि जावनि दे देवहि । आएे ते तिनि का हटिकेवहि ॥
एही कहे सभ ओपिता ताई । ग्वारि बीठि बिंद्रावनि माही ॥
तुमि तिहि बीठो पहि किउ आवो । कित को अपुनी लाज गवावो ॥
केतकि ओपता पुरि के भाई । घरी घली बिंद्रावनि भाई ॥
केसकि पति भवन महि डार्‍यो । ताहि वाहरि अग्राला मार्‍यो ॥
तिहि सांई पति पाण म देतो । एहि कार्णु बिपों न कीतो ॥
जो गई बिंद्रा बनि के माही । जो कछु सा उनि ओपिता पाही ॥
पहि कौसापति पहि ठहिरायो । मुपि अपुने त बचनु सुनाया ॥
क्रिपा करो करि भोजनु पावों । मुपि अपुने ते बचनु सुनावों ॥
सुप्रसन्न होइ भोजनु पायो । श्री नद नंदिन तब ही सुनायो ॥
बहुरि भुबा होइ बकुंठि आवो ।
बैकुंठि महि तुमि बहु सुपु पावो ।

तबि बिप बनिता बिनतीं ठानी ।
पति बिनु कहा जाहि धारगपानी ।

श्री गोपाल कहा पति मे आवो ।
अपुने पति तुमि सहिति बसावो ।

अबि आवो अपुने ग्रहि माही ।
अबि तुमि मांसो पाहो ताही ।

बिप ओपिता सम कहो पुकारी ।
तुमि दर्सनु पायो बनिवारी ।

इहि दर्सन की बहुत प्यासी ।
घटि घटि के तुमि अतरि वासी ।

पदमन मपवा परम कमाए ।
तुमि दर्सनु तिन मूल न पाए ।

जो हमि प्राप्ति भयो मुरारी ।
हमि इसि छवि उपरि बलिहारी ।

कहा कामु जो ग्रहि को जावहि । चनि कमल ते दूरि परावहि ॥
सकल ओपिता हरि ध्यानु समाया । हरि क ध्यान सो प्रानि समाया ॥

इहि जो दर्सन को चलि आई। महा परमि गति इनि मे पाई॥
दरसन करि प्रभि को फिरि आई। अति अनदि मंगल बहु गाई॥
तिन के पति ने तिन को कहा। धन्न भाग तुमि हरि पहि गया॥
हमि को भी क्रितारथि कीना।
तुमि श्री कृष्ण को भोजनु दीना।
हमि सभि विप बिंद्राबनि माही।
होम मज्ञ करि ताहि मभ्भाही।
ताहि हमि पहि आए ग्वारि।
कहो पठाया हमहि मुरारी।
तुमि हमि ताई भोजनु देवी।
सुप्रसन्नि चितु हमहि करेवी।
तिहि समे मूढि मति हमिरी होई।
हमि बीच से सुंति ना कोई।
बेदि स्मृति एह ही भाषहि।
होम यज्ञ करिहो इहि भावहि।
होम मज्ञ इहि कार्ण करही।
राम नाम को सदा उचरही।
श्री कृष्ण को दर्सनु पावहि।
होम यज्ञ इसि वाति करावहि।
सो प्रभ फिर्ते हैं बनि माहि
बिंद्राबनि महि धेनि चराही।
हमि मति तिहि समे भहिराई।
तुमि पहि तिहि कछु दीमा न जाई।
हमि सम महि किसे एहि न भाष्यो।
इहि विधि किने न मनि महि राख्यो।
भोजनु प्रभु स मांगनि आए।
इहि विधि तबि किसे ना उचिराए।
तुमि में हमि कहु बहु सुखु दीमा।
श्री कृष्णचंदि को दर्सनु कीमा।
धन्न धन्न मति तुमिरी भामा। तुमि ने एसो कीनो कामा॥

हमि को तुमि मे मुक्ति करायो।
तुमि प्रजोग हमि ने सुपु पायो।
ऐस बिपो वचनि उचारे। साँईदास सदा बसिहारे।२६।

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री शुकदेव परीक्षति संवादे त्रिविंसतिमोऽध्याय ॥२३॥

गोपीनाथ गोबिंद मुरारे। कौसापति त्रिभवनि दातारे॥
बेन बजावति प्रहि को धाए। करति क्रीडा माकमि महि धाए॥
नदि महिर वृखिभानु तहा ही। गोप सकल गोकमि के माही॥
मघवा की बहु पूजा करही। बपि बितीति होए चित धरही॥
सुरपति की पूजा चितु सायो। बासि वृद्धि ईहि कामु कमायो॥
प्रहि प्रहि महि मिष्टानु करावहि। करि इकि ठौर सम बिप पसावहि
नदि महिरि सौ कृष्ण सुनायो। हे पिति किउ मिष्टानु करायो॥
प्रहि प्रहि महि को आनदु कीया। मिष्टानु पकिवानि को चितु दीया
कहा करो इसु मोहि सुणावो। तौ मै आगो कहा करावो॥
नदि महिर ताकहु प्रतु भीना। इहि प्रजोग हमि ने इहि कीना॥
राजा इंद्र प्रति बलिकाई। ताहि सेव करि हमरे भाई॥
इकि बपि पाछे पूजा करहा। तिहि स्मिरनु मनि अंतरि धरही॥
मघवा हमि परि सुप्रसन्न होवे। मेघु बसावे बहु दुःख खोवे॥
मेघ पड़े तिसु महुता होई। भूमि सकल परिफुल्लति होई॥
अधिक अनाजु उपिजावै। सम ही लोगु महा सुपु पावै॥
तबि मदिननदनि एहि बखाना। ताकहु बसु कहा कछु उपिजावै॥
मघिवा कौ बौनु जो बर्षा सावै। ताकहु बसु कहा कछु उपिजावै
सुगुरु[1] बिनु आशा क्या करही। साँईदास बा से क्या सरही॥२७॥

अबि ते सुरपति कछु न देवो। मोहि कहा मन महि धरि सेवो॥
हे मोहि पिता गोबर्धन जावो। तहा जाइ मिष्टानु करावो॥
बिपा को बहु भाजनु देवौ। सुप्रसन्न तिहि चितु करेवो॥
बिप पसावो तुमि अभु होई। ब्रह्म मोखु तुमिरो दुःख खोई॥

---

१ यहां अब यह शब्द इन्द्र के अर्थ में आया है।

मेघ अधिक तवि वर्षा लावहि । होइ अनाजु सबै उपिजावेहि ॥
नंदि महिरि गोप कह्यो पुकार । सुण हो गोपो वीर हमारे ॥
श्री कृष्णचंदि मोहि एहि सुणायो ।
मघवा भोज तुमि काहि करायो ।

वंपि म जाइ ब्रह्म भोजु करावा ।
ब्राह्मण के सदि के ताहि पलावो ।

मेघ अधिक होवहि सुख पावो ।
त्रिण होइ अधिक सो धेन चरावो ।

जो इहि कहु होइ फुनि सोई ।
इसि अखि मेटि न सक कोई ।

जो इहि कहु सोई हमि करही ।
श्री कृष्ण कहा मनि अंतरि धरही ।

मंदि महिर व्रिषभान सुनाई ।
व्रिषभान इहि बिधि मनि ठहिराई ।

गोप महित सभि सग बसाए । श्री गोपाल जबि ताहि बताए ॥
अंम्रितु स गोवर्धन आए । तहा जाइ मिष्टानु कराए ॥
अमिक विपो को भोजनु दीना । सुप्रसन्न आरम तिहि कीना ॥
श्री मुरारि तहा लील्हा धरी । एक रूपु कीनो बनिवारी ॥
गर्वधिनि ऊपरि रूपु बठिलाया । लील्हा करके ताहि टिकाया ॥
गोप जोपिता सबिस पूछाई । प्रीति भई तुमि रूप गुसाई ॥
तबि वहि रूपु प्रतु इहि दव । प्रीति भई भारम सुपु होव ॥
इहि प्रजोग रूपु प्रभ कीना । सकल गोप का भ्राति हिरिलीना
गोप प्रतीति करहि मनि माही । इहि न कहे ईहा कछु नाही ॥
विपो को भोजनु भलो दीना । गवधनि को प्रदक्षिणा कीना ॥
राम जौरि मुधि ते उचिरायो । ताहि रूप की ब्याधि सुणायो ॥
है हरि रूप मेघ बहु होवहि । तात गोप भ्रात मनि पोवहि ॥
है माया मनि न्या बनावा । माईदास प्रहि निम गुण गावा ॥२८

इति श्री भागवत महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवाद चतुर्विंशमोध्याय ॥ २४ ॥

गोप सकल ब्रह्म भोगु करी आए।
ब्रह्म भोग करि गोकल धाए।
बैनि शब्द कर्क सुपु दीना।
श्री कृष्णचंदि इहि कार्णु कीना।
एक दिन माई मे क्या कीया।
मथिरा पुरि जावनि चितु दीया।
मथिरा सौ तिन कह्यो गुसाई।
सुणि हो मथिरा मेरे भाई।
नद महिर गोकलि विचे रहे। सकल गोप ताहु संग अहे॥
तुमिरी पूजा वही करावहि। तुमि यज्ञ कर्ने को चितु लावहि॥
कृष्ण नामु सुत नंदि को भाई। तिन ही गोप को कह्यो गुसाई॥
मथिरा को यज्ञ तुमि ना करहो। यज्ञ कर्नि गोविंद चित धरहो॥
सुगरि नादि सौ सुण पायो। अति क्रोधु मनि महि ठहिरायो॥
उठ सादित मेघ लीठो बुलाई।
तिहि को कह्यो सुरिपति समिझाई।
गोकल परि जाइ वर्षा लावो।
गोकलि को तुमि मूल गवावो।
सुरपति ने तिहि एहि सुणाया।
अति सादित मेघु तबि ही चलि आया।
बार धानिश्चरि पीयु बसायो।
पाछे महिरणि की वर्षा लायो।
ककरि की वर्षा फिर लाई। क्रोधु कीयो मघवै अधिकाई॥
गोप ओपदा सम सग स्याए। श्री कृष्णचंदि पहि आइ ठहिराए॥
करि जोरे मुख बिनती ठानी। हम चलि आवहि सारंग पानी॥
तुमि बिन ओटि न होइ हमारी। मथिरा क्रोधु कीओ अति भारो॥
हमि सभ को इहि मारि भुकावै। नीर माहि हमि प्रान हुतावै॥
त्रलोक को नाइकु स्वामी। सकल घटा के अंतरि जामी॥
मनि महि प्रम लीठो बीचारी। सुरपति क्रोधु कीयो अधिकारी॥
श्री कौसापति ने क्या कीया। गोप सहाय प्रभ ने करि लीया॥

गर्वधनि को काटि प्रभ लीना।
करि नान्ही अगुरी परि ठांढ्या कीना।
ले करि गोकलि परि ठहिरायो।
गोप सकल सुरिह तले छपाया।
समि ही ने आश्रमु आइ लीनो।
गर्वधनि तले आइ वासा कीनो।
असु ककरि मात अरु दावा।
सप्त दिनस मघवा वसावा।
मानो कुसम की वर्षा होई।
गोप सुरहो दुख भयो न कोई।
सप्त दिनसि वर्षा उनि लाई।
पाछै से रवि दई दिखाई।
नंदि जसोदा ने क्या कीमा।
श्री कृष्णचंदि को उर महि लीमा।
ले अंग महि मुप परि करि फरहि।
श्री त्रिजमाथ केरा मुप हेरहि।
नंदि महिर बिप भान अवि कहा।
प्रतक्ष कृष्ण हमिरे ग्रहि महा।
कैवकि उपावहि हमि परि आई।
इनि कान्हरि ने दूरा कराई।
जो इहि ना होता तो क्या कर्ते।
कैसे सुख मनि अतरि धर्ते।
गोबिंद इसि की करे कल्याना।
सकल गोप मनि महि इहिमाना।
हमि को इनि ने लीतो छडाई। साईदास प्रभ सदा सहाई ॥२९

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पचविंसतमोध्याय ॥२५॥

मघवा लज्जामान होइ धायो। श्री कान्हरि के आगे आयो॥
पीतंबरि उरि माहे डारा। धनि गहे मुप बचन उचारा॥

मैं अपिराधी मति का हीनु। कहा उसतति करहो मैं दीनु॥
सुमिरा मंतु कौणु कोई पावै। सुमिरा मंतु पावना ना आव॥
हमिरा औगुणु जाणि मिटावौ।
अपुनी करुणा वेग करावौ।

एक दिन गोप नंदि पहि आए।
नंदि महिर सौ आप सुणाए।

हमिरे ग्रहि कछु रूप नराइण।
प्रगटि भयो त्रिभवनि को तारण।

हमि मति हीन गवारि अहीर।
इहि कौलापति महिर गंभीर।

अनकि अनिकि लीलहा इमि कीने।
अति अपिति ग्रहु मार्के दीने।

प्रथम अष्ट बिनसि क्या होया।
बकी मारि करि हमि दुख पोया।

बहुरो एक मास का भया।
गाडा करि रूसो सो डारि दया।

करि पल्सो सो दीठो रुलाई।
तबि हमि को इहि चतु दिपाई।

एक वर्षि को पाछे भया।
त्रिणावति को साहि हुति भया।

पांच वर्ष की अवस्ता पाई।
तब कांन्हरि इहि रचिन रचाई।

मायनु जसुमत का ले धाया।
मर्कटि को पडि धाए पवाया।

जसुमति तब इसि पाछे आई।
जाइ तिन गह्यो कौर कन्हाई।

जसुमति ऊपलि सहिति बंधायो।
श्री गोपाल के मनि महि भायो।

जुमला अरजुन को निसतारो। नारदि ऋषि को स्रापु निवारो॥
तुम करहि बाहहि बहु बिप भये। श्री कृष्ण ऊपल सहित तहा गए॥

मूल से त्रिक्षि काटि निकारे। इहि लील्हा कीनी सतकारे॥
बछुरो बछिरो को ले धाए। कति कलोल त्रिप्रानिनि आए॥
दुष्ट अघासुर वनि महि आयो। ताको प्रभ ने वेग हतायो॥
सुरण हो बसु गोप नदि सुणावहि। सांईदास विधि सकल बतावहि॥६०

पर्बासुर आयो बनि माही।
ताहि हत्यो धेनिकि सहिताही।
कालीनाग को मारि निकार्‌यो।
तिहि कुंडि प्रभु मीठा करि डार्‌यो।
ग्वालिनि को हरि लीयो उठाई।
गोप लील्हा प्रम नदि सुनाई।
जो इहि लील्हा को चित धारे।
श्री गोपाल तिहि अघनि निवारे।
गोप लील्हा सभ आपि सुनाई।
सांईदास सुरण करि सुधु पाई॥६१

इति श्री भागवते महापुराण दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवाद पर्बावित्समोध्याय॥२६॥

नदि महिरु गोपो समझावै।
नीक नीक विधि नाहि बतावै।
सुनि अजहूं इसि बिधि मा जानी।
कांन्हरि लील्हा नांहि पछानी।
गर्गि स्वामि मोसो भाषा।
कृष्ण चिहनि कांन्हरि के भाषा।
बसुदेव के ग्रहि भी इहु भाषा।
जहा आइ देवकी गर्भि पाया।
एकु मामु इसि को नही मार्ई।
मोको गर्गि ने एहि बताई।
प्रतक्षि कृष्ण आयो हमि माही।
हमि इसि लील्हा जानी नाही।

प्रजहू लीन्हा करे भनेका।
पूर्ण प्रह्म है तुमि बनेका।
हमि मति हीन ग्वार अधीना।
इहि कौसापति ज्ञान प्रवीना।
हमिरे परि करुणा इमि भारी।
पग दीने हमि प्रहि बनिवारी।
सुरपति मे मनि एहि बीचारा।
में ऊौगुणु कीनो प्रति भारा।
सप्त दिमस मै मेघु बसायो।
शाकस पूर्न को बितु लायो।
श्री जदुनाथ सप्ति दिन ताई।
ग्वर्धनु लीठो करि पल्लो पाई।
मोहि सरि किनहूं न ऊौगुणु कीना।
मघवा मे इहि मनि महि लीना।
कामधेन सुगरु सग लीए। श्री बिद्राबनि को पथि दीए॥
श्री कृष्णचद की सर्नी भाबो। भपुने सिव तिन तसे करामो॥
द्रिग हरि देती बोड नि ताके। सुकिचमान होइ प्रम सों ताके॥
सुकिचमान होइ ठांडा भया। भति भधीन सुकिच मनु रह्या॥
कामधेनि मघवा सौ भापा। सांईवास भागे होइ भाया॥६२

तब मघवा भागे को भाया। काम धेनि बचि ताहि सुनाया॥
सुगरि नै करि बोड कराही। प्रम सो बिनती कीनी ताही॥
मोहि सरि ऊौगुणु ऊौर न कोई।
हूवा इसि जग ऊमरि होई।
मोहि ऊौगुणु हरि चित म दीजै।
इहि करुणा प्रम बनि परि कीजै।
दीनानाथ कौसापति केसर।
गुपि से नहूपो प्रम सक्ति बिसेस्वर।
सुरपति मनु कछु ममि महि मानो।
मनु तुमि इहि बिधि हूरे पछानो।

मोहि मख प्रभ दूरि करायो।
मो सो इही बैरु कमायो।

मैं तोह मख दूरि ना कीना।
तुमि को ब्रिताथु करि लीना।

इहि प्रजोग भाइ दरसनु कर्यो।
हमि चरना सेती चितु धर्यो।

असे पद्मज सभ रिषि आए।
दर्सनु करि फिरि बकुंठि सिधाए।

तुमि अपुना चितु ठौरहि राखो।
श्री गोपाल की उसतति भाखो।

कामधेनि सुगरि प्रभु कीना।
मघवा को तिहि इहि कहि दीना।

तुमि परि गोबिंद किर्पा धारी।
दरसनु दीने तोहि मुरारी।

कामधेन प्रभ आप सुणाया।
श्री गोपाल संतनि सुखदाया।

तुमिरी उसतति कहा बखानो।
मैं तोहि उसतति को कहा जानो।

ऐरापति गंगा जलु ल्याया।
कामधेमि इसनानु कराया।

कामधेनि फिरि हरि सौ भाखा।
करि जोरे ऐसो ही आखा।

श्री नदनंदनकौरि कन्हाई।
मोहि उसतति कछु कही न जाई।

जहा कहा तुमरे सतनि ठाई।
नमि भूमि होवै अधिकाई।

तबि तुमि हरि को आगा करहो।
अपुने बपु ऊपरि हमि धरहो।

ता मैं मम कछु बाधे स्याधो।
भोजनु दे अर्धरि परिहराबो।

तुमि ग्राज्ञा करि सम किछु होई।
जो तुमि कहो करहि हमि सोई।
कामयेनि इहि बिनती ठानी।
श्री कौसापति मनि महि ग्रानी।
फिरि सुगरु ग्रायो हरि पाई। करी प्रकर्मा सीसु निवाई॥
नमस्कारि करि बिदग्रा पाई। ग्रपुने पुरि को चलियो भाई॥
चला चला ग्रपुने पुरि ग्रायो। साँईदास मनचे सुप पायो॥६३

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्दे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे सप्तविंसमोध्याय॥२७॥

एकि दिन व्रतु एकादसी ग्रायो।
बिंद्रावनि महि भगति गायो।
पंडिति बेदि पंडिति ग्रधिकाई।
तिहि पंडिति मे एहि बताई।
जो घटी द्वादसी तिहि दिन भाई।
सकल पंडिति एहि बाति सुनाई।
जवि सभि पडति इहि बिधि भाषी।
सब नंदि गोप सकसी बिधि लापी।
मध्य रैनि माहे उठि धाए।
तटि रवि दुहिता जा ठहिराए।
तहा जाइ करि जागनु कीना।
जमुना तटि परि वासा लीना।
भई बितीति मध्य जबि रैन।
उडगनि बहु चमिकति प्रगटैन।
जमुना भ्रम माहे पगि धारे।
चनि पयार पाम पयारे।
सकल गोप ग्रभि पगि धोए।
भली भाति इस्नानु तिहि कीए।
तहा दूति नृप बर्नि के ग्राए।
नंदि मद्रिर को ले उठि धाए।

नंदि महिर कौ बांधि कराही।
ले गए सब नृप बलि के पाही।
गोप अभि सजि बाहिर आए।
तिहि आपसि महि प्रश्न चलाए।
सम ही गोप नदि जी नाही।
सब ही पुकारि उठे अभिकाही।
थी कृष्ण कृष्ण करि बचन उचारे।
सुणहो राम तुमि प्रान अधारे।
नंदि महिर को को ले आया।
अभि ते फिरि बाहिरि ना आया।
जबि कौलापति इहि सुण पाया।
तबि मनि महि बिस्वासु कराया।
असुर कहा बसु जो ईहा आवहि।
ईहा आइ करि बसु दिपतावहि।
बलि के दूतो पकयो दुराई।
समि बिधि जाणे कौर कन्हाई।
तत्काल अभि महि पगि दीना।
वेग बिलंम कछु मूल न कीन्हा।
गयो पताल प्रभु बिलम न कीनी।
और बाति कछु हुवे न लीनी।
निकटि सिंहासन बलि के आयो।
नृप बलि प्रम को सिर्यायो।
त्याग सिंहासन उठि करि धाया।
साईदास हरि पग चितु लाया॥६४

बलि करी बिनती प्रभि पाई।
मैं तोहि सर्ना नाथ गोसाई।
मोहि कुबधि नंदि को नाहि पछाना।
इहि प्रजोग ईहां तकि आना।

तुमि करुणा अपुनी प्रभ धारो।
हमिरे औगुण नाहि विचारो।
राजु मासु प्रभ तुमि ने दीश्रा।
हमिरे परि आजु करुणा कीश्रा।
आजु ता हमिरी भई कल्याना।
तुमि पगि हमि मस्तिकि ठहिराना।
बिनती करि नृपु वर्नि सिधामा।
ततक्षिण भवन माहे वहु आमा।
मोतनि की माला ले आयौ।
श्री कृष्ण वर्नि आगे ठहिरायौ।
प्रभि की उस्तति मनकि बीचारी।
तू करुणा निधि कुंज विहारी।
तोहि पग रजि जिहि मुकटि परि भाव।
आवागौना ताहि मिटावै।
इहि बिधि कहि नदि को ले आयो।
श्री मुरारि पहि आएा टिकायो।
श्री कृष्णचदि पित को सग लीश्रा।
गोकलि के मग तबि पगु दीश्रा।
ततक्षिण वीच गोकलि महि आया।
नदि वार्ता गोप सुनाया।
इहि बालकु हमिरे भगवाना। पूर्न ब्रह्म मै हृदे पछाना॥
वर्नि के दूति मोहि पकिड़ायो। वर्नि पाहे पकि के ठहिरायो॥
जैसे को काहू बदि भाई। बंदी ज्यू राख्यो हमि ताई॥
हमि बालक ऊहा पगि धारे। वर्नी तबी इनि लीडो निहारे॥
तबि सिंहासनु वर्नी लाया। गर्दू गुमानु सकल तजि त्याया॥
अपुने पग सेती चलि आया। आइ कृष्ण आगे ठहिराया॥
वर्नि बहिना इसि सों कीनी। अति प्रदक्षिणा प्रभ को दीनी॥
इहि प्रजोग मै प्रभु करि जाना। पूर्न ब्रह्म करि हृदे पछाना॥
नंदि महिरि बिधि गोप सुनाई। साईदास प्रभ सदा सहाई॥६५

एकि दिन कृष्ण सुदे ठहिराई।
इनि लोको मोहि गति ना पाई।
इनि को दर्सनु बैकुंठि करावो।
नदि महिर सहिति मर्मु हिरावो।
एहि गोग[1] मति इहि है थोरी।
जानति माही है गति मोरी।
स गोवर्धनि सप्त दिन ताई।
राख्यो है पस्तो करि पाई।
मघवा क्रोध ते लीए छुड़ाए।
अपुने रूप मै इनहि दिपाए।
इन्ह अजहु मोहि नाहि पछाना।
मानसु अपुने मनि करि जाना।
कमल नैन तहा लील्हा धारी।
बिंद्राबनि महि रास बिहारी।
प्रगट बैकुंठि बिंद्राबनि आना।
तांकी लील्हा सकल बषाना।
जो कोऊ बिंद्राबनि माही।
असुरि मुक्ता सभ देत दिपाई।
एक एक महि बेद बषाने। पदमज सुक देत जो बिधि जाने।।
सनक सर्नदन सनत कुमार। निति करति इकि इकि के द्वार।।
नदि महिर गोप सभि ताई। ग्वालनि सकसे ताहि मझाई।।
सभ को दर्सनु बैकुंठि कराया। सकल गाप का भर्मु हिराया।।
बहुरो आए गोकल माही। ताहि अनदु भयो अधिकाही।।
सुकदेव नृप परीक्षति स्मझाव। हे नृप मनु सू इहि मनि ल्यावै।।
बकुंठि से गयो फिरि ना आवै।
इहि मेरा मतु सभर पाव।
जैसे सुपसनि सुत ल्पिसायो।
तैसे सकल गोप निर्वायो।

---

1 यहा शब्द "गोप" चाहिए।

मुना भमि महि ताहि विपारा।
सि प्रभ भवि लीला धारा।

श्री कृष्ण चंदि को जसु जो गावै।
सांईदास फिरि योनि न भावै॥६६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टाविंशमोध्याय॥२८॥

कविम श्री कृष्णचंदि क्या कीया। वंद्रे छाडि सांकी पै दीया॥
छडो को सारो पीछ पीवाया। मध्य रजनी बनि को ले धाया॥
पमादी की सी रैना। ससी भ्रर पूर्न पडिलो कीना॥
ा बिंद्राबनि वन बजाई। जिन वधु सुणयो सुति भुलाई॥
वानि मे सुणाया ब्रिज माही। मग्न भई सभ सुति विसराही॥
सी मग्नि भई ब्रिज नारी। तमि की सभ सुति विसारी॥
ी कोई पीर सील सी कर्ती। त्याग चली मुर्ली धुनि सुनती॥
ो कजिरा द्रिग माहे डारे। एक द्रिग डार्यो पूजा बिसारे॥
ो कोई सुरह्रो को दोहनि लागे। सुण चली धुनि दोहनि त्यागे॥
ो कोई भवरि धग उठाए। भ्रंवरि त्याग नग्नि ही धाए॥
ो कोई ग्रहि महि पाकु लगाए। पाकु त्याग भ्रातरि होइ धाए॥
ो सग पुप सेज ममाही। सेज बांछहि गई बिंद्राबनि माही॥
ो जो कामु करति सी कोई। सकल त्याग दौरी फुनि सोई॥
ोपिता म्नारि कन्या सभ भाई। यहा कृष्ण जी बैन बजाई॥
मु यमुना जो चलया जाई। ठटकि रह्यो हरि बैन बजाई॥
मुना जमु सागरि ओर जावे। ममम भयो चलिना नही पावे॥
सीभ्रर निप रह्यो बिसमाई। हरि लीला को पार न पाई॥
ानि प्रभ ओरि घेरा पाया। प्रभ सभन के बीच समाया॥
सस ग्वानि का प्रभ ने कह्या। तुमि मे भ्रासु चलन को सह्या॥
ब्रिज महि तो कोई असुर्न भाया। ताहि असुर ने तुमहि संतायाा॥
दी गापाल तिहि कह्यौ गुसांई। साईंदास प्रभ बच वसि जाई॥६७॥

ग्वानि मे तवि प्रभ प्रतु कह्या। है कौसापति क्या उचिरह्या॥
ग्गुरो का कमु कहा कमावे। जो बिंद्राबनि माही भ्रावे॥

श्री कृष्ण कहा कहे तुमि आई। मध्य रैनि विये बनि के माही॥
तवि सभि ग्वालिन एहि बखानी। मग्न भई हमि सारगपानी॥
तुमि सभ बिधि जाननिहारे। काहे पूछति हमि हि पुकारे॥
हमिरे अंतरि की तुमि जानो। काहे को तुमि बहुरि बखानो॥
श्री कृष्ण कह्यो ग्वालिन के ताई। जावो तुमि अपुने ग्रहि माही॥
ग्वालिन फिरि कह्यो जदुराई। कहा जाहि हमि और कन्हाई॥
कमल नैन बहुरो इउ भाषहि। ग्वालिन को बिधि एही भाषहि॥
तुमि जावो अपुने ग्रहि माही। भजनु करो हमिरो ग्रहि ताही॥
अपुने ग्रहि बहि स्मिरनु करीए। हमिरे चर्नि से ती चितु धरीए॥
मैं सभ ते उसि को भला मानो। ताहि कहा मै अतरि मानो॥
तुमि पति अरु सुत बहु बिधि लाही। रुदनु करति है बहु मनि माही॥
जो कोई सीसु अपना द्रिड़ राखहि। सो परि पुर्ष की बात न भाषहि॥
ग्रहि से पगु बाहिरि ना डारे। पति अपुने ठौर स्याम निहारे॥
जो अपुने पति की करे सेवा। ताकी बांछा पूरै देवा॥
ता परि मैं होवो सुप्रसन्न। देवो सो जो बांछे मन्न॥
न उसि को बैकुंठि पठावो। मनि बांछे सो कछु पहुचावो॥
जोपिता पति को हरि करि जाने। हरि पति महि अतरु नही माने॥
जिस जोपिता पतु जीवतु होई।
तिस सोर्य प्रसु बन्यों न कोई।
ताको चितु नेमु ना आपा।
जो बहुरापे प्रभ इहि आपा।
अपने पति की सेवा कर।
ताहू चर्नि सेती चितु धर।
श्री कृष्णचंद जवि इहि बिधि ठानी।
साईदास ग्वालिन विस्मानी॥६८॥

ग्वालिन सीसु तले को कीआ।
रुदनु कर्नि को उमि चितु दीआ।
राधिका मन्नु त्याग करि दीआ।
श्री कृष्णचंद को तिन प्रतु दीआ।

तुमि जु कहा प्रभ हमिरे ताई।
पति सुत तुमिरो स्वनु कराही।
कमलापति पूर्ण भगवान।
पति सुत केहा होइ तोहि स्मान।
बहि सो एक दिन छाडहि प्राना।
तुमि पूर्ण हो पुर्ख निधाना।
तुमि पारब्रह्म निर्मो नरकारा।
कर्ता पुर्ख तूं अपर अपारा।
तुमिरी मति मिति कौण बखाने।
तुमिरी लीला कौनु को जाने।
ऐसी बिधि काहे को भाषा।
हमि सौ ऐसी बाति किउ भाषो।
हमि आवे जो घग हमि आवहि।
पति सुत के आइ दर्सनु पावहि।
केतकि के पति मे क्या कीआ।
जा करि बमि से पुजता लीआ।
आनि डारी भवनि के माही।
तिह को आवनि देवहि नाही।
तिहि हरि चर्नां ध्यानु समाया।
मगन भई सम सुति भुलाया।
तिसी ध्यान महि तजि दीए प्राना।
मुक्ति भई मिटयो आवनि जाना।
चढि बिवाण बैकुंठि सिधाई।
महा पर्मि गति तिन मै पाई।

नृप बोल्या सुखदेव सुनाया।
गोपता भवन महि तजे प्राना। तिहि कैसे पाई पर्मि कल्याना॥
सुकदेव प्रतु नृप ताई दीना। एहि प्रभ भलो तै कीना॥
सस पास असुर सग बिरोधु कमाया। ताको प्रभ बैकंठि सिधाया॥
सतिर गुण को कीओ पार गिरामी। पूण ब्रह्म हर अंतर जामी॥
जोही तीम जीउ प्रीति महि दीआ। हरि तेती महता हितु कीआ॥

विहि कल्याण होवै किउ नाही। इनि ने प्रीति करी मन माही ॥
बहुरो श्री कृष्ण कहा तुमि आवो। ग्रहि प्रतरि जाइ मजनु कमावौ ॥
राधिका फिरि कहू मो हरि ताई। तूं हमि का कहा बाति सुनाई ॥
जमुना जलु तीर ठहिराना। मग्न भई तुमिरी गति जाना ॥
मगन भए मृग बिद्रावनि माही।
त्रिण न चरहि सुरिहू सुधि बिसराही।

हमि तो मानस है प्रम तरै।
कहा कहे हमि भागे तरे।

बधि राधा की एहि बपानी। तबि करते गही सारग पानी ॥
मह कि कदरा माहे बडिया। ग्वार्नि चतुर्दिस घेरा करया ॥
ताहि भवन महि फिरत जदुराई। सग राधा की अधिक सुहाई ॥
तहा पेलति अति आनदि माही। अति अनद मंगल बहु गाही ॥
ग्वार्नि मनि महि गर्बु बसाया। हमि सर दूजा जग ना आया ॥
हमि संग पेलति है बनिवारी। तटि यमुना श्री कुज बिहारी ॥
निर्बति कर्नि गर्बु इमि केरा। राधा संग चल्यो प्रम मेरा ॥
राधा सहित लई उठि धाया। ग्वार्नि त्यागी सभ मदुराया ॥
मन महि गबु करो नही कोई। सांईदास पूर्न सुपु होई ॥६८

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे नवबिंशतमोध्याय ॥२६

ग्वार्नि सकली रुदनु कराही। कृष्ण बिछोरे बहु दुष पाही ॥
तब आपसि महि मतु ठहिरायो। चलिहो जो है मादम राया ॥
ग्वार्नि इहि मतु करि उठि धाई। जोहित प्रम को बनि के माही ॥
प्रथम ग्वार्नि गगन सुनाया। श्रीकृष्णचंद बिनु बहु दुखु पाया ॥
तुमि तो धर्म सिष्ट कहावा। ईद्रभान की रप करि आवो ॥
उडगन तुमिरी छाया रहै। मोहि क्रपा करि आश्रमु लहै ॥
श्री कृष्णचंद जो तुमि कहु देषा। हमिहि बताबो बुधि सरीषा ॥
एते जीह की होइ कल्याना। तुमि तो गम्भिपूर्न निर्बाना ॥
तां बहु प्रतु आकाश न दीआ। तिह का बधु तिम हुदे न कीआ ॥
बहुरो गवनु तहा ते कीना। सम ग्वार्नि आगे पगु दीना।

सम मनु बूडि थकी बौराई। सम बन स्याम बिन्दावनि धाई ॥
कदम बिक्ष सौ तिन्हहि सुनायो। तुमि सौ हरि वहु हेतु बढायो ॥
तुमि सम हेतु भधिक गिर्धारी। हमि मनि अंतरि एहि बीचारी ॥
जो तुमि मे कहू हरि निर्पाए। करुणा करि हमि देहु बताए ॥
तुमिरा धर्मु होई अधिकारा। हमि को मिलही प्रान भधारा ॥
नाहति हमिरे निकसति प्राना।
इहि विधि तुमि मनि लेहु पछाना।
कदम बिक्ष कछु बचनु न कीना।
ग्वानि छोकु अधिक मनि लीना।
पग तबि ग्वानि भाये धीमे। वटि को त्याग गवनु तिहि कीने ॥
चसी चसी पीपस पहि भाई। बदनु कति सम सुधि बौराई ॥
पीपस को भाइ पूछनि लागी। उौर बाति सकली उनि त्यागी ॥
हे पीपमि तुमि पतति उधार्ने। महा पवित्र प्रान अधार्ने ॥
नमन नैन कहू देप्या होई। हमि को देहि बताई तू साई ॥
नाहति भबि सकसी जोर देवहि। प्रान भात भपुने करि लेवहि ॥
पीपस भी कछु नाहि सुनायो। सांईदास ग्वानि दुख पायो ॥७

ग्वानि फिरि भागे को भाई। जहा संगम भाहे भधिकाही ॥
ताको ग्वानि भाप सुनायो।
थ्यो कृष्ण फिति तुम महि भधिकायो।
हमि को कृष्ण भी तुमि बतिसावो।
बेग बिल्स कछु मूस न लावो।
नाहिनि प्रान निकस हमि जाही।
हमि ताई कछ सूझति नाही।
जगम भी कछु प्रतु ना दाना।
ग्वानि का बचु हुदे न कीना।
बहुरो भनि म ऐसे भापहि।
भपुने मन की बिर्था भापहि।
ताहि ऊपरि मित प्रति हरि फिरही।
धक्कि भति प्रभु तुमि परि करही।

तुमि तो धर्मं विषे बहु नीको।
इहि विधि हमि भापी है जी की।

त्रिणु मेवा अन्नु तुमि ते होई।
तुमि बिनु और करे ना कोई।

सकिल स्रिष्ट को तुमि सिरि भारा।
तुमिरो नामु है परि उपकारा।

तोहु ऊपरि सभु अमृ वसावै।
जीव जत जो कछु द्रिष्ट आवै।

श्री कृष्णचंदि को देहु बताई। हमि वसि सुण से वसुधा माई।।
वसुधा भी ना दीनो विचारा। हार परी सकला वमु हारा।।
तुमिसी सा फिरि कीनो पुकारा। तुमि कहु देपे प्रान अधारा।।
तुमि सौ तांको बहु हितु होई। हमि को देह बता करि सोई।।
तूं तो सदा रह संग तांके। कैसे बछोहो तुमि पायो वाते।।
पग मृग कोकल सकल पुछाए। तिन ने किम ते प्रभु ना पाए।।
बहुरो तिन इहि मनु ठहिरायो। सुण हो साधो हितु मिलु लायो।।
रास लील्हा प्रभ जहा कराई। वहु ठौर बैसे हमि जाई।।
बिस्रा वनि को तब तजि आई। रवि दुहिता तटि आइ ठहिराई।।
जैसे प्रभ जी बैन बजावति। तैसे ग्वानि बचन सुनावति।।
बहुरो ग्वानि[1] बचन उचारे। कहा गए हमि प्रान अधारे।।
तांको दर्सनु कहा ते पावहि। तिस विनु मनु हमि कासो लावहि।।
निहवसि होइ ग्वानि बौराई। माईदास ग्वानि विसमाई।।७१।।

ग्वानि मतु फिरि एहि बनायो। एक पिता नदु करि ठहिरायो।।
ग्वानि महि इकु कृष्ण बनाया। वालि लील्हा कनि चितु लाया।।
एकसि को जसुधा करि लीया। एहि लील्हा कनि चितु दीया।।
एक बकी को रूप बनायो। कुसम धम्मि ले केसि उभायो।।
पूतना कृष्ण को अंग महि लीया। बिपु अस्थन लाइ मुष महि दीया
श्री कृष्ण चंदि ने लील्हा धारी। रग कुचिकी सभु पंच निकारी।।
बकी के प्रान आप हिरि लीए। एहि कार्य ग्वानि तवि कीए।।

---

१ यहां "ग्वानि" चाहिए छूट गया है।

बहुरो कृष्ण मास इकि होए। जसुमति दु ख सकिल मनि पोए॥
गाडे तल आइ धौनु करायौ। तति प्रभ गाडा वेग रुड़ायो॥
पगि पल्लो सेती अचुराई। गाडी का दीठो वेग चलाई॥
बहुरो वर्षि प्रवस्ता पाई। श्री गोपाल भक्तिम सुपदाई॥
जसुधा भौन भागे बठिलाया। भ्रपनो हितु ग्रहि काम सा माया॥
त्रिणावर्ति असुर क्या कीआ। पवन काठि को रूपु करि लीग्रा॥
कृष्ण को पकरि गगनि ले चरया। महाराज तहा लीरहा कर्या॥
त्रिणावर्ति को उरि ल लीना। पढ़ि मारनु मर्कटि को दीना॥
जसुमति भ्रकुटी मे करि भाई। मागे भागे जाति कन्हाई॥
चकित भई प्रभु करि मा भ्रायो। जसुमति ने बलु सकला हिरायो॥
सब श्री कृष्ण कहा हमि मय्या। हमि पाछे धाई थकि रहीय्या॥
आगे भ्राइ जसु मति ठहिराया। जसुमति ने इहि मतु ठहिराया॥
ऊखलि सहिति बाध्यो तवि भ्रानि। तवि चित भ्रायो इहि भगवान॥
जुमला भ्रर्जुन को निस्तारो। नादि ऋषि को स्रापु निवार्यो॥
नवि महिरि ग्रहि पाछे गया। तहा भ्राइ करि ठांढा भया॥
भूमि से दोनो विक्ष उपारे। सांईदास ऋषि तात उधारे॥७२॥

पांच वर्षि का कान्हर भया। बछे चरावनि बन महि गया॥
असुर बसासुर बन महि भ्राया। बछे को रूपु माया करि पाया॥
बछे सकल महि वा ठहिराना। श्री नंद नंदन ताहि पछाना॥
श्री कृष्ण राम सो कह्यो सुनाई। सुण हो इहि विधि मेरे भाई॥
दुष्ट बसासुर बछे को बपु कीनो। हमि बछर्डो केरा सगु लीनो॥
हमिरे मारनि कारनि भ्राया। दुष्टि कस मे एहि पठाया॥
मै तुमि कहो सुणो मेरे भाई। चीति भरो मतु तुमि चुकि जाई॥
मी कहो बछे हेरनि को जावो। जिहि बारी होइ हेर ल्यावो॥
तवि तू कहे प्रम बारि तुम्हारी। उीर कौनु जावे गिरधारी॥
बछे चति जिम दूरि सिधाए। तवि कौसापति बचि उचिराए॥
राम बछ बहु दूरि सिधारे। सुण हो इहि विधि बीर हमारे॥
कौन बारि बछिड़ो को फेरि भ्रान। श्री गोपाल इहि बाति बयाने
राम कहू मो प्रम बारि तुम्हारी। हमि सो पूछति है बनिवारी॥

यी कृष्णचन्दि सुरण करि उठि धाए । तात्काल बछिगो निकिटि आए
दोई पगि प्रभ खलि के लीने । फेरि फेरि करि बसुधा दीने ॥
बहुरो प्रभ ने बिछ सो मारा । मार मारि तिस जीउ निकारा ॥
असुर बकासुर फिर नाहु आयो । बग को बपु तिन दुष्ट बनायो ॥
ग्वारि बछे सभि उधिरि महि डारे । कान्ह चुंच पकरि सकल निकारे
एकि दिन सुरिखु स तास बनि का आए । धेनकु असुर तहा प्रगटाए
उसि को भी प्रभि मार चुकाया । ग्वानि ने एहु कामु कमाया ॥
कुंडि से काली नाग निकारा । सिहि सिर परि प्रभ ने पगु मारा ॥
तां परि निर्त करी बहु भांति । अति बहु सुंदर प्रभ की कांति ॥
काली को दधि माहि पठाया । कुंडि को असु प्रभु मीठ कराया ॥
साधो हरि सिमरो तत्कारा । साँईदास गोबिंद उपिचारा ॥७३

ग्वानि लील्हा सकमी कहु दीनी ।
बहुरो इहि बिधि मनि महि लीनी ।
सकले बनि बहि ढूंढनि को आवहि ।
मतु कहू ठोर कृष्ण को पावहि ।
उठि चली जोहिति हरि के ताई ।
पग हरि चिह्नि पाए मग माही ।
ठौर चिन्ह पगि राधा देखै ।
हिर्षमान होइ मनु द्रिग पेखै ।
तिहि पगि रजि ले मस्तक लाए ।
इहि बिधि उनि मनि महि ठहिराए ।
राधा दोर आगे लग लीए । हमि परि हरि किर्पा ना कीए ॥
इहि बिधि कहि आगे को धाई । राधा रुदनु करति मिर्पाई ॥
रुदनु करति आगे सो आवे । अपुने द्रिग सो नीर चुरावे ॥
राधा को पूछनि सभ लागी । कहु तू प्रभ ने किउ करि त्यागी ॥
जो इनि ग्वार्मि ने पूछायो । राधा सों इनि ने प्रतु पायो ॥
म कहूं प्रभ सों बात सुनाई । हे कौलापति जादवराई ॥
हारि परी प्रभ पग ना पावहि । कैसे चलो पगि धारण नि पावहि ॥
जबि मै इहि बिधि मुखो उचारी । मोको प्रतु दीनो मिर्भारी ॥

कह्यो कोप हमिरे परि भरह्यो।
तबि तुमि गवनु आगे को करह्यो।
मैं पगु काये प्रम के दोमा।
मन मे तरि धरि कर इहि सीमा।
मो सरि जग मैं कौनु कहावहि।
औरु कोई जग महि नही भावहि।
मोको प्रम मे कांधि चढ़ायो।
इहि विधि मैने ममि ठहिरायो।
गुप्त भए तबि ही यदुरायो।
स्वनु कीयो मैं दृष्टि न आया।
एसे प्रम से भई न्यारी। राधा इहि विधि करी पुकारी।
साधो गर्व हुवे ना भावो। सांईदास जसु सदा बखाने।।७४

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षत संवादे त्रिंशमोध्याय ।।१ ।।

जबि राधा को दर्सनु पायो।
ग्वालिं मनु फिरि एहि ठहिरायो।
जहा रास खोल्हा कीनी बनिवारी।
तहा चलो बसै सम नारी।
राधा सहित सीनी उठि धाई।
तहू ठौर आइ करि ठहिराई।
तहा आइ इहि प्रवनु बसायो।
गोपीनाथु काहे नामु धरायो।
काहे हमहि कष्टु समावहु।
जबि हमि को बनि महि तजि जावहु।
दूर करो जो बिर्दु रखाया।
औरु बिर्दु राधा बदुराया।
इहि विधि कहि फिरि एहि पुकारी।
तुमि बिधि जानो सकल मुरारी।

जो कोऊ त्रिया अपुने करि लावै।
ताकहु अग्नि सो ताहि जरावै।
हमि सकल कुटमि की लज्या त्यागी।
आइ करि तुमरी चरनी लागी।
तुमि हमि को बनि महि तजि दीआ।
हमि सो ऐसा कार्ण कीआ।
अबि हमि अहि क्या मुख से जावहि।
इहि बिधि हमि मनि महि सकुचावहि।
कमल नैन माधो मकरधन।
तुमि सर्नी हमि नदि के नदन।
अपुने कर हमि सिरि परि राषो।
गोपी नाथ नाम् तबि भाषो।
पदम कमल तुमिरे पगि माही।
सो पग आइ धरो हृदे माही।
ताको हमि कर सहिति बिलोवहि।
लेइ अंमृ ताको हमि धोवहि।
मन महि प्रीति करो सम कोई।
सांईदास सुपु मन को होई ॥७५

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकत्रिंशमोध्याय ॥३१॥

स्वामिं सकली आतर होई।
सुधि बुधि अपुनी तिन मे षोई।
तबि ही तिन मे कहयो पुकारे।
जिन मछ रूपु सीओ तस्कारे।
ताको दया कहा हृदे आव। तिसे सगु करि को प्रभु पावै।
जो कोई कछु रूप करि लमै। ता मम महि कहा दया करेब ॥
जो कोई सूकर को बपु पाव। ताके मनि कहा दया बसावै ॥
जो कोऊ मारि सिंह बपु कर्यहि। कहा दया हृदे माहे धरिहि ॥
जो कोऊ बावन देह बनावै। ताके मनि कछु दया न आवै ॥

परसुराम बिप्र ने बपु मारा। सहस्रार्ज्जुन को तिन मारा॥
ताके मन भी दया न आई॥
रामचन्द्र होइ रावण मारा।
तिन भी मनि महि दया न धारा।
सकल ग्वालिनि इहि विधि कही।
बहुरो इहि मनि माहे सही।
बिरहो अग्नि तनि माहि मिकारही। इहि देहा अपुनी को जारहि॥
जो कछु ज्योति है हमि पति माही।
जाइ मिलेगी त्रिभवनि साईं।
जो हमि को वसु छोरु न रह्या।
प्रभ विछुरनु हमि जाइ न सह्या।
बिनु गिरिधरि जीवनु किति कामा।
इहि विधि बोली सकली भामा।
ऊमनि भई इति उति ते देषहि।
श्री कृष्णचन्द को द्रिग सौ पेषहि।
बावति बैनि अधिक तिहि घोरि।
प्रगटि भए आए नंदि कौरि।
ग्वालिनि महि आइ ठांडे भए।
इकि ग्वालिनि जाकटि सो गहे।
मतु बहुरो हमि को तजि जावहि।
इहि प्रयोग कटि हरि करि ल्यावहि।
राधा पास परी कर देवै।
श्री कृष्णचंदि मुष अंतरि लेवै।
ग्वालिनि प्रेम सौं इहि विधि ठांनी।
अपुनी बिर्था सकल बषानी।
कुटिम कुटंब सकल तजि आई।
तौ सर्भी गति त्रिभवनि साईं।
तुमि त्याग गए बनि माही।
हमि बौरी भई कछु द्रिग न सुझाही।

कहा कृष्ण इहि धमु कहावै।
जो तूं हमि मनि महि तजि जावै।
मन्न मोहन फिरि बचन उचारे।
किउ तू तजि भाई ग्रहि बारे।
बुरा कीआ तुमि ग्रहि तजि माई।
जो ग्रहि भजनु करै न भाई।
तुमि भ्रभावरि कंतु तुमारे।
सम भरतरि प्रकाश हमारे।
लज्जा बहुतु भली जग माही।
बिनु लज्जा किसे काज न आही।
जाओ तुमि अपुने ग्रहि माही। साईदास प्रभ ताहि सुनाई ॥७६॥

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीखति संवादे द्वात्रिंशमोध्याय: ॥ ३२ ॥

राधा तबि ही कथा सुणाही। दीन दास सदा सुखदाई ॥
तुमि पदि पद्म कवल जो कहुई। ऐस त्याग कहु कंस रहिई ॥
जबि राधा इहि बाति चलाई। मदन मोहनि के मनि महि भाई ॥
भाजा भमरा की प्रभ दीन। तिन्हो बजन करि महि कीन ॥
धमरि भनक बजंत्र बजावहि। प्रभु सग ग्वालि पेखु ग्वावहि ॥
ग्वालि नो प्रभ सीस्हा कीने। तिन को प्रभ न बहु सुख दीने ॥
कोई पान यो कृष्ण मुख दवे। थी कृष्णपद मुख मर्मार मबे ॥
रास लीन्हा कीनी जदुराई। सकल जगत को आप सहाई ॥
पाड़स सहस ग्वालि तिहि ठौर।
प्रतिमनि रूपु कीओ जदु और।
इति उति ठाढि ग्वालि का रूप।
तिहि महि प्रभु कया अधिक अनूप।
स्याम बनि श्री कृष्ण मुरारी।
दूर छोरि मेन बनि है नारी।
ऐसी माया ताहि बनाई।
कहा कहा कछु कहो न जाई।

चैस कमलनि महि मणी जडावहि।
अधिक सास तिहि पचति करावहि।
अस रयनी होति अंधारे चदि पखिही मदम होति उजारे॥
अति सुदर हरि बन्यो रूप। अति भुज सुदर परा अनूप॥
तिहि देषमि को सुर सभि आए। स्वमि त्याग विमावमि धाए॥
अद्भुति रूपु बन्यो यदुराई। साँईदास निर्य सुप पाई॥७७

ग्वानि रूप सुन्यो चितु लाई। एक एक सम देखो बताई॥
काहू केस बदम छिर परे। काहू सिर ते अंबरि करे॥
काहू मुप परि मुबिह को आयो। काहू न्गि स मीरु बहायो॥
कहू तिन की सुधि न सम्हारी। कहू निपधि छोर बनिवारी॥
कोई धनि गिरे बौरानी। तन मनि की सभ सुधि बिसरानी
मम्मि भई मनि प्रेमु बसाया। मिम्यों हरि दुख मूल गवाया॥
कमल नैन चौरि सकल निहारहि।
अपुनी करुणा सभ परि धारहि।
तिहू की सुधि बुधि सकिल बौरानी।
कौसापति फिरि सभ सुधि आनी।
जो कोइ धनि गिर उठि लाए।
मदन मोहनि इहि लीला कराए।
ग्वानि सकल रही उभीई।
चकित भई कह्यो जदुराई।
त्रिया सुणा अम हमि को आई।
अमु चहति जमुना तटि आई।
श्री कृष्ण धनि यमुना तटि आरे।
अम दीने तिहि त्रिया निवारे।
कीजो मज्जन यमुना अम माही।
ग्वानि तब अमु बाहरि आई।
नंद नंदनि तब कहा सुनाई।
सुण हो ग्वानि हितु चितु लाई।

सकली तुमि अपुने ग्रहि जावो।
उहा जाइ हरि भजनु कमावो।
ग्वारिनि सुण इहि मनि मुस्काई।
आप मांझि तब बाति चलाई।
भिन्नु भक्ति हरि के दयि सेवो।
सोई बिहुनि भक्त ममि सेवो।
मनु त्याग भवन रूप बिसराए।
निर्प सेहु हरि जादम राए।
निर्प रूप हरि भाना लीने। हरि सरूप मटि प्रवरि काने॥
चली-चली भाई ब्रिज माही। ध्यानु सदा हरि चर्ना माही॥
कुस्म मासि प्रभ सिहो उचारी। इहि बिधि कीनी कुज बिहारी॥
प्रभ आप रहे बिद्रा बनि माही। धनि सहिनि मानद कराही॥
जो इहि रास लील्हा चित धारे। साईदास प्रभु करुणा धारे॥७८

इति श्री भागवत महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे तैतीसमोध्याय: ॥३३

एक दिन श्री कृष्ण नदि सुत हां इनि।
गोप ग्वारि संग भले नराइन।
दुर्गा के अस्त मिमाहि भाए।
पूजा करि तहा तिसकु चराए।
कंचनु अधिकि बिपा को दीना। धनिदानु अधिकि तहा कीना॥
रजनी समे आश्रमु तहा पामो। देवी भवन भाग ठहिरामो॥
नदि महिर सभ कर्न ताई। उठ्यो मध्यि रैन के माही॥
मद महिरु सभ कर्ने भया। एक बिपुधरि ने तांको गह्या॥
नंदि महिर मुप कृष्ण उचार। औरु राम की मुपो पुकारे॥
हमि को बिपुधरि गह्यो भाई। बेग भावो सुत बहु सुपदाई॥
नदि महिर बचि एहि सुनाया। सकुनी सेइ सकले गोप भाया॥
अधिक मार्यो तिन्हा बिपुधरि ताई।
नंदि मिहिर को त्यागै नाही।

श्री गोपाल देख मुसकावै।
गोप सकल विस्मय्रु करावै।
मन मुस्कावति प्रम श्री प्रायो। गोप सकल सौं तब हो सुनायो॥
इसे त्याग देवो ना मारो। मोहि कहृथा घटि माहि वीचारो॥
गोप सकल ताको तजि दीप्रा।
श्री कृष्ण निकिटि आवएि चितु कीप्रा।
भकुटी से करि तिहि सिरि मारी।
वर्ग त्याग्यो नवि तत कारी।
विपुघरि ने मानस वपु लीग्रा।
विपु धरि तवि इहि कार्ण् कीप्रा।
महा सुवरि प्रगट्यो उजीग्रारा।
अभि विपु धरि मानस वपु धारा।
तिहि समसर कोऊ नाहि दिखावै।
दूजा जग परि द्रिष्ट न प्रावै।
कमलनैन के प्रागे प्राया।
सांईदास डंडौत कराया॥७६

श्री नद नंदन कौर कन्हाई। रूप प्रधिक छवि प्रगु बनि पाई॥
तांसो प्रम मे पूछ्य कीना। विषधरि देहि कहा ते लीना॥
तिन मे प्रम सों उत्तर दीना। हाथ जोर मुख विनती कीनी॥
मैं मति होनु सुदर्स नाम। मुनि सम विधि पूर्न सम काम॥
सभि सुरो महि मोहि सर ना कोई।
जो मम रूप के समसर होई।
प्रका सुग्र बृहस्पति केरा।
सुण हो प्रम जी बिनती मेरा।
दीका माग इकि प्राप ते काना।
एक दिन निर्य म तिस हुवे प्राना।
कहा रूप प्रम इवि को दीना।
दीका माग नाम किंउ कीना।

उनि मोहि कह्यो प्रभु हमहि पिश्चान ।
दीनौ श्रापु विप्रधरि वपु पावै ।
ओ उनि श्रापु दियो मोहि साईं ।
अधिक भली कीतो त्रिभवनि सांई ।
इहि प्रयोग तव दसनु पायो । चरनि कमल मस्तक परि आयो ॥
बहुरो सुगरि ने ना इहि पायो । जा हमिरे मस्तक परि आयो ॥
सेवा करि प्रभ भवन महि आए । अति आनद नदि जी पाए ॥
एक दिन कमलापति केसर । पूर्ण माधो सकल विशेश्वर ॥
राम सहित बिंद्रावनि धायो । तहा जाइ प्रभ बेन बजायो ॥
असुर कुरदी गगनि से आयो । निरपि ग्वानि बित्तु लुभायो ॥
अपुने मन महि कीतो बीचारा । इनि रक्षकि दोऊ राम मुरारा ॥
तिनको वसु हमि कहा वसाव । हमि स्मसरि वलु कहा अनाव ॥
असुरि ग्वानि लेकरि भागा । त्याग मह्यो आकाशि लागा ॥
ग्वानि रुदनु कीतो अधिकाइ । राम कृष्ण सौ कह्यो सुनाई ॥
हमि को एहु असुर ले जाई । हमिरो वसु कछु नाहि वसाइ ॥
श्री कृष्ण शब्द ग्वा न सुण पायो । वलिदेव बीर सहित उठि धायो ॥
बिंद्रावनि से ब्रिक्ष उपारे । एकु वलिदेव एकु प्रान अभारे ॥
पाछे असुर के दोइ धाए । ग्वानि सो जाइ बचन सुनाए ॥
ठौर राखी चितु नाहि डुलावो । हमि आए तुमि ना डतिरावो ॥
श्री कृष्ण ग्वानि लइ छुडाई । वलिदेव को कह्यो सुणु मेरे भाई ॥
इनि ग्वानि की होउ सहाई । मैं प्रतामण को मारो जाई ॥
प्रतामण के सिरि मण रहे । धा कृष्णचदि जाइ वोही गहे ॥
श्री गोपाल वहु असुर हतायो । ताहि मारि मणको गहि ल्यायो ॥
मण आनी वलिदेव को दीनी । राम ऊपरि किर्पा प्रभ कीनी ॥
कह्यो रपो मणि वलिदेव भाई । तुमि सीस ऊपरि अधिक सुहाई ॥
धेनि सकल ले करि प्रभ आए । बिंद्रावनि माहु ठहिराए ॥
तप्ति अधिक सी मेरे भाई । ब्रिक्ष छाया बैठे जदुराई ॥
साधो हरि हरि मामु ध्यावो । साईंदास गति को तवि पावो ॥८०

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौतीसमोध्याय ॥३४॥

एक दिनसि मापा मर्नीमर। श्री जदुनाथ सभे करुनाकर॥
ब्रह्मा महृति सुरिहृ स भाए। स मुरिहृ को बिंद्रावनि भाए॥
सकल जोपता ब्रिज इहि भ्रापहि। भ्रमि भए दिन एही मापहि॥
कवि रवि उत्तर सम को भावै। कमम मैन थनु तजि ग्रहि भावै॥
श्री कृष्णचदि को रमन करही। चरमकमाग स मस्तक धरही॥
उनि का मकसी कहिति मुनाई। भ्रातर ब्रह्मा भए भ्रमिकाई॥
श्री कृष्णचंदु भावै ब्रिज माही। हमि मागर निहि दमनु पाही॥
एसे कहि मकमी बौराई। गोप जोपता सभ समि बिसराई॥
मथुरो नहि मनु निहि ठहिरायो। गाविद मजनु कमि चितु लायो॥
होइ इकमि मिमरनु कीना। ध्यानु कृष्ण को भ्रतरि लीना॥
श्री नद नदन बिर्था जानी। ता पहि बयु कोई कहा बखानी॥
मन बजावति ग्रहि का भ्राए। धनि सकल ले करि सग भ्राए॥
तात काल भ्राए ब्रिज माही। गाप जोपता मम मंमस गाही॥
ग्वानि मम मिल दर्सन कीमा। तत्त सरूप भ्रंतरि महि लीना॥
तिहि को प्रम न सना टारा। माईदास प्रभि परि बलिहारा॥८१॥

इति श्री भागवते महापुराण दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे पतीसमोध्याय॥३५॥

कस प्रपासुर असुर बुलाया। साकौ एही बचनु सुनाया॥
तुमि ब्रिज माही चलि करि जावो। नदि महिर सुति हति करि आवो
प्रपासुर चलि ब्रिज महि भ्राया।
भ्रमि रूपु तिन भ्राप बनाया।

सेमनागु तांका ब्रिष्ट भावै।
रूपु बेपि ताहि मौ धावै।

मुप कोग सभ जम्तु डरावै।
जो कोऊ दाम्न सुणे भजि जावै।

गौ बनि ब्रिज सुग करि बनि भाई।
मन महि त्रासु भयो भ्रम्धिकाई।

गोप ग्वारि सकस चलि भ्राए।
प्रभि के पाहू दिस भ्राइ ठहिराए।

एही बचनु सभ सुनि ते मापहि ।
अनि तुमि बिनु कोऊ नाही रापहि ।
एहि दुष्टि ईहा जो आया ।
इनि पलि ने क्या मनि ठहिरामा ।
इसि ते छूटहि कि हमि छूटहि नाही ।
एही त्रासु भयो मनि माही ।
श्री कृष्णपद कटि सो पट्ट लीना ।
बाध्यो नट प्रति बाबा कीना ।
अघासुर के सन्मुख धाया । दोई सिंग त पकरि कराया ॥
डार धर्नि परि प्रभ हन लीना । श्री नारायण तबि ईहि कीना ॥
कहा सुन्यो अघासुर मार्‍यो । नंदि महिर के सुत प्रहार्‍यो ॥
केशे असुर महाबलि कारी । लीए बीलाइ दुष्टि हुकारी ॥
केशे को ब्रिज माहु पठाओ । केशो अश्व रूप करि आया ॥
ताको सीस गगनि आइ लागो । जो निर्पे सोई उठि भागा ॥
साथो हरि कर्नी चितु लावो । साँईदास चितु नाहि डुलावो ॥८२

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे षटत्रिंशमोध्याय ॥३६॥

नारदु एक दिन कंस पहि आयो ।
दुष्टि कस सों आप सुणायो ।
श्री कृष्ण जो नंदि महिर ग्रहि माही ।
इहि सुतु नदि महिर को नाही ।
देवकी को सुतु है मेरे भाई ।
वसुदेव तुम सो पड्यो दुराई ।
कन्या जो वसुदेव ने आनी ।
तै बहि कन्या नाहि पछानि ।
छाडि रही मधु गगनि के साई ।
वहि कन्या देवकी की नाही ।
वहि कन्या जसुमति मे जाई ।
एहि विधि सुण हो मेरे भाई ।

एकु चौर बासक्रु रोहणी पाही।
बलिदेव नामु बसुदेव सुत बाही।
अबि ते कसि सुनी बिधि कौंगा।
अरमे लागे ताके प्राना।
बसुदेव को महि रैनी बुलायो।
किर्मानी सेकरि धमिकायो।
चाहिति है बसुदेव को मारे। तब मारि ऋषि एहि पुकारे॥
बसुदेव को काहे तुमि मारो। याही बाल को प्रहारो।
कस दुष्टि बसुदेव को त्यागा।
मनि माहे फिरि चितवनि लागा।
गमि स्वार्थी को लीउ बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
जिहि मग बहि दोई चलि आवहि।
तिहि मग तू गजि घरा करावहि।
ऐसा होइ जो भाग न जाही।
इहि बिधि स्मझि लेहि मनि माही।
मै इहि तुमि कौं कह्यो सुनाई।
मतु तुमिरे चित ते हिरि चाई।
तुम्हि कौ अधिक देवोंगा माया।
जौ तै दोई बीर हतावा।
बहुरि मुष्ट को लीतो बुलाई।
ताको भी सम बिधि समझाई।
मल्ल ठौर तुमि जाइ बनावौ।
तहा मर्दनि अधिक बजावौ।
कृष्ण रामु दोऊ चलि आवहि।
तिसी ठौरि परि आइ ठहिरावहि।
ज्यु जानो तैसे तिन्हा मारो।
मै आज्ञा करी ताहि प्रहारो।
दुष्टि कसि इन्हि आज्ञा दीनी।
इन्हि मल्ल ठौर बनाइ करि लीनी।

केतो आइ असम को वपु कीमा।
महा भधिक वपु पलि ने कीमा।
प्रगटि भयो आइ करि व्रिज माही।
जो निपें मनि त्रासु उपिजाही।
बिनती करि करि कृष्ण सुनावहि।
हमि डपित मनि महि विस्माहि।
जो निपें पलि को भौ आव। सांईदास विधि आप सुनाव ॥८३॥

जो कती मुप ते कछु बोले। व्रिजवासी मनि माह डोल॥
श्री कृष्णचद कछु डाढा कीना। कती के सम्मुप पगु दीना॥
दुष्ट को कह्यो भागे आवो। जो कछु वलु लागे सो लावो॥
तवि जदुनाथ ने कह्यो पुकारे। कंसे भागे को पगु धारे॥
दो पग कमल नैन के डारे। पिंजर प्रभ जी के महि मारे॥
श्री कृष्णचद ने लीए बचाए। एक ठोरि होइ गए जदुराए॥
बहुरो कृष्ण कह्यो फिरि भावो। हे पलि मनि होइ सोई करावो॥
श्री कृष्ण वस्त्र ले करि पलिटाए। सन्मुख वाही दुष्ट के भाए॥
करि सो कंठु असुर को लीनो। वपटि करो पलि को दुख दीना॥
तवि ही मारित कीनो जारा। वैठि गयो कठु तत्यो जीउ ठौरा॥
बसि वृष्टि इहि बिधि सुण पाइ। केतो को हत्यो जदुराई॥
नाई चल्यो श्री कृष्ण पहि आए।
उस्तति करि-करि आप सुणाया।
अहुरि मुष्टिकि को तुमि ही मारो।
गजि के दस्त प्रभ तुमि ही उपारो।
गजि स्वार्थी को तुम हति लेवो। करछहि के तुमि प्रान कढेवो॥
पाछे कंसि को आइ बिडारो। सकल असुर का तुमि सहारो॥
उग्रिसेन को राज बहाली। असुरों का तुमि बीजु गवाली॥
तुमिरी उस्तति कहा बखानो। मैं मतिहीन उस्तति क्या जानो॥
एक निस कंसि अक्रूर बुलाया। सुपलिक सुत को आप सुणाया॥
सुपलकि सुत तुमि हमि सुपदाई।
तो मैं तुमि कहयो मेरे भाई।

तुम अपुने पग मोकसि धारो।
मोह कहा घटि माहि बीचारो।
मदि महिरि ब्रिपमान सुनावो।
हमिरो कछु तुमि पाहि से भावो।
चौर वोढ बामकि के ताईं।
वेग स्यावो मेरे पाहीं।
वसुदेव हमि से पडे दुराई।
हमि ते राये ताहि छपाई।
तुमि बिनु चौरु न कोई करे कामा॥
सांईदास भजु पूर्ण रामा॥८३

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तत्रिंसमोध्याय॥३७

एक दिन श्री कृष्ण राम क्या कीया।
बिन्द्राबनि माहि पग दीया।
असुर मयासुर ने क्या धारा॥
पन्चासि ग्वारि ले कहीं सिधारा॥
पडि इकि कन्दिरा माहि छपाए। तिहि दरि पषाण अधिक लगाए॥
बहुरो फिरि आयो हरि पाही। चाहसि चोर दुराइ पराही॥
मदन माहुलि खलि को निर्पायो। ताक पाछे उठि करि धायो॥
बहु लमु ताहू चोरि लिधाया। बहा ग्वारि कन्दिरा महि छपाया॥
गोप ताउ जबि हरि को पेपहि। कौसापनि पूर्ण प्रभ पेपहि॥
तब हो सभ्र पुकार सुनाया। हमि बलि जानहि जादमराया॥
हमि सभि को एहि लमु स आयो। तुमि से ईहा आण छपायो॥
श्री कृष्ण मयासुर बलि का मारा। मुष्टि मारि तिहि सोसु बिडारा॥
मुनि ते गति बसो अधिकार। हन्यो असुर को कीर कन्हाई॥
तब अमरो बहु कुसम वर्षाए। उस्तति हरि की बहु उचिराए॥
असा कौया प्रभ लल को मारा। हमि अमरो परि किर्पा धारा॥
जहा जहा कष्टनि बने जनि ताई। तुमि प्रभ प्रगटि होति तहांही॥
श्री कृष्ण ग्वारि तब मकल निकारे। ईहा प्रभ इहि लीला धारे॥

जहां जहां ऋषि अमनु कराही। हरि की भक्ति सेती चितु लाही ॥
मयासुर गिर ते गिरु से धावै। इहि प्रजोग सभ सुर मिल आयो ॥
तांकौ हत प्रभ गोकल आया। गोप ओपता इहि वचन सुनायो ॥
धूम व धु सीया अविलारा। महा असुर वलिवानु सिहारा ॥
धाग अनादी रहु यो समाई। इसि की अस्तति कीनु कराई ॥
सुखदाता दु ख टानिहारा। आद नरजनु प्रान अधारा ॥
गोप ओपता सभ इहि उचिरायो। सांईदास अधिक सुप पायो ॥८४॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टत्रिंस मोध्याय ॥३८॥

सुपलसि सुत गोकल पग धारे। मनि अपुने महि कति वीचारे ॥
मोको कस कह्यो इहि कामा। मोहि परि करुणा कीन प्रभ रामा ॥
इहि प्रजोग दसनु हरि पावौ। रैनि चलि हरि मस्तक लावौ ॥
जिहि कार्णु पदमज दुपु पायो। चौर देवो हू जतन कमाया ॥
ताको इहि प्राप्ति ना होई। जो हमि मस्तकि लावो ओई ॥
मग महि जाति एही मन भारी। सुपलसि सुत अटि एहि वीचारी ॥
वहुरो हुवा डुलावनि लागा। सुपलकि मन सचरु जागा ॥
हमि को दर्सनु देवे न देवी। जाको सुर नर ऋषि मुन सेवी ॥
जो हृदे करे कस को कोई। तौ दर्सनु हमि देवे न सोई ॥
ऐसी विधि हरि मनि नही भावे। अतरि की विर्था प्रभु जाने ॥
हमि उसि के चहु सदा सहाई। सकल विर्था को बाही पाई ॥
करुणा कर्मी हमि गिरधारी। अतरि जामी आप मुरारी ॥
जिहि समे डरौत प्रमताई। सीसु धावि तिहि चर्नी लाई ॥
प्रभु अपुने करि सहित उठाए। मोहि सीस को आवम राए ॥
जिहि सरीर परि प्रभ को कर फिरसी। जन्म मर्न ते मुक्ता करिसी ॥
रवि सुत त्रासु ताहि नही व्यापै। जो हरि चर्ना सो चितु रापै ॥
इहि बीचार कर्क उठि धाया। भक्त हेतु अकूरि चडाया ॥
कसिक महि जबि नैन पसारे। तिहि महि हरि पग पूर्न निहारे ॥
रथ को त्याग धनि परि आया। माटी धूरि ले मस्तक लाया ॥
तिहि रजि सेती अंगु पपारे। मुप अपुने इहि बाति उचारे ॥

सुरपति जोहिसि इहि रजठाईं। हमिर मुकटि परि रहे सदाईं॥
तसि को प्राप्ति होनि न पाईं। जो हमि को प्राप्ति भई माईं॥
अति अनद सुफलकि सुत पायो। सांईदास अम नाहि समायो॥८५

सुफलकि सुत रथि परि चरिया। गोकल क मग बनि चितु धरिया॥
आमे राम कृष्ण दोऊ आही। माजन धीर भरयो करि माही॥
अक्रूर निप हरि रथ को त्यागा। डडौत करी भाइ चर्नी लागा॥
दीनानाथ भक्तिनि सुपदाईं। आन प्रबीनि बिर्धा सभु पाईं॥
प्रम अक्रूर लीयो उरि माही। आसु मिल सभ दुःख मिटि जाईं॥
पाछु बलिदेव ने अंग लीना। आदर भाउ अधिक तिहि कीना॥
रामु ताहि ग्रहि महि ले आया। पाकु पकाइ अधिक जेवाया॥
प्रवकि ऊपरि स थानु कराया। बीजन ले करि पवनु झुलायो॥
एकु पगु बलिदेव ने करि लीना। एकु पगु श्री कृष्णचद ने करि लीना
दाबो पग को मलने लागे। ग्रहि का काम काजु सभ त्यागे॥
गोप सहित नदि महिरु तब आयो। श्री कृष्णचद तब बचु उचिरायो
सुफुलकि सुत तुमि भेहु बीचारे। ताको पूछति श्री गिरधारे॥
सकल कुटंबु तोह है कल्याना। मधुपुरी नृप सो रहित सुजाना॥
सुफलकि धन प्रभ को प्रतु दीना। हाथ जोरि नृप बचनु तिह कीना
जबि लगि कस बीजति पुरि माही। काहि सुख होइ ताहि मभाईं॥
सकल सृष्टि तिहि पर्से कीने। उलटि पलटि माटी करि दीनी॥
षष्ट बालक देवकी के मारे। करि बिरोध मनि महि पधारे॥
देवकी दुःखु करति बहितेरा। दुष्ट हृदे दया आवे न नेरा॥
पमि करि ते लेवे आइ करि मारे। पछि करि प्रभ सहिति पधारे॥
अक्रूर इहि बिधि प्रभ समझाईं। सांईदास सुण हो चितु लाईं॥८६

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीखति संबादे ऊणिताळीसमोध्याय ॥३९॥

श्री कृष्ण राम दाऊ धीर स्याए। ग्वाल और अक्रूर पीवाए॥
मदन मोहन तब बचन उचिराए। सुफलकि सुत कहु किउ आए॥
अक्रूर कहयो प्रभ कछ जाना। मैं तुमि पाहे कहा बखाना॥

जो मो परि करुणा तुमि धारी। जो जानो सो कहो पुकारी॥
कसि कह्यो तुमि गोकलि जावो। नदि महिर सभ गोप ल्यावो॥
दानो सुत बसुदेव के ग्रानो। कहा कहा सभ तुमि जानो॥
ओरु भ्रिगु दमिरे लै आवो। मैं तुमि कह्यो गोकसि जावो॥
कौसापति तुमि मान ताई। मथिपुरी महि बहु कीए उपाई॥
मल्ल अपाड़ा ताहि बनायो। महा प्रबिक इकु षिड रपायो॥
दस सहस्र जोधा बलिवाना। ठांढ कीने हैं भगवाना॥
ओरु चडूर मुष्ट पड करे। तोहि मारण सेती चितु धरे॥
गजमदमाता ठाढा कीना। गज सहस्र को तिहि बलु लीना॥
इहि प्रजोग मो सो बसाया। तोहि धर्ना सेती चितु लाया॥
जो मैं ना भावत बदुराई। कसु दुष्टु मोहि कति हुताई॥
बचि अक्रूरि इहि बात बपानी। हुद घरी प्रभ सारग पानी॥
भ्रिगु हमि जमु लीला जग माही।
जो हमि कारण पित माता दुख पाही।
श्री गोपाल इहि बिधि मनि धरी।
साईदास सर्नी बनि बारी॥८७

श्री मुरार माधो सुषदाई।
बसिदेव को तिन सीतो बुलाई।
नद महिर गोप सहिति बुलायो।
तिह को प्रभ ने भ्राप सुनायो।
सूपसकि सुत को कहि पठायो।
हमे इ बुसेने का इहि भायो।
गोकसि ग्रहि ग्रहि धावि सुनायो।
मूपत कसि को करुजु से आवो।
जो जो किसी को देवनि भावे। से करि आइ मथुरा पहुचावे॥
रजनी घटि रवि कीतो प्रकासा। जाग परे सभ को परि आसा॥
नदि महिर विद्यमान ग्वार। गोप सहित चले वीनभार॥
श्री मथुरा केरे मग धाए। सभ ओपदा ब्रिज रुदनु कराए॥
रुदनु करति हरि के संग धाई। केतकि मगु आगे बहु धाई॥

गोपीनाथ बचनु तबि कीधा। सकल ग्वालनि मै सुरण लीधा॥
आहो तुमि अपुने ग्रहि माही। सुष सो बसो फुनि दुषु कछु नाही॥
मैं भी एक दिन बहुरो आवो। अबि तो काज करने जावो॥
तुमि जाइ ग्रहि महि भजनु कमावो। मोहि चर्ना सेती चित लावो॥
ग्वालनि फिरि आई ग्रहि माही। चर्न कमल सो मनु उर्झाही॥
एक पहिर रजनी ते जागहि। तब ही दधि को मथन लागहि॥
सिमरनु कमल नैन को करहि। हरि चर्ना सेती चितु धरहि॥
ग्वालनि अम बटि प्रेमु असाया। साँईदास अधिक सुष पाया॥८८

श्री कृष्ण सकल सो तबि उठि आया।
तटि रवि दुहिता का अब आया।
अपसनि सुत सबि बचन उचारे।
मैं बसि जावो प्रान अधारे।
तमि सकलि बिधि जानणिहारे। कहा कहो मैं तुमहि पुकारे॥
तुमि जलु अचो मै मज्जनु करहो। जमुना अ मु माहे पगु धरहो॥
श्री कृष्णचंद रथु ठाडा कीधा। सुफलकि सुती मज्जनु चितु दीधा॥
जमुना के अ मि माहे बरया। डुबिकी स हरि दर्सनु करया॥
राम महितो अम भी निर्पाए। मन अ तरि बहु सोच कराए॥
मैं रथ ऊपरि छाडि के आया।
रथ को तजि जल महि कहा आया।
जबि फिरि सिरु ऊपरि करि लीना।
श्री कृष्ण रामु रथ परि देष लीना।
रथ परि बैठे है दोऊ भाई। अचजु निर्ष रहयो बिस्माई॥
बहुरो अम महि डुबिकी मारी। फिरि निर्षे श्री कृष्ण बिहारी॥
बासिदव को अम माहि निहारा। अति सुदरि बहु रूप उजीआरा॥
पद्मज मघवा और सुकदेव। सकल ऋषीस्वर सुर मुन देव॥
श्री गोपाल आगे ठहिराए। उस्तति हरि की कहिति सुनाए॥
सपसकि सुन तब करी डडौति।
कौसापति सम जस की चौटि।

तजि भ मिको रथ पाहे आया।
उस्तति हरि की भूप उचिराया।
मन्न मोहनि गिवरि हरि धारी।
मोहि मुक्त कीओ तुमि वनिवारी।
बकुठि महि मोहि दसु दिपायो।
जग की फांसि से उबिरायो।
तोहि उस्तति म कहा वपानो।
मै तुमि उस्तति को कहा जानो।
जो हिति करि इहि जसु सुण सब।
सांईदास प्रभु सम सुष देवै॥८६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे चालीसमोध्याय॥४०॥

सुफलकि सुत मन माहि बीचारा। उस्तति कर्ने को चितु धारा॥
भव मुक सिन को बलु भारी। तोहि वसि काम भए वनिवारी॥
बहुरो तुम सो युद्ध मचायो। पाच सहस्र बष युद्ध करायो॥
तू वही पारि ब्रह्म मेरे स्वामी। घटि घटि विर्या के अंतरि जामी॥
कौन रसिना सो उस्तति करो। तोहि उस्तति कर्ने चितु धरो॥
तुही मछ रूप होइ आयो। सखासुर जवि वेद चुरायो॥
तांको तैमे आइ विडारा। तासो वेद आन सत धारा॥
वेद आएण पदमज को दीने। इहि कार्ण तने भ्रम कीने॥
कछ रूप तू हे प्रभु हूआ। तुमि विनु अवर न कोई दूआ॥
कछि रूप इहि विधि तुमि कीना।
दधि मथने को तुम चितु दीना।
दधि मथके भ्रम रत्न निकारे।
धम तहा उदिसे अधिकारे।
सकल पहारि सिरि ऊमरि लीना।
बासिक नागु तवि नेत्रा कीना।
मेरु पबतु मधानी कीने।
इहि विधि तैं कौसापति कीने।

बराह रूप तै ही प्रभु धारा।
हरिनाकसु चवि त इहि मारा।
बसु से वडपो दमि माही।
पदमज चूक करी तुमि पाही।
हरिनाकसु वसुधा से धायो।
दमि माहे जाइ करि ठहिरायो।
बिनु वसुधा कैसे स्रिष्ट बनावौं।
प्रम की स्रिष्ट करिनि ना पावौं।
बैराह रूप करके तुमि धाए।
सतसिराए महि दमि माहे आए।
हरिनाकस सौं वसुधा लीए।
दंती धरि वाहिर पग दीए।
धाए मही भ भि परि ठहिराई। हरिनाकशु तबि आमो धाई॥
तांसो युद्ध करि ताहि हतायो। हे मामो तै एहि करायो॥
तुमि को नमस्कार है मेरी। साईदास मैं सर्नी तेरी॥६०

हरिनाकसु असर महा बलिकारी।
तिहि ग्रहि सुत प्रहिलादु बीचारी।
प्रहिलादु जपे प्रम तेरो नामा।
श्री कृष्ण कृष्ण कहे इहि उसि कामर।
सदा ध्यानु ताहि धर्नि समावै।
सुमिरो जमु निसबासरि गावै।
हरिनाकसु तांको डंडु देवै।
कहे कृष्ण काहे नुप सेवै।
मेरा नामु तुमि लेहु बीचारी। काहे उचिरहि कृष्ण मुरारी॥

भक्ति हेत—

प्रहिलाद भक्ति हरिनामु न त्यागा।
हरिनाकसि क महू न लागा।
हरिनाकसि मनि क्या बीचारा।
इहि माने नही कहा हमारा।

कृष्ण कृष्ण को नाही त्यागे। हमिरे कहे नाही इहि लागे॥
इसि को मारो कहा न माने।
मोहि कहा कछु करि ना जाने।
ऐसा पूतु मूआ ही चंगा।
जो मन अंतरि डारे भंगा।
एकि दिनि भक्ति को बहु दुख दीआ।
मनि अंतरि तिन नें दुख कीआ।
ताको थंभि के साथ बधाया।
प्रहिलादि भक्ति को महिमु दिखाया।
तबि प्रहिलादि सो बचनु उचारा।
कहा कृष्ण जिन नामु चितारा।
तब प्रहिलाद कह्यो सभ माही।
सभि थल रह्यो दूरि प्रभु नाही।
सकिल सृष्टि माहे प्रभु मेरा।
अबि कबि माहि अस्ति है नेरा।
हरिनाकसि कह्यो इसि थम्ह माहे।
है तेरा प्रभु थम्ह मझाहे।
तब प्रहिलादि कह्यो रमि रह्या।
इसि ही थम्ह माहे है कह्या।
हरिनाकसि कह्यो लेहु बुलाई।
कहा तम्हारा प्रभु सुखदाई।
तब प्रहिलाद धन कीओ ध्याना।
श्री कौलापति तबि ही आना।
थम से नृसिंह रूप दिखाया। हरिनाकसि देखा बिस्माया॥
हरिनाकसि निर्भै हुरि भागा। सांईदास जीवन तिन त्यागा॥६१

पारब्रह्म गिरवरि हरि धारी। सत पज राप बनिवारी॥
हरिनाकसि को थम करि लीना। नखिसो उद्रि बिडारे दीना॥
बहुरो प्रभ तैसे इहि कीआ। बावनि रूपु कर्के तबि लीआ॥
मघवा चलि तुमरे पहि आया। हाथ जोरि तिन आप सुनाया॥

राजा बगु मन्न अधिक करावे। हमिरा पुर प्रभ बही छिनावै॥
बावनि रूप तुमि तवि ही धारा। बहुरि बेद मुषि पाठ बीचारा॥
बलि पाहे जाइ जाचन करी। मढाई करो धर्नी प्रभ हरी॥
सकल धर्नि दोइ करो होई। तवि मैं बकित बलु होयो सोई॥
प्राधि करो तिहि वपु मिमि लीना। तांको प्यास पढि बाया दीना॥
उषि को पार ग्रामी कोमा। ताहि कल्याण करी सुप दीमा॥
नरंकार कर्तारु गुसांई। अशूनीघमव है सभ माही॥
पर्सुराम तू ही होइ आया। सहस्त्रार्ज्जन तुम्हहि हताया॥
रघुबंसी तुही बपु धारा। रावण को प्रभ तुम्हहि बिडारा॥
तुम्को नमस्कार म करहो। बार बार प्रभ बानि फिरहो॥
तुमरी उस्तति कहा बपानो। मैं उस्तति तोहि कहा पछानो॥
बार बार तुमि को नमस्कारा।
तू पूरण प्रभ प्राण प्रान अधारा।
अक्रूरि उस्तति कीनी चतुराई।
साईदास सुषे सो मुस्ताई॥६२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकितालीसमोध्याय॥४१॥

श्री कृष्णचंद सुफलकि सुत ताईं। कह्यो तवि ही त्रिभवनि के साईं॥
मातु रहे बनि कम के माही। तुमि आगे जावो नृप पाही॥
दुष्ट कस को जा' सुनावो। बेग विस्म तुमि मूल न लावो॥
नंद महिर गोप सहित स्यायो। दोऊ बालक बसुदेव के आया॥
चौर तुमरो कर तिहि पाही। सभु आम्यो मथुरा पुर माहीं॥
सुफलकि सुत प्रभ को प्रतु दीना। कौसापत सो विन बधु कीना॥
चरन कमल तुमि स्याम कराही। श्री गोपाल बहु कहा हमि आही॥
मातु हमिहि क्रितार्थ करहो।
मोहि ग्रहि मतरि पगि धरिहो।
हमि ग्रहि बसि भोजनु प्रभ पावो।
हमि को प्रभ सुप बहु उपिजावो।

प्रान घटा मोहि नामु बिचारहि।
पढिति जोतकी सकल उचारहि।
एकि दिन प्रभु अक्रूरि ग्रहि माई।
मोहनु पायो त्रिभवनि सांई।
अवि अक्रूरि इहि बचन उचारे।
कौलापति प्रभ चामरण हारे।
अक्रूरि को कर लीनो करि माही।
श्री नंद नन्दनि बिधि इहि माही।
सकल लोक ते न्यारा कीना। तब अक्रूर सो इहि प्रभु भीना॥
अवि तुमि जाइ निर्मोहोइ सोवा। सकसा भ्रमु हृद ते धोवो॥
कंसि का हति तुमिरे ग्रहि आवो। सकल गोप संग भोजनु पावो॥
सुण अक्रूरि अधिक हिर्षायो। माइन्नाम प्रभ बचनु करायो॥६३

मुपलकि सुत मह्र आनन्द पायो। हरि बडु सुण पुरि मा नकि धाया॥
जाइ करि कानि मा बचनु उचारा। जो कह्या हरि सो कह्या पुकारा॥
गोऊ सुन वसुदेव के मान। नंदि महिर गाप अवर बखाने॥
जो कछ तुमिर लिहि परि आई। सगल भान्यो है तुम वसिकाई॥
मन्न मोहन नदि कह्या सुनाई। पिन माहि माझा देहु बलाई॥
मथिपुरी अव न देव करि आवो। पुरि के भवन का दरस आवो॥
नंदि महिर तवि बचनु उचारा। तू है सगो प्रान अपारा॥
हमिरे प्रान यमहि तुमि माही। कहा करा कोऊ तुमि ते जाही॥
तवि जदुनाथ कह्यो नंदि ताई। है पिन हमि मा मौनु म जाही॥
मधुपुरी महि बैसे आवेहि। मधुपुरी त्याग बहुरि उठि जावहि
एहि बचनु कहि माझा लीए। कौलापति पग पुरि को दीए॥
बसिदव ग्वारि गहिनि संग लीमा।
नंदि महिर तजि मग पगु दीमा।
पैयनि चलनि पुर महि आए।
अति सुन्दर कछु कह्या न जाए।
पुरि के लोगो न बधा कीमा।
भवन द्वार माथा करि लीमा।

चावा चदन कुसम दनरो। द्वारे मनु ग्रावे हि प्रभु मेर॥
पनि सुगधिना नहा विडाग। ठौर श्रधिक कुसम क हारा॥
श्री कृष्ण रामु प्रति ही ईहा ग्रावहि। हमि तिहि को पुनि दसनु पावहि
कुम्म बर्षा हमि तापरि करहि। तिहि बर्ना ऊपरि सिरु धरहि॥
जासि द्वार हा करि प्रभु धावहि। जोपना अधिक कुम्म बर्षावहि॥
मिर्य न्य हरि का उबिराही।
मनि प्रभुते महि मोनु कराही।
दुष्ट कंस भया मनि ठहिरायो।
इहि बालक मार्न बिनु सायो।
श्री कृष्ण राम ग्वारि सग लीए।
मथिपुरी माहे हटि पगि दीए।
भाति भाई हरि और कन्हाई।
साईदास दसन बलि जाई॥६४

नृप को छीपा बस्त्र ल मावा।
मवरि स नृप द्वार मिधाया।
बलिदेव हरि तिहि कह्यो सुनाई।
हमि को देबहु हमिरे माई।
तवि छीपा न ऐसा कहिमा।
र मतिहीन तू मांधा भया।
इहि प्रतापु तुमि कहा बढाया।
नृप मंवरि सने बिनु सामा।
तुमि तो ग्वारि सुरिहू चारनिहार।
कौनु बाति तुमि मन महि धारे।
अबि तुमि गुर के मंदरि सेवो।
तिहि ताई तुमि माली देवो।
है काई जो इसि को मारे।
इसि मतिहीन का पकरि पछारे।
ऐसे कहि नृप बुरा कहायो।
तब कस धरि मन ठहिरायो।

क्रोधु कीओ छीपा को मार्यो।
करिनप से तिह सीसु बिडारे।
और मंवरि घरि द्वार के मागं।
मापो मपुन मग को साग।
एकु पाइकु तब ही प्रगटायो।
प्रम को भाइ डंडौत करायो।
मुष ते सब ही कहयो सुनाई।
मै बसि जावा आत्मराई।
जो मोहि कह्यो मंवरि पहुचावो।
इसि सेवा सो म चितु लावा।
उपजि तिहि माज्ञा दीनी।
तिस पाइक परि करुणा कीनी।
पद्यो सोहि बकुठि पठावो।
चतुर्भुजा करि दुख मिटावो।
तुमिरो म करहो कल्याना।
एहि बाति म मन महि माना।
तब पाइक मघरि करि लीने।
श्री कृष्णचन्द के मग को दीने।
रामु ग्वारि गमन उगाए।
श्री ममसापति छवि मभिराए।
पाइकि की कीनी कल्याना।
श्री गोपाल गभीर सुजाना।
बग ताहि बकुठ पगायो।
चतुरभुज करि दुख मिटायो।
जा सेवा के आत्म राई। गाईनाम मा बैकु ठि जाई॥६५

इति श्री भागवत महा पुराण दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षित संवादे सप्तातीतमोध्याय ॥४३॥

श्री गोपाल फिरि मथुरा उधारे। गुण हा बसन्त बीर हमारे॥
यदि दासो मासी प्रहि बार्यो। कृष्ण नाम तांई मी स्यार्हि॥

म मासा उरि माहे डारहिं। मसहा दामा प्रहि पमि पारहिं॥
श्री गोपाल दामा ग्रहि माए। राम सहित ग्वारि सबाए॥
जबि दामा ने नैन निहारे। श्री कृष्ण राम निप ततकारे॥
धामे मा टडीति कराई। मुपि ते तबिही इहि उभिराई॥
क्रिपा करी हमिरे ग्रहि माए। दामा न बहु मानद पाए॥
कुसम माल ग्रहि ते से मायो।
श्री कृष्ण मास से उरि महि पायो।
मकस ग्वारि को प्रभ पहिराई।
कुसम माल श्री जावम राई।
बहुरा दामा भोजनु दीना।
इहि विधि माको सेवा कीना।
श्री कृष्ण केहा कछ मांगो दांमा।
दामा कह्यो पावो तोहि नामा।
सुमिरि कीति मन माहि रहे।
एही जावना मर मझे।
मदन मोहन कह्यो इहि दीमा।
एक करुणा तुमि परि मंतरि कीमा।
तुमि सतति महि हावे कोई। जन्म-जन्म निर्धन ना होई॥
श्री मुरार इहि बचु मनि कीमा। श्री दामा को ग्रहु तजि दीमा॥
कह्यो पुन भवन माग हाई। चलहु चलहि हमि टर नहीं कोई॥
पुष्टि क भवन माय प्रभ माए। कुपसु छिन तहुं ही ठहिराए॥
एक बनिता भाजनि हमि लीन। बाबनि चदनु फिरि करि कीने॥
मावनि ही हरि हमने मागो। मदमुत मदर प्रेम के ताकी॥
ताको कह्यो कौन तू होवै। इहि विधि हरसो रस्न परोव॥
तबि कुब्जा कह्यो म बसिहारी। मैं तोहि सगी प्रभ बनिवारी॥
श्री कृष्ण कह्यो करहो मोहि कामा।
मवरि पहिर नौतनि रामा।
जो इहि चदनु हमि को देवहि।
मबि हमि ते इसि का कछ सेवहि।
श्री गोपाल तिहि माप सुणायो। साईदास मधिक सुप पायो॥८६

कुब्जा ने तब बचन उचारा। हे भगवत तू प्रान अधारा॥
एते बिन चंदन अति ल्याई। दुष्ट कंस कारने अनुराई॥
सकल अफल सेवा तिह करी। एही सुफल जो तुमि परि जरी॥
कुब्जा करि ले हरि अंग लाया। मथुरो गवार और राम बताया॥
तब श्री कृष्ण हृदे महि मारा। इहि पुठि सुख करो सतकारा॥
पगि ऊपरि प्रम धर्नु टिकाया। ठोडी कर पिची जदु राया॥
ताहि पृष्टि सुधि कर लीनो। सुंदरताई प्रभ को दीनो॥
द्वादस बर्षि अवस्था पाई। मानो मधिवा पुरि स आई॥
जबि वहि द्वादस बर्षि की होई। श्री कृष्ण भन सो लपटी सोई॥

इहि विधि करि मुप बचनु उचारा।
मैं सर्नागति प्रान अधारा।

मेर ग्रहि परि किर्पा कीज। अपुन पग हमिरे ग्रहि दीजे॥
तबि मैं तुमिरि सेवा करो। सेवा करि पग सिरि परि धरो॥
कवलनैन तब ऐसे भापहि। कुब्जा को एसे करि भापहि॥
हे कुब्जा बितु ठौर ठहिरावो। और बात कुछ मन ना ल्यावो॥
या करि बसो अपुने ग्रहि माही। कृष्ण कृष्ण मुप ते उचिराही॥
कंसु दुष्ट इति तुमि ग्रहि आवो। तब तुमि को बहु सुख दिखावो॥
फिरि आइी हस्त नारी पाई। लोक निर्ष आए अधिकाई॥
अधिकाई मिष्टान पान प्रभ पाहि ल्यावहि।
श्री कृष्णचंद आगे ठहिरावहि।

श्री कृष्ण कह्यो तिहि लोकनि ताई।
तुमि हमि को विधि एहि बताई।

दुष्टि धन्पि का कहा रपयो। ताहि देखने चितु भुभायो॥
देपनि को सबले उमिडाए। प्रभ का धन्पि ओरि ले धाए॥
मत्त बरम्म प्रभ सन्त सहाई। असुर महारनि आदम राई॥
धन्पि पाहि जाइ ठाढे भए। धर्न म धन्पु करि माहे गहे॥
बांबे करि हरि धन्व को कीना। बलि करि खांचा भाइहि लीना॥
खिच धन्पु प्रभ ने भाइ डारा। धाकर भयो तिम ते अति भारा॥
धन्पि के दाई टूकि कराए। करि महि ले कौसापति धाए॥
धन्पि तोर्यो श्री जदुराए। सांईदास ताको जसु गाए॥६७

दस सहस्त्र जोधा रषवारा।
रहिति अन्यि परि रापनि द्वारा।
सुनति बात पाछे हरि भाए।
महाबली जोधे बसि भ्राए।
कहिति कहा आमे तुमि आवो।
एतु पसु हमि भामे ठहिरावो।
नृप को धपु तुमि मे ले तोरा।
मन महि त्रासु न कीना भोरा।
ठांडे रहो भामे कहा जावो।
जैसा कीभा तैसा भबि पावौ।
श्री कृष्ण राम तबि फिरि पलोए।
जो भाए भसुर सकल हरि षोए।
तिम को मारि नदि पहि भ्राए।
मनि माहे भ्राहे करि ठहिराए।
नदि महिद भ्रानि सभ बिस्माए।
बस्त्र किस ते इतिने पाए।
हुमि ते बमरी पाहिर सिधाए।
इहि भ्रबरि किस ते भ्रग लाए।
एही बार्ता दुष्ट पहि भाई।
धन्पु तोर्यो है यादम राई।
मनि तिहि भ्रभ्नि भयो बिस्वासा।
दुष्ट मुयो तिनिसे नही हासा।
मनि माहे इहि करति बिचारा।
निकटि भ्रायो है कालु हमारा।
मोको मारे छोडे नाही।
इहि बिस्वास भयो मनि माही।
स्वप्न भीतरि ताहू द्रिष्ट भाया।
काल सरूप भ्रम ताहि दिषाया।
सीस मूंडि गर्धप परि चरया।
ताता तैसु सीस परि डारा।

श्री कृष्णचद मे कह्यो सुणाई।
नवि महिरि पित वहु सुष पाई।
कछ बिस्वासु न मनि महि देखो।
मोहि कहा मन महि धरि लेखो।
इहि प्रयोग हमि लेति बुलाई।
वेपहि धमंरि महि इहि धाई।
बालक है इनि दिसे कछु नाही।
बाहरि ठांढे म्रति उकसाही।
कौसापति बिधि जानणहारा।
राम सहिति सीउो ततकारा।
धवरि ले कटि ठांढा कीना।
मल्ल मखाड़े को पगु दीना।
जिहि मगि गजु ठांढा बमिकारी।
गजि स्वार्थी को कह्यो मुरारी।
हमि को मगु तुमि तजि करि देखौ।
मोहि कहा तुमि मनि धरि लेखौ।
नाहि ति मवि ही तुम को मारो।
तमि को इसि गजि सहिति प्रहारो।
मृतक लोक महि देउ पठाई।
भमा करहि ना करहि बुराई।
यो कृष्ण बदि जबि बचमु उचारा।
गजि स्वारथी म कछु गजि मारा।
श्री कृष्णचदि की उोरि चलायो।
मदमाता गज सन्मुष धायो।
यो कृष्ण को गजि मे सुन्न महि लीग्रा।
धनि स परहरि ऊमनि उनि कीग्रा।
नामो निकसि गयो चतुराई। फिरि धामे ठांढा भयो माई॥
बहुरो गज उीसे ही कीग्रा। जसे प्रथम मे मूप महि लीग्रा॥
यो कृष्ण मागा फिरे धाग धाग। म्रति मुजसु दरि धग महि पागे॥
गज प्रम जी के पाछे दौरे। थकि रह्या हारयो समु जोरे॥

श्री कृष्णचंदि पुष्प से लीना फेरि फेरि धनि सौ दीना ।।
एक मुष्टि मस्तक परि मारी । दोई दस्त्र प्रभ लीए उपारी ।।
गजि के सहिति स्वामी मारा । दस्त्र लीए करि ताहि अपारा ।।
श्री गोपाल गजि मुक्ति पठाया । सांईदास महा सुप पाया १००

गजि को वस्त्र एक हरि लीआ । एक दस्त्र बलिदेव को दीआ ।।
श्री कृष्ण राम अपाड महि आए । नदि माहि आइ करि ठहिराए ।।
चडूरमुष्टि तबि बचन उचारे । मनि माहे तिहि सोच विचारे ।।
श्री कृष्णचंदि सौं कह्यो सुनाई । कंसनराधपि इहि सुण पाई ।।
तुमि पेलति बिंद्रावनि माही । मल्ल विद्या कीनी अधिकाही ।।
बड़े बड़े बलिवान सिहारी । तुमिरी भुज महि बलु अति भारी ।।
अपनी मल्ल विद्या तुमि करहो । मल्ल विद्या सेती चितु धरहो ।।
यह नराधपि देप तै लेवै । कृपिमान होइ बहु कछु देवै ।।
तब श्री कृष्ण ने बचन उचारे । सुण चडूरि ते मीत हमारे ।।
हमि सरि होइ तिहि युद्ध करावहि ।
सोसो भूप हमि नाहि फिरावहि ।

धर्म्म युद्ध मल्ल विद्या माही ।
दुही चोरि स्मसरि निर्पाई ।

रंगभूम भीसर भगवान ।
आए सहिति भय्या बलिराम ।

कौतुक करहि भया भगवत ।
अपल अगोचर अमित अनंत ।

दस प्रकार का रूप दिपाया ।
इउ कहि श्री सुकदेव सुनाया ।

सम मरन कहि प्रगटि सुनाम ।
पड़े सुणे हरि भक्ति बढावै ।

मल्लहु द्रिष्ट वज्र से आए ।
बेपि तिनहु के हृदे डराए ।

चूर करहिग हमिरे अंग । मल्लहु के मन हूए भंग ।।
जो ये सृष्टि नीर प्रधान । तेज बिदेपहि धरे ध्यान ।।

इहि बालकि बहु देखो बोल। तुमिरी सग है संतनि प्रीत ॥
तीन पहिरि प्रभ ने युद्ध कीना।
चहूरि मुष्टि को बमु हिरि लीना।
तिहि महि बमु रचिक ना रहया।
तब नृप कंस इही मुख कहया।
छाडि देहु बजनि न बजावो।
चन्दित भए भनि युद्ध न करावो।
दुष्टि कसि तिन को मनहिं कीना।
साईदास हमिरों सुणु लीना १ २

ग्रमरा ग्रचिक बजनि बजाए। श्री कृष्णचंदि सुण बहु हर्षाए ॥
जै जै ग्रमरि मुख ते उचरावहि। श्री कृष्णचंदि केरा जसु गावहि ॥
तब कोसापति ऐसे कीमा। चहूरि को कर करि सही लीमा ॥
करि स से करि दीई फिराई। धनि पछार्यो यादमराई ॥
बलिभद्र मुष्ठि को लीना। ऐसे ही बलिदेव ने कीना ॥
एक मुष्ठि मस्तक परि मारी।
मुष्टि मारि सिर पीठो प्रहारी।
टूक टूकि तिहि सिर करि डारा।
बलिदेव भी मुष्टि को मारा।
श्री कृष्ण राम भी दोऊ भाई।
कूदनि लागे तबि अधिकाई।
दुष्टि कसि कह्यो इन्हि दूरि करो।
मोहि म्रिष्ट ते ओल्हे धरो।
बसुदेव उग्रसैण न भावो।
तिन को बेग पकि चम्म दिखावो।
श्री कृष्णचंदि बचु सुण लीमा।
तब बचु राम सहिति प्रभि कीमा।
कसि दुष्टि की सुति मुमानी।
कासु निकटि भायो मैं जानी।

तबि ही बसिदेव को मतु दीमा।
जो कछु प्रभ जीने मधु कीमा।
जो हसि कासु निकटि है आयो।
तुमि काहे हरि बिस्मु करायो।
हसि को प्रहारो थी जदुराई।
बिल्म न कर हो मेरे भाई।
थी कृष्ण कुदि कंसि छोरि धाया।
जहा दुष्टि बैठा तहा धामा।
कसि थसी तब करी सम्हार। ले करि लीने दो हथीआर॥
पडासि पर लीने हाथ। निकटि कसि के त्रिभवनि नाथ॥
कंसि कृष्ण को चोट चलाइ। हरि मधुसूदनु जात बचाई॥
कसु कृष्ण को पकरा चाहे। सकल संत स्यु छोरि निवाहु॥
कस नि केसाव गहा जाई। इति उति फिर न चनि टिकाई॥
तेजु प्रगटि कीना भगवान। प्रभ परमानंद पुरखपुरान॥
हरि तिहि आगे छाती धरी। एहि लीन्हा पुर्खोतम करी॥
सूय कोटकि तेज समान। छाती ते काढ्यो भगवान॥
जोत भई छाती दिपराई। काप्यो कसु न देप जाई॥
नैन मूदि वहि गिमा डराइ। बग लीमा गहि केशव राइ॥
गड साप को मेत समान। कस गह्यो तिउ श्री भगवान॥
झटकि सीस ते प्रान निकारे। छिन महि कपाव कसु सहारे॥
दुष्टि क केस गहे करि लीने। प्राण चमि ऊपरि प्रभ दीने॥
मस्त कसि टूक टूक करि डार। छवि अमरो कीना औ कार॥
गह्या चमि त त्रिभवनि नाथ। भति पवित्र करि पकज साथ॥
पैचि चमि से भूमि उतारयो। इहि चरित्र भगवान दिखारयो॥
पंच्यो कसु जहा घनिस्याम। बस पास तिहि टा हरि नाम॥
मूरति देह धाइ प्रभ लीनी। इहि करुणा प्रभ ने तब कीनी॥
दवहु सबस कीमा ज कारा। भला कीमा प्रभ दुष्ट को मारा॥
बैठे आइ प्रभू बिस्रात। मृग बिडार मृगराजहि भांत॥
बहुरो जोर असुर चमि धाए। बल लीस प्रभ सकल हनाए॥
बसिदेव ने सकल असुर हनाए। किरिमानी पूतो करि स्याए॥

तिन जान्यो सम नर सर्वोत्तम।
कृष्ण बलि जाने पुर्षोत्तम।
तिरीमा देष श्री घनस्याम।
मथ छव मोहनि कोटक काम।
मूर्छा हाइ होइ गिर परि।
सुधि बुधि हरि सुंदरता हरी।
गोपो जाम्या मितु हमारा।
इहि गुपाल नंदिलालु प्यारा।
जोये राजा प्रति हकारी।
तिन्हो करी थी प्रजा दुखारी।
बेद बेद प्राज्ञा मानति न थे।
तिन के मान महा प्रभ न थे।
तिन जवि देष श्री भगवान। मै सिउ तिन के कपे प्रान॥
ते मन महि मन को स्मझावहि। सूये परहि न प्रजा दुखावहि॥
नाहि ति मारेगै दामोदर। बिश्वनाथ बलिराम सहोदर॥
था। कृष्णचदि के पित अरु मात। वसुदेव देवकी पर्म सुजात॥
तिन्हो द्रिप्ट बाल्क के आए। देषि तिनहू के हृदे डराए॥
मार्नि को हमिरे सुत आने। मात पिता अरुहीं बिल्पाने॥
कस मित्र द्रिष्टी महि पर्यो। देष दुष्टि का तनु मनु डर्यो॥
जा पडिति थे बिमल बिचारी। तिन की मति पढि बेद उचारी॥
तिन देष प्रभु पुप बिराट। इस ही जग परि जग को ठाटु॥
योगीश्वरि जब धरहि ध्यान। पर्म तत्तु है इहि भगवान॥
पर्म तत्तु सभ हू का कार्ण। उतपत्ति प्रतिपालनि सहार्ण॥
पूर्ण पुप पुनीत प्रकाम। पर्म तत्त इहि कार्ण नाम॥
जदकुल जान्यो रक्षा कर्ता। ए भगवान हमारे भर्ता॥
दस प्रकार कीए भगवत। रूप दिपाए कमलाकंत॥
जैसे जाको हरि सोभाई। तैसे देपे केसव राई॥
सभ हूं ते निर्लेप अनत। कृष्ण कृपा निधि कमलाकंत॥
सासहु हरि का दर्सनु कर्यो। कोट जन्म का पातक हर्यो॥
हरि मूर्त काठो मापर्यो। पम प्रम करि हृदे धर्यो॥

साग कहनि लोक मिस वाति। इहि दोनो वसुदेवहि ताति ॥
सम्पर्ण भए थी गोपाल। गोकल चले कस का काल ॥
तब अक्रूरि प्रम को प्रतु दीना। कौन वाति त मनि महि लाना ॥
मै तुमि को बहु विधि करि जानो।
मोह भलो बालकु हुद पछानो।
वहि गजि मायुत को वलि रायहि।
ताहि हत्यो प्रवि बान्कु मायहि।
सरकिपन महि क्या कछु कीमा।
बडे बडे को घनि हुमि लीमा।
तुमि हमिर सग युद्ध मचावो। रामु सहिति मुष्ट उर्मावो ॥
धर्मयुद्ध हमि तुमि सग करहि। वैर भाउ कछु मनि ना घरहि ॥
काल निकटि भया बुधि बौरानी। सांईदास पूर्न विधि जानी १०१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे चौतालीसमोध्याय ॥४४॥

कमल नैन न तब ही बखानी। पूर्न ब्रह्म प्रम भारग पानी ॥
राम सो तबही कह्यो सुनाई। युद्ध करो प्रवि हमिर भाई ॥
थी कृष्ण चडूरि सो करु भरि कायो।
राम महित मुष्टि उर्मायो।
लोक सकल निर्प्यो बिसमाए ॥
नर नारी मुनि एहि सभाए ॥
दुष्ट कम क्या रति ठहिरायो।
इनि बालक मारनि चितु लायो।
कहा बालक इहि असर कहा है। जो बालक इनि सग लरा है ॥
एहि नपु तमीए मेरे भाई। इहा हमि पहि कम्यो न जाई ॥
फेरि कहे अपने मनि माही। पारब्रह्म तु त्रिभवनि माई ॥
तू भक्ती विधि जाणन हारा। हमि तुमि मा क्या कहहि पुकारा ॥
दुष्ट कम बहु जोर मचाया। हमिरा नंनि मगि कउ न कमाया ॥
मान्नि घमूरो गग मराए। मानि का इहि कम कमाए ॥
तू ही ठाकुरु करी धर्मनर। धादि धादि जने त्रिखरा ध" ॥

इहि वासनि कहु देवो जीत। तुमिरी सग है संतनि प्रीत॥
तीन पहिरि प्रम मे यज्ञ कीना।
बहुरि मुष्टि को वसु हिरि लीना।
तिहि महि बन् रंचिक ना रह्या।
तब नृप कस इहो नृप कह् या।
छाडि देहु बजनि न बजावो।
चक्ति भए मनि युद्ध न करावो।
दुष्टि कसि तिन को मनहि कीना।
सांईदास हुमिरों सुणु लीना १०२

ममरा मध्कि बजंनि बजाए। श्री कृष्णचंदि सुण बहु हर्षाए॥
जै जै ममरि मुप ते उचरावहि। श्री कृष्णचंदि केरा जसु गावहि॥
तब कोसापति ऐसे कीमा। बहुरि को कर करि सेती लीमा॥
करि ते म करि दीई फिराई। चनि पछार्यो मावमराई॥
ममिमद्र मुष्ठि को लीना। ऐसे ही बलिदेव मे कीना॥
एक मुष्टि मस्तक परि मारी।
मुष्टि मारि सिर दीडो प्रहारी।
टूक टूकि तिहि सिर करि डारा।
बलिदेव जी मुष्टि को मारा।
श्री कृष्ण राम जी दोऊ भाई।
दूदनि लाग तबि मधिकाई।
दुष्टि कसि कह्यो इन्हि दूरि करो।
मोहि द्रिष्ट ते ओल्हे धरो।
बसुदेव उग्रसैण स मावो।
तिन को वेम पाहि दम्म दिवावो।
श्री कृष्णचंदि बचु सुण लीमा।
तब बपु राम सहित प्रभि कीमा।
कसि दुष्ट की सुति भुलानी।
काहु निकटि मायो मै जानी।

सवि ही वसिदेव को मतु दीया।
जो कछु प्रम चीने वधु कीया।
जो इसि कालु निकटि है आयो।
तुमि काहे हरि विलमु करायो।
इसि को प्रहारो भी जदुराई।
विलम न कर हो मेरे भाई।
श्री कृष्ण कुदि कंसि छोरि धाया।
जहा दुष्टि बैठा तहा आया।
कंसि बली तब करी सम्हार। दो करि लीने दो हथीआर॥
पकासि पर लीने हाथ। निकटि कंसि के त्रिभवनि नाथ॥
कंसि कृष्ण को चोट चलाइ। हरि मधुसूदनु जात बचाई॥
कसु कृष्ण को पकरा चाहे। सकल सत समु छोरि निवाहे॥
कस नि केशव गहया जाई। इति उति फिरे न धनि टिकाई॥
तेजु प्रगटि कीआ भगवान। प्रम धर्मानिदि पुषपुरान॥
हरि तिहि थाप छाती धरी। एहि नाल्हा पुर्षोतम करी॥
सूर्य कोटकि तेज समान। छाती ते काढ्या भगवान॥
चोट भई छाती दिघराई। काम्यो कसु न देख पाई॥
नैन मूंदि जहि गिया कराइ। वेग लीआ गहि केशव राइ॥
गई लाप को सेत अमान। कस गहयो तिह श्री भगवान॥
मस्तकि सीस ते प्राम निकारे। छिन महि केशव कसु संहारे॥
दुष्टि के कस गहे करि लीने। प्राण धनि ऊपरि प्रभ कीने॥
मस्य कंसि टूक टूक करि डारे। तवि अमरो कीना जै कार॥
गह्यो धनि त त्रिभवनि नाथ। धति पविप्र करि पकज साथ॥
दैखि धनि ते भूमि उतार्यो। इहि चरित्र भगवान दिखार्यो॥
देख्यो कसु जहा धनिस्याम। कस पास तिहि ठा हरि नाम॥
मृतकि देह छाड प्रम दीनी। इहि करुणा प्रभ ने तब कीनी॥
देखहु सकल कीआ जै कारा। अस। कीआ प्रभ दुष्ट को मारा॥
बैठे जाइ प्रभू बिलात। मृग बिडार मृगराजहि मात॥
बहुरो जैह असुर बलि धाए। नल नील प्रम सकल हताए॥
बसिदैव ने सकल असुर हताए। फिरिमानी मूठो करि ल्याए॥

मथुरा दुष्ट के मार्ई माए। तिहि स्मग्र ठौर कौमु कराए॥
बलिदेव तिहि सठी युद्ध कीना। मार मूसिस तिहु को जीत लीना॥
प्रष्टि पपू प्रभि कुम के मारे। बसदव ने सभि ही प्रहारे॥
ठौर प्रधिक जो योधे माए। भाग गए इहि बिधि निर्पाए॥
बसुदेव दवकी पहि दोऊ माए। करी माटी मुख दिखाए॥
करि ग्डौत प्रम पर्नी लागे। ठांड मात पिता के मागे॥
दवकी हरि को मार्न प्रग लीया। सीम चूम मुप परि कर कीमा॥
महा प्रधिक सुप जिन नं पाया। सार्न्गिस मिस ममसु मामो॥१ ३

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैंतालीसमोध्याय ॥४५॥

कमि की जोपता सभि मिलि माई।
दुष्ट मृतकि पहि धाइ ठहिराइ।
मुप सठी बहु बचनु उचारहि।
हाहा करै मुयो पुकारहि।
को काहू ना करति बुराई।
प्रबि काहे तुमि रो देहु रसाइ।
प्रबि को पुर को राजु करेगा।
पर्जा को सुप कौनु धरेगा।
श्री कृष्णचंदि तिहि कह्यो सुनाई।
इति मृतकि जोरो तुमि बाइ।
पुरि को राजु उग्रसेनु करही।
पर्जा को सुप सेती धरही।
बसुदेव देवकी को हरि कह्या।
सुप मनी तबि बहु उचिरह्या।
गोप महिति प्रबस्था टारी।
कंतकि विधि इहि कहु मो मुरारी।
जम मात पिता कछू करही। सुत को नामु माप बहु धरही॥
हमिरो काहे नाही कीमा। तब बसुदव हूवे भरि लीमा॥
गंगि प्रोहतु लीको बुलाई। बसुदव तिहि सा कहु मो सुनाई॥

श्री कृष्ण राम को कौन विचारा।
गर्गि महूर्ति मलो बीचारा।
वसुदेव मनि धतरि इहि धारा।
दस सहस्र सुरहो विपो को देवो।
गोबिन्द धर्म सकल्पु करेबो।
दस सहस्र सुरहि अवि ही दीने। अपुने वधि पूर्न करि लीने॥
श्री गुपाल क्रिपा निधि स्वामी। सकल घटा के धतरि जामी॥
माता पिता को बहु सुप देवो। सांईदास सुप भरि करि लेवो।१०४

नारदि को हरि लीया बुलाई।
ताहि कह्यो सुप अधि अधिकाई।
कसि को भ्रामु यादव मनि लीमा।
मथुरा पुर तिन नें तजि दीमा।
अवि तुमि जावो उनि के पाहे।
इहि बिधि जाइ कहो तुमि ताहे।
दुष्टि कसि को प्रभ न मारा। केस त गह्यो बनि पछारा॥
उग्र सेन को राज बहायो। तुमि अपनाधितु ठौर करायो॥
तुमि अवि अपने ग्रहि महि आवो। अपने पुरि धाई आनद पावो॥
नादु सरग बचि हरि उठि धामा। सात कोस यादव पहि आया॥
तिन का नार्द कह्या सुनाई। प्रभ जो तिस को दीमो बताई॥
दुष्ट कसि को थी कष्ण विडारा।
उग्र सन को राज बहारा।
तुमि बसहो अपुने पुर माहे।
कसि को आनि पुरि माहि वसाहे।
यादमि ने इहि बिधि सुणी कामा।
हिर्यमान होए सभु प्राना।
ताठकाल मथुरे पुरि आए।
चीरि मसीनि तिहि अग उडाए।
फाटे अंबरि तिहि अग माही।
वहा मसीन सम रूप दिपाहो।

थी कृष्ण द्रम्मु कंसि को लीना।
सम यादव को प्रम ने दीना।
पाहो पवरि प्रंम कछु करो।
ग्रहि महि बसो निदचल चितु धरो।
यादव सम भिम भिम ग्रहि प्राए।
सुत बनिता सम मिल हुर्षाए।
थी कप्ण प्रंबरि बहु लीने।
मोती कर महि नीक कीमे।
राम को सहिति लीयो प्रदुराई।
नदि महिरि पहि प्राइ ठहिराई।
नदि महिर मो बचनु उचारा।
सुण हो पित तुमि बाति हमारा।
को वसुदेव देवकी हम जाए।
तुमि ही म हमि बड़े कराए।
पै दधि मापनु प्रधिक पवाया।
महा प्रधिक तुमि लाट लडाया।
एही मोती प्रंबरि ले जावो।
जसुमति मात को भेटि करावो।
माता जसुमनि सो इहि कहीए।
हे माता प्रानंदि सा रहीए।
हमि भी तुम पहि इकि दिम प्रावहि।
सभि ही तुमिरा दर्सनु पावहि।
नदि सा प्रम इहि बचनु सुनायो।
साँईदास मनि कठनि करायो॥ १ ५॥

नदि प्रम्नु सुणयो हरि पाहे। भयो मूर्छा सुधि बिसराहे॥
मुर्त बिसार धनि परि परया। उनि म कछु सुधि देहि को करयो॥
और गोप सम मूर्छा होए। महा प्रधिक मनि प्रतरि रोए॥
जबि कौसापति नैन निहारे। तबि ही प्रम ने सीखहा मारे॥
बहुरो दानवि को सीठो उठाई। सकल उठाए यादवराई॥

नंदि महिरि सभि हरि सो आपा।
न वसि जावा एही आपा।
हमि न रहु हुव का ठहिरावहि।
जसुमति चौर कहु करावहि।
प्रभाते तुमि सुरिहु से आवो।
सुरिहु से तुमि वन कौ उठि धावो।
सभ भी तुमिरो वर्षेनु करहा।
वनि आवो मन महि ध्यानु धरही।
वनि तुमि वनु तजि करि ग्रहि आवो।
सभि भी हरि तुमि वर्षु करावो।
अवि कहु कहा करे वनिवारी।
तुमि हमि से इउ कह्यो पुकारी।
तब श्री कान्ह कह्यो पित मेरे।
हमि सेवकि है पित जी तेरे।
जसुमति सो तमि कहो समझाई।
एक दिनसि आवति अतुराई।
अवरि मोती नंदि को दीआ।
ताहि देह करि बिदआ कीआ।
रुदनु करति नद जी उठि धाए।
रुदनु करति गोकलि महि आए।
जसोदा नदसो आप सुनायो।
कान्हरि मोहि कहा तजि आयो।।
नंदि महिरि जो कछु देपि आयो। जसौदा को तिन आप सुनायो।।
मानि बुध चौर अन्य बिडार्न। बहुरि अब मुष्ट का प्रहान।।
तू जांको सुतु अपुना जाने। सुत हेत कर्म सुपहु वपान।।
बहु महाराज राजनि को राजा। दीनानाथ हरि वेमुहताजा।।
वहि बालक काहू को नाही। वहि राम रम्या है सभ माही।।
दीनानाथ अपार गुसाई। तीन भवन केरा बहु साईं।।
छिन महि किए उपावनि हारा। छिन महि पर्सो करति पसारा।।
नंदि जसौदा रुदन कराही। साँईदास धीजु ना पाही।।१०६

वसुदेव कृष्ण सो भापहि। ऐसी बिधि मुघ से वहि भापहि॥
विद्या पढनि बनारसी आवो। विद्या पढि के फिरि घरि आवो॥
पित सो श्री कृष्णचंदि आज्ञा पाई।
सग लीनो तब बलिदव भाई।
पग बनारसी पुर को धारे।
श्री गोपाल सम वीर प्यारे।
विप्र सुदामा मग चल्यो आई।
ताहि कहूया प्रम यादमराई।
स्वामी कहो कहा को जावो।
इहि त्रिंतातु तुमि हमिहि सुनावो।
तब ही सुदामे बचन उचारायो। हे राजेश्वर सुणु चित लायो॥
बनारसीपुर माहे जावो। विद्या सर्ब तहा मैं पावो॥
तहा जाइ विद्या सब पावो।
इहि प्रजोग तिहि पुरि हितु लावो।
भक्ति उधार्न श्री भगवान।
असुर सघार्ण पुर्ण निधान।
सवि ही विप सो वचनु उचारा।
तुमि विद्या पढिने चितु धारा।
हमि भी विद्या सीए जावहि। बनारसी महि जा करि ठहिरावहि॥
तुम ही चलहो सग हमारें। विद्या से आवहि तरकारे॥
कह्यो विप नीको जदुराई। मे तुमि सहित चलो जदुराई॥
तीनो चल आए पुरि माही। सदीपन पडति रहिति जहा ही॥
तहा आइ बेद भापनि लागे। औरु बाति मनसी उनि त्यागे॥
चारं बेद पढ़ दिनचारी। श्री नंद नंदन ब्रज विहारी॥
बहुरो राजनीत सिपजाई। चितु लायो ब्रमबनि के तांई॥
राजनीत सिषी गिरधारी। विद्या गुर सो कहू यो पुकारी॥
चौसठि दिन में राम गोपाल। चौसठि विद्या सिये गोपाल॥
हाथ चार प्रम ठाडे भए। सदीपने को इहि बिधि कहे॥
कछ मागो गुर देव हमारे। हमि देवहि तुमि तुरत तरकार॥
हमि विद्या देवा घरि जावहि। माईगास जा करि सुघ पावहि॥१७

सदीपनु वनिता पहि आया। जो प्रभ कहा सो आप सुणाया॥
तवि वनिता तिहि दीओ बिचारी।
सुण हो इहि तुमि बाति हमारी॥
जो बालक तुमि एहि सुणावहि। जो मागे सोई कछु पावहि॥
हमि बालक किसे पडे दुराई। सोई मांगो तिहि पहि जाई॥
कहो इमहि बालक आण देवहु। सुप्रसन्न होइ हमि तिहि सेवहु॥
अवि भई वढि प्रसूत न होई। हमहि बालक आण देहु सोई॥
सदीपनि पंडित फिरि आया। आइ कृष्ण को बचनु सुनाया॥
हमि स्नान करनि को धाए। नमि द्वारका के निकटि आए॥
सप्त वर्ष को बालकु मेरा। गुरभाई हाबति है तेरा॥
किनही सुत मोहि पकड़्यो दुराई। हमि जोहनि लागे तिहि जाई॥
ढूंढि थके हमि पावहि नाही। रुदनु कीओ हमि ब्रह्मपुर माही॥
स्नान करति ईहा हमि आए। थकित भए कछु मन न भमाए॥
जो हमि ठोहु बालक आण देवो। हमि परि किर्पा अधिक करेवो॥
मानो कोड द्रब्य हमि दीना। जो कछु औरु कहो सो करेवो॥
भक्त वछलमि कह्यो आण देवो। जो कछ औरु कहो सो करेवा॥
तवि सदीपनि ऐसे भाषहि। औरु न चाहिति कछु ऐसे भाषहि॥
श्री कृष्ण राम दोऊ ही भाई। गए थल प्रभ यादवराई॥
चलिति चलिति गए दधि के माही।
दधि रूप आगे सो आही।
आइ डंडौति करी प्रभ ताई।
कछ आगिआ करो त्रिभवनि साई।
तुमि मै किउ करि किर्पा कीने।
इहि मग गहि क्यु करि पगि लीने।
तवि कौलापति बचन उचारे।
सुण हा दधि मूर्ति तत्कारे।
हमि विद्या गुर को सुत भाई।
तिनही आन्या यही दुराई।
जो किसी ही तुमि महि आण डारा। आन देहि गुर भाई हमारा॥
हमि तुमि सो इहि कह्यो सुणाइ। मांइदास सुण ल मरे भाई॥१८

दधि मूर्ति तबि कह्यो गुसाई। मैं बलि आवो कौर कन्हाई॥
एकु असुर रहे नेरे माही। कबहु कबहू बाल्क ले आई॥
श्री क्रिष्ण कह्यो चलो मोहि दिखावो।
वाही असुर को मोहु बतावो।
आगे दधि मूर्ति होवो आई।
तिहि पाछे कौलापति धाई।
तहा आइ करि ठाढे भए। जहा असुर आधम मुष सए॥
असुजह सुष सोया परया। श्री कृष्ण उदर तिहि कालु करया॥
फारयो उदरि उदर तिहि देषा। वहु बाल्क तिहि उपरि न पेषा॥
तीर बाल्क है उदर के माही। सदीपनि को बाल्कु नाही॥
तब उसि असुर न बचनु उचारा। हे भगवति तू प्रान हमारा॥
मै बडभागी मा प्रभ पूरन। तौहि कर बालु भयी मोहि मूरनि॥
श्री कृष्णचदि ने सवबचा कीना। दो ईटिकी को धापु करि लीया॥
दखनि का दखनि प्रभ कीना। पस्चम को पछम करि लीना॥
अपने भक्ति को आमा कीनी। इहि आज्ञा प्रभ तिन को दीनी॥
प्रथम चवनु धाप परि चढावहि। पाछे मोहि ऊपरि चढावहि॥
अठसठ तीर्थ को जमु ल्यावहि। तबि माको स्नानु करावहि॥
जो जमु पडे गत क माही। अठसठ तीर्थ को जमु ताही॥
एहि बचनु करि दधि को त्यागा। रथि सुत पुरि केरे मग लागा॥
आन गिरिवरि धरि दापु बजाए। पाइकि दाप सबद सुणि आए॥
असुर भुआ होइ वकटि धाए। तहा आइ करि आधमु पाए॥
धम राइ आप मी आया। प्रभ की उस्तति मुष उचिरामा॥
हे प्रभ कहु आज्ञा मोहि करहो। जिहि प्रजोग इहि मगि पगि धरहो॥
श्री कृष्णचंद निहि आप सुणाया। मम बिनांतु प्रभ मोहि बतायो॥
एकु बाल्कु गरि को मुतु आई। किनहू आन्यो वही चुराई॥
सन्दीपुन पन्डित विन नामा। विद्या गुरु हमरो तिह कामा॥
वाका तुमि कहू त म आवो। मोहि का आए करि मोह दिखावो॥
धर्मराज बाल्कु ल आया। आण श्री कृष्ण आगे ठहिरया॥
श्री कृष्ण गडि परि लीओ चढाई। बनारसी पुर को चल्यो धाई॥
बाल्कु आए पंडित को दीना। हाथ जोर करि बिनती कीना॥

जो कछु और मांगो सो देवो । जो कछु कहो मै सोई करेवो ॥
संदीपनि तवि कह्यो सुनाई । और वांछा मोह रहा नि काई ॥
सुप्रसन्न मोह भाल्म होया । मनि ते दुःख मैं सुत को पोया ॥
तुमिरी सदा होइ कल्याना । मै मनि अवरि एही माना ॥
मै आज्ञा दीनी तुमि जावो । जा करि अपुने ग्रहि सुख पावो ॥
आज्ञा ले मथुरा पुर आए । सांईदास सहित सुख पाए ॥१०८

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे छितासीसमोध्याय ॥४६॥

सुदामा यादव हरि संग रहे । भक्ति भाउ तांके हृदे महे ॥
निसबासरि हरि के सगि डोले । भले बचनु मुख ते बहु बोले ॥
उचिष्ट रहे हरि को सोऊ खाई । अवरि हरि के अंग उडाई ॥
एक दिन प्रभ ऊधो लीओ बुलाई । तांको प्रभ कह्यो समझाई ॥
तुमि गोकलि जावो मेरे भाई । जहा नदि महिर अरु जसुमति माई ॥
गोप ग्वारि तहा अधिकाई । हमि से तिन को पूछो जाई ॥
तिन को बहु बिधि जा समझावो । सुप्रसन्न तिहि चितु करावो ॥
जाउ प्रान तनि हमिर माहो । अवि हमि सुरझानि का ले जाहो ॥
जो कबहू हमि आवे अबेरा । धीजु तजि हेरहि मगु मेरा ॥
अवि न जानो कैसे वहि रहई । मोहि बिछोहो कैसे वहि सहई ॥
तिन को तुमि अवि जाइ सुनावो । एकि दिन कृष्ण आवहि न बुलावो
ऊधो रथि परि चढि के आया । तात्काल गोकलि महि आया ॥
नदि महिरि ग्रहि आयसु लीना । अपुनो पगु ताहू ग्रहि दीना ॥
नदि महिरि पग ऊधा धोए । ऊधा महिज मंदलि महि सोए ॥
भोजनु नाना ताहि पवायो । ऊधो महा भक्ति सुखु पाया ॥
जबा सन्नामा मौकरि जाग । नदि महिरि तिहि पूछनि लाग ॥
ह ऊधा जा मोहि सुनावो । हमिरे मनि का भमु हिरावो ॥
कबहू धा कृष्ण करत मोह चीत । तुमिरी है जाइ मग प्रीति ॥
कबहूं जगुमनि का चित करही । कबहू हमिरो नामु उचरिही ॥
जसमति मापन दधि पचाए । दधि बहुता दे मथनि कराए ॥
फिरि कह्यो नदि ऊधो ताई । हमि मुनु कहि भूले अपिचाई ॥

हमि मे इहि बिधि ग्यान्यों माही। पारब्रह्म त्रिभवनि को साँई।।
सकल स्रिष्ट को है पित माता। इनि येती किनी आननि बाता।।
चिवि सुरहो को सेवमि महि आवै। सकल ग्वारिनि दर्सन पावै।।
बनु तजि बवि ग्रहि को पग धारे। ग्वानि सकली तिनहि निहारे।।
इमि के प्रानि है उसि के माही। साँईदास और जाने नाही १०६

रजनी गई रवि कीयो प्रकासा। ऊधो को नदि ग्रहि महि बासा।।
ग्वानि सकली ने सुए पायो। ऊधो श्री कृष्ण पाहे ईहा आयो।।
चली चली ऊधो पहि आई। मनि बच अपुने ताहि सुनाई।।
यों कृष्ण बसिब ऊधो जोवि आया। इउही किनही भम सुभाया।।
जैसे कपट हमि सहिति कमाया। ऊधो सो कर्सी अधिकाया।।
एही प्रष्णु ग्वानि अवि कीना। मिृग प्रगटि आगे पगु दीना।।
ग्वानि पगि परि आइ उमर्झयो। बोलति दाम्भ महा सुप पायो।।
ग्वानि पट पदि सो इउ भापहि। दूरि होउ कपटी इहि भापहि।।
तू हमि पग को पर्सन मौवो। तुमि कारे कपटी मनि पोवो।।
जैसे तुमि माहिरि ग्रिष्ट आवो। ऐसे भ्रंतरि रुप दिपावो।।
तुमिरा हमि सम माही कामा। ऐसे बोलति सकली भामा।।
जबि लगि त्रिणु हरि आवमि माही। मृग त्रिणु चर्ने को नित जाही।।
जबि लगि कुस्म पिस्यो निर्पाही। पटि पगि कुस्म ऊपरि उर्माई।।
पनिबते पहि ससि कोऊ आवै। ताकी उस्तति भनकि करावै।।
जो लाग बन मृग तजि जावे।
फिरि तिहि बनि हितु माही लागे।
कुस्म कुमलाना भृिग तजि जाव।
ताके फिरि को निकटि न आवै।
रे पटि पदि पगि पर्सो नाही। तुमि कारे हो भ्रंतरि माही।।
पटि पदि सो मभि प्रश्न बमावहि। ऊधो सो बहु भांति सुमावहि।।
ऊधो सुण सिद तमे करायो। अवि ग्वानि इहि प्रश्न सुणायो।।
बहुरि ऊधो मा कहिएँ लागी। ऊधो किउ हरि हमिहि त्यागी।।
प्रथम प्रभु हमि मोक्ष कीना। जो हमि मो बिछोहा दीना।।

हरिआवेपि चरति है वाही।
हमि को डार्‌यो विरहि की फाही।
ऊधो जी फिरि हरि कवि आवहि।
हरि अपुनो हमि दर्सु दिपावहि।
स्वामि सकमी रुदनु करावहि।
हे ऊधो कवि हरि ईहा आवहि।
ऊधो प्रभु दीठो स्वामि ताई।
एक दिन आवहि त्रिभवनि साई।
ताहि ध्यानु त्यागो तुमि नाही।
ध्यानु धरो तिहि चर्न मझाही।
रुदनु न करहो हरि को गावो।
हरि चर्ना सो ध्यानु लगावो।
ऐसे ऊधो ताहि बतायो।
स्वामि को धांस धरि ल्यायो।
ऊधो नदि सो कह्यो सुनाई।
आग्या देहु पुरि को चला धाई।
नदि गोपवा सवि मुख पायो।
ऊधो प्रभु मनि महि ठहिरायो।
आपनु नीको ले करि आई।
जिहि मुरिह पै पीत्ति जदुराई।
ऊधो को कह्यो इसे ले आवो।
पहि कौसापति पहि पहुचावो।
ऊधो आग्या ल उठि धायो।
मथुपुरी माग गो हिगु साया।
चलिनि चलिनि पुरी माहे आयो।
श्री गोपाम दहि आद ठहिरायो।
जा कछ जमुमनी पाहे आना।
सो कप्यावनि आगे ठहिराना।
जी कप्यावनि सो वचनु उचारा।
गोपी जन को प्रम बीचारा।

भला कोमा हमि प्रति तुमि भाए।
मानदु मया तुमि दर्सनु पाए।
भवि हमि इहि विभि सुए पाई।
सो मै तुमि सो कहा सुनाई।
दो सुत वसु देव के ग्रहि होए।
वसुदेव सभ ससय मनि पोए।
महावली तिन कौ वसु मारा।
पातकि कसि हाई उनि मारा।
निसबासरि हमि करहि मसीसा।
जादव जीवे लाप बरीसा।
महाराज जादव बहु करही।
यादव परि किर्पा हरि धरही।
जवि ते कैरो इहि सुए पाई। प्रगटे है प्रम यादवराई॥
तवि ते कछु ममि महि भौ भाना। हमि सग कर्मा सकहि बिहाना॥
बदराबरि मोको कछ कहा। भला कीया इनि की सवि सहा॥
भवि इनि को पमि माना कीना। जो तै इनि के ग्रहि पगु दीना॥
सुपलकि सुत तव कह्यो पुकार। कुंती सिमरहु प्रान प्रमारे॥
तोहि सुत इहि बहुतु भलो हावहि। तेरो सखा समि हो पावहि॥
अपुनो पितु रायो तुमि ठौरा। सपरु मनि महु न भोरा॥
पाछो सुन मों भाग्ना पाई। सुपलकि सुतु चल्यो तब धाई॥
ततछरग भायो मधुपुरी माही। स्याम संदरि तब ही प्रम बाही॥
जो बहु बानी बिनती ठानि। सुपलकि सुन मो सकल बखानी॥
सापा निसबासरि मनि मावो। सार्ंदास हिवु भा भ्रसिमावो ११०

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सकदेव परीक्षति संवादे उणिचभलोध्याय ॥४८॥

जो हरि कम को चसरि महारा।
प्रेम सो गमा घनि पधारा।
पाप कगि जोगना धाई।
करि भरि परिकि बहु दन्दनु करार्ं।

धनु करि सित दौरि सिधाई ।
जरासिध पाहि कहि भाई ।

जरासिंधु सो वचनु उचारा ।
सुण हो बाति तुमि तात हमारा ।
सन बसुदेव नृप कंस को मारा ।
तिस को सुत महि यदु बहु मारा ।

जबि जरासिधु सुण इहि बाति ।
धनि पटिकनि लाग बहु माथ ।
तबि ही इहि प्रतग्या कोई । मनि म तरि दिड करके लीई ॥
साहरा करि भागनु ना पावा । जबि जादव ना मार चुकावो ॥
जरासिध नृप और बुलाए । तिन सो सभ बिधि भाप सुणाए ॥
मैं बसुदेव के सुत परि जावो । तांसा जाइ करि युद्ध मचावो ॥
तुमि अपुनी सना स आवो । तुमि सभ हमिरे सग सिधावो ॥
मैं प्रतग्या मनि महि कीनी । सभ यादव मारो इहि लीनी ॥
सन नृप सुनति सैन स आए । मथपुरी माहि सकल समाए ॥
धनि सभा तांकी इहि होई । नउदस अछूहिणी होवै सोई ॥
मथिपुरी को घेरा जाइ कीना ।
या कथा करि तबि मनि महि लीना ।

अपुनो रथु मो पहि नही कोई ।
तापरि मग चरहो सुख होई ।
तातहि कृस्न के रथ ना चर्हो ।
तेमि के रथ परि पगु ना धरहो ।

तबि रथि को प्रभ आपि सुणाया ।
दोवै रथ बहु अधिक सजाया ।
तबि दोनो रथ दीए पठाई ।
धनि नीके लीने अपुनाई ।

बलिदेव सो प्रभ वचनु उचारा ।
इहि रथ परि चरहो तम्हारा ।
मात मातहिणी सना भाई ।
इहि लहि हमि तुमि बहु भाई ।

सुमिरो ध्यानु धरे मनि माही। बिनु सुमि ध्यान भविर कछ नाही॥
निस बासरि सुमिरो जसु गावहि। सोहि बर्ना सो मनु उर्म्भावहि॥
तुम्हि बिनु ध्यानु किसे ना धारहि। सोहि नामु हुवे माहि बीचारहि॥
गोपी जन को प्रेमु सुनायो। साँविवास हरि ते सुरण पायो॥

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सतालीसमोध्याय ॥४७॥

सुदामा यादव सोयो बुलाई। ताहि कह्यो प्रभ यादमराई॥
कुब्जा सा मैंने बचु कीना। ताको बचनु हामि करि दीना॥
तोहि ग्रहि माह भोजनु पायो। एक दिनसि सुमिरे ग्रहि धावो॥
चलहु अवि कुब्जा के जावहि। तहा जाइ भोजनु हमि पावहि॥
सहिति सुदामा प्रभ उठि धाए। कुब्जा के मंदिर महि आए॥
कुब्जा मंदिर भलो बनायो। मति मिष्टान तहा पाक पकायो॥
मानु का हरि हमि ग्रहि भावहि। अपुनो पगु सेवक ग्रहि पावहि॥
कुब्जा हरि निर्ये सुप पायो। प्रभु त्याग मनु हरि सो लायो॥
तत छिरण महि जल को स भाई। स्नानु करो है यान्म राई॥
षडुरो भोजन भिन्न भिन्न स्वाई। महा अधिक कछु कह्यो न जाई॥
अधिक भाउ करि सेवा कीनी। हरि की सेवा मस्तिकि लीनी॥
तब श्री कृष्ण मुख बचन उचारे। हितिकारी अक्रूर हमारे॥
तासो भी मैंने बचु कीना। तासो बचनु अधिक करि लीना॥
चलहो सुदामा तिहि ग्रहि माही। ताहि प्रीति हमिसो अधिकाही॥
कुब्जा को ग्रहि तजि ग्रहि आए। श्रो कृष्ण राम सो लीठो बुलाए॥
तासो सपर्लाव मन के भाए। प्रामदि सो भोजनु तिहि पाए॥
श्री कृष्ण कह यो नृपसकि सुत ताई। मनि महि स्मक्षि देपु यक्षिकाई
पनि तोहि गोजमि जो पठाया। ताहि काजु तूं कर्क धाया॥
अबि इकु काजु करा तुमि मेरा। उठि भावो तजि देहा डेरा॥
पाडोपुरि कर मगि जावो। पांडो सुत की पबरि ल्यावो॥
नमि मपसिवि सम न बच कीना। हे प्रभ पूर्न ज्ञान प्रबीना॥
माया रूप हमि ते दूरि करहो। हमिरा बितु अपुने पगि धरहो॥
गुन बनिता माया ओर दूरे। हमि ते दूरि करो प्रभ मोरे॥

भला कीआ हमि प्रति तुमि आए।
आनदु भया तुमि दरसनु पाए।
अबि हमि इहि बिधि सुण पाई।
सो म तुमि सो कहा सुनाई।
दो सुत बसु देव क ग्रहि होए।
बसुदेव सभ ससय मनि धोए।
महाबली तिन को बलु भारा।
पातकि कंसि ताई उनि मारा।
निमखामरि हमि करहि असीसा।
जादव जीवे लाप बरीसा।
महाराज जादव बहु करही।
जादव परि किर्पा हरि धरही।
अबि त करो नहि सुग पाई। प्रगटे है प्रम यादवराई॥
तबि से कछ मनि महि भो माना। हमि सग कर्मा करहि विडाना॥
दम्राबरि सोको बहु बखा। भला कीया इनि की सुधि लह्या॥
अबि इनि का धमि मामा कीमा। को त इनि के ग्रहि पगु दीना॥
सुपसकि सुत तब महा पुकारे। करी सिमरहु प्रान अधारे॥
तोहि सुन इहि महतु भयो होवहि। तेरो समा समि ही पावहि॥
अपुना बिनु रायो तुमि टौरा। मखर मनि महु म भोरा॥
पाछा मुर मों आसा पाई। सुपसकि सुतु धल्यो तब भाई॥
तनतरण आयो मधुपुरी माही। स्याम सदरि तब ही प्रम चाही॥
जा बहु करी विनती टानि। सुपसकि सुत मा मखस बखानी॥
गापा निमखामरि गनि गावा। सार्न्नाम छिनु मा असिगाजो ११२

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुखदेव परीक्षतिसंवादे उनिवासवांध्याय ॥४६॥

जा हरि कम को पदरि महारा।
बेम सो गाद्या धनि पधारा।
पाछ करि जोरता धाई।
करि धरि पटिकि बहु स्तनु बनाई।

सदनु करि पिता चौरि सिधाई।
जरासिंध पाहि बहि भाई।
जरासिंधु सो बचनु उचारा।
सुणि हो बाति तुमि तात हमारा।
सुत वसुदेव नृप कंसि को मारा।
तिस की सुत महि वसु बहु मारा।
अबि जरासिंधु सुणि इहि बाति।
मनि पटिकनि लागे बहु माथ।
तबि ही इहि प्रतग्या कीई। मनि मं तारि द्रिढ करि लीई।।
बाहरो करि मोमनु मा पावो। जबि जादव ना मार भुजाओ।।
जरासिंध नृप और बुलाए। तिन सो सभ बिधि भाप सुणाए।।
मैं वसुदेव क सुत परि आवो। तासो आइ करि युद्ध मचावो।।
तुमि अपुनी सेना से आवो। तुमि सभ हमिरे संग सिधावो।।
मैं प्रतग्या मनि महि कीनी। सभ मादव मारो इहि भीनी।।
सभ नृप सुनति सैन से आए। मथपुरी माहे सकल समाए।।
समि सेना तांकी इहि होई। नउदस छुहिणी होय सोई।।
मथिपुरी को घेरा आइ कीना।
यी कृष्णपवि तवि मनि महि लीना।
अपुनो रथु मा पहि मही कोई।
तापरि मग चरहो सुख होई।
पातकि कंसि के रथ ना चरहो।
तवि के रथि परि पगु ना धरहो।
तवि रवि को प्रभ भाषि सुणाया।
दोय रथि बहु चमिकि सभाया।
रवि दोनो रथि दीए पठाई।
अति नीके नीके बदुराई।
बलिदेव सो प्रभ बचनु उचारा।
इहि रथि परि चरहो ततकारा।
नोदसछोहिणी सैना भाई।
दंडि लेहि हमि तुमि बहु भाई।

तुमि कहा लेवो हमि क्या देवो। वहि वसि महि मागमझवि पोवो॥
एहि वचनु करके उठि आए।
जरासिंध के सम्मुख आए।
श्री गोपाल भक्तिनि सुपदाई।
साईंदास प्रेम रचिन रचाई ११३

पुरि के लोक सकल मन त्रासा।
कपति मुख निकसति नहीं वाता।
असुर अग्नि निर्य बिस्माए।
इनि से हमि सो कौणु छुड़ाए।
क्या जाने अवि छूटे के नाही।
फसे है रवि सुत की फांही।
तवि विश्वनाथ मुख वचनु उचारा।
सोक न स्मभिति पेमु हमारा।
मानसि रूप मोहि करि जानहि।
इहि विधि बहुमनि महि नहीं मानहि।
मैं इहि विधि लीनो अवतारा।
अधिकि भयो धर्मी सिरि भारा।
पवि असुर प्रगटे अधिकाई।
वसुधा भार न सकिति उठाई।
वसुधा भार दूरि करि डारो।
पातकि असुरो को प्रहारो।
अपुने संति जना सुख देवो।
पारि ग्रामी करू सेवो।
सभ असुरो को मारि मुकावो।
इनि पतितनि को बीजु गवावो।
फिरि धनि परि प्रगटि न होही।
बेग मुर्छित सुम्न महि सोही।
जरासिंध प्रेम सो नहीं जात।
मैं युद्ध करो न तुमिरे साथ।

तुमि को दूपनि है अधिकाई।
मात को भ्रात त सीठो हुताई।
जा बसिदेव हमहि युद्ध करावै।
हमि सो युद्ध करनि मनु लावै।
तासो युद्ध करो बहु भांति।
भूमि गिरावो ताकी कांति।
जबि जरासिंध इहि बचनु उचारा।
तबि ही युद्ध भयो सत्कारा।
यो कृष्ण राम तिहि सैना मारी।
अधिक रुधिर की सिंध मुरारी।
असुर असलता मामु रचायो।
तिहि उस्तति बहु बेद बनायो।
असुरा की जो भुजा कटाई।
ताहि रुधिर महि सरिह आ जाई।
मानो उरगें फिरति जल माही।
काटि दीए प्रभ कछु न वसाही।
जो पक्षो करि के कटि डारे। मानो मीन फिरति जल धार॥
सिर के केस जो देहि दिपाई। मानो सती नाल है मेरे भाइ॥
कुंडल औरु अधपतिहि माही। मानो सूक्षम नयन दिपाई॥
चीर पागि सिर ते जो झरे। मानो बगि ड्रान है परे॥
इहि सरूप की नदी बहाई। दाईदास सोभा बनि आई॥११४

अस सैना नृप की हरि मारी।
अपुनी लीला प्रभ ने धारी।
बलिदेव न जरासिंध सों गह्या।
रथि सों बांधि फिरि रथि परि रह्या।
लीए लीए आए हरि पाहे।
निर्पति बसदेव कृष्ण जो राहे।
जो मुप कहो मारि के डारो।
इसि पातकि को बनि पछारो।

दीनानाथ भगति बिधि जानी।
तबि नृप से इहि बाति बपानी।
तजि देहि भगति असुर से भाखै।
करि इकत्रि सभ प्राण मरावै।
बसिदेव से नृप को तजि दीना।
जरासिंधि तब इहि मनि कीना।
जरासिंधि है नामु हमारा।
मोहि सैना इमि बालक मारा।
अबि कथा नृप से करि मैं आवौं।
अपुने नम्रि को मैं उठि धावौं।
मनि भावत लेहो बसिबासा।
औरु त्यागो सकली आसा।
तबि सैना नृप को प्रतु दीना।
कथा सबद तें मनि महि भीना।
तुमिरे पिंड महि होइ कल्याना।
हे नृप महा बली तू सुजाना।
सैना फेरि अधिक कर ल्यावहि।
इहि दोई बालक मार चुकावहि।
इनि को जीवति रहनि न देवहि।
चलहो औरु सैन करि लेवहि।
दसि सतबार सैन ले आए।
श्री कृष्णादि सम मार चुकाए।
जरासिंध के नार्द आया।
महान महान स्याम मनि भया।
जरासिंध उठि सम्मुख आया।
नार्द जी के पगि लपिटाया।
पग पपार आसन बैसाया।
अति अधीन होइ बैन सुणाया।
बोले राजा नमो महान। तानि तुमि सें धर्म भजान॥
पुनि बोले नार्द सुर ज्ञान। सदा रिदे जांके भगवान॥

राजा जी समिझावो मुझे। चिंता सी देपहि कछु तुम्हे।
निर्मो है क्युं सुमिरा राजु। चिंता स्यू किउ बैठे आजु॥
जरासिंध पुनि बोले बैन। महाबली है पंकज नैन॥
हो भागा हरि से बहु बार। मुझि वे भगाहि रण मुरार॥
इहि चिंता है हिर्दे मांहि। किउ ही हमिरा शोक मिटाहि॥
आ जो परे तमारी सर्न। सभि दुख मोचन तुमर चर्न॥
एकि बार भागे भगवान। पूर्न होहि हमारे काम॥
बोले नाद महा महान। सुगम बाति है सुनहु सुजान॥
काल यम्न पहि दूत पठाइ। सभि वितांत जा तिसे सुनाइ॥
मथुरा प्रगटे राम मुरार। तिन ही जीत्यो सत्रहि बार॥
जो तू हमिरा करहि सहाइ। वस कीजै तब यादवराइ॥
काल्म ते तुमि आवो आइ। हो आवो सभ सैन मिलाइ॥
जीवति पकर केसव राम। पून होहि तुमारे काम॥
काल यम्न कावस त आवहि। इहि दिस तुमरी सैन सिधावै॥
घेरि लेहि मथुरा को जाइ। कहा जाइ बस धर हरिराइ॥
गहि लीजहि दोनहु नदि नदन। दीनदयानिधि दुष्ट निकदन॥
जरासिंध एहि मानी बात। नीकी कही हमारे तात॥
नाद को पुनि राजा कही। सर्न तुम्हारी हमि दृढि गही॥
तापहि तुमि ही जावो देव। कीजै सुफल हमारो सेव॥
तुमि को जात न लागे बार। तुमि तो मनिमापरि असिवार॥
करो क्रिपा इहु कष्ट मिटावहु। कालयम्न पहि आप सिधावहु॥
बहुत् भला भाई जो कही। तुमिरी पीडा जात न सही॥
उठे गुसांई महा महंत। हरि नारायण जपते मंत॥
कालयम्न पसु बहु बलिकारी। जरासिंध प्रीतम हितकारी॥
पुरा सांन माहे तिहि वासा।
रहिति अनिदिन बहु प्रीत प्यासा।

एक दिनसि नाद क्या कीया।
कालयम्न के पहि पगु दीया।

कालयम्न सो बचनु उचारा।
कालयम्न सुणु बचनु हमारा।

ताहि किंगुरे फटिकि बनाए। मानो बैकुंठ सोभति भाए ॥
बाग अधिक द्वारे ग्रहि लाए। ग्रहि द्वार बैकुंठि दिषाए ॥
पुनि माया भगवान बुलाई। तातकाल वहु प्रभ पहि आई।
हरि दासी आई हरि सर्ने। पर्से सुप निधि पकज चर्ने ॥
करि डंडौत हरि सन्मुष षरी। हरि मूर्ति नैनहु मैं परी ॥
जोग माया को श्री भगवान। आज्ञा कीनी पुर्ष पुरान ॥
मथुरा के जन पकहु उठाइ। सोए रहे न किसी अगाइ ॥
पुरी द्वारका महि षढि पाइ। तातकाल कछु वार न लाइ ॥
सभ उठाइ माया जन परे। पुरी द्वारका महि ले धरे ॥
अति अषिल महिमा कर्तार। जो लीला सो अपरि अपार ॥
प्रीति भई आगे सभ संत।
देषे सागरि तीर अनंत।

श्री कृष्ण साक पुरि ताहि वसाए।
वलिदेव को तिहि पहि तबि आए।

आप आए मथुरा पुर माही।
आलमु आइ लीनो हरि ताही।

हरि संतनि को सदा सहाइ।
साँईदास जपो मन लाई।

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचासमोध्याय ॥५०॥

जब आदम मथिपुरी माही।
सेवकु हरि को डहिले नाही।

पुरि को हुकम ताहि को दीना।
इहि करुणा प्रभ ता परि कीना।

पुरि के द्वार तिहि दीए भवाई।
अंतरि पुरि बठे अन्राई।

कालयम्न युद्ध को उमिडाया।
ग्रहि त्याग नागो उठि धाया।

थी कृष्णचन्द्र भाग छायो जाई।
कासयम्न हरि पाश्च भाई।
नृप परीक्षति सुकदेव सुनायो।
प्रभु तिहि सम्नुप क्युं नही भायो।
किर्पा करि प्रभ देउ बताई।
माहि मनि त संचरु हिरि जाई।
सुक प्रतु नृप प्रीक्षति को बीना।
भसो प्रदनु नृप ठने कीना।
तिहि म्सछ जाने तजि दीग्रा।
इहि विधि तिहि पर्सनु ना कीमा।
बहुरा तिसि की भाव सुनावौ।
तुमिरा सचरु सकस मिटावौ।
गर्ग प्रोहति था जदुकुल का।
थी जद दई बिर्त कोकुल का।
पुसका कहिति काऊ सुर ग्रान।
कोऊ कहिति मकल्प महान।
था बिरकता दृश ब्याहु न करे।
मन हुदे पम प्रभ क धरे।
यादव लागे कर्नि बिचार।
गर्ग प्रोहतु कर्ति न नार।
या बिनु हमिरा प्रोहतु कौनु।
मूना मनव दिज बिनु भौनु।
म्रावहु कोऊ उपाउ बनावहि।
किबे गर्गि को ब्याहु करावहि।
काइक दिजको बालक साप्य।
बछ हामो करि गर्गु विभाप्यँ।
हामी मुन मनु ब्याहे नार।
बांत उपजहि सुत सुकुमार।
तब गर्गि जदकुल महि म्रायां। तब जद बोरा बचनु सुनाया।
गर्गि प्राहतु पुपु म होइ। पुर्पु सोऊ जो ब्याहे जोइ।

है नरि पुंसक ससा माही। कासु न याके संनि के माहि ॥
कछुक कोपु सुन प्रोहति कह्यो। इहि निश्चा यटि भीतरि धर्यो ॥
को ऐसा हमि सुत उपजावहि। याते यादव सभ भज जावहि ॥
बाबस परयो रुद्र को धान। तहा गयौ दिज गर्ग महान ॥
लागा शंकर का तपु कर्न। सदा ध्यावे शिव के चर्न ॥
केतकि दिन को दिज वसिबति। सोहि पून की तसी महनि ॥
ऐसा दारुण लस महारा। उन्नरि मिमाव पसिमा साद ॥
अति प्रसन्न तापरि शिव भया। रुद्र गगि को दर्सनु दया ॥
नखि सिप सौ अति अदभुत रूप। तकसी प्रकार है सग अनूप ॥
नमिस्कार गर्गि तिहि कीनी। अनेक उस्तति मुप ते उचिरीनी ॥
सुन बसु शंकर भए प्रसन्न। सदा रहै जिहि हरि प्रहान्न ॥
बिप गर्गि को शंकर बोले। सम मुपदायक बचन अमोल ॥
कहु वर मांगो मत सुजान। रापो सभ तुमारा मान ॥
गग कह्या ऐसा वर दीज। करुणा सागर करुणा कीजै ॥
को ऐसा बेग हमि पावहि। याके न यादव भज जावहि ॥
तथा धस्त शंकर जी कह्यो। इहि वर गग प्रोहति लह्या ॥
वर दे शंकर महा महान। भए गर्गि ते अंतरि ध्यान ॥
गर्गि प्रोहति इहि बरु पाया। सर्व गुसांई बाबल धाया ॥
बाबल का इकु था अधिकारी। यवन म्लेछ अशा वसिकारी ॥
तिनि प्रोहिति का धनी दई। गगि बिप की तिरीआ भई ॥
कोई कि दिन तहा रसे गुसांई। ज्यु समराग जयाई त्याई ॥
तबै गगि के वासु आया। कालयवन तिहि नामु रपाया ॥
सुत उपिजाइ गर्गु उठि धाया। कालयवन ज्ञ उतिपति भया ॥
कालयवन मान के धाम। वडा भया मद सो विगम ॥
जबि ताका माता मरि गया। कालयवन तब राजा भया ॥
मत धना वपु पून बस। दगि नमित्त भागे दुग हन ॥
मांमो कमै अंगु उछाव। इहि प्रजोग प्रम निहि तजि जाव ॥
प्रम शदरा प्रवेसु करायो। गल द्रिग म जान धारा परायो ॥
कालयवन पाछे न धाया। मुचकुंदि पहि धान टरिरामा ॥
पीतंबर तिहि नैन मिहारा। ज्याग्यो कृष्ण परयो मनिधारा ॥

प्रभुनाइ भस्मावरिपरि परिम्भा । हरि पाछे पगु पस नही परम्भा ॥
सहा कन्दरा प्रति प्रंधारी । कीठो प्रवेसु तहा कुंज बिहारी ॥
मुचकदि ऋषि सुत महीपाता । तहा रहित भवन हरि राता ॥
तहि समे मुचकद सुप कर्‌यो । धेनु कोठो हरिसो चितु धर्‌यो ॥
श्री कृष्ण पीताम्बरि डार्‌यो । भ्राप कन्दिरा महि पगु धार्‌यो ॥
प्रभु कन्दिरा प्रवेसु करायो । कस ब्रिग से बाइ भ्राप बरायो ॥
कालयम्न पाछे से भ्राया । मुचकन्दि पछि भ्राइ ठहिरायो ॥
पीतम्बर तिहि नम निहारा । ज्यान्यो कृष्ण परे भनि भारा ॥
सिपचसाति पस ने तिहि मारी । जाग पर्‌यो ऋषु कह्‌यो पुकारी ॥
ऋषि प्रति क्रोधु हृदे उपिजायो । कालयम्न को भस्म करायो ॥
नृप परीक्षति इहि सुण विस्माया । ऋषि कसे पसु भस्म कराया ॥
इहि संचर हमिरे मन पर्‌यो । भस्म कैसे ऋषि ताको कर्‌यो ॥
हे गुरु जी करुणा मोह धारो । इहि विधि को मोह देहि बीचारो ॥
नृप परीक्षति इहि सुण विस्माया । ऋषि कसे पसु भस्म कराया ॥
इहि संचर हमिरे मम पर्‌यो । भस्म कसे ऋषि ताको कर्‌यो ॥
हे गुरु जी करुणा मोह धारो । इहि बिधि को मोह देहि बीचारो ॥
शुकदेव कह्यो नृप मनि मुनि सेबो । ठौर ठौर बहु चितु न देबो ॥
असुर अमर को बहु दुख देवहि । अमरो बहु को घातु करेवहि ॥
गपन सकमे मिल कर भाए । मुचकद मचित सो बचनु सुनाए ॥
हे नृप हमि बहुता दुख पावहि । असुरअधिकहमि भ्राइसंतावहि ॥
तुम सहाइ करो हमि भाई । असुरो सो चलि करो लराई ॥
अमरो चलि इहि भूपति सुनायो । इहि मनु मुग भूप तत्छण पायो ॥
असुरो सो बहुता युद्ध कीना । मकस असुर भूपति हमि लीना ॥
अमिरो होर्इ कल्याना । भूपति सो तिहि बचनु बखाना ॥
वर मांगो दर्वहि तुमि ताईं । हमि पर अपनु होहे अतिअधिकाई
मुचकन्द तिहि कह्यो सुनाईं । सुन भ्रा तुमि हमिरे भाई ॥
मै जा धेनु करो अधिकाईं । नृप उपज भो उपस तमाई ॥
जो कोऊ मोरो आइ जगाई । ततछाग महि भस्मति होजाई ॥
अमरा कह्यो भस ही होर्इ । जो तुम कह्यो होर्इ कमि सोई ॥
मुचकदु वर म वर पाया । ईस भ्राइ कर धेनु कराया ॥

अमरो बर अन्यथा ना आई। जो कछु कहैं सो होई भाई॥
तिह बकु पलु भस्मतु करायो। मुचकदु तिन आइ जगायो॥
प्रीछति जब ते हरि प्रतु पायो। सकल भमु तिन ह्रदे चुकायो॥
श्री कृष्ण कबिरा बकर आया। मुचकन्द दर्सनु हरि पाया॥
मुचकन्द सो बचनु उचारा। तू निकटी है भगतु हमारा॥
कछु मांगो मृप तुमि को देवों। सुप्रसन्न आतम कर सेवा॥
मुचकन्द तब बात उचारी। प्रान पूर्ण श्री कुज बिहारी॥
तुमरी भक्त रहे ह्रदे माही। जासि रहे सभ दुख मिटि जाही॥
भगत बछल प्रभ सदा सहाई। धन्य धन्य मृप ते उचराही॥
छत्री होइ भक्त मोहि जाचहि। तजि विष्या हमिरे रग राचहि॥
भक्त सदा तुम मस्तक होई। और मांगु देवे फुनि सोई॥
तब कह्यो नृप सुन हो जदुराई। और वांछा मन नाही काई॥
प्रभ कह्यो जाइ राज करावो। मोहि भगत ग्रहि माहि कमावो॥
मुचकन्द आग्या जब पाई। मथि चल्यो बेग उठि धाई॥
नग्रि माहि जाइ राजु करायो। हरि को भजनु तिहि सहित कमायो
सांका प्रभ किवार्थु कीना। सोईवास अधिक सुप लीना॥ ११७

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे इकबंजमोध्याय ॥५१॥

श्री गोपाल मथ्य पुरी महि आए। पुर माहे आइ कर ठहिराए॥
राम द्वारका सों तब आया। श्री कृष्ण नंद बहु बहु चित लाया॥
श्री कृष्ण सहित बल भद्र सहाई। महा अधिक सोभसि जदुराई॥
जरासिंध तब ही फिर आया। पुर को आइ तिन घेरा पाया॥
श्री कृष्ण रामु तिहि सन्मुख आए। सैना देखि बहुरि फिर धाए॥
महा अधिक सना तिहि आनी। पारावार न जाइ बखानी॥
तब जरासिंध के आगे भागे। महा बिकटि बन के मग लागे॥
जाइ विकट बनि आप दुरायो। जरासिंध तिहि पाछे धायो॥
जरासिंध बन आग लगाई। श्री कृष्ण कह्यो सुण बलदेव भाई
अगनि निकटि आई क्या करीए। मार्ग को क्यूं करि पगु धरीए॥
राम कह्यो सुण हो मेरे भाई। मार्गि गगन चल्यो तुम भाई॥

दोमों वीर गगन पग धारे । बधम पुर मगु लीयो बिचारे ॥
जरा सिष उलटे पग दीया । मथनापुर को मगु हुत लीया ॥
अपुने पुर माहें अमि आए । अति अनद मन माहि बसाए ॥
थी गोपाल असे ही माया । सत हेत प्रम नमु कमाया ॥
भगित बधनु की पैज रपाया । साँईदास सन्मुप झुक्कया ॥ ११८

इकि राजा कारेवत नामा । तिह् आइ पस थी बसिराम ॥
ताकी कमा पम उदार । नामु रेवती अति सुकुमार ॥
तन त्रेता का पम रिसाल । जीवत भया तिसे चिरकाल ॥
पिता राम के आये धरी । हाथ जोरि अति बिनती करी ॥
दीन होइ पस हरि भन । प्यारी सुता तुम्हारी सनें ॥
हलधर मन महि कर्‍यो बिचार । हम छोटे इहि बडी अपार ॥
हलु ताके गलि मेल्यो राम । प्रम अबनाशी पूर्न काम ॥
पिथी तम को पुर्व पुरान । कर लीनी प्रम आप समान ॥
भयो बिवाह् अनदि साथ । दूसो बने हलाइधि नाथ ॥
इसपरि जी को कह्यो बिवाह् । जपी महि अच्युत अस्य अथाह ॥
कुंदन पुर इकु नमु कहावें । भीष्म नृप तहा राजु कराव ॥
एक सुता पांच सुत पहि माही ॥
रुकमण नामु ताहि सुण पायो । निगम बात इहि मोहि सुणायो ॥
मोको सो रुकमण सुम पाई । महातपसी प्रम जादवराई ॥
बासुदेव को सुत कृष्ण है नाम । सभ बिधि पूर्न मन बिस्राम ॥
कस दुष्ट को तिन ही मारा । सकल-असुर कों पकरि संघारा ॥
जो यहु बर पावो भला होई । अवर बात करो नहि कोई ॥
शिव बनिता पूजा मन धारों । ताहि ध्यान घटि माहि बीचारो ॥
ताहि दया कर इहि बर पावों । मन इछा अपुनी सकल पुजावों ॥
शिव बनिता सें जा चितु लाया । भीष्म दुहिता जत्नु कमाया ॥
मात पिता ताके सुप पायो । इहि दुहिता यहु जत्न कमायो ॥
गौरी की सेवा चितु धारा । घटि अपुने इहि लीयो बीचारा ॥
श्री कृष्णचद हमरो पतु होई । जा बाछो देवो तुम सोई ॥
इहि प्रजोग तिहि जतनु कमायो । गौराजी भगती चितु लायो ॥

श्री कृष्णचंदि सा इहि सजुक्त करावहि ।

इस विधि कामना सकल पुजावहि ।।

रुकमनीग्रा रुकमन को भाई । तिन मन महि इहि विधि ठहिराई
ससपास सहित सजुक्त करावों । साईदास सुप मन उपजावा ।।११९

रुकमने लिप पती पठाई । नृप ससिपाल ग्रावो तुम धाई ।।
रुकमन को कार्ज कर दवो । तुमरी सेवा ग्रधिक करावा ।।
जब रुकमन इहि विधि सुण पाई । रुकमने पतीग्रा दुप्ट पठाई ।।
ससिपाल दुप्ट को तिने बुलाया । मोहि वीर माहि बैरु कमाया ।।
रुकमन इकु दिज सीयो बुलाई । ताका मोती दीए ग्रधिकाई ।।
लिप पतीग्रा ताको उनि दीनी । हाथ जोरि कर बिनती कीनी ।।
हे दिज कथन पुर पग धारो । हमरो बचनु मन महि बीचारो ।।
इहि पतीग्रा नारायण दीजे । धन बदना हितु साइ कीज ।।
निसबासर हमि तुमरो ध्याना । तुमर ध्यान उर्भे हम प्रांना ।।
जो कछु तनु मनु धनु मेरो होई । सोहु ग्रर्प कीनो मै सोई ।।
ग्रब सुभ वस्तु वेल स ग्रावों । तिहि पाछे हरि विदु सजावें ।।
मेरी सनि परी हरि तेरी । ज्यु जानो राषा लाज मेरी ।।
ससपालु असुर बहु सग ल्याया । जरासिंघ दल बकत सबाया ।।
महाबली तिनहँ दुप्ट ग्राने । कुदनपुर महि ग्रा ठहिरान ।।
दिज सदेस लेकर धाया । द्वारका पुर मार्ग चितु लाया ।।
श्री कृप्ण कहो द्वारपालक ताई । सुण हो बात मै तोहि सुणाई ।।
इकु न्जि ग्राजु दूर सो ग्रावे । हमर द्वार पहि ग्राइ ठहिरावें ।।
सो पहि तुमे बेग ल ग्राव । मतु गु मन महि कछु भगु पावहि ।।
सिएण प्रब पिद्धा तब दिज ग्रायो । द्वारपाल ल ग्रतर ग्रायो ।।
दिज को पदि प्रभ पहि पड़ा लिया ।
प्रभ मे दिज को उर महि लीया ।

पूछनि प्रभु दिज कहा सुणाई ।
कृपा करी कया मन लग ग्राई ।

दिज कह्यो प्रभ वाति सुणावो । एक एक मे ताह सतावा ।।
रुकमन मोह तोहि पाहि पठायो । इहि प्रजाग मै तुम्हि पहि ग्राया ।।

पतीमा रुक्मन की कहि दीनी। मुप अपने सें विनती कीनी॥
जो रुक्मन मुप वचन सुनाए। दिज प्रभ साई आइ वताए॥
प्रभ पतीआ रुक्मन पढि लीनी। सांईदास विधि मन महि कीनी १२॥

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे ववनमोध्याय ॥५२॥

दिज को प्रभ न कह्यो सुनाई। कार्जु कव होवे मेरे भाई॥
इहि विधि सुण दिज विनती ठांनी। मैं वनि जावों सारंग पानी॥
कार्जु तीम दिवस पाछे होई। जो विधि सी भाषी मैं सोई॥
पार ब्रह्म हरि भक्त उधारे। श्री गोपाल जी असुर संघारे॥
तव ही गर्ड को लीओ बुलाई। गर्ड आयो छिन विल्म न लाई॥
श्री कृष्ण गर्ड के ऊपरि चढिआ। दिज के सहित सै गवनु करआ॥
दो दिन श्री दिज ने दिस कीनी।
रुक्मन इहि विधि मन महि लीनी।
हम सार्थ तिह कर बहु भारी।
उनि परवाहि न करी हमारी।
रुक्मन रगु भयो वदिलाई।
पान पत्र पीरी वेत दिपाई।
सुप्म भई चिंता मन लीए।
रुक्मन दुपत है अपुने जीए।
लोक कह्यो वसुदेव के नंदन। श्री कृष्णचंद आयो मकरंदन॥
आइ वाग माहे ठहिरायो। रुक्मन इहि सुण कर सुप पायो॥
दिजु तव ही रुक्मन पहि आयो। सभ विर्तांतु तिहि आप सुनायो॥
रुक्मन निर्प अनंदु वहु पायो। चिता जीउ ते सभ तजायो॥
नग्र माहि सभ लोको सुण पायो। वसुदेव को सुतु श्री कृष्ण है आयो॥
वनिता रुक्मन का ले धाई। गोरा के अस्तल ले धाई॥
सिव वनता की पूजा कारनि। भाई चली रामा तत्कारनि॥
तहा जाइ कर पूजा कीनी। सीसु निवाइ डंडौत वहु कीनी॥
रुक्मन सों तिहा वचनु उचारा। वहु सखपाल सो सपा हमारा॥
रुक्मन रचक मुप ते भाषा। कृष्ण सपा हमरा होइ भाषा॥

तब रामा सभ कह्यो पुकारे। हे रुक्मन क्या बात उचारे॥
रुक्मन रामा को अतु दीना।
जो तुम कह्यो सो मन धरि लीना।

रुक्मनीआ सुतु भीष्म करा।
कुंदन पुर महि ताको हरा।

रथिक चढ़ायु रुक्मन संग दीए।
श्री कृष्णपद वास मन अंतर लीए।

श्री कृष्ण आयो मतु लेकर जावै।
जग महि हमहि कलंकु लगावै।

पूजा कर रामा उठि धाई।
गोरां भवनु तजि मग महि आई।

रुक्मन चटि होरे होरे जावो।
मतु आवे तुम दरसनु पावो।

जो स चले अधिक भलो होई।
माहित दसनु देवै सोई।

रुक्मम इहि मन धावै जावै।
होरे होरे पग मग ठहिराव।

श्री गोपाल दुष्ट टारनि हारा।
संत सहाई निर्मो नरकारा।

बेन बजावति तब ही आयो।
गड चढया हरि दर्सु दिखायो।

जो रक्षक रुक्मम संग आए।
दसनु दयि सकल बौराए।

ठांड रहे सुधि बुधि बौरानी।
सांईदास हरि इहि मन मानी १२१

श्री कृष्ण आइ रुक्मन कर लीना।
रथ पर आए आसनु तिह दीना।

द्वारका पुर ताई उठि धाई।
तब बलभद्र बचन सुनाए।

हे प्रभ तुम सुप सों प्रहि आवों।
तहा आइ कर मामसु पावों।
मैं पाछे युद्ध करके भावो।
जो युद्ध करे तिहि मार चुकावो।
रुकमन सहित गई हरि भाए।
राम तहँ मग महि ठहिराए।
जरासिंध भौर असुर घनेरे।
सग लीए आए बहुतेरे।
रुकमन जब इहि असुर निहारे।
गई भै चकृति मन सचर भारे।
एहि संचर कीनो मन माहि।
प्रभ सों पस्यि मोको ले जाही।
प्रभ जी रुकमन चौरि निहारा।
सचर मत ताहूँ मन भारा।
रुकमन को तब बचन उचारे।
सम निधि प्रभ जी जानरण हारे।
हे रुकमन मतु माहि डुलावो।
कचु संचर मन माहि ल्यावो।
जरासिंध मुप कह्यो सुणाई।
सुनो लौक तुम हितु मितु साईं।
सभ सभि मुप क्या मुप विपलावहि।
जो इहि जादव बंस से आवहि।
हम बडे नृप पति सति से सीए। ठाडे हैं बसु कछु ना कीए॥
जादव जात कहा बहु कहीए। ताहि नामु क्यु मुप उचिरहीए॥
धिग हमि जन्मु जो इहि ले जावें। हमरो बसु कुल सकल लजावें॥
जग महि जीवणु क्या मेरे भाई। जब कुल हमरो जाई लजाई॥
यौरे बिन जीम्रा बहु नीका। जो सोमति को लीजे टीका॥
जरासिंध इहि मन महि धारी। साईंदास जो कहित पुकारी १२२

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिवंशितोध्याय॥५३॥

जरासिंध सैना ले आया।
छत्तिशिए महि हरि के निकट आयो।
जादव तब सन्मुख होइ आए।
जरासिंध सों युद्ध कराए।
थकित भए पाछे हरि हारे।
इहि प्रयोग जादव भी हारे।
श्री कृष्ण राम आगे को आए।
जरासिंध का सन्मुख धाए।
बहु सना जरासिंध को मारी।
राम कृष्ण का बहु युद्ध मारी।
केते भाग गए ततकारा।
ससपाल निकट आइ ताहि पुकारा।
श्री कृष्णचंद को बलु अति भारी।
को समसर नाही बनवारी।
हे नृप तुम सिर होइ कल्याना।
तोहि कल्यान करे पुप निधाना।
रुकमा तबहा बचन उचारे। सुण ससपाल तू बीर हमारे॥
मैं ताहू के पाछे आवा। रुकमन को मैं फेरि ल्यावो॥
लज्जा मानु होयो जग माही। कहा मुप जग महि दिखलाही॥
मोहि बहिन को महि से आया। हमरे घर जारा उनि लाया॥
मैं जाइ तासो युद्ध मचावो। ताका हति रुकमनि ले आवो॥
म जा रुकमनि को नहो आना।
इहि निरधा मन माहे मानो।
बहुरि जीवनि ईहा न आवों।
कुंदनपुर महि पगु ना पावों।
एहि प्रतना करके धाया।
दोणूहणी सना संग ल्याया।
बचन उचार कहयो हरि ताई।
ठाढा रहु कहाँ भागा जाई।

हम सो युद्ध करके तुम जावों।
मान अमान क्यूं तुमे हिरावों।
राम कृष्ण सुण इहि ठहिराए।
रुक्मां के वहि सन्मुष आए।
जा कुछ सेना इहि सब मानी।
श्री कृष्ण राम मारी मन मानी।
चाहित कृष्ण दुष्ट को मारे।
तव रुक्ममि इहि वचन उचारे।
हे प्रभ इहि तुम गति ना जानें।
तुमरी गति को नाहु पछानें।
जब रुक्मनि इहि बात बषानी।
श्री ब्रिज राज हृदे महि मानी।
मानि तजि तिहि मूछ मुंडाया।
रथ अपने सों बांधि चलाया।
रुक्मा जब रामहि निहारा।
रथ सों बांधा है तत्कारा।
नृप अपुने ते वचनु सुनाया।
हे प्रभ ईं भला नाहु कराया।
रुक्मा को काहे बंधि लीया।
इहि कार्य्य काहे तुम कीया।
लोक हमारी निंदा करई।
श्री कृष्ण राम ऐसे चित धरई।
जब अभिवेग ने इहि बचु कीमा।
श्री कृष्णचंद मुक्त तिस कीमा।
रुक्मा प्रतज्ञा कर आया।
कुंदनपुर से जब ही आया।
जो रुक्मनि को फेरि न ल्यावों।
जीवति कुंदन पुर ना आवों।
सिर मुंडा सेना सब मारी। अब कंदनपुर के पगु धारी।
एक नगु तिह अवर बसायो। साईंदास तिह महि ठहिरायो १२३

द्वारका प्रभु रुकमनि ले आया। भले महूरत काज रचाया॥
अमरों की बनिता सभ आई। हितमान होइ मंगल गाई॥
सुरपति की दारा भी आई। मोतन माल संग ल्याई॥
तांका मोल मैं कहा बखानों। ताहि मोल की गति ना जानो॥
रुकमनि के उरि माहे डारी। असीर्वादु नृप बचन उचारी॥
तोहि पति सदा सदा ही जीवो। तांते तोहि मनि बहु सुख थीवे॥
नदी जन तब बहु मिल आए।
ताल मृदंग अनेक बजाए।
भवन भवन पर मंगल गाही।
मंगल गावहि बहु हिर्पाही।
कामरूप इकि दिन क्या कीया।
चोआ चंदन अंग को दीया।
मामनी रूप आपना कीया।
कंस महि कुस्म अधिक तिन दीया।
भंवर नाना भंग उडाए।
भूपत भवर बहु फहिराए।
सुंदर रूपु तिहि बर्नि न आई।
अनि ताहि दप बर जाई।
इकि कहा स्मसर तिहि होई।
तिहि स्मसर आन रूपु न कोई।
गौरापति के आगे आई।
शिउ जी का तिस दई दिखाई।
चाहित शिव ताई पति आया।
मन महि तिहि इहि बात बसाया।
शिव तिहि देखि हूदे लुभाना।
निहचे इहि मन महि आना।
इसे गहो गहि काम कमावों।
मन की बांछा सकल पुजावों।
शिव वाही की ओर सिधाया।
चाहित तांको उरि से लाया।

भामनी तजि के भागे धाई।
शिव ताहू के पाछे आई।
शिव बसु कर ताहू निकटि आयो।
बीर्ज शिव को धर्नि गिरायो।
शिव तब निर्प रह्यो बिसमाई।
मन महि इहि बिधि भाए टिकाई।
कामरूप मोहि छलने आयो।
मो सो इन ने दगा कमायो।
मस्तकि ते शिव अगिन निकारी।
भामनी कामरूप की जारी।
ताहि भस्म मे अंग को लाई।
शिव तजि क्रोधु कीयो अधिकाई।
कामरूप तबि बिनती ठानी।
मोहु गति कवि होइ सारग पानी।
गौरापति तब तिन बरु दीना।
इहि बचु अपने मुख ते कीना।
श्री कृष्णचन्दि जब लए अवतारा।
तिहु समे तुमरे होइ निस्तारा।
श्री कृष्णचद तुम को उपजावै।
मोहि बचु पूर्न वही करावै।
शिव को बचनु धर्यो मन माहि।
श्री गुपास बिधि सकल जु ताही।
कामरूप हरि उतपति कीना।
जमु गर्भि रुकमनि के दीना।
हरि प्रदुम्न धर्यो इसि नामा।
महासरूप बनिता बियामा।
उसि स्मसर जग अवर न कोई।
कामरूप सुंदर है सोई।
जो इसि मुख निर्ष कोई भामा।
बीर्ज डरे तजे बिस्रामा।

कामरूप जवि देप् दिपाई। सांईदास धीज न धामाई ॥१२

इति श्री भागवते महापुराणे वस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे चोरमध्योध्याय ॥ ५४ ॥

सांबर असुर तांका बनु मारी। नादि तांको कह्यो पुकारी ॥
वासकु भयो कृष्ण ग्रहि माही। तोहु नासु करसी बहु भाई ॥
प्रद्युम्न को तिहु परयो दुराई। सांबर असुर महा बल काई ॥
प्रद्युम्न दिन दस को भया। तो गहि दुष्ट उठाइ ले गया ॥
नादि वनु तिन मनि बीचार्यो।
इहि प्रजोग दभि महि धरि डार्यो।
श्री कृष्णपदि तहा भए सहाई।
मीन उदर महि तिहि सोयो पाई।
सोन वपि सब तहु समाया।
मीन उदर महि बासा पाया।
बधकि वाही मीन पहाई।
वापी मीन बाहिर जलि भाई।
बंधिक भाएा सांबर को दीनी।
दुष्ट असुर यहु कर महि लीनो।
छिन महि मांको उदर विदारा।
बालकि निकस्यो रूप उजियारा।
धनि भानु तिहु रूपु सुरावहि।
मुसलमान होइ मुष न दिपावहि।
प्रिथम एक कन्या तिस भाई।
तिहु उसका बरनु करी न जाई।
मायावती है नावो नामा। महा सुन्दरी सदर रामा
सूरवार असुर क माही। असुर भरोसो तिहि मधिकार ॥
बालक वा तासो दरि लीना। इही वचनु सांबर म कीना ॥
इसि मास्र वा करो प्रधिकार। दीप वर मानसु अधिक पचाई ॥
एक दिनसि मात नि माया। मायारती मो सबदु सुनाया ॥
पूर्व जनम का इहि पनु मेरो। मे तुम्हे करा सुना कहा मरा ॥

श्री कृष्ण पुत्र प्रदुम्न है नामा। पूर्व जन्म को पतु तुम रामा॥
रुक्मन गर्भ सो प्रगट्यो एही। एहि बालक तुमरो सनेही॥
नार्द भ्रपि इहि बचु कहि गया।
प्रदुम्न द्वादस वर्ष को भया।
मायावती प्रेमु अधिक बधायो।
प्रदुम्न के संग अति उरिझायो।
जब नान्हा तब और विधि नारी।
अबि भयो अधिक कछु और निहारी।
प्रदुम्न मायावती सो भाषा।
ताहि प्रीत देवि कर आपा।
जब मैं नान्हां सां तू पारहि।
अब अधिक भयो कछु और निहारहि।
इहि विधि का मोहि देहु विचारा।
तब बिनु होवै ठौर हमारा।
मायावती ताको उत्तु दीना।
राज कंवर विधि इहि मन लीना।
नार्द इकि दिन मो पहि आया।
मोको नार्द भाप सुनाया।
इहि बालक को जानत नाही।
पूर्व जन्म पतु तुमरो आही।
इहि प्रजोग मैं प्रीत बढाई।
जो जन जन्म तुम मोहु सुपदाई।
पूर्व जन्म विधि मन महि धारी।
तौ मन प्रीत करी अति भारी।
मायावती इहि बचन सुनायो।
माईदास मिल आनंद पायो॥१२५

एक दिनसि कन्या बया कीया।
अपुन मन महि इहि विधि लीया।
प्रदुम्न सों तब बचन उचारे।
हे प्रभ पून प्रांन हमारे।

जो तुम इरि प्रति ताहि मारो।
मरो कह्यो मन माहि बिचारो।
हमि तुम चलहि द्वारका मांहीं।
रुकमन कृष्न बसित है जाहा।
जब मायावती एह सुनायो।
तब प्रदुम्न मन महि ठहिरायो।
ताहि नग्रि महि धूम मचाई।
लोक नग्र के सभ दुख ताई।
सांबर को कछु बुरा कहाव।
मन महि ग्रासु तासि नो ल्याव।
सांबर पहि जाइ सात पुकारे।
इहि बालकु तौहि नग्र उजारे।
सांबर जबि इहि बिधि सुण पाई।
तब प्रदुम्न सों कह्या सुणाई।
मोको को काहे दुख देव। काहू दुखनि काहि कर लेव॥
तब प्रदुम्न ताको प्रतु दीना। मैं काहू को दइ म दीना॥
तू मोको बहु बहा कहाव। हमि सभो कार भगिरावे॥
तू कथा चाहति है हमि पाहे। अब हा कह ताहू चलि स्याहे॥
जब सांबर इहि बिधि सुण काना। क्रोधु कीयो मन महि अधिकाना॥
दोनां मे संग्राम मचायो। महा मधिर युद्ध तिन्ह करायो॥
असुर मायावत विद्या जान। गगन बान मन महि परान॥
माया रूप कर गज प्रगटायो। गज प्रदुम्न की ओर पठायो॥
तब प्रदुम्न विद्या मिधि लीना। मायावती म मन महि दीनी॥
कुंजर गमगुण अग्नि जराई। गज गयो भाग अगनि स्पिटाई॥
युद्ध कीओ आरि निसवासर भारे। दारु सूर कोउ नहीं हारे॥
पंचमदन बस तांहि मार्‍यो।
गनि चर्‍यो द्वारका चितु धार्‍यो।
मायावती ताहि सग साम।
द्वारका पुर कै मग पग दीन।

द्वारका निकट गए अब दोऊ।
धनि महि प्रगट भए भाइ सोऊ।
रुकमन अरु सभ नायक रानी।
बैठी दर पर सभ ठकुरानी।
जब प्रदुम्न धनि पर आयो।
एही रूपु तिस आप बनायो।
श्याम चक्र पितंबर ओढाए।
कृष्ण रूपु सम सीए बनाए।
रुकमन निर्यो क्रिष्ण श्री आयो।
इक दारा सो सग ल्यायो।
सुकच भई ग्रह महि ठहिराई।
श्री कृष्ण देख के बहु सुकचाई।
जब प्रदुम्न अगुआ ठहिरायो।
रुकमनि ने तब द्रिग निर्यायो।
श्री कृष्ण नाहि उौर है कोई।
ग्रहि तजि बाहिरि आई सोई।
तब रुकमनि ने बचनु उचारा।
ऐसा ही सुतु भहा हमारा।
मन बहु गर्भ जाइसे निकस्या।
जास देखि आतम हमि बिगस्या।
रुकमनि ने ऐसें ही भाषा।
एही बचनु उनि मुख ते भाषा।
छिनु इकु बीत्यो कृष्ण जी आयो।
रुकमनि सो प्रभ आप सुणायो।
जानति है इसि बालक ताई।
जो नहीं जानत तोहि बताई।
रुकमनि में तब कह्या पुकारे।
मैं नहीं जानों प्रान अधारे।
तब प्रभ रुकमन सों चितु दीना।
प्रदुम्न सुतु तोहि बधु कीना।

जब रुकमनि इहि विधि सुण पाया।
दौरि प्रदुम्न अंग लगाया।
तब ही बसुदेव भी आया।
दवकी सुण बहु आनदु पाया।
कचनु बहु विपों को दीना।
सांईनाम मंगलु बहु कीना १२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे पचिवंजमोध्याय ॥५५॥

सत्राजितु जादव पुर माही।
रहित सदा पुर महि सुप माही।
नितप्रति दधि क निकट आव।
रवि को तहा जाइ जापु जपाव।
एक दिनसि पढो जापु जपाए।
रवि किर्पा तब ताहि कराए।
रवि जिह समे आप चलि आया।
सना पति मणको ले आयो।
मणको ले तिह सीस बनायो।
रवि करुणा कर फिर उठि धायो।
रवि आइ गगन ऊपर ठहिराया।
मण को अधिक उजिआरा पाया।
सिर पर धरी चला पुर आवे।
मण की किर्ण सिर बहु चमिकावे।
नर नारी जायो रवि आया।
श्री कृष्णचंद सो जाइ सुनाया।
रवि तुमरे मिलने का आव।
इहि प्रयोग को दमनु पाव।
नर नारी दौरी निकट आई।
देप मगा तब मन विसमाई।
हमहि भूम कर कृष्ण सुनायो।
रवि तुमरे दसम को आयो।

रवि मण शत्राजित को दीनी।
अपुनी करुणा इसि पर कीनी।
मनापति मग न्ही विचारा।
जहा रहे नृप होइ अतिमारा।
मेम समहि अन्न उतपति होवै।
दुप दद मम ही को पोवै।
नमि क सोव अधि नृप समही
दुम न्ई तिहि सुर्त हि ममही।
दस मण कंचनु नितप्रित देवै।
अपतिग्रो सकली हिर सेवै।
श्री कृष्ण कह्यो सत्राजित ताई।
मण हमि दहि तो ममा कराई।
राम हार इहि मसी सुहावै।
हमि देवहि सुम दुख सम जावै।
उग्रिसेन राप प्रहि माही। तोहि डारि सामा न दिपाही॥
सत्राजित न प्रिमु दीना। श्री कृष्णपद म मया चित लीना॥
जो काहू ग्रहि बहु द्रव्य होई। माम का देवति नाहा कोई॥
तब श्री कृष्ण कह्या असो भाई। काहि कनि हो मोह मराई॥
मैं कछु ताहि बुरा नां कह्यो। साईंवाम क्यू इव उचिरह्यो १२५

प्रसैन सत्राजित का भाई। तांक मन महि इहि बिधि आई॥
सनापनि मगु सिर टहिराई। अपरवित वनें चल्यो धाई॥
महा बिकट बनि महि जब गया। सहा आइ कर ठाडा भया॥
मण की किरण उजीआरा पायो। मृग हेरन कों इनि चितु लायो॥
किर्णो मण का कीयो उजीआरा। सिमु निप आयो हलारा॥
सत्राजित क बीर को मारा। मण लई पसि वन को पगु धारा॥
तानो जामवान नृपि पेया। अधिक उजीआरा मण का पेया॥
जामवान कहर को मारा। मण ले आप ग्रहि को पगु धारा॥
रैन मई बधु ना आयो। सत्राजित मगु मंमि भ्रमायो॥
पुरष्योको पहि जाइ पुकारा। श्री कृष्ण मार्‍यो है बीर हमारा॥
कौन धम जग महि कहावै। पर दपम को जो नहि भावै॥

मुप ते तिन में कह्यो पुकारे। मानस ईहा कहा पग धारे॥
इहि मानुप् कहा ते आयो। साईदास जांववान सुणायो॥१२८

जांववान सुनति उठि धाया। दीमानाप सों युद्ध मचाया॥
दिनसि सप्त तिम है युद्ध कीनो।
हरि जांववान को मिहवसु कर लीनो।
द्वादश दिम प्रभु वसु कर आयो।
सप्त दस दिन तहा युद्ध करायो।
भव द्वादस दिन पूण भए। तव उनि मोकों मन महि लए॥
चल हो प्रब पुर को उठि आवहि। काहे को ईहा ठहिरावहि॥
द्वादस दिन भए प्रभु ना भायो। सकल लोक एहि मतु ठहिरायो॥
रुदनु करतिन पुर को धाए। चलित चलित पुर माहे भ्राए॥
पावन पीवन सकल उनि त्यागे। हा हा कृष्ण करनि सम लागे॥
सत्राजित को मारी देवहि। तांसो एही वचन उचिरेवहि॥
हम सौं दूर गयो चतुराई। नारायण सोहि नासु कराई॥
हमिरो जीव प्रानपति पायो। तू अपुने ग्रहि महि सुप सोयो॥
तुमरे ग्रहि को राम जराई। जसी अग्नि तें हमि तन लाई॥
जांववान वसु कृष्ण हिरायो। जांववान निदचै मन भायो॥
इहि नारायण रूपु दिपावे। मानुप हमि की दिष्ट न आवै॥
मानस कौं बसु कहा बसावै। जो हमि सेती युद्ध करावै॥
चान्द्र लेकर उर महि डारी। तव बहु सति आमो गिरधारी॥
चर्न गहे कह्यो मैं वसि जावा। इही दानु मैं तुम से पावा॥
मेरा औगुण सहा मिटाई। मैं युद्ध कीनो सन्मुप धाई॥
मण कन्या के सहित ल्यायो। हाप जोरि प्रम भाप सुनायो॥
हे प्रभु इहि सेवा तोहि करई। तोहि सेवा मन चितु धरही॥
मण भरु जामवती प्रभु लीने। अपुने पुर के मग पग दीने॥
तजि कदरा बन भाइ ठहिरायो। देवकी कौ तब भाप पठायो॥
मैं इकु काजु कीयो ले आयो। बन महि ताह सहित ठहिरायो॥
तुम भावौ हमि को ले जावौ। भेद कहा मन महि ठहिरावौ॥
भव देवकी इहि विधि सुण पाई। सकल लोक पुर ले सम धाई॥

सुम किर्पा छूने पांडवाइनि । उनि को रक्षा कोई नराइनि ॥
श्री कृष्ण सुनी जब इहि विधि कोना । रथ पर चरयो पुथ निधाना ॥
वसिदेव को हरि ने प्रतु दीना । हस्तनापुर को हरि पगु दीना ॥
पांडो सुत को पूछन भाए । उग्र सैनु रसकु तजि भाए ॥
सुपसकि सुत को पुर तजि दीधा । कति ब्रह्म भाशा तहुं कीमा ॥
सुधन्वा सहू ही ठहिराहो । औरं सैना पुर महि प्रधिकायो ॥
सुधन्वा सत्राजित को भाई । पुर महि छाडे कौर कहाई ॥
प्राप ततक्षिण हस्तनापुर भाए । पांडो सुत बहुन हिर्षाए ॥
प्रसि मनवु पांडो सुत पायो । श्री कृष्णचरि जब दर्सु दिखायो ॥
सुपसन्सिुत पुर कबन माहो । सुधन्वा मिल मत्र कराहो ॥
सत्राजित को मार चुकावहि । इस ते मण पस करि हमि स्यावहि ॥
हम सा हन न पवर न कोई । प्रपुनी कन्या कृष्ण को दई ॥
धर्म मे गगन कीयो उजीमारा । इनने सत्राजित को मारा ॥
सनापति मण को से भाए । भिन्न भिन्न पहि जा ठहिराए ॥
सतधन्वे इहि कर्मु कमायो । सांईदास तिह मार चुकायो ॥१३१

सतिमामा जब इहि सुण पाई । रुदनु करति पित के मग माई ॥
रथ पर चरि हस्तनापुर भाई । ततक्षिण महि गोबिंद पहि भाई ॥
सभ बितातु प्रम भाइ सुनायो । सतिधन्वे मिल इहि कर्मु कमायो ॥
मम पित मार मण पडी बुराई । प्रब चाहित और कर्मु कमाई ॥
जब इहि बिधि पाई गिरिधारी । ततक्षिण गड को लोयो पुकारी ॥
तिह चरि कबनपुर को भाए । वेग माहि पुर माहे भाए ॥
सतिधन्वा सुण इहि बिधि भागा । महा बिकट बन के मग लागा ॥
प्रम ताहूँ के पाछे धाया । सतिधन्वे बन महि प्रापु छिपाया ॥
पकिर सतिधन्वे को हरि मारा । तब ही प्रभि मुप बचनु उचारा ॥
सत्राजित उ गुण ना कीमा ।
ते काहे तिस को हति लीमा ।

मण काहू सो प्रगट न होई ।
श्री कृष्ण कह्यो मण इन कहू खोई ।

श्री कृष्ण बहुरि पुर माहे प्राया ।
प्रपुने ग्रहि महि प्रासनु पाया ।

मए सुपसकि सुत पची बुराई।
नपि बनार्सी बठो जाई।
मेघ न बर्पहि अन्न नही होव।
इहि विधि लोक अधिक मन रोव।
कुकत कुरुत हरि पहि आए।
श्री कृष्णचन्द सो बचन सुनाए।
जिह दिन से मए ईहा ते गई।
जरा रोग दूषन बहु भई।
पुर सकला बहुता दुपु पाया।
तौ हम तुम को आइ सुनाया।
एकु दूतु प्रभ लीयो बुलाई।
सुपसकि सुत पहि दीयो पठाई।
दूत को प्रभ ने बहु समभायो।
सुपसकि सुतु को कह्यो सुनायो।
पुर बनार्स ताको बासा।
सुपसकिसुतु हमि दर्स को प्यासा।
जो मम भक्ति धीघ्र तुम आवौं।
छिन रजिक तहा बिल्मु न लावो।
दूत आयो अंक्रूर के पाहे।
जो प्रभ कह्यो सो कहिस सुनाहे।
जब अक्रूर सुणी बिधि जाना।
आनंदु भया हृद सुप माना।
पुर बनार्सी को तजि धाया।
सतदिएए कोसापति पहि आया।
श्री गोपाल नें तब कया कीया।
सुपसकिसुत को अग महि लीया।
हमबर सुप सें बचन उचारा।
सुण सुपसकि सुत मीत हमारा।
जिह प्रयाग महि पुर तजि दीया।
बासाम शिउ बासा गाया।

सुफलकि सुत इहि वचनु सुनायो।
सज्जामान सिर तम करायो।
सनापति मरा हरि को दीनी।
सज्जा अधिक हृदे महि कीनी।
नृप त कछु ना वचन उचार्यो।
प्रभु वचु मृण सज्जा चित धार्यो।
अब ते मरा पुर माहे आई। जरा रागु भाग्यो सम भाई॥
भई कल्याण कचन पुर माही। साईदास दुख सकल मिटाई ११२

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे सतवंमसोध्याय ॥५७॥

पाडवसत बन ते ग्रहि आए। आन पैठ राजु कर्ने लागे॥
दुख वदु गए सम भागे॥
श्री कृष्णचदि हृदे लीयो बीचारी।
था गोपाल सुंदर अधिकारी।
दुर्जोधनु हमि मिल्यो नाही।
इहि प्रजोग मन महि बिसमाही।
हरि पांडा सुत देखन आए।
ततछिण महि हस्तनापुर आए।
अग अग सभहू मोहाए।
ताके दुख सकल हरिपोए।
तब पाटवान्ग बिनती ठानी।
क्रपा करी प्रभ सांरगपानी।
सफलकिसुत प्रभ ताहि पठाया।
जिह सम तें प्रभ आत्मराया।
हमि उपरासा बहुता कीना।
अपुन जाम इहि बिधि कर लीना।
तब ही पुर के लोको जाना।
इहि सिदपै मम अक्षर माना।

श्री कृष्ण सहाइ है इनि करा।
इनि क दुप आवै नही नेरा।
धमपुत्र फिरि वास चलाई।
सुण ह्वा प्रभ भक्तिन सुपदाई।
अब जो वासु निकट ह्व आया।
हम मन महि एहि ठहिरायया।
ईहा रहो किर्पा प्रभु धारे।
हमि कहा मन सहु बीचारे।
श्री गोपाल बिधि जानए हारा।
ताहु भाव देपि मुपो पुकारा।
धम पुत्र जो मै मन भाई।
सो पहि सभ ही कह्यो सुनाई।
जो तुम कहा सो मैं मन लीया।
प्रीत भाव तुमने जो कीया।
एह दिनसि प्रभ बचन उचार।
सुण हो अर्ज्जन मीत हमारे।
प्रात समें बन महि हुमि जावहि।
अपेर करहि मृगु मारि ल्यावहि।
अर्जन कह्यो भलो जदुराई।
जो तुम कह्यो करहि हमि साई।
सुरपति सुनति प्रभ की गल धायो।
प्रात समे बन माहे आया।
महाबाहो को त्रिपा ब्यापी।
जमना तटि चलि आयो आपी।
चाहित है जल को अचि लेवें।
दृष्टि त्यागु धांत मन देवें।
एक कन्या महा रूप उजीआरा।
फिरति फिरति जमुना तटि द्वारा।
तेरो नामु कहा पति तेरे।
कहु कन्या तू आग मेरे।

काहू को हमि तटि पर आई।
कौनु प्रयागु ईहा ठहिराई।
सुमरे मन महि मो नही भावति। साईदास अर्जन उचिरावति ११३

तिह कन्या अबन प्रितु दीना। सुण हो अर्जन नाम प्रवीना॥
रवि दुहिता कालिन्द्री नामां। रूप की अति ही सुंदर भामा॥
जिह समे श्री कृष्ण गोकल क माही।
रहित बिन्द्रावन येम चाराही।
तिह सम मै वसनु तिहि कीना।
अबि मै अैसे पुण कर लीना।
पुरी द्वारका दधि माहि बनाई।
अबि हेति हो तिस भाई।
तांको प्रतु अपना मै करहो।
ताहि चर्न रज मस्तक धरहो।
महाबाहो सुण तिह प्रितु दीना।
हे कन्या तें इहि मम कीना।
श्री कृष्ण द्वारका सो ईहा आयो।
हमि पर कृपा करी ठहिरायो।
मोहि संग बसु तुझे देखा दिखाई।
मम प्रतीत कर राम दुहाई।
रविदुहिता अर्जन सग आई।
ततक्षिण महि प्रभ पाहे धाई।
करी डंडोत अधिक हरि ताई।
तांकी उसतति महा बताई।
जमना सों श्री कृष्ण सुनायो।
मै तुझे तब अपने पग लायो।
जिह समे मै लीनो अवतारा।
मथुरा तजि गोकल पगु धारा।
मोह वछोहो तै बहु पायो।
मोहि बधाहि तुझ बतायो।

अब तुम बिनु अपना ठौर रायो।
बिना भाम हरि औरु न भायो।
रचि पर भार उग्रि महि स्यायो।
कौमापति इहि कामु कमाया।
चतुर मास सखा कीयो गुजराना।
थी अनुनाथ सदन क प्राना।
पांडो सुख सें भाखा पाई।
द्वारका को हरि चल्यो धाई।
तबखिरा कंचन पुर महि भायो।
अहि माहे आइ कर ठहिरायो।
तब ही श्री गोपाल सुरा पाई।
नग्र अयोध्या बसी सुहाई।
भूप तनपजति राज करावै।
तिह पुर महि लोक बहु सुघु पावै।
सता नामु दुहिता अहि माही।
ताहि स्वुमबर रच्यो चाही।
एही प्रतशा तिन मन धारी।
साँईदास तिस एही बीचारी ॥१३४॥

सप्त बैल सुत तिह अहि माही।
दस दस हस्त बनु इकताही।
जो इनको बांधे इकि बारा।
तिन कन्या देवो सतकारा।
नग्र नग्र क भूपति आवहि।
ताहि सुअबर महि ठहिरावहि।
एक बार कोऊ बांधि न साकहि।
थकि रहे कछू मुपहु न भावहि।
चकित चकित अपुने पुर धावहि।
बनु मही भाम तन उठि आवहि।
श्री कृष्ण सुमत बिधि उठि कर आया।
द्वारका बांझ अयोध्या आया।

इक बन महि श्राइ डेरा कीना।
नृप नयअत ने सुण कर लीना।
श्री कृष्णचंदि श्राइ बनि ठहिरामे।
प्रान पुर्प सम विप्र हिराए।
नराधिप भेटा सग लीए।
श्री गोपाल ओरहि पग दीए।
श्री कृष्णचंद की चरनी लागा।
दसन देपि सकल भ्रमु भागा।
हाथ जोर श्रागे ठहिरायो।
बलिहारि जावों नृप ते उचिरायो।
कैसे हैं करुणा प्रभ धारी।
मोह कीट हुदे लीयो बीचारी।
श्री कृष्ण कह्यो सुणहो नृप वाता।
तुम सुपदाई हमरे भ्राता।
हमि क्षत्री तुम विर्द्ध कहावहि।
बाचन काहू पहि नही जावहि।
एक वस्तु तुम पाहि जचावो।
बाचा तौ जो मैं वहि पावो।
नृप कह्यो मांगो प्रभ मेरे।
जो मो ग्रहि श्रामे प्रभ तेरे।
श्री कृष्ण कह्यो कंन्या हमि देवो।
एही बात मोहि मन धर लेवो।
जब श्री कृष्ण इहि बचनु उचारा।
नपिमति तब ही कीयो बिचारा।
कर बीवाह प्रभ को प्रतु दीना।
हाथ जोर दोऊ बनती कीना।
कन्या कहा प्रभ प्रांन तुहारे।
तम बच पूर्न करो हमारे।
तब श्री कृष्ण कह्यो बतिसावो।
कौन प्रतग्या दीई ठहिरावो।

तांको न पूरी कर लेवो।
तोहि प्रतज्ञा को फलु देवों।
राजे नपिजति कह्यो पुकारो।
एहि प्रतज्ञा हमहि मुरारी।
सप्तबैल सुत हम ग्रहि माही।
महा अधिक बमु है अभताही।
ताहु को है इक बार बैठाई। एहि कन्या लेवे प्रभ साई॥
श्री कृष्ण कह्यो ऐसे मैं करयो। एहि प्रतज्ञा न चित धरहो॥
कमल नैन हरि कु अ बिहारी। कटि को बांधि हरि लीला धारी॥
सप्त रूप हरि लीए बनाई। ऐसी बिधि कीनी अदुराई॥
और सभू को एक दिखावै। दूसरो कृष्ण तांको दिष्ट न आवै॥
सप्त की एकि बार कोहै वठीनी। श्री कष्ण ऐसे बिध कीनी॥
नृप ने अब ऐसी बिधि देषी। प्रतज्ञा पूरण भई नृप पेषी॥
कन्या को कार्ज करि दीना। कचन मनी मोती बहु दीना॥
कुंवर असव दीनी बहु घेरी। कहा गणो बुध गणो न मेरी॥
श्री कष्ण लई सगि पुर को धाया। आन भूपति सम द्रिग निर्पाया॥
उनि मन माहे कीयो विचारा।
साईदास बिधि कहित पुकारा॥१३५

भूपति सम मिलि मतु ठहिरायो।
हमि बालक हमि सीस कटायो।
हमि बडे बडे नराधिप आए।
नृप कन्या कार्ण ठहिराए।
बसुदेव सुत कन्या ले जाई।
इहि बिधि हमि को नाहि भलाई।
एहि मतु करि सकल उठि धाए।
श्री कृष्ण को मगु इम्हा आइ रोकाए।
महाबाहो तब बचनु उचारा।
श्री कृष्णचंदि को कह्यो पुकारा।
तुम किर्पा कर आगे जावो।
कछु बिस्वासु न मन महि ल्यावो।

मैं हम यों सग्राम मचाई। तोहि किर्पा हम मार चुकाई॥
पाछे से मैं भी प्रभ भ्रावो। बेग बिलम कछु नाही लावो॥
श्री कृष्ण चले द्वारका महि श्रायो। श्रर्जन पाछे युद्ध मचायो॥
सम भूपति कौं श्रर्जुन हिरायो। ताहि हिराइ पुर श्राप सिधायो॥
एक चोपिता हरि उौर ल्याए। भग नाम तिहि वेद वताए॥
लछमना जानी श्री भगवत। स्वबर चीते भूप घनत॥
श्रष्ट नायका वरी मुरार। कौतक करहि श्रनंत श्रपार॥
सतिभाषा तबि बिनती ठानी। हे प्रभ पून सारंग पानी॥
उौर सकल है द्वारका माहे। इक कल्पब्रिछ ईहा नाहे॥
जो तुम सुरपति भ्राप पठावो। कल्प ब्रिछ ईहा ले भ्रावो॥
एहि बात सुगरु करि करही। तोहि कहा मन भ्रतर धरही॥
श्री कृष्ण गर्ब को लीयो बुलाई। ताहि सबार भए श्रदराई॥
सतिभाषा को हरि संग लीना। स्वर्ग को तब ही पग दीना॥
एक भ्रसुर नरकासुरु नामा। तिन में एही कीनों कामा॥
कुंडिलिस के लीए छिनाइ। उौर लोक ताते दुख पाइ॥
रवि सुत नास ते कोट बनाइ। सप्त कोटि कछ कह्यो न जाइ॥
एक स्वावर को कोटु कीना। एक भ्रग्नि केरा कर लीना॥
उौर एक पाहन को कीयो। एक किर्मानी को कर लीयो॥
एक लोये का ग्रह जु बनायो। एक धात को उपजायो॥
ताहि द्वारे पानी वहायो। इहि बिधि करकें कोटि बनायो॥
श्री कृष्णचद ताहु निकट भ्राए। महा बिकट मगु तिह निर्पाए॥
नर का सुख किवार चराए। श्री कृष्णचद भहू मगु ना पाए॥
श्री कृष्ण स्वाबरि कोटु गिराया।
पाछे भ्रग्नि को दूर कराया।
एसी ही सभ कोट बिदारे।
श्री गोपाल लीम्हा तहा मारे।
नरकासुरु कूबर बनि भ्रायो।
युद्ध करनि को छिम बिलु ल्यायो।
श्री कृष्णचद को बानु चलाया।
दुष्ट को कालु निकट है भ्राया।

श्री कृष्ण सुदर्शन चक्र लीना। ताको सिर तिन नें दूर कीना॥
अष्ट पुत्र नरकासुर केरे। युद्ध करने को आए नरे।
श्री जदनाथ तिह मार चुकाया। नरकासुर दारा सुण पाया॥
कुंडिल से वाके ग्रहि माही। जोपता सुरपति केरे वाही॥
नरकासुर बलि के तिह ल्याया। अपुन गृह माही ठहिरायया॥
और छत्र सुरपति सिर करा। जो भी ग्राह्य वाक करा॥
नरकासुर जापिता से आई। श्री कृष्ण आगे आइ ठहिराइ॥
कह्यो कृष्ण जी इहि तुम लखो। इमि का तुम अब दुःख न देवो॥
तब श्री कृष्णचंद क्या कीआ। बहुमासुर को सदि कर लीआ॥
नरकासुर का सुत बहुमासुर। हरि सौ प्रीत ताकी निसवासुर॥
श्री कृष्ण तास को कीना राजा। करा कलोल बजाको बाजा॥
नरकासुर असुर महा बलकारी।
तिह नृप दुहिता आनी अधिकारी।
सोलह सहस्र एक सौ बीस।
पति आनी कन्यातिहि सीस।
असे महूर्ति काजु करायो। इनि सभना कौ आप बिआहो॥
जब प्रभ नरकासुर को मारा। पाछे प्रभ इहि बचनु उचारा॥
बहुमासुर को कह्यो सुणाई। इन सौ जोसे डारो भाई॥
आप सहित द्वारका ले जावौ। पुर माहे इनि को तजि आवो॥
म तुम को इहि आज्ञा दीनी। मैं इहि करुणा तैं पर कीनी॥
बहुमासुर ताको ले आया। साईदास द्वारका ल आया॥६३६

इति श्री भागवत महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे अष्ट पचासमोध्याय॥५८

श्री गोपाल तब सुग सिधारे। ताकी मासहा अपर अपारे॥
कुंडिल इद्राणी को दीना। हिर्षमान होइ कर तिह लीना॥
सुरपति सौं हरि बचन उचारा। सुण हो सुरपति बचन हमारा॥
कल्प बिरछ द्वारिका महि माही। तौ मैं आयो तुमरे पाही॥
जो कह्यो कल्प बृक्ष ले जावहि। पवि द्वारका महि ठहिरावहि॥
सुरपति सकल देव इहि सुनायो। तांसा सुगर आप सुणायो॥

श्री कृष्ण कल्पब्रिछ लेने आयो। मोसा असे बचनु सुनायो॥
कहो क्या कीजे मेर भाई। कल्प बृछ मांग्यो जदराई॥
सकल देव रमा कह्यो पुकार।
हमि कल्प बृछ देवा न मुरारे।
कहु कैसे हमि तिस को देवहि।
हमि तिह देव कहा हमि लेवहि।
हमि सौं कैसे वह ले जावै।
हमि संग ताको कहा बसाव।
जब अमरो इहि बचन उचारे।
सुरपति सुण मन असर धारे।
श्री कृष्णचंद को कह्यो सुनाई।
सुण हो पूर्न प्रभ जदुराई।
कल्प बृछ तुम अमर न देवहि।
जब लेवहू तबि युद्ध करेवहि।
ईहा ऊहा है तुम बसि माहि।
हमिरे तो बसि कछु प्रभ नाही।
जो कछु मन भावे सौं करहो।
मम ऊपरि प्रभ दोसु न धरहों।
कल्प ब्रिछ प्रभ जी ले आए।
अमरो ने इहि बिधि सुण पाए।
सकल अमर मिल युद्ध को आए।
प्रभ लीला कर सकल हिराए।
कल्प ब्रिछ पुर माहे आना। अति गंभीर हरि चरित सुजाना॥
सति भामा के द्वार लगायो। श्री गोपाल ने ऐसे लायो॥
पंडित जोतकी लीए बुलाई। तांको कृष्ण कह्यो समझाई॥
भलो महूर्त देहि बताई। इहि कन्या कार्ज करो भाई॥
भलो महूर्त तिन में पायो। कन्या सौ प्रभ बाज रचायो॥
सब ही प्रभ में लीला धारी।
सम प्रहि प्रगटि रहित बनवारी।

सभ जानत प्रभु सभ प्रहि माही।
रजना समे रहे सभ पाही।
पाडस सहस एक सौ वीस। प्रष्ट ठौर दारा जगदीस॥
इहि सभ वनिता जगदीस।
इहि सभ बनता है प्रभ केरी। प्रष्ट नायका ठौर सभ चेरी॥
प्रिथम नायका रुकमन रानी। द्वितीया जामवंती बहु स्यानी॥
त्रितीया सत भामा तिह नामा।
चतुर कलिंद्री जमुना नामा।
पचम भद्रा है मेरे भाई।
षष्टम लछिमी कहित सुनाई।
सप्तम मित्रविंदा कहीए।
प्रष्टम सुलाचान उचिरहीए।
सवा सदा प्रभु तिहि सुप देवै।
साँईदास सुप बहु उपिजेवै १३७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवाद उणाहठमोध्याय॥२२॥

एक दिनसि कौसापति केसर।
प्रयंकपर सैन कीयो पर्मेस्वर।
नायक सभ ठाँडी हरि प्रागे।
करत सेवा माया मोहि त्यागे।
श्री कृष्णचदि मन लीयो बीचारा।
यहाँ तहाँ मैं लीनो प्रवतारा।
रुकमण सदा सदा सग मेरे।
लछमी रूप कहित मोह मेरे।
इस ते पूछो हसि चित होई।
तास समे की वार्ता कोई।
रुकमनि सों तव वचन सुनायो।
सुण हो रुकमण हितु चितु लाया।

वडे नराधिप तुम को लोरहि।
चाहित प्रीत तुमहि सग जोरहि।
जरासिंधु दत बक्र बलिकारी।
तामहि दिम्य महा ममिकारी।
सम बाते बहु हमि ते मीके।
मति बहु भले नदा बहि जीके।
उनि कों त्यागहो हमि हितु माया।
किह प्रजोग इहि कर्मु कमाया।
जो माप सो मीच सो करे सगाई।
तां बहि भला न होइ बुराई।
जो सग उत्तम मापते कीजै।
तौ भी भला ना बिप को पीजै।
जा समसर का करै मकाई।
महा मनंदु दु'पु मूल न पाई।
मैं तुम कों तांसों से भाया।
द्वारका पुर माहे ठहिरामा।
मब तू जिस को मीका जाने।
मेमधर्म महि नमा पछाने।
उसको मपुना पतु कर सवो।
हिर्दमान होइ तांको सेवो।
जब रुकमणा प्रम मुप ते सुन्या।
मूर्छा होइ मटिक तनु भुन्या।
मनि गिरि सभ सुध विसरानी।
नैनो सों तब ढर्यो पानी।
दीनानाथ विधि जानग हारा।
मनर जामि प्रान मधारा।
रुकमन का करकर महि लीमा।
रुकमन को से ठांढा कीना।
तज ही प्रभ ने बचन उचारे।
सुन हो रुकमनि बचन हमारे।

ठौर रापु बिसु नाहि डुलावा।
सुति मंदिस माइ बपु उकिसाव।
मैं तो तुम ताई पतीआवों।
मैं तो तुमरो मतरु पावो।
इनि सावन सों वरु हुमारा।
मैं मन महि सचरु मपु धारा।
तब रुमन हरि को मतु दीना।
कौसापति ने को बधु कीना।
पमभू भारम मरु बमावहि।
पो इनि वसि सी बहु दुःख पावहि।
सदा सदा दुःख महि उर्भवहि।
अनिक जोन माहे समविहि।
जो इनको मपुने बस करही।
सदा सदा इनि सेती सरही।
वाही गति तुम प्राप्ति होवहि।
जरा रोम सम तन ते पोवहि।
हे प्रभ एहि मचनु जो भापा।
नेम धर्मु उरयमु जो मापा।
तुम सों उत्तम कौनु कहाव।
भीष्म सुता इहि बचनु सुनावें।
यो कृष्णचदि फिरि कर प्रितु दीना।
मुप मपुने सें इहि मधु कीना।
इहि प्रजोग मैं बात बनाई।
तुम चित धार्मति न विसराई।
जिह जिह ठौर मैं सीयो प्रवमारा।
भाइ जगत महि सोमा उजीआरा।
नहू बहू तूं हमि सग आई। यस कर मैं मात बनाई॥
रुमन इहि सुग ममु हिराया। माईदाम मुप बहु मन पाया ११८

इतिश्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्रीसुकदेव परीक्षित संवादे सटमोऽध्याय॥६०॥

रुक्मनिम्रा रुक्मनि को बीरा। प्रति सजान बचस मन धीरा ॥
कंन्या की तिन करी सकाई। प्रदुम्न सों संजुक्त बनाई ॥
मन चाहित काजु बहि कराई। मन अंतर एही विधि धरही ॥
रुक्मनिम्रा रुक्मनि को माई। रुक्मन कृष्ण को पठो बुलाई ॥
पाछे सेती बराति हाइ आए। बलराम प्रदुम्न सहित मिलाए ॥
बहिन को पूतु प्रदुम्न है तांको। अबि कंन्या दीनी तिहि बांको ॥
नृप बहुते तिन लीए बुलाई। तिहु नराधिप इहि मतु ठहिराई ॥
बलराम सहित इक बात चलावहि।
ताहि बात सों तिसे पिम्भावहि ॥
रुक्मनिम्रासों मतु ठहिरायो। चौपडि खेलण सों चितु लायो ॥
तांसो बात राख्यो मेरे भाई।
ताहि पिम्भावहि अति अधिकाई।
जो बहि जीते हमि भूठ चलावहि।
भूठ कहें तुमको जितवावहि।
हमि काहे रुक्मनीभ्रानें जीता।
तें कछ भूठु हमि मिथ्या कीता।
रुक्मनीभ्रा बलिदेव खेलण लागें।
और बात जनि सकल त्यागें।
प्रिथमे तिह मे दाउ ठहिरायो।
कंचन बीस तोल तिन्हा लायो।
प्रिथमे रुक्मने जिण लीना।
बलिदेव मे तांको बहु दीना।
बहुरो एक सहस्र बहु लागो।
मुहू धोरि राख्यो जनि आगे।
अबि बलिदेव नें तांसों जीता।
इन भूपति बचु मुप ते कीता।
रुक्मना ने एमी जिण लीया।
भूठु बचनु तिन नें इहि कीया।
बलदेव मे तांको प्रतु दीना।
काहि भूठु तुम मन महि कीना।

मैं जीत्या मधु झूठु भलायो।
रुकमने को नाम उचिरायो।
रोहणी सुत भ्रम भी तिहि दीग्रा।
जाएा बूझ के इहि विधि कीम्रा।
दस सहस्र तिन ने फिरि धरे।
दुइ कोरि धाम तिन्हा करे।
भ्रव भी रोहिणी सुत ने जीता।
इनि सभ कहा जो झूठ सुम कीता।
भ्रव भी रुकमे ने जिए लीमां।
ऐसे वचन तिहि नृपति कीमां।
दुष्ट सभा कहा ईहा भाई।
सच्च न को मुपसे उचिराही।
मैं जीत्यो रुकमनीम्रा भ्रापहि।
सकल सभा मिथ्या नृप भाषहि।
बलदेव न बहु क्रोपु कराया।
भ्रधिक क्रोधु मन माह स्यायो।
दत चक्र को दसन उपारे।
महा क्रोध मन माहि सम्हारे।
रुकमनि को पकिर पछारा।
ताको जीउ लीउो ततकारा।
कस को सर्व हुता दुख पाया।
सभ ही मागधि को चितु साया।
भ्री कृष्णचंद इहि विधि सुएा पाई।
मन महि भ्रधिक भयो विसमाई।
जो कहो भला कीम्रा मैं मारा।
तिस पापी को पकर पछारा।
तब रुकमनि मन महि बुरा मानें।
भ्रपुने मुख तें बचन बखानें।
मम बंधू को इनि ने मारा। श्री कृष्णचंद मुया भला उचारा॥
जो कहो बुरा कीम्रा तै भाई। तौ बलदेव दुखत भ्रभिनाई॥

तैं पातक को लीयो हुसाईं। कृष्ण काहित बुरा कीना माई॥
ईहा मसा कछ नांउ चितारो। मन काह्यो तब ही सुप पावो॥
प्रदुम्न को कार्यु कीना। कंचन पुर भमिने पितु दीना॥
रुकमनीमा के रे पुर माहैं। कृष्ण छाड्यो पर कामु पसाहैं॥
प्राप द्वारका को पग धारे। माईदास गति अपर अपारे॥१६१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे एकाहिठमोध्याय॥६१॥

जोपिता श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
षोडश सहस्र एक सा बीस अधिकाई।
और बीस फुनि अष्ट है रानी।
तास सुत की करो बपानो।
दस दस सुत समना के ताईं।
एक एक कन्या गोदि मंझाईं।
इकि अपि इकिसठि सहस्र से दोई।
एते सुत इहि सुत सम होई।
एक एक कन्या है सम ताईं।
ताकी उपमा कही न जाईं।
बाणासुर असुर सिव सेव कीनी।
अधिक सेव मन अंतर लीनी।
गौरापति पहि बावनु करी।
सहस्र भुजा होइ हमरो हरी।
गौरावर तांको बर दीना।
सहस्र भुजा तांको कर लीना।
महा पराक्रमी अति बलिवाना।
और नही कोऊ ताहि समाना।
केतिकि दिन पाछे फिरि आया।
गौरापति पहिं आइ ठहिरायां।
हरि पहि आइ बचनु उचारा।
अधिक फिग्या दूइया सधारा।

जो कोऊ होइ तासो युद्ध करहों।
युद्ध करनि को मै चितु धरहों।
कोई न प्रगट्या मोहि समाना।
युद्ध करो तासो मन माना।
आवो हम तुम युद्ध करावहि।
कर सों कर हम तुम मरवावहि।
तब शंकर ने बचनु उचारा।
जिह बरु देखों सो धनु हमारा।
है मत मूढ गब मन कीनां।
अति अभिमानु हृदे महि लीना।
जो मोहि सर दूजा नही कोई।
जो मैं करो सोई कछु होई।
जिन गर्बु कीयो सों भयो बिनासा।
ताकी पूर्ण भई न आसा।
तोह नैन महि आहु आंधी।
जो है धजा गृहि ऊपरि बांधी।
आजु ते दसि दिन ऊपर माहें।
तोहि ग्रहि धुजा बसुधा पराहें।
सब से तू लिख्बे कर जानें।
बड़ो छोटो तब मन महि माने।
एक कन्या बणासुर गृहि आही।
ऊषा नामु सभ जानें ताही।
इक रैंन समे ऊषा ग्रहि सोई।
तास द्रिष्ट नरु पर्यो कोई।
कमल नैन पीतवर अंग।
क्रीड़ा कीनो ऊषा संग
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा।
ऊषा जाग परी सुपु नासा।
जो सिस देषा दिष्ट न आवै।
तब ऊषा मन महि बिसमावै।

सब ही मन महि कीयो बिचारा।
दुखित भई बहु सकला दारा।
कहा भयो निस ईहा मायो।
इहि प्रयोग हिय चितु बिसरायो।
इक कंन्या मंत्री मन माही।
रहित सदा सम ऊखा पाही।
मंत्री दुहता ने निर्पाई।
बिस्मकि ऊखा तिह ध्रिष्टाई।
ऊखा सो तिन बचन उचारे।
राज कंवर तैं क्या मम मारे।
जो इहि प्रयोग मन महि बिसमाई।
चाहित अपुना काजु कराई।
ए ऊखा तू बहु सखी मेरी।
मोको पीर लागत है तेरी।
मै आइ अपुनी मात सुनाओ।
तोहू कार्ज उपचार कराओ।
मोह मानि मोहि पित सो भावै।
मम पिता तु पिता सो भावै।
तब सुमरो कार्जु कर सेवहि। जूं माँगे सो तुम्हि देवहि॥
जो इहि ते औरहि कछु होई। साँईदास मोसो कहु सोई॥१७०

चित्रलिया है मेरो नामा।
मै बहु स्यानी हो सभ रामा।
जो तिह लोक मै होवहि कोई।
त पहि प्रगटि करों मै सोई।
प्रथम ब्रह्म लोक सिप लीमा।
मान ऊखा के आगे कीमा।
इस महि देखु जो इनि महि होई।
मम को वेहु बताई कर सोई।
ऊखा निर्प कह्यो ईहा माही।
चित्र लिया सुण्यो मम माही।

पाछे प्याल लोक लिप ल्याए।
सुता बणासुर कौं दिपलाए।
कह्यो नन पोलह् निर्पावो।
प्याल लोक माहे चितु लावो।
ऊपा निप कह्यो सपी मेरी।
तू जाने बिर्था मन केरी।
इसि महि मी मोह् द्रिष्ट न आवहि।
मम मनु बहुता भर्मु भुलावहि।
बहुरो जादम सकल लियाए।
श्री कृष्ण लिख्यो लिप चाक बनाए।
पाछे से प्रदुम्न चित्रायो।
इही होइया इसि को भाई।
या इसि सुत औरु कह्यो ना जाई।
तब बाछे अनरुद्ध सवारा।
राज कन्या ने नैन निहारा।
तब नृप ते कह्यो है यही।
जो मेरो बहु भयो सनेही।
चित्र लिपा तब शब्द उचारा।
प्रदुम्न सुत है इही पुकारा।
नाती श्री कृष्णचद को कहीयै।
इसि को नामु अनिरुद्ध की लहीयै।
द्वारका माहि इसि को बासा।
मैं आनो इसि को तोहि पासा।
अपुनो मनु तू नाहि डुलाई।
मैं इसि को आनौगी जाई।
चित्र लिपा यम लिप कर लीना।
गवन द्वारिका पुर को कीना।
अनरुद्ध ग्रहि ऊपरि धरि सोया।
श्री कृष्ण नामु मन महि परोया।

चित्ररेषा पुर माहे माई।
पग वपु तिह कीनो अधिकाई।
प्रद्युम्न अनरुद्ध को कर लीना।
गगन मार्ग ताहि पगु दीना।
अनरुद्ध सैन कीए ले माई।
ऊषा निर्प अधिक हिर्याई।
दोनों मदिर रहिने लागे।
नृप कन्या के दुष सम भागे।
द्वारपालक तिह रहित द्वारा।
ऊषा को तिन नैन निहारा।
चिन्ह बडे ऊषा निर्पाई।
ताहि चिन्ह निर्प बिसमाई।
ततक्षिण बाणासुर पहि आए।
नृप ते बचन उचार सुनाए।
ताह कन्या और द्रिष्ट आवै।
बडे रामा के चिन्ह दिषावै।
अब हमि तुम सो आप सुनामो।
हमरे मन महि संसर आमो।
बाणासुर तब ही उठि धाया।
सुता मदिर आगे चितु लाया।
आ निर्पे दोऊ चौपर पेलहि।
क्रीडा कर अंग अंग सों मलहि।
बाणासुर सैना ले धायो। अनरुद्ध निर्प सनमुप तिह आयो॥
ध्यानु कीआ तिह अतर माहे। आप पठायो बसिदेव पाहे॥
जो अवि आवै बहु भलो होई। मैं एकलो दूजा नाही कोई॥
नाहि त अपुना शस्त्र पठावो। बेग बिलम तुम भूल न लावो॥
बलदेव शस्त्र दिया पठाई। तिन पसु बिस्मु ताहि कछु लाई॥
बाणासुर बहु सैन ल्यायो। अनरुद्ध सों निम युद्ध मचायो॥
अनरुद्ध अधिक सत्ता तिह मारी। मम बिरोधु करके प्रहारी॥

अनरुद्ध को बाणासुर गह्या।
बांधा बधु सुप ते इहि कह्या।
काहे को इहि कमु कमावहि।
परदुहिता सती चितु लावहि।
अब मैं तुम को मारि चुकावा।
तुमरी रकत की सिंधु वहावों।
बाणासुर इहि बचनु सुनावें।
साईदास कछु नाहि बसाव ११७१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री शुकदेव परीक्षति संवादे बाहिठमोध्याय ॥६२॥

नाद एक दिनसि कथा कीधा।
उग्रसन के ग्रहि पगु दीधा।
उग्रसन कों कह्यो सुणाई।
ह नृप सुणि हा मेरे भाई।
नरुद्ध को बाणासुर बांधा।
गया है अपुने गृहि फाधा।
जब नृप ने इहि बिधि सुण पाई।
क्रोधवान होया अधिकाई।
ह्यो बजंत्र अधिक बजायो।
ाणासुर पर सैना उमिडायो।
सकल राजकौरों उचिरायो।
उग्र सन सा बचनु सुनायो।
ा धाना होवहि हमि जावहि।
रि काजु पूर्न कर आवहि।
उग्रसेन पाञा भया जावों।
ाहि कार्ज पूर्न कर आवो।
ब मर दल छठ मग्ग गवार।
। मै ऊपर ज्ञोर बीमार।

बाणासुर को पुर क्यों भाए।
प्रदब मल मंबर प्रभिकाए।
श्री कृष्णचद से प्राज्ञा पाई।
बाणासुर को पुर घेरवाई।
द्वादश क्षुहणी सना प्राई।
महा प्रधिक पग धूर उडाई।
रवि गयो दरि तिहि धूरि छ्रायो।
गगन दीसे रवि विसमायो।
त्रिश प्रधिक ताके पुर द्वारे।
इन सैना ने सकल उपारे।
त्रिश उपार ग्रहि के निकट प्राए।
चाहित ताहि किवार भगाए।
सब बाणासुर सेना सम लीने।
गृहि सेती बाहिर पग दीने।
शिव बाणासुर करनि सहाई।
स्याम कार्तक सुत ले भाई।
श्री कृष्णचद सों युद्ध मचायो।
शिव प्रर कृष्णचद उरझायो।
शिव सुत प्रद्युम्न युद्ध कीना।
महा प्रधिक युद्ध कर लीना।
बाणासुर करे तौर भाई।
बलदेव सेती करति लराई।
शिव केरी सैना सुग लीजै।
ठौर ठौर कछू चितु न दीजे।
भूत प्रेत सैना सग लीने।
डाकनी राक्सी को संग कीने।
युद्ध करनि हरि सो चितु लाया।
भूल पर्‍यो चित ताहि भुलाया।
हरि सों युद्ध करनि चितु लायो।
साईंदास शिव भर्म भुलायो १७२

अकाल मूर्त कौलापति केसर।
धांप लीयो कर सकल विसेश्वर।
धांप बजायो त्रिभवन राया।
भूत प्रत को शब्दु सुनाया।
सभ गए भाग धाप जब बाजा।
श्री गोपाल है सभ को राजा।
शकर को बसु सब हिर लीना।
शिव सुत प्रदुम्न बिहुस कीना।
बाणासुर बहुरो युद्ध को आया।
सब तिहि भाजे ने सुण पाया।
भगन कीए सिर आगे आई।
श्री कृष्ण आगे आइ बचनु सुनाई।
जब प्रभ ऐसी विधि नैन निहार्यो।
सिद तले कर मन महि बीचार्यो।
बाणासुर रण तज कर भागा।
ग्रहि के मार्ग तिस चितु लागा।
ग्रहि माहे आइ कर ठहिराया।
सेना बहु लेकर फिरि आया।
क्रोधवान होइ बान चलाए।
दोनो बाण एकनर को लाए।
तब श्री कृष्ण कुप्यो अधिकारी।
चाकसुदसन लीयो बनवारी।
भुजा बाणासुर की कटि डारी।
दोरापो श्री कुंजविहारी।
तब प्रभ शिव प्रभु के आगे आया।
हरि उस्तत मुख ते उचिराया।
बहुरो शिव ने बिनती कीनी।
अति अधीनता मन महि लीनी।
जो मैं बर देवों किसे साईं।
जो आज्ञा पावा त्रिभवन साईं।

हम माया तुम मूल हमारे।
सकल विश्व तुम साजन हारे।
मैं औगुण महुता प्रभ कीयो।
तोह सन्मुख युद्ध को चितु दीयो।
इहि औगुणु हरि हमि बिसरावो।
अपुनी किर्पा सहित मिटावो।
सीत को ज्वर धाकर उपजायो।
तप्त ज्वर प्रभ ने प्रगटायो।
तप्त ज्वर सीतहि जाइ लागा।
सीत ज्वर धूर्यो उठि भागा।
तब बाणासुर ने क्या कीमा। कन्या को कार्जु कर दीमा॥
कार्जु कर अनरुद्ध को दीई। गोपीनाथ सग कर लीई॥
तब ही द्वारका कौं उठि घाए। सोईदास प्रभ सदा सहाई १७३

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रैहिठमोध्याय ॥६३॥

द्वारकाकौं जब हरि पग धारे।
नृप अपुने प्रभ बचन उचारे।
ऐसा सखि कौं कह्यो सुणाई।
दधि के तीर बसो मेरे भाई।
दधि तटि अपेर कति हम मावहि।
राज कौर सम आगे धावहि।
तिन को पिया गह्यो है भाइ।
सकले इति उति भ्रम हिराई।
एक कूप हति तहा पायो।
इकु किर्सा तिहि महि निर्पायो।
जावरी सूत से कूप महि डारी।
सम अंतर तिमि एहि बिचारी।
इसकौं कूप सें बाहिर आनहि।
जोर कति निकसति बहु नाही।

थकित भए वसु सकल हिराई।
सब श्री कृष्ण पाछे ते आए।
राज कुवर सम वचि उचिराए।
हे प्रभ तुमि थाके वसु आए।
इहि किर्सा बाहिर ना आए।
श्री कृष्णचंदि जब इहि सुरा पायो।
तासि कूप के नेरे आयो।
बावरी आइ गही कर माहे।
बावर डार दीयो तिसु ताहे।
अब मह कूप सें बाहिर आयो।
मानस को तिन रूप दिपायो।
महा अधिक सुदर भयो रूपा।
जब बाहिरि तजि आया कूपा।
श्री कृष्ण तास सों बचनु उचारा।
कौन रूप तू वेहि बीचारा।
किसें की योन काहू को आया।
एस कूप महि कयु ठहिरायाा।
तब तिन में हरि भयो प्रसु दीना।
हाथ जोरि मुप विनती कीना।
नथिराजा मेरो प्रभु नामा। नित्त पति एही मोह कामा॥
सुरह्रीं सम विपो का देवौ। नितापति इहि कामु करेवौ॥
कनक रूपा मोती अधिकाई। दान कीए मैं त्रिभवन साई॥
एक दिन सुरह्रीं महृस्र म दौनी। एक बिप ताई किपा कामी॥
उनि से एक धेन भजि आई।
हमरी सुरहो पाहे ठहिराई।
मै बहु सुरह प्रभ नाहि पछानी।
सांबिसास विधि सकल बपानी॥१७४

चौर दिनसि मैं ने क्या कीया।
सहस सुरहि एक बिप को दीया।

प्रिथम बिप नें घन पछानी।
माजु के बिपसो कह्यो बयानी।
माजु क बिप ताको प्रिनु दीना।
रे मति मूढ़ि तैं क्या मन कीना।
नृप माजु सहस्र सुरिह दानु जु कीई।
तिन महि सुरिह हमि ताई दीई।
दोनो मर्गिरिस मो पहि माए।
मो को तिन ने माइ सुणाए।
माजु ने ब्राह्मण को मैं मापा।
तासो मैं एही बचु मापा।
हे स्वामी एहि सुरिह तुम देवहु।
सौ सुरिह औरु इसकी तुम लेवहु।
तब बिप ने मोको प्रतु दीना।
हे नृप तैं मन महि कहा कीना।
मैं भपुनी एही सुरिह लेवो।
एहि सुरिह काहू ना देवो।
प्रिथम बिप सो बचन सुनायो।
मसे ही तांसो उचिरायो।
मब संकल्प सिर इसि क माई।
सहस्र सुरिह तुम चोर स भाई।
तब बिप मैसे बचन उचारे।
हे नराधिप तैं क्या मन धारे।
मम को स्रापु दीयो बिप ताही।
तिमहू कहा मन्यथा परे नाही।
हे नृप गिर्से कीयोन पावहि।
जो मम सो इहि बचन सुनावहि।
जो सरापु उन हमको दीमा।
मधिक भला उनि हमको कीमा।
मैं मधिक भला इमि नृप सो रह्या।
तोहि जोटि प्रभ बहु सुप सह्या।

भाजु भास ईहा प्रभु भाव।
पग मोह मस्तक पर ठहिरावे।
जब प्रभि इहि बिधि सुण पाई।
तांपहि हिर्दे भए अतुराई।
ताको पारगिरामी कीनो।
हिपमान छाड बहु सुप दीनो।
प्रभ नथि नृप सो कह्यो सुणाई।
राजु करो अपुने पुर जाई।
निर्भौ होइ कर राजु कमावो।
कछु चिंता मन महि मा ल्यावो।
कर डंडोत नृप पुर को धायो।
सांईदास नृप सेवु सवायो ॥१७५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे चौसठिमोध्याय ॥६४॥

एक दिनसि करुणा निधि स्वामी। बचन कीयो प्रभ अंतरजामी॥
बलिदेव सों प्रभ कह्यो सुनाई।
तुमहो बलिदेव हमारे भाई।
गोकल के मग तुम पग धारो।
मोह कह्या घटि महि वीचारो।
मात पिता जसुमति हमि भाई।
गोप ग्वार सों पूछहु जाई।
हमि चोर उनि पाहे जावो।
है बांमन इहि कर्मु कमावा।
जो हमि बसुदेव देवकी आए।
तिनहू पार कर वडे कराए।
उनि प्रसाद करहि हमि राजा।
अब माहो तिस के मुहताजा।
महा पराक्रमी कंस को मारा।
अधिक जोध्यों को कीजे सहारा।

बसिदव सुग्रा आइ रथ पर चरिमा।
रथ पर चरि गोकलि पगु धरिया।
नदि महिर के ग्रहि महि ग्रामा।
जसुमति कौं डडौस करामो।
जसुमति वसिदेव को उरि लीमा।
बदन चूंम बहुता सुप कोमा।
पाछे सें ग्वालिनि मिलि ग्राई।
बलिराम के चतुर ग्रोर ठहिराई।
बलदेव सों तिन्ह बचन उचारा।
कहा सखो है प्रान ग्रधारा।
कबहू नंद जसुमति चित करही।
गोकल ग्रावन को मनु धरही।
जब इन्ह पार कीयो ग्रधिकाई।
इन्हि तजि मथुरा बैठो जाई।
तहा जाइ नृप पदिवी होया। हमिरा ग्रमु ह्रुदे ते पोया।
कस कहा मृत भोज सिघारा। जो उसि को सम चूको मारा।
जो ग्रब लगि कमु बीवत रहिता। मथुरा महि काहे हरि बहिता।
तब उसि के मन होत है त्रासा।
गोकल माहे कर्ता वासा।
बूरे समे इनि ग्रहि ठहिराया।
बडे भए गोकल बिसराया।
ग्रब हम को किस को चित करही।
उौर सुनो बनिता यह भरही।
बहि रामा सुप बेप सुभावहि।
बचन सुने सुत सुधि विसरावहि।
ताहि पिड महि होइ कल्याना।
सार्ईदास एहि बचनु बपाना।१७६

बलिराम मास दोइ गोकल माहें।
रहिया ग्रधिक तामहि उरमाहे।

जैसे श्री कृष्ण धेन ले आवें।
बनि मंझार पढि ताहु दरावें।
असे बलिदेव धेने ले आई
सुदर्शो त्रिश्रा बन माहि धराई।
उसी भाति कर बैन बजावहि।
गोप ग्वार सम खेलु रचावहि।
एक दिन बनि आइ कर ठहिराए।
सुदर्शो त्रिए अति फिरति अधिकाए।
बलिदेव ने सब बैन बजाई।
ताकी सोभा कही न जाई।
राधा बर्नु तब ही चलि आया।
बारुणी मदु बलदेव कौ ल्याया।
बलदेव नें मदि को अचिवाया।
अतिमस्तु भयो सुध सभि बिसराया।
रवि दुहिता सों बचन उचारा।
आगे आवो सुण कहा हमारा।
जमना बचन सुण मनि बिसमाई।
कहा बचनु इहि सुप उचिराई।
जमुना ठटिकि रही ना आई।
बलिदेव हल सो लई भराई।
अम ताहू पाछे उठि धाया।
पास परयौ प्रवाहु चलाया।
जो काऊ तहा आइ मज्जनु करे।
ताहि अग पाप बहु झरे।
जो कछु अघ होहि सकल हिराई।
जो तिह पास इस्नानु कराही।
रवि दुहिता इकोत कराई।
अधिक बेनती सुप उचिराई।
सेस नाग प्रभ रूप तिहारा।
सभ धर्तो को तुम सिर भारा।

मोह प्रवशा हरि बणावो।
मम ताई कोऊ दोसु न लावो।
मैं न पद्याना सा प्रभ तोको।
एही प्रवशा है प्रभ मोको।
बसिदेव तिह पर किर्पा भारी।
ताहि प्रवशा सकल निवारी।
सकल को राम म्योगु मिटायो।
जो क्रिष्ण विछोहे इनि दुप पायो।
श्री कृष्ण विछाहो सकल भुलाना।
सम गोकल बहु ग्रानंदु माना।
बसिदेव सभ को दु:ख निवारा।
सकल लोक कौ संसा टारा।
सकल गोकल को सुखु दिपारा।
साईदास धनु राम हमारा ।।१७७।।

इतिश्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पसठिमोध्याय: ।। ६५ ।।

बसिदेव ग्रायो बसुमति पाह। बिनती करी सोच मन माह।।
ग्राज्ञा देहो मथुरा जावो।
जावो तौ श्री ग्राज्ञा पावो।
बसिदेव ने जद ग्राज्ञा पाई।
मधिपुरी को चल्यो धाई।
ततक्षिण महि पुर माहे ग्राया।
ग्राइ कृष्ण को दर्सनु पाया।
बसुमति मायमु सुरिह को दीग्रा।
तिह सुरिह को ले प्रभ पय पीया।
जो नछ तिन ने ग्राप पठाया।
इक इक बसदेव कृष्ण सुनाया।
पुबरपुर बानार्स माहे।
राजकर्ति फुनि रहिय तहाहे।

तिन सम चिन्ह कृष्ण के कीने।
चित्र भुजा पीतंबर लीने।
मोर पंख ऊपरि सिर धारे।
बन माला उरि माहे डारे।
सकल सरूप कृष्ण को कीना।
मति अभिमानु हृदे महि लीना।
एक दूतु अस पाह पठाया।
ताहि दूत को ईहि सिखाया।
जाइ सभा जादम की माही।
श्री कृष्ण सों इहि बचु उचिराही।
मैं हौ कृष्न तू काहि कहावहि।
झूठ लिबास काह को लावहि।
एहि जो भेषु की आदर करहीं।
नाहि त मोहि सर्भा चितु धरहो।
जो इहि करहि तौ बहु भल्याई।
ना हित आउ हमि करहि लराई।
वही दूतु अस पहि चलि आया।
जो उनि कहा सो आप सुनाया।
जब श्री कृष्ण बात सुण पाई।
ताहि दूत सो कह्यो सुणाई।
पुंडर को तू आप सुणाई।
रे मति मूढ़ तै क्या चित आई।
जिन किस भेषु झूठ है धारा।
सो लड़ लंडत होसी ततकारा।
हरि सों खिसु ले दूत उठि धाया।
पुर बनार्सी महि फिरु आया।
श्री कष्ण गढि को लीयो बुलाई।
ताहि पीठ चड़े जादमराई।
ततछिण तिह पुर के निकट आए।
बहु ठौर आइ के ठहिराए।

मुख धर धापु श्री कृष्ण बजाया।
सब्द सब पुंडर सुण पाया।
खूहिणी तीन सैना सग लीए।
पुडर नृप बाहिर पग दीए।
मुद्ध कनि कों पुडिर प्राया।
तब श्री कृष्ण हुवे ठहिराया।
सैना इसि औगुरण ना कीना।
इन पातकि मन महि गर्व लीना।
इस पातक मार चुकावौ।
सैना को कोई दुख न लावो।
प्रियम प्रभि तिहु रथु कटि डारा।
पाछे चक्र कर महि प्रभ धारा।
चक्र सहित तिहि सीसु उतारा।
साईदास प्रभ को बल भारा॥१७८

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे छिआहठमोध्याय ॥ ६६ ॥

सीसु ताहि हरि पुर ओर डारा।
ताहि पूत बहु सीसु निहारा।
कृष्ण को सीसु परयो ईहा धाई।
सकल लोक मुख इहि उचिराई।
लोक निप के सीसु पछाना।
निहचै नराधिप को कर आना।
पुंडर के बडे सुत में लीना।
बसुधा सें ले कर महि कीना।
पडि कर सीस को तब ही बसाया।
मुख अपुनें से बचु उचिराया।
हे पित जिन तुम कौ है मारा।
कर बिरोध तुझि को प्रहारा।
जब मैं उसि पद पद न करहीं।
तब लगि सभासन ना पगु धरही।

इहि प्रतज्ञा मन ठहिराई।
पुहिर सुत निश्चा मन आई।
सकल लोक मिल मतु ठहिराहो।
पुहिर सुत नृप इहि उचिरायो।
को सुर वरदाता बतलायो।
वेग विलम कछु मूल न लायो।
लोक कह्यो ग्रैसे शिव होई।
होर ग्रैसो सुर ग्रौर न काई।
पुहिर सुतु शिव सर्नी ग्रायो।
शंकर की सेवा चितु लाया।
होम यग्न बहु कर्ने लागा।
ग्रौर बात उनि सम ही त्यागा।
तीन दिनस जब भए बितीता।
इनि कीनी मम निर्मल प्रीता।
ग्रग्नि कुंडि से रूपु निकसाया।
ताकि रूप नृप बचनु उचिराया।
माग लेहु कछु हमिरे पाहें।
जो इछा होवे मन माहे।
पुहिर सुत तिह बचु उचिरायो।
ग्रग्नि रूप सों बचनु सुनायो।
द्वारका को आइ कर दग्धावो।
हमरो बचु मन महि ठहिरावो॥
पुहिर सुत को ग्राशा पाई। ग्रग्नि रूप चल्यो पुर धाई॥
श्रीकृष्णपदि के पुर निकट ग्रायो। द्वारका पुर तिहि नामु रपायो॥
चतुर ग्रोरि भाइ ग्रग्नि जराई। सभ जादम उठे ग्रकुलाई॥
धीर्जु तजि सकले बिललाए। साईनाथ धीर्जु ना पाए॥१७६

जान्य सकल श्रीकृष्ण पहि ग्राए। ठाडे होइ तिहि बचु उचिराए॥
हे प्रभ ग्रग्नि चहु ग्रोरि ग्राई। चाहित है पुर सकल जराई॥
हे प्रभ ग्रग्नि से लहु उबारे। हमि सभ सनि परे है हारे॥

तिह समे हरि चौपदि चितु लाया। पेखति है सुंदर अभिकाया॥
सुदर्सनु चक्र लीयो बुलाई। तिह आग्या दीनी जदुराई॥
आग्या से चक्र तब आया।
निर्प चक्र को अग्नि रूपु भगाया।
चक्र तांको पाछा कीना।
अग्नि रूप डर मन महि लीना।
चक्र अग्नि रूपु हति आया। प्रभ को आइ डंडौत कराया॥
एक मर्कटि तांको बलु भारी। तिन प्रतग्या मन महि धारी॥
जिन नरकासुर को है मारा। मोहि सषा को जिन प्रहारा॥
जब लगि मैं तिस मारौ नाही। तब लगि ध्रिग जीवन जग माही॥
दस गज को बलु धरहि ताई। महाबली बलु कहा सुनाई॥
नरकासुर को सषा कहाव। अपुने बल मन गर्बु वसाव॥
द्वारका पुर के बहि निकट आवै। पुता बडे लोकों से जाव॥
तिन कौ जाइ करे बुरआई। पाछ दधि महि देइ रवाई॥
और लोक पुर द्वारे रहिई। तापर अग्नि जोर बहु करई॥
तिन लोकों को बहु दुःख देवै। तिह सों अधिक बिरोधु करेव॥
सकल लोक आए हरि पाहे। रूनु करे मुष तें उचिराहें॥
हे प्रभ तो बिनु ओटि न काई। हमि मर्कट दुख देह अधिकाई॥
दुहिता हमि पसि लेकर आवै। दधि माहे पडि ताहि रुवावै॥
प्रम सुए बिधि तांको भ्रितु दीना। और करो चितु हमि उधिरीना॥
मैं तुमरो संतापु मिटावो। तुमरो दुख मैं सकल हिरावो॥
एक दिनसि बल देव क्या कीना। सम बनिता अपुने संग लीना॥
ततछिण महि बन माहे आया। तौ उनि मर्कट ने सुण पाया॥
बहि मकट भी बन महि आया। बलिराम सहित दारा निर्पाया॥
हरि की बनिता की ओरि देवै। कपट द्रिस्ट कर तिहि ओरि पेषै॥
तिन सौ अपुने त्रिय मुसकावै। जिह ओकरभि मिहि सर्व सुभावै॥
रामा बलिदेय मन महि निर्पी। सिर का ऊपरि कर ना सिर्पी॥
त्रिय आए सिहि ऊपर डारे। मर्कट अपु बछ मम न बीचारे॥
औषि निकट आई सुधि भुलानी। एहि बात भली कर जानी॥
जब इनि मकट बुरा कमाया। तब बलदेव तिहि युद्ध मचाया॥

मकट बिवद को बलुदेव मारा। बुरा कीमो इति विधि प्रहारा॥
जा पापी बुरो कर्म कमाव।
सांईनाश प्रभु ताहि हतावै १८०

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्दे
श्री सुखदेव परीक्षति सबाद सताहिठमोध्याय ॥६७॥

सुन श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
सांब नाम सुन हो चितु लाई।
धृतराष्ट्र करो सुत कहीए।
दुर्योधन नाम तिसे उचिरहीए।
स्वबर कन्या को तिहि कीना।
अनेक नराधिप को सदि लीना।
सांब कह्यो मैं भी उहा जावो।
उकल बाति मैं द्रिग निर्पावो।
जो वहि कन्या मम को देवहि।
अधिक सभा मोहि सहित करेवहि।
जो मम को वहि देवहि नाही।
तब मैं एही बात कराही।
कन्या कौं रथ लेतो चढाई।
न भागो मैं इहि ठहिराई।
सायु भी जाइ तहू ठहिराया।
इति उति ते जाइ सोमधी पायो।
कन्या तुम को देवहि नाही।
तुमि सो कार्जु नाहि कराही।
जबै सांब इहि बिधि सुण पाई।
कन्या कौ तब कह्यो पठाई।
मम तुमरो संयुक्त न करही।
इहि मग्र चौर बाति हृदे धरिही।
जो याव तुझि को स जावो।
द्वारका माहे पढि ठहिरावो।

जब कन्या इहि विधि सुए पाई।
ततछिए महि सांब पहि भ्राई।
सांव तासि को रथ बैठायो।
रथ पर चाढि तासि ले भायो।
पाछे दुर्योधन सुण लीना।
सांब कृष्ण सुत इहि कर्म कीना।
करम भधिक तिहि दीए पठाई।
सांव को बांधि भ्राने है भाई।
कैरव सांब के पाछे भाए।
छिए मात्र सांव के निकट भाए।
सांब कृष्ण सुत बहु युद्ध कीना।
हार परयो कैरो बधि लीना।
बांध दुर्योधन पहि ल्याए।
दुर्योधन तब बच उचिराए।
हे सांब क्या इहि कर्म कीमा।
कौन बात तें मन महि लीमा।
बहुरी कह्यो इसि को बधि रापो।
इसि को ौर कछु बात न भ्रापो।
सांब को राख्यो ग्रहि माही।
सांईदास भ्रापहि कछु माही १८१

नार्द भ्रपि द्वारका महि भ्राए।
जहा भी कृष्ण उग्रसम ठहिराए।
उग्रसेन सों बचनु उचारा।
हे नृप सुण हो बचन हमारा।
सांब को दुर्योधन बधायो।
भ्रपुने ग्रहि महि बांधि रपायो।
उग्रसेन नृप इहि सुण पाई।
मन महि कोपु कीयो भ्रधिकाई।
नृप ते एही बचु उचिरायो।
बलि बद्र को तब ही बुलायो।

कटिक अधिक कैरव परि मारहि।
महो कटिक कैरवि का मारहि।
बलदेव कैरवि सहित सकाई।
सुनत बात इहि आयो धाई।
उग्र सन सों बिनती ठानी।
हे नृप महा अधिक बलिमाना।
मोहि आज्ञा देवा मे जावो।
इहि कार्जु मैं कर्म आवों।
जो मम कहा मान इति सीमा।
अधिक भला ताहू म कीमा।
नाहित ज्यूं आना तुम होई।
हे नरपति करहि हमि मोई।
अबि तुम मना माहि पठावो।
बिर्पा कर्क माहि पटावा।
बसिदेव सुपलविसुत सग लीनें।
अबर ऊधो अपुने संग कीने।
हस्तानापुर के मग पग धार।
ताहि निकट आए ततकार।
एक बन महि लीनो विश्रामा।
बलदेव महा बली बीर स्यामा।
सुपविसुत को दीयो पर्ठाई।
दुर्योधन कौं कहू सु जाई।
बलिदव आइ पम महि टहिरायो।
सुमरी कन्या कानि आयो।
गांव को सुन कार्ज कर दया।
मोह कहा मम महि धर मयो।
उदधन कहू कोपु करायो।
चाहित भा तुम को मरवायो।
मैं बिमती कर करि समझाया।
कहा तुम मा मानु करायो।

वसिराम करो आज्ञा पाई।
साथ सहित द्वारका चल्यो भाई॥
काजुं कर द्वारका ते आए।
अहि द्वारिका मंमसि गाए।
उग्र सेन निर्व्यो सांब ताई।
साईदास हुव्यों अधिकाई॥१८२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठाहठमोध्याय॥ ६८॥

एक दिनसि नार्द ऋषि मन आनी।
सो कृपा ते सकल बपानी।
षोडस सहस्र एक सौं अधिकाई।
बीस अष्ट रामा हरी भाई।
आप एकु क्युं तिन परचावे।
कित विधि चित बसि ताहि पुजाव।
म देषो बहु क्या बुद्ध करई।
क्यु कर भवन भवन महि फिरई।
प्रिथमे नार्द ऋषि उठि आए।
जामवान दुहिता ग्रहि आए।
तीमों जोरि सम्यानें तानें।
ताहि द्वार ते मोती पचानें।
ताहि सहित बहु मणी पचाई।
तिन की महिमा कहा बताई।
श्री कृष्णचन्द चौकी ठहिराए।
जामवती कर चौर दुलाए।
चेरी दस कर जोरे पली।
अति मरूप सुन्दर बहु भली।
नाद ऋषि तहा कीया प्रवेसा।
निर्व्यो हरि चित कीयो अदेसा।
प्रभ जब नार्द को निर्वायो।
ठाडा भयो सुप मन उपिरायो।

कृपा करी प्रभ हम पर आए।
सोहि दरसन सताप मिटाए।
जामवती प्रभ को ले आई।
अमु प्राण हरि पहि ठहिराई।
श्री कृष्ण नारद के घरि पधारे।
बहुरो ले परजंक बहारे।
प्रस्नु कीयो स्वामी कब आए।
कछु आज्ञा हमि देहु बताए।
कित प्रयोग किर्पा तुम धारी।
इसि का हमि को देहु बीचारी।
तब नारद हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ माह मम महि इहि लीना।
अधिक भयो दरसनु ना पायो।
तुम दरसनु देषन को आयो।
एही आग्या है प्रभ मेरी।
गति मोहि होइ भक्त करो तेरी।
तोह भक्त कब नाहि भुलाए।
इहि आज्ञा हमरी जपुराए।
नारद प्रतु हरि देइ उठि आया।
चौद रांमा के ग्रहि महि आया।
तासि भवन महि जाइ निर्पायो।
तिसी भवन महि हरि को पायो।
प्रथम बचन प्रभ ताम सुनाया।
हे ऋषि जी कहु कब तू आया।
बहुरो ऋषि अवरे भवन आए।
भवन द्वार पहि आइ ठहिराए।
श्री कृष्णचंदि निर्प्यों तहा जाई।
कर महि धर तरपनु जो कराई।
सुरहो बहु बिपो ताई देवै।
अपुने कर कर दानु करवै।

सुफलकि सुत पुर माहे आया।
दुर्योधन को आइ सुनाया।
जो बलिदेव तासि समझायो।
सो दुर्योधन पहि शब्दु उचिरायो।

धितराष्ट्र सुत क्रोधु कराया।
जब सुफलकिसुत से बिधि सुण पायो।
सुफलकिसुत सों तिन प्रतु दीना।
उग्रसैनु किस नराधिपु कीना।

अबि महाराजु भयो है वाहि।
हमि आदि अत ते नृप अधिकाई।
जब हमि तिस से करी सफाई।
तब आदम मे भई बडाई।

दुर्योधन सुफलकिसुत समझायो।
हमि तिस से क्या बुरा कमायो।
हमिरे कीए बड भए वाही।
अबि हम सो बिरोध उठाई।

हमि पन्हीआ पग बैठ कहा होहै।
जा बोझ अपुनी पति पोहै।
सुफलसुत बेग तुम जावो।
बलिदेव को तुम आइ सुनावो।

अक्रूर तब ही बलिदेव पहि आया।
दुर्योधन बचु आइ सुनाया।
बलिराम क्रोधु मन सुण कर कीआ।
दुर्योधन एता गर्बु कीआ।

उग्रसैन महाराज को राजा।
थी कृष्णबदि पूर्न सभ काजा।
एक छिन महि सभ जगतु बनावै।
छिन माहे सभ भस्म करावै।

तिम सों पग पन्हीआ सों जावै।
ऐसा गर्बु हृदे महि ल्यावै।

क्रोधु कीयो शस्त्र कर लीमा।
हस्तनापुर तापर धुक सीमा।
कहो तो अब ही सकल विडारो।
एक एक कैरव कों मारो।
तब सभ कैरव सर्नी आए।
बलिदेव पहि आइ बचि उचिराए।
बलिराम की उस्तति कर्ने लागे।
गव गुमान सकल उनि त्यागे।
सेस नाग का रूपु तिहारा।
सकल धर्नि को तुम सिर भारा।
तुमरी उस्तति कहा बखानें।
हमि पातकि उस्तति कहा जानें।
राम ताहि पर करुणा धारे।
राख लीए तब करव सारे।
हस्तनापुर भेडाप्ना थीमा।
अब लगि त्रडु न तोना गया।
अब लगि भेडा ही द्रिष्ट आव।
ताहि भेडु अब लगि ना जाव।
दुर्योधनि बलिदेव कों सग कीमा।
पुर को मागु तिन में भीमा।
बलिदेव सहित गए पुर माही।
अब कछु त्रासु न तिन मन माही।
कन्या का तिन कार्जु कीना।
अति अधीनता मन महि लीमा।
सांब सहित सबुक्त बनाई।
मोती माणक दीए अधिकाई।
अश्व हस्त दीन बहुतेरे।
और अधिक दीने तिहि बेरे।
अंबर अधिक दीने तिह ठाई।
लक्षमणा नामु दुर्योधन दुहिताई।

अभिराम कैरो आज्ञा पाई।
सांब सहित द्वारका चल्यो धाई॥
कार्ज कर द्वारका मे आए।
ग्रहि द्वारिका नगनि गाए।
उग्र सैन मिल्यौं सांब ताई।
सांईदास हृष्यौं अधिकाई॥१८

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठाहठमोध्याय॥ ६८॥

एक दिनसि नार्द ऋषि मन आनी।
सो कृपा ते सकल बषानी।
षोडस सहस्र एक सौ अधिकाई।
बीस अष्ट रामा हरी भाई।
आप एकु प्रभु तिन परचावै।
किस विधि चित बसि ताहि पुजावै।
मै देषो बहु क्या कुछ करई।
प्रभु कर भवन भवन महि फिरई।
प्रिथमे नार्द ऋषि उठि आए।
जांमवान दुहिता ग्रहि आए।
तीनो सोरि सम्यानें तानें।
ताहि द्वार ते मोती पचानें।
ताहि सहित बहु मणी पचाई।
तिन की महिमा कहा बताई।
श्री कृष्णपति चौकी ठहिराए।
जामवती कर चौर दुलाए।
चेरी दस कर जोरे षरी।
अति सरूप सुंदर बहु भरी।
नाद ऋषि तहा कीयो प्रवेसा।
मिल्यौं हरि चित कीयो अवेसा।
प्रभ जब नार्द को निर्षायो।
ठाढा भयो मुष वच उचिरायो।

कृपा करी प्रभ हम पर आए।
तोहि दरसन संताप मिटाए।
जामवती मम को ले आई।
अंमु आण हरि पहि ठहिराई।
श्री कृष्ण नारद के भए पधारे।
बहुरो ले परजक बहारे।
प्रस्तु कीयो स्वामी कब आए।
कछु आग्या हमि देहु बताए।
कित प्रयोग किर्पा तुम धारी।
दसि का हमि को देहु बीचारी।
तब नारद हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ माह मन महि इहि लीना।
अधिक भयो दर्सनु ना पायो।
तुम दसनु देपन को आयो।
एही माग्या है प्रभ मेरी।
गति मोहि होइ भक्त करो तेरी।
होहु भक्त कब नाहि भुलाए।
इहि आग्या हमरी जदुराए।
नारद प्रतु हरि देइ उठि धाया।
औह रोमा क ग्रहि महि आया।
तामि भवन महि जाइ निर्पायो।
तिसी भवन महि हरि को पायो।
प्रथम बचन प्रभ ताम सुनाया।
हे ऋपि जी कहु कब तू आया।
बहुरो ऋपि अवरे भवन आए।
भवन द्वार पहि आइ ठहिराए।
श्री कृष्णचन्द्र निर्प्यो तहा जाई।
कर महि कर तरपन जा कराई।
मुरहो बहु विपा ताई दर्ब।
अपुने कर कर दानु करबं।

बहुर गयो गहि ढौरे मांही।
निर्प्यों हरि नार्द ने ताही।
सुत को हरि लीनो मग माही।
सुत के सग प्रभ प्राप पिसाही।
प्रस ढौर भवन पग दीग्रा।
हरि निपिन कानि विसु दीग्रा।
दष्या प्राइ हरि तिह ग्रहि नाही।
सोच बीचार कीयो मन माही।
चेरी सों तब बचन उचारा।
कहा भयो है प्रांन प्रधारा।
चेरी सुण ताको प्रभु दीना। कृष पर है प्रभ ब्रह्म मोक्ष कीना॥
ग्रैसे चेरी बपु उधिरायो। साईदास नार्द सुण पायो॥१८३

नार्द प्रभु भक्त उठि धाया। ततछिण कृप्त ऊपर चहु ग्राया॥
निर्प्यों थी कृप्णचंद्र को ताही। भ्रांत चुकायो तिस मन माही।
बहुरो ग्रवर भवन को धायो। तहा ग्राइ हरि नां निर्पोयो॥
चेरी सो ऋप कहयो सुनाई।
कह कहा गए थी जदुराई।
तब चेरी ने बचन उचारा।
सुण हो ऋषि पून बिधि सारा।
प्रभ गज सहित गज गयो सराई।
सुण हो ऋषि बिधि कहो सुणाई।
नार्द ने तहू जाइ निर्पायो।
कुंजर सरिताबति द्रिष्टायो।
जहा गयो ऋपु तहू हरि पायो।
ग्यान समाध गयो बिसमायो।
मैं मतिहीन कहा गति पावा।
ग्यूं ही भवन भवन भर्मावा।
नार्द ऋपि मा समाध करायो। साँईदास सभ मर्मू हिरायो॥१८४

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उनहत्तरमोध्याय॥ ६९॥

हरि ले तेलु मुख आप लगायो।
अधिक सुंदर हरि रूप बनायो।
दर्पन ले कर मुख पर्खावत।
मन महि अधिक हुलास करावत।
बहुरो सुरहो को लीयो बुलाई।
तास मुख देख्यो यदुराई।
लिपो अधिक कों तवी पवायो।
बहुरो प्रभ ने भोजनु पायो।
पाछे स रथु लीयो बुलाई।
एक चरयो श्री और कन्हाई।
एक ओर ऊधो को दीना।
एक सुदामा को दया कीना।
नृप उग्र सैन पाहे आयो।
नृप को आइ प्रनामु सुनायो।
जाइ सभा महि निकट भूप बहृथो।
अग सो अंगु जाइ तिन गहृयो।
जिह जिह बारी सो सो आए।
अति अनंदु नृप मन महि पाए।
एक द्वार पालकु तब आयो। आइ कृष्ण सों भाप सुनायो।
हे प्रभ एक विप दूर से आयो। तिह महि द्वार ऊपर ठहिरायो।।
म सरबामी बिधि जानरण हारा। श्री कृष्णचदि गति अपर अपारा।।
कह्यो विप्प को अंतर ल्यावो। बेग बिलम कछु मूल न लावो।।
द्वारपालकु विप्प को ले आयो। बिप्प आइ हरि प्रनामु सुनायो।।
हे प्रभ इकि बिनती है मोरी। ईहा कहो आग्या होइ तोरी।।
जो तुम कहो कहो पटि माही। तब श्री कृष्ण बचन उचिराही।।
हे स्वामी हमि आदम माही। लिदख जानो अंतर माही।।
जो कछु है हमि आप सुनावो। पमु छिन रचक मूल न लावो।।
तब बिप ने मुख बचन उचारा। सुरग हो गिरिधर प्रान अधारा।
मम नराधिप जरासिंघ बधाए। अपुने ग्रहि महि बंद दुराए।।
चाहित राजसी यग करावै। बहु पातकु मन एहि बनावै।।

उन नृप निसवासर सोहि ध्याना । स्मृति तोहि को है भगवाना ॥
हे दियाल बिधि जानण हारा । गुण निधान तू अपर अपारा ॥
भक्त वछल थी कृष्ण बिहारी । करुणा निधि गिरधर हरि धारी ॥
इहि प्रजोग बिनती प्रभ करही । तुम आगे प्रभ इहि उचरही ॥
अठदस बार जरासिंध आयो । सग लीए सना अधिकायो ॥
अभ सना तें उचि की मारी । तुम पित मात भक्तिन बनिवारी ॥
हु प्रभ तुम जो लीआ अवतारा । भगति हेत निर्भ निरकारा ॥
सतमि को करो पारगिरामी । असुर संघारण अंतरजामी ॥
जबहि हमि जरासिंध स्यामो । प्राण अपुने अहि बद करायो ॥
तुमरो ध्यानु सदा घटि माही । रहित हमारा दूरि न थाही ॥
जब हमि अपुने प्रहि महि होते । गफलथि माहे पै कर सोते ॥
ना जाने कैस रैन बिहाई । दिनमु कबन हरि चौरि सिधाई ॥
जब ते इस को बन्दि महि आए । तुम चरना सों ध्यानु लगाए ॥
छिन पमु ध्यानु अवर नही भाई । तुमरे स्मिरन सग बिहाई ॥
हे प्रभ हमि कर हो उपरासा । तुमि बिनु हमरो को रखवासा ॥
न्रिप ने ऐसी बिनती ठानी । साँईदास सुणी सारम पानी ॥
नारद पुर पाण्डवा से आयो ।
थी कृष्णचंदि तिहि बचु उचिरायो ।
पांडवो सुत की खबर सुणावो ।
यथार्थ बिधि सभ मोहु बतावो ।
भूप कह्यो सकमी बिधि हरि आनो ।
मैं तुम पाहे कहा बखानो ।
जो कृपा कर पूछो हमितांई । यथार्थ प्रभ सों आप सुभाई ॥
हे प्रभ युधिष्ठिर हुवे भावे । जो प्रभु किर्पा हमहि करावे ॥
राजसी यग्य करो सतकारे । पूर्ण कार्ज होहि हमारे ॥
हे प्रभ चौहु द्वारे महि धारे । कर बिस्वास मन माहि बीचारे ॥
तांसो यग्य पूर्ण ना होई । तोहि कृपा बिनु कहा करे कोई ॥
जो तुम कृपा करो पदमायण । तब यग्य पूर्ण होइ नरायण ॥
तुमरा ध्यानु सदा मन तांके । घटि माहे बंधि रह्यो बांके ॥
ऊधव सों प्रभ बचु उचिराहो । एकी बचु प्रभ ताहि सुनायो ॥

तू वसीठ सभ जादव माही। मै तव बात करी तुम पाही॥
तू कछु मोको देहु बताई। कहा करहि इस बिधि मेरे भाई॥
ऊधो प्रितु दीनो हरि ताई। हाथ जोरि कह्यो प्रभ ताई॥
तुम अंतरजामी बिधि जानो। तुम पाहे मै कहा बखानो॥
जो हमि पर किर्पा प्रभ धारी। बात पूछी अब लेहु बिचारी॥
हे प्रभ इम महि बहु भली भाई। सकल बात मैं कहो सुनाई॥
प्रियमे जरासिंध को मारो। इन नराधिप को बनी उतारो॥
राजा युधिष्ठिर जो यग्य करहो। तोहि प्रसाद हृदे सुखु धरही॥
ऊधो अस सें प्रसु हरि कीना। माईदास हरि मन धर लीना १८६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे सत्तरमोध्याय॥ ७०॥

नारद ऋषि हरि कह्या सुनाई। हे प्रभ पूर्न भक्त सहाई॥
हे प्रभ मै अहपुर पगु डारा। तास पुरी महि एहि निहारा॥
तुमग भजनु करहि गज इन्ना। हे प्रभ पूर्न पर्मानंदा॥
जो उनि फांसी ते लए छडाई। सन्त सदा तुम भक्त सहाई॥
जो नृप जरासिंधि बदि पाए। तिनहू देस पग हमि हो भ्राए॥
एकनिम तिह नराधिप ग्रहि माही।
मैं रह्यो जाइ हे त्रिभवन साई।
भूपति भार्जा सुत के ताई।
गोवि लीए सुय बधु उचिराई।
जा तिहि सुत बहु रुदनु करावहि।
तब बहु सुत को श्राप सुणावहि।
ना तुम रुदन करो चुप करहो।
मन अपुने महि इहि बिधि धरहो।
प्रगट्यो है बसुदेव को नदन।
त्रैलोक तांको चित नंदन।
महा अधिक बलु है तिस पाई।
ताके बल सममर कोऊ नाई।
कंसु मार तिम पसों कीना।
राजु उग्रसैन को दीना।

माजु कास तुम पित पर माही।
माइ माप हरि कृपा कराही।
जरासिंघ को माइ कर मारे।
तुम पित को ततकाल उबारे।
हे सुत रुदन करों तुम नाही।
मे सतोषु धरो मन माही।
श्री कृष्णचन्द्र न सैन बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मरे भाई।
चलहो पांडो सुत पहि जावहि।
हस्तनापुर के मग हितु लावहि।
राम बलदेव नृप पाछे रहई।
नृप सेती इहि पुर महि वहिई।
उौर सकल सैना सग मावो।
कछु विस्वासु न मन ठहिरावो।
मष्ट नायका कीं सग लीना।
तब प्रभ गवनु हस्तनापुर कीना।
ततखिण बन सुरपति महि माए।
ताहि बन माहे ठहिराए।
धर्म पुत्र ने इहि सुण पाया।
श्री कृष्णचन्द्र किर्पा कर माया।
मम हो वीर सहित तिन लीने।
श्री कृष्णचदि उौरि पग दीनें।
ताहि बन माइ चलि माए।
ततखिण हरि मे मग लगाए।
मग्न भयो कछु कह्यो न जाई।
धर्म पुत्र हिर्घ्यो मधिकाई।
बहुरो भीम मजन सहिदेव।
नकुल माइ लागो हरि सेव।
माइ डंडोत करी हरि ताई।
दुख हर्नि हरि त्रिभवन साई।

हरि को संग लीए उठि धाए।
ततछिण महि पुर माहे आए।
कुंति अरु द्रुपद सुता आई।
तिन मन हर्ष भयो अधिकाई।
कुंती कृष्ण को अंग महि लीना।
श्री कृष्ण प्रनामु तास को कीना।
मास तीन प्रभ रहे तहाही। सांईदास दुख तिह कछु नाही १८७

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकहत्तरमोध्याय ॥७१॥

एक दिनसि प्रभ बचु उचरायो।
धर्मपुत्र सों भाखि सुणायो।
धर्मपुत्र तुम यग्य करावो।
यग्य करनि को तुम चितु लावो।
म भी टहिल करों यग्य माही।
मन महि ढौर करो कछु नाहि।
तब युधिष्ठिर बचन उचारे।
मैं बलि जावो प्रांन अधारे।
हमि त कछु होवै प्रभु नाहि।
जब लगि तूं क्रिपा न कराही।
जो तुम क्रिपा करो तब होई।
जब तुम क्रिपा करो होइ साई।
श्री कृष्णचंदि तांको प्रितु दीना।
हे धर्मपुत्र स कहा मम कीना।
चतुर भ्रात तुमरे बलिकारी।
महाबलि तिन बपु अधिकारी।
चतुर दिशा इनि देहि पठाई।
इन भूपति को एहि हिराई।
अब इनस कोऊ आइ न धाई।
ततिछिण महि आइ हाउ महाई।

तांको जामें प्राण वहावो।
तुमरो पूर्न यश करायो।
तब युधिष्टर भ्रात पठाए।
षष्ट मास महि सभ जिण भाए।
ऊधा न तब बात चलाई।
सुण हो प्रभ सतन सुपदाई।
जरासिंध को बनु बहु भारी।
सोंमुहिण सेना सम सारी।
जो तुम तांसो युद्ध करायो।
युद्ध कीए तिह माहा हतावो।
एक बात म बेउ बताई।
जो भेदुहु करो तब हत्यो जाई।
तुम भज्जनु भरु भीम सिधावो।
तीनो ब्राह्मण भेष बनावो।
धर्मयुद्ध तांसो मंग लेवा।
एहि बात हरि मन महि लेवो।
वहु क्षत्री तिह बलु भयकाई।
तुमको बचनु देइगा सांई।
एक एक तुम तिस करो सराई।
जब इहि करो हत्यो तब जाई।
ऊधो हरि को इहि सनायो। सांईदास प्रभ हृदे धरायो १८८

या कारण भीम अरज्जन कथा कीथा।
भेष ब्राह्मण कों कर लीथा।
जब द्वार जरासिंध के भाए।
नृप त भाइ सुन्दर उचिराए।
मत्री जरासिंध निर्पाया।
निप तामि नृप जब उचिरायो।
ह नृप इहि ब्राह्मण तो नाही।
क्षत्री हमरी द्रिष्ट पराही।

कर पल्लौ तुम इन्हहि निहारौ।
इन्हहि निहार मन महि बीचारो।
दागि परे इन्ह के कर माही।
बाण चलावत कहो समिझाही।
बेधु ब्राह्मण को कर लीना।
तुम छलिबे को हनि पगु दीना।
अति अस्तो आचनु छत्री कीना।
नृप हरि सेती बचु उचिरायो।
कहु स्वामी तुम क्या मन भायो।
तब प्रभ तासो कह्यो सुनाई।
सुरण हो नृप तुम बलु अधिकाई।
जो देवो तब कह्यो सुनाई।
नाहि त कहिले नाहि भलाई।
जरासिंध कहियो मैं दीमा।
जो तुम मांगो सो मन द्रिढ कीमा।
मांग लेहु जो तुम ह्रदे भावै।
देवो सोई जो तुम मनि भाव।
अब नृप ने इहि बचु उचिरायो।
श्री कौसापति तब ही सुनायो।
मै हो कृष्ण अरजन इहि आयो।
इहि भीम सेणु तूं सुरण चितु लायो।
धर्मयुद्ध हमि सहित करावो।
बेग बिलम कछु भूल न लावो।
जरासिंध तब कह्यो पुकारे।
तुम सो युद्ध न करो मुरारे।
मोह सर बलु अरजनु महा भारे।
भार लेउो अंत इहि हारे।
एक भीम बस मोह सर होई।
मो सग युद्ध करो तुम सोई।

जरासिंधि तब बचनु उचारा।
भीम बात मम लेहु सम्हारा।
कछ शस्त्र ग्रहि ते से आया।
जो हमि सौ तू युद्ध को आया।
भीम दीयो प्रतु नृप के ताईं।
मैं शस्त्र भाना कोऊ माही।
तब नृप जरासिंध क्या कीना।
गदा एक भीम को दीना।
एक लीई अपुने कर माही।
चाहित है बहु युद्ध कराही।
संग्राम ठौर आइ कर ठहिराए।
मानो मदिमाते गज आए।
उह उसि को मारे वहु उसि को मारे।
गदा गदा उठहि चिणगारे।
सीन निसि निसि तिन युद्ध कीना।
हारि न कसि तिनि माहे दीना।
भीम कृष्ण ओर नैन निहारे।
चकित परयो नृप एहि उचारे।
श्री कृष्ण भीम को सैन बुझाई।
बीच से चीर डारु मेरे भाई।
भीम ने एक टांग कर लीनी।
दूसरी पग तले पग दीनी।
हरि बसु हिरयौ नृप के ताईं।
चीर डार्‌यो है मध्य मभाई।
चहु ओर होयो जयकारा।
दाईदास भीम नृप मारा।
जरासिंध सुत महिन्द्र नाम।
सदा बसित जिह घटि हरि नाम।
कृपा निधान ताहि राजु दीना।
तिम पर प्रभ ने करुणा कीना।

सहिदेव तब श्री कृष्ण सुनाई।
नीक बाति कहि ताहि समझाई।
जो नृप से बडी पित तेरी।
तिन्हहु प्राण काटो तिह बेरी।
सहिदेव नृप सकल से आए।
श्री कृष्णचद आण दिपाए।
तिन नृप को सभ रूप बनी।
ठौर ठौर कहू बित्तु न दीज।
नृप पर केस भए अधिकाई।
फाटे अबर वेति दिपाई।
एक फाटे इक भए मलीना।
अधिक रूप तिहि भयो अधीना।
आइ श्री कृष्ण को कीयो प्रनामा।
हे प्रभ पूर्नि पूर्न कामा।
आदि अत लगि सर्नि तिहारी। साँईदास करुणा हरि धारी ॥१६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बहत्तरमोध्याय ॥७२॥

सकल भूपति मिल मधु उचिरायो।
करुणा निधि सो आपि सुनायो।
अब हमि प्रभ होते अहि माही।
सुमरे नाम को जाने नाही।
सुत बनिता भामा बितु लावहि।
कुबर अवध सेती उर्भावहि।
अब ते आए बदि इसि माही।
पलि छिन तुम बिनु ध्यानु न जाई।
हमि पर कृपा करों गिरधारी।
हमि हिर्दे होइ भक्ति तिहारी।
कबहू हमि भ्रदि ते नां जावे।
सदा सदा रिदे महि ठहिरावे।

तब करुणा निधि बचन उचारे।
तिन को प्रभु दीनो ततकारे।
धंन्य तुम मत्त हुदे इहि भाई।
हमिरी भक्त तुम हुदे अचाई।
नराभिपु होइ कर भक्त कमावै।
पम मुक्त गति ओहो पावै।
सकल भूपति में मज्जन कीना।
अपुने पान भाजनु तिन लीना।
महुरो पान पत्र ले पाए।
दुप भयो नास अधिक सुप पाए।
श्री कृष्ण कह्यो सहि देव क भाई।
बसम स्यायो तुम अधिकाई।
अंबर इनि नरपति पहिरावो।
मस्त कु चर पर इनहि चढावो।
आयो अपुने पुर को आवहि।
अपुने पुर आइ कर सुप पावहि।
सहिदेव मदव कु चर स मामा।
श्री गोपाल आमे ठहिरामा।
श्री कृष्णचंद उमि ताई दीए।
तब ही इहि बहु मुप ते कीए।
सकला मिथ्या कर्म जाना। निदच इहि बिधि मन महि माना॥
माटी की एहि देहि बनाई। महुरो माटी सों रलि जाई॥
अपुनी पर्जा को सुप देवो। जाद जुलमु किसे नाहि करवो॥
ऐसी भांति तुमि राजु करावो। पर्म मक्त गति को तम पावो॥
तब ही तुमरी होइ कल्याना। पर्म पदार्थ सह पछाना॥
तब ही स तुम मोको पावो। जो तुम इहि बिधि कर्म कमावो॥
अबि जावो अपुने ग्रिहि माही। ग्रहि त्याग तुम भयो चिराही॥
जाइ दर्सनु सुत बधू करही। निहचल आसनु अपनो धरहो॥
बन धमपुत्र लिप पती पठावै। अपुने पुर महि तुमहि बुलावै॥
सहित कुटंब लीए तुम आवो। धर्मपुत्र पुर आइ ठहिरावो॥

राजसी यग युधिष्ठर करही। यज्ञ करनि कों मनिसा भरही॥
यज्ञ माहि नराधिप जो आवो। होइ कल्याण धर्म गति पावो॥
आज्ञा से भूपति उठि धाए। भिन्न भिन्न पुर मग हित लाए॥
तिन की प्रम ने करी कल्याना। सांईदास प्रगटि भयो नीशाना॥१६

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिहत्तरमोध्याय ॥७३॥

भजन भीम सैन गिरिधारी। श्री गोपाल भक्तनि हितकारी॥
सहाक्षिण अवर वठ सिधाए। पुर के निकट आइ धप बजाए॥
तब ही धर्म पुत्र ने जाना। जीत कर आए पुर्यनिधाना॥
राजा बीर दोनो संग स्यामा। उंर लोक पुर को अधिकाया॥
आइ डंडौत करी हरि ताई। तांकी उस्तति क्या उचिराई॥
श्री कृष्ण का पुर से आया। मग मिले आनदु बहु पाया॥
भए बितीत कैते दिन जवही। धमपुत्र पतीआ लिपी तब ही॥
लिपि पतीआ बहु चार पठाई। इहि लिप्या है तासि मम्भाई॥
यज्ञ निकट आया है भाई। इहि प्रजोग हम पती पठाई॥
वेग विलम तुम भूल न लावो। पत्र देप तही उठि आवो॥
सब नृप पतीआ देपत आए। देपि कृष्ण को अति हर्षाए॥
सब ही तिन नृप वचन उचारे।
जम्बु गवामो परे किनारे।
अब जो दसनु प्रभ का पायो।
भई कल्याण सभ दुख हिरायो।
भाग बड़े हमरे होइ भाई।
आइपरे हरि की सर्नाई।
धर्मपुत्र तब हरि की ताईं।
कह्यो सुण हो त्रिभवन साईं।
जो तुमरी हरि माया होई।
मोह हृदे माई पायो सोई।
धर्मपुत्र का हरि प्रभु दीना।
कौन बात तै मन महि लीना।

धर्मपुत्र तब कह्यो सुनाई।
हे प्रभ पूर्न कौर कन्हाई।
सकल रिषों को म्रतब देवो।
एहि बात हरि जी कर लेवो।
तब श्री कृष्ण ने वचन उचारे।
धर्मपुत्र को कहित पुकारे।
सकल रिषों को म्रतब देवो।
साईंदास सुधु मन महि सेवो ॥१६२

श्री कृष्ण कह्यो नृप बानि ताई।
नीक बात ताको समझाई।
धर्म राजसी यज्ञ करही।
यज्ञ करने को मनसा धरही।
कंचन की पुतरी ले आवो।
कछु तुम बेग विलम ना लावो।
बर्न तब ही पुतरी ले आया।
कछु बेग विलम छिन नाहि कराया।
श्री कृष्णचंद कछु बांधि के सीआ।
टहिल कर्नि सेती चितु दीआ।
सब ही कहत नृप आण बहाए।
ताहि नाम सुण ही चितु लाए।
व्यास बालमीक बिस्वेस्वर।
बृहस्पति राहु बेतृमारस्वर।
धूम त्रिप नार्द चलि आए।
प्रगबछ पिपिलाद अचित बताए।
पंडित किन्नर बेद बीचारे।
हरि की उस्तति मुखो उचारे।
जैसे सिंमृत बेद बताई।
तास युक्त यश कीनो भाई।
अमरो सकल जैकार सुनाए।
सकल लोक मिल आनद पाए।

जब ही यग संपूरण होया।
धर्म पुत्र मन ससा पोया।
नृप अपुने से बचन उचारे।
सकली विधि जनु कहित पुकारे।
इन्द्र भूपति ताई समझाव।
सकल हुवे को धर्मु हिराव।
तुम बडे बड नराधिप आए।
मैं तुम ताई कहित सुनाए।
प्रियम तिलकु म किस लगावो।
किस मस्तक मैं तिलकु चढावो।
सहिदेव सुतु जरासिंध करा।
ऊमनि भया नृप ते इहि टेरा।
मोह पति भूपति सा अधिकाई।
अवि म तुम सबकु मरे भाई।
एक बचनु तुम पाहि बीचारो।
जो मन भाई कहो पुकारो।
श्री कृष्ण हरि पूर्व पुराना।
सकल जगत को देवे दाना।
इकि छिन सकल सृष्टि उपिजावे।
इकि छिन मैं सभ भस्म करावे।
प्रियम तिलक तुम ताम मगावो।
हम मेवक कहपा मन ठहिरावा।
जब सहिदेव इहि बचन उचारे।
इनि भूपति तब कह्यो पुकारे।
धन्य मति सहिदेव तुम्हारी।
भली बाति तुम हिरदे धारी।
श्री कृष्ण को सकल आज्ञा दीनी।
युधिष्टर तिलक मस्तक पर कीनां।
सकल सभा चरणाम्रतु लीया।
अपुने बपु को तिन दीया।

ध्रितराष्ट्र को आज्ञा दीने।
ध्रितराष्टर गहि को मगु लीनें।
सकल नृपा को विदआ कीआ।
साईदास सुखु मन महि लीआ ॥१६४

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्दे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौहत्तरमोध्याय ॥७४॥

श्री व्रिजनाथ नें मखु उचिरायो।
धर्मपुत्र सो आप सुनायो।
अधिक भयो पुर को तजि आए।
उग्रि सैन नृप ते बिखुराए।
जो आज्ञा देवो हमि लाई।
उग्रसैण नृप पाहे आई।
तिह समैं युधिष्टर को राजु दीआ।
राजाधिराजु नामु तिह कीआ।
सम नृप तिह तिलकु लगाया।
उग्रसैण अरु श्री कृष्ण रहाया।
श्री गोपाल भगतिन सुखदाई।
गुण निधान हरि जादवराई।
यज्ञ समे प्रम ने इहि कीआ।
द्रव्य दुर्जोधन के कर दीआ।
इहि प्रयोग पर्चु बहु करही।
अधिक पर्चु करनि विनु भरही।
पदम दुर्जोधनि के कर माही।
पखु करे घाटे बहु नाही।
पदम प्रयोग अधिक नहि होई।
फुन फुनि बधे घटे नहि सोई।
अरजन को कह्यो पौण झुलावो।
सहिदेव को कह्यो जलु भरिवावो।
नुकलि को कह्यो आसन पुवावो। एही कामु करनि बिनु जावो॥

धम पुत्र प्रमि सो वधु कीमा। प्रम तोह कवन काज चितु दीमा॥
श्री कृष्णचद तांको प्रितु दीना। हमि विपों पग घोवन चितु कीना॥
मैं विपों के घर्न पपारो। इहि कार्ज पर म चितु धारो॥
भीमसेंम को मिली रसोई। याते भूषा रहे म कोई॥
सम बिधि कर यज्ञ पूर्ण होया। धर्मपुत्र सभ ससा पोया॥
एक सभा महिप्रसुर वनाई।
तांकी विधि कछु लखी न जाई।
तहू सभा महि फटिक पचाए।
तांकी गति कोऊ लखन न पाए।
सकल लोक को जलु द्रिष्ट आवै।
ताहि निर्ख सभ लोक भुलाव।
नृप दुर्जोधन को उन्हा बुलायो।
दुर्जोधिन तिह सभ महि आयो।
जब आवति मग मैन निहारे।
तासि ठौर तिम धम निहारे।
अंबर कर सों लीए उठाई।
तब द्रोपदी निप मुसकाई।
जसु कहु कहा अंबर जु उठाव।
तांहिदास द्रोपदी उचिरावै॥१६

अंधि के सुत कमा द्रिष्ट आवै।
ऐसे बच द्रोपदी उचिरावै।
तब दुर्जोधनु आगे आया।
उन्हा अभु फुन द्रिष्ट न आया।
अंबर सम कर ते तजि दीए।
धत्र न आम्यो तब ढाहि कीए।
रिदे माहि एही उनि धारा।
ईहा जलु नाही इही बीभारा।
आगे पगु जब ही उनि डारा।
धंम माहि गिर्‍यो ततकारा।

सकल सभा मे आनंदु पायो।
साँईदास मंगलु मम गायो ॥ १६३ ॥
सिसुपाल असुर बिहु बसु अतिभारी।
पेखा मया मन क्रोधु संभारी।
सकल सभा की मति मूढ होई।
इन महि सिमरत नाही कोई।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावो।
और बात कछु नां उचिरावो।
कृष्ण बात कहु कहा कहिज्जै।
ग्वार अहीर कहा नाम लिज्जे।
केतकि दिन ग्वालि महि रहूया।
तिन माहे अलगु सुखु सहूया।
तिन के सग भोजनु इनि पाया।
अब भी कृष्ण इनि नामु धराया।
जात पात जादम क्या होई।
हमि स्मसर कहा होवे सोई।
सभ जादव पीवहि मदिराई।
तिन के सग भी कोई नाही।
हमि केरो नराधिप बसिकाई।
कृष्ण कहा करे रीस हमारी।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावहि।
अति सभा मुप इहि उचिरावहि।
कृष्ण कहा ते उत्तम होई।
हमि एहि बतावो कोई।
गोकल महि जिन धेन चराई।
अब भी कृष्ण भए अधिकाई।
ससपाल ऐसे बचन उचारे।
मति अभिमान हुते महि भारे।
सभा लोक मे इहि गुण लीना।
कर अमुष्ट श्रवण महि दीना।

केतकि त्याग गए सभा ठाई।
तुमि इहि विधि सुण साकहि नाही।
भीम सहित वीरों को धायो।
कर किर्मनी सूती धायो।
ससिपाल निकट आइ कर ठहिरायो।
मुप ते सब ही वच उचिरायो।
हे मति मूढ कहा उचिरायो।
कौन दास तुम मन ठहिरायो।
करुणामय पूर्ण भगवाना।
श्री गोपाल हरि पद निर्वाना।
ताको निद्या तू चित धारहि।
मुप ते अैसी बात उचारहि।
अब ही किपति तोह मुप मारहि।
किर्मानी सो सीस उतारहि।
जब ससिपाल इहि विधि सुण पाई।
किर्मानी सूती ठहिराई।
चतुर वीर को आगे डारा।
उनि के मान को चितु धारा।
किस प्रजत तिहि पाछे धाया।
चतुर वीर को तिनहि भगाया।
तब श्री कृष्ण क्रोधु अति कीना।
चक्र सुदरसनु कर महि लीना।
तासो असुर को सीसु कटायो।
कुसम वर्षा तब अमरो लायो।
कीयो जै कार मुप बचन उचारा।
अधिक अभा कीयो प्रान पधारा।
मैंघ दुष्ट को कीनो नासा।
त्रुम अमरों की पूरी आसा।
धितराष्ट्र पथा जो आया।
एक सौ इकु सुतु धमु अधिकाया।

धम पुत्र प्रभि सो यधु कीधा। प्रम तोहू कवन काज वितु दीधा।।
श्री कृष्णपद तांको प्रितु दीना। हमि विप्रों पग धोवन चितु कीना।।
मैं विप्रों के चर्न पखारो। इहि कार्ज पर म चितु धारो।।
भीमसैन को मिली रसोई। यांते भूपा रहे न कोई।।
सभ विधि कर यज्ञ पूर्ण होया। धर्मपुत्र सभ ससा पोया।।

एक सभा महिमसुर बनाई।
तांको विधि कछु सघी न जाई।

तह सभा महि फटिक पधाए।
तांकी गति कोऊ लपन न पाए।

सकल लोक को जसु द्रिष्ट आव।
ताहि निर्व सभ लोक भुलावै।

नृप दुर्योधन को उन्हा बुलायो।
दुर्योधिन तिह सभ महि आयो।

जब आवति मग नैम निहारे।
तासि ठौर तिन अंभ निहारे।

अंबर कर सों लीए उठाई।
तब द्रोपती निप मुसकाई।

जलु कहु कहा अबर धु उठावै।
साईदास द्रोपती उचिरावै ।।१६५

पथि के सुत जया द्रिष्ट आवै।
जैसे वच द्रोपती उचिरावै।

तव दुर्योधनु आगे आया।
उन्हा अमु फुन द्रिष्ट न आया।

अंबर सभ कर ते तजि दीए।
भ्रम न जान्यो तव इहि कीए।

रिदे माहि एही उनि धारा।
ईहा जसु नाही इही बीचारा।

आगे पगु जब ही उनि डारा।
अंभ माहि गिर्यो ततकारा।

ध्रितराष्ट्र को प्राशा दीनें।
ध्रितराष्टर गहि को मगु लीने।
सभस नृपो को बिदग्रा कीग्रा।
साँईदास सुपु मन महि लीग्रा ॥१६४

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौहत्तरमोध्याय ॥७४॥

श्री ब्रिजनाथ नें वपु उचिरायो।
धर्मपुत्र सो भाप सुनायो।
ग्रधिक भयो पुर को तजि ग्राए।
उग्रि सैन नृप ते बिछुराए।
जो प्राशा देवो हमि लाई।
उग्रसैण नृप पाहे ग्राई।
जिह समैं युधिष्टर को राजु दीग्रा।
राजाधिराजु नामु तिह कीग्रा।
सभ नृप तिह तिलकु लगाया।
उग्रसैण ग्ररु श्री कृष्ण रहाया।
श्री गोपाल भगतिन सुखदाई।
गुण निधान हरि जादमराई।
यग्र समै प्रभ ने इहि कीग्रा।
द्रब्य दुर्योधन के कर दीग्रा।
इहि प्रयोग षर्चु बहु करही।
ग्रधिक षर्चु करनि चितु धरही।
पदम दुर्योधनि के कर माही।
षर्चु करे थाके बहु नाही।
पदम प्रयोग ग्रधिक नहि होई।
फुन फुनि नये बटे नहि सोई।
ग्रर्जन को कह्यो चीण भुलावो।
सहिदेव को कह्यो जमु ग्रधिकावो।
गुरुसि को कह्यो बामन पुजावो। एही कामु करनि चितु लावो॥

धर्म पुत्र अभि सो वचु कीआ। अभ तोहि कवन काज चितु दीआ ॥
श्री कृष्णाचंद तांको प्रितु दीना। हमि विप्रों पग धोवन चितु कीना ॥
मैं विप्रों के चर्न पखारो। इहि कार्ज पर मैं चितु धारो ॥
भीमसेन को मिली रसोई। यति भूखा रहे न कोई ॥
सभ विधि कर मश पूर्ण होया। धर्मपुत्र सभ ससा पोया ॥
एक सभा महिअसुर बनाई।
ताकी विधि कछु लखी न जाई।
तिह सभा महि फटिक पथाए।
ताकी गति कोऊ लखन न पाए।
सकल लोक को जलु द्रिष्ट आवै।
ताहि निर्ख सभ लोक भुलावै।
नृप दुर्योधन को ऊहा बुलायो।
दुर्योधिन तिह सभ महि आयो।
जब आवति मग नैन निहारे।
तासि ठौर तिस भ्रम निहारे।
अंबर कर सों लीए उठाई।
तब द्रोपती निरख मुसकाई।
अंधु कहु कहा अंबर जु उठाव।
साहिदास द्रोपदी उचिरावै ॥१६५

अंधि के सुत अंधा द्रिष्ट आवै।
ऐसे बच द्रोपदी उचिरावै।
तब दुर्योधनु आगे धाया।
ऊहा अंभु फुर द्रिष्ट न आया।
अंबर सभ कर ते तजि दीए।
भ्रम न जान्यो तब इहि कीए।
रिदे माहि एही उनि धारा।
ईहा अंभु नाही इही बीचारा।
आगे पगु जब ही उनि डारा।
अंभ माहि गिर्‌यो ततकारा।

जम सो अंबर सकल मिगाए।
दुर्जोधन बिनु मविक घटाए।
तब द्रोपती मधुरो मुसकानी।
दुर्जोधन मन महि बुरा मानी।
सभ नृप मद मंद मुसकावहि।
दुर्जोधन को भला न भावहि।
ध्रितराष्टर सुत अति हंकारी।
ताको भुज मै वसु मारी।
नृप मुसकावहि त्यागहि नाही।
दुर्जोधन क्रोधु कीयो मन माही।
सभ बंधू अपुने सग लीए।
सभा त्याग बाहिर पग दीए।
तब सभ लोको बात बीचारी।
दुर्जोधन क्रोधु कीयो हंकारी।
कहा अपतिग्रो चही उठावै।
कौन बात मम महि ठहिरावै।
दुर्जोधन अपुने ग्रहि आयो।
साईदास हरि ऐसे भायो॥१६६

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे पंचसत्तरमोध्याय ॥ ७५॥

सकल भूपति को अंबर दीनें। अंबर दे सभ बिदया कीनें॥
भिन्न भिन्न ग्रह को धाए। अपुने अपुने ग्रहि मे भाए॥
धरमपुत्र तब कह्यो सुनाई। प्रांन अधानि सुएं जदुराई॥
कंत रत्नाकर बात उचारे। इहि बिधि कैसे मन महि धारों॥
तुम भी जावो हे गिरधारी। तुम पहि अरपति कहित पुकारी॥
जो तुम जावो प्रान अधारा। तुम बिनु पाछे कवन हमारा॥
थी कृष्णचंद्र प्रभ अंतरजामी। सकल जगत को हरि बिस्रामी॥
धर्मपुत्र यथार्थ बीचारी। ताका मैं कह्यो उपचारी॥
मोह भक्त है किउ दुप पावै। मोह भक्ति किस सो चितु लावहि॥

धमपुत्र सो कह्यो सुनाई।
सुणो युधिष्ठर हितु चितु लाई।
उौर नराधिप सम बिन्मा कौन।
साईदास जिन हरि पदु चीने ॥१६७

तेरे कोइ कारण ईहा रहो।
केतक दिन मैं ईहा बहो।
असुर बिशाल ससिपाल को हेत।
ससिपाल सग इस की बहु प्रीत।
जिह दिन श्री कृष्ण रुकमन से आया।
तब बिशाल मन इहि ठहिरायाा।
मम को बसु इस स्मसर माही।
किस बिधि इस सग युध कराही।
मो से बडे जोधे बलिवाना।
उनि के छन्न कीए इमि प्रांना।
एक बात उौर मैं करहौं।
रिदे महि यही प्रबशा धरहौ।
जो देव बडा है सम माही।
तास भक्त मैं मन ठहिराही।
शकर के मस्तल महि आया।
मन महि शिव को जापु जपाया।
एक बप तहा भजनु कमाया।
एक मुष्ट सदस तिहि पाया।
एक वर्ष जब भयो प्रतीता।
शिव प्रगट्यो निर्मल प्रतीता।
ताहि असुर को दर्सनु दीना।
इहि करणा शिव तांपर कीना।
मुप स कह्यो कहा तुम देवा।
सुप्रसन्न तोह चितु कर सवो।
तब ही शिव सो तिम बचु कीमा।
शकर पहि आवन चितु दीमा।

एक नग्र मोहि देहु बनाई।
जिस महि अपुनी बस्तु समाई।
पांच सहस्र रथु ताहि समावैं।
सात सहस्र कुंचर सुघु पावै।
तिसी ठौर मैं चित कों धारो।
मन माहे इहि बात बीचारो।
तत्छिण तिसी ठौर मैं आवें।
उसी ठौर आइ कर ठहिरावै।
शिव बिस्वकर्मे को फरमाया।
जो इहि कहे सो देहि बनाया।
बिस्वकर्मे मन महि धर लीनी।
जो कछु शिव ने आज्ञा कीनी।
बिस्वकर्मे पुर दीयो बनाई।
बिदाल असुर लीनो हिर्पाई।
गज अरु रथ सभ तिह महि डारे।
नग्र द्वारका को पग धारे।
निकट द्वारका जा ठहिरायो।
साईंदास विरोधु बसायो॥११८

दुष्ट बस सभ सुति मुलानी।
तब मन माहे इहि बिधि ठानी।
द्वारका को चहू ओरि बनि नीके।
तहा बस्त सुप होवहि जीके।
प्रिथम वाही बन कटि डारे।
पाछे प्रभ के मदर बिडारे।
बहुरो गृहि तोरन को आया।
महा अधिक बिरोधु बसाया।
गगन चर्यो पाथर सर्प डारे।
मार लोक कौ सीस प्रहार।
सधु बिष्टा ऊपर से करही।
महा मूढ इस ठे ना टरई।

पुर के लोक अधिक दुखु पायो।
हा हा करति सकल ही आयो।
महा अधिक अधेरी छाई।
किसे पछाणे नाही कोई।
तब ही प्रदुम्न मे सुण पाया।
बीर सहित ले बाहिर आया।
प्रिथमे अधिकारी ठहिराई।
पाछे असुर सों करी लराई।
ताकी सना को सर मारे।
सब तिह सैना बचन उचारे।
धन्य धन्य सभ हू उचिराया।
प्रदुम्न तबही सुण पाया।
दो दो सर सभ सैन को लाए।
तब ही बिदास आप चलि आए।
प्रदुम्न को आइ बाण चलाव।
जब प्रदुम्न मारे बडि जाव।
प्रदुम्न की दिष्टी नहीं आवै।
कहो बाण कहु किसे लगाव।
रुकमन सुत को बानु लगायो।
प्रदुम्न बाणु पाइ मूर्छायो।
तब ही स्वार्थी ने क्या कीआ।
रथु गवन फिरि पुर मगु लीआ।
स्वार्थी आद प्रभ ठहिरायो।
स्वार्थी अैस कामु कमाया।
एक घरी बीती जब आई।
प्रदुम्न को बहुरो सुधि आई।
जैसे मूया नैन निहारे।
तैसे रुकमन सुत मम उचारे।
स्वार्थी सों तब कह्यो सुनाई।
सुण हो स्वार्थी मेरे भाई।

मैं सग्राम ठौर ठहिराया। मम को ईहा कीनु स्याया॥
क्रोधु कीयो स्वार्थी सो भाया।
है मति मूढ कहा चितु राया।
तू मोको कछु कहा न भायो।
कौन ठौर मानें ठहिरायो।
जो श्री कृष्ण इहि बिधि सुए पावै।
हमि को दुष अधिक उपिजावै।
प्रद्युम्न नें आगम चितु लाया।
तातें मूमा भला अभिकाया।
तव स्वार्थी तांको प्रतु दीना।
है प्रभ क्रोधु काहू मन सीमा।
मै श्री कृष्ण तें इहि सुष पाई।
सो तुम पाहू कहिए सुनाई।
जो स्वार्थी रए न मूर्छाई।
स्वामी रक्षा करे अधिकाई।
जो स्वामी रण महि मूर्छावै।
तव स्वार्थी तिह रक्षा करावै।
मैं कछु बुरा नाहि है कीमा।
तुम कसु क्रोध हुदे महि सीमा।
प्रद्युम्न फिरि युद्ध को चठि धाया।
माईदास तिह कसु अधिकाया॥१११

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छिहत्तरमोध्याय॥७६॥

श्री गोपाल बिधि आगिण हारा।
पम पुत्र ना श्रवन बीचारा।
भानु रत स्वप्नो इकु पाया।
तास माह मनु अति बिसमायो।
कल्याण माहि द्वारका क माही।
इहि बिधि स्वप्नो ऐमा आही।

आज्ञा देहु जो मैं तहा जावो।
जाकर पुर की सोभा पावो।
धर्मपुत्र से आज्ञा पाई।
अपने पुर को चल्यो धाई।
आज्ञा करी स्वार्थी ताई।
वो घट महि मोह जा पहुचाई।
वो घट महि द्वारका निकट आए।
प्रदुम्न युद्ध करति निर्पाए।
श्री कृष्ण आइ निकट ठहिरायो।
विशाल असुर तब ही निर्पायो।
कह्यो कृष्ण सौ तब ही पुकारा।
तू है शत्र अधिक हमारा।
कह गया था हमि वतिसावो। अनि भाग कहू ठौर न पावो॥
कृष्ण रोक्यो बाणु लगावे। तास पक्ष को मार चुकावे॥
विशाल असुर सर कर महि लीआ।
श्री कृष्ण के दाहणे अग को दीआ।
बहुर पश्चम ओर भी लायो।
प्रभ के कर से धनुषु गिरायो।
सारग धनुषु जब धरि पर गिर्या।
तब विसवास सभ अमरो करया।
असुर तब ही अकास को धाया।
सकल अमर मन महि विसमायो।
सारग धनुष पर्यो धनि परांही।
अब हमरी ठौर काहू माही।
दुष्ट असुर हम को दुख देव।
साईनाम कथा मन धर सव।२००

विशाल दुष्ट पक्ष मै अपु धारा।
ब्राह्मण भेषु कीओ तसकारा।
तब धा कृष्णबदि पहि आया।
श्री गोपाल सों आप सुनाया।

देवकी मम तोहि पाहि पठायो।
तोहि पितु किन्ही माँधि घसायो।
जब कौमापति इहि सुण पायो। एक घटि मगि विस्वासु करायो॥
ममा ऐमी जैसे करई। मैसी चिता मम महि धरई॥
मसा बसु किसि सों मेरे भाई। बलदेव होते बाँध बसाई॥
दुष्ट असुर बहु बपु तजि दीमा। बसुदेव रूप माया दी कर सीमा॥
दामनी ताके उर महि झारी। माण कृष्ण पहि बग न्यारी॥
कृष्ण देपु पित तोहि से आवे। पाछे सें बहु मम पछुतावें॥
चो बमु साग लेहु छुड़ाई। फिरित नहि को सुधि ना पाई॥
अतर महि हरि ध्यानु लगायो। सकल बिर्थात तबही हरि पायो॥
मामा रूप असुर मे कीमा।
चाहित है हमि को दगा कीमा।

जिह समे असुरु अकास सिधायो।
सकल अमर के मन भौ भायो।

यी गोपाल चक्रु कर लीमा।
असुर को सीसु तब ही कटि दीमा।

और अधिक पल हरि भी मारे।
ताहि सीस बधि महि हरि डारे।

रूद्रहि बात सिर पल अधिकाई।
सप्त प्रबाहु अधिक मेरे भाई।

पत बक तब ही चलि आयो।
प्रम को आइ कर बचनु सुनायो।

मोह बीर तैनै ही मार्‍यो।
युद्ध कीमो कर ताह प्रहार्‍यो।

बहु मीत बाही ही मीका।
भौ अपजस को लेह न टीका।

अपुत्र बीर बैर मैं लयो।
तोहि मारनि को सरु कर येमो।

दतबक्त सर कर महि कीमा।
यी कृष्णचदि चोरहि डार दीमा।

बहुरो श्री कृष्ण ने बाण चलायो।
दाहण भुज तिह काटि चुकायो।
बहुरा पश्चम भुज कटि डारी।
बहुरो सीसु तिह सीसा उतारी।
दतबक्र तनु धर्नि गिरायो।
जैसा कीया तैसा उनि पायो।
साधो हरि धर्नी चितु धारो। साँईदास हरि नाहि बिसारो॥२०१

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे सपततरमोध्याय ॥४८॥

श्री कृष्णचद सभ असुर हताए।
अति अनद सो पुर महि आए।
अमरा अधिक कीयो जकारा।
जबहि बिदास असुर का मारा।
करो पांडो पती पठाई।
ताह बिधांत सुणो चितु लाई।
हे प्रभ कुरखेत्र के माही।
धरमु कीयो है त्रिभवन साँई।
महामार्ग को धरमु करायो।
हे प्रभ आवो बिलमु न लायो।
श्री कृष्णचंद पतीआ कर आनी।
ले पतीआ बसदेव का दीनी।
पांडो कैरो की पतीआ आई।
पढहो बसदेव हितु चितु लाई।
महामार्ग कर्न चितु लावहि।
हम को इस प्रजोग बुलावहि।
जो तुम कहो करहि मेर भाई।
जो तुम मन महि होइ बताई।
बलदेव जब इहि बिधि सुण पाई।
मन अंतर इहि बिधि ठहराई।

देवकी मम तोहि पाहि पठायो।
तोहि पितु किन्ही वाभि चलाया।
जब कौमापति इहि सुण पायो। एक घटि लगि बिस्वासु करायो॥
मया दखी असे करई। ऐसी चिंता मन महि धरई॥
असा वसु किसि सों मेरे भाई। वसदेव होत बांध चलाई॥
दुष्ट असुर वहु वपु तजि दीया। वसुदेव रूप माया दी कर लीया॥
वामनी ताके उर महि डारी। प्राण कृष्ण पहि वेग सिधारी॥
कृष्ण देवु पिस तोहि से जावे। पाछे सें बहु मन पछुतावें॥
जो बसु आगे लेहु छुडाई। फिरित कहि जो सुधि ना पाई॥
अंतर महि हरि ध्यानु लगायो। सकल विघात तबही हरि पायो॥
माया रूप असुर न कीआ।
चाहित है हमि को दया कीआ।
जिहू समे असुर प्रकास सिधायो।
सकल अमर के मन भौ आयो।
श्री गोपाल चक्र कर लीआ।
असुर को सीसु तब ही कटि दीआ।
और अधिक पल हरि जी मारे।
ताहि सीस धरनि महि हरि डारे।
स्वहि बात सिर पल अधिकाई।
सप्त प्रवाह अधिक मेरे भाई।
दत बक्र तब ही चलि आयो।
प्रम को आइ कर बचनु सुनायो।
मोह बीर तैंने ही मारयो।
युद्ध कीयो कर ताह प्रहारयो।
बमू मीत बाही ही नीका।
जो अपजस को लेह न टीका।
अपुने बीर बैर मैं लेबो।
तोहि मानि को सब कर देबो।
दतबक्रत सत कर महि कीआ।
श्री कृष्णचदि ओरहि डार दीआ।

बहुरो श्री कृष्ण ने बाण चलायो।
दारुण भुज तिह काटि चुकायो।
बहुरो पछम भुज कटि डारा।
बहुरो सीसु तिह लीयो उतारी।
दंतबक्त्र तनु धर्नि गिरायो।
जैसा कीया तैसा उनि पायो।
साधो हरि बर्नी चितु धारो। सांईदास हरि नाहि बिसारो ॥२०१

इति श्री भागवत महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षित सबाद सपतरमोध्याय ॥४८॥

श्री कृष्णचद सभ असुर हताए।
प्रति अनद सो पुर महि आए।
अमरो अधिक कीयो जैकारा।
जबहु विशाल असुर का मारा।
कैरो पांडो पती पठाई।
याह बिर्थात सुणो चितु लाई।
हे प्रभ कुरुक्षत्र के माही।
अरमु कीया है त्रिभवन सांई।
महाभार्थ को अरमु करायो।
हे प्रभ आवो बिलमु न लायो।
श्री कृष्णचद पतीआ कर लीनी।
स पतीआ बलदेव को दीनी।
पांडो कैरो की पतीआ आई।
पढहो बलदेव हितु चितु लाई।
महाभार्थ बर्ने चितु लावहि।
हम का इस प्रजोग बुलावहि।
जो तुम कहो करहि मेरे भाई।
जो तुम मन महि होइ बताई।
बलदेव जब इहि बिधि सुण पाई।
मन अतर इहि बिधि ठहराई।

श्री कृष्ण पाँडवादण होइ सहाई।
हमि तास्यु कैसे करहि सराई।
जो मैं करो ढौरि कहावा।
तो भ्रम सो कैसे युद्ध करावो।
तात एहो है भला भाई।
एक ठार आवो मै धाई।
तिह युद्ध माहिं आवो नाही।
एहो भाई है मोह मन माही।
कर विचार हरि का प्रभु दीना।
हे भ्रम इहि बिधि मै मन लीना।
मैं मज्जन तीर्थ ना कीआ।
अति मलीन हो आत्मा होआ।
आज्ञा हो‍ तीर्थ मैं जावो।
तीर्थरटन कीए फिर आवो।
श्री गोपाल विधि जानण हारा।
सकल बिस्व ताहूं बिस्तारा।
कहा भला जावो मेरे भाई। तीर्थरटन करो तुम जाई॥
श्री गोपाल तिहि आज्ञा दीनी। साँईदास बलदेव मन लीनी॥२ २

बलदेव तीर्थरटन को धाया। प्रिथमे गंगा सागर आया॥
प्रिथम तहँ इस्नान कराया। पाछे स किन्नार को धायो॥
बहुरो जगननाथ को धायो। जगन्नाथ पर्से सुख पायो॥
नमपारमनका‍ रहें। अति अनंद सो तहा ही रहें॥
बहुरो बलदेव जी तहा आए। ताहि बात सुण हो चितु लाए॥
तहा श्री भागवत कथा होति भताही। मनकावक सुण हितु चितु लाई
जब बलदेव तहाही आया। सकल ऋषीश्वर ने निर्याायो॥
टाड भए मकल सनवारा। साति प्रान कछु हृदे न धारा॥
मर्यादाग हलधर को न दीना। बलमद्रि क्रोधु अधिक मन लीना॥
क्रोधु कीयो कर बधु उपिराया। गोत प्रान सों तबी मुआया॥
हे स्वामी तू बेद पढ़ाही। बेद कह्या तू धर्म नाही॥

मैं भाया सम ऋषे निहारा। प्रर्घासन दीनो सत्कारा ॥
तै कछु मन माहे ना माना। वेद कह्या तैं क्यु नही माना ॥
वेद वात इहि कहति है भाई। प्राप ते जो प्राव प्रधिकाई ॥
सिह ताई प्रर्घासनु दीजै। छिन पल मात्र बिलमु न कीजे ॥
तू सो सुद्ध प्राह्मण भी नाही। तोहू मात क्षत्राणी माही ॥
पिता ब्राह्मण तेरो है भाई। प्रसी बलभद्र बात सुनाई ॥
बहुरो क्रोधु प्रधिक मन धारा। कुषा सहित तिह सिर कटि डारा ॥
तब ही ऋषीश्वर कह्यो सुनाई। हे हलधर त क्या चित प्राई ॥
इसे न हत्यो हमि हत लीया। इहि कार्ज जो तैन कीया ॥
कल्युग निकट प्रायो है भाई। ता महि ठौर कीयो ना जाई ॥
हमि को एही कथा सुनावै। कथा सुणाइ हमि भर्म हिरावै ॥
इसे न हत्यो हमैं हतायो। साईदास प्रैसे सकल सुनायो ॥२०६

हलधर नें ताको प्रतु दीना। जब इहि प्रश्नु सकल ऋषि कीना ॥
इसका कालु प्रैसे सा भाई। जो विधि लिये सो कौणु मिटाई ॥
सत्कादक हलधर सो बधु कीना। कैसे कालु प्रम इसि इहि लीना ॥
इसि का हम को देहि बीचारा। हमरो भ्रमु तुम लहु निवारा ॥
राम कह्यो सुण हो मेरे भाई। सकल बिर्थांत मैं देठो बताई ॥
एक समै इसि ऋषि क्या कीग्रा। गीता कथा कर्नि चितु दीग्रा ॥
एक पढित तिस को निर्पायो। तास कथा सुण कर मुस्कायो ॥
उनि पढित थापु दीयो इस ताई। जो बधु कहे सोई मिटै नाही ॥
जब तूं भागवत कथा करावै। प्रपुनो मनु ताहू सो भाव ॥
प्रर्घासन बैठो रहे भाई। तब तेरा सिरु कट्यो जाई ॥
इसका कालु निकट सा प्राया। इसि प्रयोग मैं इसे हताया ॥
तब ही ऋषीश्वरों वचन उचारे। हे बलभद्र जी प्रांन पधारे ॥
दया करो इस पर प्रधिकाई। मुक्ता प्राइ प्रभ सुत दिपाई ॥
तुमरे कर सें प्रान तजाए। तोहू करुणा पूर्न गत पाए ॥
बलदेव मे ताको प्रतु दीना। सकल बिचारु ताहि ने कीना ॥
जो इस सुत होइस सो लेहु बुलाई। बेग बिलम करहो ना भाई ॥
बलभद्र ताको करे कल्याना। चिरजीव होवै चतुर सुजाना ॥

जन्म जन्म सुम कथा सुनावै। तुमरे मम को भर्म हिरावै॥
बहुरो और बिनती तिह ठानी। हे बलभद्र तुम प्रति बलवानी॥
इहि स्थावर असुर जो रहे। असल बलस तिह नामु उचिरहे॥
हमको दुःख दवै अधिकाई। तिह सों हमरा कछु न बसाई॥
जिह समे मज्जन करि हमि आवहि। ताहि समे हमि आइ संतावहि
अस्ति मास हमि ऊपर डारहि। कंकर लेकर हमको मारहि॥
हमि पर कृपा करी तुम आए। पूर्व जन्म हमि भाग जगाए॥
बलभद्र जी तुम तिनहि हतावो। माँईदास को दुःख मिटावो॥२४

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठत्तरमोऽध्याय ॥७८॥

हलधर सम्बादक के लीए। नेम धार माहे पग दीए॥
असल बलस के मारनि कार्न। ताह बसे प्रम अपर अपान॥
केतक दिन तहु ही ठहिराए। भक्त हेत इहि कर्म कमाए॥
पूर्नमाशी को दिनु आयो। ऋषि सभ मज्जन को उठि धायो॥
असल बलस पस तब ही आए। और निकट भई सुत्ति भुलाए॥
तहा आइ दीघ बपु धारा। अस्त मास ऋषि सभ पर डारा॥
अघु विष्टा तब ही कर दीना। सकल ऋषो दुःखु मन महि लीना॥
हलधर पहि सभ आइ पुकारे। हे प्रम दुष पाए अति मारे॥
सभो आइ हम को दुख दीना।
अघु विष्टा हमि पर आइ कीना।

तत्क्षिण बलदेव जी उठि धाए।
असल बलस तिन मे निर्धाए।

गमन करहे इहि कामु कमावहि।
विकट बने चासौं हुटि जावहि।

हमि बसुधा पर है ठहिराए।
हल मूसलु कर कीनो ताही।

बहुरो हलु ताके सिर मारा।
मार कर हलु तिह सीसु बिडारा।

असुरों को हलिधर हति लीना। सकल ऋषीश्वर कों सुष दीना ॥
बहा दुष जन आइ सताव। साँईदास प्रभु आप हिराव ॥२०५॥

हलिधर तिन सो आज्ञा पाई। गोदावरी को चल्यो धाई ॥
तहा आइ कर मज्जन कीना। महा अधिक सुष मन को दीना ॥
बहुरो हरद्वार को धायो। तहा आइ इस्नानु करायो ॥
दहि सहस्र सुरिहू सकल्प कराए। तहा मज्जनु लोक कति अधिकाए
तब उनि ताको बचन उचारे। आप मधि वहि कहित पुकारे ॥
पांडो करों कुरक्षेत्र माहे। अधिक युद्ध करहि आप मझाहे ॥
अठ्‌ासि क्षूहणा सैना सारी। युद्ध करति सूरे बलिकारी ॥
याराक्षुहणी कैरव सारे। सप्त क्षूहिणी पाडव वारे ॥
बलदेव सुण कर बचन उचारे। मन महि स बरु बहु विधि धारे ॥
बहुरो कह्यो एक वार तो आवो। तहा आइ कर फुनि निर्पावो ॥
एक बात तिन को कही आई। जो समिझ होइ अति भलि भाई ॥
जो समझ नाही बहु आनहि। असे बलदेव बचन बषानहि ॥
राम तहू मग फुनही आयो। जहा इनहि सग्रामु मचायो ॥
श्री कृष्णधदि हरषर निर्पायो।
तब मन महि एही उपजायो।

जो कही बलदेव युद्ध न करहो।
युद्ध करनि को मा पितु धरहो।

तौ भी बुरा होइ मेरे भाई।
ताहि बचन मेटयो ना जाई।

ऐसो होइ विह कह्यो पठावो।
द्वारका क मग तास चलावो।

हलधर ने आइ कर निर्पायो।
दुर्योधनु भीम लरति द्रिष्टायो।

हलधर दोना पाहे आया।
दोनों को आइ शबद सुनाया।

तुम दोनों कौनु समसर होइ भाई।
भला करो न करो लराई।

तुम महि कोऊ मुख न फिरावे।
भागन को कोऊ चितु न लावै।
मैं तुमरे भले कानि भाई।
कहित हो ना तुम करो लराई।
तुमरी जीत निकट भाई जानो।
मोह कहा तुम नाही मानो।
जो मम भाव करहो भाई।
बलदेव असी ताहि सुनाई।
हलधर क्रोधु कीयो अधिकाई।
साईदास चल्यो पुर को भाई ॥२६

राम द्वार्का को पग धारे।
तरिक्षण आयो तास मझारे।
उग्रसेन बलदेव जी पहि आयो।
प्रद्युम्न सहित तबहि उठि धायो।
राम को पहुचो पुर के माही।
भयो अनदु दुःख कछु नाही।
भोजनु विप्रों ताई दीना।
असी विधाँत पूर्ण यज्ञ कीना।
प्रिथम सुरहे सकस्स चु कीना।
गगा तटि आप विप को दीनी।
परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे।
हे शुक जी तुम सुण मन माहे।
मतु तुमरे मन महि इहि आवै।
परीक्षत सुण कथा मन न अघावै।
एहए या अंमृत है भाई।
अ मृत से कहु कौणु अघाई।
द्रिग वही भाई हरि को निर्याव।
हरि लीला श्रेपन चितु लावहि।
सीसु भलो हरि पर उमर्पावै।
सदा उदीत कनि चितु लावै।

जहां जहां कथा कीतिनु होई।
उठि धावन करे बिलम न कोई।
आपस को तहा जाइ पहुचावहि।
तहा जाद छिन ना अससावहि।
सदा सदा सीय तटि जाही।
धर्नो सो इहि कर्मु कमाही।
श्रवण मल मेरे सोई भाई।
हरि जसु सुनति सदा चितु लाई।
पर निंदा सी चितु न धरहि।
हरि की कथा सुणि प्रेम बीचारहि।
अैस नृप सुकदेव सुनायो।
सांईदास हरि को जसु गायो ॥२०७

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे उणासीमोध्याय ॥ ७६ ॥

आस समे श्री कृस्न बिहारी।
बसदेव सहित बल सरकारी।
विद्या अर्थि धनार्थी धाए।
बिप सुदामे तब निर्पाए।
दीमो इकि ठौर होइ सिधाए।
जाइ सदीपन पहि ठहिराए।
विद्या आप करी उठि धाए।
तब हरि बिप सा बचन कराए।
मै ग्रहस्तु करो गा नाही।
इहि बचु कहि आयो ग्रहि माही।
तब ही अपुने ग्रहि महि आया।
तबिहिरए अपुना कामु कराया।
बिपि कन्या सुसीमा नामा। अति सुत्र सुदर वाही भामा।
तांसो ब्याह संजुक्त बनाई। प्रिथम बचनु उनि दीयो भुलाई।
भिए लेकर तिन कुटी बनाई। अैसी बिप ने काल कराई॥

सुमीसा वधि मोको क आई। सिसा कीए कछु सेवर पाई॥
और कछु तांको संग नाही। कबरी ओडे फिति सदाही॥
विपु मग्नि ग्रहि महि ठहिरायो। इहि बिधी सतिह वेद बतायो॥
जा कछ सुमीसा सिसाकर माना। मकल पायो इकु रह्यो न दाना॥
जा कछु रहित ताहि गृहि माही। पर पकाइ देत विपताई॥
साप भिग्नि कर पावे नाही। ग्रैस कर बहि सभा टसाही॥
इक दिन विस्मकि महि चितु धारा। तवि सुदाम इसे निहारा॥
कहु कहा विस्मकि चितु कीना। कौनु सचरु तें मन महि लीना॥
सबी सुसीसा वचन उचारे। हे प्रम पूस प्रान मघारे॥
हमि को एता कछु न वसाए। बिनु प्राज्ञा तुम कहो सनाए॥
प्रब जो तुम मे किर्पा भारी। सकल बात मैं कहो विचारी॥
हे प्रम हमरे ग्रहि कछु नाही। इहि काण हम चितु विस्माही॥
तुम जु कहनि हरि सपा हमारा। हसधर बीर है प्रधिक प्यारा॥
उनि हमि विद्या एक सग मापी। एक ठौर वहि भोजन चापी॥
त्रसोक नाप वहु कृष्ण कहावे। तुमरा दादु सकल मिटावे॥
सकल सृष्टि का वही प्रिन पालकु। दयावान प्रभ सदा दयालक॥
जो तुम को माया नही देवहि। चतुर्भुजा तुमको कर लेवहि॥
बैकठि को तुम दर्स न्पिावे। तुमगो मावागौनु मिटाव॥
विद्या गुर सों बहु हेरा। वही कृष्ण है सुण कहा मेरा॥
सदमी ताह पर्न चितु साव। साईदास ग्रैसे उचिराव॥२ ८

जब बिप ने इहि विधि सुण पाई। तब सुसीसा सौं कह यो सुमाई॥
तोहि कहा मै रिद बीचार्‌यो। श्री कृष्ण पाहि श्रावन चितु धार्‌यो
मेट माहु जो लकर आवो। श्री कृष्ण आगे पडि कर ठहिरावो॥
तब सुसीसा तिह कौं प्रनु कीना। हे प्रम तुमने इहि बचु कीना॥
हमिरे ग्रहि माहे कछ नाही। क्या देवों मैं तुमरे ताही॥
कहो कहु गृहि मागन जावो। कछु वामु जिसे सेसी स्यावों॥
माम्या पाइ नम उठिधाई। एक पड़ोसी के ग्रहि भ्राई॥
चातुर मुष्ट तदम के स्याई। हिरदमान होए ग्रधिकाई॥
कह्‌यो लेहु दिज वेग सिधारो। हरि दरसन को तुम चितु धारो॥

सखी सुदामे ताहि सुनायो। हे रामा भला दाम्भ बतायो॥
किसे माहि इसको बधि देवो। मोह कहा घटि अंतर सखो॥
नारी हेति अबर पाया। फाटा अभिक तिन जत्नु करायो॥
जत्नु कीयो कर गांठ बन्हाया। स विप बग चल्यो उठि धायो॥
द्वारका पुर कों दिज उठि धाया। मग आवत मन सा भगिरायो॥
तीन कोटि द्वारका के भाई। ताके चहु ओरि दधि पाई॥
ताहि द्वार कपाट मजाने। ऐसी विधि द्विज हुे बपानें॥
षोडस सहस्र रामा हरि केरी। इकु सा बीस मह अभि करी॥
कया आनो ताके गृहि होई। मम को सोधि पति ना कोई॥
ऐसे दिज मन सोभ्र गिरावति। मग माहें चल्या बहु आवति॥
ततक्षिण पुर के निकट ही आयो। आइ द्वार ग्रहि के निर्पायो॥
तब द्वार ग्रहि आग धायो। साईदास पुर माहें आया॥२०९

जब बिप पुर महि कीयो प्रवेसा। अधिक भयो मम माहि अदेसा॥
कांक ग्रहि माहे पग धारा। तहा जाइ श्री कृष्ण निहारो॥
मन महि टेक करे हरि केरी। जो काटे अघ की पग बेरी॥
दिज पग रुकमन के ग्रहि दीने। एक टक हरि की मन कीने॥
प्रम अजक पर सनु करायो। धीन कीय आनन्द बहु पायो॥
रुकमन कर महि चोर भुलाव। श्री कृष्ण अधिक सुपु पाव॥
अंतरजामी स्याम हमारे। जाग परे प्रभ श्री ततकारे॥
मिप सुदामे को प्रभ धाए। द्विज ततक्षिण म अग लगाए॥
भुज से गहि ग्रहि अंतर आना। भक्त भाव हरि हुे पछाना॥
प्रयक रुकमन के पर बैठ आयो। अधिक मणी निर चमित करायो॥
रुकमन ततक्षिण जलु ल आई। पग धोए निर अबर कराई॥
चर्णामृतु से मस्तक धार्‌या। रुकमनी भी पुन सीस मयार्‌यो॥
बहुरो भोजनु बहु बिधि ल्याई। नाई चवाया आ अनुरागे॥
बहुरो प्रभ मे बचन उचारे। मावनु धमि आनो तग्गार॥
बावन चंदन धमि कर ल्यार्‌। श्री गापाल कर लीयो तार्‌॥
लपुंे कर बिप के तन लाया। भक्त हुन प्रभ अधिक बढाया॥
सुनाम भगत सी कह्‌यो सुनाई। गुण हो सुनामा हमिर भाई॥

हु विधि क्या भयो तुम साँई। सूदम भयो हमि देहि बताई ॥
ताम समे मग महि ना आवति। अधिकया भयो वयु नाहि बतावति
वाहि समा तुम कों चित आव। हमि तुम वन जावति चितु साव ॥
विद्या गुर की आज्ञा पाई। लकरी लन चल बमि आई॥
मीत काल मा भरे भाई। मब भयो वन महि अधिकाई ॥
निम सम हमि रहे वन के मांही। सीत भयो हमि का अधिकाई ॥
जब ते रवि में कीया प्रकासा। तब ही मन महि भयो हुलासा ॥
विद्या गुर पावक कर सीए। तलिरुण वन माहे पग दीए ॥
हमरो नामु म मुखो पुकारा। हमि को आइ मिल्यो सतकारा ॥
अग्नि जराइ हमि सीतु गवायो। किर्पा कर ग्रहि महि ल आयो ॥
हमि लकरी सिर पर धरि आनी। साँईदास हरि ऐसे बखानी ॥२१०

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे असीमोध्याय ॥८०॥

सति भामा जामवती चलि आई। और नायका सम अधिकाई ॥
ग्रहि ऊपर आइ कर ठहिराई। आप मध्य वहि वात चलाई ॥
श्री कृष्णचन्द को सभा निहारा। कहा सुंदर अति रूप उजारो ॥
कनक अयक ऊपर ठहिराए। तिह अयक बहु मणी पचाए ॥
एक ताहू माहे उचिरायो। ऐसे वच तिह आप सुनायो ॥
इन सखी भले सभा इनि चाहा। मैं तुम कहो सुनमि चितु साहो ॥
प्रिथम तौ इनि इनि वदे पारे। पाछे सुरही अनि कौ से आए ॥
सभा नया हमि सभा निहारे। उनहिमे ते छूटे ततकारे ॥
हमिरे पिन को नामु धराबै। छिन पल हमको उमहने साबै ॥
अब इसि को सभा हमहि निरपायो। अधिक रूप हमि कों दिखायो ॥
प्रम दिज सा तब वचन उचारे। सुण हो सुगामा मीत हमारे ॥
नाम समे तुम हमहि मुलायो। करो न कानु इहो उचिरायो ॥
मसा कीयो दिज कार्ज कीना। अपने चितु ठौर कर लीना ॥
चड नाम हमिरे धाइ आगे। हमिरे तुमरे पग लागे ॥
विद्या अपि तुम सो हितु हुआ। और सबोगु बन्यो नां दूधा ॥
तब दिज ने हरि कों प्रतु दीना। हे प्रभ कौन बात मन लीना ॥

मोमें सिधकि भई फिरावहि। कहा बात तू मोहि सुणावहि॥
जो तुम कहो सो तुम बनि आवै। तुम कों हरि जी सकल सुहावै॥
इमि ऊपर किर्पा प्रभु धारी। दया करी तुम कुंभ विहारी॥
अैसे दिज हरि आप सुनायो। साईदास तापर बल आयो॥२११

रवि ने अपुने आप दुरायो। सत्तरि चिन ऊपर प्रगटायो॥
मानो रग भई मेरे भाई। तब श्री कृष्ण कह्यो हितु लाई॥
पार करो पावन के साई। बग विलम कछु लावो नाही॥
प्रभ विप को आप सहित वहायो। भोजनु बहु बिधि ताहि पवायो॥
अपुने सहित ही चैन करायो। चैन कर्ति हरि बचु उचिरायो॥
हे विपि अब सूक्षम वपु लीना। कवन सबद ते मन महि कीना॥
अपुनो कर निह म ग फिरायो। अैसे ही बचु ताहि सुनायो॥
अंशीअर दुरा उदेभानु प्रकासा। कमल पिढ पूर्न भई आसा॥
श्री कृष्ण कह्यो इहि भक्तु हमारा। बिनु हरि भक्त न इसे प्यारा॥
इसि को रामा दीनो पठाई। माया कानि मेरे भाई॥
अपुनी मामा इस को देवो। दुख दइ इमि का हिरि लेवो॥
एता द्रव्य देउँ इसि लाई। जो अब लगि किस कों दीयो नाही
प्रभु विसुकर्मा लीयो बुलाई। ताहि कह्यो श्री जादमराई॥
जैसे भवन द्वारका के कीए। स्वस्ति चित्त नीके कर लीए॥
चौर बन बहु ठार लगाए। भली भांति के बृछ बनाए॥
सुदामा जी के पुर के द्वारे। अहि तुम साज सहु उतकारे॥
मनम प्रितमा कछु बनावो। द्वार्का से बहु भल करावो॥
कवन के भवन करे विप करे। मैं तुझे कह्यो सुणो बच मेरे॥
महा मित्र इह भक्तु हमारा। बिन भक्ती इस और न प्यारा॥
विसुकर्मे आग्या हरि पाई। विप के पुर को चल्यो धाई॥
कनक भवन तहा जाइ सवारे। कोए जाइ अहि तिम तरकारे॥
विश्व अधिक सहु प्राण लगाए। मानो बैकुंठ लीयो बनाए॥
तास अधिक जस भरे लीसहाही। जाम निर्पभ दुःख मिट जाही॥
बहुत भली बिधि रचन रचाई। साईदास दयाल दुप जाई॥२१२

श्री गोपाल विधि आगण हारा। सुदामे भवन मों वचनु उचारा॥

कहा भेट आनी हमि ताई। हमि को देहु तू क्यं सकुचाई॥
सुदामा मन महि बहु सुकचायो। तब प्रभ नै इहि कामु कमायो॥
श्री कृष्णचद तदस कढि लीनें। गांठ पोल्ह कर माहे कीनें॥
श्री कृष्णचद तब कह्यो पुकारे। हे विप तुम हो भक्त हमारे॥
कतकि दिन भए हमर ताई। तंदल को हमरो मनु चाही॥
तुमर हमर मन की विधि पाई। तदल आने तैनें भाई॥
मतु तू इहि मन माहे आने। थोड़े कानि मतु सकुचाहे॥
जो कर प्रीत इकु कुसम ल्यावै। हमर मन महि बहु भलो भावै॥
जो कोऊ महा अधिक द्रब्य आने। मन महि प्रेम भाउ नही जाने॥
हमि का वहि तो भावे नाही। ऐसी विधि है हमि मन माही॥
मतु थोरे कर जाने भाई। हमि को एही है अधिकाई॥
अपुने कर हमरे मुप पावो। मन अतर कछु मा सुकचावो॥
मुस्ट तदल की दिज भरि लीनी।
तत्तिछण हरि के मुप महि दीनी।

बहुरो द्वितीआ मुस्ट भी डारी।
ततछिण अचि लीनी गिरधारी।

चाहित तीजी मुष्ट को डारें। रुकमण कर पकर्यो तत्कारे॥
मुप अपुने तें बचु उचिरायो। प्रभ को इहि बचु आप सुणायो॥
दो लोक को द्रब्य दिज को दीना। अधिक करुणा तें इनि पर कीना॥
अबि वैकुंठ रह्यो बदुराई। चौद रही मै तो सकुचाई॥
ऐसे बचि रुकमण उचिरायो। श्री गोपाल मन महि ठहिरायो॥
बिप सुन्याम बिनती ठानी। हे प्रभ पूर्न सारग पानी॥
आग्या होइ तब ग्रहि को जावो। जो आग्या होइ मन ठहिरावो॥
श्री कृष्ण कह्यो जावो मेरे भाई। मै आग्या दीनी सुपदाई॥
बिपु आग्या ले ग्रहि को आया। मग आवत मन महि बिस्माया॥
हमि प्रभ सौ कछु नां जाचायो। ना हरि किर्पा हमिहु करायो॥
सुसीला सो म कहा सुनावो। तांको किस बिधि कर समिभावो
मोकौं जतन कीयो पठायो। सुसीला सौं बहु जतन करायो॥
बहुरो ग्राम कीयो परकासा। मूसी दिज को बिपु की प्यासा॥
भला कीया हरि कछु ना दीया। इहि करुणा प्रभ हमि पर कीया॥

जाके ग्रहि महि माया होई। ताको सुति रहित नही कोई॥
माया सकसी सुति भुलाव। हरि भक्ती सें दूर दुराव॥
ऐसो विधि बिपि हृदे बोचारी। साँईदास सर्नी अनिवारी॥२१३

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे इकासीमोध्याय ॥ ८१ ॥

बिपु चल्यो पुर के निकट आयो। सोल्हा अवर तहा निर्पायो॥
कंचन के तहा भवन निहारे। ग्रहि कचन निर्प्यो तत्वार॥
कलस हेम के तहु पराही। विपि केरे ग्रहि अधिक सुहाही॥
बहु ठोरि बिरा अधिक सुहावहि। तास भरे भ भ सो सोल्हावहि॥
तास ठोरि बहु माणी पचाई। सोभावान बहु दत दिपाई॥
मानो बकुंठ प्रतक्ष है भाई। स्वर्गि माहे वहु देस दिपाइ॥
तिस बन महि माली अधिकाई। इकु सौ करी तां महि भाई॥
अथवा पुर सेसी वहु थाई। बन माहे वहि कुस्म चुणाई॥
सुदामा निर्प करे बिस्मायो। ध्यान विपे चल्यो कहा आयो॥
ऊंहा त पग पाछ दीने। अति सचरु मन अतर लीन॥
लोक तास के पुर के आए। तिन हू बिप असे निर्पाए॥
बिप सेती तिन्हा बचन उचारे। हे बिप कहा पु बनि चित धार॥
सुदामे भक्त तिन सौ प्रतु दीना। एही वचनु उनि मुप से कीना॥
मैं प्रभ दसमु कर्न पायो। द्वारका महि जाइ दर्सु करायो॥
अपुनो पुर मगु दीयो बिसारी। ध्यानु कीयो सुध गई हमारी॥
कौन ठोर महि आइ ठहिरायो। इहि काएण मैं मन बिस्मायो॥
अबि अपुनें पुर क मग जावो। अपुने ग्रहि मग जावन चिनु लावो॥
तब उनि लोको बिप सुनायो। हे बिप कम तू भम भुलायो।
अमु हमि तुम का ग्रहि लेजावहि। तुमरे ग्रहि तुम का पहुचावहि॥
बिप को वाही लोक स्याए। बिप ताहूं क महिल दिपाए॥
आण द्वार ग्रहि पर ठहिरायो। सुसीला सा तब जाइ सुणायो॥
सुसीला बेग सुनति उठि धाइ। बिप को जाइ डंडौत कराई॥
कायो कृपा कर अंतर आवो। मन का भरमा भर्मु हिरावो॥
प्रेम सीमा बिप सुनायो। साँईदास बिपि सुण सुपु पाया॥२१४

विप को ले भाई प्रहि माही।
मुप उपिज्यो दुख मिट्यो ताही।
भाए प्रर्घासन परि बैठायो।
तहा प्रधिक मणी रतनि पचायो।
जस सों विप के चन पधारे। चर्नामृत ले मस्तक धारे॥
एक प्रजक दास प्रहि माहो। तासो मणी पची प्रधिकाई॥
मम्यानें दर पर पसिवाए। मोती मणी ताहि उरिभ्राए॥
पव सों बहु मणी पचाई। मैमी मोल्हा देति दिपाई॥
सुमीसा न बहु पाक पकाए। विप के प्रागे प्राए टिकाए॥
सुदामे भक्त मम महि वोचारा। इहि वरी मिष्टानु हमारा॥
जा हमि को पावो मेरे भाई। रसना स्वाद भचे प्रभिकाई॥
हरि की भक्त स दूर पराही। इसि पावे कछ नाह मसाई॥
सोण प्र मु से तिस महि डारा। पाछे सें पायो ततकारा॥
मुसीमा न इहि कर्मु कमायो। विपु सेफमिहाली माहि सचायो॥
विप प्रबर सम दूर कराए। मग्न होइ हरि को जसु गाए॥
एही मन माहे ठहिरायो। सुपु उपज्यो हरि भक्त भुलायो॥
मनु हरि की हमि भक्त भुलाव। प्रैसे विपु मम महि ठहिरावै॥
मुमीसा प्रात समे उठि प्रावै। विप्र का प्राइ डडौत करावै॥
विप्र के प्र म को तेमु लगावै। बहुरो नाना पाक स्यावै॥
सदामा भक्ति इकत्र करावै। पाछे से मै कर बहु पावै॥
पाणी सूरण कराव भाई। इहि बिधि दिज भोजनु सेपाई॥
कहरि रस्ना मनु स्वाद प्रधाए। गोबिद केरी भक्त भुसावै॥
एक दिन सुसीसा क्या कीप्रा। प्र वर विप प्र ग नीके दीप्रा॥
विन प्रहि तजि के वाहिर प्राया। बसन प्रग सभ वानु कराया॥
जो हरि करा भक्त कमावै। सांइदास सभ भर्मु गवावै॥२१२

एक दिन रवि को केत प्रसायो।
श्री कृष्णचदि सम मतु ठहिरायो।
श्री कृष्ण राम दोऊ उठि धाए।
बसुदेव उग्रसैन सहित पसाए।

देवकी रोहिणी को सग लीमा। कुरक्षेत्र को तिन पगु दीमा ॥
नंदि महिर अपिमान जी आए। सकल कुटब को सहित ल्याए ॥
गोप सकल जोपता सग लीए। सकलो पग कुरक्षेत्र दीए ॥
कुशो सकल कुटुब सो आई। एक बन महि आइ कर ठहिराई ॥
नंदि महिर अरु जसुमति रानी। जो हित आए सारग पानी ॥
आन श्री कृष्ण को दर्सनु पाया। श्री गोपाल दूर सें निर्पायो ॥
निर्प तही प्रभ जा उठि धाए। ततछिण नंदि जसुमति पहि आए ॥
आइ डडौत करी प्रभ ताको। महा अधिक सुपु दीनो ताको ॥
जसुमति प्रभ कों अग महि लीमा। प्रेमु अधिक घटि असर कीमा ॥
आइ कर सहु ठौर ठहिराए। जहा कृष्णचंद सुप आसणु छाए ॥
जसुमति ने सब ही क्या कीमा। एक अंग कौसापति लीमा ॥
दूसर अग से राम वहायो। जसुमति निप अधिक सुपु पायो ॥
आप दोना के मधि समाई। जसुमति सुपु उपिज्यो अधिकाई ॥
देवकी रोहिणी वचन उचारे। जसुमति पाहे कहित पुकारे ॥
तुम किर्पा कर हमि को दीनें। एहि दो बालक किर्पा कीम ॥
तुम प्रसाद राज लीन्ह कराही। हमि को आनदु अति उपिजाही ॥
जो कछ अर्कपन महि होई। सकल लीन्ह कीमी तुम सोई ॥
पालन माहे अधिक झुलायो। अ दधि मापनु अधिक पवायो ॥
तुम प्रसाद अति भए अधिकाई। बल कर कंस को लीया हताई ॥
बडो प्रतापु भयो इमि करा। माईदास है तुमरो चेरा ॥२१६

ग्वालनि सभ मिल कर उचिराही। बडा ढीठु हमि लात नाही ॥
माना कबहू न हमि प्रीत धारे।
अबि हमि का इनि नाहि चितारी।
आपनु दधि अभियाइ कराही।
पय अधिकाइ कीया अधिकाही।
जब त गोकल को तजि आयो।
हमि को कबहूं न चित करायो।
श्री गोपाल पिपि सकली जान। पनि घन बिर्पा सकल पछानें ॥
ग्वालनि क मन की बिधि पाई। तब मन महि इहि बिधि ठहिराई ॥

जिह समे मैं सुरही से आवो। वनि वावन कों मैं चितु लावो॥
तब इहि हमरो दर्सु कराही। वाही ध्यानु मट महि ठहिराही॥
वासि समे वनि ते ग्रहि आवो।
तब भी इनि को दर्सु दिपावो।
दर्सनु कर हमि आनद पाही।
मन ते सकला दुख मिटाही।
पसि छिम ध्यान न हृदे चुकावहि।
बिनु हमि ध्यान चित और न लावहि।
अवि इनि की विधि जानो नाही। कैसे कर भोग इहि पाही॥
हमि विधि ने क्या बात बनाई। कबहूं इकत्र कबहूं विछुराई॥
श्री कृष्णचद ग्यानि समिझाव। ताके मनि का भर्मु हिरावै॥
जो कोई तुमरे घटि माही। सदा सब्द मुप ते उचिराही॥
वाही हमि को सहिबे जानो। इसि विधि महि भ्रम रत ना आनो॥
जो ग्रहि विषै प्रीति चितु धारे। सो बैकठ जाइ तस्कारे॥
जो कोऊ निकट मोह भक्त कमावै। तास हृदे वहु प्रीत न आवै॥
दूर होइ भक्ती चितु लावै। तां के घटि बहु प्रेमु समावै॥
बिना प्रेम मोहि भक्त न होई। बिना भक्त तर्यो नही कोई॥
ग्रैसे ग्यानि हरि समझायो। साँईदास तिस भर्मु चुकायो॥२१७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीछति संवादे ब्यासीमोध्याय ॥ ८२ ॥

कुंती सुत सो बोहत भाई। प्रम पाछे आइ कर ठहिराई॥
मुप ते एही बचनु उचारा। हे पूर्न प्रम प्रांम मधारा॥
आदम सभ की करु कल्याना। हे पर्मानंद पद निर्वाना॥
इक छिन हमरी करहि सहाई। आदम प्रम होवहि अधिकाई॥
कैरो मन तब करहहि नासा। जाने कृष्ण हमारे पासा॥
कुंती वसुदेव सा उचिरायो। बीर जानतिहि आप सुनायो॥
कैरो हमि सो वरु करायो। तुमहि हमारी सुति न पावो॥
मैं तो कहित तू बीरु हमारा। कह्यो कवन बिधि तें मम मारा॥
बधू और धाम किस आवहि। जो इस औसर मां उठि पावहि॥

इक दिन भी हमि पहि नहो आया।
हमि पूछनि को चितु न लायो।
तब असुदेव गीयो प्रतु तांका।
इहि विधि कर परचायो वांको।
दुष्ट कंस हमि बदि डसायो।
तसि महा अधिक दुष पायो।
कृपा करी हमि पर बनवारी।
दुष्टु हरयो थो कुंज विहारी।
हमि कों तासि सें लीनो छुडाई।
इहि करुणा हरि हमहि कराई।
अवि चाहित था तुम पहि आयो।
तुमरो हरि ईहा दर्सु दिपायो।
मती सुण बचि धात घर आई। मन की बिर्था सभ सुण पाई॥
साधो हर पन सदा सहाई। साईदास सुप रह्यो समाई॥२१८

द्रुपद सुता तब बचन उचारे। रुक्मण सों कह्यो तरकार॥
काजु कैसे तोहि भया है। श्री कृष्ण कृष्न पर कैसे गयो है॥
इसि का मोहि बीचार सुनावो। छिन मात्र ना बिलम करावो॥
रुक्मन ने तांको प्रतु दीना। मोहि कार्जु असे कर लीना॥
मम पिता भीष्म मामु कहाव। ताकी बात कर मनु सुपु पावै॥
तुमसी है जननी को नामा। अधिक असो बहु नीकी रामा॥
मोह पित मात ने मतु ठहि रायो। चाहित कृष्ण सयुक्त करायो॥
रुक्मना मामु बधू इकु मेरा। तिह तिम सो उठि कीनो फेरा॥
ठोहु कहे ससपाल को देवो। तांसो एहि सयुक्त करेवो॥
मैं तोको सों इहि सुण पाई। महा बली प्रभ आवम राई॥
कस पुम का जिने प्रहारा। ताकी भुज महि बलु बहु भारा॥
मै मन ध्यानु तास को कीना। चर्न कमल सों मैं चितु दीना॥
रुक्म पतीमा बेग पठाई। ससपाल बेग आवो मेर भाई॥
काजु रुक्मन को कर देवो। आदर भाउ तुमरा म लवो॥
मैं भी इक बिपु लीयो बुलाई। तासो मकलो बात सुनाई॥

दीई मकूर दास के ठाई। पतीमा से ताह कृष्ण के पाही ॥
मो ते जब दिज ने कर लीने। दास समे पग मग महि दीने ॥
ततछिण महि मायो हरि पाही। मोह पतीमा तिहि मान दिपाही ॥
बर्ने बदिना मोहि सुनायो। प्रभ सकली बिधि मन ठहिरायो ॥
रथ पर चढि बेग उठि धायो। ततछिण कुंदन पुर महि मायो ॥
ससिपाल मधिक सैना ले माया। दत वक्र जरासिंध सबाया ॥
मोको रामां लेकर माई। गौराके मस्तल ल माई ॥
हमि सें पूजा तहा कराई।
जोपिता सभ मोहि कह्यो सुनाई।
कहु ससिपाल हमि होइ सुपदाई।
मैसे रामां मोहि सुनाई।
मैं कह्यो श्री कृष्ण मोह होइ सुपदाई।
तव सभ रामां ने सुप पाई।
मोह कह्यो तैं क्या उचिरायो। हे रुकमण क्या दाम्न सुनायो ॥
तब मैं कह्यो जो तुमने माया। सोई है मैं मुप ते माया ॥
मो को फिर ग्रहि को ले माई। मम सग जोधे वे मधिकाई ॥
मोहि रछक मोहि बहु दीने। मधिक उपाउ तासि न कीनें ॥
मैं मग महि होरे होरे जावो। मतु श्री कृष्ण कों दर्सनु पावो ॥
प्रभ नं सब ही बेन बजाइ। सुनति शब्द सुधि सकल भुलाइ ॥
मोको रथ प्रभ लीयो चढाई। गवन कीयो तव जादम राइ ॥
पाछे से जोधे बहु माए। श्री गोपाल जी सकल हटाए ॥
रुकमन सभ बिधि ताह सुनायो। साईदास द्रोपती सुण पायो ॥११६

बहुरो द्रोपती ने बचु कीया। सत भाषा सो एहि पूछ लीया ॥
मपुने कार्ज की बात सुनावो। एहि बचु मोह हृदे ठहिरावो ॥
सतिभाषा ताको प्रतु दीना। जो कछु बचु द्रोपती नें कीना ॥
मम पित हरि को दोस लगायी। भूठु बहु कीयो धाम मायो ॥
मन मपुने महि लीयो बीचारी। मैं ग्रौगुण कीमो मति भारी ॥
कैसे ग्रौगुण हमहि मिटावें। किस बिधि कीए ग्रौगुण हमि जावें
इक न्दिन मन महि कीयो बीचारा। कंन्या प्रभ देवो तत्कारा ॥

सब हम को औगुण मिट जाव। नाहि त हमि नाही वनि भाव ॥
इक दिन सभा आदम महि भामा। मुप सं एही वचु उचिरामा ॥
मैं सतिभामा श्री कृष्ण को दीनी। सैनापति मएा भेटा कीनी ॥
तब उग्रिसैन आदम सग लीए। हमिरै पित ग्रहि महि पग दीए ॥
मम मंधर मोह काजु करायो। ग्रैसे सति भामा उचिरायो ॥
मम को पित माया बहु दीनी। वैरी ग्रधिक सग मोहि कीनी ॥
द्रोपती पूछ्या जामवती पाहे। तोह काजु कहा भयो देहि बताहे
जांमवती तब कह्यो सुनाइ। मोहि पित जोधा ग्रति बलिग्राइ
श्री कृष्ण सैनापति मएा क लीए। महा बिकट बन महि पग दीए ॥
विधि जो कछु कीनो होद माई। ताको कोऊ न सकै मिटाई ॥
प्रिथम माहू पित सों युद्ध कीना। मोहि पित को निहबलु कर लीना
मम पित ने मन महि बीचारा। पूर्न है प्रांन ग्रधारा ॥
चर्न गहे मुप विनती ठानी। हे कौसापति सारग पानी ॥
इहि कन्या हमिरी स जावो। ग्रपुनी इनि सों टहिल करावो ॥
सैनापति मगा भी लवा। हमरो औगुरा मेटे देवा ॥
हमि को स ग्रायो पुर माहें। काजु कीयो हमरो प्रमु ताहू ॥
जामवती सम बात बपानी। सांईदास सम बिर्या जानीं ॥२२०

सुता सो फिरि वचन सुनायो। तोह कार्जु कहु कसे करायो ॥
सुपा तव ग्रसे प्रतु दीना। मोहि काजु ग्रैसे कर लीना ॥
सप्त बैल मोह पित ग्रहि माही। दस सहस्र गज बसु इक ताई ॥
माहि पित ने प्रतज्ञा कीनी। महा कठन प्रतज्ञा लीनी ॥
एक बार तिह को है बहाव। सो इहि कन्या हमिरा पाव ॥
श्री कृष्ण इहि बिधि सुरा पायो। ग्रपुनो पुरु तजि हमि पुर ग्रायो ॥
सप्त बैल को कुही बहाई। मोह कार्जु कीनो जदुराई ॥
कार्जु कर हमि को ल ग्राया। मोहि कार्जु इहि भांत कराया ॥
बहुरो रवि दुहिता सो भाषा। ता कार्जु कैस भयो भाषा ॥
कालींद्री तब कह्यो पुकारी। सुरा हो द्रोपतो मयो हमारी ॥
मैं जम तटि पिति ग्रधिकाई। तहा मिलस ग्राइ बबर कन्हाई ॥
ग्रर्जन महिन सोए हरि ग्रायो। ग्रपर प्रित कर्ने चितु लायो ॥

मम का तब हो सग त्यायो । पुर महि भाण मोह काजु करायो ॥
बहुरो कह्यो पोडसहस्रो बीस । तुम प्रभु कैसो भयो जगदीस ॥
पोन्सहस्रो बीस सुनायो । हमि कार्जु ग्रैस होइ भायो ॥
प्रमुर वनासुर हमहि त्यायो । भाए सकल इकि ठौर बहायो ॥
थी भाइ ताको हति लीना । इहि कार्जु कौसापति कीना ॥
हमि को द्वारका माहि ले भायो । ईहा भाइ कर काजु करायो ॥
हमिरे भाग विधि एहि करायो । कृष्णचद पतु हम ने पायो ॥
द्रोपती सुगु विधि मभ मन भारी । सांईदास सुप मन भ्रधिकारी ॥२२१

इति श्री भागवते महा पुराणे बस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बिग्रासीमोध्याय ॥८१॥

श्री कृष्ण जोपिता कह्यो सुनाई । सुण हो द्रोपती हितु चितु लाई ॥
भ्रपनी बिर्था तुमहि बतावा । तोहि कार्जु कैस भयो सुनावा ॥
द्रोपती कह्यो सुगो चितु लाई । सकल कृपा मै देउ बताई ॥
मा पितु भूपति भ्रति बलिरारी । मन महि सोई प्रतज्ञा भारी ॥
मध्य भ्रकाम मीन लरिकाई । भाजन जबु भरयो भ्रधिकाई ॥
ताम मीन क तल रपायो । धनपुवाए तिह ठौरि टिकायो ॥
मीन प्रितमा जल माहि निहारे । पिच बाणु मीन को मारे ॥
न्हि कन्या मैं तांको देवो । भ्रादर भाउ भ्रधिक तिहि सेवे ॥
पाच बीर पाडा सुन भाए । भगवान तिहि दमु दिपाए ॥
भ्रर्जन प्रितमा देपि मीन को मार्‌या ।
मध्य भ्रकाम तें धनि उतार्‌यो ।
मम को मोहि पित इनि ताई दीना ।
इन मोह लीए गवन तब कीना ।
ठौर नराधिप भ्रागे भ्राए । तिन न्हि बिधि मन महि ठहिराए ॥
सुबरन बाधे हमि सबमे ल आई । इहि सैना सें सकर धाई ॥
भ्रा पाडा मुनि का भगु धरा । मन महि गर्ब कीयो भ्रधिकरा ॥
इहि बिधि बहि मूरति ना जानहि । पांडा सुन को माहि पछानहि ॥
भ्रर्जुन युद्ध कीया भ्रधिकाई । गरम मूरति भाम तब धाई ॥
भाको म बनि माहे भाए । बेनकि न्नि तहू ही ठहिराए ॥

अधिक कष्ट हमि वन महि पाया। कहा कह्यो कछु कह्या न जाया॥
तुम द्वार्का महि बहु सुष पायो। हमि वन महि बहु कष्ट कमायो॥
द्रोपता सभ बितांतु सुनाया। साईदास सभ सुण सुषु पाया॥२२२

इति श्री भागवत महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चउरासीमोध्याय॥८४

सकल ऋषीस्वर मुनि सुण पायो। श्री कृष्णचद कुरुक्षेत्र आयो॥
कैरो पांडो सुत भी आए। और जादम आए अधिकाए॥
नंदिर महिर भी तहू ही आया। सकल ऋषो इहि मतु ठहिराया॥
चलहो हम भी तहू ही जावहि। ग्यान गोष्ट स्युं मनु पर्चावहि॥
ततक्षिण सकल ऋषीस्वर आए। ताहि नाम सुण हो चितु लाए॥
बृहस्पतु व्यास वशिष्ट गुसांई। विस्वामित्र ऋषि अधिकाई॥
सुक जतो तास ही माही। दर्सु कीयो आइ त्रिभवन सांई॥
और अपग धूमरिष आए। अविक कपिलाधरि आइ निर्याए॥
वसुदेव इनि सो बचन उचारे। सुण हो ऋषीस्वर प्रान अधारे॥
हमिरे ताई यज्ञ करावो। हमिरे मन का भर्मु हिरावो॥
सकल ऋषो नें इहि मतु दीना। हे वसुदेव कहा चित लीना॥
एहि बात बाही भई भाई। सो मै तुम को कहित सुनाई॥
प्रवाहु गगा को चल्यो। ताका मूढ मांही अधिकाई॥
कहे कूप को पानी पीवहि। तांते सुष अधिक मन थीवहि॥
तिह समे मज्जन ना करही। मज्जन कूप अंभि चितु धरही॥
जो कोऊ यज्ञ करे मेरे भाई। इहि प्रयोग हरि होइ सहाई॥
यही कृष्ण सोहि टहिल करावे। और बाति कहा तुम मन भावें॥
सकल देव दस पग रज लोरहि। तू चित नाना मागि कोरहि॥
य हु सार अर प्याल के माही। हमि के पग की रज गम चाही॥
जतन करहि पुनि हाथ नि आवे। ध्यान धरहि तो भी नहीं पावें॥
तू कहे हमि को यज्ञ करावो। अमी बिधि सुष न उपिजावों॥
सकल ऋषीस्वरो कहा बिचार। साईदास हरि गति अपार॥२२३

श्रीकृष्ण सकल रुकिमनी समभाया। कहा बात तुमि सुष उपिरायो।

मोहि पित यज्ञ करनि चित धारा। मसी भांति घटि माहि बीचारा॥
इसि के ताईं यज्ञ करावों। इसि की सर्वा सकल पुरावों॥
एक मास तहां यज्ञ करायो। वसुदेव महा अधिक सुपु पायो॥
नंदि महिर तब बधु उचिरायो। श्री कृष्णचंदि सो आप सुनायो॥
हे प्रभ तुम आगे पग धारों। हमि पाछे आवहि सत्कारों॥
श्री कृष्ण सहित आदम उठि धायो। तिह समे सुप ते उचिरायो॥
जो मोती अवर बहु नीके। ताहि संग कीए सुप होइ जीके॥
सकल दीए जसुमति के ताईं। कंचन लीनो हरि अधिकाईं॥
कह्यो ठौरु हमि जाकर सेवहि। इहि सभ जसुमति ताईं देवहि॥
जसुमति सें आज्ञा ले धाए। द्वारकां मे मग सो चितु लाए॥
जसुमति नंदि ठौर सकल निहारहि। ठाढे होइ हरि रुपु सम्हारहि
मास दोऊ नदु तहु ठहिरायो। मन महि अधिक तहा बिसमायो॥
कहित कृष्ण ईहा पग धारे। अधिक सुपु बहु हमहि प्यारे॥
चौमासा जबही निकट आयो। नदि सकल सों बचन सुनायो॥
ईहा ठौर माहि कोऊ आई। कष्ट पाहि किस को ठहिराई॥
स्वनु करति सभ ही उठि आए। अपुने पुर को इनि हितु आए॥
श्री कृष्ण द्वारका माहें आयो। अति अनदु लोको सभ पायो॥
जो वार्ता कुरखेत्र मई आई। सकल श्री कृष्ण अनरुद्ध सुनाई॥
पांडो करो सभ ही आए। नंदु जसुमति अरु गोप अधिकाए॥
अनरुद्ध को श्री कृष्ण सुनाया। साईदास सभ सुपु पायो॥२२४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंध
श्री सुकदेव परीक्षति पंचासीमोध्याय॥८५॥

श्री कृष्ण बलभद्र दो भाइ। तिन घटि महि प्रेमु अधिकाई॥
नितापति वसुदेव पहि आवहि। बसुदेव को डंडौत करावहि॥
एक दिवसि बसुदेव पहि आए। बसुदेव दोनों ही निर्पाए॥
टांडा भया हरि को निर्पाई। नमस्कार वसुदेव कराई॥
श्री कृष्णचद तब बचन उचारे। सुणहो बसुदेव पिता हमारे॥
कवन बेद इहि बात बताए। सुत को पित डंडौत कराए॥
बसदेव प्रभु दीनो हरि ताईं। एही उपजी हमरे मन माही॥

कुरक्षेत्र विषै सभ ऋषि आए। मैं तिन सो इहि बचन सुनाए॥
मम अभिलाषा यज्ञ करावौ। हमिरे मन की भ्रांत चुकावौ॥
सकल ऋषीश्वर मोहि प्रबु दीना। यज्ञ करनि त बसु चितु कीना॥
इति विधि सम साच यज्ञ कराइ। अत सम होइ कृष्ण सहाई॥
श्री कृष्ण तोहू सेवा ठहिरायो। त यत्न करने बसु चित लायो॥
जो असी विधि होई गिर्धारी। तो मैं असी मता चित धारी॥
श्री कृष्ण तभी बसुदेव सुनायो। इ पित किह वाती चितु लाया॥
हमि प्रजाग तुम बहु दुष पायो। पालन मत तुम बदि डलाया॥
अब जो असी करो पित मेर। बहुरा वही दुप भाव नरे॥
है पित कलियुग क माही। मोसो सुत हैतु कराही॥
जो कछु तुमरे मन महि आवे। मोहि कहा जो तुम को भावें॥
मैं तत्काल भान पित देवा। तोहि आणा मस्तक धरि लवो॥
जैसे सुत पित रीत चलाई। हे पित अब करहा तुम माई॥
ऐसे बसुदेवहि प्रभू सुनाया। माईदास जा बर बनाया॥२२

देवकी प्रभ सों बचन उचारे। मैं बलि जावा प्रान अधार॥
विद्या गुरु क सुत ले आयो। अधिक कृपा तुम ताहि करायो॥
जो हमरे भी सुत आण देवो। हमिरो मन सुप्रसन कर लवो॥
महा अधिक सुख तो मैं पावा। जो वही षट सुत फिर निर्पावा॥
श्री कृष्ण कह्यो बहु नीको माई। इहि विधि कच तै माहि सुनाइ॥
अबि षट सुत तुमरे ले आवो। तुम चितु सुप्रसन्न करावो॥
श्री गोपाल दाता सुप जन को। ताम प्रमान भया सुचु मन को॥
हमियर को संग ल कर धायो। तत व्यास लोक मध्य आयो॥
नृप बल निप आमे को आया। हरि को आई डंडौत करावा॥
मुष त तब ही बचन उचार। इ प्रभ बहु मम पग धार॥
कछु आणा होवे जन ताई। कृपा करो दर्सनु दाया धार्‍॥
श्री नंद नंदन कहा सुनाई। सुण हा नृप बल हमि सुपदाई॥
षट सुत माता देवकी करे। धार्‍ धरा तुम धाम मरे॥
महा बहा है मेर माई। हमि को दसहू लागि बताई॥
नृप बल न प्रभु हरि पो लीना। हे प्रभ निह धनु असुर को मीता॥

इकु दूपु कोई तनि कीमा। इहि प्रगोय[1] बपु प्रसुर को लीना ॥
श्री कृष्ण कह्यो तनि को ल मावो।
भमिरे साईं प्रांग दिपावो।
प्रभ प्राज्ञा सों तिमहि स्यायो।
प्रभ तिह रूप प्रसुर निर्पायो।
श्री कृष्ण तास बालक बपु दीमा। बालक बपु कर सम संग लीमा ॥
प्रान दवकी को हरि दीनें। दवकी बहु सुपु मन महि लीनें ॥
प्रभ कूठासी तिम प्रभिलायो। पंपी बपु से बैकुठ पायो ॥
दवकी प्रधिक भई हैराना। कहा होइ जब समा विहाना ॥
प्रभ उस्तत कर बैकठ धाए। सांईदास सुप सागर पाए ॥२२६

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे छयासीमोऽध्याय ॥८६

नृप परीक्षत में प्रश्नु चलायो। सुकदेव पहि तिन प्राप सुनायो ॥
हे प्रभ जी तुम एहि सुनावो। करुणा कर सुप हमि उपिजावो ॥
सुभद्रा को कार्जु कसे कीमा। कैसे तिह कार्जु कर दीना ॥
सुकदेव प्रभु कीमो नृप ताईं। सुन हो परीक्षत हितु चितु लाईं ॥
श्री कृष्ण बसुदेव मतु एहि ठहिरायो।
उग्रसेन नृप सहित करायो।
प्रर्जुन सों सयुक्त करावहि।
ठौर ठौर काहे भरमावहि।
हलधर कह्यो ऐसे ना करह्रो। इसि विधि कर्म चितु न धरह्रों ॥
दुर्योधन सहित सयुक्त बनावों। ठौर ठौर काहू माही जावों ॥
प्रर्जुन मन महि लीयो बिचारी। भेप बनाइ जावो तस्कारी ॥
क्या जानो मोहि बर्महि न देवहि।
कौन ठौर सयुक्त करवहि।
भगवान रूप प्रज्ञम कर लीना।
द्वार्का पुरी का तिह पगु दीना।

---

[1] मरा 'प्रमोग' पाठ चाहिए।

वारिसाए निकट द्वारका आयो। प्रस्थल सोमनाथ ठहिरायो॥
पुर के लोक तहू चलि आवहि। भोजन कानि इनहि ले जावहि॥
एक दिवस हलधर क्या कीमा। प्रर्जन को सहित कर लीमा॥
भोजन कानि प्रहि ल आया। सुभद्रा ने तव पाकु पकायो॥
अर्जन को तव ही निपायो। मन अतर एही ठहिरायो॥
मम का अजन दवहि नाही। दुर्योधन सहित सयुक्त कराही॥
अजन कौं मैं लीयो निहारी। महा वली सुर सर वलिकारी॥
कौलापति प्रम अतरजामी। घटि घटि के माही विसामी॥
अज्जिन को तव कह्यो पुकारी। सुरण हो अर्ज्जन हमरे भाई॥
हमि सम ही मिल मतु ठहिरायो। हमिरे मनि हलधर ना आयो॥
हमि तुम सहित सयुक्त मनावहि। सुभद्रा कौं तुम्हहि दवावहि॥
हलधर मन माहे ना आन। इहि विधि बहु मन नाही मान॥
विनु अपना तुम ठौर करावो। साईवास सम प्रांत छिरावो॥२२७

अर्ज्जन को प्रभ फिरि समझायो। हे अज्जन कछु वाहि मन आयो॥
सोमनाथ के अस्थल मांही। जाइ वसो मो सकल छिराही॥
भक्त लोक ज्हा सम आवहि। पूजा कन को विनु लावहि॥
तिसी ठौर पहि तुमहि छिरावो। ठौर वास किले नां विनु लावो॥
सुभद्रा को तहू से ले जावो। मोह कह्या घटि माहि ल्यावो॥
अर्जन मे तब विनती ठानी। हे परमानद सारग पानी॥
रथु अरु धन्यु नाइ मोह पाहे। इनि कानि मन महि सुखदाइ॥
श्री कृष्ण धनुष रथु अर्जन दीया। इहि करुणा प्रभ ता पर कीया॥
रथु अरु धनुप अर्जन लीआया। सोमनाथ अस्थल ठहिराया॥
निस वीती रवि कीयो प्रकासा। सकल लोक मन भयो हुलासा॥
सोमनाथ को पर्सन धाए। अज्जन ठांडा तासि हिराए॥
वसुदेव सुता तब ही प्रगटाई। अर्ज्जन ने तब ही मिर्पाई॥
भुज से पकर लीई वारे। तब ही गवनू कीयो तत्कारे॥
लोको राम को जाइ सुनायो। अज्जन सुभद्रा को ल धायो॥
हलधर कोपु कीयो अधिकाई। भुप ते एही बात सुनाई॥
मोहि अस्त्र देवो मैं जावों। अर्ज्जन को जाइ मार चुकावो॥

श्री कृष्ण चदि सब ही सुग पायो। राम क्रोधु कीयो अधिकायो॥
अर्ज्जन सो जाइ युद्ध मचावै। तब सज्जा हमि रहि मा मावै॥
राम सों तब ही कह्यो सुनाई। हे हलधर सुग हो मेरे भाई॥
अर्ज्जन कोई पराया नाही। कहा क्रोधु कीयो मन माही॥
कहे वे अर्ज्जन का से आवहि। काहे इतना क्रोधु करावहि॥
बलदेव प्रतु दीना जबुराई। करो कृष्ण जी जो मन भाई॥
अर्जन को तुम सजो गुसाई। तुम सग हमिया कहा बसाई॥
श्री कृष्णचद इकु दूतु पठायो। अर्जन को वहु फिरि ले आयो॥
सुमद्रा को काजु कर दीना। कुंवर बेरी बहु सम कीना॥
अस्व बसन मोती बहुतेरे। अर्ज्जन को विदया कीयो सबेरे॥
अर्जन काजु कर ल आयो। साँईदास आनंदु सुपु पायो॥२२८

इक पुर महि इकु भूपतु रहे। एक बिपु ताहू महि अहे॥
दोई भक्त महा हरि केरे। द्वितीया माठ न तिन के नेरे॥
श्री कृष्ण आया ताहू पुर माहीं। सोच बीचार कीयो घटि माहे॥
इहि दोनों है भक्त हमारे। बिप्यामिप्त ते रहित प्यारे॥
जो मैं भूपति क ग्रहि जावो। तो विप मन सवद उपिजावों॥
बिपु मन माहु कर बीचारा। हमिरे ग्रहि हरि पगु ना धारा॥
नृप निप्यों हरि किर्पा भारी। मैं अधीन कों दीयो बिसारी॥
जो प्रिथमे ब्राह्मण के जात। सउ उभानं मेरो मार्व॥
राजा बिसपे हमिरो संतु। गए त्याग मोहि कमला कंत॥
दोनों भगत हमारे भाई। ता महि किस दुष दीयो न जाई॥
असी बिधि कर हा मेरे भाई। दोनों को पितु ताहि बुलाई॥
प्रम । रूप माया क धारे। भिन्हु धाक तिह एक सवारे॥
एकु गयो भूपति ग्रहि माही। एकु आया बिपु भौन मंझाही॥
नृप के ग्रहि महि सम बिछु भाई। प्राण भरो भाम जबुराई॥
असी भाति सभा तिहि कीनी। द्वितीया गति घटिमाहि न लीनी
बिपु न एकु कुटीआ पुरानी। करद न कछु सग मानी॥
दसि बिही न तसे बिछाई। एक धूलि ताके ग्रहि भाई॥
ताम पत्र तोर तसे आयो। कर मंडल बस भर ठहिरायो॥

आप निर्त कर्ने उठि भागा। घटि से द्वितीया भाउ त्यागा॥
श्री कृष्णचन्द बहु आनदु पायो। प्रेम भाउ तांको द्रिष्टायौ॥
विप को चतुर भुजा हरि कीना। वकुंठ माहि आसनु तिह दीना॥
जनम मर्ण ते करी कल्याना। सांईदास हरि पद निर्बाना॥२२९

इति श्री भागवते पुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सतासीमोध्याय॥८७॥

परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। हे शुकदेव मै बलि बलि जाहें॥
जास भमे पर्लो सम होई। इसि घर घर कोई थिर होई॥
एहि कथा प्रभ मोह सुनाओ। मेरे मन का भमु हिराओ॥
शुकदेव प्रतु दीना नृप ताई। हे नृप भली भई मन माही॥
नाद एही प्रश्न नृप कीना। बद्रीनाथ उत्तर तिहि दीना॥
सोतु घरो मैं सोई सुनाओ। तुमरे मन का भमु चुकाओ॥
प्रम कास अब होवे भाई। सभ बिनस रहै कोर कम्हाई॥
चतुर वेद धुर को अवतारा। चरख्यो पुत्र है ले चित धारा॥
नाम ताहि सुण हो मेरे भाई। सनकसनंदन सुएा हितु भाई॥
औ सनातम सन्त कुमारा। घटि माहे शुम लह विभारा॥
ताम भमे इहि उस्तति करही। मनक मांत भुप से उच्चरही॥
निरकार कछु द्रिष्ट न आवे। तुमरो कछु नाहि मुझावे॥
आद अनाम्भी रह्यो समाई। निरवैर अजूनी सत महाई॥
प्रकास मूल थी कुंज बिहारी। धर्मावधि गिरधर हरि भारी॥
द्रुप सुप त प्रभ तुही न्यारा। सकल विस्व प्रभ ताहि पसारा॥
चिन्ह चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। रूप रेप कछु कहा बतावे॥
जस ऊपर घर तोहि समाई। इहि रचना प्रभ ताह रचाई॥
जैस जल मैं कमल बसेरा। ऐसा प्रकासु सकल घटि मेरा॥
अपनाशी प्रभ तेरो नामा। पवति उमान एही कामा॥
तोहि उस्तति को पार न पाव।
तुमरी गति मित तोहि बनि आव।

हमि ताहि उस्तति कहा बखानहि।
तुमरी उस्तति कर क्या जानहि।

तूं अविनाशी नामु न तेरा।
तू गुरु सकल जगतु तोह चेरा।
काहु रसना हमि उस्तति भापहि।
साँईदास क्या गति मित आपहि ॥२३०

नृप परीछत इकि दिन क्या कीआ।
शुक पहि प्रश्न तिन म इहि कीआ।
ह शुक जी सुन हो चितु धारे।
तुम निर्मल भक्त विधि जानण हारे।
शम्भू सदा कुचील है भाई। तिह सेवा जगु काहि कराई॥
जो उसि पर कोऊ भाग चरावे। सकल अपवित्र होइ कर जावे॥
धर्म मुक्त दाता गिरधारी। ताहि त्याग शिव पूज अचारी॥
सुकदेव नृप ताई प्रतु दीना। हे नृप भलो प्रश्नु त कीना॥
मुक्त दाता श्री कृष्ण बिहारी। और देव बरिदाते सारी॥
मुक्त देवनि के माहें नाही। बर मांगहि देवहि अधिकाही॥
नर्कासुर असुर में प्रश्नु चलाया। नारद को तिह आप सुनाया॥
ऐसो सुर कोऊ है मेरे भाई। ततछिण बरु देव बिलम न लाई॥
नारदे नें ताको प्रतु दीना। शिव है असुर हृदे धरि लीना॥
नर्कासुर शिव अस्थल आयो। पष्ट मासि तहा भजनु कमायो॥
होम यज्ञ कीनो अधिकाइ। तासि भभूती स कर पाई॥
शंकर तब ही दरशनु दीना। मुप अपुने से इहि बचु कीना॥
बर इनहु मांगो कछु भाई। जो तुम मांगो देवो तुम ताई॥
नर्कासुर कह्यो सुन शम्भू देवा। मै तुमरी कीनी है सेवा॥
तैने मा पहि किर्पा धारी। बर इनहू होयो उपकारी॥
एही बर हमि ताई दीजे। अपुनी किर्पा हमि पर कीजे॥
मै जिह सिर पर कर ठहिरावो। तिए माहे तिह भस्म करावो॥
शिव कह्यो ऐसे ही होई। जो तैं मांगा दीआ सोई॥
तब ही नरकासुर मन धारा।
मोभ हुआ मन लीनो बिचारा।
शंकर शीश सिर कर ठहिरावो।
और भवन को जो हुन जावो।

शंकर को अवि भस्म करावो।
पार्वती को ले मैं जावो।
असुर इही विधि मन ठहिराई।
सांईदास शिव ने सुधि पाइ ॥२३१

नर्कासुर शिव ओर सिधाया।
भस्म कर्नि शिव को चितु लाया।
शिव इहि विधि पाइ उठि भागा।
नर्कासुर तिह पाछे लागा।
शिव गौरस गौरत हिराया। श्री कृष्णचन्द को चित करायो॥
हे प्रभ पसु मोहि भस्म करावै। तोहि बिनु हमको कौनु छुडावै॥
अंतरजामी स्यामु हमारा। ततक्षिणमन महिलीयो विचारा॥
शंकर कष्टु अधिक ही पायो। तब प्रभ देवी रुपु करायो॥
शंकर को प्रभ लीया दुराए। आप असुर सम्मुख चल्यो धाए॥
असुर रुप प्रभ को निर्पायो। पार्वती रुपि सुधि बोरायो॥
श्री त्रिजनाथ तिह कह्यो सुनाइ। हे नर्कासुर क्या मन आइ॥
कहा जात कौर ठहिरावा। हमि ताइ तुम आपि सुनावो॥
नरकासुर हरि को प्रतु कीना। म सेवा शम्भू की कीना॥
षष्ट मास मैं सेवा करायो। तौ शम्भू ते इहि वर पायो॥
जाम सीस पर कर ठहिरावो। ताको छिन महि भस्मु करावो॥
मम मन माहे एही आई। और ठौर आवा कहा धाइ॥
शिव क वरि ताई पतीआवो। पतीआवन ठौर कहा मै आवो॥
शिव ही क सिर पर कर धारो। वर पतीआइ सओ तत्कारो॥
महादेव हम से है भागा। मैं तिह ओहम को उठि लागा॥
प्रभ नरकासुर कौ समझायो। कौन बात तू मन महि ल्यावो॥
मोह कार्ण कैसे तू करही। शंकर मानि को चितु धरही॥
जाण देहि निव कछु ना आपो। मोह कहे ऊपर चितु रापो॥
मैं तुमरा सदा चित धारो। तोहू कहा घटि माहि बीचारो॥
प्रथम हम तुम निर्त कराहि। पाछे एक ठौर ठहिरावै॥
प्रभ ने नित कर्ने चितु लायो।
असुर कह्या हमि को सिखलाया।

प्रभ कह्यो तुम भी सिप लेबो।
क्यु मैं करो ग्रैसे कर लेबो।
प्रभ निर्त करि कर सिर पर माना।
भसे नर्कासुर भी ठहिराना।
भस्म भयो नर्कासुर ताही।
इहि बिधि प्रभ तिहि लीयो वैराही।
ताहि को प्रभ ने भस्म करायो।
साईंदास शिव को छटकायो॥२३२

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सबादे अठासीमोध्याय॥ ८८॥

भस्म कीया असुर को जदुराइ। तब संकर को कह्यो सुनाई॥
हे शिव तुमरी सुति बौरानी। कौनु बात तें मन महि आनी॥
ग्रैसे पल कों को बर देवै। ग्रैसी बिधि कोऊ मन महि लेवै॥
श्री गुपाल भक्तन सुषदाई। शंकर को तिन लीयो छुड़ाई॥
भक्तन हेत प्रभु ग्रधिक बढाव। ग्रपुनी सेवा तिह को लावै॥
माया दत तिह जनके ठांई। ताहि की त्रिग कछु भावै नाही॥
माया का कछु कर नही जानहि। एही बात मति माहु पछानहि॥
जैम उदर मास से आए। भत सभे ग्रसे उठि धाए॥
इहि माया संग जावै नाही। मति दृढ इहि बिधि मन माही॥
इहि प्रयोग निह हेतु न भावहि। बिपु कर जानहि निकट न ग्रावहि
सुत बनिता बधू के कीए। माया जोरहि मिथ्या कीए॥
बहि भक्त हो भगी नाही। दातु है जानति मन माही॥
भवन हा इहि कहति पुकारे। प्रितपाल्हु तुम करहि मुरारे॥
जहा त आना तहा से ल्यावो। हमिरी किर्त तुम बसिबावो॥
माया गवन को मा देवै। एहि बात प्रभ मन धर लेव॥
या इनि का माया देवा भाई। तिह उर्भे मोह इहि भुलाई॥
भर्तार को बैकुठ पठावो। तांरो पासनु तहु करावो॥
ग्रवर गवन देव साया मार्ग। त्रिशम्प था जदुराई॥
र्गमि हो म उतपति है बारी। इहि मन गत पावहि नही बारी॥

प्रवाहु गगा को चल्यो जाई। तासो को कुंभ लेइ भराई॥
वहि प्रवाहु घटे नही आव। दधि माहे जो कुमु भर पाव॥
ऐसे प्रभ है मेरे भाई। सकल विश्व है तासि बनाई॥
जो सभ विश्व तास है कीनो। ताकी जास कछु नही भीनो॥
जो सभ विश्व तिह आइ समावे। भगवाही ज्योत अधिक होन न पाव
सकल बिस्व ताहू विस्तारा। साईदास भजु राम प्यारा॥२१२

चतुर्मास आयो भर भाई। चौविस थिति सुनो चितु लाई॥
प्रबोदक सकले ऋषि आए। मज्जन कर्ने को चितु लाए॥
पडित वेद पुरान विचारहि। ज्ञानु करहि प्रभु जी का टारहि॥
तिह पडित इहि वात वीचारी। तीनो देव समसर अधिकारी॥
इनि महि काकी पूजा कीज। जासे मर्म मुक्त मग लीजे॥
सकल ऋषो भृग कह्यो सुनाई। हे स्वामी तुम सभ सुप दाई॥
तुम को अधिक परीक्षा होई। तुम बिनु अवर न पावै कोई॥
सोच देहि तुम इहि विधि हमि को। हमि आपहि प्रभ विनती तुम को
धर्म मुक्त दाता किसु कहीए। ताकी सेवा मन चित लहीए॥
भृग सभ ऋषि की आज्ञा पाई। इहि विधि सोचन चल्यो धाई॥
प्रिथम ब्रह्म जी के आया। पदमज पहि आइ कर ठहिराया॥
नमस्कार कीनो तिस माही। ब्रह्म क्रोधु कीयो अधिकाही॥
सोचन भ्रमि ज्यु तासि लखाए। क्रोधु कीए भृग उोर सकाए॥
भृगु निर्पिस तांको उठि धामा। वेग ही शिवपुर माहे आया॥
शंकर ने भृग को निरपायो। अर्घासनु तजि आगे आयो॥
आदर भाउ अधिक तिह कीना। भृग ने ताको इहि प्रतु दीना॥
हे शभू तुम निकट न आवो। तू अपवित्र नापर्स करावो॥
मरघट भूम तुमरा है वासा। मैं नाही तुम र्म पिपासा॥
भामनी रहित सदा सग तेरे। तुम आवो नही हमरे नेरे॥
मोक पवित्र है हमरो कामा। भृगु देव कहीए हमरो नामा॥
गौरापति तब क्रोधु करायो। ले त्रसूल मारनि तिह धायो॥
पार्वती तब ही उठि धाई। शिव के चर्ना सों उरझाइ॥
मुप अपुने सें विनती ठांनी। हे शभू तुम ब्रह्म स्यामी॥

इहि विपु है वैराग प्रधिकाई। इमि सें इनिना नाहि भलाई ॥
जा ब्राह्मण चित क्रोधु स्याव। ताको कोऊ नाहि हटावे ॥
तुम धमू मया दया धामक। सकल जग के तुम प्रित पालक ॥
छिमा करो इसि दहू उजाई। मैंसी गौरा बात सुनाई ॥
धमू छिमा करी ग्रहि मायो। साईंनास मृग विह पतीआयो ॥२३४

बहुरो भृगु वैकुंठ सिधायो। तहा श्री कृष्णचंद को निरपायो ॥
धनु कीयो परजक पराहो। महा सुपोवुपु तिह कम नाही ॥
लक्ष्मी पग कर सो पलिसाइ। मृग ने मैंसे ही निरपाई ॥
भृग लाइ लात पिजर महि मारी। प्रम जी जाग परे तत्कारी ॥
मृगु को ले प्रजक बेठाया। प्रम मे बीन बचन उचिराया ॥
प्रभु मृग चर्न पलोवन लागा। श्री कृष्णचंद मन गर्व त्यागा ॥
मृग का प्रम श्री बचन सुनाए। हे भृग क्रिपा करी तुम करी तुम आए
बैकुंठ को तुम पावन कीमा। जो तुम मे पगु ईहा दीना ॥
तुमरे चर्न कौमल प्रधिकाई। मोहि पिजर प्रति गाढो माई ॥
तुमरे पग दुप बहु जो होई। मोको पीर भई नही कोई ॥
इहि प्रजोग मम रिदा बुलावै। तुमरो चर्न कष्ट प्रति पावै ॥
द्विज के पगि जिह मदर जाहि। सो ग्रहु लक्ष्मी छाडत नाहि ॥
ममरे[1] रिदे लात को दई। पग प्रसाद श्री निरचल भई ॥
नीवन भूपन पायो मंग। चर्न चिह्न राखो इमि संग ॥
करी कल्याण हमारी आए। क्रिया करी तुम दर्स दिपाए ॥
कछु आज्ञा कीजै भृग स्वामी। तुम सभ विर्षा मतर जामी ॥
हे प्रम मैं क्या कहो सुनाई। सकल विस्व प्रम तुम्है उपाई ॥
तोहि समसर दूजा और न कोई। तोह भक्त करी मुक्त होई ॥
आद अनादी नामु तिहारा। गर्भ योन ते तुही न्यारा ॥
गोकलचंद नद को नद। सकल जगत मत तूं ही चद ॥
जो महा कदरा होत प्रधारा। तू तहूं प्रम करि उजीआरा ॥
घटि घटि तुमरी जोत प्रकासी। तू ठाकुर माया तोह दासी ॥

---

१ 'मम' का अर्थ ही मेरे है, यहाँ 'मम' के साथ 'रे' का प्रयोग भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पर्मानंदि माधो वनवारी। श्री गोपाल खवनभारी॥
गोपीनाथ अनाथ को नाथा। विस्मन्मोहनी भरि काथा॥
रूप नरायण नृप का गाता। भक्तिन सुपु ताहू घटि राता॥
नैसाक को माय विहारी। असुर सघार्ण तुमही मुरारी॥
तुमै त्याग जो अवर ध्यावहि। मानो भिपति महि कर्मनिहि॥
हे प्रभ मुक्त विहारी दासी। तुम प्रभ काल सदा अविनाशी॥
मिमावान क्रोध घर नाही। सन्त सतोषु तुमरे घटि माही॥
उस्तत प्रभ ने अधिक उचारो। सोइदास सुनि सुति सभारा॥२३५

प्रभ सों भृगु आज्ञा ले धायो। ततक्षिण महि पर्योदक आयो॥
जैसी विधि भृगु आयो निहारी। सभ विधि ऋपो पहि आइ पुकारी
सकल ऋपीश्वर मन ठहिराई।
मुक्त को दाता श्री जादमराई।
ताहू की सेवा चित धारहि।
और कोइ का नाहि सम्हारहि।
सकल ने हरि सेवा चितु धार्यो।
श्री कृष्णचद घटि नामु चितार्यो।
दुर्वासा विपु द्वार्का माही। अपुनो भवनु तिन कीयो तहाही॥
तांको ताहू माह निवासा। भक्त कृष्ण को हरि को दासा॥
तांकि ग्रहि जो सुत उपजावहि। मासि गर्भ निकसति बिस्मावहि॥
अहा सभा जादम की होई। दुर्वासा सुत ले जावै सोइ॥
जादव को बुरा कहावै। उग्र सैन को जाइ सनावै॥
पाप करति जादम अधिकाइ। तिहि प्रजोग हमि सुत विनसाइ॥
अष्ट पुत्र हमिरे तजे प्राना। इनि जादम कछु गिने न माना॥
इकि दिन दुर्वास जो आयो। बुरा कहित अरजन सुन पायो॥
अर्ज्जन विप सो वचन उचारे। हे प्रभ क्रोध काहि मन धारे॥
दुर्वासा तांको प्रतु दीना। इहि पजोग क्रोधु मन लीना॥
सकले जादम पाप करावहि। इन प्रजोग मोहि सुत विनसावहि॥
अर्ज्जन सुण फिरि तिह प्रतु दाना।
इहि प्रजोग तन क्रोधु कीना।

जो फिरि तोह महि सुतु उपिजथि भावे।
सोहि बनिता अपन चितु लावे।
तब तुम मो को भाइ सनावो। वेग विलम्ब कछु मूल न लावो॥
तब मैं भाइ रक्षा करो भाई। जवि तुम भपुने ग्रहि बहो जाई॥
दुर्वासा प्रसु पाइ उठि धायो।
तत्तिषण जोपिता पाहैं भायो।
जो भर्ज्जन कहु मो भाइ सुनायो।
जोपिता को चितु ठौर करायो।
भइ प्रतीत तासि मन भारी। गोइदास सतिगुर बलिहारी॥२

जबु भयो बिप बनिता ताइ। भयो भनंदु तास मन माही॥
समाप्रसूत निकट जब भायो। दुबसि भर्जन भाइ सुनाया॥
भर्जन सुनत भायो ततकारी। त की गुन महि बसु भति भारी॥
पिंजर सर का तबी बनायो। रक्षा भाहुति ताहि करायो॥
बालकु उदर से बाहिर भायो। ताहि समे गनती चितु लायो॥
तांका गुपु किसे ना निर्पायो। बिप बनिता तब बचनु सुनायो॥
ह प्रभ तीन बालकु जो भावे। बहु हमि कों दर्सनु दिखावे॥
हमि बालक का दस न देषा। मा तनि बालक हमि को पषा॥
भर्जन गुण लज्जा चित भारा।
धनपु बाणु तिम तब ही सम्हारा।
तिस जोहनि कों बकुंठ भाया।
बैकुंठ महि तिस को नही पाया।
बहुरो ब्रह्म पुरी चितु लाया। तहा भाइ पुन दस न पाया॥
ब्रह्म पुरी तज दीइ ततकारे। सिव पुरी माहे तिम पग धार॥
तहा भाइ पुनि ना निर्पायो। त्रैलोक देषि टहिरायो॥
मन माहे तब कीयो बीचारी। मोका भाइ बनी भति भारी॥
मोह बचन मिथ्या भयो भाई। भब मोहि जीवन नाहि भलाइ॥
बन म लकरी ल भधिकाई। तांकी सेकर चिता बनाई॥
भाग्नि पावक ताहि जलावे। छिण माहे यहु प्रान तजाव॥
प्रदुम्न निर्प ताहि उठि धाया। ततछिण गोमापति पहि भायो॥

श्री कृष्णपद सों कह्यो सुनाइ। हे प्रभ पूर्न जादमराई॥
अर्जन सकरी अधिक चुनाई। नाहित अपुने प्रान जलाई॥
प्रद्युम्न असे श्री कृष्ण सुनाया। सांईदास हरि को चितु लायो॥२१७

श्री कृष्णपद अब इहि सुण पाइ। कहु काष्ट वयु लेवो सुपु अधिकाई
अर्जन प्रभ सों बिनती ठानी। हे सर्भीधर सारग पानी॥
दुर्बासा नित प्रति तुम बुरा आप। सुत प्रयोग प्रभ असे आपे॥
जादम पाप करहि मर माई। तिह प्रजोग सुतु हमि बिनसाई॥
मैं परज्ञा[1] तासि कराइ। हे प्रभ पूर्न जादमराई॥
जो फिरि सुत तुमरे गृहि आवै। तू मोहि पवर कनि चितु लावै॥
मैं प्रतज्ञा तिह आइ कराबो। तोह सुत बहु सुप उपिजाबा॥
तब तिह ग्रहि सुतु होवन लागा। दुबधि बिधि सकल त्यागा॥
तिन प्रभ मोसों आइ सुनाया। मैं बच तासि सुने उठि धाया॥
धिजर सर को तहा सवारा। धासन जम लीयो तत्कारा॥
सेवत जमु अकास सिधायो। तब बमिता बिष मोह सुनायो॥
जो तोह सुतु जम असायो। ताहि बसु देपति चितु लाया॥
अब जो बालकु हमि उपिजायो। तांको दर्सनु मूल न पायो॥
हे प्रभ मैं सुकच्यो मन मांही। धनपु बाण ले चल्यो धाई॥
असाक प्रभु देपि करायो। बहु बालकु कहूं सो नही पाया॥
सकित बचन हरि भयो हमारा।
सब काष्ट सेवनकों चितु भारा।
अर्ज्जन को हरि कह्यो सुनाई।
सुण हो अर्ज्जन हमरे भाई।
चितु अपमा तुम नाहि डुलावो।
हरि धर्मासों ध्यानु लगावो।
भसके[2] मैं तुम को ले जावा। सुत दुर्बासा के दिपलावो।
अर्जन सुण मन महि बीचारा। कहा कहति श्री प्रांन अधारा॥
मोहि चित लेइहि उचिरायो। नाहित हमि को कहा रिपायो॥

---

१ 'प्रतज्ञा' शब्द चाहिए।
२ 'भसके' पंजाबी शब्द है। अर्थ है—कल (भविष्यार्थी)।

प्रलोक मैं देपि करायो। मैं कछू ठौर नहि निर्धायो॥
कौन ठौर सो मोहि दिपसावै। कौन ठौर से मोह वतावै॥
अर्जन मन महि श्रैसे धारा। साईदास हरि गत अपारा॥२३८

निमवौती रवि कीयो प्रकासा। श्री कृष्णचंदि मन भयो हुलासा॥
श्री कृष्ण गर्ड को लीयो बुलाई। तासि सवार भयो जदुराई॥
अर्जन कौ हरि सहित चढ्यो। दुर्बासि सुत ओहन वायो॥
अर्जन संग लीए उठि धायो। सप्त समुद्र के आम आयो॥
आमे आवन को चितु लाया॥
सब ही प्रभु जसु विद दिखावे। अर्जुन निर्ष मन महि बिस्मावै॥
प्रभु स्थावर ताहि माहे। प्रति दीघ कछु कह्यो न जाइ॥
इकि वसुधरि को सांपर बाधा।
एक सीस तिह तिह पर प्रभु आई। अर्जन बिधि मे दई दिपाई॥
सस गोद बैसे भगवान। अष्ट भुजा प्रभ पुर्ष पुरान॥
नमस्कार आइ कीयो मुरार। अष्ट भुजा हू करी जुहार॥
आवहु कृष्ण हमारे मीत। तुम देपन कीयी बहु प्रीत॥
प्रभु घत बप पांच ग्ररु बीस। भए बितीत सुनो जगदीस॥
तुमरे देपन की मन प्यास। बहुत बधी थी हमरी आस॥
इसि निमित्त आन दिय बास। तुम हो केशव सदा कृपास॥
तम देपे भव सम गया। हर्षि हमारा तनु मनु भया॥
मदर के पीछे थे बास। पेसे थे तहा गए कृपास॥
मो सुत दुर्बासा तिह माही। निर्ष्यो अर्ज्जन प्रति बिस्माही॥
दवकी नवम ने भया कीआ। से आसन तिह गड पर दीआ॥
बेग माहि द्वार्का से आए। इहि कार्जु श्री कृष्ण कराए॥
आगा लीए दुर्बासि ताई। दुर्बासा हिर्ष भया अधिकाई॥
अर्ज्जन गर्बु हृदे ते त्यागा। नीच मार्ग मेरे बहु लागा॥
धनि धनि श्री कज बिहारी। अर्ज्जन इहि बिधि मन महि धारी॥
अर्ज्जन ने अभिमानु तजायो। साईदास सप आनदु पायो॥२३९

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे ऊनाननोध्याय ॥८९॥

पूरनो अंत अक से सीए। अधिक असुर सघारौं कीए ॥
द्वार्का माहि भई कल्याना। सकल लोक पुर आनंद माना ॥
बैकठ बासी मन ठहिरायो। हरि चर्ना सती चितु लायो ॥
सम ही मिल अचरु कीना। हरि दर्सनु देषन चितु दीना ॥
श्री कृष्णचद बकुठ म आवहि। इहि प्रजोग मन महि विस्मावहि ॥
सब हो द्वार्का माहे जाही। तहा आइ हरि दर्सनु पाही ॥
सुंदर रूपु हरि दर्सनि धारहि। तिहन भक्त हरि मन महि धारहि
सदा रहे हमिरे मन माही। हमिरे मन से भूल न जाई ॥
पदमज शक्र ध्यानु लगायो। मुदर बर्न कुमेर सभायो ॥
सोई दर्सनु हमि आइ कराही। हरि चर्न सेती चितु धरही ॥
नान्हा अधिक सकल ही आए। द्वार्का पुर महि आइ ठहिराए ॥
प्रम को आइ कर दसु करायो। महा अधिक सुपु सभनो पायो ॥
श्री कृष्णचद तिह कह्यो सुनाई। बकुठि अनंदु है मेरे भाई ॥
इनि सकल्पो हरि को अतु दीना। तोहि दर्सन आनदु हरि कीना ॥
मधवापुर से अपसरा आई। इहि मतु कर अपुने मन माही ॥
बादम बनिता सुदर अधिकाइ। तिह उस्तति कछु कही न जाई ॥
मोहनीआ तिहि सनि विपावहि।
तिह उस्तति कछु बनि न आवहि।

सकल अपीश्वर कह्यो सुनाई।
है कौलापति सदा सहाई।

सुमरा दई देषनि आए। मतु हमिरे मन आइ भुलाए ॥
चिरह भक्त हरि मन ठहिरावहि। हमरे मन ते भूक न पावहि ॥
श्री गोपाल तिह को प्रितु दीना। भली भाव तुम मन धर लीना ॥
जो मोह रूप तुम आइ भुमाई। तीन ठवर मोह पावो भाई ॥
प्रिथमे तौ बैकुठ मझाही। द्रिती कहा[1] श्री भागवत माही ॥
तृतीआ ब्रिद्राबन महि भाई। ब्रिद्राबन महि रहो सदाई ॥
मापुन गोपन इहि स पावो। सदा सदा तिह महि उर्ध्यावो ॥
ऐसे प्रम जो सकल सुनायो। सांईदास पूर्न सुपु पायो ॥२४०

---

१ कहा<कथा

इकि दिन प्रीखति प्रस्नु चलायो। स्री सुकदेव कौं आप सुभायो ॥
हे प्रभ सकली बिधि तुम जानो। मैं तुम पाछे कहा बखानो ॥
किर्पा कर हमि बतिलावो। हमिरे मन का भमु हिरावो ॥
जादम सभ कैसे मेरे भाई। किर्पा कर मोह देहु बताई ॥
स्री सुकदेव तबी प्रतु दीना। हे नृप भलो प्रस्नु तें कीना ॥
जादम सभ कौं जानो मांही। एही बिधि भाखे हमि ताई ॥
तिन चटिसाल को मै जानो। सो तुम पाछे सकल बखानो ॥
जादम तिह पहि बेद पढाही। सौ मैं तुम कौं सकल सुनाई ॥
तीन क्रुहिणी मेरे भाई। षोडसहस्र पांच लक्ष अधिकाई ॥
सप्त सै चौर तासि ही नासी। इहि चटिसाल तिहि मोहि सम्हासी ॥
एक एक जोम पहि पढिही। सम बिभांत मै आपे उरही ॥
एक सहस्र एक सौ तिहि पाही। एक एक पहि बेद पढाही ॥
स्री कृष्णचन्द भक्तिन सुखदाई। लीयो औतारु इहि कारनि भाई ॥
भक्तिन सुख देखो अधिकाई। दुष्ट सभो को नासु कराई ॥
स्री कृष्णचन्द मन महि ठहिरायो। जादम अधिक भए सुख पायो ॥
तोहि पाछे आन भूपति आवहि। जादव तिन सों बहु दुख पावहि ॥
इनि पहि द्रब्य अधिक मेरे भाई। आन भूपति इनि दुख दिखाई ॥
कर क्रोधु इनि को प्रहारहि। हमिरो नामु इहि सकल बिगारहि ॥
इनि पहि बड सेन जितु लावहि। तब कलक महि हमि उर्झावहि ॥
सभ जादम का तेजु गवावों। तब कलंक महि मो उर्झावो ॥
सकल जादम को लीयो बुलाई। तिन सों कह्यो सुणो मेरे भाई ॥
मैं जावति हो बैकुंठ माही। भयो समा पूर्न अब वाही ॥
जादव सभ जब इहि सुण पायो। जगननाथ को तिन चितु लायो ॥
तहा आइ चौपड खिड्डु लायो। पेसति क्रोधु हृदे महि धायो ॥
आप मध्य युद्ध करने लागे। चौर बात सकले तनि त्यागे ॥
ततखिण सभ ही प्राण तजाए। सकल जादव बैकुंठ सिधाए ॥
प्रभ ऊधो सों कह्यो सुणाई। सुण हो ऊधो हमि सुखदाई ॥
अर्जन को तुम जाइ सुणावो। हस्तनापुर केरे मग आवो ॥
कृष्णचन्द बैकुंठ सिधारे। अर्जन सों जा कहो तत्कारे ॥
तुम सो कृष्ण कह्यो मेरे भाई। द्वार्का महि आवहु तुम भाई ॥

सकल लोक पुर क से आवो। मथुरे पुर मध्य जाइ बसावो॥
द्वार्का महि पूरों वधि माहें। भाज्ञा कृष्ण लेहु मन माहें॥
ऐसी तुम जाइ तासि सुनावो। साईदास छिन भूल न लावो॥२४

प्रीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। मोह मन सचरु है अधिकाहे॥
यादव किउ आप मध्य भुझाए। क्यु कर सम ही प्रांन सजाए॥
एहि बात तुम मोहि सुनावो। मेरे मन का भर्म चुकावो॥
शुक देव प्रत दीनो नृप ताई। सुण हो नृप दिड़ लाइ मन माही॥
दुर्वासा ऋपु मजनु करावै। श्री गोपाल चर्नी चितु लावै॥
यादव ने इकि दिन क्या कीना। एकु रूप तिन नै कर लीमा॥
बहु गुणा आपिका तिहु लीना। रूपु उदर कं बांधन कीना॥
मानो गुर्वणी है मेरे माइ। वनिता रूपु तिहु लीयो बनाइ॥
चले चल ऋषि पाहे आए। ऋषि सौ तिन में वचन सुनाए॥
एहि गर्भ से क्या बाहिर आवै। हमि मनु भमि सें डुलावै॥
ऋपु सम बिधि जानग्रा द्वारा। मन माहे तिन लीयो बिचारा॥
कह्यो मोह सो कपटु कमावा। हमिरे पतीआवनि चितु लायो॥
इस उदर ते बाहिर आव। वही तुम सभ का घातु करावै॥
यवि यादव ने इहि प्रत पायो। श्री कृष्ण पाह आवन चितु लायो॥
आइ कृष्ण सो बात सुनाई। सुण हो प्रभ पूर्ने जदुराई॥
दुर्वासि ऋपि इहि कपु कीना। इही आपु हमि ताइ दीना॥
इस ही गर्भ तें तुम हि बिनासा। अब तुम त्यागो सबसी आसा॥
कहा करहि प्रभ देहि बताई। इसि उपिचारु बतावो भाइ॥
श्री कृष्णचंदि तिहको प्रतु दीना। मम जादवनें मन धर लीना॥
इसि आपका तुम जाइ घसावो। ताहि घसा^ दधिमाहि रुड़ावो॥
यान्व सभ ऐसे ही कीमा। ताहि घसावन का चितु दीमा॥
सकल घमाया मेरे भाई। रप रह्यो पुन घस्यो न आइ॥
ताह के हाथ माहि नही आवै। इहि प्रजोग पम्या नही जाव॥
यादव हाइ दधि माह रुड़ायो। मीन एक ने उदर करायो॥
वाही भीन वधक पर आइ। वधक ने बहि लीयो हताइ॥
मीन को से आया प्रहि माही। उदर पाग्या वधक ताही॥

याही आप मिकस के भायो। बधक बाण कै मुष ले सायो ॥
जो घसाइ भम दीयो रहुहाई। ताहि कूदर उपज्यो मेरे भाई ॥
फूल्र सहित जादव बिनसाए। ऋषि श्रापु पूर्न भयो भाए ॥
गुकदेव ने नृप का समझायो। सांईदास आनंदु तब पायो॥२४२

इक दिन श्री कृष्ण बन महि ठहिराए।
जब पर जब धरि परि भटकाए।
पद्‌मु यी कृष्णचन्द्र पग माही।
मानो द्रिग मृघ देख दिपाही।
मृग जान इहि बंधक मन धारा।
विष बाण बंधक तब मारा।
नृप परखत इहि सुण उचिरायो।
है भ्रम मोह मन संचर भायो।
बधिक बापु काह हरि सायो।
हरि ताको सत कैसे पायो।
एहि बीचार मोह भ्रम दीजै। इहि करूणा कर सुण कर लीजै ॥
शुकदेव कह्यो सुण हो मेरे भाइ। सकस बात तुम्हे देगें बताई ॥
श्री रघुपति जब भयो अवतारा।
तब रघुपति सर बंधक मारा।
सुग्रीमु बासु कपि दोई भाई।
बालु नाम्हो सुग्रीमु अधिकाई।
बास कपि बहु जोरा कीना।
सुग्रीम सौ राजु पसि लीना।
ताहि भार्जा भी पसि लीनी।
महा कष्ट बाल विधि कीनी।
सुग्रीम को कछु बसु न बसायो।
भाइ एक स्थावर ठहिरायो।
सद इस ऋषीश्वर को कहा वासा।
तहा भाइ इनि कीयो निवासा।
रघुपति जानुकी खोहत भायो।
सुग्रीम में तब ही मिर्पायो।

हनूमान कों दीयो पठाई। तुम इसि को ले आवो भाई॥
हनूमान रघिपति ले आयो। लछमण वीर सहित सुपु पायो॥
कपि पति ने तब कह्यो सुनाई। कहा चले श्री रघुपति राई॥
श्री रामचंद तांको प्रसु दीना। आनुकी ओहनि को मनु कीना॥
जब सुग्रीम इहि विधि सुण पाई। विस्मक होइ रह्यो अधिकाई॥
श्री रघुपति कह्यो कहा विस्मायो। कौन बात तुमरे मन आयो॥
सुग्रीम सब कह्यो सुनाई। मोह बनिता मोहि वीर हिराई॥
हमिरा वधु तांसों न बसाव। वहु हमिरे पर जोह करावै॥
तब रघुपति तांको प्रसु दीना। इहि कार्ण सबरु मन लीना॥
अपुनो वीरु मोहु देहु बताई। जिन तोहि बनिता लीई हिराई॥
मैं आइ तिस ताई हति लेवो। तोहि बनिता तुम्हि का ले देवो॥
कपि पति प्रम प्रीत वढाई। अग्नि कराइ प्रतज्ञा पाई॥
सुग्रीम के सग रघुपति उठि धाए। ततखिण किंकिधा निकट आए॥
तापा हेतु अर्क हरि धाया। साईदास मन हेतु बधाया॥२४३

श्री रघुपति कह्यो सुग्रीम के ताईं। बाल को आइ कहो अधिकाई॥
मुख ते आइ कर गारी देवो। ग्रहि से किर्वे बाहिर कर लेवो॥
सुग्रीम सुनत वही उठि धाया। ततखिण द्वार बाल पहि आया॥
बाहु युद्ध दोऊ कर्ने लागे। तब प्रभ बाणु धनष धर्‍यो आग॥
रघुपति सर सांध्यो सिर मारा। तब ही बालकपि मुखो पुकारा॥
हे प्रम मै औगुणु नही कीना। तैं काहे मोको हति लीना॥
रघुपति बाल सों इही सुनायो। तोह बाण मैं देगा आया॥
बाल कह्यो प्रम जी कब पावा। तत्तिखण अग्नि मैं प्रान तजावा॥
तब रघुपति तांको प्रसु दीना। एही वचु प्रम तांसो कीना॥
श्री कृष्ण अवतार लीयो जब आई। तब तोह बाणु देउो मरे माइ
बाही बालु बधिक होइ आयो। प्राण बाण हरि चर्न लगायो॥
मृग प्रीछन को भर्म हिरायो। इहि प्रसु निर्भो सुपु पाया॥
ऊधो हस्तनापुर पगु धारा। पांडो मुन पहि आया तत्कारा॥
धर्म्मम सों तिन आपि सुनाया। श्री कृष्णचंद वैकुंठ सिधाया॥
तोहि कह्यो सुण हो मेरे भाइ। द्वार्का माहि आवो तुम धाई॥

सकल लोक पुर के ले आवो। हस्तनापुर महि आए तहिंठावो ॥
मज्जन इहि विधि सुण उठि धायो। सतखिण द्वारका माहे आयो ॥
जब श्री कृष्ण के दर्सन पावनि। विहंगम शब्द धक्कि उचिरावनि ॥
महा अधिक बनु सोभति भाई। मराल मोर तहा देत दिखाई ॥
अब जो लोक लेन को आयो। बन महि कहूं कहूं सिधायो ॥
अहि के अहि सकले गिराए। गिर गिर पति सेत महि आए ॥
नाग ताहि ऊपर कुलिसावहि। अपुनी माया धम्म सुनावहि ॥
नायक सकल बैकु ठ सिधाई। अजुन आयो पुर मांही ॥
केतकि बनिता मैन निहारे। अर्जन सिर्प विन कह्यो पुकारे ॥
हे अर्जन लोह कृष्ण सम्हारहि। चौपड़ पेसन कों चितु धारहि ॥
अर्जन केतकि दिन ठहिरायो। वहि सम बनिता लेकर आयो ॥
अपुने पुर महि आए बसाई। जो आज्ञा कीई त्रिभवन राई ॥
तब रविका मंदि मंदल धारी। द्वारका पूर डोई तरकारी ॥
सेत माहि ताहि पूरायो। कौलापति इहि कर्म कमायो ॥
साधो हरि धर्ना चितु धारो। साँईदास खिण माह बिसारो ॥२४४

इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे
श्री सुकदेव परीखति संवादे नवेमोध्यायः ॥ ९० ॥

साधो मोहि बिनती सुण लीजै। किर्पा कर्के श्रवणी दीजै ॥
जा कहू चूक परी होइ भाई। किर्पा कर तुम लेहु बनाई ॥
महा अपार पार को पावै। सिध अपार हाथ नहो आवै ॥
एक मने उपजी मन माहो। दस अवतार प्र भु उपिजाही ॥
साईदास किर्पा प्रभ कीनी। मकल बिर्थाति सीचार के लोनी ॥
साईदास हरि सनि तिहारी। साधो निस दिन कहति पुकारी ॥२४५

मैं मतिहीन कहा मति मेरी। उस्तति कर साकों हरि केरी ॥
भाषा मैं जोड़ जोड़ कराई। भला भला जोड़ कीई अधिकाई ॥
साईदास गुर सन्त सहाई। तो मैं प्रभु कीयो अधिकाई ॥२४६

जो मे औगुण हरर गुसाईं। तुम दयावान हो त्रिभवन साईं ॥
हमि जाचक हरि दर्स जचावहि। तुम दया कर तुमरो नामु पावहि ॥

साधि सग करणा हरि कीजै। इही दानु हरि जन कौं दीज ॥
भक्त सुमारी घटि ठहिरावै। छिन पलु हरि जी ना विसरावहि ॥
श्री कृष्णधद तुम किर्पा धारो। साईदास को तुम निस्तारो ॥२४७

सदा सदा हमि सर्नि तिहारी। तुम दाते हमि दीन भिषारी ॥
श्री भगवत दस्म स्कद सपूरण। पढे सुने हरि भक्त वडाइण ॥
जय जय जगननाथ जगदीस। पूर्ण पुप प्रभ जग को ईस ॥
ताको महिमा कौनु वषानै। गति मित वाकी क्या कोऊ जाने ॥
धम्म धरावति लीयो प्रवतारा। ताका सुण हो सभ विस्तारा ॥
सेकर प्रावि प्रंत वीचार्यो। गुर किर्पा ते सब्द उचार्यो ॥
जो चितु धर कर मन सुण लेवै। ताको जीवन मुक्त करेवै ॥
पश्चम दिशा लीयो प्रवतारा। मिट्यो तिमर भयो उजीप्रारा ॥
ताकी पूर्ब वात वषानति। जो नही जानति सौ सुण जानति ॥
सेप की गति लषी न जाइ। वांको गति कौं पार न पाइ ॥
महा समुद्र कौं गति जानैं। जो जानैं सो प्राप वषानैं ॥
ताको दर्सनु जो नित करही। जरा रोगु ना तिहि कछु लरही ॥
सुणो हृदा धरि जो सुमहि सुणावो। साईदास नित हरि जसु गावो ॥

इति श्री भागवते दस्म स्कंधे श्री सुकदेव परीक्षति संवादे
दस्म स्कंद मवेध्याय सपूर्णम् ॥समाप्त॥

संमतु १८१२ वर्ष फाल्गुण मासे सुकल पखे १३ रविवासरेन संयुक्ताय स्नेपानसर प्रतिगंडमोपाय कुमार्क दिन २ तद्दिने मद्दोरी मध्ये लिषत प्रातमाराम् ब्रम्ही।

पद साहित्य

राग गूजरी

अगुरु सबु माया के फाव पर्यो।
भक्ति प्रतीति पुकारि सुनाई सूया सुमिति छरयो ॥ १ ॥
माया के फंधि मान्मिर्मतिसग निकस्या को दिपरावहु।
मंजनि सलाई नेत्री मेसहु भारम माह समावहु ॥ २ ॥
सिष वूद ममता मनि मांनियो भ्रवति जासु वहै।
निकटि दिवान मुरु नही दूझै किनी नि पुकारि कहै ॥ ३ ॥
कर्म कर्तूति जरा भी पूजी जनिम जनिमि परितावै।
ब्रह्म सिजानि सहित भरि सिर्पे बीजु कोटि का मार्प ॥ ४ ॥
नामु पुकारि तरै कई कोटी कजिस ते निकसाए।
भ्रम सागिर ते नाम सोईदास पूजी सभु मुक्ताये ॥ ५ ॥

माम सरि कधु मि सामे भीरि।
धर्म धरामसहति जो मर्पे मुगवे कर्म सरीरि ॥ १ ॥
भ्रमुरिपति लक समेत दैताहो सुरिपति सण मडारि।
एक नाम सिमरनि के भामे इतिने दामि की हारि ॥ २ ॥
चौन्ग रतन सहुत रतिनागिरि मुक्ता सिषु समेति।
मठसठ तीर्थ महिही मविन भी नाह नाम के हेति ॥ ३ ॥
है गै गौऊ पीतांविर बनिता प्राग मकरि बति भीरि।
वेद लिपै फल नाह मिराये कर्म पेम सुप तीरि ॥ ४ ॥
तीभ वर्त नेम तपि सजम मतु को लिवे जामि।
कहु साईदास नाम की महमा होति नि मामा समानि ॥ ५ ॥

बनि को नामु भरोसा हुग्रा।
पूर्ण इर्ण मर्जेद्र उधारे बहु गनिका बहु सुप्रा ॥
सर्व रसां के ऊपिरि रारा जो पीवे सोऊ जामै।
माघा मबिक होति तहा मिपजे मंति कास उरि मामे ॥

मति असिमंत राविण की सेना लोभ युध्या पहुचाए।
काटिनि सीस राम दल पहुचे ते बैकुठि पठाए॥
सरि सिहजा[1] परि सोतिल कों सुति नाम भरोसे परिम्रा।
तजि करि तालि विप्र के भागे वेदि स्मृति ल सरिम्रा॥
इसी नाम ते वेद मर्यों फुनि वेद नामु प्रगिटायो।
यत्र भजीति भए साईदासा इति रसना जसु गायो॥

भिति निरती पहुचे सो कौन कहे।
छुत भ चकिति भर्मका मूला ह ह करिती निकटि रहे॥रहाऊ
अकारि मकारि रसिन वच अनिमै मात्र की रूप नि रेया।
चगिति भगित ते नाम निरारा इति साजनु प्रभु जाय पेया॥
जिस विर्ष के ते रस फल चापे रसिक रसा अभकाई।
अपेच विर्ष की छाइमा अपे पुहपां फला नि पाई॥
बनि पडि चाढ सिभिरि को भागे घरे ध्यानि यनि चाहे।
कदिली उलटि त्रिकुटी मूदो रहित महीं बन चाहे॥
मिृगि त्रिए जित मुसकाति रहे रह सकी सेम नि भाइ।
सैन कपु कंचनि तज साईदासा ही ऊस पास सिमराई॥

दुमता मनि ते कविहूं नि चाइ।
तोरि नि साके पिंजरी पगिरिपु जो हरिकी सर्माइ॥रहाऊ
सर्व शास्त्र सुर्त सवृल से दौरयो वेद नि वाति सुणाइ।
नेक रहति सम बसुधा मापी जिनिनी सुर्त अकाइ॥
भ्रामंद दान तीर्थ करि मज्जनि निर्मल जसि इघनाइ।
प्रात मुप प्राहन सजुगिता कर्म सहित कठणाय॥
निविसी कर्म मुभंगम भाठी नाम कविलो उलिटी उसिटाइ।
मगिन रहमा वण पडि मै पटा जूटि उरि म्राइ॥
इसुभरि हस भदोप भ्रहन जस इहि गति लपी मि जाइ।
कहु साईदास दुमिदा की चोटे कर्म सति कोटि भरिमाइ॥

---

१ परसम्पा।

बसि अबितार—

देहु जिसौते तेरो अनिमि सकार्मा त्रिजि नाथ को मोरी देहु री।
मुख' अधिक सुहाविणा तुम करी पिसौना लेहु॥
मकिस ग्रिष्ट का बोनु या सपासिरि बेद सोए।
कवि पसारिन नाम हे सवि प्रभि मीति मए॥
मधु कटे कार्न कछि रूप त्रिग अनि धर्न समेत।
पिष्टी धरिती राप के प्राकासी घ्र केत॥
इहु सरिका वैराहु धा मानोष कारण छेदि।
मूकरि धरिती उधरी सेत सुमेरि सवेद॥
नरि सिघ न पूछसि धर्म नरि देयो मत प्रधर्म का।
रजि नखनीं वाभु काम हरिनाकस नास इहु वचनु पा॥
समामर्जुन परिसराम ग्रपेड कर्ण गिग्रा बस पिग्रा।
रेप धेनि भुसा जमदग्नि दी नास कुठारे दे गति गिग्रा॥
कनिक पुरी मिश बद सुरि तारिणाणकों सुप हेत।
प्रथम दसेही कटाइग्रा इठ रघपति बांधे सेति॥
अति पै गए ग्रसोकनाथ गहु घरिपी धर्न प्रचेत।
ग्राप कर भापने इउ बाविम बेद समेत॥
नोठचारि प्रगारा सुक बदमि ग्रध्यात्म सकमि समेत।
प्रजिहू बण मि सावते केस दमति प्रज हेत॥
बाधि गिग्रा सुरि बापिग्रा सुरिती का नौठ माप।
प्रनु म पाने बोधि का तेरी कथा प्रगाध॥
कमि सुगि मातगी परि प्राविणा कमि कारण निहु कलक।
माईदास दम भविताररा बो सुने बैकुंठ वाहो मिर्तमि॥

देया करि नारि पतित का तार।
अधमदत्त ममरव तुमु सूभी दीनानाथ मुरार॥रहाउ॥
तू पतित पावन मै बड़ा पतित हूं मेरे ग्रौगन गुण न वीचारि।
जो कछ पाटि कीए पतिता सा मो तुम तुम लेहु सम्हारि॥

---

१ मुख।

हेमद्रुकनिमा[1] सिल पलि रींबे ईंधनि चदन आर।
कदिली काट कबधारी कोई भयसो पेतु सवारि॥
पांचो दुप्ट कुटल मथि मेरी मैपतां सो कह्यो पुकारि।
छांडि चल्या सय हाथ पछारा जूए सो घनु हारि॥
सिष बीच झकझोरि करित हुय ना उरिवारि ना पारि।
साईदास के तनि मबिरिदास कों मपिना सुघ दिपारि॥

मानद को परिवाहु जना को दीमा।
जिन के भागि चूको भमु तांका मति प्रीतम करि तिनहू पामा॥
नामि प्रवाहु वहे बसुधा परिगकुनु[2] करे जाइ तीर्थ होवे।
नामु प्रवाहु वह हीयरे मै सत मिले ते परिगट होवे॥
इह प्रवाहु प्रह्लाद सबन हित सुकि मार्द रीझायो।
चारां बेद करें जा की स्तुति धनि वदनि जिस ब्यास सुनायो॥
गुरि की क्रपा साध की सगति मानदि की निध मगाध उठीमा।
किमं बिहग नाम रुचि साईदास चात्रक को चित पावस लीमा॥

रागु भैरों

जागीमों क्रपा निधानि स्यावरे कन्हाई।
चहिगनि भवि भए मलीनि दीनि टेरति द्वारि द्वारि॥
सुरिभी सम हुंग करित मौभ रजिनी भाइ।
विठज उचारि निगम करित प्रातिहू सिरि सिपा भरित॥
चार्जे[3] मति विमस भए देपति भरुन्हाई॥
गाबिते गुपास मास न- सास के बयास।
प्रभि की व्रम नारि बेठी मारिती से माई॥
निपसी मुपारि विद बारि देव कोटि इद।
मरिहरि हरि चनन ते मानदि निध पाई॥

---

१ समभन यहा हेम मद्रुकनिमां पाठ है।
२ परिगकुनु <परिगमन—परिक्रमा।
३ चार्जे <चारित्र।

स्वामी हम थारि थारि दासु तिहारा
तू ठाकुर हमारो ॥
पीसना करो पांणी भरों प्रभु थ सिभान सोंचो मेंगमा बहारो।
काग उजारो लोंचो पै लोंचो उपिसे स म्रामो काठी कटाबो
भौरि लिमावों भासा।
हम तो ठाकुर करि जानें तुम करि जानो दासा ॥
चमेली मसो कांमी करों भासन पठाबो।
चर्न पपारा घोमी पखारो हह भोंसिर मोह पाबो ॥
से म्मरी रह्यो चर्ण गह्यो ठाडा दिव द्वारें अंभृत जसि सेन कों।
मों को स्वामी बिसारे महाराज तुम कोंसमसाज मपुने करि जानो।
सांईदास की बेनती फुन गर्भ न मानो ॥

ब्रह्म हम्त मगिमानि पारके ईसरि मुकटि बसाई।
भेद पर्याण सगर तें सारै भागीर्थ कों देन्ह बडिमाई ॥
मठो रहस सहस्र समुद्र को मुरि नरि कहे गग बहि भाई।
सांईगम इहि गगा जसि मैसो निर्मल द्रिप्ट परिग्रा कोऊ नक न जाई ॥

गगा की तरे वर्सन तो बलिहारी।
इह गंगा जसि मैसो निर्मल जिन सकिल पिप्ट तारी ॥
धाम धरीरो उपिनी गगा मुकिटि बसी महारेबे।
मूपरा जाकी महिम म जानी सुरि नरि जाकी सेबे ॥
सर्वत गगा दुर्लभ कहीए तीनि बिसेप प्रसपाना।
दिष्ट परी सम पाप उतारे पीवित महिम न जाना ॥
जगम जोग जती सम्यासी पीवितर्म प्रबिनाए।
हरि दुमारि हरि मूर्त पर्सी जनिम जनिम के साहे ॥
सामिरि सग रत्नी भागीर्थ कीन्हे प्रनिक तारंगा।
साईदास मनु भजनि होबे बैकुंठ जाउ निसंगा ॥
इह पराग मनिसा कों वासा बेणी संगिम तीरे।
दिष्ट परी सम पाप उतारे निर्मल बुद्धि सरीरे ॥

रागु प्रभाती

थानि[1] हो क्रपाल माधो सभनि क प्रतिपाला।
भागे भावित पै पठाविति पाछै भावित वासा ॥रहाऊ
बनि कीटि पप पसु बिराजित कछु गांठ ना बधाइउो।
देन हारि करि सम्हारि विरि॰ ही वहाइउो॥
पप्यान मध्य गुफा कीटि मागु नहीं भोऊ।
तांकों किस भांति देसि सभनि का प्रभू सोऊ॥
मूम मद्ध पं भकासि जलि मै जो जीभा।
कर्नै कान प्रभ भपारि जानिभा सो कीया॥
जैसे जानि तस दति भाविमे विसुवासा।
मन उाटि रिव रापु तां सो साईदामा॥

हूप हूर्प हरि को पसु गाउ।
भारि भारि फिर जन्म नि भाउ॥—रहाऊ
मूस हारि की रोंका भाटि। भारी देत है मध्य कपाटि॥
नाम कुंडली भरों प्रकासा। रिदे सरोवरि कौस बिगास॥
सिव भरि धक्क समोकरि भानो। पौमि मध्य गुरि ज्ञानि बिपानो॥
कवि सग रसना पीव पानी। तबि भग भज मनु सारंक पानी॥
तुरीभा तस तहा मनुरागा। भावर बिनु भनि भर्पभि लागा॥
फूटा सिमरि जोति प्रकासि। इह बिध प्रभव सांईदास॥

केसे मै भर्नों तूं भरिधक उरध।
भर्न नि साकों धयाम वास कवि रिध॥ —रहाऊ
बिरखो मि पत्रो न मूसो नि भाली।
प्रहपो मि गंधो बासा नि माली।
तेरा निरभौउ भाडमभानि भडिभा।
भजे मिधानु पुरासु जडिभा।

---

[1] थयाम।

सुंन सभा सनातिन सापी।
रंचक एक महास्मेव न भापी।
मारम ब्रह्म मया निहकेवल।
साँईदास भर्मा नि पूमा न देखी निदेवसि

सुनि लीजे भगिवानि बिर्या मेरी सुनि लीजे भगिवानि।
मैं भकेली एह पांचि बसी है मारि कोठी हैराम ॥रहाऊ
लोभ की लहिर लपेट लीठो है क्रोधु निभाव तानि।
भ्रमती मनिमा टिकनि नि देखी भिउ भ्रम तर्फत है स्वानि ॥
काम कुचील भर्स हैरामी त्रिघना की सतान।
मोह भजीरि पर्‌यो मति मारी छूटि गए भविसांन ॥
पसिक म न्यारी होइ भीड़ते कपटि कन की बांनि।
तुमरी दैया बिन कैसे छूटे दुष्टन क बस प्रांन ॥
मोतनि पीर कहा कोऊ जाने प्रभ मेटनि की बांन।
साँईदास मिच दुमारि पर्‌यो है तु बिपत निवारनि धाम ॥

पगि नगि मृग पात्र पनिप कुजरि भूधरि भ्रिग।
चबिम काम भन चंद्रमा एह कही मति सारंम्प ॥

दूरि नि आबहु पनि रापबे पेसो भाइनि घर[2]।
मैमनि सा न्यारो जनि टरो मारी छनीभा घर ॥रहाऊ
निम दिन रहत चटापटी राम लोमे डरें।
पनिप बांन परि भपिने हाप तो रोग सरें ॥
एक बानि मै मुनि मीन चिलु घरें।
सकापनि कैसे मरे भममानी डरें ॥
कोसल्या बिमम भई जीप भानंद भरें।
मोह मचमा यगिदीम कहा मारहो से सरें ॥

---

१ पनिप < मनुष्य।
२ भाइनि घर के।

सषी ए मभवनि विपु भतो है ख्राड मल भवि रीत।
षादिर होए नन दुइ हूर विनु वर्षे नीति॥
भसमनि[1] नान्ही बूद जिउ कुषि अपरि बुर भाइ।
एह प्रभु है सांईदास कों हम को किउ नि मिलाइ॥
एक चात्रक घरि वैन सुनि सुनि धुनि विकल भई।
टूटी जाति नि स्याम सो प्रीति जो मर्ष भई॥
प्रेम चपाते पत लीतो भाति न भाति कही।
साईदास गोपी कृष्ण बिनु चात्रक होइ रही॥

राग बिलावल सुषि

ठाकुरि मेरा रगुला सम रगि मे राता।
दीमानाथ दिमाल है सभिहू सुषिदाता॥—रहाऊ
मातिरि भामी भगि पिता सम मै जांकी थास।
मतु कौं भानै पूरि है घटि घटि ही प्रकास॥
कृपा होय गुरि भर्न त कसक चिम मीज।
गुपति चिहनि भा पसरया घपिती जिपती जे॥
जहाँ जहा देषो तहा तुही दूसरा नाही कोइ।
सर्वघड ब्रहमड मै तस जोति की लोइ॥
सहज मिले सुष पाईए दुष दीने डारि।
पूर्ण गुरि मिलाइमा सांईदास वीचारि॥

सुषि बिनु प्रवृति मै पीमा मैयों भयो दिवाना।
सुषि धुमि भूमि देह के कछु गुरिमुष जाना॥—रहाऊ
जानि समानि जानि मै म्यामा सो शाना।
पेम हमारी परासो जहां ग्याम नि ध्याना॥
तीनि तज तुरीमा तजी पर्म भगिर्वाना।
सांईदास उ दासमति तहां पदु निर्वाना॥

---

[1] भसमनि > भासू।

राग तिलंगी

जो कहे यारा जो कहे गमु काई उो नाही।
महिम फकरि के माह प्रावे किन्हे दौनहे॥—रहाउ
बुनिम्रा बाशिग्राही बद रोज फकरि प्रटिसबातिसाही।
रोज नौबति दीवानु सदा दा तहा गमी नि काई॥
फकिरि के तपित पर बपुतु है कोई जौहरी जाने।
आद बुमुमु तहा कछू नही मुसुपु आपसा मनि।
तीनि लाक के प्र तिरे बडा फकरि का बांणा।
प्रानि जगति माने सकस नही ओर बुसिर्माना॥
राह मो परी है फेबरी मांगो सापु दिपाई।
मैहर्मी थे मिर्भे भए प्रजानि मै पाई॥
निर्वैरी निहकामता मूसे हाम दिबांस।
साईंदास के दयास क्मास भए सगा चिहम का बांणा॥

मजु राम राम सुणु मंन्नि तूं प्रजि को प्रजि तेरो।
प्रामे मूम भ डारि तिहारो मै प्राबित नही मेरो॥
मथुरा आइ मिसयो बसुदेव कों गहि प्रबिर करो मेरो।
तुम तो सोफ बडे प्रतिचारी महि सुतु राप्यो मेरो॥
किउ पगि उसिट दीए फुनि तांको ना कुमत मगि तेरो।
साईंदास के मद के सोइ नि देप्यो तबि बसुदे उठि टेरो॥

साइसे बनिम की भूम पसानी देवकी गोदि आइ बनि बैठे।
नदि में या हैरानी बाकी कुम बुजि मोकुसि पाको॥
कठिनि पुबा मनि मानी उठाई प्रसुर हाप बब दीठो।
एक बटा बिहानी॥
अबि हम सुतु तुम तातिं कहाबो बसुदे बसुमति रांनी।
हम तो सुति काहू के नाही तुम बिब प्रजिहुं नि बांनी॥
मद बलियो पछुताइ नैन भरि सुनि बक प्रपुनी कांनी।
आंका सी ताहू होइ मिसमा साईंदास यह प्रकथ कहांनी॥

रागु गौरी

किउ विसरो मनि किउ विसरी राम भगित मनि किउ विसरी ।
उह ठाकुर सभना का पूण पर्मानंद गुपाल हरी ॥—रहाऊ
भमिता पटिम पत निसिबासरि शाकन डोरी उमिग सरी ।
मोर सभे ही सुमरे मंदिर कौनि कुमत सगि भगत टरी ॥
सालस सन देन सनि पहुनें ग्रह भतरि कछु काबि करी ।
सोम मोह भ्रभमानु नि बिसरयो काम कला चित नारि घरी ॥
इसि बीर्ज ते बिष फल साग रवि-सुति उसवि बुमारि परो ।
भाजु काम छिन पलक महूरत गागिर फूटे जरि कजरी ॥
कर् हरि भजिमि साध की सगत धो सुक ब्यास मुप उचिरी ।
कहु साईंदास दास के दासा भौरि नही काई गत हमरी ।

पारिस दूडनि मनिकति जाये
किलिहूं नि दूरि प्रविष्ट निकटि प्रसि साध सगित त सहिजे पाये ॥
भष्ट धात जित कचमि होवे सो पारस पास भुजेरे ।
यंनू मुक का पारस गुर पहि निगम दिष्ट कोऊ हर ॥
जिहू पारम प्रहलादि कचमा करा मण भ्रम मटियों ।
साऊ पारिस भुक धस्रवार्य प्रदाय ब्रादस भेटयो ॥
यंत्र यंत्र म सकिसो सम्या हुम हुस करि गावे ।
तेऊ पारस बैकु ठ निकटि मति परि पीविति सकल प्रभाव ॥
मपि सिप भो एका मति उपिजी दूजो नाहू वरेहा ।
मूरि किरण बाहरि जिउ माईंदास मणि चमक तिबि बिदहा ॥

कहो कोई नाम बिनु मुक्त
देहा पुरातन म चल्यो गत्र इद्र घ्रुगन मूहूटा मुनिता ॥ रहाऊ
सिव राम बध कै हाय यार्ग कमिप मन्त्र नि पात ।
बेर नाम सचि मुकत भया बछ बारि नाही मगि जाति ॥
सागिर जमु पट जवाहरो बिष कबु मैं पाउा जमणा मर्णा ।
नामे की नावे जा पड तिन्हा पुछा प्रमाणा ॥

करि कोटि तीर्थ दान संयम आपहूं पाता।
देह माहू तत्व नि बिदही फिर भूल सम भ्रमता॥
अपप पंपी तजे माही असरीरि सुर्त निवान।

कहू कोई नामु बिनु तरिआ॥
करि सेहु करिणा पहुज रघु ते सर्मु फिउ करिआ॥—रहाउ
जिउ नाम गनिका ऊमरी प्रहलाद सर्न नैमा।
अटिम पतिबी दई ध्रू को नाम सग गहिआ॥
अपिसी जमन मूर्य मिरा के बारि आमें जाइ।
समिझइ निही समिझआ क्या उठे भर्म भुलाइ॥
महल मंदिरि देप क मति मैं कीठो अममानि।
एहू माया थिर कछु नाही हरि भेत सैं भगिवानि॥
गोबिंद नामु अमोल हीरा करि साध संगि निवासु।
भर्म कबिस ऐक बेनती कहियो प्रम साँईदास॥

रेजमि अभिकपि पामे सैन।
दुर्मथ देही बगित की संतनि की कामधैन॥—रहा
सति भर्न पहु बेनती इकु अवरजु कहा भु आपो।
रूप सागिर अरि बूंद एक है समो बिष्ठ करि रापो॥
जोति अपिट भरि जात माहू जमिमे ते अंत मरे।
गमिन की मिर्त मि जानिही सपत प्याल परे॥
माभि मि सको अगोचरी क्या मानो मानि रही।
साँईदास तेरे ही अंतर बस रहुआ मुसकल कर्न सही॥

साधो एहू अबिरिज मोहू भावे।
इस मंदरि महू कौमि असेरा कौने रहू बिच धावे॥
रकित बिंद ते साजि निवाजा किहू बिध रामु समाया।
कौटु भमा किरपनि मैं बसिआ गरिकै कौनु सिधामा॥
सोकु करत एहू मूआ प्राणी मूआ कौनु कहीजे।
मूए ते कहू जाइ निसहाना एहू जतिर मोहू दीजै॥

सुनी श्रवि निकटि कहनु नहीं आवै बिनु देखे क्या कहीए।
साँईदास भगु भुरि की सर्ना भ्रमु फूटे सभु लहीए॥

किउ विध रायो मोह मुरारी।
तनि अनंग मृग माता इहि बियोग मैं मारी॥—रहाऊ
बिदमा कत आव निसिबासुरि नोरि प्रबाह् चो बहुचो।
सील सतोष दान तप संयम करि सै बेद पुकारत रहिगो॥
दो नेत भीत पावक आगम पथ माहे एत्ही।
अवि मोरी काम कूटस मवि बयरी थावनि चीर्न देही॥
आदि अंत मम कीर्त की निष भये नि आवे गाया।
इह जगु पुहुप फध प्रीति का प्रसिवरि बिउ पै फाया॥
मैं तो सीस भर्म सपूरण बिच किउ सीत धुकावो।
साँईदास की सकल बदिमा अपिना करि छुटिकावो॥

तत्त्ववेता विर्ला कोई रे।
जै ते ब्रह्म पछान्या उनिमनि तेरी अमे सरीरी होइ रे॥—रहाऊ
पीउ ताव तारि आप ही तेरा तार्नहारि नि कोइ।
मौमसि तुलहा[1] सनु धीमा जे तत्तवेता होइ रे॥
चारो पढे मुपागरी नित कंचुनु देह तन छोस।
गुरि बिनु पारि नि उतरे जे तीर्थ पीवे भ कोस॥
जटा मुंड तन लेपना करि पात्री करे अहार।
गुफा सरीरे जोगमा बे बूडे असिध अपार॥
तीर्थ बेद बरित नेमु गुरि मामु बिन्हा परिधामि।
अमित पतौना जोगना तत्तवेता मनो नि मामि॥
भविन चतुर्दस तीन लोक मैं धमिकति बूडनि जांहू।
साँईदास बूंद समानी सागिर सागिरि बूंदे माहू॥

हरि मन मम सम फांसी।
पापस छडि निवारि दुर्मत चेत अविनासी॥—रहाऊ

---

१ तुलहा—छोटी नौका।

एकु थान एकु कोऊ नाहि दूजा अकथ कथियो नि जाइ।
अनु अचल मूर्त एकु कहीए सर्ब रहयो समाइ॥
करि कोटि तीर्थ दान संजम सुगिति जोग फिराइ।
घटि मुंड मेपनि सम प्रविर्णा जा दुष्ट बस गति नाहि॥
सर्ब भूत सरीरि दये तुही प्रान अधारि।
सभ होइ रहु तहा कोट तीर्थ दया धर्म् विचारि॥
धूप दीप सहा पांनि तुलसी चोए चंदन बासु।
कौन पूजा करो तेरी सब तुही निवासु॥
जहा पुहप तहा बिच बासु तुहे तेरी कौन पूजा करो।
साँईदास होइ काई छोटिमाहो तेरे नाम ही लगि तरों॥

माधो जी मनु पकर्त नही ठाह।
क्रियाहीन गात मति डोलित जसि सागिर अम माह॥—रहाऊ
अगम सपति प्रतिबिंब नाम को मृगु भूल्यो बसु पान।
ऐसे ही रघुनाथ धर्म सब कहा करै मनु हान॥
कीचि बिच बास रहे जल-दादिर[1] कौल प्रीत नही पानी।
लोग बिसोक स्वाद सम लपटठो बिसरठो सारंगपानी॥
सूपत कर्त अनेक धर्म त्रिण निकटि मामू रस तेरे।
नरहरिदास तुध अपि जीवण हरि भजु सिमुरु सवेरे॥

अवि मनि चेत ले मरि प्रान।
अमिम मर्न का संसा चूका पाए पर्म मवार्न॥—रहाऊ
अगम गम थाक कछ माही अवगति अपर अपार।
सुंन समिद मे रहति निरालम तत पद करि बिउहार॥
गर्जंत गगिम ममिन गति उपिमी सहिज माउ रिद मार्न।
पसरी जिर्मे उनिभारा हूमा भये सर्ब समानं॥

---

1 जलदादिर >जलदादुर=पानी का मेंढक। सम्पूर्ण पंक्ति का अर्थ है— जल से उत्पन्न होने वाला मेंढक कीचड़ में रहता है और वहीं कीचड़ में कमल भी है पर मेंढक की उससे प्रीति नहीं। इसी प्रकार सांसारिक प्राणी की इसी घट भीतर रहने वाले कमल स्वरूप प्रभु से प्रीति नहीं है।

सविद भेद घटि भीतरि पठा सभा सीन सिब जानं।
कहु साँईदास त्रिकटि घटि पाए बाजह घनह नीसान॥

मवि म सांभो पतित हरी।
भौरि पतत सम झूठ कहित है कहोतो वाति परी॥रहाऊ
सूरि कहा दो काम बिगारयो पतित ही नामु धराइयो।
मतिरि ध्यानि प्रेम सिब सागी सहजे ही गुनि गाइयो॥
मजामल्स वै गनिका कहीए भक्त पुरातन माही।
मापु दीए त मैल उतारे प्रगिटि भए जगि माही॥
सुमिने याहू न गिनने मावहू जो हम कर्म कमाए।
मागे हुए नि होवे कबिहूं नए नए उपिजाए॥
पापु करे सो पापी कहीए मनिकीए किह पापी।
सांईदास सर्न भजु हरि की हरि ही सर्व बिमापी॥

जानिकी नाथ सदा सुपदाई।
सीजै भोजनि श्री रघुराई॥
माति कौशल्या करी रसोई भोजनि मानेक प्रकारि।
छपनि भोग छनीसे बिजन पटिरस भरे सवार॥
गगा जल झ्द्र भरि ल्याए पर्न पयासे हएवति बीरि।
मौधपुरी मंवर मति नीको बैकुठ धाम मी सर्जू तीरि॥
पनिवाडा सनिकाविक ल्याए जे बिजै दोऊ ठाडे द्वारि।
पान सुपारी लौंगसाथ नार्व ल्याए भसे बीबारि॥
घंटा तालि मृदगि भ्रमरि बाजे संघ सबिद झुनिकार।
पनिवाडा संतनि कौं दीना बाको महमा मपर मपार॥
सनिमुप राम बांवी भुजि सीता पुहुप पत्र लीने करि धारि।
साँईदास ध्यानि रिदे पाही दर्सन दोज मैन निहारि॥

धावदि मुर्त दुह कंमी मुद्रा पर्मत वाहरि पिया।
सुन गुफा मैं मासनु बासनु कमलपति बिवर्जत पया॥
मपंड ब्रह्म द बिभूत को बट्टमा एह जमु मसमाधारी।
ताडी लागी त्रिपस पसटीए स्रुटित माह पसारी॥

मेरे रामनि मैं बैरागी योगी मरति सोग बियोगी।
जनिममरणं का सहा चूका फिर आवागवनि न होगी ॥
मनि मनिना दो तूंबा करिहौं सार्द युग युग साजी।
थिरि भई तंती टूटसि नाही तौ अनिहृदि किंगुरी बाजी ॥
सुन मनि मगनु भैआ है सिरपरि ता माया डोल नि लागी।
साईंदास तहा पुनरपि जन्मु नही तहा येलेगा बैरागी ॥

राग आसा

माया जो निधानि निध तेरे पास।
वेय निम्म बिप्ट निरतिरी गुरि पूछ के नरिदास ॥
जित निधी पसु पय गनिका मुक्त ठौरि निवासु।
सोई अभे पदि ध्रू नारिवे पीआ बेद रस सुक ब्यास ॥
सकल मूधि ब्यापता प्रभ मनिडो बटि घटि स्वास।
साईंदास को प्रभु तिति किते प्यास मध्य प्रकासि ॥

या गति कहे ये कोइ जन जान।
गुरि क्रपा ते भर्म भागे प्रगिटि होत गीयान ॥
कहा ये मै कहू नि सकौं अमिम का ब्यवहारि।
अनहू घरि परे भ्याती तहां क्रूर्म्मनिहारि ॥
सहिज के मैदान या मनु सुन धरो ध्यान।
विमल गति ते तिमर फूटा तहा पूर्ण ज्ञानि ॥
कोई जनि जानहरिरसुपीवे संपुतिउसिटमज्जनिकरे।
साईंदास निवासु ऊहा जहा बहुत नि मरे ॥

हरि भजु जनिमु सेहु सवारि।
तू भर्म भूला कहा फरे हरि चर्न हिर्दे धारि ॥
बेद स्मृति सकल उचरे बारि बारि पुकारि।
रघुनाथ बिनु कोऊनाहु समरथ जो उतारे पारि ॥

---

१ प्यास=पाताल।

भूपत ति राजे¹ जाहू छिम मै माहू थिर संसारि।
अभमानि करि सम पचे धर्नी देय रिदे धीचारि॥
औमात्र पवन मगिर सेपनु सहित करि सींगारि।
साहुरे तें जाणा सिरपरे पेउके दिन चारि²॥
प्रभु सर्न हरि भी छाड दुर्मत दुष्ट सकिस निवार।
सांईदास की इक बेनती करि सर्न सर्न पुकारि॥

पीओ रसना रसु जो मुनि जनि पीता।
जिम पीमा ठेऊ नरि सकस प्रजीता॥
एह रसु मंमृत भकसी सिष्टी। विरसे को प्रगटि भौरि मदिष्टी।
बेद पढो तट देहुरी अधारी। निर्माेठ पवि जित तेरी निर्तनिहारी॥
खेचर पापड मर्म मि माये। काथे मटि सो समाच नि लाये।
कौनु निर्त बित तेरी पौहच नि पायो।
झ्यावरि होवे सांईदास झूक सुणावो।

सही कर्न को मै किउ भरि पाई।
नेत्र निहारी बसमा सकिली धाई॥
तीर्थ बेद सकल वैरागे। बित बरि पाई वियासा तितह्रीं सू भागे।
द्रुभौ प॰ पग त्रिकुटी प्रजेती। प्यास परे रे दयामि गगन समेती॥
रवि सागरि वम सस को निसभी। बरण फस पेडी विमास पुहपी मुपभी
गुरि पुष सांईदास बूड स माये। काठे को कनिक कुरग जैसे नापे॥

१ भूपत ति राजे—यहां "ति का भाव भते—और से है।
अर्थ होगा—भूपति और राजा लोग एक क्षण में चले जाते हैं।

२ साहुरे—ससुराल पेऊके—पीहर, सिरपरे—अवश्य। तैं—तूने। सपूर्ण पंक्ति का अर्थ इस प्रकार है—तूने ससुराल अवश्य जाना है पीहर के (यह मौज मेले के) चार ही दिन हैं। इस भाव की जायसी के पद्मावत की इन पंक्तियों से तुलना कीजिए—

ए रानी! देखु विचारी। एहु नैहर रहना दिन चारी॥
जो लग अहै पिताकर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम कित यह सरवर पाली।
मानसरोदक खंड

घरि बिच वसमा तेरी हूरि नित न जानी।
एह क्या बोले साधो भम बिरानी ।।—रहाउ
मूसु संमासु घरि कित बिच हुआ।
जित बिम हूआ दिधास आइ वसूआ।
झटा बूद रकत को गारा। धनि धनि राज उसारिग हारा।
इस घरि को नित पोचे परोसे। भमे बिरानी साधो एहु क्या बोले।।
घरि बिच तजि गिया कंई कोटि मुकताहल।
आदरि पोसे सांईदास मनंत गुमाहल।

सुर्त रही सुर्त कहा गई। बाहुत बाके दयाल इहु नि मइ।।
कहा ते भावे कहा ते बाइ। ताका मार्मु कोई न मताइ।
पाछे पकरि पकरि रवि किर्णी। नेत्र निहारी बयास निज घरि फिरनी
कहिना शुना सम तुमरी गाथा। सांईदास का प्रभु वह दिस साथा।

बसु गाउ घाइ दुराउ रे बनि बानि हरि बसु गाउ।।
तुखिमित भमि मूसु बांर्ना तू भादि इस की बानु।
मस्त तुभा ना पिंजुरा बिच मामु हे परिमानु।।
तै म सुनि ए गाबिता भमि पास गावै गीति।
मसि मीजि गाविर्यों भातमा मिटि गई ज्वासा भीत।।
थे मई ज्वासा भाग तेरे बरा मर्म ते रहे।
मगाम भवर्ण भतीत को पर्वाहु बिच बहे।
सागिरि ब बूबे माह था फुनि रच सागिर पई।
सहिब के घरि मजुरे बित जाय पिसानी क्षयी।
मराम सागरि मंतरे चुनि चुनि संभूटे खाह।
मंम बिगु सागिर सुपट सांईदास मोख पीऊ भखाई।

संतो मक्त का महि स्वादु।
गज इर्ण भ्रू मराका तरी तिलपरस तर्‌यो प्रहलाद।

---

१ मक्त<भक्ति।

कपिलादि सुनि अठ भघरी सिन प्रभे पदि रम रह्यो।
आके पदिम नामि नियानि नारद निगम दिप्टी सह्यो।
बपरी जु गोतम भार्या सीलवधि वतिमी।
सज्मा निवार्ण धर्ण उविरी मोरवे पतनी।
प्रभ डठयो नधि तिलक मूसा उरिग देह् निवास।
मपिती जु जगु भोजस महे तेरी धर्ण साईवास।

तेरे सिमरण की गति मै मि मावे।
बिसु की वेल रही छाइ प्रसर विपमा नि छाइ सुमावे।
उोहो गर्म ममा अनिमे ते स्मिरी बित उरि ध्यामा।
सिपन मसाटि कोटि मूडिन परि सिमरण गोत्ता मामा॥
गुड़ती दुग्धु जिमूल रसा को मानदि मनगि उठामा।
विस्त बिसरग वासुरी उपिजो पढ कम्मा बिने न पढामा॥
कोमिन गिम्रा करि मपिनी गाया प्रममानियो रूस महूटा।
दीपक जोति सिलाट चक्रमा क्विउ बले जु तेलु मिपूठा॥
मादिज मइ मंध का पीसो क्या जित मुप मोडे।
कहु सांई दास मजु गुरि मपिने फिर मिले त कबिहूं बहोडे॥

साहा मेहु रे कोई मेहु
मानिस जनिम दुर्लभु है जिण चल्यो मविसरि एह
साहा मेहु रे कोइ महु
निसि बिर्छ पंपी माइ बसयो उठि चलयो प्रभात।
माभा त स्वास मि माइमा कछु बारि नही सनि जाति॥
जैसे धमि जुमारी सचमा बहु पेसन के चाइ।
पेस के धनु हारियो मन हार के पछनाइ॥
जैसे नीर भर धरि चली सापनि सिरो उसिटि गागिर परी।
पछुनाहुगे पानीहारि जिउ ग्रह माइ रीती परी॥
जैसे फूक भरि सीमाइ छुटिकी पविन की तेरी देह।

१ सीनाइ—तैरने का साधन। पानी की मशक के समान बकरे की खाल जो चारों मोर से बंद होती है, एक मोर से मुंह से तैराक हवा भरते हुए उसने तैरते हैं (पंजाबी शब्द)

राम की भजु सर्म नरि हरि भंति एह तनि पेह ॥

रे मनि प्रपति भप हरि माम्रु।
श्री पतित पावन विर्द जाको नाह यम सो कामु।
मृग भाह विष मरि सिह बांध्यो बचक कीडो उभारि॥
भविर सर परिणम सिगायो भयो मुक्त दुभारि।
सकटे बसि भीसिके गजि कोमु बिद्या परी॥
काम भाम जि करित निधपति किह विष तरी।
दीनि द्विज की पैब रायी कौरए कीने दाम॥
करि कृपा प्रभ भारि दीने रापु भक्त को मानु।
एक सिक्ष मै प्रनिक लीस्हा पर्म पूर्ण देव।
गुण माह भवगुण भवक है जमि करित मरि हरि सेव॥

वनि भनि बीचि बिराजतमोहम हठ तजि चमि मिसु प्यारी री।
लता प्रफुलि सुगम सभे विषि विहरति कुंजि बिहारी री॥
मोरि चंद्र का मति सोम कछु राका चंदु हिराठो री।
नगि मुक्त गुंजा छवि निर्यत जमि मगि वपु विपाठो री॥
पंकजि नैन भौंहु प्रति सपटि बीच तिसक विष दीने री।
मीनि कुरंग हनि भइ पजनि कीरि मृग छवि छीने री॥
कुडलि सोम कपोलि निकटि प्रति डोलति किह विष बीनेरी।
मुप सागिर पूर्न जमि मंतिरि कीडित मकरि सुहाए री॥
वह बिसास बनी करि पोंबी मुप मुरिसी कछु सोहे री।
छुनी समाध प्रगाव सभूं की सुरि किनिरि मुन मोहे री॥
चरि बनी मास सास की प्राभा तिह मिस भंग सुहाए री।
गंगि तरग उमिटि ऊपरि ते मीसा गरि छाए री॥
पीतांबिर पट कटे छुद्र का कछ मध रोरि सुमाए री।
ब्रजि बासी निषमो के भनि जिह देपत सुत उपिजाए री॥
पूर्न ब्रह्म मागि जिह मिस दर्सनु पाजो री।
करिणा सिधु किपाम बरा निष सप मरि हरि जसु माओरी॥

नाम समाम निहाल करे जिन जाया जगि तेऊ तरे।
ब्राह्मण योगी ते सन्यासी। जो जाने ताकी गति नासी।।
साहमु साचा प्रभु भवनाशी।
जोगीये भवे तेऊ पीरि। शेष मसाइक तेऊ मीरि।
हिर्दे रापो गहर गभीरि।
काजी मुला तेऊ सेप। लिप लिप रापे एक भलेप।
तेरे नाम बिना सभ पापड भेप।
सुनिहो हिंदू मुसलमानि। दानो राह कीए परिवानि।
साईदास का प्रभु भलप निधानि।

जाचो राम नि जाचो भौरी।
भानि जाचिती रसा बौरी।
कहु शिव शक्त कहु शिव देवा।
भौरि देव सभ सुमरो सेवा।
घाट घाटि घटि बटि कीं दाता।
स्थावर जंगम मै तू राता।
कार्ए कर्ए तुही सभ ठौरा।
केऊ स्थिर केऊ उठि दौरा।
वण भवर्ए सगलो की लाजि।
भ तिर जामी तूं महाराज।
भ्रम भौजसि गहते सभ कोइ।
तुम बिनु भौरि सिवाहति कोइ।
सिपजे पपितेउ व्यवहारी।
नाम पैज राप सेहु मुरारी।
ससि ससि मध्य ससे रवि माह।
जहा दाता तिस्नहुपस जाह।
दीनानाथ भनाथ मुरारि।
संत चर्न नरिहरि बलिहारि।

माजु सपी मै कूंज भविन मै देप्यो कुंजि विहारी री।
कवि नागिर गुण भागिर जाके पीति बसम बनिवारी री।।

माली री उम्र रहे ससि उपरि तकि मदिन राइ सरि सामे री।
चपिस होति पवन मुक राजति रहित प्रेम के फंदे री॥
माली री मृग मदि तिलक गुंज के सोस मुक्ता पचतबनाए री।
छूगी भ्रम साल की माया मति सोभा छवि छाए री॥
निर्पत नम मयन कछु उमडत मवि बिसरे ग्रह काजि री।
धारि मुता की बनी मरिएता बंमप उमय बिराजे री॥
मसीरीवमसुतिमीठबीबिहारि बदस म्दंबिबधुरमुसकाति री।
मपि सिप भग कहा से वर्णो सघु नरि हरि वसि जाति री॥

माली मोरा ममु नि आने कोइ री।
बिहुं बिमाकल भठो सरीर॥—रहाउ
बिना बैद सुंदिर सुपदाई कौन मिवारे पीर री।
मनि पौना करि प्रेम गिरासे पीड़ की कहा कहीजे री॥
मिकसिद प्रानि नही होत छुटिकारा लागो भारो रोगु री।
स्याम सुंदिर तजि गए इकेमी कै सग कीजै मोगु री॥
कुसि की लाजि त्याग हरि सर्ना माली मतु सुपु होइ री।
ना हरि मसे नि कुसि की लाजा दोनों बैठी पोइ री॥
मैनन मींद चैन नही मनि कों घटि पटी पैसी लाग री।
बौरी बौरी बनि बन को जावो परो बिहों की मागि री॥
बायम प्रेम चैन कहु कयसे चैन निबे हर भेटे री।
तीनि ताप को उपिज रहे तनि बिनु गिरिधरि को मेटे री॥
सांईदास बिल हरि भावे भावे करे सो माप री।
कबिहूं मेस बिछोरे कबिहूं रीम्के पुनु न पाप री॥

नामे की छपिरी बांमे राम।
भगित बतसल भगता बस केसव कर्ने लागा कामु॥ रहाउ
ब्रह्मादिक जाका मतु नि पावे सो नामे बस कीमा।
पंच ब्रहमक भयी लोक को धार्न सो छंनि बांधनि सीया॥
कर्न मजूरी भया मेरा गोबिंदु बैठा धनि सवारे।
पर्सो धर्न तिलोचन हरि के एहु रवनाथ हमारे॥

सुनि र नामा इह नहीं रामा झूठी बाति दिषाई।
मोरो दर्सू तिषी का देषो जिन इह रचना रचाई॥
सुनो तिलोचनि करो रसोई तीर्थ हू ते आई।
भाखे नीके विंजन बनावो आवेंगे रघुराई॥
तुब तिलोचन करी रसोई नामा लेन गयो है षीउ।
उमिटि रूप मेरा गोविंद आयो भोजनु ले गठो नीउ॥
दुरि दुरि करे त्रिलोचन बपुरा ठाकुरि मेषु बनाइग्रा।
पंड प्रह्म वनि को नायक ठाकुर देवनि दर्सन पाइग्रा॥
नामा दौरि पग्रा हूर पाछे मतु रूपा भोजनु पावो।
ठाढे रहो भगित के स्वामी मुष घीउ लेय आवो॥
नामा गोविंद भए है सनिमुषि बाति कहै विधाता।
नामा हमसो रूपस्वानि को धरिप्रातुम हमि क्रिउकरिजाता॥
जहा जहा जाई सकिली पाई सभ ही जोत विहारी।
गुह समानि मौरि सही देषौ दीनानाथ मुरारी॥
धंनि तिलोचनि धनि रे नामा जिन पूर्ण भगित कमाई।
सबु लोभ सभ मोहु चुकाया हरि संगि डोरी लाई॥
नीचि जाति भी तारी गोविंद ऊंच जात भी तारी।
नरिहरिदास जाति बलिहारी कछु गति करो हमारी॥

रे मनि सत गहु रघराइ।
जो रहै मैय भगिवत के जम डड सो नहीं जाइ॥ रहाउ
भमि मुहटा[१] सुनि बाति मेरी मै कहौं तो समझाइ।
मझारि जिउ भ्रम जोहता मतु पसकसे लेजाय॥
करि धर्न प्रम के पिजरा तू रटत रहु तिह माह।
भ्रममाति सबि मिर्तुक कहावे भ नि देवे जाहु॥
हरि नाम साधू तरे जिन जानया मनि माह।
साँईदासु नौमिध पाईए जे मिले अंतर ताह॥

---

१ मुहटा > मुकटा = वीर।

मासा—

भूला भूला पुनि रिपु भूला।
भूले गुरु गवाइओ भूला ॥—रहाउ
चित तरग होइ प्रथम भुलाना।
दुतिऐ मनि सुप निज करि माना।
तीसरे देह होइ सुप पोई।
चौथे इनि मैं आप न कोई।
उलिटे गुरु उलिट उपदेसा।
मोह हंसा दीतो उपदेसा।
नादि बिंद को संगु बताइयो।
करि अभ्यास इमि भेसा पाओ।
तांकी मांको भई गुमारी।
आपा समझे समझे मारी।
इहि बिध जीव भूल सो कहीए।
चिदाभास एह कैसे लहीए।
तुरीआ तजि तब भओ दिवाना।
बिसर्‍यो अगित ग्रान भरि ध्याना।
मगन तियागहि पाई ठौरि।
सांईदास भुंचित तहा भौरि।

एह भूलो भूलो भूलो भूलै जगि सभै।
यह देह पेह निज मानी पावे किउ प्रभै ॥—रहाउ
एह ठाकुर आप बिराजे देपो मूर्त धरि।
एह अभिप पूर्व को बूडे बसिबे द्वारि परि॥
सो हाड चाम कों मदरि प्रभु नहीं तहा बसे।
प्रभु अति पवित्र अति निमल तिह ठाकुर किउ दिसे॥
जगिमों जीवनु सबिहूं साधू जानिए।
बडे दानि को दाता प्रभ करि मानीए॥
जो पोल्हे कबिहूं औरि तू तुटेरव तुतबि।
इह सहिने ही भुरिभाइ न करिए अतुम भबि॥

इह बूंद समानी सागरि देषो सूर्ज घर।
इह सहिजे गई समाइ मि करीए जतुनु भवि¹॥
साईदास एह मथरजि किस हू न भाषीए।
मथेए² मिज रस सारि रिदे मैं रापीए॥

भूलो भूलो सकिस ससारा।
साधु छाड लगो जंजारा॥—रहाऊ
मीठी षाटि अमिम सम पोइयो।
मत काल फांसी फस रोइयो।
भमि सुति दारा भौरि सरीरा।
असि तरंग जिउ रहे नि पीरा।
भवि सुम बसो ना इनि की वाटा।
इह रसु करभा फीका पाटा।
पाते पीते असिते माटा।
चेतो भाप सीस भरि साटा।
भापा भो यह मनहू पसारा।
साईदास सो मिथ्या भास्म निजि न्यारा

राजा रामु भाए भानदि भए नगिर भजोध्या माहरी।
मगस चारि भए दसरथ के भलो बधाबे³ जांहरी॥ रहाऊ
पुहप विवानि चढे रघनंदन भमित बभीखनि संगिरी।
सघमनि साथ भजोधभा भाए जानुकी बामे भंगिरी॥
इकन्हा दूम वही करि सीन्हा जिन्हा हाथ तंबोसुरी।
इकिन्हा राजु सिंघासनि सीना इक कोमसि मीठे बोस री॥
हुर्यो भीष सत्रघन हुरप्यो हुर्वी कौसल्या माउ री।
मरि हरि दास सभे जनि हुर्ये फूस रही बनिराइरी॥

---

१ यह पंक्ति पुनरावृत्ति नहीं है। दोनों पंक्तियों में शब्द समान होने पर भी अर्थ में सूक्ष्म अंतर है।

२ मथेए—मथिए—आचमन कीजिए—रचाद लीजिये।

३ बधाबे—बधाई लिए।

जोगुमासा—

ऊधो भाए सुनित सभे मानंद भए प्रजि लोक।
पतिमा लीनी हेत सो बाचति निकस्यो जोगु॥
जोगु नेहु तुम गुमारणी विसम भई तजि भोरि।
नरि हरि हरि बिछरन विथा का आमे परि पीरि॥
पीरि पराई पावे सो बेदु बपानीए।
जो उपदेस दिखावे गुरि करि मानीए॥
मानो कहा कहो मभकरि सो उरि नाही भौरि समाव।
मगि भंगि पूर रही वह भंतिर ऊधो जानि बतावे॥
पतीमा पर्सत कंप उठ्यिोहो मनिक बिसोक्त करोहो।
जोग लीए कहु बेरस लीरहा इनि बातिन हम मरीहों॥
जतिन मनेक पसीठ करित है मनि मय एक नि भावे।
थोनखिरि प्रबीन विथा कोई पीर पराई पावे॥

सो बेदु बपानीए हम तो याइस बिरहु की
तुम सापरि साचित लोनु।
रोम रोम हरि बस रहिउो मवि जोगु मिमावे कौनु॥
हर दर्सन के बस को या घटि उपजियो प्रमु।
मरि हरि भौरि नि उरि बसे मनिसा वाचा नेमु॥
नेमु लीठो मनि मेरे तहा भौरि नि ध्याईए।
मनुमा बहु दिस फेरो ता प्रेमु नि पाईए॥
पाई प्रेम कसा जिम हर्की भूसिए माहु भुमाए।
मधुकरि छमबल सो तेरे फुनि बबरत किउ बोराए॥
मूरख जनि गोसी मे भाए ते प्रजि मैं गुप भेये ।
इक घटि लागि परी मोहन सो दे किउ भर्म भुसे॥
ये ठगि बाजी बहु तरी पल कीए उपाउ मनेरे।
बापति सोचित मन मेरे म नेमु लीठो मनि मेर॥

---

१ यहाँ मब्द पीली है। जिसरा मभिप्राय म्हारे किसी व्यक्ति को पकड़कर मागे राजा के पास ले जाये भौर यहाँ यह हम्म है।

ता मारि नि ध्याइऐए ऊमो हमरो बेनती कहीओ हरि पह जाइ।
भैसी[1] पतिमा तुम मधु पढो हम सुपने नाह सुपाइ॥—रहाउ
ग्यानी शबिद बिचारि के ध्यावित पूर्न ग्रमेप।
जिह विघ पामो प्रेम रस हम लीने सोई भेप॥
भेप ग्रबकरि डारो तौ किउ करि लीजिए।
जोग कथा निरधारों ता मनु नही भागिए॥
भीगे केस रहत साथों सगि कैसे जटा बधावो।
धुंआ किउ पहूरस ग्रविला जिह उरि मोतिन माला।
जिह ग्रगि पाट पटबिरि ओढे किउ ओढे मृग छाला॥
कुडलि कंचन तजि करि कैसे मेपुली मुद्रा भारे।
मुर्ली मदले नाद न सुनहो भेप ग्रबकिर डारो।
ता किउ करि लीजिए डारो॥
सम विओग की सुनत न ग्रावे कानि।
मधकरि सो कोई बर्स की दूरि करी पैहचानि॥
पावे प्रेमी प्रेम रसु हमरे माही ध्यानु।
स्याम निरंतर बस रहुग्रा ग्रवि पाओ पूर्न ग्यान॥
होवे परिम ग्यानि मै तांकी चेरीग्रा।
हम बिनु मोल बिकावे दासी तेरीग्रा॥
तेरा मत्र जपो निसिबासरि तेरो हित रसु पीबो।
तेरा नामु ग्रधारि हमारे छाडि कहा लगि जीबो॥
जीउ निरंतरि तय हिर लीना ध्यान धरो ग्रवि काका।
रोती पीड रही व्रजि भीतरि जात ग्यानु कहां का॥
हम तुम ग्रंतरि ग्रवि की नाही जागी प्रीति पुरानी।
साईदासु नरिहरि गुरि सिमरो होबो पम ग्यानी॥

मैं तांकी चेरी मां!
छहे कमाई की छरी पाम सहजि सुभाइ।
गुरि क्रपा त साईदास ग्रबिगन गिने न जाइ॥

---

२. भैसी (ऐसी) 'भ' के ऊपर मात्रा देना प्राचीन प्रचलित।

भापा धीने बाँध के ममि मंत्री के हाथ।
साईंदासभूलगियोनिज ब्रह्म सुप मानयो भापप्रमाथ ॥

स्याम दरि दे माथे परि
मुकट विराज रह्या गिरधरि सीस धरिया ॥—रहाऊ
मोहनि के सिर मुकुटि विराजे माल बवाहरि जड़िया।
हीरे बहुति अमोलक लागे प्रेम मगिम हो घड़िया ॥
गऊ मछ मृग पंछी मोहे मोहे सुरि नरि देवा।
महादेव की ताडी छूटकी भूल गई सभ सेवा ॥
बिंद्रावनि में रास रचाया मोहनि कौरि कन्हाई।
भुजा पकरि संग गोपी येसे सतनि का सुघराई ॥
चंद सूर्ज सकले बनि छाए भैसी जोति प्रकासी।
तीन लोक मैं भयो उजाला सोहे सिर अविनासी ॥
हरि की लील्हा बाइ नि बर्णी सुमती कहा बखाने।
भबिरदास मरिहरि नाराइण भमरा पदि को माने ॥

दो०—तिमुर गिया रवि वेष के कुमत गई गुर ज्ञान।
सुमति भई भति लोभ ते भगत गई अभमानि ॥

रामकली—
अगिम अगोचरि अनिहद बानी।
क्या कछ कहो कहन की नाही अनिभै गति हैरानी ॥—रहाऊ
पाँचो मारि करे अपुने बस सो एह ज्ञानि विचारे।
यह बिस गखिम कर्न ते बाका आप तरे मोह तारे ॥
सहजि समाधा धुनि लिव लागी मनु मै तहा चढावे।
पसरी किर्ण तिमर तजि फूटा सोहं सबद सुनावे ॥
त्रिगुण प्रतीति रहत गति उपजी तति पद माह बिस्हावे।
गंग जमन के मोधिर पैठा अमिओ निगम नि भावे ॥
ससि नहीं सूर पवन गति तहा पुर्व को बासा।
अनिम मर्न की सका नासी तहा बसयो साँईदासा ॥

कल्याण

सोहं सहज रहु मगम्य।
भ्रष्ट कर्म देह धर्म जलि गए ब्रह्म भगन ॥
वासुदेव प्रभू भाप बोले भनवह धुन गगनि।
जिह कारनि को कोट भप तप जतिन करित मगंन ॥
साँईदास के रिदे राम भाम प्रभू पाए सुभ सगन।

है कोई पंडित गुनी ज्ञानी एह पद तत् वीचारे।
जबि देह न धरी सी कहा सा रहता देह धरी कहा भाई।
इसि ससे मोह भानंदि न व्यापे देखो कोऊ समुभाई।
बकिता कौणु सुणता स्वावी कौण सुदेपणु हारा।
भचल चले भचल थिर पावे घटि घटि एही पसारा।
एह तो ब्रह्म भग्यक कबिन ते ब्रह्म कम बस हूमा।
कम भकर्म भी सागिर डुमता जामे दूमा।
एह तो कौटि कर्म को जाली कर्न हारि कोई भौरे।
सांईदास के धर्म बवेकी जहा भाशा तहा दौरे।

भगित बिनु तेरो जमुमु भकारा।
जो दीसे सम सुपने सारया भूले भर्म गवारा ॥—रहाउ
रे मनि तैं इसथिर नही रहणा क्या मनि करे पसारा।
थलिती वेर कोई सग नि साथी भाति पिता सुति दारा।
उस्तत भपिनी निंदमा भौरा की पापंड पाविन हारा।
पापड मामु नि पाये बबिरे सो छतु इनि न्यारा।
रस रारयां रतुम् तैं पोइमा वाथे कथि क भारा।
जबि बमु भाइ चोट दे पकिडे तबि लागे पछुतारा।
कीए चमित्र सकल प्रम तेरे नान्हा रंग भपारा।
साँईदास भकोव गुन गावे बसि कों पारि उतारा।

मनि रे हरि मनी भज परीए
गुरि पूरे भजर परोए।
म्रह मये कर्म कमाबे कर्म कीए हे गति पाबे।
जबि कर्म की हानि करीजे मुप लोक परलोक नि दीजे।
हा कर्म भेद निहकर्मा तहा टूटे बंधन मर्मा।
तहां शिव मिम शक्त निवासी तहा बिप्या तांकी दासी।
तहा सबिन सुर्न स मेले तहा सहज निरंतरि पेले।
तहा आपा मये आन्या जबि जाण्या तबि मनु मान्या।
जहा बंधनि मुक्त पसारा तहा बसबो साँईदासा।

रागु माव

संसित सोई भली हरि ध्यावे।
हरि सिमरन मकिली कुलि तारे मातिं पिता मनि भावे। रहाउ
कीने जतिन कोटि बिप नान्हा। गुरि किरपा दे धारी।
बडे भाग भागीव वपु के सकिल थिह निसतारी।
माजा मग करी प्रहसादे हरि बर्नी बितु लाओ।
सपत दीप नौपड प्रथवी राजु इन्द्रापुरी पाओ।
नरि नारी को पुगमु कन्योहि पूतु जने सभ कोई।
रामचंद्र दसरथ ग्रह उपिज्यो सकल रर्मा गत होई।
धनि वह नारि गर्भ जिह उतिरे सिभ साथ मुन ज्ञानी।
साँईदास प्रभु पद पहुचाइओ मनि मनि सारंगपानी॥

रागु मलिमांक

छोडि नि जाई प्रीतमा मैनू छोडि नि जाई।
चेतु मैनू जाइ दुरेंगा कियो मोड सहा॥　　—रहाउ
मैं रकत-बिंदु की तू पौना सर्व निरंतिर तेरी मा।
मैं जाया तू भारि सिरोमणु लागो सगि रहां।
मैं बजिर तू सदा निबेमुकु मैं तुमज भूपा बिछोड पेखुरु।
मैं बरती तू उडरि आयो ताकी सर्न रहा।
मैं माटी तू पम पदार्थ मैं किरतिम तू सदा सबाद।
तू भवर मैं किटा पुठा बिटि लागी संग रहा।

साधनयो फरि विश्या कीती सुरिंथी पसिक नि लगसु प्रीति।
छिनि मैं मात बटाम्रा देही मैं कत बिसारी सां ताहू।
प्रीतिम वाझु डराविए होई माहूरि कवरण दे सम होई।
रहणे दी वाति नि प्रावे कोई यरे पिम्रारे प्रीतम वाम्झे
माही ठेस मिला।
कूचि भुमगम सू म तेहा तां जाणा चे वाह सदेहा।
संति कतो सोड विछोडी सांईदास हुए क्या होए कहा।

श्री राम राम गह रहमा प्रभु किथे जुगहुणी रहमा।
हन्याजाइ नि कीता होवे माइ नि तांका कछु कहमा। —रहाउ
सूपम वेपां ता एकारचिक प्रति वीर्ष परे पराही।
मेत्र निहारि वेपु प्रभु अपुना कौनि ठौरि जित नाही।
अटल अनेक अजूनी असमू असरीरि अर्ण अवेहा।
तू चौपदि पगि त्रिकुटी बेठी कौन कहे किस जेहा।
पिंड पठ ब्रह्मड भए को धारी सकल समाने।
रचि रम धातक तिन कि उपिजे ओ एहु रचक माने।
अमत अमत परिसीति आतमे अतर ही पतीमाने।
अचिन असुख तीन लोक मैं सांईदास अजिर माहू समाने।

वार्यो मियो तेरे वार्ये सियों स्याम चतरभुज वार्यो सियो।
संकरि सिपर सुमेरि सुमुक्त कैसे चवि पसौना दियों।।रहाऊ
धाकरि कठ मै इन निम तीजा नेभु वहन का देह आइ जित जारो।
सस पर कुड मयन भरि राप्या गग मुकटि स धारी।
गाकल पेस वने है गेंदू जतन सकल करों बलिहारी।।
चत्र चत्र की नेत्री रव सम तू कछु अविरे मांगु मुरारी।
रिपवकारि दूधु दमि रसवल बैकुठ क लेहो बासी।।
मथवनि आह सुगध सिला जहा गरी सांकुरी सग लेहु सम दासी।
इह अथरुज सर्गे मुह मागो घाद प्रति सभ पारे।
रहु रहु कान्हा जाहु बलिहारी मतु कमु सुने बटुमारे।।

१ सत्व रजस्तम तीन गुणों का वर्णन

सत बेद सभ मेरे मर्मी मै धु कीया सो गांवो।
ही परे पुरातन पीतनि से ता संत मुर्त ते पाबो॥
वसुदेव देवकी कार्ण पुत्रे किवारि उपाडे।
जनि निष मै सका परि-व्यासी दसे सीस कटि डारे॥
सपासर मधुकैट मनोरिषि हर्नाकस बस खसौमा।
सहामर्जुन कंस म्रादि दे साँईदास मांगे चंद पलौना॥

किउ माही रामु समाल्हृया।
जीविण दा भरिवासा कहा कथ मांडे जेही देहा।
जिउ धणि वसदे बुग बुग वेहा इक सपसक नाल उविन वणिये।
एह तनि एसे हास दा बदा बदा करिदा मेरी मेरी॥
एह तनु होगु भसमदी डेरी जीविण दी ते भ्रास घनेरी।
मर्ने दी हरि बिवा नाही साह बिस्वास नि हारिदा॥
गौठीईबटि करे चतुराईभ्रा डिगो पये वीम्रा बुरिम्राईम्रा।
चिति भि धरे नैणा माईम्रा म्रापे कर्ते दाधा होइम्रा॥
बादस बटा उठासवा मै ज कीम्रा किमे होइ नि कीम्रा।
मैं सलाही सिघु हृथम्रा मेरे मुह्र धिर लक रहीम्रा।
मेरी ममरू गगदद सभे देयो तनि पर्जालिदा।
पापी पार्पो मूल नि सगे ता आगा जमु लेया मगे।
रसिम्रा पापी दी पिरौसु टगे उमबि गैम्रा।
साईंदास बिठो साहबि तारिदा॥

रागु माव

सभु मुईम्रा दाबे माही सभ मुईम्रा दाबे माही।
सभ कोई सेर सबाइवा कोई चटि नि पाठ भपाइया।
दुजा माफ जाइम्रा कोई मफ बराबरि नाही।
पडति ग्रानी पीर बे सभ इक ते पए बहीरबे।
बैठे डेरी मस्त के सभ म्रायो म्रापणी रांही।
घटि दर्सन बैरागबे गृह भाभा चमे त्याग।

वे मती देखु वि ग्रंन्थसों मुसिया पेम्रो मनि पाही।
सांईदास विमालदे हरि सिमरे सोई निहालवे।
जिन्हा दाबा छडिमा म सोई पुप ससोह।

सीख्हा दीनदास दी।
गाउ सीख्हा दीन दिमास दी ॥—रहाऊ
इकिनार्यों भक्त कराइदा इक्ना नूं भम भुलाइदा।
जित लगे तिते तित लाइदा देपु वाति सांई दे प्यास दी।
प्रभु मरिमा नूं सपिनीरिवा सपिनीरयानू फेरि बढीरिदा।
कीपु जाणे मतु गमीरि दा कछु सुथ मउ थप्पास दी[1]।
परि नारी दे वांण नि वेख्या करि उस्तति किने नि पेख्या।
मैकु ठे सिया सेवमा इकु साति विराने मास दी।
उचे महिल उमारि के सम बठे मर्नु विसारि के।
थमु माउसु मण वगार के ठहि भविमा करिक काल दी।
मेदे मनि दा नही मीसरे रोम रोम कन्हया नीसरे।
कीपु जांणे बिनु बगिदीस रे, मटि सांईदास दे हास दी।

प्रथमे बढत किवाड़ उघाडे सब ब्रज माह वमुन्धे सिघारे।
सेस सहस्र फण अंग पसारे, अंमृत परि वर्सावणा।
परि मंद के हर।—रहाऊ
कालिद्री तवि मोहमि प्राए। भनिक तरग कालिन्दी माए॥
चर्न पर्स मगु दीउो कालिद्री। तवि गोकल-मग पावणा॥पर०
कंन्या से बसुदेव निषाए। पगि गृह परि किवार चढाए॥
स्तनि कत देवकी उरिमाए। तवि दरिवानि अगावणाए॥
दरिवाना बंगु जगाइमा। पंडा से बंदमास प्राइमा॥
ऊंचे टर बहर्यो जवि भूपति। क्या बालु भमामेरो भाविणा॥पर०
सुणु राजा तूं मनि बडि भागी। देवकी दौरि चर्न सम लागी॥
दीजै दानु मारो रे माई। नही बालुडु इह भाविमा॥पर०
भुजा पकर प्रपुने बस कीनी। देवकी रदनु करे प्रधोनी॥

[1] थप्पासदी—सुपासदी—उपास=पत्नी।

छुटक गई आइ पडी भकाशे। क्या क्या बनिम सुणाविणा॥ वर०
मर्कट कतिस-सैन ते भाए। सेतबंध गड सब भुटाए॥
काटे दस सिरि सीभा सिभाए। भवि कंस का कालु करावणा॥ वर०
तवि राजा को सागो म्होरा। छुटिक गिर्यो हाथनि सो मोरा॥
भैसा रोगु भवो भूपति कों। भौपद कछु नि मिलाविणा॥ वर०
बासदेवा प्रीति निहारी। नव नवनि भव भए मुरारी॥
भूम को भारि उतारण भाए। एइ विभ निगम सुणाविणा॥ वर०
रिप देब मो दसन को भाए। संत भगित मिल मगल माए॥
मौ निम भाइ परी गोकल में। सीत्हा बाल पिलाविणा॥ वर०
बाजे ताल बजन्त बधाई। मगिरी यूथ जोटि मिल भाई॥
दूध दही देसे व्रजि बासी। मंदे पुगु मनाविणा॥ बरि०
मछ कछ बैराह है सोई। नारिसिंभ बावन है वोही॥
पर्सराम भरु राम कृष्ण भी। सिमरे सो भक्त करावणा॥ बरि०
साँईदास भक्तनि देह धारी। भमरि दास को पैन सवारी॥
ताको पूतु गोबिद जसु गावें। नामसौदा न करावणा॥ वरनंद केहुर

ऊर्म बाणो रे मना कीर्त किउ नि करों।
भाषो निम मुप बंक नाउ बिपु भाप भहारी मेंह॥
रास सिभार्लो बरा मर्म हीरा कऊडी के बदले भाइ।
नाम बाझों प्रभ साँईदास किर्त न मेटतो जाइ॥
बटो कटि नि सकिए भीग सिउो हा पाइ।
पुछो कटण हरामा मे बंरि छोह रहे॥
सिज बरि माभु नि तू रही साँईदास कहो।

रे मनि भनिकति दूर करि थिर जीवन थितु चेतु॥
हीरा हिरयो गुजाहली देपमु कीतो हेत॥
हर रसिना रसु पीउ तूं जिस पीतै हांन न होइ।
प्रभ कहर्तों साँईदास के दुर्मत का बीजु नि बोउ॥
म थिर भौगनि रच गए बिउ भुमि काप्टति पाइ।
हीरा बदिसे हानिर्लो रतक मोस बिकाइ॥

साँईदास पुकारमा बांध्या जमु पुरि जाइ।
बांध्या बिन गुप्तमि सो पतो दुष्टे नूं एह पुछु॥
उधा पत्र बांकी वधु पई भागित माही तुछु।
दफतरों भूठा होइआ पत पति होई हान॥
प्रम कढ़िओं साँईदास कों गुरि का कहिआ मानि।
नाम पखाना मुनि जना लप जाने सुम उरिमआई॥
इंद्र इंद्रासनि धू कुवेर मुकती यह ते भ्रधक सदेहे।
साँईदास हिर्दे ते किंउ वीसरे जो मुक्ती वे भन मनेहे॥

किउ जल सर्दस सम रहयो इउ तसकरि देही माह।
साँईदास यह करि मिलमा मेटीए इहि साध सग ठहराह॥
जो ठहराने निगमदिष्टि तिन को पूरनि दाति।
साँईदास वाजन ही ते रह गए जिनि निज घरि पाई मजति॥
भ्रजती पाईआने तित घरि जहा सासनि की ठौरि।
ऊति मनके माती परे प्रष्ट सम्हा की मौरि॥
मगिन पिआसे गाह रहे सांची गहन नहीं।
साँईदास दोनो रहे पुकारिते कहन न आयों कहीं॥
इंद्री का मौर छुटि गमा सदा ध्यानि की मिरत।
साँईदास का प्रमु रस रहया सदा नाम की किरत॥
भ्रम सागिर मै मनु गलतांना असमी पाति मकोरे।
माया मगि मोह मदमाता इह विष भजहू नि छोरे॥
देह बीचार दास प्रभ अपुने जिह मिल मनु ठहरावे।
साँईदास साध की सगति गुरि मिम ठौर वतावे॥
एको एक नाही कोऊ दूजा घटि घटि मह मिवासु।
जो ममि वांछति हरि भजे साँईदास तिठ ही पूर्न आस॥

धार्ती सीमे तीनि दिमास।
भाउ भगित सतन सुपदाइक बकिस मैन नवमास॥
कंचन मत बर्स ऊपरि मुक्ता पचाति बनाइ।
जोत माकास चद रवि आगे इंद्रादिक मुरि सिमाए॥

चोया चंदनि अगिर केवरा पुहप गंध धुप कारी।
चाविर चविर छत्रि सिघासन अद्भुत मह तिहारी॥
वाजित सप मृदग झासरी डफि रबाव भरि ताल।
घंटिन की भनिघोर परति है बोलति बचनि रिसाल॥
ऊधो भरि प्रह्लादि विभीखनि सुक नाव मुन ब्यास।
ब्रह्मादिक सनिकादिक ठाडे गुनि गावै निज दास॥
जोग भोग सभ रस को बांधे महमा कही नि जाइ।
कहित सुनित मुक्ता सो नरिहरि हरि जो भए सहाइ॥

जनिम जनिम के पाप हिरे।
जिस हुर नामु वसति हीरे मै ताके दुष विन भग्न जरे॥
मंतिर सारि सुधा निम निर्मल ते ओजलि से पप तारे।
नाम की नाउ पवित पति सगति इह बिध साधू पार तरे।
तासो जमि से भेटा मिले कछु मजिन प्रताप ते ऐसा करे।
साईदास मुकद[1] भगित मिल आवागौन ते छूट परे।

रामकली

ऐसो कोऊ ब्रह्म ज्ञानी सुने ज्ञान बानी।
ब्रह्म की धुन पहि वासना सभ भजे जुगित सभ रूप इउ आप जानी।
मुकिर प्रतिबिंब ते माह जसि पेपीए कीजए कौणु बिम ताहु सेवा।
भापिनी भासि परि तिसुकु जो बीजए, पूजिए तत निज देव देवा।
अगम की बात परि नियम क्या करि सके संत तिमागे सोई सिध पावे।
मादि ते भति मै मध्य मै पेपमी सतिगुर एह निरनो वातावे।
मटि पटी बाति का मटि कपट पोम्ह के निघ के भेद साईदास हारिगा।
झमक मधती परी माति पाई परी जिउ का तिउ पूर्ण निहारिगो।

कल्याण

तेरी गति जानते कछु नाही बीचारि देघु मनि माही।
जे को कहे मै जानित हों तिसै पूछ होइ बासा।

---

[1] साई दास के गुर मुकन्दरास थे इस पद से स्पष्ट है।

एह धरिती केतक मए माटी केतक मीच भकासा।
अमि परि धर्म धर्म धर्म[1] परिवर्पा एह भलु कहा ते भावे।
मापो मपिनी बूद परित है मेरा सतिगुर एही बतावे।
एका रकत बूद फुन एक सुति दुहुता किन साजी।
करिम कर्तुत कीए सभ उनि के बीचारो एहवाजी।
क्या म लियो तू मलिप कहावे लिप मै परित भुलाना।
जैसी सूभ फुनि तैसी जो काहू मन माना।
ठोहु भविगति नाथ भगोचरि कहीए कहवो साँईदासा।
जवि लगि हस सुमाद सम तवि लग पाछे भउो विनासा।

रामकली

भनिल भमील भतीति बानी।
तहा मनु रचना भावागौनी भरम चूका सारि गुरवचना।
कोई जनु जोग का मरंमु साजे सदा पोजे भनहा वाजे।
भगम सपी सुनि लावे पोजता भगति पाव।
एडा पिगुला सुपमननाडी जोग की इक विध सारी।
सविद गुर्के[2] थ्योत्र ताडे पूरिबो पश्चम भाडे।
नादि विंद कला भाई सत वस तिमु काटि भाई।
भम्हा भरि जब भैठो वासा दा भकथ कथयो साँईदासा।

रामकली

विरिधा नवारणा भजु सरिणा।
तेरी कौण चुकावत बितमसि मन ते क्या करना।
जवि लग बूंद परी गभ भतर सहज देहा ठरि धाई।
मपि सिप मेत्र बिधाता कीने सपु न मेटगो भाई।
विहु लिपभा दुपु सुप तपु सजम सील सुमति दुटाई।
चंद सूर्ज ब्रहमड टलगो सेपु न मेटगा जाई।

---

१ एक धर्म यस्य लिपिकार का दोष।

२ गुर्के—गुरु के।

भ्रमत भ्रमत चतुराम्स मनुखा आदि अंतगूं आए मैया
इति मदरि जो रास सिखाओ सिठ बरितारे वर्त नैया।
सुमरग मम पिम्मास[1] सरीरे कर्म भूम एहु देहा।
जो कछु बीजे सोई कछ उपिजे साईंदास मत एहा।

श्री गगा जी तेरे दर्सन सो बलिहारी।
धाम धरीरो उपसी गंगा मुकटि बसी महादेवे।
भ्रू धां आंकी मैहम म जानी सुरि मरि आंखी सेवे।
सबत गगा कुसम कहीए तीनि विशेष ग्रसथानं।
दिष्ट परिआ सभ पाप उतारे पीबति मैहम नि जान।
जंगिम जोय बती संन्यासी पोसत को अविगाहे।
हरि कुमारि हरि मूर्त पर्सी कोटि अनिम क आहे।
एह पराग मनिसा करौं वाता बेणी संगम तीरे।
न्िष्ट परी सभ पाप उतारे निर्मल कुष सरीरे।
सागर संग रसी भागीर्थ कीमे ध्रनिक तारगा।
साईंदास मनि मनिनि होवे ता जावु वैकुंठ निसगा।

तू दाता मगु मंगता देह दिवाए नित्त।
सप करोड़ी पाइआ जे तू भावे चित्त।
चित्तो भवी नि बिसरे केही होवे सुप।
साईंदास नामु धराअमा सभ मिट जांवे दुख्य।

नारि हरि तेरा भाणु।
सभना जीआ साम्झा तेऊ धुले जानु।
जिन्हा पकिडआ साथ सगु माथ संग भीति नि को।
जिन को पूर्ब भाग नरिहरि तेऊ उथिरे जिन्हा सभी जागि॥
मो जागे जिन्हा चेतमा हरि का नामु सवेरि।
कंद जीता न हारिआ नरि हरि एहा बेर।
भाए गुसाईं बेनती प्रभ तेरे अगे।

---

१ पिम्मास—पाताल।
२ इस पद की पुनरावृत्ति हुई है, देखिए पृ ६१६।

हीरीयो की मंमगणा वासू तेरी पगे।
नासु पमाना दानु देह धरिनी चितु लगे।
मावा गौविण निवाहु दे मौज मेरा मगे।
नरि हरि माथे सत धूडि धरिणी चितु लगे।

मै तनि औगन एतने केते रोम सरीरि।
एई सम सिर अगिले गगा वासू तीरि।
रवि किर्णी ते अधिक हे उडिगण जिवे अकास।
औगण गुण पह आपणे कहि दीने साईदास।
तू बगिआईमां नित करे बुरिआइआं मै पास।
मै सपूर्ण बुर्मती मै पह एहा रास।
पलिक प्रीति करि ऊधरा के जोहु रत्न सहा।
जे गुरि मेटे प्रम साईदास बिरिया सकल कहा।
भरिम मि भाई भगित बिनु चूके नाही मीढि।
जोहु नि टरवे साईदास जो कछु कीति आकीति।

धनि कीए कही नि माग ही कीए न धनिकहि जाहू।
कीति प्रकीत दोऊ मिटे हरि सर्नी जब पाहू।
काया सागुर रे मना तू विष वणुजु करे।
भरिखो भरे गुबाहला हयो हीरा देहू।
सुति दारा धनि माल ते पसे पिआ बिकारि।
साईदास गिया प्राणी सागर यो सपणा ले कौडी के भारि।

सागुर एह ससारु है निधी संपूर्ण एह।
इसी ते मू ले गयो सिपर सुमेर सहुदेव।
प्रहलादि पहुता इसी ते सका के प्रसधाम।
साईदास महमा तेरे नाम की इस वे परे निधानु।
गुरि जहाज हम पाहुने जिन मिल पार चडे।
साईदास जिन गुरु जहाजु नही आमधा सो रोमे धाटि पडे।
घाटि मगाती धर्मराइ गुरि मुपु लए पछान।
साईदास जिन्हा छाप नही मगिदीस की सापति रहे निधानु।

कस रावण मरि ससेपास इसि तैं तनि बडिभाग।
बपरी गमका पूतमा कवि बाहै बैराग।
संता धरि हरि नाम की प्रभस्यु नाथ भए।
सांईदास देपो प्रभस्यु धाम का बैकुठ दैठ गए।
विनु देहा ध्यावित रहे विन पुन धरे ध्यान।
सांईदास कित पाईए ठौरि बिना निशानु।
जिन के हाथ निशानु है तिन अटिकावे कौनु।
सांईदास भरि पगाने नाम के मिट गए आवागौनु।

जे कुलि वडी ति राम बपु, नाम वडे कछु देह।
कुप वडी उपिकारु करि, सांईदास जीविण का फमुएह।
सुपा नू दुखेदमा सूएे दुप पाए।
जे सुप सहे सांईदास तिना ले दुप गए।

जिउ दीपक दीपक मिले जोते जोत दई।
जो पारस सांईदास को सो नरि हरि भेट भई॥
रखु कीना प्रति धर्म का ता परि भए अविचारि।
श्री नरि हरि दया भई देपन को हरि दुआर॥
हरि दुआरि नरि हरि चले सगत कीयो प्रणाम।
दीठो तिलक जसि पूत को कांचीदास जिह नाम॥
जहा सांईदास नरिहर तहा उन्हा गोविंद भजिन परिकास।
तिह दरसन कों पर्सन चले मुनिवरि कांचीदास॥
कुपि विशिष्ट सुपि मिपाति शयान गोरप भैद चक।
इंद्र वरिण कुमेर दान दान नही संवति॥
सकति सिपो मैं वडि शिष्य मुनी जथार्थ।
कलि कलेश मगमाम मानि कीनी परिमार्थ॥
दस औतार तैही कीउ संकट काट्यों गजिहरण।
प्रभ मौरम रिदे ध्यामाईए, गुरि कांचीदास पर्दुपहरण॥
गुरि तरिवरि गोबिंद जस सेवक सापा होइ।
पमु सागा जामी रहे ता पक पूर्ण होइ॥

फगु टूटा जस मैं पडा मिटी निवां की प्यास।
साँईदास गुरि छाड गोविंद भजे निश्चे नर्क निवास॥
गुरि गोबिन्द दोनो पडे काके लागो पाइ।
बलिहारी गुरि आपने जिन गोविंद दीआ बताइ॥
गुरि मूर्त विध चद्रमा सेवक नैन चकोर।
साँईदास निर्मल भए, गुरि मूर्त की ओरि॥
सति गुरि की मुजि दोइ है ठाकुरि की भुजि धारि।
ओहु धारो ठाडो रहे दोले उतिरे पारि॥
साध मिटावे भाविनी करे बु हरि की सेव।
गुरि कृपा ते प्रभ साँईदास मिले निरजन देव॥
नरि हरि नामु नि वीसरे सदा साध के सगि।
रसना रसीए राम रस ग्रौरि नि लागे रग॥
आनंद मंगल सोहला नित भगतिम के द्वारि।
नरि हरि से धनि धनि है निस दिन जपे मुरारि॥
अनिस पवे जो धर्न मै अकि अवि जो पाइ।
साँईदास पद्रा कूबी बनि सहे ता गुरि विनु मुकती जाइ॥
जो फगु फूटे अक का रोम नि पावे टेरि।
साँईदास इउ निगुरे की गति सही जो करितूती करे अनेक॥
भूपा रोवे मनि के भाइ नागा कपिडे को विरलाइ।
गिरिधनि रोव धनि बति प्राणी धनिवति रोव आविरा जाणी॥
दुखिआ भी रोव सुखमा भी रोवे अवि सग मनि का मर्म नि खोवे।
मूठा बदा जगति समाधा हरि हुर्वे भजु साँईदासा॥
हरि मिसमा ते गुरि मिसमा गुरि हरि अतर नाहु।
साँईदास गुरहरि अतर जानदे ते मरि नरिक जाहु॥
करी उपारिमों करीते करी करी पुकार।
करिणामै करिणा करी कछु करित न लागी बारि॥
साँईदास पुकारिआ सोको सम सुनेहु।
मिठा बोलो मिठ खसो हथो भी कछु देहु॥
बसन गुरि गोबिंद के मन मै सदा हुलास।
प्यासा पावे नीरि पहु नीरि नि आवे पास॥

सेवक के मनि गुरि वसे गुरि सेवक के पास।
चात्रक कार्ण सांईदास टूटे बूंद अकास॥

जिनको उपिजी सति पारितीति।
मोन रहे भावे गीति॥
भावे कुंटा बिचारो चारि, भावे बैठे आसुन मारि।
भावे कुरो भावे गावो भावे सुंन सबिद मै राचो॥
भावे लंमे केस वधाइ, भावे बैठे मूड मुंडाइ।
भावे नागा फरे मसम भावे कपिड अंगि॥
भावे उदिर भरे भरि पाइ, भावे सूषम भोजनि पाइ।
सांईदास सती की निमाई, उनि सगार मगु भर्ते माही॥

रागु धनासरी

पहिले पहरे रैण दे
मनि मेरेआ भाई, सुतिआ गई विहाइ।
परिम पदार्थ पोजि लै भाई, वोइ साध संगत विषु आइ॥
साध संगत विषु कबिहूं न लागे करिम धरिम सम हारे।
आगे औजल विषडा कहीए, किति बड लघे पारे॥
परिम विपम बिप्या रस लपटि काटे रतन पराए।
गुरिप्रसाद कहे सांईदास सुत्या गई विहाइ॥

दुजे पहरे रैण द
मनि मेरिआ भाई, तै ज्ञान पदार्थ पोइया।
सिरि तेर भजिसी जमु गरिजे तू किउ निहचल सोइया॥
निहचलि सोइआ अनिम विगोइआ तसकरि पच फरते।
पै तरिनी राता जोबिन माता औगण किसी नि सुझते॥
देहुरी को तसकरि मूटण लागे किते जु सौणी सोइया।
गुरि परसादि कहे सांईदासा तै ज्ञान पदार्थ पोइआ॥

तिजे पहरे रण दे
मनि मेरआ भाई तेरी पञा देहा साथी।
तै विप सो राखे, जिन्हा हलाहल पाथी॥
पञा मिल हलाहल पाथी भंने हरि पराए।
धरिम दिष्ट बिप सागर भरिआ तिस ते कौणु सधाए॥
म धरि पहरे दुन्दु नु बैठा थिर न रहे भविराधी।
गुरि परिसादि कहे साईदास पञा देहा साथी॥

चाए पहर बम्हाइके आही चौथे रहु उथिआरा।
रामनाम की सरिनी आवे काट विप्य विकारा॥
विप्या विकारि जे कातिया साड का गुणु देहरी नाही।
काग दिआ तै इवसुलु बम्हाईआ बाबआ जमपुर जाही॥
भाउ भगित भेइ भक्त होइयो सुण सुण हरि का दुआरा।
गुरि परिसाद कहे साईदासा चौथे रहु उथिआरा॥

मनि गोइ सीआ भाई
गोइ सका बिन भार बोआरि बिना तै कोठे रग पसार।
रंग पसारि कोए बहु तेरे गोइन छाइण छाए॥
भमुणु तैनू चित्त नि आवे रहणु भी नाह भराए।
इस परिती त कई गोइल सये सहु सहु मत सिधाए॥
सांईदास कहे मनि गोइ सीआ मेर भआ।
रोइलडा बिन भार मनि पभाणुआ मरे भैआ बोइ॥
रात दी रहु राते
रैण रिवे रिव विहाणोआ उठि चल्यो परिभाते॥
उठि चलिया परिभात भाई, जबि लगि सूजु चड़आ।
रहु रहै नि कोई रहणु नि होर्ड करिम पड़ता पइआ॥
नाम निगानु नहा थिर ऊरि, मति गुरि दास हीराते।
सांईदास कहे मनि पधाणुआ मर भैआ रात दा रहु राते॥

अनु पधो राम मेरा भाई सरिकरि भार निबाने।
तित हो बेरे उंबणा हड्डु पिआ मरिमाने।

हुकमु पिआ गिरआस सिहारे सो तै पल्ले बधा।
कहु रहे नि कोई रहणु नि होई कर्म कमाइआ सभा।
करे तोले पाइ अमोले गिणगिण रतीआ मासे।
साईंदास कहे मनि मेरे मैदमा तरिवरि आइ निवासे।

करितूति कुटंवि दी मेन्मिआ माई बेडीवा पुराणा।
संजोगी मेला सजोगी उठि जाणा।
संजोगी मेला तिउ ही मेला कोइ नि किसे साथे।
संगि बापु नि माई भैण नि भाई बेटा मारि सिराथे।
बिनु नाम नि छूटे मांडा फूटे वडिआ पाइ सत्राणा।
साईंदास कहे करितूति कुटंवि दी माई, बेडी या पुराणा।

रपु साप डुबदी माई बंन्ना बेह करार।
मरि सरिवरि उछले किउ तरीए संसारा।
मरि सरिवरि करि उछल किउ तरीए संसारा।
सागरु तरिसी मगु डुबि मरिसी बिउ सरि हाथ नि बेडा।
कूक कहाइ पैईआ दिस भैडे पतणु नाही मेडा।
करि सति गुरि बेडा भउ बहु नेडा तारे तारन हारा।
साईंदास कहे रपु साप डुबदी भाई बंन्ना वेह करारा।

तनु पेत्री किरिसाए दी माई।
लोडिनि दूतउ जाडी किउ रहे सुहसी बाभु सबाणी बाडी।
बाडी रापा कोइ नि बैठा चुणि चम मिरगा पाथी।
बेठे बिच नि रही थाम नि मुप काहे नु तै राखी।
पाप बिसारि कीए बहु तेरे, तै मपिणी बात बिमाडी।
साईंदासु कहे तनु पेत्री किरिसाए दी माई कोड नि दूत उजाडी॥

किउ पेतु उजाडयों मापिना भाई, साहुबु मंगी हासा।
ममी हासा पवीतरि ग्रासा मदे कम्म कमाए।
बेठे बिच नि रहुडो मूर्ख दरिगा कीपु छुडाए।
दरिया कोइ नि बामुनु पीछे बध्या मीपु छुडाए।

/

चित्रगुपत दुइ दफतरि बैठे करिद कम समासा।
साहबु मगी हाला।

औगण करिना छूटे भाई गुण करि छूटे वीरा।
राम रसाइण चेत स भाई गमिदे मखनि जबीरा।
गमि दे मखनि जबीरा भाई तेरे, ज मुण गाहकु होवे।
गुरि के बचिन सही करि छूटे मनि मुप वठा रोव।
सरी दात तुधे नू सुझे, मेरे साहब गहर गमीरा।
साँईदास कहे औगण करिमा छुटे भाई गुण करि छुटे वीरा।

गिमा जोबनु नी सोहणा भाई चादर भई पुराणी।
चुका रंगु कसुंमेदा मोरे भ मा कसी सुटी कुमिलाणी।
कसी सुटी कुमिलाणी भाई, रगु कुसुमेन्दा चुका।
पाणी बाम्हे परा वुहेला सरिवरि दा माउ सुका।
रजि वीरिब से पुरिपु सिपाइमा पाछे देह निमाणी।
साँईदास कहे गिया जोबनु नौउ सोहणा भाई चादरि भई पुराणी।

सद सुका कौलु कुम्हणा
मनि मेरिमा भाई औप पुनी कुमलासी।
औप पुंनी कुमलासी भाई बिन हुस मि दे मुसारी।
मह वेला उठि जासी भाई बिन हसुनु मुसारी।
उठि गिमा पंपी मीटी अपी तजो मु ठौरि पिआरी।
काम जास जम आइ पहोता चुगिवा फाही फासी।
साँईदास कहे सरि सुका कौलु कुम्हाणा औप पुंन कुमिलासी।

जापासा छकि आइमा भाई कुसएह पासी सारी।
कुलि पासी सारी भाई जापासा छकि कुस आइमा।
पिया अपुठा साहबु रुठा कची पेके गवामा।
हारी पिंड पई गल फासी देपहु मनि बीचारी।
साँईदास कहे जापासा छक आइमा भाई कुस पासी सारी।

गढी मिठोठो हुम पिग्रा
मनि मेरिग्रा भाई, कलि मल माहा भरिग्रा ।
पुना साहा बज बसाइग्रा ग्रनिवरि देही बरिग्रा ।
पुंनु पापु दुइ दान मिल ग्रमु स चलग्रा परनाई ।
साईंदास कहै ऊपर गुमानि मेमिहो जाभरि पुनी तेरी भाई ।
चार पहिरे त बारा मरपहिग्राँ बाबेदिया ।

भगित माल लिपते

सरिन हरि जो ग्रावै सो ग्रावै ।
जाति पात कुल को नहो ग्रादरि, भजनि करे सोई भावै ।
ताणी उग्गति ग्रोघ सम बीती जुलहा नामु कबीरा ।
भजिन प्रताप नीचि मठो ऊचा मिलि रह्यो राम कबीरा ।
छीपाग्रहु को वूद परति है बिनु इ ध्यानि रहीए ।
नामे के करि दूधु पीठो है बिभि निपट कथा कहीए ।
ढोरि मरिल दुरिगंध उठिल है मुचि डापति मेति खासा ।
ताहि लुथा से पतिग्रा मठि, भगिल भयो रविदासा ।
काटिन माएसा पछारिल भजिमा सभिना नामु कसाई ।
चढि बिवाण बैकठ सिधारे, ग्रति उत्यमु गति पाई ।
कुलि कुचील ले चूठे बस्त्र पहरति सैणा नाई ।
ताको ठौरि राजा पहु जांके दरिपण कृष्ण दिखाई ।
ग्रजामत्य पतिता को नाइक कठ्या होनि बिकारी ।
सुति के हेत बपडो नाराइण लीनीमुक्त मुरारी ।
बस कुबस नि साभि मामनी गनिका कुले निबासा ।
पछो हेत मनो हरि सिमरिउँ भठौं मुक्त मैं बासा ।
चूठे बेरि पाए भीलनि के हिति चित प्रीत लगाई ।
कौण तपस्या करी बावरी भगितनि दई मिलाइ ।
धना जटु बगावे गौग्रा जिसि चितु दे गोबिंद पाइग्रा ।
बेदपुराण पढिओ नही स्मृति भगित माल मैं गाइग्रा ।
नाथकूर के हरि गुण गावे माछा भगितन रोसा ।
दामी का सुतु जगि मैं कहाए, गो तौ काम्हा गोसा ।

भो भो सरिए भाए त तार मसरनि सनें मुरारि।
साँईदास के भ्रम पूए स्वामी बिद भो माभि सवारिन।

बिलाबिल

नहीं कोई दाता गुरि को माति।
त्रिकुटी हंस मनीति मनाहदि मिति हा ठोरि मसाव भ्रकी।
माद मिमि मुपकद पुकारिओ सा उमिरा जनिमु बिचारिओं।
गुरि प्रतीति परति भा नाही मिपरि गुमेरि ध्रू मपे निहारिओ।
भेसा दान करे कोई भूपति मापि टगा वपमावे।
गुरि की दाति भाव की बिचरे काटि जनिम मुत्तावे।
मिल मछद्र पमे म परि गारिप मोरा कारिए भानि ठहराई।
गुरि चेले भे एको माईदामा गुरि का मिल वडमाई।

राग बसंत

प्रहलादि को मूगु तुमे हा दीन भगित बछल प्रू मटस कीनि।
हरिनाकस नपी बिडारिना पगु मूमा पारि उतारिना।
महनिम गनिका रची काम प्रपिरामो उधिरे हरि क नाम।
पूतना मे मसपनि थन माह पारो पारमु भेटिओं छिने माहि।
छिन माह उपारिमा गमेपाल राज बनि मो मीना त प्यास।
कंनिभा द्रोपती भूपत धम परी बढि वस्त्र पेपति मरमा मरी।
मोमरि मिमरिया तिम निधानि तारी मरमा गपा गुणा निपानि
तेरी भगित बेमुग पापी क्या करे पहु निम न्नि म जमि के टरे।
मकम उधिरे गन पाद माइगाग मो पिनु ठोरि मादि।

गूमानिप मानु नि करिम
भाग तेरा को नारो रिग मार गुणावगो।
गनि पकोगा जविरा प्रू। पदिगरी।
दम गूमा पुडिना मनु गाने रिम गार्ं मुणावगो।
मार्ंदागरी दृढि चिनिगी एक पकर उरि माहे।

जो कहे राजे प्रभु कोई नही।
महस फकरि क माह भावे किने धोक है[1]।
फकिरि के तपित परि बपतु है, कोई जोहरी जाणे।
जोरु सुसुमुना मधु माही मुगुपु आपिता माने।
राह म पड़ी है जबिडी मानो सपु दिपमाई।
महरि मीठे निर्मे भई प्रजानि म पाई।
मिर्भे गे माही कामता वोह झूम हास दिवाना।
साईंगस को दियास क्रपा परी सागा पेर का बाणा।

पूरिबी—

क्रम्न तेरे पमित्र नि वर्मे जाह।
सम पयो जस प्रथिक पीविस है पाक्क किठ बिर्सासि।
सम बनिगाई मपन घनि मोभति कासि प्ररिकिठ नही पाति।
बैता मस्म भए रति हीने न पलि ना कुसमाति।
इनि जगि मूंक पगि ब्रगि हीने वैनी इकि घनि पाति।
गबि को पैमा मैमा नही मस्वनि सामिरि किठ प्रपिमाति।
बहुतो बंम भीनि बनि उपिजति धाम कसंक सपाति।
दिनि को प्रम घोष होइ बठवि निस को सम बिपसाति।
कहु साईदास पुरातन रैपा मौ तिन होत मि बाति।

नर्गिमिष माह प्रभू छती रसि बिजनि भोगि बानाए।
नाना विध के रगि लक्षमी माबुनु सबारे।
मनि मे करित प्रनद नाद मुनि पनिबाबा त्याए।
जसि मरि मिप्राई गमि प्रतिरिगति को प्रतिरि जाने।

समि बिधि जानिन हारि, माया हमरे मोबुनु कीजे।
हम तो सेवक जमिम के नामु प्रभे पदि दीजे।
माया छती रसि बिजम भोगि बनाए प्रासे बमे पकौडा।
फल पकिवानु प्रापर पु मीठा हके दपि बिजौरा।

१ इन पक्तियो की पुनरावृत्ति हुई है। देखिए पृ १४।
२ प्ररिकिठ—प्राकको।

जिस माता दा मापुनु पाइमा, चार पदार्थ पाए।
सुदामा जी के सतू पाए, कचिनि मविनि वनाए।
छीन दही जमना तटि पाइत्रों वडी भगित सम्यारी।
प्रपिनो विरदु तुम जानि मनोहरि केती सिपत तैय भारी।
जूठे वेरि भीलिन के पाए, सो तै मद्रतु करि मानिमा।
साग् साग विदरि को पाइओ सो तै हितु करि मान्या।
विजि पतिनी निर्मो करि रापी जांके भोजनु कीना।
पांडवि सुति बकुंठ पठाए जापु सुफलु त कीना।
पाइ गोरसु घना तारिओ मामे दूधु रिलाइयों।
जनि सांईदास के भोजनु कीजे प्रपिनो विरदु वधाइयों।

रागु सोरठ

भगित बिनु तेरा जनुमु प्रकारा।
जो दीसे सभि सुफने सारपा भूले भरम गवारा।
र मनि सै इस्थिरि नही रहणा प्रमा मनि करे पसारा।
थसित गिम्रा सग मि साथी माति पिता सुति दारा।
उस्थिति[1] अपिनी मिथा मौरा की पापड पाविम हारा।
पपड मामु नि पाईए बाबिरे, सो तत इनि ते न्यारा।
रसि रते रतिम तै पोइयों बांधे कथि के भारा।
जवि जमि आइ झोटिये पकड तब लागे पछुतारा।
कीए चसित्र सकस प्रभ तुमरे माया रग प्रपारा।
सांईदास प्रकीति गुन गावो जनि को पार उतारा।

मैम्रा तेरा बैकुंठि सारिप भौमु।
जहा सोम सुमति सरीरि दिढता करित मुनि जनि गौन।
तारा सीम्रा मदोदरी चारोपेती[2] महल्या नार।
इंद्र सहता मोहनिमा नित नित करति दुमारि।

---

1 उस्थिति < स्तुति।
2 चारोपेति < द्रौपदी।

प्रहिसादि ऊभो मर्मना तुही मुसलित रंगि।
नित निर्त नार्द दिब रहता सुरितलि सुरि मरद।
बशिष्ट गरिगा गोतमा सुपि भ्यास बग्नि सारूप।
भ्रष्ट सिष्य मौनिष्य द्वारि उतिरी तहा मौनि मनूपु।
सिष्य साध सविम मुनि बनि जहा बसे तीर्थ कोटि।
साँईदास मौउनिष समानो जमति मौनि की ओटि।

महिम मो ममाष भागो ज्ञान तहा मूला।
प्रेम भगित बित समानी उनिमनी मै मूला।
पर्यंबी की कमा छूटी मेरि धुनि समानी।
देह ते विदेह भजों भैसौ मज्ञानी।
सेस लोक मगि प्रजंति ब्रह्म लोक ताँई।
मापिना सारूपु देष मापे बिगसाँई।
मापिना ही चिमतकारि बित कित निरपावै।
भैंमो बिज्ञानी बिज्ञानि ही मै बिभाव।
कहिना भनि कहिना सोई कहना।
साँईदास दास मोही रहना।

जम तनि चिको निकसे भामी कर्म भए।
जो तुम बीजे ममभा सोई उपिज पडे।
जो तुम कीते छपि के सो दफतरि भाइ चडे।
होसु कैनू दिचे साँईदास कीते उठि लडे।

दो०—चारि बर्न हरि को मजे एक वर्ण होइ जाइ।
साँईदास भ्रष्टधाति पारस सगे एकै मोल बिकाइ।

रागु धटि

माजु बने नवसाज दीए तिलक कसर भास
मुकिटि की मटिक छब कही नि जाई।
श्री मदनमोहनि ठाडे सबम तरवरि तरे,
मद मुसकात सुदरि कन्हाई।

अविन कु रस मलकु छुट रही अति अलक
मुरिसक तान रस सो वजाई।
अविन सुनि ब्रह्म सनिकाद मुन थकत भये
देह की दिसा मनि ते भुलाई।
स्याविरो वर्न अति नैन राजति अर्न
पीति पट फन सु दरि सुहाई।
हीए वनिमाल सग लीए गोपी ग्वाल
रास रसम से गोपाल माही।
लीए करि जोरि तल उघट ततथेई थेई
दोऊ एक ते एक सुंदिरि सुहाई।
कहत विष्णदास हित कमल नैनाम सुप
मुल का पन मै सम रिझाई।

रागु रामकली

एहिठो सुत मतु पोईठो रे
हरि सा मीत काल मा वैरी मनो विसार न सोईठो रे।रहाऊ
मनु किर्साण धनि कर कांया बीज अवृत नित धाईठो रे।
सांत सहिज जल अ मृत वर्षे हौमे फलिर थोईठो रे।
इहि ससार अग्नि का भामुड¹ ताते आपु लगोईठो रे।
गुर का शब्दु रत्न निरमोल कुसाग्र क सूत परोईठो रे।
साधू जन भगवान भक्त विनु मुकतया कहू न होईठो रे।

रागु सोठ

ममता विषसायो मुन जन को।
तिन ही का भगवान मानता अरि जानत कर मन को।
शिव गृह देपि सुभामे जगपति मांगत हेम भुवन को।
हाटक मृग देपि राम भुसामो मागत वनलि बचन को।
संच पर संच थकत भयो प्रांनी कहति हमारा धन को।
कहु सांईदास पुरातन रेषा नौतन होत न कन को॥

---
१ भामुड = ज्वाला।

सोठ

साहा मुति शरीरो पीवणु।
प्रभु की भीत चुकत्यो माही मठ परयो इहि जीवणु।
प्रभु चूके कछ पान्धा तव दिप्ट न भावे दूभा।
जरा मर्ण ते छूटा सतो प्रभी भया तो मूया।
रवि की कीर्ण सुरसरि बिहूण कर रसना इहि पीवन की भावो।
हू हू करति सुनावे सो हूं हू कहा करो जब दिप्ट न भावी।
रवि की कण पकर पौ प्र तर इहि उहु एको कोई।
दास कणु जिस है सांईदास कंचन कबहू न होई।

सोठ

जौ लौ राम सर्ण नही जानी।
तौ लौ डीठ भ्रमम नही को चूहे हि पसु मानु परानी।
कोयो बिपु पायो सभ भ्रपना जानु जम भ्रभिमानी।
भूल परयो मग ही क जस जिउ साईदास मजु पर रैन बिहानी।

रागु भासा

सही कर्ति को मैं किस भर भाई।
नेत्र निहारी मसिमा सकसो पाई।
तीप बेद सम्म बैरागे जिस चर आई।
धयाल तिते तू मागे दूजो पद पम त्रिपुटी पेतो।
प्याल परे धयाल मगन भमेटी।
रवि सागर वपु ससी जो न क्षमी।
बएा पत्र फूले बियास पुहुपी पत्ती।
पुर पुछ साईदास बूड मैं भापे।
काल की कनक कुम्प धेरे नापे।

भासा

मुनि रहो मुति कहा मई।
कारिहत पाके वियाश एहि न भई।
कहा से पाने कहा ते जाने ठांका मार्ग कोऊ न बताई।

पाछे पकर पकर रवि किरणी
नैत्र निहारी आयास निज घर फिरनी।
कहिना सुनना सभ तुमरी गाथा
सांईदास का प्रभु दसि विश साथा॥

सोर्ठ

मन रे इन मै है कोऊ तेरा।
मूनिस पषी जैसे विर्प बसेरा॥—रहाऊ
मात पिता ते परनी प्यारी कूड़ कडोर सन पायो।
तिन तो प्रसि गवन की विरीमा इतिउति वदनु दुरायो।
सीठ धाम वस्त्र सुप कर मान्यो रथ पथ धाम बनायो।
ताते घीस निकाल्यो पिन मै पलिक न रहिणा पायो।
इम्हि मीत प्रड सजुन सहोदर सदा रहित तुम्हि घेरे।
सेऊ उलटि कहै क्या विलमो काढो प्रेत सबेरे।
तन सुत हेत चर्न तजि के छिव प्रतिपालन मनु ओरयो।
तिन ही प्रिथमे लूका दीनो सीस हथ्राहल फोरयो।
नरनारी प्रर नेह कुटवी भर्त पोषन प्रति पारयो।
सेऊ क्तोर प्रडाल चले है पाछे किन न निहारयो।
मैं जग कूड कडोर निहार्यो सौच सुकष जोय माही।
सांईदास भगवान भजन बिनु प्रत काल कोई नाही।

रागु रामकली

प्रगम प्रगोचर प्रनहद बाणी।
क्या कोई कहे कहिन की नाही प्रनमय गति ह्यरानी।
पाचो मार करे प्रपुने वश्य तौ इहि ज्ञानु बीचारे।
दधि दिश गवन करन ते थाको प्राप तरे प्रौरो को तारे।
त्रिगुण प्रतीत रहित तति उपिज तत पद माहु विल्हावे।
गग जमुन के मीसर बैठा प्रगमो निगम सयावे।
सुन समाध सहिज सिव मागी मनु से तहा चडावे।
पसरी किप तिमर तव फूटा सोहं शब्द सुनावै।

---

१ पृ ६२८ पर यह पद आ चुका है। यहा दो पंक्तियां अधिक हैं।

धणि मही सूर पवन गति छूटी महापुष के बासा ।
अम मण की धवा नाथी तहा बसमो साँईदासा ।

रागु धनासरी

पहिले पहिर रैंन दे मन मरमा माई रहिता धुधूकारे ।
तदि सूजु चदु म होत भाकै जुग गए मधिमारे ।
सूर्य चदु पौन न पाणी भति न गगम न गैंणी ।
सकस समाइ संपूर्ण रहमा प्रबिमा संतु वीचारे ।
भादि जुगाद जु पहिरे बैठा प्रियमं धुधूकारे ॥ १ ॥

रहिता धुधूकार बिम मन मेरमा माई निर्मो धनस प्रनीसो ।
सद दूजा कोइ न जाणोए, साधिक सिध बकीसो ।
माधक मिधि बकीस न जापे निर्मो ऊहु निर्बांगी ।
पार ब्रह्म परपूण कहोए सहिज सुति समाणी ।
शास्त्र वेद पुराण मी मापे जगम बन्न प्रमीसो ।
भादि जुगाद जु पहिरे बैठा निर्मो मनस प्रमीसो ॥ २ ॥

रहिता धुधूकार विम मन मरमा माई निर्मो ताकी साइ ।
हुमा साइ समाइमा हरि गति लखी न जाइ ।
हुमा सोइ समाया जकी निर्मो उहु निर्वामी ।
पार ब्रह्म सपूर्ण कहीए प्रनूपान भविनासी ।
माधक मिधि रह सिबसामी ब्रह्म म तु न पाइ ।
भाद जुगाद जु पहिर बठा निर्मो ताकी साइ ॥ ३ ॥

वेषो नेत्र निहार के मन मेरमा माई तं बिनु दूजा नाही ।
सब निरंतर रम रहिमा निरजनु जता माही ।
जता माहि निरजनु रमिमा वेषो बुद बिचारी ।
मकुस नामु जिह्वा भौजुन्ह मरकार निरहारी ।
प्रलय कोट पद मकर बैठा बहे जु जुगा जुगाही ।
साँईदास प्रभ मकथी मूत तिम बिनु दूजा नाही ॥ ४ ॥

रागु कल्याण

राम नाम निमल जलु, जमि मलन काटि डारे।—रहाऊ
चौर न कोई मैसो द्वार भार भय के दूर कानि चितवते चित
भारो जामनीन दूपटारे।
एक हु तेज गत नाम देव को मनाम नाम सात विघ्न जारे।
राजन के महाराज काज कानि सतना के द्रोपती भय भभे।
कौन साज को न हार
गनका गज भजे जान मान लीयो करुणामै हेत प्रीत धारे।
नर हरि पनि चीत मीत भत के सहाइ यधि ब्याध मुकत कीने
काटे भव भारे॥ ५॥

राग कल्यान

रसिना राम नाम जपि लीजे।
तनु मनु धनु हुति हेत भपन मैं सकल समर्पनु कीजे।
वेद पुरान बहु विधि ब्याकरणा काहू का पढि पच मरीए।
काम क्रोध मद लोभ मोह त जो मनु सुद्धि न करीए।
जीवनदूस उदर के कानि जो विद्या गुन गहीए।
सो पशु समान धनु है अधिकारी ना कहीए।
छाडि कपट्ट मतिहिम चतुराई मति मानदु कहो है।
सब शास्त्र को सार मूप रमु मापोनास पढाउा है॥ ६॥

रागु आसा

राजा राम भाए भानद भए नगर अजुध्या माइरो[1]।
मंगल चार भए दसरथ क लसो वधावे जाइरो।
लछमन साथ अजाध्या आए जानुकी वाम भगरी।
दक हा दूपि न्नी कर सीना न्नना हाथ तबोल रो।
दवना राज सिघासन सान टकि यानत मीट मोठ बोल री।
हर्ष्यो भय दात्रयन हर्ष्यो हर्षो कौसल्या माइरी।
मर हरदास सभ जन हर्षे फूल रही अमराइ री॥ ७॥

---

१ यह पद ग्ग्वार पृ ६६६ आया है। मग्वत राम सर है।

राग मल्हार
रचने एक ही हाट के घर मानी मयमोक ।
माल उपाया पाप पुन्य नाले सहित वियोग ।
सकल समामी करयमी जाके रूप घनत ।
साईदास हृदि रचायो चतुर्वेद किरयारा जीय जत ॥८॥

मुर्सी जहि जहि भवरा सुनी ।
दौर दौर दस दिस ते भाए तजि तजि ध्यान मुनी ।
घेन न गहे जानु दंतो तनु जममा घसन पायो ।
गवन न करि ताहु रवि को रथ पौन ध्यानु लगायो ।
जेती बधू बाल गोकल ग्रहि पर्म प्रीति उपजाइ ।
गह कर कलस पहिर भवि सेयन तिह तिह औसर भाई ।
मानंदेवे दिज के लोको भानंदु प्रेमु वढायो ।
सीलहाधर करूनामय ठाकुर साईदास बसु गायो ॥६॥

राग कल्यारा
हरि को नाम मन किउ न जपत रे ।
काहे रे भरोसा करो जोबरा का निसबासर तेरी भ्रवधि घटात रे ।
तन धन जोबन तरवर छैइया भजरी को पाराी बंसे जात बुरात रे
बिनु रघुनाथ कोऊ काम न भावे काहे को झूठो गर्बु करात रे ।
साधि सगत हरि कथा कीर्तिम इनि बठीभम सौ पार परात रे ।
तूल रास जैसे भस्म दहति है राम जपति तेरे पाप जमात रे ।
राम नाम जपो उर भतर भाद भंत तेरे सग चलात रे ।
कहे साईदास जपो निसबासर मुपो कहति कछू मोल भगात रे १०

भ्रष भारती लिख्यते
खंड खंड बहमंड सकल मैं बिधि बिधि जोत समानी ।
बासी गगन दीप रवि चंदा निसपती ए बिधि ठांनी ॥
प्रटल ध्यान धरयो निज बर्मी माति भवर भुलावे ।
गावन हारे सदा द्वारे धमु भनाहदि गावे ।
तेरी भारती मेर कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणनिधान ।
मैं वार्‌या जा सत उवार्न राम तेरी भारती ॥१॥

प्रगम गम्म गम निगम बोचार्या विषर बीचार सुणाम्रा।
सुण सुण सिद्ध साधि सुर पानो मुक्त पर्म पद पाम्रा।
पार ब्र ह्म प्रपर पर सोहं हुसा मूर्ति बनामा।
मुसमा मध्ये हीरा पेप्या सतिगुर मिय बनामा। ॥२॥ तेरी मार्ती

प्रगम गुफा मग गुर दिपलामा तावे सुर्ति लगाई।
प्रबघट घाट बाट घर ऊपर बिर्सा को बसिमा बाई।
उवि घर बस सो बहुर नि निकसे ठोस घर यहि व्यवहारा।
साईदास फिरि बहुरि न भटोए न फिरि पव पसारा।
तेरी भार्ती भर कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणनिधान।
मैं वार वा संत उधानि राम तेरी मार्ती ॥३॥

कैसे कर प्रार्ती तोहू रिझावो।
मैं मूप मवि बुधि मेरी काची कहा तेरे गुण गावो।
म्रू माद सेर प्रागे नाचे क्या मैं माघ दिपावो।
प्रनहृत्ति पाम्यु बार द्वारे घटा कहा बजावो।
कै वैकोट मेर पर्न प्रसोक क्या मैं टहिस कमावो।
कोट पवन तेर देह बहारी क्या मैं चवर झुलावें।
पोप पिंड सभ तुमरा दीप्रा क्या मैं सीस निवावो।
प्रपत भवन मे जोत तिहारी क्या मैं फूल चढ़ावा।
ससी भर मान छाए मम सोमा दीपक कहा जगावो।
महादास भज सास त्रिभगी कहति सुनति गति पावो ॥१॥

प्रार्ती सेहो मरे राजा राम प्रार्ती महा मेरे श्रीभगवान
प्रपस भवन क मायक माया कमलापति परधान।
दीप धूप लै करो प्रार्ती चोप्रा चन्न पान।
कोटक प्रादि बीन रजाब गावे गोपी कान।
जो जो प्रनि प्राए प्रभ तुमरा सबा कीए निधान।
क्या ल गुन बर्ने मेरी रसमा निगम रहे हैरान।
सिमृत सास्त्र बेद पुकार पतति पा न तेरो नाम।
कोट भवन तेरो करे प्रार्नी सिद्धनाथ सुर ध्यान।

जनम जनम एही फलु मांगा प्रेम भक्त देहो दान ।
महाप्रास मसु प्रगटि कहति है सुनीए थी भगवान ॥२॥

जय जय मार्ती राम की तिहारी ।
दीम दियाल भक्त हितकारी ॥
जन हित प्रगटे हरि बपु धारी । जन प्रहिलादि प्रतज्ञा पारी ।
उपत सुता के चीर बधाए । गज के काज पियाद धाए ।
दस सिर छेद बीस भुज तोडी । सुर तंतीस बद ते छोडी ।
छत्र गहन कर लछमन भ्राता । मार्ती करत कौशल्या माता ।
सुक सारद नारद मुन गावें । भरत शत्रुघन चवर झुलावें ।
सन्मुख जन महे हनूबीरा । ध्रू प्रहिलाद नाम सुभ बीरा ।
सीता सहित अयोध्या आए । सभ साधस मिल मगल गाए ।
रावण जीता राम ग्रहि आए । रामानंदि स्वामी मार्ती गाए ॥४॥

मार्ती करत जनक करि जोरे ।
हरि हरि बडे भाग राम जो आए हो मोरे ।
सीया स्वंबर धनप चडायो । सभ भूपन का गर्व मिटायो ।
तोड पिनाक कीयो दोऊ टुटिका । रघुकुल हरि रावण भई संका ।
आई सीता सग सहेली । हरि निर्ख उस माला मेली ।
कचन थाल कपूर की बाती । सुर नर मुम जम आए बैराती ।
गज मोतीयनि को चौंक पुरायो । कनक कलस भर मगल गायो ।
धंन धन राम लषमन दोऊ भाई । धन्य दसरथ कौशल्या माई ।
मिथुला पुर मै बजत बधाई । दास मुरार स्वामी मार्ती गाई ।५।

मार्ती नृसिंह कवर की बेद बिमल जसु गावें ।
प्रथ जी पहिमी मार्ती प्रहिमार उबार हरिनाषस नखि उदर बिदारे
दूसरा मार्ती बावन सेवा बलि के द्वार पधारयो देवा ।
तीसरी मार्ती ब्रह्म पधारे सहस्राबाहू के काज सारे ।
चौथी मार्ती असर सिधारे भगत भभीखन लक पधारे ।
पच मार्ती कंस पछारे । मोरा ग्वार सकल प्रतिपार ।
तुलसी को पत्र कठ मन हीरा हरि निर्ख गावें दास कबीरा ॥६॥

कहा लै आर्ती दासु करे हरि हरि सकल भवन जांकी जोत फिरै।
सात समुद्र जांके चर्न निवासा काहा भयो जल कुम भरे।
कोट भांन जांके नख की सोभा कहा भयो कर दीप धरे।
ठारा भार रुमांवल जांके कहा भयो सिर पुसप भरे।
अनेक भांत जांके बाजे कहा झालरि झनकार करे।
शिव सन्कादक अरु ब्रह्मादिक नारद मुन जांको ध्यान करे।
लष चौरासी व्यापक रांमा केवल हरि जसु गावे नामा ॥७॥

आर्ती कीजै राजा राम रीझै।
भक्त करो जम त्रासु न दीजै।
पहली आर्ती पुहप की माला भाली नाग नथ ल्याए कृष्ण गोपाला
दूसरी आर्ती देवको नंदन भक्त उधार्न असुर नकंदन।
तीसरी आर्ती त्रिभवन मोहे गरुड़ सिंघासन राजा राम जी को सोहे
चौथी आर्ती चौन्स पूजा एक नरंजन स्वामीऔर न दूजा।
पांचवी आर्ती रामजी को भावै रामजी के हरि जस नामदे गावे ८

आर्ती हनूमान लाला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कौला की॥
जांके बल गर्जे महि कापे। रोग सोग दुष्टंजीव न जांके॥
अंजुनी पूत महा बलदाई। साधन सेवक सदा सहाई॥
दे बीड़ा रघुनाथ पठाए। भका प्रवास सीया सुधि ल्याए॥
लंक सी कोट समुद्र सी खाई। जात पवन सुत वार न लाई॥
लंक प्रजास असर सभ मारे। राजा राम जी के काज सवारे॥
लछमन मूर्छ परे धर्नी पर। आन सुजीवन प्रांन उबारे॥
बाबी भुजा सभ असर सिंघारे। दाहिनी भुजा सभ सत उभारे॥
पैठ प्याल तोड़े सभ किंकर। अही रांवण की भुजा उखारी॥
घंटा ताल पखावज बाजे। जगमग जोत अवधि पूर राजे॥
कंचन थाल कपूर सुहाई। आर्ती कर्त अजनी माई॥
सुर नर मुन जन आर्ती उतारे। जय जय जय हनूमान उचारे॥
जो हनूमान जी की आर्ती गावे। बसे बैकुंठ बहुरि नहीं आवे॥
लंक जलो सभ सीया रघुराई। तुलसीदास स्वामी आर्ती गाई॥६॥

हूति सकल सताप जनम के मिटत तसब जम कास की
आर्ती कीजे मदन गुपास की ॥
गो घृत रचित कपूर की वाती मलित कंचन थास की।
चद्र कोटग्रसि भान कोटि छबिमुप सोभा नद सास की।
संप चक्र गदा पदुम विराजे उर बाजंती मास की।
कीट मुकट कर सारग सोहे मजरी कुस्म गुसाम की।
सुंदर सोल कपोलन की छबि निर्पत ब्रिज के बास की।
सुर नर मुन जन करे आर्ती मोक्ष मुक्त प्रितपास की।
घंटा तास मृदग झांझरी बाजत बैन रिसाल की।
हों बल बल रघुनाथ दास पर मोहन गोकल बास की ॥ १० ॥

मिर्ष सकल सीया रघुबर को छब नहीं जात बपानी।
आर्ती करत कौसल्या रानी ॥
कनक थास गज मानक मुक्ता भरे सो बहु बिधि आनी।
मार्यो मान सकल भूपन को कीर्त वेद बपानी।
तोड्यो धनप जनक प्रनपूर्ण तीन लोक मै जानी।
जनकराय की मायी पर्सराम हित मानी ॥
दसरथ सहित अवधपुर वासी उचिरति जयजयबानी।
तुलसीदास प्रभ प्रेमबस जोडी भक्त अभेपद दानी ॥ ११ ॥

अथ श्री जोग चांदना

ੴ सति सरूप बाबा साँईदास जी

राग हिंडोल

परिसादि गुर के भओ आनंदि।

पूर्न पायो मुनि मुकंद ॥—रहाउ

मनुआ उमिटयो एके बारि।
ससा भम सम दीयो टारि।
नपि सिर पूर्न ब्रह्म ग्यानि।
मानो नाही वेद बहु मानि।

सति गुरि किरिपा तिनिहू जानि।
जपि लागे गुर चर्न ध्यान।
बिहारी दास प्रभ भए क्रपाल।
जमघन रहे चर्न नालि।

उमिटि परियो अबि ब्रालिमा।
भागि ठौरि काई रही नाहू।
जसि यम महल सर्ब पूरि।
जबि दयो दबि है हजूरि।

चौपाई—

सति गुरि चरन है बहुनि प्यारी।
रोम रोम बिच लागी तारी।
भवि सिप पूर्न ब्रह्म ग्यानि।
कर्मचाद गुरि लागो ध्यानि।

सतिगुरि किर्पा अपर अपारि।
जाको नाही पारावारि।
हरि को कृपा कोई दासु बिख्याने।
रामचंद गुरि चर्न पछाने।

प्रविस मेसो सुर्त समाइ।
मंतिर बाहर रह्यो समाई।
गगिम चढे चढ गर्बे जाइ।
कर्मचदि गुरि मर्म मिलाइ।
इसि धर्नन का इस्वर धरो ध्यानि।
कर्मचंदिगुरधर्न मै सरह्योगमिलानि।
मयसा भारो धु दौबि मिटावे।
कमचंदि तवि दर्सन पावे।
इस दर्सन का पावे भेव।
गधि सिधि पूर्न भातिम देव।
अनिभैय कथा भै नाही कोई।
कर्मचदि गति पावे सोई।

चौपाई—
मयसी वाणी वणिने लागी।
राम माम पाउो वडिभागी।
अमिभय कथा सोहं जाप।
मयसे जाप वडे परताप।
कर्मचदि गुरि धर्म वीचारि।
वाहर अतिर जोती तारि।

दो॰—मासा मतिर मारिए पाईए पवि मिर्वानि।
कर्मचद गुरि चनिते माठि पहुरि गलतान॥
कर्मचंद परि करणा करो धरो पीठ परि हाथ।
गामि वसके वगते राप लिउो महाराज॥

सो —बूकिम बिन मार मसाला काहे बाहरि जाईए।
इसि मारि की सूर्त ऊपर पवि पवि बिलम नि साईए॥
मयसे स्वास मतु करों धजाई स्वास स्वास चित लाईए।
सतिगुरि सिहजा उपरि बसिए त्रिगुटी महल सुप पाईए॥
त्रिगुटी पाईए गुरि परसाद कर्मचदि गुनि गाईए।

मइसी सगी वसाइ सागिव ही भमु जरि गियों।
जनिम मनि भौउ जाइ पन कमस की मौजिम ॥
धर्न कविल म घकि रहे निमिवासरि गलतानि।
कमबदि गुरवर्न धूर परि सागि रहे गुर शानि ॥

बो०—मइसा दाता कौन है दे मातम को वीचारि।
विन गुरि कस पाईए मंविर गत रस सारि ॥
गुरि दाते गुरि वड है गुरि किरपा ते पाइ।
कमधदि गुर घन धूरि परि बनिक वारवलि जाइ ॥

पौड़ी—
मंविर मइसी जोति प्रकासी।
मिृति मिस दर्सन सन्त बिगासी।
मयसी जोति को सागे भाई।
कमपद गुर पन सहाई।
सनिकादिक ब्रह्मान्कि याके जानि।
तुम भी भजो सभ भरा मानि।
मइसी बिर्पा जनि पहुराई।
कमधदि माह् स्वाम स्वाउ समाई

पौड़ी—
उसिटि कौल अवि ऊपरि जाइ।
माड़ी माड़ी स्वाग वताइ।
सूपम माद सूपम गति पाई।
कमधदि गुरि मदा महाई।
मए भौम है जाबे पान।
पानि पाति पून विन गोह् जार।
इगि गोह् का करो वीचार।
कर्मध गुर धर्न धसार।

पौड़ी—
धसारि कसा को जो कोई मागे।
जाक मागि माड़ी मिमि जाम।

कर्मचंदि सुम जागो भाई।
सोर्मा सोइम्रा किउ रैन गवाई।

उलिटि पौन गगनहरि जाइ।
चर्न कौल मैं रहुठो समाइ।

भइसा दर्मुम देयो भाई।
कमचदि मिल जोति समाई।

दो०—गगिनि मार्ग मै जोति झिमझिमी तहा अंमृत रसु पीजे।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि चितु चेतिम करि दीजे ॥

चौ —गगनि मडिल मै अंमृत कूमा तहा जाइ लिवि लागे।
तहा जोत मिल मिल हरिसे सोहं सबिद मिला जागे ॥
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि स्वास स्वास चित लाये।
सुते समानी सबिद म सबदि चडिमो प्रकास।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि लागी बहुति प्यास ॥
इही प्यास लागी रहे निस बासरि भरि भोरि।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि होए मैनि चकोरि ॥
चकोर विद्ध प्रकास की भ्रानि भि किलिहू जाइ।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि रहियो सर्व समाइ ॥
प्रकास चांदना सबिन्ह है चंदि चकोरि के भाइ।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि अनेक बारि बलि जाइ ॥
अग्नि चुमे चितु मा जले सीतिम भइा बीचारि।
कर्मचंदि गुर चर्न धूर परि अनिक बारि बलहारि ॥

चौ०—उलिटि परा अबि आप मय सर्चा रही भि काइ।
रोम रोम बिच खकि रहियो मंतिरगति लिव लाइ ॥
रूप रेप अदचर्ज है तहा कर्मचदि चितु लाइ ॥

चौ —धर्म पुर्व को जानीए तौ परिमार्थ होइ।
जहा सति गुरि का उपिदेसु है परिमार्थ कहीए सोइ ॥
भ्रौरि परिमार्थ कछू नही देयो सबिद बीचारि।
कमचदि गुरि कृपा ते पाए अपरि अपार ॥

परिमार्थ परलोक बतावे सति गुरि चर्न मिलेत हरि ध्यावे।
परिमार्थ है इसका नाम कमचद गुर चर्न ध्यान॥
उनिटि परा चवि प्रभू प्रपार सोहं प्रारम करो उचारि।
प्रेम परसादि गुरि मागो भाइ कमचदि गुर ज्ञानि बताइ॥

दो०—प्रपिर प्रपारि की बाति कौं लागि रहो दिन रात।
कमचदि गुरि चर्न धूरि प्राइ मिल्यो परिभाति॥

उनिटियो कौनि चढियों प्रकास मनि पौने को लीयो ग्रास।
मनि ग्रास यों सुति लगाइ कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि
प्रनिक वार बल जाइ॥
मनु चंचल निश्चल भयो सतिगुर के परिसादि।
भौरि चतनि सम कछु नही सतिगुरि चर्नी लागि॥
इस मनि का एही उपाउ निस वासरि पल ध्यान।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरिपरि लागि रहियो गुर ज्ञानि॥
मनि की बूटी गुरि सबिद है मानि लियों तति काल।
कर्मचंदि गुरि चन धूरि ते मिटि गियों सकिम जजाल॥
बूटी एह प्रसचर्ज है सति गुरि दैई बताइ।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि प्रनिक वारि बल जाइ।
सति गुरि का उपदेसु मानि के बूटी लेहु बीचारि।
सति गुरि किरपा गुर नजिर है बूटी प्रपर प्रपार॥
बूटी प्रपिर प्रपार परिसति गुरि ते पाइम्रा।
कर्मचंदि गुरि चर्न से परि निर्भो थाइम्रा॥
मनुप्रा कीत्या सति गुरि कृपा ते जनिम ते जमिम मर्न दुषि जाइ।
ज्यो कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि प्रनिक वार बल जाइ॥
सति सर्न की ऊपमा मो पह कही नि जाइ।
प्रइसी सर्न सहाइ हम्हार जनिम मर्न दुष जाइ॥
सांई सर्न प्रहलादि उबारिजो कर्मचंदि बलि जाइ।
सनिक सनंदन व्यासदेउ गहर गभीरा॥

साई सर्न नार्द भी कही कही सर्न रघवीरि।
गुरि किर्पा ते पाईए एही सतिन की धीरि॥
सतिप्रथम प्रभदुजु कतनि कर्मचद गुरि ज्ञानि प्रथाने।
सठ सहाई सेवका अनिम मर्न दुप जाइ।
कर्मचदि गुर चर्न धूरि परि प्रमिक बारि बस जाइ॥
सतिन धूरि अपार है मदिमुति कही नि जाइ।
कहिम सुनिन ते परे है तहा कर्मचन्द ठहराइ॥
चातक चित चकोरि के एन्हा प्रेम की मांग।
चातक पंथ मै चल रहो प्रेमी वर्स नि मानि॥
चातक बूद प्यास है रसि मिम एको बान।
कर्मचद गुर चर्न धूरि परि रिदे न करु प्रममान॥
वर्स मामम प्रममानि है इस मै चिंता रोग।
प्रममानि त्याग साम नाम को पावो मंघुति मोग॥
इही मोग इही जोगि है इहि लीलहा अपर अपारि।
कर्मचंदि गुरि किर्पा ते साघ रही सिव तार॥
इहि लीलहा सिव तारि की मोपे कही नि जाइ।
कर्मचदि गुर किर्पा ते लीलहा माह समाइ॥
अनिमम मघे इस तुम माही छवि।
कर्मचद गुरि किर्पा ते पाओ सर्ब अनदि॥
इह प्रममानि को त्याग के रहो चर्न सो लाग।
कर्मचद गुरि चर्न ते तबि पाओ बैराग॥
बैर राग ते रहित है बैयरागी कहीए सोइ।
कर्मचंद गुर चर्न लगि दुरिमति मनि ते धोई॥
योगु चांदना मामु है पत्रु है अपर अपार।
कमचद गुरि चर्न धूरि परि लागि रही सिव तारि॥
लिवि लागी चांदनु भया निसिवासरि प्रमि भोरि।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि होए नैनि चकोरि॥
चकोरि चांदना प्रापि है प्रेमी लीजे मानि।
कर्मचदि गुरि चर्न मै लाग रहयो है ध्यानि॥

बैन समाने नैन मै नैन रहे निराधारि।
नैन बैन मै एकता पाए पुप अपारि॥
अपारि कथा मैनम मै भाई नैनो भीतिर रह्यो समाई।
इक पल बांधा नजिर नि भावै अजन माहु निरजन पावै॥
कर्मचंदि गुरि धर्न मिलाइ।
अइसा परिचा अतिर पाइआ। पसि पलि चिंदा रूपु सवाइआ॥
उसि परिचे को जाने कोइ। सति गुरि मिले निरजन होइ।
अइसी दात सति गुरि की आनि। कर्मचंद गुरि धर्न ध्यानि॥
निर्मल जोत प्रकासीए सतिगुरि के उपिदेस।
कर्मचंदि गुरि किर्पा ते पाए अतिर बेस॥
एह बेसु बिसवासु हे भाई रूपु रेप कछु लपियो नि जाई।
अपरि अपारि गति लपी नि जाइ कर्मचंदि गुरि धर्न समाइ॥
अंतिरि गति रसु पावो भाई गगनि मार्ग मे जोत समाई।
गगन गुफा मै अमृत सारि कर्मचंद गुरि धर्न अपारि॥
सति गुरि सबिदु प्रकास्या भार्गो अमृति स्वादि।
कर्मचंद गुरि धर्न धूरि परि मिटि गए सकिल बिबादि॥
सतिगुरि बिरहो जागआ रोम रोम धुक जाइ।
कर्मचंदि गुरि धर्न धूरि परि अमिक बारि बल जाइ॥
उलिट पलट का पथ क्या जाने चतिर सुजानि।
कमचदि गुर धर्न धूरि परि लाग रह्यो गुरि ज्ञानि॥
मनुआ उलिटि चड़यो प्रकास। गगिनति मै लीनो बास॥
सर्व सुपु तहा भयो कल्यान। तहा आत्म पूजा गुर धर्नन ध्यानि॥
जाइ निरिवास भयो तहा भाई। औरि चिंतिवमा उठे नि काई॥
नपि सिप पूर्न भयो प्रकास। तबि ही पायो अंतिरि बास॥
अतिरि कथा सुना रे भाई। रूप रेप कछु लपयो नि जाई॥
कोटि सूर्य का भयो प्रकास। उवि धर्न कौल मे लीनो बासु॥
अपरि अपारि लील्हा तेरी स्वामी। भ्रम भौ जल ते उतिरे पारि॥
भ्रम भौ जल नहा रे भाई। धर्न कौल की एह वडियाई॥
स्वासु अमिर्था कतहू न जाइ। स्वास स्वास मै सुर्त समाइ॥

स्वास सुर्त का भेमु है सोहं अपिर अपारि।
सुर्त समानी सबिद मै सबिद रह्यो निरिधारी ॥
कर्मंच दि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्न अपारि।
चर्न अपरि अपारि है चर्नन का करो बिख्यान ॥
कर्मचंदि गुर चर्न ते पाओ अभे पदि दान।
वडिभागी तिस को जानीए पावह गुरि को ग्रानि ॥
कर्मचंदि गुरि चर्न ते चडियो पदि निरबानि।

सति गुर ग्रानि है अपर अपार। मथि सिंध पूर्न ब्रह्म बीचार ॥
ब्रह्म बीचारि का करो वख्यानि। योगि चांदना लीजें मानि ॥
-योग चांदने सबिद प्रकास। कर्मचंद गुर पूरी आस ॥

ग्रानि कला बडती रहै सति गुरि अपिरि अपार।
योग चांदना जानीए कर्मचंद बिसथारि ॥
हौंच भा चिंता रोगु है तिस का करो त्याग।
कर्मचंद गुरि चर्न ते पाओ ब्रह्म बैरागि ॥
बैराग कसा गुरि ग्रानि है औरि जतिन नही कोइ।
रोम रोम मय छकि रहे तहा अनिम मिर्त नही होय ॥

अनिम मिर्त कौमि को कहीए। अपारि कथा अंतिर ही सहीए ॥
अपारि कथा का करो बीचारि। तहा योग चांदना अपरि अपारि ॥
जहा जोति प्रकासी है निरधारि। सुर्त स्वास मिल सबिद उचारि ॥
उभिटि कौल गगनंतिर जाइ। कर्मचंदि गुरि दीया दिखाइ ॥

अंतिरि बाहिर छक रहियो निसि दिन आनंदि पाइ।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि रोम रोम छक जाइ ॥
योगि चांदना नामु है सति गुरि सियो समासि।
अनभय कथा कौमि सो कहीए सतिगुरि पूर्न यास ॥

सति गुरि पूर्न भामु दिखाए। करि किरिपा गुरि चर्न मिलाए ॥
अंतिर पाओ ब्रह्म ग्रानि। कर्मचंद गुरि का एहु दानि ॥
पूर्न आरम ग्रानि किर्पा सति गुरि होइ। अनिम मिर्त नही जाने कोइ ॥

जीविति मुक्त कहोए सोइ। कमचदगुर चर्नी ते प्रमे पदार्थ होइ
गगिनंतरि मैं पेखीए निसि ग्निि माठो जामि।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि लागि रह्मो गुरि ज्ञानि ॥
अनिम मिर्त ते पारि हे गावे सोह गीति।
कर्मचद गुरि चन ते होए नैनि प्रतीति ॥
मनि को ओति प्रतीति पदि पावे। सुर्त सविद सै कठ लगावे ॥
गुरि किरिपा गगनतिर जाइ। मनुम्रा उमिटिम्रा मने समाइ ॥
गुरि म तिरि रंग धीठो चताइ। म तिरि गति सिव पूर्न साइ ॥
मातम सो सिव लागी रहे वावे सविवि गँभीरि।
तहा मनहृद सविद मपारि है सोह गावे गीति।
कर्मचद गुरि चर्न वे होए नैनि प्रतीति॥
करि किरपा पाईए हह भाई। मापे माइ ओत समाई ॥
रोम रोम विच रूपु सवाई ॥
मपि सिप पूर्न मातमाज्ञानि। तहा चर्न कौल का लागा ध्यानि
सो एह धर्म है मविर मपार। कर्मचदि सिव लागी तारि ॥
प्रेम कला बढ़ती रहे घटिती भली नि जानि।
कमचदि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्प सुजानि ॥
एह प्रेम मरुघर्म है म तिर रह्मो समाइ।
कमचदि गुरि चर्न धूरि परि प्रनिक वारि बस जाइ ॥
प्रेम समाना सहिज मै सहिम प्रेम मिम जाइ।
सहिज प्रम मिलए कहे मानि न कतिहुँ जाइ ॥
कम चदि गुरि चर्न धूरि परि प्रेमी सहिज गति पाइ।
सुर्त समानी प्रेम है उमिटि ममि ही कौं पाइ ॥
मनु ही सचुतु हो रह्मो गगिनतिर मै जाइ।
कर्म चदि गुर चर्न धूरि परि प्रनिक वारि वस जाइ ॥
सुंन्न सविद का चादना देपे मचरज रूपु।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम मनूपु ॥
सुंन सविद मति सिपर हे गावे सोह गीति।
कर्मचन्दि गुर चर्न धूरि परि होए ननि प्रतीति ॥

अतीत माग अपारि है अगम पथ को सारि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम अपारि॥
प्रेम पुर्य अपारि है निरंजन की हुय जोति।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते आतम मिमल होति॥
आगे अगे अगे रिजाइ। रोम रोम विच रहयो समाइ॥
मपि सिपि पूर्न आतम आनि। तहा चर्न कौम का लागा ध्यान॥
चन कौस कैसे है भाई। तांकी महिमा कही नि जाई॥
तिम चर्नन का करो प्यारि। तवि ही पावो मुक्त द्वारि॥
बंधनि मुक्त तहा कछु नाही। प्रेम पदार्थ है घटि माही॥
अबिच अबूत छक रहे पाइओ पदि निर्बानि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि सदा रंग गलितानि॥
अयसा दाता को नही जैसे संत उपिकारी।
सति चर्न की धूरि परि जाउ सदा बलिहारी॥
संति जबी किरिपाल होइ तवि मिले मुरारी।
चर्न कौसि की धूरि परि कर्मचन्द बलिहारी॥
साँई देवन देवता आतम देवस होइ।
आतम देवम स्वास है मनुआ लेहु परोइ॥
मनु मनिसा मिल येमु है देवस कहीए सोइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि तहा अनिम मिर्त होइ॥
जनुमु मिर्तु एक भाति है इहि भाति मैं माह।
भाति समानी भाति मै एहु अपरंजि रूप अपारि॥
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड़ परि पाए अमिय अपारि।
धतिरि सिवि सामी रहे मर्जो उविद ममीरि॥
बहु दिस चमिकें दामनी सोहं पुर्य रघुबीरि।
कम चन्दि गुरि कृपा ते उतिरे बेनी तीरि॥
गुणु को ग्राहु जु कीजिए औगिण देहु बहाइ।
गुण औगण ते परे है तहा कर्मचन्द ठहिराइ॥
भगति भम को दूरि करि निर्मों गाओ गीति।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते होए नैनि प्रतीति॥

सिख्या मांगी नाम की सति गुरि सदा कृपाल।
कर्मचन्दि गुरु कृपा ते एह स्वासनि की माल॥
एह माला है नाम की मका मनुआ माह।
कर्मचन्द गुरि कृपा ते सोहं हुआ गाह॥
काटा लगियो प्रेम का अंतिर ससता जाइ।
आता जाता सहा गया जब्बा सबदि सुत मिल पाइ॥
एह बाति है प्रेम की नपि सिप रहमो समाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि अनिक बारि बलि जाइ॥
प्रेम प्रकासयो सहिज मैं सति गुरि दीठी बताइ।
नथि सिप आत्मु प्रगटियों अंतिर गति लिव लाइ॥
अंतिर लिव लागी रहे सतिगुरि दीमो बताइ।
कर्मचन्दि गुर चर्न परि अनिक बारि बल जाइ॥
सतिगुरि बिरिहो जागिआ अनिम अनिम सुपु पाइ।
काटि अनिम का पंधु था पल मैं पहुंचे जाइ॥
स्वास स्वास मनु नाम को विरिथा स्वास मि पोइ।
रतिन स्वास अबि अवि जात्या मनु माने सुपु होइ॥
अयस स्वास तो बलि बलि जाईए। चर्न कौम चितु ब्रिढ करि भाईए
चर्न कौमु म कौसिक देख्या। निज सरूप मिल आनन्द पेख्या॥
आनदि कला वरती ही जाए। कर्मचंदि चितु चर्न समाइ।
रा रा ममा भगतु है सोहं गावो गीति।
कमचंदि चितु गुरि चर्न धूरि परि होए नैन अतीति॥
भानु प्रकासयो अगित मैं तिमर गियो बिललाइ।
कम चन्दि गुरि चर्न धूड पर मधिरजि भानि पडाइ।
कुसगि कबिहूं नि कीजिए सदा रहो सति सगि॥
कुसंगि मार्गु अज्ञानु है सति सगु सन्त बीचारु।
सुपु सुपु कबिहू न लागही इहि संतिन का उपकारि॥
संत सदा अराग है रोगी सदा कुसगि।
इसि कुसगि को त्यागि देह सतिनि मो लिव लाइ॥
कर्मचन्द गुरि चर्न धूड परि अनिम मर्न दुप जाइ।

हमरी संति सो बनि भाई।
संतिन सो हमि मेवा देवा सतिन सो बिवहारा।।
सतिन सो हम लाहा पटमा भगति भरे भंडारा।
संति चन की किरिपा होई उतिरे बेनो पारा।।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते पाए चर्न अपारा।
गुझि कथा में लागो भाई। अंतिरि बाहरि रहूमों समाई।।
अंतिरि बाहरि जांका वामा। रोम रोम बिचरहूयो प्रकासि।
प्रकास भओ जबि आतम निमल रूप अपारि।
निर्गुनि सुगुन एकता घटिस रूप बिस धारि।
संति कृपा ते जानिआ गुझ कथा अपारि।
गुझ कथा निरिवैरि है बेरु नि कबिहूं जानि।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते लागि रहूयो गुरि ज्ञानि।।
प्रेमी सदा चकोरि है बासना उठे न काइ।
नैनि समाने जोति में जोति नैनि मिल जाइ।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते नैनिम जोत समाइ।।
च चल मिर्ग मारो रे भाई निहचलु मुर्ग सदा चरि भाई।
च चलु मारिओ गुरि किरिपा जानि कमचन्द गुरि लागो ध्यानि
एक कनिक अरि कामनी दोबे करों सम त्यागि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड़ परि तबि पावो बैराग।
कनिक कांमिनी बाति है मनुआ कतिहू न जाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते अंतिरि गति लिवि लाइ।
अइसा प्रेमु प्रकासओ मनुआ सेहु उलिटाइ।
मनु उलिटांना देह ते गगिन गुफा मे जाई।
गगिन गुफा में पेसते कर्मचन्दि सुखु पाइ।।
नैना घटिके जोति सो जोति नैनि मिलि जाइ।
नैनि जोति है आतमा परिमातम रहूयो समाइ।
पुरि किर्पा अक्षर्ज है अचरजु रहूयो समाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड़ परि आतम गति लिव लाइ।
बिन परितीति कार्ज नही जो तीर्थ फिरे सकल बनिबास।
जबि प्रतीत आवे घटि माइ कार्ज सकल अंतुही माइ।

काज सकिल पून भए धर्न कबिस मितु साह।
कर्मचन्दि गुरि घन घूट परि मनक वारि बलजाइ।
हरि सेवा द्वान्स बप गुरि सेवा पल एक।
ताह बराबर साईदास धम नि होति मनेक।
नेह रीत की प्रीति का ममु न जाने कोई।
कर्मचन्द गुर धर्न ते सग सो पूर्न होइ।
मह रीत की प्रीत मरु और प्रीत नही जान।
कमचन्द गुर धम सो सो सांची सागी मान।
बेपरवाह सतगुर की कृपा जामति सेह बीचार।
कमचन्द गुर धर्न धूर पर मनकवार बलहार॥

इतिश्री जोग बांदना समाप्त शुभंमस्तु।

हरिश्चन्द-कथा

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नम:

दो०—कौमापति को सिमरीए गणपति मिरा व्यास।
गुर बर्नन को रिदे धरि कार्ज होवे रास॥

चौपाई—

बंदो प्रथम गुरां के चर्ना। जिह प्रसाद दुस्तर जग तर्ना॥
सूर्य रूप तिमर के हरता। दाता मोक्ष प्रभू भयहरता॥
बर्षे ग्यान छाक की न्याई। शिष्य भये चात्रक सुख पाई॥
इन्द्र बर्से समा बिचारी। गुर नित बर्से जगत मझारी॥
बर्तन नीच जिवे जलु रहे। ऊच पूर्ण तिस कोऊ न गहे॥
मिले सुरसरी होइ न ध्यामा। पाप करे पवित्र परिमाणा॥
तिमि गुर मिले नीच जनु कोई। ब्रह्मा की सम सर सोऊ होई॥
गुरु है सकल भवन क राजे। ब्रह्मा सम गुरा के छाजे॥

दो०—सप्त लोक चौदा भवन श्राद अन्त के माह।
गुर समान दाता अवर तीन लोक मै नाह॥

चौपाई—

बंदो कृष्णचंद्र के चर्ना। कवल बदन सुंदर सभु बर्ना॥
दुष्ट बिदार्न संत सहाई। विघ्न बिदार्न सभ सुखदाई॥
अचल रूप अच्युत अबिनाशी। जग उपजावन सकल बिनाशी॥
ग्यान रूप विग्यान सरूपा। काल द्वैत ते पर्म अनूपा॥
भिन्न रूप सभु पेखु तुम्हारा। तू प्रभु सकल रूप ते न्यारा॥
जो जनु तुमरी सर्नी आवै। जग मै सुख पर्म गति पावै॥

छप्पै—

सिर मौरमुकटि बजती माला पीत बसन सुहावहे।
कंचन तनी नव सात साजहि नील पट छव पावहे॥
नित करे नव सन घन सुदर कवि कवम छवि को आनही।
जो धरे जुग पद रिद भीतर सोइ पम सुजानही॥

सोरठा—

सुनो संत चितु लाइ हरि भगतिन की वार्ता।
करे कृष्ण सहाइ कथा सपूर्ण होइ तब॥

चौपाई—

नमो नमो गुर पर्म दियाला। नमो नमो जसुधा क लाला॥
नमो नमो सब जग क सगी। नमो नमो महादास त्रिभगी॥
नमो नमो गज बन्न विनायक। नमो नमो सूर्य बर दायक॥
नमो नमो शिव शक्त गमीरा। नमो नमो सुक ब्यास समीरा॥
नमो नमो बस धन प्रकासा। नमो नमो पावक पर्गासा॥
नमो नमो सुर मुनी चौरासी। नमो संत सभु ध्यान प्रगासी॥

दो०—नमो नमो सभ सिष्ट का इद्री नमो नरार।
पच तत्व प्रारम नमो नमो भानसुत बीर॥

चौपाई—

स्यामदास सति गुर क चना। तांकी गहो सुद्रिड करि सर्ना॥
सतदास जो रिदे ध्यावे। र्मा गिया पम सुधु पावै॥
गुर्वपद्मदास गुर दया सरूपा। ज्ञान दया मे महा अनूपा॥
जो सिमरे सोई सुख पावै। गुर जन सोई गुरा का ध्यावै॥
संवत ठारा सै अरु ठई। कृष्ण पक्ष एकादश सिथ एई॥
मघर मास विष्ण की वीसी। मगलवार पुनर्बस धीमी॥
ता दिन उपज्यो रिदे मभारा। रचौ कथा कछु हाइ उचारा॥
जग मै जीवन सुफल समाना। कहो कथा गुरि करै जु दाना॥

दो०—जग मैं जीवन तो भला करै कछुक सुभ काज।
नही ता मृतक हो भला काहे करे बिपाज॥

चौपाई—
जीवें तो जो धर्म कमाव। के जीवें परि स्वाप भाव॥
के जीव परमातम जाने। के जीव गुर भगति सुजाने॥
के जीव सा मानस रूपा। क जीवें धर्मी जग भूपा॥
के जीवें तीय के वासी। कै जीवें जग सदा उदासी॥
जीवें पुरुष जा जस के साथा। स्त्री जीवें सास सुहाता॥

दो —जीवन ताका धन्न है जो जस सेती मांह।
मिग जीवन तिम मरो का अपजिस जांके मांह॥

चौपाई—
जन्म अथिरथ सदा थिर नही। सति एहि उपजो मन माही॥
अवध धनी दिन अधिक बिहाए। हरि जसु मुख ते कबूं न गाए॥
अबि कछु हरि की कथा बखानो। गुर धर्मी पत्र चितु धानो॥
सभि संतनि की आग्या पावो। हरीचंद की कथा सुनावो॥
ऊक भूक को हाम नि कीजै। दयिसुत की रक्षा करि लीजै॥
सुत नही सुने नही बुध भारी। रसना बासु करो गिरिधारी॥
उपजी अधिक माह मन आसा। कहो कथा चित धर्म हुलासा॥

दो०—जुग पुनीत मति जुग बडा सुंदर धर्म रिसाल।
उपज्यो ताक मध्य मै हरिचन्दु भूपाल॥

सोरठा—
सुनो संत चितु लाइ कथा पुनीतम सुधा सम।
रोम कही प्रगटाइ धर्म पुत्र मन मै सुनी॥

चौपाई—
प्रथमे गुर पग सीस निवावो। हरीचन्द की कथा सुनावो॥
पुरी अयोध्या परम पुनीता। रत्नि जडित कचन की भीता॥
सुंदर पुरी अमित बिस्तारा। भरे कलस दस सुभग सवारा॥
जड़े अनेक मणी क साथा। चमिक ससि सूर्ज की माथा॥
ध्वजा पताके सभी दुआरे। पूर्न सप्त सभी भडारे॥
धर्म बिवेकी नर तिहि ठौरा। रसे प्रम सम ही सिर मौरा॥

मांगत जन गंधर्व समाना। पंडित जन को खास विधाना।।
चार वर्ण जानो क्रमधारी। सचिव जान सुभ कर्म विचारी।।
दो दसि जोजन बसे वजारा। होवहि कर्म धर्म विवहारा।।

दो०—आठ पहिर तिस नगर भन करे निगम उचार।
छाथ कमावे कम सुभ हिरदे प्रभू पियार।।

सोरठा—

सोभा परम अनूप अवध समान वकुंठ के।
कौनु कहै नर रूपु उमा व्यास न कह सके।।

चौपाई—

तांके निकट बहै अनुरागी। अघ नासन सरिजू बडि भागी।।
तांकी उपमा बद वपाने। कै उपमा शंकर जी जाने।।
ता परि चले तरग अपारा। सम प्रवाह मुक्त को द्वारा।।
तरि बरि सघ्न सकल फल पूर। दातु करें दाता जनु सूरे।।
पग पखिस्र तां करे अहारा। रस्ना रटै अनक परिकारा।।
फूले फूल अनक परकारी। वर्णो वस्त होइ बिस्थारी।।

दो०—राजु करे तिस पुरी मै हरी चद बलवान।
धर्म विवेकी कम भानु देत मान धत मान।।

चौपाई—

उठि प्रभात नृपु करित सनाना। बहुरि करे कौमापति ध्याना।।
नौ सति साज करे हरि पूजा। बेसाव बिना रिदे नही दूजा।।
पूजे बहुरि बसतर देवा। तापरि करे सकल सुर सेवा।।
धेन अनेक कर तब दाना। बहुरि पितर के कम बिधाना।।
अवनीसुर[1] के चर्न धुलावे। सुधा समान भोजनु निपतावै।।
हीरे रतन बसतृा देई। तब परमोम्क हरि का लई।।
दिज चर्नन का नीरु अचावे। बिप्न अर्प कछु भोजनु पावे।।
बस्त्र पहिरि सिंहासन जाई। पहिर एक नृप न्याउ कराई।।

---

१ अवनिसुर—ब्राह्मण।

दो०—ता पाछे नृप सभा मैं होइ राय मुनिकार।
मिर्त होइ सम अपसरा मानो सुरपति द्वार॥

चौपाई—
तापरि होइ कथा अमवासा। तीर्थ बत महातम नाना॥
पुस्तक पूज भूप सिर मावै। मांगत धन को दान दिवावै॥
जाइ अपेट तबै भूपासा। परिजा पाप हरै तत्काला॥
संध्या समे भवन के धावै। त्रिकालज्ञ शुभ कर्म कमावै॥
आठ पहिरि शुभ कर्म कमाई। परिस्वार्थ सुचि उठि कै धाई॥
ताकी नार कर्म अनुरागी। तारा लोचन अति बडिभागी॥
तिस के कर्म सुनो चितु लाई। मानो सील सुकर्म बनाई॥
प्रभु की भगति दया को रूप। किये कर्म ते रहित अनूप॥
सत दिजो क पद अनुरागी। प्रभु की भगति रिदे महि पागी॥
कर बसु चक्रायण माग। बोले बचन न बिनु मर्यादा॥

दो०—तन सुगंध सीस धौं बदन द्रिग कुरंग गज चाल।
मानो सागर की सुता रितु ते धर्म रिसाल॥

दो०—तेजु समान मर्यक के सम सपीप्रनि परि दियाल।
हरे सकल दु:ख जगत के ऐसी बुद्धि बिशाल॥

चौपाई—
बरस पचीस बीत्र मर नारी। बिधि औरो तिन करे सवारी।
एक पुत्र तिन के गृह आयो। नाम रिवदास बसिष्ट धरायो।
अति पुनीत सुन्दर बडिभागी। स्याम धर्म मै अति अनुरागी।
करी भूप दिज सेव अपारा। गऊ अस संकल्प उदारा।
धर्मराज जग करै भूपाला। मत्री नृप के बुधि बिसाला।
एक दिवस भूपति मनि आई। रचो जग्य कछु संघ नि पाई।
इक्कासी अब साठ बिचारे। करि संकलप भूप मन धारे
जित जित बेद कहे मख कर्मा। तितं तित भूप करै नित धर्मा

दोहा—करै जग्य बिधिबंत नृप हरीचंद बलवान।
सप्त लोक को बेघ के बसु छायो निर्वान॥

चौपाई

हरीचंद को धर्म बिलोकी। इंद्र उपज्यो मन महि सोकी।
देव अपसरा सकल बुलाए। सभि को अपना कष्ट सुनाए।
हरीचंद को सपु बलवंता। छीने राजु करे मम मता।
कहे देव सुन ए सुर राजा। पठो अपसरा पूरे काजा।
चली उर्वसी आयसु पाई। पात्र रूप सभा मै आई।
भूप कह्यो तुमरो को देसा। कित निमित्त कीनो परवेसा
बोली बधू तबै छलबानी। सुनो उदार धर्म सुरज्ञानी।
सुनि गुन बचन तज्यो तुमारे। बडी प्रीति अति रिदे हमारे।
सुमि देपो निज गुन दिषरावो। आज्ञा सै निज भूम सिधावो।
उठी तबै भूपति सिरुनाई। निर्त करी कछु कही नि जाई।
राग तान सुर ग्राम अनूपा। गावहि राग धरे जन रूपा।
काम बाम तिन दीए भलाई। हस मुसकाइ निमष होइ जाई।
कबू दीन होइ तनु सुरझावे। कबि प्रसिद्ध हो नर्त दिपावे।

दो०—सभा सकल मोहत भई भूपत सहित सुभाइ।
जैसे प्रबल बियार ते मेरु नहीं मकुलाइ॥

चौपाई—

जैसे पारस धर्म पदार्थ। सत जना के माही स्वार्थ।
अनेक बतन करि अति अकुलाई। दीए पान भूपति बैठाई।
छल्यो न नृपु दीन अति भई। अवर सभा आतुर चलि गई।
जाइ इंद्र को बिरतु सुनायो। बहुरि एकु प्रसंगु दिखायो।
कहै उबसी सुनो सुर राजा। कहो कथा पूरो सभ काजा।
ब्रहमनु एकु रहे पट कर्मी। बिप्पण भगत भए महा सुधर्मी।
एक दिवस तीर्थ के हेता। चल्यो बिप्प ज्ञान तत्ववेता।
मार्ग माह कुरंग दिषायो। ताके संग स्वान भपिटायो।
अघुमी पूज देप सकुचावे। स्वान कहे मनु दीन सि आवे।
कहो नाथ ताके कित काजा। हरीचद को दिव तुम राजा।

दो०—नहि दया तुमि पुरी की हरीचंदु सुरईस।
चास न मिटयो छिन को गयो चाहै जगदीस॥

चौपाई—

रच्यो इंद्र तपु केसव द्वारे। सम सरीर पद नप पर बारे।
अवर इस अैसो तपु धारयो। अस अहार चित ते सभि टारयो।
जिम बिधि वरदे कष्ट दिपाई। कष्ट निवार्ण केसव राई।
देप कष्ट सत का जबही। मज्जावान होइ हरि तबिही।
देप इंद्र का तपु अधिकारी। चलि आए तब बिष्ण मुरारी।
दया सिंध प्रभु कृपा निधाना। ईंद्रि प्रति बोले भगवाना।
अहो तात किउ कष्ट कमावा। जो चाहो बर तप ते पावो।
देहु नाथ बरि बचन समेता। मांगा सुम मनि भावे जेता।
हरीचद नृप अवध रहाई। तांका धर्मु नष्ट होइ जाई।

दो०—सुने दयपत बचन जबि प्रति सकुचाने नाथ।
धर्मु निवाहुन नामु मम करो धर्मु किंउ घात॥

चौपाई—

दापर नृप निज भक्त हमारा। जन समान मुहु और न प्यारा।
जैसे बेद बखा जग माही। बिनु दिज निगम नि सोभा पाही।
दिज चाहित गति मौर बनावे। घृत कहु कैसे दिज प्रगटावे।
संत अनेक मोहु सम भए। ईसर कहो संत किन कहे।
संत दुःख मोको नही सोहे। तुम जा करो सु तुम ते होहे।
सुरपति आइ कहो रिपि राजे। हे स्वामी पूरो मम काजे।
हरीचद का धर्मु गवावो। हृमिरे रिदे अनद बढावो।
देव रिपै चित बाति बिचारी। देपो नृपति प्रतीत प्यारी।
जाय बिलोको नृप को नेमा। है इस्विर किंवो होत प्रनैमा।
रूप तपी बैराहु बनायो। नृम आश्रम नौतन सम धायो।
रक्षक देप्यो नैम निहारी। बात अनेकन उचिरी डारी।
रक्षक उौंबपटी पहि आयो। सम बतंतु तिन आप सुनायो।

दो —भूप सुनो रक्षक कहे कह्यो नाथ सत बाति।
व्यास नि कीजे फूल फल नौतन बाग निपात॥

चौपाई

भूप कहा तांको कहा हुआ। तांका दुष्ट कौनु जग हुआ।
जिहि बध हरि हरिणीय चमारे। नाथ रूप सिहि दाग उपारे।
सो भविसौ ठांडासिहि ठौरा। चलो नाथ सावौ गौरा।
कै बहु तनि धरि शिव विधि आइयो। कै होएणी निज रूप बणाइयो।
तबि राजे हय वेग बुलाया। चमू रहित भूपति उठि धाया।
नरपति वेय वेराह नसाना। पाछे चल्यो भूप बलवाना।
सरजू अघनासम के तीरा। धरि बैठो मुनि तपी सरीरा।
तिसी ठौर पहुच्यो नर नाहू। बैठो रूप तपी धर साहू।
वेय तपी नर्मेसि सिर नायो। बहुरोमूप वराह पुछायो।
तपी कह्यो हमि नाह निहारे। कोऊ न पवित सचिव तुमारे।
ऐसे समे पुनीतम राजा। सूकर योजो तुमि किस काजा।
मानस जन्म न वारवारा। किस विसरायो प्रान प्यारा॥
ते नर धन्न जगत के माही। करै दान हरि भगति कमाही॥

दोहा—धन्न पुरुखो जगत मै सुनो भूप बलवान।
परि स्वार्थ हित सो करे भक्त प्रभु सनमान॥

चौपाई—

तांते तुम छत्री को रूपा। होते नैन परो परो किति कूपा॥
विलम त्याग कीजे इस्नाना। करो दान केशव के ध्याना॥
तबि राजे दोनों कर जोरी। हाथ बध के करो निहोरी॥
उत्तरेया भूप मुनी के भाषे। खस्त्र खोल्ह धस ऊपरि राखे॥
मज्जन कीयो पुनीतम बारा। गुप्त दाम मन भीतर धारा॥
सरजू मज्ज मुनी पह आए। आगे वेस मुनीस बनाए॥
कन्या तरुण वास बलवाना। वस्त्र अंग विवाह समाना॥
नृपत देखि मुनी को भाषे। कहो सत्य इहि क्या रखि राखे॥
आपु यथार्थ हमरे आगे। छल अरु कपटि गिरा को त्यागे॥

दोहा—नेनो संतत नृपत की सुनो भूप चितु लाई।
पढो जाम परमार्थी इनका करो विवाह॥

चौपाई—

देस बिहीन थकि पितु माता। तूं भूपति है जग बिख्याता॥
कन्या कुल का मय पुजारी। आयो जान तुमे उपकारी॥
ताको भूप कहृया श्रुत ज्ञाता। जाको मात पिता नहीं भ्राता॥
तब मुनि कह्यो नि साधो दारा। भूप आत है समा हमारा॥
देवा सभ्न मिवाह कु राई। जाते अवधि होत अधिकाई॥
बेदी रची नदी के तीरा। बैठो भूप सिमर रघुबीरा॥
कीयो बिवाह नियम जो कहृया। बालकु तिसी ठौर बहि रहृयो॥
कहृयो कुमर कु कुथ देहो राजा। देत दत बिनु बिघाह नि काजा॥
मूस्यो मैं जो ब्याहु करायो। मगसा कष्टु मोहि दिख्यायो॥
सोच करो सुत रिदे नि आना। मैं निज राजु दीयो तुम्हि दाना॥
तबि दिज कहृया दक्षिणा दीजे। ब्याह दान बिधि पूर्ण कीजे॥

> दोहा—कीयो नृपत सकलप तब कंचन थाली भार।
> होणहार हिरदे बसो पाछे करो समार॥

चौपाई

तब एहि बात भूप मन आई। दामु कीयो ग्रह मैं कछु नाही॥
तब दिज कहृयो द्रब मुहि दीजे। जाहु भवन राणी ते लीजे॥
आगे करत हुती सुभ कर्मा। भूप बचन सुनि उपज्यो मर्मा॥
राज दान सुनि अति हरिपानी। कचन की चिंता उरि आनी॥
बस्त्र भूषन सकल उतारी। मैरी चीर लीए तनि धारी॥
चली भूप पैं सिमर गोपाला। संचत चले संग बुद्धि बिसाला॥
सिमरत जात पंथ रघुनाथा। धर्म निबाहन संकट साथा॥
निकट जाइ पत कीयो प्रणामा। बोली बचन सुभग नृप बामा॥

> दोहा—चिंतन कीजे जगत पति समा न ईहा एहु।
> राजुदीयो जिउ बालको दिज को दीजो देहू॥

चौपाई—

दास सचिव को भुज गहि दीने। तबी धनाधि को बिनमा कीने॥
भूपत कहृयो सुनो मुनराई। बेचो हमे जहा मनि भाई॥

कथन कह्यो चतावो माटी। योगो सकल तुमारी पाटी ॥
सब दिज क्रोधु रिदै मह कीना। नृप रानी को अति दुखु दीना ॥
बचन हाथ कर सातन मारे। त्यागो तुमै कहो सुत हारे ॥
नृपति कह्यो होइ नही एही। कचनु लेहु बेच मम देही ॥
तब दिज तीनो पथ चलाए। अन अहार बिनु धाम दुपाए ॥
पथ कष्टु कछु कह्यो न जाई। धर्म पुत्र को रोम सुनाई ॥
अपना कष्ट भूप बिसराना। दिज दुख देख बहुत अकुलाना ॥
ब्राह्मण भूषा हमरे साथा। यहि है हमै बडो उतपाता ॥

दोहा—मन महि सोचत मग चलति बीते घटि दिन चार।
पहुचे काशी दिज सहित रानी भूप कुमार ॥

चौपाई—

काशी धर्म कतूहल भारी। अति पुनीत शकर की प्यारी ॥
कहिन नि आवै सकल समाजा। रवि प्रकाश अलूक किव काजा ॥
विक दास तिह ठौर उतारे। आए लोक परीदन हारे ॥
मप रानी को रूपु अपारी। आई गनका लेवन द्वारी ॥
तब राजा मन अति बिलपाना। कीनो रिदै सूर्य को ध्याना ॥
हम रघुवंसी वंस तुमारी। आत धर्म अस्तुपा तुमारी ॥
कुप्यो भानु सुर सकल पठाए। मर्कट रूप धर्म पहि आए ॥
नगर नायका सकल सिधारी। गई भाग सो उबरी नारी ॥

दोहा—चली धर्म की बार्ता आई नगर मंझार।
रानी बालक ल गयो वे दिज पन्डी मार ॥

चौपाई—

ब्राह्मण हुतो तत्त्व को बेता। ज्ञानवान हरि भगति सुचेता ॥
वृद्ध अवस्था परि उपकारी। ता प्रति रानी बात उचारी ॥
तात कहो हम कछु सेवा। धरो सीस जो भाषो देवा ॥
पुत्री कोऊ न सेव हमारे। केशव सिमरो बैठो द्वारे ॥
कुमरि कह्यो मोय आज्ञा ताता। त्यावो कुसम प्रभू को प्राता ॥
रानी कुमरि रहे दिज पासा। सुनो भूप की बात सुभासा ॥

सोरठा—

विप्र मए को बोले प्रभू केशव कृष्ण मुरार।
धर्म छुड़ावौ भवधि पति कसा द्वादस धारा॥

दोहा—धर्म कही रिपि रोम को कहो नाम प्रगटाइ।
इंद्र कहा सुधारयो भूप विगारयो काइ॥

चौपाई—

रोम कहे सुनीए राजाना। कीयो मघ को नृप अभिमाना।
जग्य दान तप तीर्थ करे। बिनु हरि भजन काज नही सरे॥
कर्म करे आ सहे सरीरा। सो सरीरदाता रघुबीरा।
ताको त्याग करे हंकारा। अनेक जन्म पावै दुखभारा॥
और बात इक रही दुराई। इंद्रि बचन दीयो रघुराई।
अपनि हित प्रम नाह सडायो। बिधि संकर का नाह भटायो॥
अपने तैसो गुन बडमावें। जो जनु प्रभु की सरनी मावें।

दो०—संतन के मन दुर्ज को देत कष्ट गोपाल।
जब सम चंदन ना बसे बाढे न केशव भाल॥

चौपाई—

मान्या मान प्रभू भगवाना। दीयो कष्ट नरपति को माना।
देव जरे परि धर्म नि त्यागे। करी बिनै तब देवो त्यागे॥
आयो तिसी समे चडाला। भार दीस दे सिया भूपाला।
अब दिज भागे नृप सिर नाया। ता पाछे जल पान करायो॥
द्वादस दिन महि जमु नही कीना। हरीचंद भैसो प्रण कीना।
नृप मतग प्रत बचन उचारे। अबि सरीर मम मए तुम्हारे॥
अबि सग प्रान कलेवर माही। कहु दियास क्या सेवक माही।
मातग कहो सुनहो बुधवाना। कहो सत्त सुनो सुजाना॥
जाम तीम जल को तुम ल्यावो। रजिमी प्रेत नगर दिखावो।
अति दाम बाइ जराइ न कोई। मुहिर जुगस दे जारे सोई॥

दो०—हमि को आज्ञा नृपत की दाव सो सेहु संभार।
काटो बरन युग मुहिर नरि दे करे मुहार॥

चौपाई—

आज्ञा मान लई भूपाला। करने लगा कारज ततकाला।
न्यौवे नीर त्रिवेनी पावन। घरे नीच गृह सुर जसु गावन॥
काम चार प्रहु टहिल कमावे। बिना कहे जो दिष्टी आवे।
जिहु को कहे तहा उठ भागे। मान बिश्राम नृपत समु त्यागे॥
जब नीच समु सेव कमावे। मन मैं कृष्ण गुन गावे।
तीन जाम जलु भरे भूपाला। गवने नगरी बुध बिसाला॥
जाम एक दिज के गृह जावे। सुने कथा परमतिम ध्यावे।
रजनी आइ प्रेत मस्थाना। ध्यावे हिर्दे पुरुष पुराना॥
निद्रा कसी बिना अहारे। कहे रोम सुनु नृप हरि प्यारे।

दो०—करे सीव ग्रह नीच के रघुबसी राजान।
गवृ करे कित दर्ब को ते मत मद अजान॥

चौपाई—

अपदा अस भूपत परि पायो। तब नर पति चित दृढ ठहिरायो।
हमि परि कृपा करी गोपाला। सिमरन समा दीयो नदलाला॥
राज समै हरि भगति न होवे। ध्रिग नर स्वास भजन बिनु षोवे।
अपदा हुतौं तऊ सुपु भयो। ज्ञान बिचार नृपत सुपु भयो॥
धाक पाने हेतु हमारा। सहित कष्ट भूपति अति भारा।
प्रभु बिषयनि की मैलु गवावे। बिना भगति प्रभु भेदु न पावे॥
असे बीते नृप दिन सीसा। ईस रिवेइ धरे नरि सीसा।

दो०—गई देह घटि भूप की रहे सप अष स्वास।
आए त्रिबनी नीर को गर्भ न कलस उकास॥

चौपाई—

निज सत्या प्रभु भूप तन धारी। कोऊ न जाने ऐस मुरारी।
रानी के मन उपजी बाता। देषो आइ प्रान पति माथा॥
ईस्वर भर्त्ता भेदु न कोई। ईसी नगर बासन मैं होई।
दिज आज्ञा ले चली मवेनी। सुंदरता को सुन्दर वेनी॥
सीसवात हरि भगत सुजाना। पहुचा सब गंगा अस्थाना।

दोहा—गई त्रिवेणी के निकटि देखे सम ही घाट।
त्रिह न पायो नृप कहूं मति कुमलानी गात॥

चौपाई—

मन मै सोचे करे बिचारा। कौन ठौर मम प्राण प्यारा॥
इसी नगर के ऊौर हि गियो। अबि पीआ मिलन दुहेला भयो॥
सेव न रही दर्सन भी नाह। बिधि के अंक न मेटे जाह॥
भ्रमे बिप्पण धर्मी अवतारी। फंसी भावन होवन हारी॥
तब मानस की कौन चलाई। नरि मति सोच करे कोऊ भाई॥
पै देखो नीचन को भाटा। होइ सोई जो ईस्वर ठाटा॥
खोजत गई त्रिवेणी तीरा। घाट मतंग मरे नृप धीरा॥
रानी देख्यो नृप सरीर। समा बिलोक उठी तन बीर॥
हुतो मास सौ भयो उदासा। रहे संच नृप धर्म स्वासा॥
ऊौर रहे त्रिग कमल सरूपा। देह बिहीन भि पावै रूपा॥
रानी तब नृप कीया प्रणामा। धन्न धन्न नृप कीया बखाना॥
देखी भूप पतिबृता नारी। चले चार त्रिग नीर अपारी॥

दोहा—धर्म कहो रिष रोम को हे मुन मर्म मिटाई।
राजु त्यागो धर्म हितु किउ पछतावे राइ॥

चौपाई—

धन्न बुद्ध तुमरी राजामा। राजा नमित नाही पछुताना॥
बिछरे मीत मिले जब भाई। चले नीर त्रिग एही सुभाई॥
रानी कहयो कवन यह रह्यो। सम बितनु भूपतु सम कह्यो॥
रानी पूछ्या बहुरा राजा। कीयो अहार किधो नहीं काजा॥
भूपत कह्यो सुनो हे नारी। यहि बंगाल के ठौर हमारी॥
तिस ग्रहि कैसे भोजनु पावो। हित करि देह तजू नही पावो॥
पूछो मौर बात अबि तोही। उठे कलस भायो बिधि सोई॥
रानी कह्यो हाथ नही लावो। नृपत एक अबि तोह बतावो॥
जल मै पैठे कांधे धरो। चलो भवन दिव करुणा करो॥
नृपत नीर तट सीस उठाया। जीरन चीर मुकांधे पायो॥

कमल उठाइ चल्यो भूपाला। निर्पयो आवहु दुपी चडाला ॥
हरीभा सुनो हमारी बाता। कहो कवन दुष तुमरे गाता ॥
करो भहार कि रहो उपिवासा। कहो साचु मम आगे दासा ॥
तुम आज्ञा बिनु कछु नही पायो। तुम पूछ्यो नही मोहु सुनायो ॥
असो भवन भवि करो भहारे। मही नाथ सो काज हमारे ॥
सीधा लेहु जोऊ मन भावै। मुनो नाथ सो सोहू न भाव ॥
आज्ञा होइ तो करौ भहारा। ल्यावो नगर मांग घर चारा ॥

दोहा—जन्मु हमारा चतरी भए तुम्हार दास।
देह तुमारी सरण है अन्न हमार पास ॥

चौपाई—

तुमरो ग्रह नही करो भहारा। मानस जन्मु म मारबारा ॥
सेव करो तुमरे अस्थाना। जब लग बसे देह म प्राना ॥
मातग कहे सुनु बुधि बिशाला। देखो कोरण मो हृये माला ॥
देह कहो तुम सो नही काजा। मास रुप और रुधिर समाजा ॥
और देह म भरे विकारा। देखो तुम भी कहो विचारा ॥
मै तु दर्व दोमो अति भारो। तुम का मोहु दीआ मो कहो बिचारी ॥
पच तत्व सो द्रिष्ट नि आवै। आतमनिहस्वाय श्रुति गावै ॥
इंद्री भरपरिकिर्ते हंकारा। मन है सो निर्मल अपारा ॥
पाप पुन्य को देह कमावे। सो प्रानी से सग सिधावे ॥

दोहा—तोहू कह्यो मै विकयो हो कहा बिचार्यो तोह ॥
ठोर चमी देह तुम बिकी छुटी बचन विधि होई ॥

चौपाई—

प्रथमे देहि तिसको की कहीए। आद पुरुप की जिम ते लहीए ॥
माता पिता की प्रगटि कहावे। जाते जनमु अमोलक पावे ॥
गुरु धारे ता गुरु की होई। जुबती की जाने सम कोई।
कुल प्रोहित को कहै ज्ञानी। ग्रैसी बात सो सुनी बपानी ॥
बुसे रिदे मुप कहै चंडाला। लपे दास की बुद्धि बिशाला।
उनि की है ता कहो बिचारी। उत्तर दीज मोहि संभारी ॥

दो०—उन ते मै उतपत भयौ रह्यो एक भव तोह।
सुनु मतग पितु साइ के कहो जथार्थ मोह॥

चौपाई—
सकल जगत ईस्वर को माही। सो अबि कहो सुनो पितु साई।
तो पै बेवो मम पुर्वार्थ। दीयो तौर सो कहो जथार्थ॥
पितर कर्म से करि सुत छुटिकावे। तिरीया ते जव सुनु प्रगटावे।
गुरते मुक्ता ते शिष्य तबे। गुरु के बचन धरे चित अबे॥
प्रभु प्रसन्न जा भगत कमाही। दास उरप तजो आज्ञा माही।

दो०—बेचे मन की भावना और बेभना काहि।
इष्ट न त्यागे बस का कहे बेद प्रगटाइ॥

चौपाई—
नीच जनम कह बुद्धि तुमारी। कांते सही देहि भ्रम टारी।
कहो दास सुनीए पितु साई। क्षत्री जन्मु पूब मैं माही॥
नीच संग दिज मन हित भायो। मातंग जन्म तां फल ते पायो।
उजैन नगर मम तुम था बासा। तुमर भवन होत मै दासा॥
सेव करी तुम दव न दीमा। उसिटा देस निकारा दीमा।
मम तुम बीच हुतो करतारा। तिन प्रम कीयो तोह पनहारा॥

दो०—जैसी तुमरी भावना तसे करो प्रहार।
दोसु न दीजै मोह कछु फल दाता करतार॥

चौपाई—
नगर जाइ कै करो प्रहारा। मैं जाहिल था धर्मु तुमारा।
हे नर धन्य जगत के माही। अपद परे सत्तु त्यागे नाही॥
जो जनु अपना धर्मु मवावै। जम पुर बुधी जमत दुप पावै।
मै आज्ञा नृप पुरी सिधायो। जाच नगर तंदल से धायो॥
इन की भिक्षा तबी भूभासा। नीच भवन भरि दिज भूपासा।
आइ त्रिवनो तीर सधारे। दया रूप नृप कीयो बिचारे॥
आव दिज कोऊ करे प्रहारा। तव सेवन है जोगु हमारा।
बिस्वामित्र रूप दिज आयो। चर्न पषार भूप बैठायो॥

१ जन<जल

सम भोजनु दिज कीयो महारा। कहो भूप नित निवत हमारा।
नीर पीयो नृप सब बड भागे। नित्य सेव सो करणे लागे॥
उठे प्रात वहु तदस ल्यावे। तिन समिनन सो दिज तृपतावे।
मैसे बीत गयो इक मासा। दिज मुक्ते नृप रह उपासा॥

दो०—यथा सिभ उपजी दया योसा सीम रिपिराइ।
कष्ट निवार्न भुप दैन सक्ट कर्न सहाइ॥

चौपाई—
लै महार भूप तहा भाए। श्रम मति भया दिज कहू सिधाए।
नरपति मटि भीतर मकुलावे। धर्मु रहे दिज भोजनु पावे॥
सूर्व ताप भरी तिह कामा। करि महार श्रुत बुद्ध बिसासा॥
दिज बोहुत था धर्मु तुमारा। तुम सत राप्यो जगत मभारा॥
तब ब्राह्मण नृप उौर जिमायो। उपज्यो मधिक सो भोजनु पायो॥
विश्वामित्र तब धाक बुलायो। ताको इक उपदेसु वतायो॥
देपो धर्मु भूप की नारी। मरिषगी इहि बुद्धि उचारी॥
जो त्रिमा का धमु छुडावो। तौवो भूप धर्मु को धावो॥
सुना मुनि श्रुत कहैं बिचारी। पाप पुण्य पति पोवे नारी॥
भूप भीमा पति पापी तारे। नीच मारि पत नरके डारे॥

दो०—स्वर्ग पठे पति पतति को सतु रापे जो नारि।
शुभ मतकि नीच तीम देवे सभ गुन टारि॥

चौपाई—
तांते जाइ देपु नृप नारी। सम ते बुद्धि तुमारी भारी॥
चर्से तपी सुन सुरपति बानी। पहुच्यो तहा जहा नृप रानी॥
जात कुमर नित दिज फुलबारी। ल्यावन पुहप हेत बनवारी॥
बन भुयम तिहि हाम कमामो। गिरयो कुमर मासी दिप्पायो॥
गियो निकट तरवर रपवारा। वेप्यो बाल प्राण ते प्यारा॥
सोमा बिनु प्राणमि इतं पावे। जो बिसत ते मदन रिसावे॥
फूले फूल धनक बहु ओरा। परयो मध्य तहा बालकिसोरा॥
उडगण सो मैमक स्साए। मानो सभी मनावन भाए॥

बदन सुधारयो गोद हि लीया। मानो ससी प्रसोपन कीया॥
पंथ चल प्रत बदन निहारे। मिउ सरोज हिमकर के मारे॥
मार्ग मिले भाऊ भरि नारी। करे प्रमु तिस रूपु निहारी॥

दो॰—गयो भवन तब बिप्र के मासी जगत अपार।
प्रेम बिकल बोलत बचन दासी पूत सभार॥

चौपाई—

बीनत कुसम भुमग डसाना। कीयो बास के प्रान पयाना॥
रानी कहेउ तजो इस ठौरा। सेव करो दिज बोल न बौहुरा॥
तुमरा पूतु मैयक समाना। बिना हेत किउ बचन बखाना॥
सुनो दास नदी नाम सजोगा। करे मूढ भाबे क्या बियोगा॥
सो भरि अवनी चलता रह्यो। बचन श्रवण सुत बिज इउ कह्यो
पुत्री ना कछु दोसु हमारा। तुम परि क्रोध बंत कर्तारा॥
जाहु देस की रीत कमाबो। माता गाग गगा महि पाबो॥
तिसी हेत तिन सीसे उठाई। बासु कठ सो लीया लगायी॥
चली तहा जहा प्रभ निवासा। मनि त तजि नार सुप भासा॥
तिसी समे हरी चर निहारी। बोल्यो बचनु सुनो हे नारी॥
जुगल मुहिर दे चीर हमारा। तबि इसि ठौर करो बौहारा॥
रानी कहे सुनो पीआ प्यारे। तुम सो भिन सु कहा हमारे॥
इकु भूपनु रह्यो कठ बुराई। लीयो भूप सो बेग छिनाई॥
दागु देइ ग गा तटि आई। बालक जल में दीयो बहाई॥
ग गा को प्रभ बचन उचारे। रापो समभ अमान हमारे॥
इसको जीवन करै महारा। एहि बालकु मोह सभि ते प्यारा
भूप बचन करि चलता रह्यो। रानी का दुप बानि न कह्यो॥
होइ बिकल इक मठ मैं सोई। सकल प्रास तिन जग की पोई॥

दो॰—बिस्वामित्र तिसे समे कीयो उोर धमु जाइ।
कासीपति के सुता के भूपन लीए चुराई॥

दो॰—मान पहिराए सोवती इस मन नही संभार।
रचि माया का बासु इकु बरियो तहा सिपार॥

दो०—हमर मार के हाथ भूप दीयो वेग मगाइ।
प्रतीहार को रूपु धरि कह्यो भूप को जाइ॥

चौपाई—

कहो बात सुनीए राजाना। सुनो नाथ दिज वत विधाना॥
एक बधू तुमि पुर म भाई। प्रति कलप्रोगन बड दुपदाई॥
मंज्यो दिन तुम सुता मडारा। पहिरे भूषन मनक परकारा॥
धाइयो वासु इकु ठौर मसाना। परयो तहां सुनिए बलवाना॥
धाइयो घना परयो तिहि घोरा। सोई मठि म निद्रा घोरा॥
पठो सन तिस वेग ले प्रावे। मनु जागे कितहू दुर जावे॥
तब राजा कछु दूत बुलाए। प्राज्ञा करि तिस ठार पठाए॥

सोरठा—मतु को करे गुमान दान धम मद राज को।
इसके कौन समान जो कलप्रोगम प्रवि भई॥

दोहा—रोम कहे जो मर उचित सुनीए सो राजान।
करे नि प्रासा कम फल विना भजन भगवान॥

चौपाई—

कहे रोम मुनीए राजाना। माई सन जुवत मस्थाना॥
मई उठा हतिमो तब रानी। देप कोप नरि मति विमपानी॥
बहुरि निहारया माप सरीरा। भूपन मग रुधिर तन घोरा॥
मन महि कपबान तब भई। पक्रि भुजा तब गारी दई॥
नगर लोक सम जुरे मपारे। मह क्रोध तिम के तन भारे॥
मारे ईट डसा उर माटी। बज ससनन छ्री धपाटी॥
एक भकेस देवहू गारी। कुपे ईस तब कोनु उबारी॥

दो०—प्रबरण लाग रिपि राज के त्याग भम मर मोह
सुप भौगो सभ जगत क मवी हुडावो तोह॥

चौपाइ—

रानी कहे सुनो दिज देवा। उचित हमो को तुम पद सेवा॥
करहु प्रमुग्रहु मोपर सोई। ईसर धर्म रिदे द्रिढ होई॥

मागी होन तब मार अपारा। नरि मोगे बो दे करितारा॥
इसी भांति नृप पै ले गए। तब भूपति इउं भापत भए॥
भेजो इसे मतंग के द्वारे। त्याग विसम इस प्रान सिधारे॥

दो —गई भवन चण्डाल के होवे जहा भूपाल।
देप दया उपिजी तिसै बोले वचन विशाल॥

चौपाई—
सुनो दास तुम बात हमारी। महि कल जोगन एहि विचारी॥
मारन तज्यो त्याग जीय भायो। कहो सोई जो तुमि मन भायो॥
पूछो मोह तजो मतु माथा। सुन नृप कुपे तुमारे साथा॥
सो दिल भस्म दास जिय जाने। पूछे म भ ईस सत्त माने॥
उचित दास को भावे सोई। जाते ईसर हानि न होई॥
तुम को त्यागन कह्यो न भूपा। कही नृपत सो बात अनूपा॥

दोहा—निज कर हनी मि जात है सुनो दास चितु लाइ।
आज्ञा कीनी तोह को इसे सिधारो जाइ॥

चौपाई—
आज्ञा मान लई घर आगे। वधू सराहे अपने भागे॥
रानी मन उपिजे सुप भारे। कहे रिदे बडि भाग हमारे॥
पति के हाथ मृत्य सोभा पावे। बिना दोप सो स्वर्ग वसावे॥
रोम कहे सुनीए भूपाला। मिटे न अंक लिपे विधि माला॥
देप समा मुसकावे राजा। हो तो और भव एह समाजा॥
सग चतिसाह इसे घर त्यायो। बिना दोप अबि मारण भायो॥
रानी तब नृप भूप विलोके। अपनी चिंतन पति हित सोके॥
दया भूप मन कीयो निवासा। बन त्यागन की धारी आसा॥

दो०—रानी अपने ईस के देपे नैन कृपाल।
धर्म निबाहन के लीए बोली बुद्ध विशाल॥

चौपाई—
सुनो नाथ तुम कहा सिधाए। करो नि काज जासु हित आए॥
नृप कह्यो सुनु प्रान प्यारी। त्यागो बन तुम जाति नि मारी॥

सुनो नाथ यो दया कमावो। हुमिरा मपिना धर्म गंवावो ॥
घनि म मोहि लि आवे कोई। तुमि ईश्वर को द्रोही होई ॥
तनी मवधि हित धर्म पुनीता। नीच बात धारी किन्तु चीता ॥
कूपो भूपु सुन वचन पियारी। गहे केश मबिनी परि डारी ॥
छुरका काढ कठ पे धरयो। ब्रह्मा विष्णु रुद्र मा फरयो ॥
मौर माइ संग ममर पुनीता। कुस्म वरप मम मारा कीता ॥

दो०—धन्न धन्न भापत मए सुरन सहित भगवान।
त्याग करो रानी छुनुन चढो ममर विमान ॥

चौपाई—

तब नृप को हर कठ मगाया। रानी सो मति नेह बढाया ॥
कहे भूप मालग धु माये। तजो सबै नही तुमरे माये ॥
देवो तबे मलग बुलाइया। नगर सहित कांशी पति मायो ॥
नीच कही पम त्यागी नारा। सुमन बरिप सुर कीयो धयकारा ॥
नीच त्यागुनही कर भूपाला। तरयो नगर मव पसू पखाला ॥
गया ते बालकु हरि लीमा। तबी नृपती की गोदी दीमा ॥
कांशी धन मवधि सम माए। तबी मवधि बर्कुंठ सिधाए ॥
भार पाप ले मुक्त सिधाइयो। रोम युधिष्ठर माप सुनाए ॥

दो०—कथा नृपत हरीचद की सुने मकस चितु लाइ।
होइ रूप सोऊ कृष्ण का गुरु धन हरि गुनराइ ॥

चौपाई—

जो मनु सुने मुक्त होता। होइ मुक्त परवार समेता ॥
मपिरा मो नरि सुने जु कोई। ताको मपवा समु पित होई ॥
पुत्र हेत जो सुनो सुनावे। बढै बस इउ बेद बतावे ॥
भवि मुह दान मभु ईही बीज। मावागौन निवाएा कीजै ॥
दपि सुत मदार जनिन हारे। तासो रक्षा कर करितारे ॥
गुरुबपसदास गुर भए सहाई। कथा कही तब समु प्रमटाई ॥
जो जम सुने रचे हरि संगी। महादास प्रभु लास त्रिभगी ॥

दो०—चैत्रमास नवमी दिने सुभ थिथि मगल वार।
कथा भूप हरीचंद की पूर्ण भई वीचार॥

अडिल्ल—सुने कथा जो प्रानी प्रीत लगाइके।
पावे सब सुप भोग प्रभू को ध्यायके॥
भिन्न भिन्न होवे कवि ही ईस्वर समते॥
भक्त प्रेम सहु दान महादास भिभखते॥

इति श्री महापुराणे दान धर्मे हरीचंद कथा संपुर्ण सुभमस्तु
संवत् १८३७ लिपत आतमाराम।

साईंदास जीवनी

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

दो०—सिमर सदा ओंकारि कों जोति रूप भगिवान।
निर्गुण सुर्गण जो पुर्व दूजा कोऊ नि मानि॥
जगिदवा को ध्यान धरि विनती करों वहोर।
कथा सपूर्ण कीजिए बसो वदन सदा मोर॥
मारति मुति कों सिमरीए सदा कपाल ममति।
जिहि प्रसादि सुकवि समैं धरि मजनि हरि संति॥
गौरी सुति का ध्यान धरि सभ सिध कारण हारि।
विधनि हरनि मगल करम गणपति सेह वीचारि॥
गुर पद प्राग ध्यावहीं मनि बच कर्म वीचारि।
सकटि मैं रक्षा करैं भय जम तारन हारि॥

चौपाई—

प्रथमे सिमरो एक ओंकारा। सकल सृष्ट के रचनेहारा॥
जगि उपिजाविन सकल सिघारी। सम मैं ब्यापक जोत तुमारी॥
सकल कर्म के किरणे हारा। कर्म दातृ कर्मा ते न्यारा॥
ब्रह्मा बिष्णु रुद्र सुरि ध्यावे। निगिम पुराण सत जस गावे॥
मुनि जनि जांको अंत न पायो। नार्द ब्यास रमा यह गायो॥
तुमरे गुन अभ अपर अपारा। जग म कवि को बरिननहारा॥
चीटी सिघु हाथ महि पावे। गगन प्रभू मर करन समावे॥
एकारमि करि धावे नाथा। सहे न तुमरे गुनि की गाथा॥

दो०—धार्मि सनातन एक तूं दूजी काऊ न बात।
बरितनि कहा कमारि कों मत बतावे नाथ॥

चौपाई—

तांते तुमको करो प्रणामा। प्रणिमी मगित देहु वनि स्यामा॥
श्री कविता को सीस नवावों। जिहू प्रसादि सम करि सिध गावों॥
एक रदन को धरो ध्याना। होए सिध सम विविध विधाना॥
पवित्र कुमारि चरिन सिर नावो। जिहू प्रसादि निर्मल मति पावों
प्रणवो दास सूर्य भगिवाना। जिहि प्रसादि पावो सुप माना॥
सिमरो सिध साध सुरि देवा। जिहि प्रसाद पावो हरि सेवा॥
प्रणवो हरि के संत अनंता। जिहू सिमरे पावा भगिवंता॥
सिमरो सति गुरि सन्त कृपासा। जिहू सिमरे पर्वो मन सासा॥

दो —प्रणिवो सतिगुरि साईंदास रिध सिध सुधि देहू।
मनि बच क्रम ध्याईए जो चाहे सो लेहू॥

चौपाइ—

प्रथमे सिमरो साईंदासा। जाके सिमिरे सदा हुलासा॥
धर्मिदास नरि हरि गुनि गावों। विष्णदास सुधामदि ध्यावो॥
रामानदि कों धरों ध्याना। कांधीदास सिमरो गुरि ज्ञाना॥
वंसी राम चरित सिर नावों। यथा बुद्धि मे भाप सुनावो॥
माधोदास सिमरो गुर तोही। जार्थी चदि सिमर सिध होई॥
बिहारीदास मुरारी गावो। अगि जीवनदास प्रेम सो ध्यावो॥
सविस सिध बलराम भगौती। मोरंगराई पूर्न सम जोती॥
नृप राइ ध्यामतराइ बरिनो। दसपति राइ हरीचन्द सरिणो॥
हनुमत राइ पूरन गुरि गावो। महाराज पूरनि गुरि ध्यावो॥
नर्मचदि गुरि कृष्ण सरूपा। निवस्सराइ गुरि परिम अनूप॥
हरी राम साहबराइ बरनो। हरि जस कृष्ण चदि की सरिणो॥
अंमृत राय भामि मस जानों। हरि बस चोपति राइ पछानो॥
सभ परिवारि कहनि मही मावे। गुरिजनि सोई गुरों को ध्यावे॥
सिमरो गुरि महादास जयमगी। आदि अंति मे होवे संगी॥
सोमा राम सिमरो गुरि तोही। कृपा राम सिमरे सुप होइ॥
तातें सम कों करो प्रणामा। करो सहाय होवे सुम कामा॥

दो०—इच्छा मनि मै उपिजिमा गुरि अस कहू बनाय।
कथा सपूर्ण होय तब सम मिस करो सहाय ॥

चौपाई—

प्रथमे सिमरों श्री गोपाला। मदलाल सुंदर वृज वासा ॥
दसरथ सुति कौं धरों ध्याना। रामचंद्र पूरण भगिवाना ॥
धनिक सुतां कौं सीस निवावौं। यथा बुद्धि म भाप सुनावो ॥
ऊक चूक यहा मोसो होई। बुधवानि करिए शुद्धि सोई ॥
समत ठारा सैय नातीसा। करो कथा गुरि पगि धरि सीसा ॥
मघरि मास कृष्ण पक्ष आंनो। ता दिन कथा कही पहिचानो ॥
तिथ भमावस मगल वारा। मध्यानि समे कीयौं विस्तारा ॥
वरिणो नरि हरि पुरी धनूपा। अति पुनीति सुन्दरि जिस रूपा ॥
ताकी सोभा कही नि जाई। सवर भ्रम वेसी अर छाई ॥
सुदिर हटि मैं वारि सुहावे। जिमसे कविस भविर छवि पावे ॥
नाना विध के वक्ष धनूपा। अति विसाल सुंदिर जु सरूपा ॥
पग रसना तहां रटे भपारा। चल सुगम मुक्त को द्वारा ॥
कोइल कीर कपोत सुहावे। चकिवी चकवा प्रेम वधावे ॥
मोरि चकोर पजन वग राजें। वक बुलबुल सुर्प बिराये ॥
तूती चिडी मुनिमा गावै। पपीहा भमा गरिज मुनावे ॥
भौर पत तहा वसे भपारा। कहियो न जाइ सकल बिस्तारा ॥
धनिक भांति तहा फूल बिराजे। जांकी सोभा उडगण लाजे ॥
रावेली सग चबा साहे। सदा गुलाबि गुलाला मोहे ॥
गुल दावी सतिवरगि सुहावे। गुलाबास भध्क छवि पावे ॥
नाना विध तहां कुंज भापारी। कही न जाय सकल फुलवारी ॥
सुंदरि पुरी भमत विस्तारा। यथा बुद्ध मे कहा विचारा ॥
परिम धनूप तहाराजे। सुंदर कुज परिम छवि छाजे ॥

दो०—भल्प बुद्ध मम तुच्छ है कथा भमित बिस्तार।
गुरि भाज्ञा कों सीस धर कहो सकल बिस्तार ॥

चौपाई—

मनिक भांति के भवन विराजे। छजा मटा मधक छब छाजे॥
सिप चित्र का मधक मपारा। सुंदरि मूर्ते मीत मझारा॥
भा पताका कसमा विराजे। सुंदर सकल सभी गृह राजे॥
भगि मैंम का धूप सुहावे। रवि मार्ग मय सोभा पावे॥
नर हरि पुरी मधक छबि छाजे। सांईंदास का बंस विराजे॥
परिम मनूप मनै सुरि जाना। बड़बाग हरि भगत सुजाना॥
मानि घम क भामन हारे। भोगि विराम मधक विस्तारे॥
गीता भादि मर्म श्रुति गाव। समाधान हर्मम्य सुहाव॥
कर्मवान मभ दया निधाना। हरि सिमरन बिन वाति न माना॥
रुप मानि सुदिर छबि भारी। मैन कामदेव निर्दे होवे छबि हारी॥
भूषन बसनि मनिक परिकारा। सुंदिर सभी सकल परिवारा॥
चारि बण तहा मधक सुहावे। कम बाम सभ सोभा पावे॥

दो —हरि चरित्र बिन बाति कों दूजो करे न मान।
परिम बबेकी कर्मवान सभ हरि भक्त सुजानि॥

चौपाई—

सांईंदास तिहि कुल उजियारा। नरिहरि दास भए मौतारा॥
नरहरि दास बैकुंठि समायो। कांशीदास तवि टीका पायो॥
ताके संग सभी परिवारा। बहु नि सको छबि मधक मपारा॥
सकल परिवारि मभा मै छाजे। कांसीदास तहा मध्य विराजे॥
तांकी उपमा कहनि न भावे। सुरन सहत यु सक सुहावे॥
उड़िगण मध्य चंद्र जो विराजै। मणनि मध्य मानिक ज्यु विराजे॥
कही नि जाए सभा की सोभा। सिप कोऊ सोऊ मनि सोभा॥
बाज बज मनिक परिवारा। कही नि जाइ परिम धुनि कारा॥
चम तरंग सुभ बाज बीना। कानु बजे प्रेम रस भीना॥
रबाब पखावज भरि पटतास। भ्रमरि छन्णे भेर करणास॥
राग जहाज सभी बिभ राज। औरि भांति तहा मनिक बिराज॥

दो॰—धडुनि बंसिमी तुबरी डफ मृदंग पछान।
सितार दुतारा मारदी बोसक पजरी जान॥

चौपाई—

बाजे बाजे अनक परिकारी। उपिजे राग परिम छबि भारी॥
गावै भइरों देव गंधारी। राम कली अरि ससत तुपारी॥
टोडी आसा पंचम जानो। जैतसरी असावरी मानो॥
गारा सिंघ सूही बड हूसा। सारगि सोरठ सभ तें सरसा॥
बरिबा गौरी नटि कल्याना। बिहाग कानडा अधक सुहाना॥
किदारा बरिवारी अरि गोडा। दीपक सुने होइी सभ भौरा॥
मेघ मिलाइ हिंडोल बसता। जै जवती कमोद अनंता॥
बैतसरी का छैलीजानो। कामोदी मालसरी पछानो॥
गूजिरी गावै अति छबि भारी। अोरि राग तहा अधक अपारी॥
जो समझे सो आप सुनाए। ग्रहुण राग सभ कहि न आए॥
समे समे करि सभ को गावै। मांनो सुरि पति सभा सुहावै॥

सोरठा—उठे जो रागि गमीरि होइ तान अनेक छबि।
परिम गुनमि की भीरि कह्यो न जाइ समाज सभ॥

चौपाइ—

होइ सभा मै परिम अनंदा। चोया चदन अतिर सुगधा॥
काशीदास तहा अधक सुहावे। अविर मोरछडि मनिक झुलावे॥
बचि जनि असि करे अपारा। चर्चा होइ अनिक परिकारा॥
निग्रुण सग्रुण ज्ञानि विरागा। कर्म बिबेक श्रुति निगम बिभागा
परत महातम प्रभ को ध्याना। तीर्थ उपमा हरि जस जाना॥
चारि वर्ण के कर्म बखाने। सभ कुलि की मिरिजादा जाने॥
करे परसपर हरि गुन ज्ञाना। बुध बानि हरि भगित सुमाना॥

दो०—कांशीदास का बीर सभ माधोदास जिह नाम।
गुनी ग्यानी सा पुरप निर्मल भक्त नहिकाम[1]॥

चौपाई—

ताके रिदे फुरी इक आसा। सुनो संत सा कहौं प्रगासा॥
अपिना बंस धम करि जाम्यो। पूर्न गुरि साँईदास पछान्यो॥

---

[1] नहिकाम < निःकाम।

जाके वस परिम सुप पाऊो । ताका जनम मुनिन ओभ्रा माया
काशीदास का कीयों प्रणामा । कीयो प्रदम संविर महकामा ॥
नाप एक सखा मनि माहो । सिध होय तुम क्रपा म साई ॥
काशीदास तवि कह्यो मोचारी । कहो तात जो बाति तुमारी ॥
नाप एक पूछो तुम ताता । भ्रमि मिटाइ मोह करो सनाता ॥
सांईदास का जनिम सुनावा । भाव भति सम मोह मतावो ॥
कविन काज आए अगि माही । क्या करि गए सुनी मोह नाही ॥

सोरठा—कहीए सम प्रगटाइ माव न सका रहे कछु ।
सो मोह देह मताय भादि मत पूर्ण कथा ॥

चोपाई—
बोले काशीदास क्रपाला । माधोदास भनि बुद्धि विसाला ॥
पूछो तोह भमी सुरि ज्ञानी । सुनो सकली सम कहो वपानी ॥
सो विनि धनि जगित मैं आन । हरि गुरि चर्चा करे बपान ॥
तुम पूछ्या गुरि कथा गमीरा । जा कोइ सुन हरे मौ पीरा ॥
एक समे द्वापर के अता । मयो विप्र इक हरि को सता ॥
काशीपुरी नगिर तिस जानो । नाम सन्त सरूप पहिचानो ॥
ज्ञानिवानि सुंदरि पटि कर्मी । निमल मक्त समान सुकर्मी ॥
तांके सुति इक मयो मनूपा । बुद्धिवान हरि परिम सरूपा ॥
बिद्या गनि मैं अति भरिपूरा । ज्ञानिवानि सम ही विधपूरा ॥
जोगभरिष्टी[1] तांको जानो । नाम नरोतम राय पछानो ॥
हरि जस गावें सन्त सुज्ञाना । पूजे विज मूरि संति पुराणा ॥
वरस द्वादस का जवि भयो । सम सुप त्याग तवी बनि गयो ॥
जाइ लगो तपि करन अपारा । गमा तटि मय काम कुमारा ॥
अति पुनीति आश्रम सुपिदाई । तांको सोमा कही न जाई ॥
तरिवरि सकल फलन के पूरे । दान करे दाता विध सूरे ॥
आम्यागत पग करे महारा । सीतिल नीरि सुगंध अपारा ॥
वेली क संगि पुष्प विराजे । मानो निसा मैं उडिगन राजे ॥
तीनि मांति की बिहारि मनूपा । सीतिमि मदि सुगंध सरूपा ॥
तिम अस्थान करे तपि भारी । सुनो ताति सम कहो बिचारी ॥

---
१ जोगभरिष्टी<योगभ्रष्ट ।

सौ बरिसां तहा बनि फल पाए। सो से बप पत्र भुगताए॥
सो स बरिस कीयो बनि पाना। बहुरि कीयो प्रभ पकज ध्याना॥
नवि से बरिष कीयो तपि भारी। भ्राए तहा प्रभू गिरिधारी॥
उस्तति करी प्रभू भगिवाना। धन्न मुनी सरि सत सुजाना॥
कीया कठन तपु भधक भपारा। भवि मुनि भोगा धाम हमारा॥
जो बरि मांगो देवो मोई। सत सप्त है निस्वष मोही॥
तबे मुनी सरि नन उघारे। निर्पे केशवि भ्रान पिभारे॥
उपिमा प्रभ की कहन न भावे। तुस बुध कहु कहा बतावे॥
रुरप कहा योऊ मनि भाई। या ओह मूल होइ सहाई॥
कोटि मुकटि प्रभ के सिरि मोहु। ससी भरि मानि कोटि मनि मोहे
सोह सुंदरि कच्'[1] घुघरारे। भति सुप धाम प्रान ते प्यारे॥
मस्तक परिम विशास विराज। भवा कमान कोटि छवि छाज॥
तापरि सदिरि तिलक सुहावे। नांकी सोमा भति छवि पावे॥
भविनन कुंडल परिम भनूपा। निर्ते मैन धरे विवरूपा॥
कपोल निप मनि होय भनवा। विना कलक जानि जुग चदा॥
नैन विशाल श्रवन सग सोहे। विन ग न स्याम मीन मृग मोहे॥
मुप पराग छवि कही नि जाय। भनमुन जानि तहां रहे सुभाय॥
बन्नि मध्य बतीम विराजे। ममतापत मुता सुत छवि छाज॥
कीरि नासका परिम सुहावे। बष सति तहा परिम छवि पावे॥
सुंदिरि कठ बैजती माला। उरि विशाल सोहे मनि लाला॥
सिब सुत वाहन सम भपयोऊ। सप्त प्रम कंठ विराजे सोऊ॥
भुजा भमूप भूपण सग सोहे। भति विचत्र सुरि नरि मुनि मोह॥
पीतांबिर कटि कछमी राजे। नाभि पराग कोटि छवि छाजे॥
रजिनी मद्दिन रिपजु कहावे। तिहि वाहन रिप कटि सो पावे॥
छुद्र घटिका बजत भनूपा। कौसावति सी पीठि सरूपा॥
कंचमि दड जप छवि बरिणी। मूपरि बज सुभगि मनि हरिनी॥
चरिन पराग छवि कही नि जाइ। सुर मुनि जनि तहा रहे सुभाइ॥

---

1 कच<कच=बाल।

बिदव नप भसि सोभा पावे। मानि कोटि छवि वेप सजावे॥
एमूर्त जो रिदे बसावे। मामोदास सो बमिम नि धावे॥

कामोदास उवाच—

दो०—प्रपसो रूप निहार के पामो मुनी भानदि।
हाथ जोड़ ठाडा भयो मिर्प प्रभु सुप कंद॥

सोरठा—मुनि पुनि पुसकत गात पकज लोचनि जलि ढरे।
रिदे न प्रम समात करिन लगो उस्तत मुनी॥

मुनवाच—चौपाइ—

नमो नमस्ते एक ओंकारा। प्रपल रूप सम पेस तुमारा॥
नमो नमस्त प्रम जगिनीसा। निगुण रूप सकल जगिदसा॥
सकल भविन में जोत तुमारी। सदा निकाम प्रभू गिरधारी॥
एक पलक सभ सृष्टि उपाइ। नमो नमस्ते सम सुपिन्दाइ॥
तीनि गुननि ते रहत न्यारा। चौथे पदि मैं बास तुमारा॥
भमुर दहन मुरि मत सहाई। नमो नमस्ते केसव राई॥
पोरि पयन कविसाज स्वामी। नमो नमस्ते प्रम निहकामी॥
तुमरे मुमि प्रभ अपर अपारा। शिवि बिध सेस गिरा नही पारा॥
उस्तति करा कहा सग तोरी। माय प्रनाय नाय मति थोरी॥
बरि दीजे प्रम होय कृपासा। मांगे मुनी मुनो मंदि लाला॥
तुम मा मुगु पावो जग माही। रहों सदा प्रम पंकजि छाही॥
एही कामना मनि मह भाई। बिषे वासना फूरे ना काई॥
सबिम पूया नही होय तुमारा। रहे बंस धरि जगिति हमारा॥
जो प्रभ हमारे कुल मह आवे। तुम धर्मनमे प्रीति समावे॥
जबि उपजो तबि तुमरो मरिनी। कर्रों सदा सतत की करिनी॥
तुम मूर्त बम रिद ममारा। टरे न कबिहू मुनि करितारा॥
ए कह मुना गियाया सीसा। हो प्रसंम्न बोले जगिदीसा॥

कृष्ण उवाच—

सोरठा—बोले प्रभ मुसकाय धन्न मुनीमरि बचन तुम।
मम कह वृथा न जाइ जो तोहु मांग्यी सुफल सम॥

चौपाई—

बोले तबे प्रभू भगिवाना। धन्न मुनीसरि सत सुधाना॥
बरि मांगो तुम परिम ग्रनूपा। तुम सुत होय धरो अगिरूपा॥
ग्रबि पधीए मुनि धाम हमारे। सुफल करो सभ काज तुमारे॥
सुरि बिवान प्रभ लीए बुलाई। बठे महां मुनीसरि जाई॥
गए मुनीसरि हरि के धाम। पाए सुप मुनि ग्रति बिस्राम॥
प्रभ की क्रपा जा परि होई। ताको बिघन न ब्यापे कोई॥

कान्हीदास उवाच—

दो०—बसे मुनी बैकुंठ मैं माग भोग ग्रपारि।
माधोदास सुनि लीजिए कह्यो सकल बिस्तारि॥

चौपाई—

बसे मुनीसरि प्रभ के धाम। भोग भोग सदा निहकाम॥
दश सहस्र मुन बरि सुप पाए। हर्ष शोक मनि कबू न ग्राए॥
एक दिवस मुन के मन ग्राई। बरि मांगा जो कहो बनाई॥
प्रभ की प्रीति बिना जग माही। राजि भोगि ऐसे सुप नाही॥
ग्रंतिरजामी प्रभु भगिवाना। हिरदे की जाने घनिस्यामा॥
बोले बिहस प्रभू गिरिधारी। धन्न मुनीसरि प्रीत तुमारी॥
जगित माहि सुप परिम ग्रनूपा। ग्रसन बसन त्रीया ग्रमिक सरूपा
तिने निर्ष मुनी माह लुभाई। हमरी प्रीत रही उरिछाई॥
ताते मुनि तुम ग्रति बडिभागी। प्रीति राप माया निज त्यागी॥
हमरी प्रीति जोऊ उरि धार। रहे मुनीसरि संगि हमारे॥
तुमरे मनि की सभ मैं जानो। कहो तोह सुनिए मुनि ज्ञानी॥
चाहो बरि माग्या मुन राई। भूरि लोक मैं पैठो जाई॥
बधिनी बर्या नही होइ हमारा। ऊहां करों सभ काज तुमारा॥

दो०—जाहु मुनी ग्रबि मही पर होय सिधि सभ बाति।
तिसी बस मय प्रगिटीयों जहां तुमारो जाति॥

चौपाई—

कवन जाति हुय नाथ हमारा। कहीए प्रभू सकिल बिस्तारा॥
सुनो संत मैं तोह सुनावों। जाति माति सभ बंस बतावा॥

अबि तुम तपि करिमे बनि आए। पिता तुमारे पाछे आए॥
पोजे गृह बमि सम स्थाना। तीम पोजे बिबिम बिधाना॥
तुमरा पोजु कहूं नही पायो। तबि बिज गगा तटि कों धायों॥
गगा अमि मय प्रानि त्यागे। बरि माम्यो हम से बकि मागे॥
आगे बहा जनिम मैं आवो। बोही पुत्र कबिमापति पावो॥
अस कहि दिज मे प्रान त्यागे। बसे स्वर्ग मैं दिज बहि भागे॥
तुमरे हेत दीए दिज प्राना। ताके बस आइ सुरि शाना॥
उसके सुति होइ भरो औतारा। नामि मल्लिरिप पिता तुमारा॥
प्रगिटो आइ तिसी के द्वारे। हम होंबि म नि ग्राग तुमारे॥
रामानंदि मोह नाम पछानो। चारो सुति चारो फल मानों॥
बैकुंठ माहि प्रम कथा सुनाई। माधोवास मैं तोहि बताई॥

काशीवास उवाच—

दो०—इस बिम आए मही परि सुनो मनुज बितु माइ।
घरि औतारि कार्य कीए सो सम कहो सुनाई॥

चौपाई—

इस बिध आए अगित क्रपाला। सुनो कथा अबि परम रसाला॥
आज्ञा भई प्रभू की जबं। आए नाथ मही परि तबे॥
दिन पूग अबि होइ बसाए। नाथ मात के गर्भ समाए॥
जनिम लीयो तबि जगत मझारा। सो अबि कहो सकल बिस्तारा॥
सबतु पद्रा से पचीसा। कहो कथा सभ प्रम पगि भरि सीसा॥
पुप्प नक्षत्र त्रिस्पति बारा। अर्ध रैन प्रम मए औतारा॥
बोसी बिप्ण क्रप्म पप्य जानो। बस परि तीनि थिति पहिचानों॥
माघ मास सुदिरि सुघिदाई। अति पुनीति छबि कही नि जाई॥
अति अनदि को रैन पछांनो। मइ प्रभात पुनीतम मानो॥
मल्लिराय ग्रि लीयो बुलाई। उपिमा ताकी कही नि जाई॥
सास्त्र बेद प्रस्न पहिचाने। साम ध्रीक बिध बति बरि जाने॥
बेद बचम मैं पूरा जानों। जोतक्रराम तहु नाम पछानों॥
कर्म बाम सदिर गुण जाता। बिद्या बाम परिम बिक्याता॥
मम्म समा सम ताव बतायो। जमिमपत्रका बिज लिप ल्यायों

पूजा करी अनिक परिकारा । बहुरि कह्यो कछु बाल व्यवहारा
सगल पत्रका बाच सुनाई । ग्रह नक्षत्र सभ दीयो बताई ॥
सभ गुनि दिज ने आप सुनाई । हेमराज नाम ठहिराई ॥
बहुरि कहो दिज सकल सुनाई । होइ हरि भक्त वृथा नहि जाई ॥

दिजउवाच—

इस का यस सदा सुधि पावै । ब्रह्म वाक्य वृथा नही जावै ॥
इसकी कुल प्रभ धर औतारा । वधे यस सदा अपर अपारा ॥
बेद बखिन सभ आप सुनावो । वृथा होइ तबि दिज न कहावो ॥
अस कहि ब्राह्मण भविन सिधाए । बदि जनि जाचक तबि आए ॥
यथा दक्ष तिन दीना दाना । सादरि सहति कीओ सत माना ॥
सभ वृतांतु दियो ताहु सुनाइ । माधोदास सुनो चित लाइ ॥

कांशीदास उवाच

दो०—देव पितरि गुरि महि सुर पूजे विवध बिधान ।
मगत जानी लागे सभै होय करि सति मान ॥

चौपाई—

भक्त पुत्र जिह भविन बसावे । ताकी सुता का सुत जो कहावे ॥
प्रथम करी ताही की पूजा । मारति सुति पित पूज्यो दूजा ॥
सप्ततापति की सुता कहा वे । तिह पति पूज परम सुप पावे ॥
निघ दिन रचे अगिस विवहारा । तिसको पूजो सहत प्रचारा ॥
पुर पति ग्रह नक्षत्र सभ पूजे । और सभी जो देव न दूजे ॥
करी वस की रीत अपारा । होइ परसपरि मगल चारा ॥
निसि दिन होवे परम अनदा । आए देव परम सुप कदा ॥
नाम कर्ण के बिप्र जवाए । व्यजनि अनिक दिये मुगिताए ॥
करि पूजा बिप्र पगि सिर न्याए । साईंदास तब नाम धराए ॥
पांच बरिष के भए अपाला । आए लागी परम रिसाला ॥
देख्यो बालक परम अनूपा । बुधवान और महा सरूपा ॥
तातमात कुल बंस पुछाए । मविन पुत्र लागी गृह आए ॥
सभा जानि कीनी कुडिमाई । लागि लीए मिरजादि सुहाई ॥

बिदया मांग गए निज द्वारे। मंगल भए दोऊ दिन भारे॥
बरस जुगल जबि श्रौर बीताए। लाग्नि बिबाह देन तबि भाए॥
कहि मम बाति गए निज धामा। ह्वान लगे दो दिन सुभ कामा॥
कुलि मिरजादा सकल कमाई। सदा बल जो होती भाई॥
चारि भांति की बनी बराता। बालक वृद्ध जुबान गौराता॥
भूषन बसन सभी का छाजे। वाहन विभमतदार बिराजे॥
दूलो की छवि कही न जाई। पीति बसनि तिन रहे सुहाई॥
सोम सहरा मुकटि बिराजे। मुदरि पदम कंध परि राजे॥
भाल तिलक भ्रम गुनज सुहावे। मुक्ता श्रमित परिम छवि पावे॥
मुषि तमोल दमा रचा सोहे। सुंदरि हांस सभी मन मोहे॥
भूषन सकल भ्रग मैं राजे। सुंदिर पनो श्राबन बिराजै॥
श्रौर सकल छवि कही न जाई। माधो दास सुनो चितु लाई॥

काशीदास उवाच—

दो —चली बरात अपार तब होइ परिम ग्रानंदि।
लयो समाज समास मम अनुज सुप कंदि॥

चौपाई—

चली जनत बजावत बाजे। दीर्में सभी सकल बिम राजैं॥
तिमी नगर म पहुचे जाई। जहा बल समिधी सुपदाई॥
ग्राग लोक मन तब ग्राए। सुंदरि धाम तबी बैठाए॥
निस मिलनी मही अपर अपारा। प्रम पेस कीया सम व्यवहारा॥
कमरि छिड़क सभी नहिलाए। जम क चीर मटि पहिराए॥
बैमाप इकीया साहा जानो। ग्रर्ध रैन कोमा कन्या दानो॥
निसबासर पटि ऊहा बिताए। सौपे सामी मभि मिरिजाए॥
गृह को काजि करै मनि भाव। बिद्या पढे परिम सुप पाबे॥
बरिस द्वादस के जबि भए। सुरिमी क संगि बनि मैं गए॥
पेम चराइ प्रभू गृह ल्यावै। मनि मीतरि केसवि को ध्यावै॥
ग्राज्ञा करो प्रभू गिरधारी। मुकंद दाम को कह्यो मुरारी॥
ग्रबि तुम भूलोक को जावो। साईदास कों करि सिप ग्रावो॥

माता लइ तब मही सिघाए। प्र म नगिरों तास गुरि मली भाए॥
तरिवर तल विसाक्यो माई। पोवयो हुतो पीर भरि पाई॥

कोसीवास उवाच —

दो०—घर्न लगाइ उटाययों जपत उठ्यों प्रम नाम।
निर्ष्यो क्य जु सत कों कौन प्रमू प्रणाम॥

चौपाई—

मुकंदिदास तबि कीउो उचारा। दूष पिमावो वास कुमारा॥
मैठो प्रम इसी मस्थाना। आवो नगरी क्रपा मिघाना॥
काहू नगरी वास सिघावो। दुहाइ दूष ले मावो।
एक सुरमि तबि वंद्दी बताइ। इसको दुहो दूष ल माव॥
दुही लीयो पीर मपारा। मानि घर्न पर करी जुहारा॥
लीयो दूष तबि निकटि बैठार्यो। अविनन मैं हरि नाम सुनाउयो॥
पीमा दूष जेता ममि मावा। ममक वचा साईदास पीमावा॥
जो कोऊ कहू दूष किहू काज। लीने भट करी मिरजाद॥
लीयो प्रसादि गुरों को जवे। दिष्टयो जनिम पाछला सवे॥
मुकंदिदास को घोस निवायो। उठो जब तबि दिष्ट मि मायो॥
मनि महु लागि रही एह मासा। कैहे प्रमू कै ताके वामा॥
सतिगुरि सोदी मया मवि मोरा। नाम म पूछा मैं मत मोरा॥
हरि गुरि को जो नाम नि गावे। यम पुर माहो परिम दुप पाव॥
ताते कहा जपा म नामा। वे प्रम सैहा बियामा॥
भई गिरा तबि गमनि ममारा। मुकंद दास हय नाम हमारा॥
मोरि कामना मनो गवावा। प्रम पंकज मै प्रीत लगावो॥
गिरा सुनी तबि भय मानदा। जपम लगे तबि नाम मुकदा॥
भागी बेरि प्रम बहु बिरमाए। गौयां पेत घने तबि पाए॥
गौऊनिकारि नगिर ले मायो। पेती का पति पाछे मायो॥
मानि ममिर तिन करी पुकारा। साईदास सम पेत उजारा॥
मौर साहयी कहे मनेक। पेत माहू माही पिसमा एक॥
ममराय साईदास बुलायो। कहा पेत किहू हेत गवायां॥
कपति माति के होया भैय भारी। गाई तात मही एको हारी॥

सति कहे जो सहज सुभाइ। करे काज प्रभ पल मैं आइ॥
साँईदास जबि मुख ते भाख्यो। पेत जमाइ तबै प्रभ राख्यो॥
पेती के पति पैत बुलाए। मस्तराय देपन सभि भाए॥
गए पत के जभी हजूरि। बहु बिसा मइ हुय भरिपूरि॥
पेती का पति बिसमय भयों। बीसे पात न एकौ गयों॥
माधोदास सुनो चितु लाई। सकली कथा कहो प्रगिटाई॥

कालीदास उवाच—

सोरठा—करी तबै थिपकार पेती पति कों मिल सभै।
पाछे करी बचारि बंम्न मस्तराय तात तुम॥

चौपाई—

सकल पंच ने कीओ बिचारा। धन्न मस्तराय तात तुमारा॥
पेती पाई सभो निहारी। मबि नही छीमी एको झारी॥
ऐसी कही भवित घर आए। भापो भपिने काज सुभाए॥
पिता मस्तराइ करी बिचारा। बनि नही भेजो बाल कुमारा॥
ताते भवित रहन प्रभ लागे। सेवै प्रभु पंकज अनुरागे॥
सत सेव पटि कर्म कमावे। हरि मूर्त लइ रिदे बसावें॥
करे गृहस्त तप अपर अपारा। प्रगिटि करे सभ जगत ब्यवहारा॥
बीस बर्स के जबि प्रभ भए। अमरदास तवि गृह प्रगटए॥
सादी करी सभी कुलि रीति। भई बाल की सभ मनि प्रीती॥
पच बर्ष जबि बीते जानो। नरिहरिदास जनिम पहिचानो॥
चतुर्बर्ष जबि बीते भाई। बिष्णदास प्रगिटे जमि भाई॥
तीन बर्ष जबिही जमि गए। सुपानंद तवि जगि प्रगटए॥
चारो सुति प्रगिटे अविदारा। तुच्छ बुद्ध कहा करो बीचारा॥
सति सभ को करो प्रणामा। हरि गुन गाइ लहो बिस्रामा॥
द्वादिस बष भए सुति चारो। क्षोरी कर्म कीयो पित भारो॥
चारि बस के लागी भाए। निर्प बाल परिम सुप पाए॥
नमिता देह गए निज गेहू। भयो बस मैं परिम सनेहू॥
भिन्न भिन्न सम तबी बिवाहे। होवै बस मैं परम उछाहे॥
भए बिबाह बन्न जो भाये। उपमा भौरि कहा कोऊ भाये॥

सोरठा—कीए जगित व्यवहार मौर मृजादा वस की।
सुकति मर्म विचार पाए परिम मानंदि तबि ।।

चौपाई—

होय बस मय मंगल चारा। रामा नंद भए मौतारा।।
हाड मास नौमी तिथ नामो। वृहस्पति बारि पुनर्वस मानो।।
वचन हेत भाए महाराज। सकल संत के पूर्ण काज।।
सुंदिरि देह सभी विध राजे। सिरि परि कच घुघरारे छाजे।।
भाल तिलक सुभ रचयों विधाता। ग्रगि विशाल सुंदिर सम गाता।।
दिब मुजाह सम मगि दिपाए। लछनि देव दिजे सुप पाए।।
सकल लोक कों दिसह सुनाग्रो। धरि मौतारा ईस जगि मायो।।
कठिन काज मायो जगि माही। ए हम मर्म मय जानयों नाही।।
द्वादिस वर्ष रहे तुम द्वारे। बहुरो बाल वैकुंठि सिधारे।।
एह मम वचन वृथा नही जानो। ईस सरूप बाल पहिचानो।।
सुनि साईंदास परिम सुप पावें। गुहजि बाति किस हू नि बतावे।।
करि है मनि ही मैं प्रणामा। निस दिन करे प्रभू को घ्याना।।
करि मज्जनि सैं बसनि पहिरावे। भूपनि सकल प्रेम सो लावें।।
ब्यंजन ग्रमिक कराव पाना। प्रीति करें बहू विवध विधाना।।
वर्ष ग्रष्ट के भए कृपाला। भौर कर्म कीयों तिह काला।।
करि इसनानि सभा बैठायो। भूपनि बसनि वास सैं मार्यो।।
पीति पागि प्रम सीस बिराजै। सुरिरा कलिगी कनक विराजै।।
कृष्टिस बानि केसरी जोड़ा। कनिक अनेऊ केसरि पोड़ा।।
पीति उपरना कध बिराजे। भूपनि हेम ग्रग मैं छाजे।।
भाल तिलक केसरि का सोहे। ठामै संदल सम मनि मोहे।।
मुप तंबोल सुंदरि सम ग्रंगा। ग्रति ग्रनूप बालक जो संगा।।
कंचन कक्न करि मैं राजै। हेम जड़ित नगि हाथ विराज।।
रसना सोहे ग्रंबुत बानी। माघोदास सुनए सुरि ज्ञानी।।

ग्रडल—सुंदरि ग्रगि ग्रनूप परिम छब पावहि है।
मुपि पराग छवि निर्पत मैन भजावि है।।

मंगिल परिम अनूप सपी सभ गाविही।
सुंदिर रूप निहारि परिम सुप पावही॥

चौपाई—

माधादास सुनो मितु साईं। आग औरि कथा जो आईं॥
एक समै बठे सुप धामा। साईंदास जपते प्रभ नामा॥
रामानंदि तहा चलि आए। करि दडवत कछु बचन सुनाए॥
सो मै कही सोइ प्रभिटाई। सुनो दास तुम रिदा लगाई॥
रामानंदि तबि बचनि उचारे। सुप्रस्थान इकत निहारे॥
आज्ञा देहु तात हरिराई। चलो धाम निज आइस पाई॥
द्वादश वर्ष रह्यों तुम द्वारे। कीए बचन सभ सत तुमारे॥
कलप माह चवी औतारा। कहे बेद मै आदि बीचारा॥
तिन राम कृष्ण भूप जानो। जो ईहा रहे सो ऊहा पछानो॥
भक्त सनेह अधक औतारा। भक्त समान नही कछु प्यारा॥
बहा संत को कोऊ सिघारे। धरि औतारि आवो तिह द्वारे॥
कार्य हाइ सत को तहा। सेवों दास होही के तहां॥
भक्त जना की टहल कमावों। जगि के कार्ज बेरि न भावों॥

सोरठा—सजो बेग मिरजाए पीरसैन धरि नागसुप।
कविसा न सुप आव त्याग सत कार्ज करो॥

चौपाई—

अबि तुम बचिन सनेह औतारा। औरि नही जगि काज हमारा॥
अबि मै होवो अंतिर ध्याना। आज्ञा देहु पत निहकामा॥
साईंदास तबि बचिन उचारे। आप चले हम सग तुमारे॥
प्रभकौ त्याग रहे जग माही। ताका प्रगु बीतिन जगि माही॥
सुनो सति अवि बचन हमारे। तिम के बचिन टारे नहीं टारे॥
कही भीष बिम होहा बिताबो। बहुरो मोह न आइ समाबो॥
मोहि तोह माहि भिन्न कछु नाही। ईसर सत एक श्रुति गाही॥
तावि तोप करि बाहरि आए। बंस माह किमू भेद न पाए॥
भाई चौदश परिम पुनीता। मज्जन चले सकल संगि मीता॥
पितर सरोवरि करे स्नाना। प्रीति सहत सिमर भगिवाना॥

करि मज्जन सभ बाहरि भाए। रामानंदि तबि बचन सुनाए॥
सुनो तबि प्रवि कहो बिचारा। भोउ तिस सम भओं ब्यविहारा॥
बचिन कहे सभ को प्रगिटाई। सुनो सभी प्रवि रिदा लगाई॥
जिसी सरोवरि जो नरि न्हावे। मुक्त लेह हरि धर्न ब्रसावे॥
मनि चित लाइ करे इस्नाना। यो मागे सो पावे दाना॥
सुधि हित धारि बचनि क्रम सेवे। तात काम सब सुभ सेवे॥
केशवि सिमर करे सनाना। लहे सकल सुंदर फल नाना॥

लहे मुक्त ज्ञानि वैराग जोग है सिद्ध विद्या पाविही।
धनि ध्रर्म काम जु सूर सेवें बिजै करि गृह भाविही॥
करि सभी बनि के काज पूर्ण दुप दारिद नवाविही।
है सुपी सदा क्रपाल केशवि हरि सिमर टोमंडी नाविहै॥

सोरठा—ठाढे नीरि मझारि कहे बचनि प्रगिटाइ नाविहै।
सभ कों करी जुहारि धरिवरि ध्यान भए तबै॥

चौपाई—

कहे बचन सभही सुन लए। धरिर ध्यानि तबै प्रभु भए॥
भए लीन तबि अपर अपारा। चोज्यो सभै फुनि नीरि मंझारा॥
थके बिलोक कहू नही पाए। थकति भए नगिर चलि आए॥
भेजी बिजोग नहो भाखें। मगन सकल प्रेम सो भार्यो॥
साईंदास तबि सभ समझाए। आदि कथा सभ भाष सुनाए॥
इसकों बाल मही पहिचानो। पूण ब्रह्म सभी भगि जानो॥
साईंदास तबि सभै सुनाई। मामोदास मै तोहि बताई॥

कबित्त—

तात कही सुनी बाति सभ टरि सोक गयों सभ ही सुप पायों॥
प्राति सनेह बिसारि कीए प्रभ कों पहिचानि रिदा ठहरायो॥
अमित बिहारि कीए सुभ ही सभ मंगल मोदि अमदि बधायों॥
जानि महातम टोमडीका सभ ही मिल के तहा सीस निवायों॥

काशीदास उवाच—

भक्त करे साँईदास मपारा। कहाँ नि आइ सकल बिस्तारा ॥
जोग प्रेम दया की करिणी। मम मुख तुछ जाइ नही वरिणी ॥
निसवासरि प्रभ पकजि ध्याना। हरि सिमरनि बिन काहि नि माना
सुति दारा का हित बिसरायों। मिज मनि सह प्रभ पंकज लायों ॥
छोडि दीए सम जगि बवहारा। रहे प्रभू को नाम अधारा ॥
आपा परा दोऊ बिसराने। जीवि ब्रह्म एको पहचाने ॥
कछूक बर्स जबि गए बिताई। औरि प्रसग उठो तबि भाई ॥
अमिरिदास पोतो निज प्रेहा। सुपनि है निहारी सिर बनि देहा ॥
भई पुनीति प्रभाति सुहाई। मातिं पिता कों आप सुनाई ॥
सुनि साँईदास गही तबि मौना। कह्यो बहुरि भ्रम मिने को ना ॥
अमरिदास तबि कह्यो बहोरा। सतनाथ मिटावो मोरा ॥
तुम सर्बज्ञ सबिग्य अमि ईसा। मोहि निहारियों धरि बिन सीसा ॥
सुनो तात मैं तोह सुनावो। सुफनि काहि फल आप बतावो ॥

साँईदास उवाच—

सुफने मैं जो तीर्थ नार्वे। महे कष्ट बडि सकटि पावे ॥
भैंसा फील बराह निहारे। सर्प डसे इन्द्र बज्र बिदारे ॥
सो नरि जाइ बेमि यम धामा। रहे अमित नही सुख बिस्रामा ॥
माया सुफने मैं कोऊ पावे। गृह की संपत्त बेग नसावे ॥
सुफने में धरि नगिर बिलको। मिले सभी जेई न बिलोके ॥
भविष मोमि जाई तिन द्वारे। काल बली जाइ तिसे संघारे ॥
सुफने मैं जिस धातु गहे। कष्ट पाइ कै यम पुरि लहे ॥
धुरजनि हुते कं खिम गरासे। महे त्राह होवे उपहासे ॥
दसाए कहि बधू सों थाब। बर्स एक मैं यम पुरि आवे ॥
नीरि बुडे के पूछे पडे। संकटि पडे कैठे नरि मरै ॥
उडे जोऊ नरि निध के माही। तजे देस संसा कछु नाही ॥
बोले निध जो वादि बिबादा। जाब कष्ट महा अपराधा ॥
भीष बस्तु जो सुफने पावे। तासी संपति बेग नसावे ॥
नृपत पाइके सोम मिध करें। तांका तेज निमक मैं टरै ॥

मृत्क वस्त्र जिस मांगे कोऊ। भविगुण बडा आणीए सोऊ ॥
इनि सुफनिन मै जो कोऊ भावे। जपे प्रभू कों दानि कमावे ॥
तुमरा सुपन सुनावो पाहे। भवि सुनि सुपन कहे सुति हाथे ॥
तीसर को जो सुपन भरावे। ताकि संपत निश दिन यावे ॥
सुपन माह गुरि जस दसवि। करे भनंद सदा सुप पावे ॥
पूजे संत विप करे दाना। सहे सुप यहु विवध विधान ॥
हेम दाम जो सुपने करे। ताकि पातक सम ही टरै ॥
देवी का निश दर्सन पावै। ताकि लक्ष पमक म मावे ॥
सुपने मे जो सैनि निहारे। होइ मेघ के वार इमारे ॥
और सुपन है भनिक प्रकारा। सुभ असुभ को लेह बीचारा ॥

कांशीदास उवाच—

दो०—सुपन जु भावे जिस को भला बुरा पहचाना।
जगि सुपन का एही फल जपे प्रभू कों दान ॥

साईदास उवाच—

भवि मायो सुति सुपन तुमारा। ताका फल भवि कहो वीचारा ॥
सोसि जिस भौर ब्याहन जाइ। मास माह यम ताको पाइ ॥
ताते सिमरो श्री भगिवाना। यथा जुगित कछु करिहो दाना ॥
इह दे होइ सुपन को नास। सुनो तावि सम सुपमि प्रगास ॥
भसतति करी चर्न लपटाए। हरि गुनि गाविय धाम सिधाए ॥
सविन माह कीमो दिज दाना। जपन लगे तबि नाम निधाना ॥
हरि सिमरत हरि ही होइ गए। हरि हरि पन में भिन्न न रहे ॥
एक मास प्रभ के गुन गाए। भमरदास बैकुंठि सिधाए ॥
माधोदास सुनो चितु लाई। भागे भौर कथा जो भाई ॥
साईदास बैठ स्थाना। प्रभ गुनि गावित क्रपा निधाना ॥

कासीदास उवाच—

नानकदास तहा चलि भाए। रूप कलवरि का तमि लाए ॥
बिजमि सम साईदास सिधारे। प्रभ कों भर्पे प्राण भधारे ॥
नानक दास तहा बस गए। विजम सिष वहा सम भए ॥
भतिर सुष पटि मेले याति। जगिनामिक इहु बोले बात ॥

प्राज्ञा होइ तो भागे प्रायो। भूप भनी कछु भोजनि पावों॥
नानिक कहे एसे मत वेपी। एमीह का संति विवेकी॥
साईंदास तवि मनि मुसकाए। नानक हमको देपन प्राए॥
बोल तिसी समे साईंदासा। नानिक कहा भरी मनि भासा॥
हम तुम एक नगिर के भेवी। ईहां कहावो मानक बेदी॥
प्रायो तुम को वस सुभाव। तुम सतनि सो कीयों दुराव॥
मुरि सतन [सो दगा कमाव। सोऊ साधु किहि हेत कहावे॥
नानकदास कहै मुसकाई। साईंदास तुम भाग कमाई॥
मे तुम कों तुरि देपन प्रायों। हरि का सति सपूर्ण पायों॥

मानक उवाच—

संति मिले की सुनो वडिभाई। मिले संति प्रघ कोटि मिटाई॥
गंगा प्राद सम तीर्थ न्हावे। कचनि मिर से दानि कमावे॥
सहस्र बर्स वर्त तप धारे। तीर्थ मे जो प्रपर प्रपारे॥
सप वर्ष सेव विज भुगतावे। गुह्य आप के कलप कमावे॥
साचे कर्म भेद सप दाना। पूजे केसवि विवध विधाना॥
करे ज्ञानि श्रुति निगम बपाने। सम ही जगित प्रन्यथा जाने॥
एइ कार्ज सम ही करि प्रावे। संति मिले समफल नही पावें॥
हरि गुरि सति भिन्न नही कोई। मिले जिसी कों उधरे सोई॥
सो फल मोहू प्राप्त भयों। साईंदास तुम दर्सन सहूयां॥

कासीदास उवाच —

दो०—ऐसे बचन कहे तबै जब मानक प्रगिटाइ।
क्षत्री वस मृजाद करि भोजनि कीयो प्रघाइ॥

चौपाई—

मायोदास सुनो चित लाई। कहो कथा सोइ सम सुपिदाई॥
भोजन पाय जुगिस चलि प्राए। बैठे मध्य सभा तवि जाए॥
चर्चा करी भक्त की भारी। कहरो उचिरे नाम मुरारी॥
सुचिमनी छोदरि नानक गायों। ज्ञान रतन साईंदास सुनायो॥
भए परस्पर दोऊ प्रनंदा। गुन गाए प्रभु परिमानंदा॥

नानक कहा वाति सुनि लीच । कछु जनि लहै कछु मोहि दीजै ॥
साईंदास जुग ईम पुराए । जनि नानक के पास धराए ॥
पाधे कही वाति सम भावि । किसी सो मह किस सो पाव ॥
नानक नाम का दोऊ भिगाई । वहु उसमें वहु उस मैं पाई ॥
चुगम वाति परसपरि कीनी । सभी भई कडाही दीनी ॥
मानिक कैहो मोह मस कहावे । विहाहु करै श्रीफल लै भावें ॥
मस कहि नानकि विदया भए । महादेव के दर्सन गए ॥
माधोदास सुनावो तोहू । यथा बुद्ध मैं भावे मोहि ॥

काशीदास उवाच—

दो०—नानकि जनि बिदया भए प्रभू बिराजे धाम ।
सलितापति की सुता जो ता पत जपते नाम ॥

चौपाई—

सिध गुरु जो दास भ्रहारा । सिस मसवारि पिता जो प्यारा ॥
निधि दिन जपते तांको नांमा । जांह पभाव करे विधामा ॥
वाणी करी मनक परिकारा । भविर जगित कतजे विमहारा ॥
साधे प्रेम जोगि बैरागा । ज्ञान मौन होए अनुरागा ॥
सदा प्रभू का सिमरनि करे । भविरि वाति कोऊ रिदे न धरे ॥
ऐसी भगित देय गिरिधारी । भेजे देव बिवान मुरारी ॥
जबै बिलोके प्रम साईंदासा । प्रम मिलने की बाढी भासा ॥
होइ प्रसंन्न सम बंस बुलाई । सभना कों एह बाति सुनाई ॥
तिना कहा जो माज्ञा होई । करैं नाथ हम काज सोई ॥
ल्यावो धेन करे हम दाना । भौरि कीजिए सम सम माना ॥
यद्यपि कर्णं कर्म भि रहे । तदपि कीए बद जो कहे ॥
माधोदास सुनो चितु लाई । कथा सुनो जो भागे भाही ॥

काशीदास उवाच—

सोरठा—कही सुवो इह बात सुनो नाथ मोहि बिमती ।
कहीसुतो इह तात बडा भमत कछु सिप्यलैइ ॥

साईंदास उवाच—

सुनो तात एह सिष हमारी। कहौं सभै मोऊं चितधारी॥
जो मुप कहो सो निश्चे करियो। कुकृति त्याग सुकृति विति धरियों
करियों यथायुक्त कछु दाना। मौरि करौं कविसापत ध्याना॥
कुकृति सों कबिहूं नहो लामो। रविसुवि मास धार जीवा जागो
तीथप्रति दिजो को पोषो। गुरि धरि संत प्रीव सो तोषो॥
करि पटि कम इप्ट देव सेवो। ईसर कौं धरिएणेविक सवो॥
करि विज्ञन हुर को मुगितावो। धर्म रास प्रगिन तप तापो॥
दुप्टन का संगि तियागो। सति धरम में म निस दिनलागो
निगम सुनो परिवष्टू न रांवो। सुकृति समसे रिदे बसावो॥
मात्म चीन्हो सहृति ज्ञाना। मविर कीए बहि सम सति माना॥
सति सिप्य सभ माप सुमाईं। अगित सिप सुनीए चितु लाई॥
करै बडन की निस दिनि सेवा। मौरि धरावे देवो देवा॥
कार्ज करे वडिन को रोवा। सुकृति करै तजै विपरीता॥
मित्र करै सम ही मिष पूरा। सु बिद सपी सुधरि नृप सूरा॥
स्वार्थ मैं चित भय न करै। भापन ही सो निस दिन डरे॥
कुलि के कर्म कबू नही त्यामे। सत्रू मैं मविनि निस दिन जामे॥
इतिमो को करि मित्र न जाने। साधू सिप भीमा नृप भजावे॥
परिभीमा सो हुतु न मावे। जूया तजो भ्रमय न पावे॥
सुरिपति तोषे कर्त कमाई। भगिन तोष के भोजन पाई॥
जो मेही एह सछन करे। तांकी सपत कबू न टरै॥

कांशीदास उवाचि—

दो —सम जु होवे धर्म की तज नही सुभ काज।
जगत माहि सुपि पाविह रविसुति होइ मुवाज॥

छन्द—

सुनि तात बात विचार चितधर एही सिप्य कमावनि।
प्रभ त्याग सुकृति धार भीम प्रीधि प्रभू जयाविनी॥
मनि बचन कर्म विचारि हरि दिसातप्रभूमुन बरियाईए।
जुगल हो सुप रवि सुत न प्रासे एही सिप कमाविए॥

काशीदास उवाच—

सुनो तात अवि सभी सुनावो। बात गुप्त तुम आप बतावों॥
जो मन कुस हो है हरिदासा। ताकी सिध करै सभ आसा॥
हकों त्याग रहे जगि माही। यमपुर दुपीय गति सुप नाही॥
तात बात सभ ही मनि धर्नी। केशव सिमरि करो सुभ कर्नी॥
अबि मैं चलो प्रभू के द्वारि। सति सभी लीए बिविधारी॥
सभ ही कीतों तवो प्रनामा। प्रीति सहत करै लोचन सामा।

सुतवाच—

नाथ नाह तुम बुद्ध उत्तारी। रछ्या कीज सदा हुमारी।
बस सदा प्रभ तुमरो सर्नी। तांकी रछ्या निसि दिनि कर्नी॥
औरि नही कोई ठोटि हमारे। डोहा ऊहा प्रभ चर्न तुमारे॥
हमरी तुम नि परिम बिसाला। नाथ समाल करो प्रतपाला॥
प्रभ सहाइ बिन स्वास नि आवे। नाथ कहा कोऊ कर्म कमावे॥
ताते सदा बसो हम सगा। दुष्ट जोवि प्रभ तजो भ गंगा॥

सुतोवाच—

दो०—कुटम कुपासी दुष्ट जो सो भी करों न त्याग।
नीरि न बोडे काठ को जानि आपने भाग॥

चौपाई—

बोल तबे प्रभू साईदासा। करों सदा तुम माह निवासा॥
जसे गध बसे कुसमाही। औरि आगि आत्म घटि ताही॥
सैस माह जो मग्न बसावे। जलि मैं सभ की दिष्ट न आवे॥
बीज माह जो तरिवरि होई। जो जगि संति लपे नहि काई॥
तिउ तुमरे सगि बसे मुरारी। जुगि जुगि रछ्या करे तुमारी॥
जगित तात बिर्था करि जानो। जिउ सुपने की सपत मानो॥
सुति दारा कों सुप कछु नाई। बिछुरी जनिमो की न्याई॥
जगित मध्य जो मित्र बिचारे। दुप सनेह के दपम हारे॥
माया को जो मुन्दिर जानो। कूडेसी की प्रीत पछानो॥

दो०—मित्र तुमारे जो सभी सो मैं दियौं बताइ।
कहो सभी विस्तार करि तात सुनो चितु लाइ॥

चौपाई—
मनि है मित्र जो हरि को ध्यावे। श्रवनि मित्र हरि जस सुनि भावे॥
चर्न मित्र जो तीरथ करै। सीस मित्र प्रभ पंकज परै॥
हाथ मित्र जो धन कमावे। नैन मित्र हरि दर्सन पावे॥
रसना मित्र जो हरि गुन जाने। दह मित्र हरि टहल पछाने॥
ग्रौरि मित्र सभ कृपा तुमारे। सति गुर मित्र जो भौजल तारे॥
देह मित्र जो एसो करै। ग्रौरि मित्र जाने सो मरै॥
एह तुम बचिन रिदे मैं धारो। प्रभ सो प्रीति न कबिहू टारो॥
अबि तुम हमरी ग्राज्ञा कीजै। मही गुभार कुटा तहा दीजै॥
तृकि ऊपरि तिस खिटिकावों। साल ग्राम सिला तैथ भावो॥
गीता पुति सैम धरो सिरायो। तुलसी चौरा सनमुख भावे॥
कपला नाम गौऊ स भावो। जो तिस कहा सोई पहिनावों॥
तेल घृत गुडि धूप धनावा। भूषन बसनि पीतांबरि साजा॥
गंगा जल सो कीयो स्नाना। बिधवति सहत कीयों सभ दाना॥
यद्यपि कर्णी कछू नि रही। तदपि करी बेदि जो कही॥
माधोदास सुनो चितु भाई। कथा कहो जो ग्रागे भाई॥

कांशीदास उवाच—
दो०—करी गुझारा बंस की ग्रौरि सभी सुभ काज।
पठे जो देव बिवान तबि सकल बस के राज॥

चौपाई—
होइ सचिव तहा ग्रपर ग्रपारा। बेदि पड़े तहा दिज धुनिकारा॥
एक रवाबी सदा हजूरा। तांको कहयों माग वर पूरा॥
तिन मांगयो मैं एह वरि पावो। पिता कहो तौ सचिव सुनावों॥
एही इछया रिदे हमारे। कृपा होवो वचन तुमारे॥
जबि एह सुनी मोन हो गए। तीनि बारि तिस पुन भूम कहे॥
क्या तुम मागयो तैं ग्रज्ञानी। तुमरे रहे न देवा पानी॥
सकल कथा मैं प्रगिटि सुनाई। माधोदास सुनि चितलाई॥

दो०—कीनो दानि अपार तवि सभू का कठ लगाइ।
त्याग जगत प्रभ इत मिल सागिर बूद समाइ॥

चौपाई—

पाछे करी वेद मिर्जादा। मौरि करी सभ कुल की मादा॥
चदनि की सभ चिपा बनाई। तहा जाय क देह टिकाई॥
गियों हाथ मे झूम तमूरा। कीमे बचन प्रभू मवि पूरा॥
बजे नगारे खुले निशाना। हिरए के बाज पड़े सुरि नाना॥
होइ सविद तहा भभक अपारा। झरे नन जनि सुदरि धारा॥
चठि बठे सभ दर्सन पाए। सविद पाथ तिनि झूम सुनाए॥
मैसी देप चगित खिरि मायो। सचिन हेति एहु चलित्र दिपायों॥
बहुर देह तिस ठौरि समाई। प्रम का सिमर धग्न प्रगिटाई॥
कह्यो न जाइ समा बहिसारा। नम म देव कर जैकारा॥
करि काज सभ भविन सिभाए। नरिहरिदास तिसक बैठाए॥
कोए कम जो श्रुति के भाषे। मौरि जगत के करि अभिलाषे॥
जो एह कथा सुने चितु लाई। ताको दुभदा रहु न काई॥
अवि एहि कथा सपूर्ण भई। जो काऊ सुने सोऊ फल लई॥
माधोदास म तोहि सुनाई। ताका फल सुनि लोभ भाई॥
पड़े जोऊ हित चित लाई। ताके सति गुर सदा सहाई॥
पड़े जोऊ नरि धनि के हत। तांमे सम्पत्त बधे बहु नेत॥
सुति दारा हित जो नरि ध्यावे। सो भी तात्तिकाल फल पावे॥
जो कोऊ पड़े हेत गिरिधारी। ताको देवे मुक्त मुरारी॥
पड़े कष्ट मै जा नर कोई। ताका कष्ट सभो यम होई॥
जो कोऊ पड़े सहज सुभाव। तांके सतिगुरि सदा सहाई॥
गुरि जनि सोई गुरों की धर्नी। कथा पुनीत सकल तिस बरिणी॥
माधोदास सुनी हैं सारी। ताते पावो मुक्त मुरारी॥

कवि उवाच—

सोरठा—प्रभ दीज इह दान मांगो प्रभ करि जाहि क।
रहै रिदे तुम ध्यानि रबि सुति कष्ट निवारियों॥

चौपाई—
प्रभै राम की आज्ञा पाई। कथा कही सब भ्रम प्रमिटाई॥
ऊक चूक सुध करि लीजै। दया सुति की रख्या करि लीजै॥
महादास सिमरों गुर पुरा। स्यामदास दर्गाह का सूरा॥
सतिदास सिमरों भौतारा। पुरिखपसदास भौ टारनिहारा॥
सिमरो क्रष्णचंद ब्रजिबासी। सदा सहाइ कटै मम फासी॥
गुरि जनि दास तुमारी आसा। सहै सदा तुम चर्न निवासा॥

दो०—फागनि बदी जो पचमी बृहसपतिवार पछाम।
अठारा से उनतीसवा भयों सपूर्ण जानि॥

दो०—बसी राम क्रपा करी सति गुर भए सहाइ।
क्रष्ण चंदि की क्रपा सो सकली कही बनाइ॥

दो —लेपक श्री सवायां राम श्री काशी तिस बास।
जो जो पढ़ै सो सुष लहै अति बिष्णुपुर बास॥

श्री रामायनमः श्री संकटा देव्यैनमः सुमंमुभमस्तु लिषी दहूलवास।

अथ महादास जन्म साखी

ओं स्वस्ति परमेशायनम: बाबे महादास की जन्म साखी लिख्यते ।

दो०—कमलापति को ध्यान धर सिमरो गुरु पद कंज ।
श्री कमला का बनती दीजै बुद्धि प्रचण्ड ।।

चौ०

प्रथमे सिमरो श्री नदलाला । भगत वछल प्रभ दीन दियाला ।।
सिमरो गणपत आदि विनायक । एक दंत शुभ सुकृत दायक ।।
धूम्रकेत शशिभाल विराजे । द्वादश नाम विधाता साजे ।।
गुरु चर्ननि को सीस निवावों । जिह प्रसाद निर्मल मति पावों ।।
मानस रूप जगत मैं आओ । पूर्ण ब्रह्म सो वेद बताओ ।।
सवत् ठारा से अरु ठाई । बसत पचमी तिथ सुपदाई ।।
तां दिन उपजे अधिक हुलासु । करो कथा उर भगत प्रगासु ।।
जगदवा जै होहि क्रिपाला । पूर्ण होहि कथा तत काला ।।

दो०—सतदास ने पूछआ स्यामदास प्रति बात ।
किस विधि उपजे महादास मोहि सुनावो आप ।।

चौ०—

संतदास ने बात उचारी । स्यामदास को कह्यो विचारी ।।
कथा सुनाओ मोही क्रिपाला । किस विधि आए जगत दियाला
महादास का जन्म सुनावो । हमरे हिर्दे आनद वधावो ।।
स्यामदास सुनि कह्यो विचारी । संतदास धन्न बुद्धि तुम्हारी ।।
जैसे तुम पूछी मोह बाता । पार्बती पूछो शिव नाथा ।।
कथा सुनावो शंभु क्रिपाला । प्रथमे जग जिउं रचयो दियाला ।।
आदि कथा तब शंभु सुनाई । सो मैं कहों तोह समझाई ।।
जनम प्रभ का तिस मैं आवै । जो कोई सुने मुक्ति फल पावै ।।
संतदास अब तोह सुनावो । जन्म कथा अमृत प्रगटाओ ।।

दो०—शंभु सुनाई उमा को सोई सुनावा तोहि।
सुनो सिष्य चितु लाइ कै जो तुमि पूछी मोहि ॥

चौ०
तांते करो ब्रह्म को ग्याना। निर्गुण रूप थी भगवाना ॥
घोर शयन सम सुप को सोई। प्रलय प्रसेप प्रसंग गुसांई ॥
कीया न होतो जगत पसारा। रहत प्रभू तब घु धकारा ॥
ब्रह्मा बिष्णु रुद्र ताहि साजे। सगल सृष्ट प्रभ माहि बिराजे ॥

दो०—उठी प्रभू के मन विषे कौतक जगति उपाइ।
एक पलक मैं प्रथमी नवखंड धरी बनाई ॥

चौ०
नाभ कवल ब्रह्मा उपजयो। कमल पुष्प पर इसिथिर भयो ॥
सीस ते शंकर अवतारा। बडो देव देव मैं भारा ॥
हिर्दे ते भयो बिष्णु सरूपा। समस्त देव देव को भूपा ॥
सेस नाग अंजन ते भयिउो। पतास लोक को पालत गयो ॥
पुन प्रभ भए बैराट अवतारा। कीयो चरित्र महा अति भारा ॥
सीसु ते सत गगन बनाए। सम प्रह मान कटाक्ष सुहाए ॥
सात समुद्र उदर बिस्तारा। ससता जान प्रभू की माला ॥
ऊरा भार रोमावल जानो। पर्बत सगल सप पहिचानो ॥
बामी कुक्ष भया गिर भारी। दाहनी कुक्ष कैलास बिचारी ॥
पृष्ट प्रभू कंचनि गिरधारयो। सात पतास चरण बिस्तारयो ॥
सय्या की प्रभ भूमी बनाई। कान मेख प्रभ अस न पाई ॥
चार बेद स्वासन के धारे। कीया बनाइ बनावनि हारे ॥

दो—मस कु धारी जल विषे उपजे दैत अपार।
हरणाक्ष मधु कीटक प्रऊर सकल परवार ॥

चौ
जल मैं करे कुतूहल भारी। सुत दारा संग सभ परवारी ॥
एक समे सभ बार आए। देखी भूम बहुत सुख पाए ॥
मन मैं भाखी ऐसी बाता। एस को ले चलीए जल ताता ॥

मवनी सर्वे समेटत भए। काछ मार जल म ल गए॥
मवन का विव को एह भार। जइसे कमल लए मर धार॥
नावे कुर्दे करें कतूला। देषी भूम मनूप ममाला॥
मन म सका कछु म मावे। माप समान किसू नहि जाने॥
जांके रिदे महो भगिवाना। देव नाम ताही को जाना॥

दो०—देपे प्रम जा ध्यान धरि मही नही दिष्टाय।
तवहि रिदे माहि जानियो मीनो देव दुराय॥

चौ०—
तव प्रम भए वराह मवतारा। कीमा मस्थूल महा मति भारा॥
तांकी उपमा कहन न मावे। सिव ब्यास सुक सारद गावे॥
सुमेर पर्वत जो पग म मावे। चांपे मेरु माखिम हो जावे॥
मवर कपु का कहा बयाने। जिन प्रमु कीमा साही प्रमु जाने॥
कोप धार तव जल म गए। तिन मसरन को छेन्त भए॥
याहुने देत मसर सिधारे। नाम दत मही म धारे॥
मवनी वहा बिरामत कस। धावति नित नरि लागति जैस॥
ममना को ले बाहर माए। सग दाऊ निसाचर स्याए॥
उसी ठवर म मही विद्याही। सुधा दुहन को ऊपरि पाही॥
सेम नाग की कुण्डलु टारयो। सुमर पर्वत लय मध्य पधारियो॥
दुहु दिसा भूधर मति भारी। मध्या गिर कलास बिमारी॥
ऐरावति चहु दिसा ठहिराए। ससि मरि भान दोऊ नभि छाए॥
निसवासरि सो सघन सम। भान मयन हाप मनुराम॥
मम म सेव कर उजिमारा। कीम प्रनू मति पल मगारा॥
रु विष्णु महीप धराए। ब्रह्मा का स बद दिपाए॥
तास ममना माप पद्याना। ब्रह्मा विष्णु रु नन जाना॥

दो०—इस विध मही निकाय क कीनो बहुर विचार।
माशा ब्रह्म का दिन रच्यो मगस मगार॥

चौ०—
माशा मही प्रमू को जमे। रच्या सृष्ट ब्रह्मा पुन तैमे॥
एक पार कम्या उपजाव। दूज न स बान दिखाव॥

इस विध रची जु सृष्टि अपारा। चार वर्ण पुन भए अवतारा॥
ब्राह्मण मुख ते हर उपजायो। क्षत्री भुज ही ते अपजायो॥
जघन ते भए बैंस अवतारा। चरनिन ते सूदरि वपु धारा॥
चार वर्ण सम ही जमु धयो। जो जिह आन्यो सो तिह सयो॥
ऐसे सकली सृष्ट पसारी। तीनो देव रहे ब्रह्मचारी॥
तबि कविता मनि माह विचारी। तीन सरूप कीए जु नारी॥
तीना की था सेवा करो। तीन रूप हो तिन का बरो॥
तीन सरूप कीए जग माता। लछमी ब्रह्माणी अंबाता॥
एस विध तीनो सेवन लागी। सहज सुभाय होय अनुरागी॥
अवरि सृष्टि भई अधिर अपारा। इस विध रच्यो सकल संसारा॥
ब्रह्मा बेद पढन तब लाग। क्षत्री राज करे अनुरागे॥
मुनवरि तपु करि है अधिकारी। बैस्य बणज को चाह बिचारी॥
सूद्र हल जाते कसाना। होहु अनाज सकल सुख माना॥
सतदास सुमु कथा सुहाई। आग अवर सुनो जो भाई॥

दो०—इस बिध रचीयो उपारजा सुनो संत सुर ज्ञान।
श्री गुर धर्म प्रताप से आगे करो बखान॥

चौ०—

एक रही भ्रम क मन आसा। सुनो संत सो करो प्रकासा॥
सागर की भ्रम चित विचारी। महा बली जस निज प्रति भारी॥
जा कबहू इसके मन आवे। सकल सृष्ट करि कोप सुकावे॥
ताते इसका गर्व निवारो। सकल सृष्टि तब सुखी सिहारो॥
एक करो निवचर के नासा। सचासुर अति धुज प्रकासा॥
ताते अब ही बात बनाओ। ब्रह्मा के मन भ्रम उपजाओ॥
ऐसी बात भ्रम के मन आई। ब्रह्मा बेद पढत था भाई॥
बैप बेद उपज्यो हंकारा। हम सम विप्पएन रुद्र बिचारा॥
जो हम बेद पढा नही जानी। कवन भाति करि जाइ पछानी॥
बात तब कहते भए। गुप्त काज के बसि हो गए॥
हिंडे की जागे अदुराय। भ्रम सचासुर सीयो हुलाय॥
उस्तति करी प्रभू ममबाना। तोहु समान नही बसिबाना॥

उसको धसो बिसोके आय। किसी ठौर मय बैठो आय॥
तीनो देव मही परि आए। देव दैत सम सग सिधाए॥
पूछी मही प्रथम भगवाना। तिन सुमेर को लीनो नामा॥
तबि हरि कवन गिर पहि आए। सकल प्रवतु सुमेर सुनाए॥
उस्तति करी हेमगिर भारी। नाहु निसाचरु रय्या परारी॥
आइआ था प्रभु हमरे धोरे। हम पठ्या सागर को पोरे॥
ऐसा कवन सुनो करतारा। तुमरा बमुपु रापन हारा॥
अंमृत को प्रभ दूर बिडारे। बिप की गठ बदन मह डारे॥

दो०—मही उधारन धस धनम सतन सदा सहाइ।
तुमरा बेमुप राप के कबहू नही सुपु पाय॥

प्रभ की निंदा सुने जो कोई। ब्रह्म घात का तिस फलु होवी॥
हरि बमुप प्रभ जहा बसावे। नस्ट करे तिस बेर न लावे॥
ऐसी मही बर्न सपटाना। सागरि तार धसे भगिवाना॥
मार्ग प्रभ जबे प्रभ गए। आश्रम एक बिलोकत भए॥
सुंन्दर अधक अभू सुहावे। उपिमा ताकी कहन न आवे॥
द्रुम बेसी तट अधक अनूपा। फूले फूल अनूप सरूपा॥
बोले कोकलि मोर चकोरा। चकवी चकव प्रेमु न थोरा॥
केहर मिरिग एक अस्थाना। बेर भाव तिन कबहू न ठाना॥
अनक भांति के फूल सुहाय। तिन की छब सो मैन लजाय॥
ताके मध्य मुनी सर राजे। ताका तज देप रवि लाजे॥
आनवान सुंदर सुर ज्ञानी। ताकी उपमा सुनो भवानी॥
हरि सिमरण बिन अवर न बाता। तारक मुन तिह नाम बिख्याता॥
तिस आश्रम प्रभ जो चल आए। देव दैत सम सम सुहाए॥
देप मुनीश्वर अत सुप पाइयो। जनम जन्म का ताप मिटाइयो॥
उस्तत करन तबै मुन लागे। गद् गद कंठ होइ अनुरागा॥
नमो नमस्ते श्री भगवाना। आद पुर्ख पर्मातम रामा॥
नमो नमस्ते आदि सरूपा। मही उधारण कृष्ण अनूपा॥
जग उपजावन सकल बिनासी। निर्गुन रूप सरस प्रभासी॥
सकल सृष्ट मैं जोत तुम्हारा। सभ के निकट सभू ते न्यारा॥

उस्तत करो कहा सग तोरी। नाथ भ्रम मोह मन घोरी॥
तांते प्रभ दीजे इक दाना। रहे रदे मैं तुमरो ध्याना॥
तब ऐसे बाले भगवाना। प्रम भगति मुन दीनो पामा॥
तुमरे रिदे करो मम वासा। मम सिमरन बिन अवर न आसा॥
चम तोह निकट वसावो। जहा मुन जाहु तहा सग जावो॥
प्रम पकज मुन सीस निवायो। वही ध्यान ले रिदे वसायो॥
मुन को तोष चले गिरधारी। धाए सागर निकट मुरारी॥
सागर को थोमे भगवाना। निसचर देह बेग बलवाना॥
असमिधि बहुयो देवो प्रभु कैसें। क्षत्री धर्म होता नहि ऐसे॥
प्रथमे देपो मुख हमारा। औसो मोह लेहु करतारा॥
बम निधि गर्ज भयो नभ ओरा। काटयो स्वास चक्र के जोरा॥
तीन बार इउ गर्जत भयों। काटत स्वास सभी प्रभु गयो॥
सतदास सुनीए चित लाई। कहे उमा को संभू राई॥

दो०—जितयो सागर इस विधी कीनो बहु सग्राम।
सुनो सिप्य चित लाय के कीए प्रभु जो काम॥

चौ०—

कंचन गिर को कीयो मथाणा। कछ रूप कीना भगवाना॥
कंचन गिर के तले टिकायो। भुजा प्रभू की ऊमर पायो॥
बासक का ले नेत्रा कीनौ। ले कर देव को दीनो॥
दैत गए तब मुख की ओरा। पूछ देव ने फडी बहोरा॥
रिड़क्यो सागर कर विस्तारा। काढे रत्न अमोल अपारा॥
एरापति सुर सारंग बाजा। सस विष अमृत मध मणसाजा॥
धनतर सहत अरमा आई। कल्प बृक्ष तब आयो भाई॥
तब सागर मन माहु विचारी। आन चर्न की सर्न भिहारी॥
कबसा देत प्रभू के हाथा। फुन चर्नन पर नायो माथा॥
फुन प्रभ मए मछ अवतारा। सागर मध्य गए करतारा॥
संघासुर को खेवत भए। बेद आग ब्रह्म को दए॥
संघासुर को कह्यो मुरारी। तोरी धुन मोह परम पिआरी॥
हमरी पूजा कोऊ कमावे। तुमरी धुन बिन विर्था जावे॥

चहुर रत्न बांटे गिरधारी। सुनो उमा सो कयो विचारी॥
सख विष दोनो मोह निपतायो। ग्रमृत भष्य सुर ग्रसुर पिलायो॥
चार रत्न सुरपति का दीने। रमा वक्ष सुर मनि परवीने॥
चार रत्न राष जदुनाथा। सारंग सप सप मण साथा॥
धंनतर गाउ जगत का दीना। सप्त मुषी सूर्य परवीनो॥
दव दैत निज गृह को ग्राए। बहुरो प्रभ वकुंठ सिधाए॥

श्लोक – सुने कथा जो याहृ परम सुष पावही।
बसे स्वग में जाइ बहुर नहीं ग्रावही॥
प्रेम भगत की चाह रिदे से ना टरे।
दूष दरष्ट ग्रमरोम कथा सुनत हरे॥

चौ०—
बैठे हते शम्भू कैलासा। जगदबा पूछे तब बाता॥
प्रश्न कीयो तब सुभग भवानी। कथा सुनावो शिवसुर गियानी॥
विष्ण कहो प्रभ कहा विराजे। कवन समाज प्रभू संग छाजे॥
सुनो रमा ग्रब तोहु सुनावो। जहा बसे सभ ठवर बतावो॥
जग होम हर पूजा होई। तहा विराजे निश्चे सोई॥
हर की कथा जहा बिस्तारी। जान रमा तहा बसे मुरारी॥
कीरतन कर संत ग्रनुरागी। तहा प्रभु साक्षात विराजे॥
हर मूर्त को धरे धिग्राना। ताके रिदे बसे भगवाना॥
तीर्थ व्रत सत गुरु पूजा। सुकृत कर्म ग्रवर नहीं दूजा॥
ताके रिदे करे हर वामा। सुनो सती हर कथा प्रगासा॥
योगी प्रेम सहित जो ध्यावे। ताके रिद प्रभू सुष पावे॥
ब्राह्मण भेम दव हितकारी। ताके रिद बस गिरधारी॥
पर उपकार को जो उठ धावे। हर गीता के रिदे बसावे॥
समदिष्टि जो होइ समाना। ताके रिदे बसे भगवाना॥
रामकृष्ण को सिमरे कोई। ताके रिदे सती हर होई॥
ग्रवर बसे बैकठ गुसांई। सुनो रमा जहा बसता माही॥
हर की निंदा सत म सेवा। तहा म बस देवन को देवा॥
काम क्रोध सुक्रत नहि कोई। सुनो रमा प्रभु तहा न होई॥

ब्राह्मण धेन जल निधा गावे। तहा सती हर निकट न प्रावें॥
जहा पाप है प्रधिक प्रपारा। तहा नही जानो करतारा॥

दो०—सर्व दुक्रत जहा वसत है तहा वसे हर राइ।
तम सूर्य एक ठउर मे सती नही मिल जाइ॥

चौ०—

वहुर कह्यो शिव को जग माता। ससा मोह मिटावो नाथा॥
कैहो वसे वैकुंठ मुरारी। कथा सुनावो सोई विचारी॥
कैसा धाम सुनावो सोई। ससा मन मे रहे न काई॥
तैसा सती भवन विष भाषो। जेती बुद्धि मोह तेता भूषो॥
प्रभ सोल्हा कहन न प्रावे। नारद व्यासशारदा गावे॥
लाई लष जोजन विस्तारा। सात पुरी तिस पथ मभारा॥
ताके भिन्न भिन्न सुन नामा। सत उडगन विश्रामा॥
सुर विरंच निज धाम बषानो। ताके शिषर स्वर्ग पहिचानो॥
चार लाष जोजन मग ठानी। पुरी पुरी एती विध जानी॥
इतिना है तिन का विस्तारा। ताके शिषर वकुंठ द्वारा॥
सुनो सती सो कैसो द्वारा। जेती बुद्ध कहो विस्तारा॥
द्रुम वेली तहा पुष्प प्रपारा। वस सुगध मुक्त को द्वारा॥
कचन को सभ कोट विराजे। मण मुक्ता द्वारन मैं राजे॥
सु दर तट प्रमूप सुधारा। विगसे कवल प्रनक परकारा॥
कवम की सभ पास सुहाई। तांकी सोभा कही न जाइ॥
कु दन के सभ भवन प्रनूपा। तिष विच का परम प्रनूपा॥
मण मुक्ता तहा पचत प्रपारा। मान मयक कोट उजीप्रारा॥
निर्त करै सुर वधू सुहावे। मूरतवंत राग सभ गावे॥
देव करै सभ जै जै बानी। निगम करे उसतत जु भवानी॥
सिघासन प्राजे घनस्यामा। प्रादि पुरप परमात्म रामा॥
सष चक्र गदा पदम बिराजे। कोट मुकट कोटक छव छाजे॥
कु डल कान प्रभू के सोहे। कोट मदन छव निपत मोहे॥
बाजे बज प्रनेक परकारा। पीतांमर छब बनी प्रपारा॥
चवरे वाम हर पीठ सुहाव। चवर करे प्रति सोभा पावे॥

तपमान सुंदर सुर गिमान। मति मनूप हर भमत सुमान॥
नव ते चले सुगंध मपारा। कोट मदन छब मोहन हारा॥
ऐसे ममर डाम सुर ज्ञानी। तांकी उपमा सुनो भवानी॥
मिसबासर प्रम धी को सव। ध्यान प्रभू का रिद समेव॥
पार्वती को सम्भु सुनाई। सतदास मे तोह बताई॥

सो०—कही तबे इह बात पार्वती सिव नाम को।
मोह सुनाओ नाथ कवन समाज बैकुंठ में॥

चौ०

सरवर द्रुम बेसी मस्थामा। कवन पुन्य ते कीतो निमाना॥
ममर डाल की कहीए बात। कवन पुन्य कर पाया नाम॥
धन्य बुद्धि है संत तुम्हारी। समसी कहो कथा बिस्तारी॥
मठ सठ सगल सरोवर जामो। कवल हंस क फन पहिचानो॥
नीर सयन म कबहूं न पेपे। होइ बिराग प्रभू को बेपे॥
द्रुम बेली सभ धूम ते माए। परे ममतारा संग से भाए॥
मए मुक्ता कला पहिराव। हेम सोई को बिव रिदवावे॥
राग करें गधर्व सुजान। संत प्रभू के देव पहिचान॥
मब रमा मवम सनामो तोही। मता बुधि मै मावे मोही॥
प्रथम कला चाक की जानो। तीस कला मानव की जानो॥
प्रथमी पर मब पठमो माई। सगल सृष्ट कर तेज माई॥
ममभी बन्ध होन तब मागी। मिर्पी मही प्रभु मनुरागी॥
देव देत सम करी पुकारा। दग्ध होत प्रम सम ससारा॥
बीस कला काटी भयमागा। डावध रापी ममत समाता॥
एक कला प्रभ मपनी डारी। बीस कला मानुज की मारी॥
एक बीस का चक्र ममायो। सो प्रभ मपने हाथ रखायो॥
ऐसा कीधा प्रभू ने काम। तांको सती सुदरसन मान॥
मब हो कथा कथा मन की माई। सुनो रमा जो बेद बताई॥
महा प्रसो जो जग मै मावे। सगल सृष्ट तिस माह समावे॥
चौरासी सम पद मै माई। कर्मवान की नास सुहाई॥
दाता तिस क पुत्र ममावे। सम चरनस मै सिव सुहावे॥

सेसवसन म मठसठ जाने। पिराग महा हर भाप विराजे ॥
सेती काट तरी म वासा। ताके सीस सम परगासा ॥
सगल सृष्ट तिस माह समावे। सुनो सती सो कवल कहावे ॥
सागर मथन गए नन्सासा। पाच जम सहा सीयो गुपासा ॥
गदा प्रभू की ऐसी जान। सगल दैत को नास पछान ॥
पार्वती तब कही बहोरा। ससा नाथ मिटाबो मोरा ॥
शम्भ कसा रही अधिकाई। सो प्रम कहा कहा ठहराई ॥
सुनो रमा रवि कसा विराजे। सो तुम कहो सगस विध साजे ॥
यारा कला नरक पर डारी। एक कमा सम मही उधारी ॥
सुनो रमा अब कथा सुहाई। आगे चवर डाल की आई ॥

दो०—चवर डाल की कथा को सुने जोऊ चित लाइ।
हर मूर्त तिस रिद मै सदा रहे विरमाय ॥

चौ०—

सागर मथम गए गिरधारी। मुन जो देषयो पष मम्झारी ॥
तांसो कही हुती भगवाना। मन मुन रापो हमरा ध्याना ॥
ता दिन ते मुन ए ठहराई। हर मूर्त सै रिदे वसाई ॥
मन मीतर तिसको न्हुउसोवे। पाछे सुवर चीर पहरावे ॥
कीट मुकट हर को पहरावे। भूपन सगस प्रेम सो भावे ॥
पाम फुल्स सभ मन म सेवे। अवर सुगध रिदे म देव ॥
मनक बिजन कर प्रम मुलावे। फुन हर जी को चवर झुलावे ॥
निस दिन ऐसी ही मुन करे। अवर बात म कोऊ रिद धरे ॥
एक दिवस मुन सम कृत कीनी। फुन पाछे कर चवरी लीनी ॥
चवरी करत गए मुन प्राना। चवर डाल कीनो मवासा ॥
अंत समे जो मन मै भाव। मुन गिरजा तैसो फल पाव ॥
ऐसा महा मगस बिस्तारा। सुनो रंमा वैकुंठ दुयारा ॥
सगस देवते आग जावे। ले प्रम जी को चवर झुलावे ॥
सुनो माथ मन ऊहा समायो। कबहू जगत माहि नहि आयो ॥
सुन गिरजा मुन कहू म जाम। जहां जहां जाए सग भवान ॥
अष्ट अवतार भए भगवाना। सबें मिहजा मुनी सुजाना ॥

मन भीतर हर को ठहरायो। निर्पनाथ तब नाम करायो ॥
सतयुग त्रैता द्वापर गए। प्रंत समै कृष्ण जी भये ॥
धर अवतार असुर सिंघारयो। सकल मही को भार उतारयो ॥
क्रीड़ा करी अनक परकारा। सगली कहो होए बिस्तारा ॥
पूछी तोह अवर सुर गिम्राना। सतदास सुन कथा सुनाना ॥
अंतरध्यान भये गिरधारी। ब्यास देव तहां कथा उचारी ॥
श्री भगवान कथा सुहाई। जो कोई सुने मुक्त फल पाई ॥
ब्यास देव बकुंठे गए। जा कोई सुन मुकत पद पाई ॥
तबे प्रभू इउ बोले बानी। श्रावो ब्यास देव सुर गियानी ॥
उस्तत करी ब्यास अति भारी। फुन बर्नन की सत तिहारी ॥
ब्यासदेव तब बोले बानी। रिदा ठहराबो सारग पानी ॥
सास्त्र करे अनेक परकारा। सांत न आवे मोह मुरारी ॥
श्री भागवत मोह सुनावो। ताते ब्यास परम सुख पावो ॥
ब्यास देव तब कहने लागे। सुनी प्रभ जी हो अनुरागे ॥
सुंदर कथा अनूप सुहाई। सुनी सकल प्रभ ब्यास सुनाई ॥
ऐसी कथा कही गंभीरा। देव मुनी मन रही न धीरा ॥
प्रेम सहित हो ब्याकल गए। ब्यास देव जग कहत भए ॥
सकल सभा को प्रेम वधायो। कही कथा ब्यासे सुख पायो ॥
उस्तति करी चर्न लपटाए। आशा लय निज आसन आए ॥

दो —ब्यास देव सुख पाइ के गए अपने धाम ॥
अबर वास कर चोर के प्रभ को कीया प्रनाम ॥

चौ०—
कर कृपा बोले भगिवाना। कहो रिदे की मुन सुर ज्ञाना ॥
कहा कामना तुम मनि आई। हमको कहो सकल मुनराई ॥
तुम तो निज आश्रम बैठाए। इच्छा कहा रही मुन राए ॥
मागो एक प्रभ जी दाना। करो अनुग्रह श्री भगवाना ॥
मागो सोइ जोइ मन भावे। जिस विधि तुमरा संसा जावे ॥
जो तुम मांगो देवो सोई। संत सप्त है मुन बर मोही ॥
तबै मुनीवर मांगन लागा। गदगद कंठ होइ अनुरागा ॥

पकज लोचन जल भरि डारे। पुलके रिदा प्रेम वस मारे॥
कृष्ण रूप जवि कीनो गुपाला। छाडयो मोह वैकुंठ चाला॥
बहु क्रीडा मोह नाहु निहारी। कहा मुक्ति पाय गिरधारी॥
सोई रूपु देह दसीडी। क्रीडा रास सकल जदुराई॥
सुनो सत म सोहू सुनावो। वैकुंठ रासे कैसे म पावो॥
बकुठ माइ जोही चलि प्राव। समसरूप मेरो हो जावे॥
नटवर वपु डीहा कैसे धारो। वेग्न की मरजादा टारो॥
ताते मय ही लीयो औतारा। ऊहा करा सभ काज तुमारा॥
माया त प्रभ मति कर पावो। जिते मोह डीहा नही पावो॥
भजो मही मोह नद लाला। कीजे दया सदा कृपाला॥
तुमरो रछया करो सुजाना। निज माया ते तू वसबाना॥
क्षत्री कुल मैं जन्म् तुमारा। उतम् मात पिता ग्रह प्यारा॥
गोबिन्द नगर तुम्हारो वासु। सकल वेस मैं परिम हुलासा॥
कर्मवान सभ लोक सुजाना। दाना सूर मही पहिचाना॥
पजावराय ग्रह घर प्रवतारा। माहादाम है नामु तिहारा॥
बकुठो उतरि मही मही आव। भूर लोक ते पति मैं प्राव॥
ताते स्वग वसो मुन राइी। साप वस ऊहा राज कराही॥
प्रव सूक्षम करो विस्तारा। सो वर्मा राहो पुरी मझारा॥
मात पुरी म राज कमावो। सो भी कर्म पुरी मय छावो॥
इतना मात पुरी मय जावा। तवि तुम भूर लोक मैं पावो॥
स्वग पुरी क लोक बुलावो। से प्रभ मुनी वखान पगाए॥
सकल पुरी मैं राज कमाय। भूर लोक मय पहूच प्राइ॥
सकली कहो होय बिस्तारा। इस विघ भय जगत प्रवतारा॥

दो०—प्राण जग मैं इस विधी मानो प्रभ प्रवतारा।
सुनो मिहा बिन माय क और मरम बिस्तारा॥

चौ०

भाद्रो बदी ग्रष्टमी जानो। तिथी पात्र तब याण पछाना॥
नक्षत्र पुनरबसु मान्नवारा। ग्रघ रैन प्रभ भयो प्रवतारा॥
-मबत माना म घर मर्झारि। कीनो बिघ्न गुमजु नगार॥

मत धर्म सो रै बिताही। भही प्रभात पुनीत सुहाही॥
पजावराय तब विप्र बुलायो। विद्या धरि तिस नाम सुहायो॥
जन्म सभा सभ कीयो विस्तारा। जन्म पत्र का लिपी अपारा॥
लिपी पत्रका पम सुहाही। हर सेवक तहा नाम ठहराही॥
सकल बिहमि तिन माप सुनाही। हो हरि भक्ति दूषा महि जाही॥
निसबासरि तबि चितवनि लाग। कातिक मास प्राय अनुरागे॥
नामकरण के विप्र जिवाए। महाबली तबि नाम रापाए॥
पच वर्ष इत बीते जानो। तबि यह जन्म हमारा मानो॥
पच बर्स अबि और बिताए। तात मात सुरपुरी सिधाए॥
एक बर्स अब और बितायो। हम को त्याग प्रभू उठभायो॥
सहाउर मैं पहूचे आय। सार्दूकार ने रखे सुभाय॥
अभागत राय नाम तिह जानो। दाता सूर सती पहिचानो॥
देख्या बालक पम अनूपा। बुधवान अरु महा सरूपा॥
दोनो कोठी देही बताय। कहेया जाय ऊहा बणज कमाय॥
प्रथमे गये कबीरावाना। कीयो जाय सभ उन के काजा॥
तात काज करए सभ लागे। सेवे साध होय अनुरागे॥
उठे प्रभात नदी मैं जावै। प्रीत सहित विज साथ जिवाए॥
एक बर्स प्रम ऊहा बसाए। बहुरा सात धरे मय आए॥
सोरी मर्म ऊहा कर्ने लागे। प्रेम प्रमाय होय अनुरागे॥
सिध नदी मम करै मनाना। प्रीत सहित सिमरे भगवाना॥
पहिर रैन के नित उठ जावै। सबा पहि बीते दिन सावै॥
पाच बर्स ऐसी बिध करी। प्रेम सहित सिमरे नर हरी॥
एक दिवस सनान सिधाए। नित क्रम सभ आप कमाए॥
भजन ध्यान करि कीयो प्रनामा। पीठ लगायो पजा स्यामा॥
अति उकिलाम उठे मनि माही। ब्याकुल भए सुत कछु नाही॥
भए सुचत प्रम को ध्याया। पिसला जन्म सभी दिष्टायो॥
कृष्ण कृष्ण कय सिमरण लाग। साए बहुत दिवस क आगे॥
दर्सनु देह कृष्ण कृपासा। करो अनुग्रह मी नंदलाला॥
तीन बार इत कहत भए। सिध नीर भूपर चढ गए॥
मानु जसा मीमा मनि गिरमारा। गिरि के बहे सिघ की धारा॥

तिस गिर के प्रभ ऊपर गए। तीन वार इउ कहते भए॥
दर्सन देहु कह्यो गिरधारी। कूद परे तवि सिध मभारी॥
सात नदी तहा पर्म सुहाई। नार भयाह कह्यो नही जाई॥
अस पस पूर रह्यो भगवाना। कठ लगाय लीए घनस्यामा॥
दर्सन कीजै संत हमारा। जैसा चाहे रिदा तुमारा॥
ईहा नही प्रभ हमरे काज। दीजै भूर लोक महाराज॥

दो०—भूधर त मैं गिरो हां सुनो दिन महाराज।
बूडो गहिरे नीर मैं ईहा दस किह काम॥

चौ०
बचन समासो श्री नद लाला। भूर लोक मोह कह्यो गुपाला॥
बचन वृथा नही होय तुमारा। सत सप्त करो सनारा॥
अहा तुमारे मन की आस। तिसी ठौड मम कमीए दास॥
तोहु समान मोहु अवर न प्यारा। महादास तव नाम तुमारा॥
भूर लोक जो दसन पावो। तवि नीर त बाहर जावो॥
आशा दई प्रभू भगवाना। गए आड सुर तिस अस्थाना॥
पजा लगे उठ्यो अकुलाय। तिसी ठौड मै बैठे जाय॥
उठ धाइए तब नगरी आय। दोनी कोठी समो लुटाय॥
साहूकार तकि सभ सुन आए। कोठी वेप पम दुप पाए॥
पर्जा सभा इकत्र भई। साहूकार पहि चोरी गई॥
तिस मदर म राखो भए। पिसषा कोऊ दात मय वेय॥
स्वामी को भीतर बैठायो। द्वारे कुलफ कपाट चढायो॥
उंसी दिन करी बाहर आए। भाग पड प्रभू विप्टाए॥
वहुड पकड से अदर गए। प्रभ बाहर भीतर सम रहे॥
बाज भार तिन सका बुलाए। पोले कुलफ तब बाहर आए॥
आप प्रभू को मायो माया। मर्म न जान्यो तुमरी नाया॥
पांच दिवस जब बीते जाई। साहूकार तवि पहुच्यो आई॥
कोठी वेप पर्म दुपु पायो। क्रोध होय तवि बचन सुनायो॥
उ से बचन तवि कहने लागा। जागे दुप सुप सुपने भागा॥
तुम सग बचन बुरा हम कीमा। ऐसा दुपु मोहु किउ तुम दीना॥

शास्त्र बेद पुराण सुनावे। परि धनि स जो दाम कमावे॥
कोट मणा का सेह म होनी। ऐसा काज कीयो किति तोही॥
अबर सुना म तोहु सुनावो। अपे पाप इक और बतावो॥
स्वामी का जो करा छिपावे। अबल कछ अहू मही कमाब॥
करे द्रोह स्वामी क संगा। होइ नि निर्मल नावे गंगा॥
कित तुम हमरा दवि गवाटो। बचन ज्ञान हिरदे म धायो॥
मो तुम आप सुनावो मोही। उपजो बचन सहुर मन तोही॥
तुमरा एह न था इतिबारा। एस सारे काज हमारा॥
माया की मोह चित गवाई। तुमरी चित बसी सम माई॥
तु जो बुधवान सुर गियान। एसा काज कीयो कित जान॥
येहु चिता अब दूर गवावो। चौरा तझ स कोटी पावो॥
ऐसी बात कही साहूकार। बुधवान अति रिदे उदार॥

दो०—बोले तब महात्मा जी सुनो शाह इक बात।
दर्ब लीजिए आपना तौर बैठाबो नाम॥

चौ —
बोल तबी प्रभु महात्मा। तुमरी अम न राखोई मासा॥
एक साप तोहु गिन दीना। दो सप जाय पेड मैं कीनो॥
सगल माहु मिल मंदर गए। दो सप दर्ब देखते भए॥
मन म उपजयो पर संतोष। ज्ञान्या निर्मल हर को सोक॥
उस्तति करी धर्म रज भारे। नाथ रहौ हम संग तुमारे॥
तुम तो दीपुनी सुप पावा। गृह मैं बठे प्रभ को ध्यावो॥
उस्तत करी धर्म सपन्नाए। तिन का ता प्रभू बन आए॥

दो —पुरे इहा तोइ सखिमी सति दास सुन लेहु।
चले पु बनि को आइ के हिरदे अधिक सनेहु॥

चौ०—
बन में बिचरे अनक परकारा। कृष्ण कृष्ण कर करहु पुकारा॥
तीन दिवस बन भीतर भए। लगी भूप होइ ब्याकल गए॥
तब ही मन में यह ठहराही। भोजन करो प्रभू बिप्टाई॥

पीरपड विच मेवा पावे। निज कर कौर मो मुगतावे ॥
माबन करो एही परकारा। नहि मनाज सप्त कर बारा ॥
हिरद की जाने करतारा। माए रूप धार वनजारा ॥
बस छब हूर निकट उतार। सुदर पोडी भपर भपारे ॥
गऊ दुहाय दूध ले माए। बहुडो पकड प्रभू बठाए ॥
पीर पड विच मेवा पावो। पकड मुजा तब प्रभू बैठायो ॥
भपने हाथ दीए मुख मासा। हठ किस कीनो तुम महात्मासा ॥
भव तुम जी का त्रास मिटावो। दरसन करो मोह गति पावो ॥
तब प्रभ सगन समाज बुलायो। गोपी गुपार सगल बन छायो ॥
सोला सस एक सय माठा। सुदर वसन पीत भर पाटा ॥
पहरे भूपन भपर भपारा। मरण मोती लगे भमक प्रकारा ॥
निर्त करें भति परम सुहावे। देव वधू सब वेप मजाव ॥
माए गुपार प्रभू के कसे। धरे मदन तन होत न ऐस ॥
कीट मुकट विच कृष्ण समाना। सोला सहंस परम मुर मान ॥
बेसी कुम पुहुप मन छाए। गोपा बछरे मृक्ष सुहाए ॥

दो०—गोपी गुपार बुलाइ के दीनी रास बनाइ।
वाकी हसपर बीर की उमा कही न जाइ ॥

चौ०—

चहु दिस ठाड सगस ग्वार। इक इक गोपी मध पधारा ॥
कर कर सगसन गहि लीने। सुंदर मगल प्रेम सर भीने ॥
मध्य विराजे श्री मदसासा। मौर मुकट भुपराग वाला ॥
वाकी उपमा कही न जाई। मान पीठ तम रह्या दुराई ॥
मस्तक तिलक सुदर विराजे। मर्वा कमान कोट छब छाज ॥
कुडल कान कपोल सुहावे। निरत करे छव मैन लजावे ॥
वग्न मध्य बतीस विराज। तिन की दुत दमयुत छब लाज ॥
सुंदर बदन बजतो मासा। पीति बसन सोहे नद लासा ॥
स्याम सरीर नग भूपन सोहे। उडन रंग प्रघारी होवे ॥
रिदा विसाल कापनो साजे। छुद्र घंटका भति छब बाज ॥
नाभ कमल पर कच सुहाए। ममूग पीत कवल मसी माए ॥

मसती पुहप रग छबा छाजे। केस पात मी पोठ बिराजे॥
प्रेम कृपास नैम रतमारे। गुण सो भरे मीम मृग हारे॥
सुंदर बैन बजावन लागे। तोन भग सोह मनुराग॥
पग मे सुंदर नूपर बाजे। चर्न कवल सम ठीर्थ राजे॥
ये मूरत जो रिदे बसावे। सतदास सो जम्म न मावे॥
कर्ण लग तब मिरत मपारा। बर्षे पुहप देव जैकारा॥
ऐसो रास रची गिरधारी। मतर मंबोर उडे मति भारी॥
सीतल मंद सुगंध सुहाई। चल समीर प्रेम सुखदाई॥
पशु पक्षी द्रुम करे जैकारा। देखो भगत सरूप हमारा॥
क्रीडा करी मनक परकारी। गोरस चोरी चाख सपारी॥
जमुना राध और वृज बाला। बाबा नंद बडे सम ग्वाला॥
इक इक गोपी ग्वार दिखावो। बैन बजाइ सत तृप्तामो॥
टेढा फैटा दीयो क्रिपाला। कुंडल एक तिलक दीयो माला॥
दीयो सत को वृज दिखलाई। सतदास सुन कथा सुहाई॥

दो —श्रीए भक्ति को सार फल सो तुम कहो सुनाइ।
कुंडल फैटा तिलक फुन प्रेम ममति हुर राइ॥

चौ —

मन पालक का तिलक लगामो। मर्षो का फैटा पहरायो॥
कामना का कंडल दीयो कामा। मकत फल का प्रेम पछाना॥
बहुरे बोले थी गिरधारी। सुनो सत जो बात हमारी॥
जाहो सत गुर सीस नवामो। बहुरे धाम हमारे प्रामो॥
तीर्थ बर्त दान मम ध्यामा। सत गुर बिना किसी नहि काम॥
कहो सत कहा माज्ञा होई। धारो सोस जा गुर सोई॥
नर हर पुरी जाइ मिल दासा। साईदास के बंस प्रकाशा॥
उज्जल बंस सगल सुर मियान। बुधवान हूर भगत सुजान॥
कर्मदास् सुंदर सुर गियानी। मम निज भक्ति बंस निहकामी॥
माईदास तिस कुल उजमारा। जाका जाम सगल परकारा॥
तामें बस भयो प्रवतारी। बलीराम है जोत हमारी॥
ताको जाइ करो प्रणामा। भए संपूर्न तुमरे कामा॥

ताका दरसन परम अनूप। जानो सत हमारा रूप॥
नातो साईदास का जानो। सगल वस मोह रूप पछानो॥
अब प्रभ कथा सुनावो मोही। साईदास प्रभ कैसे होई॥
सुनो सत इस जगत मझारा। मम बिनु और नही कोई न्यारा॥
सगल जगत मोही को जानो। जीव जत ब्रुम पसु पहिचानो॥

दो०—सुने सत चित लाय के सभ जग हमरा रूप।
अवर नही ससार मैं दूजा कोई सरूप॥

चौ०—
सभ जग हमरा रूप पछानो। मो बिन और नही कोई जानो॥
सब जगत मै कीमा पछानो। कृष्ण नाम ताही ते जानो॥
सकल मही को करले हारा। ताते गोविंद नाम हमारा॥
अवनी की जो करो प्रतपाला। तिस ते जानो नामु गुपाला॥
सकल जगत के पाप दुरावो। तवि ही हर जी नामु कहावो॥
माया को हम सिरजन हारा। माधव जाना नाम हमारा॥
मधुमो नामा हम दैत सिघारयो। मधुसूदन तब नाम बिचारयो॥
सब जगत परि रह्यो कृपाला। ताते जानो नाम दिम्राला॥
मीन रूप धरि जल निध गयो। मछ नाम ताही ते भयो॥
सकल मही को बोझ उठावों। ताते कछ रूप जु कहावों॥
सुगम रूपु कीयो बलद्वारे। बावनु जानो नाम हमारे॥
मुर नामा मैं रावस मारा। ताते जानो नाम मुरारी॥
परि पकिड छत्री सिघारे। परसराम तब नामु हमारे॥
भगत हेत मम दो बपु धारे। नरसिंह जानो नाम हमारे॥
गोवर्धन मै हाथ उठायो। गिरधारी तवि नामु कहायो॥
गोकल म जन्मु जु धारा। गोकल नाथ तब नामु हमारा॥
श्री भागवत मोह उचारा। तवि भगिवान जो नाम हमारा॥
नही आकार हमारा जानो। निराकार तवि नाम पछानो॥
सकल नरन मै ब्यापन हारा। नारायण तब नामु हमारा॥
कोऊ नही निज पुर को बासी। ताते नामु मोह अवनासी॥
वपू न होव काल हमारा। इस ते नाम अकाल विचार॥

सकल जगत मै ओत पछानो। ओतीस्वरुप नाम तवि जानो॥
सकल जास ते रहो न्यारा। निरजो जानो नामु हमारा॥
देवकी के ग्रह मौ उपजायो। देवकीनंदन नामु कहायो॥
धरि प्रौतार असुर सिघारे। असुरनिकंदन नाम हमारे॥

दो०—कासी के सिर निरति करि पायो बहु बिसराम।
महादास तब जानीए कासी नाथ मोहु नाम॥

चौ०—

मथुरा मै जो कंस सिधारे। कंसनिकंदन नाम हमारे॥
रघकुल मै जो भयो ग्रवतारा। रामो जानो नामु हमारा॥
कोई न बंसु हमारो जानो। निर्बासी तवि नाम पछानो॥
रघुकुल मैं जो रावण मारे। तवि रघुबीर जो नाम हमारे॥
कौशल्या को प्रधक प्यारा। कौशल्या नंदन ना हमारा॥
सकल भवन मै रहता जानो। सत्त मोहु तव नामु पछानो॥
सकल जगत के करणे हारा। ताते नाम मोहु कर्तारा॥
भगतो के पाछे उठ धावो। भगत बछल तब नाम कहावो॥
सकल भवन मै मोहु हमारा। तवि प्रभू है नाम हमारा॥
दीना के संग दया कमावो। तिस बिध दीनानाथ कहायो॥
बाबा नंद को परम पिग्रारा। नंदन बन तवि नामु हमारा॥
सकल सृष्ट मै जानो उत्तम। इस ते हमरा नाम नरोत्तम॥
इंदर ते गोकल जउबारी। तवि नाम मोहु गिरधारी॥
बन भीतर मैं प्रत सुप पावो। बनबारी तवि नाम कहावो॥
गीपीग्रा के संग क्रीडा ठानो। गोपीनाथ तब नाम पछानो॥
सकल मही को करो प्रतपाला। बसुधानाम तवि नामु हमारा॥
सौरम सृष्ट मैत उपजावो। जग उपजावन नामु कहावो॥
सकल सृष्ट सम घस मै नासो। सकल बिनासी कहीए तासो॥
रमयो सकल रिदे के माही। सम घट बासी नामु पु ताही॥
किसीठौर मै विप्ट न आवो। सम ते न्यारा नामु कहावो॥
द्रुम के सम बाध्ये महतारी। दामोदर तब नामु बिभारी॥
कबहू उपज न बिनसन भावो। ताते अच्युत नामु कहावो॥

मम पद मे जो जोत पसारा। जोतवान तव नाम हमारा ॥
कौला ते मम रह्यो न्यारा। कौलानाथ तव नाम हमारा ॥

दो॰—कौलासन को जगत मम और न प्यारो मोहि।
महादास कौलापति और सुनावो तोहि ॥

चौ॰—
राधा के संग प्रीत कमावो। तांते राधारवन कहावो ॥
सकल प्रण मै वास विचारो। तांते प्रम जी नाम विचारो ॥
सकल असुर को देउ बिडारी। तांते मेरो नाम परारी ॥
बैकुंठ है मोह पिआरा। बैकुंठवासी है नामु हमारा ॥
कासी को मै नाथ से भायो। कासी नाथ तव नाम कहायो ॥
जग निद्रा से रह्यो न्यारा। गुडा केस तवि नामु हमारा ॥
रिखीआ क वस कबहू न आवो। रिखीकेस तवि नामु कहावो ॥
बैठ हमासे योगु कमायो। बद्रीनाथ तवि नामु कहायो ॥
पुष दुराच धरो औतारा। बोध रूप तवि नामु हमारा ॥
सीता सहित ठाकर त्रिपतायो। रामनाथ तवि नाम कहावो ॥
दुर के जाय पुरी मै डारी। द्वारकानाथ तवि नाम बिचारी ॥
जरासिंध के युध नसायो। रणछोडराय तव नाम कहायो ॥
चौरासी को मय भुक्तावो। तांते कवर कल्याण कहावो ॥
सागर रिडक सियासुर मारा। षेष नरायण नाम हमारा ॥
सर्व स्वर्ग मय बसता जानो। स्वर्गवासी तवि नाम पछानो ॥
अलसी पुहुप रंग मय भाग्यो। नामु सावरा मोह उचारयो ॥
घन समान मोरा वपु जानो। कानैया मोह नाम विचारो ॥
एक चर्न मय पनीआरा डारा। तव ते बांका नाम हमारा ॥
बिचरो सर्ब जगत के माही। नाम बिहारी जानो ताही ॥
कुंजन मै जो क्रीडा भारी। ताते जानो कुंजबिहारी ॥
सादर रूप मदन ते जानो। मदनमोहन तव नाम पछानो ॥
माया मोह जगत का पायो। तांते मोहन नामु कहायो।
पृया संगम मोह को जानो। इम ते छम मोह नाम पछाना ॥
जगराही बृज करी अपारा। चबैआ तव नाम हमारा ॥

दो —सकल भवन मैं रह रहो किसून संग सुहाव।
महादास इत जानीए निर्मल मेरो नाम॥

चौ०

बिंद्राबन मै धेन चरायो। बंसीधरि तबि नाम कहायो॥
गोबन के संग धेन चराबो। मुरलीधर तबि नाम कहावो॥
सकल जगत मोह कर जुहारा। जगवदन तबि नाम हमारा॥
सकल भवन को जानो ईसा। ताते जानो नामा जगदीस॥
बिचरो जगत विविध परिकारा। सकल जगत बासी नाम हमारा॥
सकल जगत के करहो कामा। जगत बिलासी मेरो नामा॥
मथरा मय बो राज कमायो। मथुरावासी नामु कहायो॥
गोकल भरहौ अनेक अवतारा। गोकलवासी नाम हमारा॥
बृज को त्याग किते नही जाबो। तो बृजवासी नाम कहाबो॥
जहा नीर तहा हम का जाना। जलनिध बासी नाम पछानो॥
सकल जगत को करो उधारा। जगत उधारण नाम हमारा॥
सकल बनन मै धेन चराबो। बन माली तबि नाम धराबो॥
बिंद्रा बन पस मापन पावो। सलौना तब नाम कहावो॥
समति मूपम मो को जानो। ताते स्लोना नाम पछानो॥
प्रथमे सगल जगत मै धारा। सिरिजनहार तब नाम हमारा॥
जसधा ते पुर मापन पायो। मापन चोर तबि नाम कहायो॥
सकल घटा मै बसता जानो। घट प्रगासी तबि नाम पछानो॥
सकल मही के रचने हारा। मोसांही तबि नाम हमारा॥
सकल बिस्व मय ब्यापत मानो। बिहग नाम तबि मोरा जानो॥
मही उधारण असर मिमारे। तिस ते नामु बराह हमारे॥
सकल मुक्त के देवन हारा। ताते नामु मुकंद हमारा॥
राधा के संग मोह कमायो। राधावल्लभ नाम कहावो॥
सता के संग सदा बसावो। तिस ते संत सहाय कहायो॥
सकल सत को टहल कमावो। इस ते सांहीदास कहावो॥
महादास मम गुण ते न्यारा। तां निरमंमी नामु हमारा॥

अडल—

इन सौ प्रभु का नाम सुने मनु लाय के।
पावे पम पदाथु हर को ध्याय के॥
दुप दरद अघ सकट नर को ना लगें।
चौरासी के दुप सुनते भगें॥

चौ०—

सतदास सुन तोह बतायो। आद अत सौ कथा सुनायो॥
एह सभ नाम कहे गिरधारी। सगल सृष्ट निज रूप दिपारी॥
उस्तकरो चर्न लपटायो। आशा लै नर हर पुर आयो॥
महा दास गुर नगरी आए। कृष्णाबद मकुठ सिधाए॥
सतगुर पुरी बिलोकी आइ। उपमा ताँकी कही न जाइ॥
सुदर मवनु अनूप द्वारे। लिये चित्रका परम सुधारे॥
बोले कोकल मोर सुहाए। द्रुम बेली सब कही न जाए॥
फूली अनक भांत फुलवारी। काम वधू देपे छब हारी॥
सुदर सर मै कवल सुहावे। गूंजे भवर परम सुप पावे॥
सुदर सुभग बने दरवाजे। मानो आप बिधाता साजे॥
ताँके मध्य सगल परवारा। ज्ञानवान हर भक्तिह अपारा॥
ऐसी नगरी परम अनूप। बसीराम जहा कृष्ण सरूप॥
सिरदे सभा हंस की छाजे। सुरन सहत जिउ वासव बिराजे॥
मावत गुन प्रभ के बहु रगी। सभा गए महादास निर्मंगी॥
उस्तत करी चर्म लपटाए। बंसीराम मे कठ लगाए॥
आदर सहत निकट बैठायो। स्रवनन मै हरनाम सुनायो॥
अति अनंद सो बिचरण लागे। हर गुण गावत अत अनुराग॥

दो०—इस बिध कीने काज सभ संत दास सुन लेह।
आए पोजत हम सबै विछुला आन सनेह॥

चौ०—

अब तुम सुनो हमारी बात। ढूढत फिरत हुते दिन रात॥
पोजत गए बजीराबाद। निरपे प्रभू भये सभ काज॥
चर्नन पर हम सीस निवायो। जन्म जन्म का त्रास मिटायो॥

भए सिष्य तब सेवन लागे। प्रेम भगति मैं प्रभु अनुरागे॥
बाली करी अनक परकारा। सगली कहो होइ विस्तारा॥
आठ वर्स हर भगत कमाए। बहुरो प्रम बैकुंठ सिधाए॥
चौरे करत प्रभू को जाप। सदा मेट होइ अनुरागे॥
संतदास सुम मति वडभागी। जिन गुर कथा सुनी अनुरागी॥
सुनी कथा जो फल होई। सुम को आप सुनावो सोई॥
सुमरे गृह होवे अवतारा। करहु सगल वंस उधारा॥
दाता सती भगत सुर गियानी। प्रेम भगति जिस रिदे समानी॥
गुरवपसदास तिस नाम पछानो। बानी कथा सोई बहु जानो॥
प्रम भगति रहे कुल छाई। रिध सिधि तहा टहल कमाई॥
तुमरा वंस सगल सुप पावे। सत होइ दह कृपा न आवे॥
जिह इहा को सुने सुनावे। तातकाल सोई फल पावे॥
गुरमम सोई जिस गुर जान। संतदास सुन कथा सुजान॥

दो०—कही कथा सतदास को स्यामदास प्रगटाई।
पड़े सुने तिस जगत सुप मत मुक्त फल पाई॥
एकम फगन बदी को वीर वार पहिचान।
ठारा से अर टाहीए भई संपूर्ण जान॥

इति श्रीमतगुर देव जन्म साषी समाप्तम्।
लिषत त्रिजानंद गुसांई ते अयकृष्ण गुसांई कपूरे दे विच्च
लिषी सुभमस्तु सब जगतां सुभं भवेत॥

मंगलं लेषकानंच पठकानां च मंगल।
मंगलं सब भूतानां भूम भूपति मंगल॥
चतुर्वेदं चतुयन चतुवर्ण स्तमेवचप्रियो संध्या।
प्रियो लोका बर्णानां ब्राह्मणो गुर॥

अथ वार अमरदास

ओ स्वस्ती श्री गणेशायनम

राग सोरठ—वारि—

कोई होइ मूरा मुकत पेतु जीते ।
जनिम मरि मनि को मांप रपना करे ब्रह्म को भ्रात मिल जाइ बाते । रहाऊ
बम भरि मर्म की कोट काइया बनी भमो मवासु मनु मूपु भारी ।
पांच पाषीस पकर्मो रहे धर्म की सफा ले सम बिडारी ।
करे भाषर्दु कछु थम माने नहीं सूर मनिसा सबिल भौर भारी ।
मारि युग वस कीए जनिम जूनी बीए सकल ब्रह्म व बिमु गम हारी । १
क्रोधु परिमान तहा कामु कुटवास करी सोम मा दो कटि करसत मेले
मोहु दरिवानि पाबिल मोरचे दुप भरि सुप रहि निकिट पेले ।
गोमो सरदार हकारि सभ फौजका बडा पतहांन हठहांन पेले ।
सोम को घटा हुप भारि होमे धरे भम भपी सकल फागु पेले ।
रोप सिप्ना भरी दुर्मत दारु भरी सुर्त भरि निर्त के पाइ गोले ।
मा" बिवाद ले मारी दानो भरी भाव रिजक पुरी भान फोले ।
पाप भरि पुनन की मडेरी फिरे, नर्क भरि सर्ग पहिरे सजोल ।
बांध जामीन निमारि होए बडे रजिमामी माहु आहु ताले ।
उठ्यों बुध मूर रिम मर्म की उपिज के बढिया रणजीत म फौज सारी ।
मानि बिबक सुभ बिचारु मुभमम ले देमा परि मानि निज गति निभारी ।
सील संतोपु बिनु पिमा धीर्ज थम मेमु अनु मतु सहिज सपा मारी ।
प्रेम हार्गे सत मोल करो जुगत का कोटि के निकटि आई बिप मवारो ।
दप बहु ठोरि कहु साकी ठौर माह उठ्यों बिपारि देमू रपला" ।
सबिद पादिम बीमा बिनु भाम दीमा धमे गड आई नौबत बजाई ।
भयो मुकाबला भाई दोउ फौज का उठे रण मूर तहा मारि पाई ।
इनित कामु परि परि सील इनिते पस्या द्रप्ट का सहुबाउन धमाई ।
महिज की भाल पुरि ग्रान की ढाल ले गुमन का फेद सय उमि बनाई ।

मयगत तलवार सो म्झरि टक्के कीर्मो माम की सोम इति पत माई।
माव मनिहृदि धुरे बाजत माग्‍ सुरे कोध परि पिमा करि काप माई।
होय सनमुप मरे सर कसाके पर, एक ते एक का मुद मसाईमा।
कपिट कमनि मरि दीर दुर्वचन का मान करि मोह उन उसे साईमा।
निर्प उनिमान निवनि जमि दर्स क द पा मुप राप उनिमात पाइमा।
काठ सुभ बपिन का बाम तनु छैरठो कोध को मार मने सटाइमा।
पेत को बीठ के मान मुबराकीमा समा म उस बस विमुकु माइमा।
मोह् वाके की की विध मवि वनी धाइ रण सूरमा बोदु पाइमा।
निफ्नु है उोहु एह मरुसु है पोया मसी करियो चहु देपकठ सेसामाइ
मनयो दे पीठ इह दीर के पद्विमिठो थोर गह दत तृण सनै माइमा।
मोह् को वाम के मान मेरा कीमा वेमा करि मादनी टहुस साइमा
चढियो हुकाप उति फौज के मति मसी काम की साज बीदा उठाइर्वा
त्रिगुम हुपमार बेकारि कटि थाम के पहुर बपठरि पुदी सर्न धाइर्वो
मीर वतास मे पाज हृपि जोमनी माप मैरी प्रमुसु रत्तु भिहाइगा
म छ्य क मोम ते सुमित मार्व मुनी फिगुरी पकर तवकास माइर्वो।
र छि की मास कोई सुमाहृन चढे सुप मनाहिर्प हो मादि माइठो।
पविर इनि को भई कहृत मससतनाई पढियो मोर्यु उम मनै पस के।
सत सर्न की तास तसवारि से मम की मस्त को सम से मान ठहुके।
परी चवि मार तवि मरछ्ह हुकारि सिठ जित सूरि रण माह् ममके
होम पुरिम मए हार बोनो पर, मीत पम मरि दई एन बहु क।
फोरवपत रपसी भाइ होए पसी मिरठों हुमारु सम सोकु मह् के।
गिरे बहु सूर रण मूप बसमत के रह् गियो मोमु खिन चढति कीनी
बास्मेबावि हो हर्प मरि साक की सकम की फौज मे साथ कीनी।
मस्यो घठापु मरि पर्म भुप कटि कसे वाव प्रोत पहुत साप सीने।
माय मसर्कार पए काट पसत्र सए, सारमाजी सकस मोक सोनी।
दीर तोपें मरे धूर मनीं करे मयो मपेर रप मोठ छाई।
भोम परसोम तरिफे पई, मीम जिवमाइ रणपेत मम दमर भोगी।
मडे दल मारि सिरदार ही रहु गए, सोम मी रसत संतोप मारी।
ममाज पामी सकस स्वाग्‍ सम हिर सीए, परी मव उमो को माम मारी
मए बम टूट तब हार सम ही पए, बाम भुगका मई समा सारी।

पकहि मागे घरे आहृ कपत हरे मिले मुध भूप को करि जुहारी।
माइ करि प्रेम कर जुगत से नेम को ध्यान घरि ब्रह्म की मगन जारी
पाप मरि पुन पुप सुप त्रिप्णापुदी दुर्मत पाकितें करि दगध मारी।
पकरि मनुभा लीमा बांध सुध वस कीमा माइ पगिलाग भठा दीनहारी
ठाहनौ कोट जहा चोटसी भूप की पोल्हृ पटि भेद रव गगनि फारी
कीयो मयदान गड जोत का चांवना माद मरि मत मिस द्रिष्ट माई
जनिम मरि मर्न को चूक झगडा पडो नर्क मरि स्वग को छुटी धाई
हृप मरि सोक से होय न्यार रहे मुत मरि निरत सै सभ ववहाई।
जनिम सै ममरदास गुरि धर्न लय मगित मरि मुकति मग सीस पाई

इति श्री ममरदास बार सपूर्ण शुभ भूयात् ॥

अथ वार काशीदास

अथ वारि भाई काशीदास लिख्यते।

सत्यसरूप अविनाशि धरि उपज्यो जग मैं आइ।
साँईदास रचना रची कौतक दीयो दिखाई।
नरिहरि के ग्रह जन्मयों सुदरि सती सपूत।
टिके बैठा काशीनामु जिन रंगु दिखाइआ।
औरि औतारि पाछे पडे धनि तू है भाइआ।
जो धरिती लागे आइ के सौ मुकति पठावा।
धरिनति कसि होणी कहो जो बेदा आप सुणाइआ।
दिसीठो चलिआ महागीरु कशिमीरे आइआ।
मजिलो मजिली चलिदा लाहौरे आइआ।
हरिनि सुमारे आइ के बहु डरा पाइआ।
सधिकरि सम तियारि करि अधिकारा सिधाइआ।
पातिशाहु सुणो बोलआ अलखिपानि बुलाइआ।
जिस दे अंग मिरगु आइ, सो मारि सिधावो।
घोडा पिछे मिर्ग दे पातिशाहु चलावो
अगो मिर्गु नि आइआ मुहि लागि सम्हारो।
बागु जि डिठा पातिशाह अति बहु हिर्षाइआ।
माली बेग बुलाआ तिस आप सुणाइआ।
जी एह हिंदुआ की रायी रखे तिस बामु सवाइआ।
बेगि बुलाइओ तिस नू, पातिशाह कहाइआ।

पौडी—

एह पविरि होई महतनू तिसि वेपण आइआ।
हरिप होइआ बहु पातिशाहु हसि पास बहाइआ।
तमि मनि की चिंता मिटी पूरण वरिसाइआ।

कलिगी मासा मोतिश्रा तिस भेटि चाढाइश्रा।
बहुत रिहंमा पासि दाहु, घरि उठ सियाइ श्रा।
एह हकीकित पातशाह दी बेगम सुण पाई।
पातिशाह ओहु जु कोणु फकीर ह जिस दी हे करी वडभाई।
एह सगति हे गुर भजने जि हा धुम्य रचाई।
एह ढिल नि कीजे पातशाह तिस बन्दि भगाई।
गुसे होइश्रा पातिशाह पोजि मीरि सदाइश्रा।
बन्ह सिश्राओ फकीरि नूं डहरा ढहाई।
जिथे बणिश्रा डेहरा तिथे मसीति बणाई।
होणी किस नि मेटीए, कलि बुध्य गवाई।
चढिया पोजु मीर बदोकी श्राइ श्रा।
कहीश्रा वेसे वेसन्तार डेहरा जु चाइ ढाए।
जिथे कहीश्रा तिथे रतु पाक चलाई।
वेसदारि धरिनी परे जिन्हा श्राप गवावे।
पोजि मीरि काधीदास को कह पठो इठि आई।
हमे प्रु मिसतौं श्राइ के तुरिकनि मिसतों श्राइ।
संगत सेवक हाथ जोड के बेनती कही सुनाइ।
स्वामी तुक नि मसतो जाइके कहा बने कछु श्राइ।
रे मिले बिना ना रह सकों छशो तां श्रावे लाज।
तासे मिलए आइ के सुफले होवे काज।
पातिशाह को मिसने चले। काधीदास सिधाए।
एह पविर होई मुरार नू तिस श्राइ बगारे।
श्राज्ञा करो महति जो मे कहा पुकारे।
सधकरि सभ सफाउ करि भया जु नगारे।
श्राशा करो महंत की धरिती श्रपुठी पाई।
बरिया गोसश्रावो करो विजिली चमिकाई।
महिसी श्रगि भगाइ के डेरे जु ढहाई।
मै हमा उठेरा रापदा मुप श्राप सुणाई।
धीरा होउ मुरारि जी गुसा नहीं करिए।
झलिना जोर नि साईए, मगि मंदिर बरीए।

छाडे सिरि ते करिता पुरखु है भेद काहु करीए।
पति रख गुरु साईंराम मनि धीरि जु फडए।
मसिवपा उठि बोलआ गनि कन्हु सुणाई।
एहु फकीर ना छेडए, सिधु मुसा माई।
कहिआ किस ना मानआ वरिजे सु भुकाई।

पौड़ी—

बंदी पाने पड रखो जहांगीरि फरिमाइआ।
तुसी समत हो गुरमर्जने जिन्हा बखश्यु उठाइआ।
पातशाहु कहु तुसा नाउ फकीर किउ सदाइआ।
तुसी चढि इणकारे पटदे असा नामु जपाइआ।
बिन करामात नि छडसा करामात दिखावो।
नही त गरदनि मारिसा नही ति धर्मु गवावो।
तुसा नामु फकीर किउ सदाइआ मुखि आप सुनाइआ।
बिना करामात न छडसा सो जतुनु करावो।
पातशाहु से मासा आरिदे सुटी मैदाने।
करामाति असाडी एस बिधि आप मेहु पछान।
हाथी घोड पहलवान सूटे सभ डाले।
जिने नि जाइ उठाईआ मजलिस हैराने।
चतिर साम कहे पातशाह एहु साधु मुसू नि छेडडो जाइ।
बारि बारि बेनती करो समिझ देखु मनि माहु।

पौड़ी—

राजा आपे चतिरमास मनही नि करीए।
मनेहा साधु न छेडओ मै करिता डरिए।
एन्हा दा रसु भसेरा दिसदा मरिआ सभ भरिए।
मै साहुबि दे डरिए पातशाहु, किउ मनि भाई मरीए।

पौड़ी

कला उठाई पातशाहु राती सपनु नि आव।
मिहरा फडि फडि मटीए, महिमी मगि समावे।

पौड़ी—

सुइना मोती थालु भरि, स भेंटि चढ़ाई।
मसा ना कसु खोईए, पातसाहु समिसे देहु लुटाई।
माइया देय न भुसु तूं साधु माप सुणाये।
कांशीदास महु उठ चले सांईदास सहाए।

'इति बाणी कांशीदास बीचारि'

अथ धन्ना चरित्र लिख्यते

पौड़ी—

कसिरि धना गाईं चारे, ब्रहमुणु निधिस्यो भाई।
चधि नाइ धोइ पूजा विसधारी बैठा ध्यानु लगाइ।
नाइ धोइ महालभा सुठाकुरु, पास धंन्ना बैठा भाइ।
धन्ना भाखे सुण चोइ दादा मैनू धरिमी लाइ।
बहमुणु भाखे सुण चोइ धंनआ तूं भवि की धवी मिवाइ।
धंगुहु ठाकुरु तैनूं देवा चडा कोई मुटिआरु।
सभना दा पिउ मेरे घरि है चलु असाडि नाल।
बहमण दे घरि धंना अइआ दादा ठाकुरि देहु।
चधि भास धूंडि पसेरी विती लै धनआ ठाकुरु एहु।
पहिला भेटि चढा आइ मैनूं सुफली तेरी सेव।
धंनै गौढ सबेरी विती ठाकुरु सैदा आइआ।
टोभे तेआइ सेव धरभी भूरा हेठ विछाइआ।
नाइ धोइ बहालआ सुठाकुरु दा घरि धोभता आइआ।
जा तू खावे ता मैं खावा धंनै विदि चितु आइआ।
धंतिर जामी जानिम हारे गोबिंद भोगु लगाइआ।
ठाकुरि भाखे सुण चोइ धंनआ मैं करा तुम्हारी सेव।
फेरा हुल्ट किआरे छता कंम्मु करा मैं एहु।
गाईंआ चारा कंम्म सवारा जाणा सभे भेउ।
तुह मैनू तनु मनु धनु अरपंआ तू निरभै पैइ सोउ।
कंमु हवाले हरि दे कीता धंना घरि नूं आइआ।
मगो सिखिआ पुछणि लगी किउ भरिआसे आइआ।
मधे किसे मास मोल आहो मै पेट अगु पजाइआ।
दादे असा माल धंगा कीआ कामा भमा रसाइआ।

ब्रहमण दे घरि धना आइआ दादा ठाकुरु मेरा गोआ चारे ।
कंम करे सभ घरि दे दादा, असा नहीं कोई सारे ।
घरि ते माहुरु हरि नू सौप्या आह सुटे सभ मारे ।
दादा ठाकुरि तेरे छोडिओ केडे मेरे होए मुटिआरे ।
ब्रहिमुणु आपे सुण बोइ धनआ त जाणआ हरि का भेउ ।
जिहबनु टोरो तै हरि सो रपी तैनूं मिलआ निरंजन देव ।
मैनू दरिसु दिषाई धनआ मैं तेरा गुरदेव ।
धना आपे सुण बोइ दादा म तैनू दरुसु दिवाई ।
ब्रहमणु मू सदा हरि आइआ अगे दामु चरेदा गाई ।
अहु देपु पसाही दादा मैं सभे कर्म कराई ।
चने मू हरि नजिरी आवे ब्राह्मणनू दिसे नारी मैं सभे कम कराई ।
ब्रहमणु आपे सुण बाइ धंन्नआ तू मैनू दरिसु दिवाइ ।
गुरु उधारे सिप्य बाहु किआ सिप्पु उधार बाइ ।
मैं भी हा वडिभागो धंन्नआ मैंनू एहु बुझिआ आइ ।
मेरा हुन्न मुए बोइ धंन्नधा तू हरि दी परी पाइ ।
धना आपे सणो मारदण मेर गुरि को दरुसनु दीजे ।
जिस दे पिछे मिलआ मैनू कथा मेरा सुण लीजे ।
जे एस भूटी सेड धरमी तुसी किरिआ करी भीजो ।
धना आपे सुणी मराइण तू रीभु असाडो रीझे ।
ठाकुरि आपे सुण बाइ धनआ मैं इसे नि दर्शना दीज ।
एहु भूठा परिपची ब्राह्मणु हमि कर्म बले रे कीरे ।
सारा जनुमु गवाइओं भेव एहदा भजे मनुआ भीजे ।
ठाकुरि आपे सुण बोइ धंनआ म इसे न दरसनु दीज ।
धना आपे सणो नाराइण परिवस तेरी माइआ ।
जिन्हा मू तू आप धराध तिन्हा कौणु भुलाए राइआ ।
पूरिम बह्म मनातनि मापी बडा तेरा है साइआ ।
भगिता दा हितकारी ठाकुरि, बदि पुराणी गाइआ ।
मेरे गुरि मू दरिसनु दई सरिण तुम्हारी आइआ ।
ठाकुरि आपे सण बोइ धनया मैंपहुं कप्णु मुरारे ।
या प्रानी सरी मरिमी आवे मो प्राना मैं तारें ।

मभिस करे सोढी मै माखे क्या पुरिय क्या न्यारे।
प्रह्मण दो हमाइति भाटी, एह बिलघु गुपारे।
धने दा हरि साखी छोड्मः जो भाये सो मन्ये।
धुरिएीमादीमा टिका चखाए, भरिए चुपाए गंन्ने।
मिसी रोटी सागु पवाने छाह् पिमान्ने छन्ने।
मेरे गुरि नू दरिसुनु देई म धूक सुणावा कंन्ने।
ठाकुरि घाये सुण चोइ धंनमा मैं तेर वसि परिमा।
जिउ मिउ नचाए तिवे तिउ नचा तू नाल मेरे है परिमा।
ठाकुरि चत्तिरमुजि रूपु कीता भ्रबिमाषी
दा मह्मण हरि दा दरिसुनु करिमा।
मह्मणि नू हरि दर्सुनु दिता परिम मनोर्थु पाइमा। धने गुर सराहमा
गोर्धनाथ मखिप्र चधारे, कब सगस दीयो स्याइमा।
माधो बसी साईदास किया मुक्त पदार्थु पाइमा।
साविसदास गुरां दी क्रपा चभिमु धंने दा गाइमा।

परिशिष्ट–१

गुरु परपरा तथा गुसांई वशपरपरा

मथ गुर परनासी सिप्यते

प्रपमे म ह्य मह्म के शिप्य मूम मूस के शिप प्रकिर्त प्रकिर्स के शिप विजावंग विजावंग के शिप ऊँकार, ऊँकार के शिप महितत्त महितत्त के शिप मादिमूल नारायण मादिमूल नारायण के शिप महालक्ष्मी महालक्ष्मी के शिप मक्षमासरूप मक्षमासरूप के शिप उजासमुनि उजासिमुनि के शिप्य मोत मुनि मोतमुम के शिप प्रिष्प मुनि प्रिष्पमुनि के शिप प्रगटट मुनि प्रगट मुनि के शिप गमीर मुनि गमीर मुन के शिप प्रिगमुनि प्रिममुन के शिप मचस मुन मचम मुन के शिप मुत प्रगास मुत प्रगास के शिप नार्वमुन मार्वमुन के शिप फटिक मुन फटिक मुन के शिप सत्त मुम सत्तमुन के शिप बैरागमुन बैरागमुन के शिप त्याग मुन त्याग मुन के शिप रहित मुन रहितमुन के शिप धीर्वमुन धीबमुन के शिप संतोपमुन संतोप मुन के शिप दया मुम दयामुन के शिप तुलसीमुन तुलसीमुन के शिप वृपमुन वृपमुन के शिप चन्द्रमुन चन्द्रमुन के शिप पीहोमुन पीहोमुन के शिप महामुन महामुन के शिप चाहमुन चाहमुन के शिप पुंडरीककव्या पुंडीरकाव्या के शिप पुष्पदेव पुष्पदेव के शिप रामामिश्र रामामिश्र के शिप महा-पुराण महापुराण के शिप विद्याधर चौबे विद्याधर चौबे के शिप उदासमुम उदासमुम के शिप चम्यासमुन चम्यासमुन के शिप प्राणगुरु प्राणगुरु के शिप रामानुज रामानुज के शिप हरिरामानुजसंघृत।

रामानुज के शिप सुतपीपा सुतपीपा के शिप सुतधाम सुर्तधाम के शिप सुर्त बैदेही सुर्त बैदेही के शिप ममसमुन ममसमुन के शिप इति म ता सता।

ममसमुन के शिप प्रतापमुन प्रतापमुन के शिप रिप्ट मुन रिप्ट

मुन के शिष गोपमुन गोपमुन के शिष मुलतारक मुलतारक के शिष पद्मलोचन पद्मलोचन के शिष पद्माचाया पद्माचाय के शिष देवाचाय देवाचार्य के शिष सुपाचार्य सुपाचार्य के शिष वलीघरचाय वलीघरचार्य के शिष कृपाचार्य कृपाचाय के शिष विष्णाचाय विष्णाचार्य के शिष प्रषोत्तमाचार्य प्रषोत्तमाचार्य के शिष नरोत्तमाचाय नरोत्तमाचार्य के शिष गगाधरचार्य गगाधरचार्य के शिष सदाचार्य सदाचार्य के शिष रामाचार्य रामाचाम के शिष भीरानदि भीरानदि के शिष देवानदि देवानदि के शिष शामानदि शामानदि के शिष सुर्वानदि सुर्वानदि के शिष प्रसवानदि प्रसवानदि के शिष प्रच्युतानदि प्रच्युतानदि के शिष पूर्णानदि पूर्णानदि के शिष सिरीभानदि सिरीभानदि क शिष हरीभानदि हरीभानदि के शिष राघवानदि राघवानदि के रामानदि रामानदि के शिष प्रनतानदि प्रनतानदि के शिष पर्मानदि पर्मानदि के शिष मुकददास मुकददास क शिष साईदास।

ओं स्वस्ति श्री गर्णेशायनम। सति सर्कप बाबा साईदास जी॥

बावेसाईदे पुत्र ५—नरहरदासु[1] भविदासु विष्णुदासु, सुपानदु, रामानदु।

नरहरिदास दे ४—कासीदासु माधोदासु भार्गीचदु, लालचदु।

कासीदास दे ३—विहारीदासु मुरारी दासु जगजीविणी दासु।

विहारीदासि दे —केविसिराम सविलदास नगौतीरामु।

सविलदासि दी दुयधीमा २—कासीये धन्ही।

केविसिराम दे ६—धर्मचदु हरीरामु महाराजु, साहबराम हकूमराय नवलराय।

हरीराम दे ४—सोभारामु शिवरामु साधूरामु, सखीरामु।

सोभाराम दा १—किर्पारामु।

किर्पाराम दे ३—प्रमेरामु सरिधा रामु।

प्रमेरामि दे ६—रामिकर्नु हरिकर्नु वर्कुंटिदासु, मथरादासु बिलासिदासु द्वारिकादासु।

सरिधारामि दे ४—प्रासिकर्नु जयकर्नु मोहिचदास त्रिलोकिदासु।

शिविराम दे ५—प्रातमारामु माशारामु रगीरामु देआरामु भोलारामु।

माशाराम दे ३—पजारामु बासिरामु मोतीरामु।

---

१ पाठ "प्रमरदास" है।

रगीराम दा २—धनरामु।
दयारामु दे २—हरिनामु रामिकिष्णु।
महाराज दे ५—हरिनरायण नदीरामु, दयाशिवासु मनिसारामु भोसारामु।
हरनरायण दे २—धनिपतु, असिपति।
धनिपति दे ३—चणिदासु प्रेमिदासु ग्रामिदास।
असिपति दे २—ऊधिनाकु पुसिबसितिराय।
पुसिबसितिराय दा १—धर्मिदासु।
नदीरामि दे ३—गुबिनिदासु, रामिदासु गरीबिन्दासु।
गरीबिदासु दा १—प्रसिधरामु।
रामिवासि दे ३—रतिनन्दासु, गोपालिदासु मगिसिदासु।
रतिदासि दा १—सुपिवासीरामु।
धामिदास दे २—भोसा रामिनाथु।
रामिनाथु दा १—अयनंदु।
मनसारामु दा १—रामजसु।
रामजसु दे २—भासानदु सदानदु।
भोल्हारामु दे ४—राधेकिष्णु बालकिष्णु रामिकिष्णु।
राधेकिष्ण दा १—मगितरामु।
साहिबराय दे ४—रामि कौर मगिरामु, मलाविरामा चौपितिरा।
रामिकौर दे ३—भगिवानिदासु बागु, पहसिदासु।
भगिवानिदासि दे २—प्रेमिदासु, धर्मतिदासु।
बागि दे ४—सबि सुपु सुपिसासु, रामिदासु, किष्णुदासु।
भस्तिरामि दे २—मस्तिरामु सहजरामु।
मलाविराय दे २—दयारामु किष्णरूपु।
किष्णरूपु दे २—सामिदासु निधानुदास
धामदासि दे २—रामिराज बखाधारो।
चौपितिरा दे २—सामिदासु रतनदासु।
रतनदासु दे २—परीबिदासु भवामीदासु।
हकूमितिरा दा १—समामितिरा।
समामितिरा दे ४—वबिनिदासु मरायणदासु, हरिदासु संतिदासु।

वर्धिनिदासि दे २—विग्या नद्, हरिनद्।
विजानंदि दा १—जयनंदु।
जयनदु दा १—हरिनदि।
हरिनदि दा १—जयदासु।
हरिदासि दे २—सेविकिरामु वासिकिरामु।
सेविकिरामि दा १—सदारामु ॥१॥
मुरारीदासि दे ५—नरगिरा दिम्रानितिरा मनूपिरा मटिलराय
बीठिलिरा।
दिम्रानितिरा दे ३—हरिवसिरा किष्णिकौर मविदिरा।
हरिवसिरा दे ५—वकेरा रामिकृष्णु नरायणदासु ठाकुरिदासु,
रामिदासु।
वकेरा दे २—जयकिष्णु हरिकिष्णु।
हरिकिष्णु दा १—सदानदु।
रामकिष्ण दा १—सबारामु।
नरायणदास दे २—रत्नदासु, महादासु।
किष्णकौरि दे ३—घाधिमलु दयारामु भ्रामारामु।
घाधिमल्हि दा १—धामिदासु।
धामिदासु दे २—रामि मजु चंदु।
दयादाम दा १—सविदासु।
सविदासु दे १—रामचनु।
मविरा दे २—सछीमी नरायण सदानरायण।
सछीमी नरायण दे २—प्रमदिम्रालु किष्णदिम्रालु।
मनूपिरा दा १—भागिमल्ल।
भागिमल्ह दे २—रामिरा मनिसारामु।
रामिरा दा १—रामिजसु।
मनिसारामि दा १—सासदासु ॥२॥
जुगिम्रोविणिदासि दे ३—मिहिर चंदु दलिपति राय हरीचदु।
मिहरचदु दा १—जोधारामु।
जोधारामु दे २—विजिनाथु किष्णसहा।
किष्णसहा दे २—जय भगिवानु, घिबिदिम्राल।

खिविघालु दे २—जसुवतु पयन दु ।
जयमगियानु दे २—सदान वु बिजान वु ।
दमिपति रा दा १—हरसहा ।
हरसहा दे ५—हुकीकिति रामु गुर्बिविरा देसिमुपी गुरिबपुसु भगिवनु ।
हुकीकितिरा दे ४—पुरि सहा रामिवासु जयसिंघु, सदोवा ।
सासिदासि दे १—देवीसहा सुपिदिमासु, कासू ।
कुसिजस दा १—पिबो ।
पिबी दे २—ज्वालादासु, मैसादासु ।
रामदासि दे ३—दर्सिनदासु भगिवानिदास नरायणदासु ।
दर्सिनदासि दा १—मूलिराजु ।
मूलिराजु दे २—गुरदासु मथिरादासु ।
भगिवानिदासि दा १—सर्निदासु ।
नरायणदासि दे २—महादासु देवीदासु ।
जयसिंघ दा १—पागु ।
पागु दे २—निवाहू गुपालिदासु ।
गुर्बिविराय दे ५—दमारामु रामिचंदु लछिमिनिदासु गरीबिदासु रतनदासु ।
दमाराम दे २—बगुनिदासु टहिलिदासु ।
टहिलिदासु दे २—देवीदासु बक्सिमदासि ।
बक्सिमदासि दा १—रामिजसु ।
लछिमिनिदासि दा १—रामरता ।
गरीबिदासि दा १—रामिनाथु ।
देसिमुपी दे २—सहजरामु नरायणदासु ।
नरायणदासु दे २—रामिसिंघु, किष्णिदमासु ।
सहजरामि दे २—मयोरचंदु राधेकिष्णु ।
गुरिबपिराय दे ३—रामिकिष्णु जयकिष्णु रामिमापु ।
हरोचंदि दा १—हरमितिरा ।
हरमितिरा दे २—मस्तीरामु सधारामु ।
मस्तीराम दा १—मातिमारामु ॥१॥

चैनिसुनु दे २—मंदिसामु गुजिरिमसु।
मंदिसामि दा १—हुदेरा।
हुदेरा दे ३—राजिकैद दाधिविसहा धनिपतु रामिमसु।
धनिपति दे २—नामुकु सुयिनिधानु।
गुजिरि मंसि दे २—रामराम रामिजी।
रामिजी दे ३—रामिचालु, धर्मिचालु किष्णचालु।
रामिचालि दे २—रामिमजु देवीदासु।
कल्यामिदासि दा १—ऊतिमिदासु।
ऊतिमिदासु दा १—गंगारामु।
गंगारामु दे ५—चेतिनिदासु प्रीतिमदासु जन्निमाथु धीजिरामु
दसिवधीमसु।
प्रीतिमदास दे २—मावीरामु, बिसाधीरामु।
बिसाधीरामु दे—वेधाचालु रामनाथु।
सायीचदि दे २—ऊधिनकरा रामिकिष्णु।
रामिकिष्णु दा १—सेविकिरामु।
ऊसनकिराय दे २—हुकिमचदु नरायणदासु।
जगिनाथि दे ३—स्यामिदासु, बाहदु मिसिचीराम।
धीजिरामि दा १—रामिकौद।
दसिवंधीमसि दे ३—मजिसिसिरा बाधिमसु चद्रिभानु।
चन्द्रमानु दा १—सरिधारामु।
बाधिमसु दा १—किष्णिदासु
मजिसिसि दा १—मागिमसि।
मागिमसि दा १—मिमिसैनु।
मिमिसैनु दा १—मगिसि सैम।
मगिसिसैम दा १—दयारामु।
दयाराम दा १—देवीदासु ॥३॥
सुपानंद के ॥४॥ रामानदु ठौतारि ॥१॥

संवतु १८६२ मीति मसुंजी विजि वारिखे १२ वीरिवारि लखे
मासरिवति बाधिमाठे लिखितंम रामिकनु सुभंमस्तु ११११११११

परिशिष्ट २

ओं श्री गणेशायनमः

सतगुर बाबा सांईदासायनमः । ओं अ तरराम नरन्तर राम ।
कांशी क्षेत्र अयुध्या धाम गंगा तुलसी शालगराम ।
तत्व निरंजन तारक राम ॥

ओं अस्थो गुन पासना सें दर बीजम रामाय हुन्नू मुप काली रोही
मादिष्टो भजतां कामधो मणी ।

सतरी—

ओं ह्रीं ह्रां शरीग रामाय नम भर्रसिंघाय नमः
सत गुर बाबा सांईदासायमम ।
ओं आद वैराग सनातन धर्म दंड कर्ममंडल वैष्नव कर्म ॥
वैष्नव कर्म रहे सब लीन तन मन सोधे होवे आधीन ॥
मप सिष्ट दाढी वजर मुज कपीम मुष के केस समबादक ॥
धीपा गुरू रामबा नन्द जी कहें गुरू रामानन्द जी से उधरन्ता
इसना सनकादिक बीज मंत्र समपूरनम ॥

गोदावरी प्रक्रमा अयुध्या धर्मशाला चित्रकूट मुज वलास सीता
अष्ट हनुमान परीक्षत राम देवता राम मत्र अक्षय गोत्र शापायन्त
रिगवेद राम गायत्री निरबान अपाडा शालग्राम महन्त मलता गादी
धोधा मत्र लिंग शरीरग वयापर्क चराचरं, सोहं राम नरंजन चरनं
शरनं परपद्ये ।

गुरू मंत्र—ओं अंतर राम नरतर राम कांशी क्षेत्र अयुध्या
धाम तत्व नरंजन तारक राम ।

सारस्वत ब्रह्मन कात्यायनी सूत्र शाखा मादयन्नी पंच प्रव भृगू-
मार्ग-उर्ग-यमदग्नी प्राशर-यजुरवेद ।

परिशिष्ट ३

सात अखाड़े

दिगम्बर निर्बानी निर्मोही पापी महासमधी बलभद्री सन्तोखी।

सन्त बाबा साईंदास जी के अस्थान—

धमधाल रियासत पंवा विश्नदास जी के अस्थान दास जी। बल चाना जिला अमृतसर।

माधोदास बन्सीदास महादास—डोडा जिला सयालकोट।

कांशीदास जी निरंजनदास—शेरपुर, रियासत भसरा पाटन।

कांशीदास मथुरदास—फल्लौर।

केवलराम भगवानदास—तरवे जिला अमृतसर।

श्री गोबिन्दपुर—माधोदास दुरगादास।

लाहौर—राम गलिसादास।

रणधीर, अमचन्द मनहरदास—फतेपुर।

मथुरादास रूपचंद—कश्मीर।

मुरारीदास गोपालदास—रामबाग।

'गोसाई साहित्य' प्रकाशन की योजना

श्री ओमप्रकाश गोसाई
मंत्री सतगुरु सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ

१९४७ ई सितम्बर का महीना—

सारा पश्चिमी पंजाब भीषण साम्प्रदायिक हिंसा नृशंस हत्या अपहरण और लूट-पाट की आग से झुलस रहा था। एक दिन हठात् जिला गुजरांवाला का सुविख्यात गाँव 'बद्दोकी गोसाइयाँ' भी इस विनाशकारी आग की लपेट में आ गया। 'बद्दोकी गोसाइयाँ' —जिसे आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले परम सन्त महान् योगी और संगीतज्ञ गोसाईं बाबा साईंदास ने बसाया था — बद्दोकी गोसाइयाँ —जो संगीत-साधना का एक प्रसिद्ध केन्द्र और गोसाईं सन्त परम्परा का तीर्थ-स्थान था—यहाँ सन्तों संगीतज्ञों के अतिरिक्त डा० श्री गोकुलचन्द नारंग और भारत के वर्तमान गृह-मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा व अनेक समाज सेवी और देशभक्त मनीषी भी पैदा हुए,—बद्दोकी गोसाइयाँ—जो शताब्दियों से हिन्दू-मुस्लिम एकता भाईचारे सुख व शांति का गौरव-स्थल बना चला आ रहा था—देखते ही देखते उजड़ गया। बाबा साईंदास की पवित्र गद्दी टोमड़ी साहिब और उनके वंशजों के घर भी लूट लिये गये। हिन्दू बहुसंख्या का यह गाँव जिसमें ब्राह्मणों के घर सबसे अधिक थे हिन्दुओं से नितान्त शून्य हो गया। कुछ मारे गये बाकी के सब हिन्दू और गद्दी के महन्त भी जीवन-रक्षा के लिए सेना की सहायता से शरणार्थी शिविर में पहुँच गये। गाँव में गहमा-गहमी चहल-पहल के स्थान पर मौत का सा सन्नाटा छा गया। चोरों ओर तबाही की विभीषिका फैल गई। ध्वस्त घर टूटे हुए दर और दीवारें मानव हृदय में भय के नश्तर घोंपने को तैयार खड़े नजर आने लगे धरती का कण-कण खून का प्यासा बन गया। ऐसी भीषण परिस्थिति में एक व्यक्ति बड़ी सतर्कता और साहस के साथ इस तीर्थ क्षेत्र के महन्त के निवास-स्थान की ओर बढ़ रहा था। उसकी नजरें बार-बार तेजी से चारों ओर दौड़ जाती थी। निश्चय ही वह प्राणों से भी प्यारी किसी वस्तु की तलाश कर रहा था। यह न होता तो वह इस क्षेत्र में पग रखने का साहस न कर पाता क्योंकि इस क्षेत्र में उस समय पग रखना जान का जोखिम में डालना था। लेकिन वह व्यक्ति प्राणों को हथेली पर रखकर आगे बढ़ता चला गया एक अत्यन्त निर्भीक वीर पुरुष की भाँति। महन्त जी के भवन के आँगन में पहुँच कर उसने देवनागरी लिपि में हस्त लिखित बड़े-बड़े पन्ने इधर उधर बिखरे हुए देखे। उसने तुरन्त उन पन्नों को उठा लिया और श्रद्धापूर्वक सिर आँखों से

लगाया। वह वीर आगे बढ़ा और उसने देखा कि उन पन्नों के साथ का हस्तलिखित पूरा ग्रन्थ एक स्थान पर अस्तव्यस्त अवस्था में पड़ा था। उसका हृदय हर्ष से उछल पड़ा। उसने तुरन्त उन पन्नों और ग्रन्थ को कपड़े में बाँधकर सिर पर रख लिया और तेज़ी से अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ा। उस समय भी वह सुनकर कई ध्वस्त घरों और दीवारों की ओट से धरमाहु-अकबर के नारे लगाने वालों के छोड़े जाने की आवाज़ें और लूट-पाट का शोर-गुल सुनाई दे रहा था। वह वीर पुरुष उस हस्तलिखित ग्रन्थ को सिर पर उठाये शरणार्थी शिविर में अपने साथियों के पास पहुँच गया।

वे वीर पुरुष गोसाईं हवेलीराम थे जो आजकल ज़िला करनाल के राजगढ़ नामक गाँव में आबाद हैं और वह ग्रन्थ जो इस समय बड़ा सुन्दर रूप लिये आपके हाथ में सुशोभित है उसी हस्तलिखित ग्रन्थ या पाण्डुलिपि के मुद्रित संस्करण की एक प्रति है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग ३ वर्ष पूर्व गुरु नानक देव जी महाराज के समकालीन सन्त गोसाईं बाबा साईंदास जी महाराज ने की थी और इसका कुछ भाग उनके उत्तराधिकारियों द्वारा बाद में रचित हुआ। परन्तु विधि का विधान अत्यन्त विचित्र है। यह ग्रन्थ देश के विभाजन से पहले जब सब सुविधाएँ उपलब्ध थीं तब तो प्रकाशित न हो सका या किसी ने इस ओर ध्यान ही न दिया था और अब ऐसे समय में जब कोई सुविधा तथा संभावना नज़र नहीं आ रही थी यह ग्रन्थ शानदार रूप में प्रकाशित होकर साहित्य जगत को अपनी प्राचीनता उत्कृष्ट विषय वस्तु और साहित्यिक मूल्यों द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा कैसे उत्पन्न हुई और इसके प्रकाशित किये जाने के सिलसिले में किन-किन कठिनाइयों का सामना हुआ—यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है। प्रथम यह कि यदि गोसाईं हवेलीराम जी प्राणों की बाज़ी लगाकर इस ग्रन्थ को भीषण साम्प्रदायिक मार-काट के क्षेत्र से निकालकर सुरक्षित स्थान पर न पहुँचा देते तो इसके प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा का या प्रकाशित किये जाने का प्रश्न ही पैदा न होता। पर बात यह हुई कि गोसाईं बाबा साईंदास की गद्दी—सोमवी साहिब बठोसी पोसावली तो पाकिस्तान के कब्ज़े में आ गया और इस गद्दी के लाखों अनुयायी शिष्य और श्रद्धालुओं को पाकिस्तान छोड़कर भारत आना पड़ा। उनसे अपना यह तीर्थ-स्थान और गुरु-दीक्षा-मन्दिर छिन गया। मन की आध्यात्मिक शान्ति का परम्परागत साधन कोई न रहा। तब परम सन्त और गुरु बाबा साईंदास जी के इस हस्तलिखित ग्रन्थ की ओर उनके अनुयायियों और परम्परागत शिष्यों का ध्यान गया। इन्होंने अपनी गुरु-गद्दी अथवा दीक्षा-मन्दिर के अभाव की पूर्ति का उपाय इसी ग्रन्थ को समझा। इससे इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन के लिये प्रेरणा पैदा हुई। लेकिन यह कोई
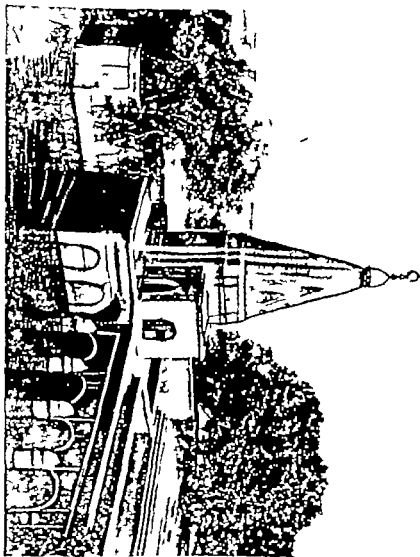
आसान काम न था। क्योंकि यह किसी एक व्यक्ति के बस का नहीं था और गोसाई-महंत के साथी अधिकांश पाकिस्तान से उजड़ कर आये थे तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर आबाद हो रहे थे। उनको संगठित करना और उनसे ग्रन्थ के छपवाने के लिये पर्याप्त धन इकट्ठा करना एक बहुत बड़ी समस्या था। अनेक कठिनाइयों का सामना था पर इससे प्रेरणा रुकी नहीं। बहोकी गोसाइयों के जो भाग दिल्ली आकर आबाद हुए, वे संगठित हुए और उन्होंने इस ग्रन्थ को जिसका मौलिक नाम 'ग्रन्थसाहिब' है छपवाने का कार्यभार डा० बालकृष्ण जी को सौंपा। उन्होंने यथाशक्ति प्रयत्न किये परन्तु सफलता न मिली। पहली कठिनाई तो यह थी कि 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि ठीक-ठीक पढ़ने में न आती थी।

एक दिन मेरी माता पुष्पावती जी डा० बालकृष्ण के यहाँ गईं। उनको डाक्टर साहिब से मालूम हुआ कि अन्य कठिनाइयों के अतिरिक्त 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि के ठीक-ठीक न पढ़े जा सकने की कठिनाई तो इस ग्रन्थ के छपवाने के काम को शुरू ही नहीं होने देती। माता जी इस दिशा में प्रयत्न करने का आश्वासन देकर डा० बालकृष्ण जी से 'ग्रन्थ साहिब' ले आईं।

हम जिस मुहल्ले में रहते हैं, वहाँ पंजाब से आये हुए महानुभावीय (जयकृष्णी पंथीय) सम्प्रदाय का एक मन्दिर है। इस मंदिर में उस सम्प्रदाय के कई हस्त लिखित ग्रन्थ पड़े हैं। ये सब बातें मेरी माता को मालूम थीं क्योंकि वे उस मंदिर में कथा-कीर्तन सुनने के लिये जाया करती थीं। उन्होंने उक्त सम्प्रदाय के एक महानुभाव श्री गोपीराज शास्त्री से 'ग्रन्थसाहिब' के विषय में चर्चा की। उन्हें हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अच्छा अभ्यास है। श्री गोपीराज जी को 'ग्रन्थ साहिब' की पाण्डुलिपि दिखाई गई। वे इसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुए। मैंने जब उनसे 'ग्रन्थसाहिब' के कुछ पद और उनकी व्याख्या सुनी तो मैं भी अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैंने महसूस किया कि श्री गोपीराज जी ऐसे विद्वान हमारे काम में बड़े सहायक हो सकते हैं और मुझे बड़ी खुशी हुई, जब उन्होंने हर्षपूर्वक हमें सहायता देना स्वीकार कर लिया। इसके बाद 'ग्रन्थसाहिब' के छापने के विषय में डा० बालकृष्ण गोसाईं श्री महन्त रामेश्वरदास बाबू गोपालदास श्री गोपीराज और मैंने मिलकर विचार-विमर्श किया। उस समय हमारे सामने दो बातें आईं। एक यह कि ग्रन्थ साहिब' के मूल पाठ के अनुरूप उसकी एक ऐसी प्रतिलिपि तैयार कराई जाय जो ठीक-ठीक पढ़ी जा सके और छापने के लिये प्रेस में भेजने के योग्य हो। दूसरे यह कि छपवाने के लिये धन का संग्रह किया जाय।

पहली बात के लिये—हम दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हिंदी विभाग' के रीडर श्री विजयेन्द्र स्नातक से मिले। निश्चय हुआ कि ग्रन्थ साहिब की हाथ से एक प्रतिलिपि (Copy) तैय्यार करवाई जाय। इस बारे में लगभग छः महीने

के परिश्रम से एक व्यक्ति मिले। यह थे पं० साधुराम शास्त्री। पंडित साधुराम ने काम कर देने का वायदा किया। काम चालू हो गया। काम बड़ा धीरे-धीरे चल रहा था। पंडित जी का बीच में ही स्वास्थ्य खराब हो गया और काम अधूरा रह गया। हम जहां से चले थे फिर वहीं आ गये। तभी दैवयोग से श्री गोपीरामजी के प्रयत्नों से हमारा यह काम जयकिशन हिंदी टाइपिस्ट ने कर देने का वायदा किया। इस प्रकार चार टाइप कापियां तय्यार हो गई। हमारा एक काम पूरा हुआ। हम पं० साधुराम शास्त्री तथा श्री जयकिशन हिंदी टाइपिस्ट के बहुत ही आभारी हैं। विशेषकर श्री जयकिशन तो बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस काम को निश्चित समय के भीतर समाप्त कर दिया।

इसके बाद दूसरी बात थी 'रुपया इकट्ठा' करना। इस काम को चालू करने से पहले हमने "सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ" नाम से एक संस्था की स्थापना करली और उसे दिल्ली राज्य सोसाइटी एक्ट के मुताबिक रजिस्टर्ड करवा लिया गया है। उसका हिसाब किताब बाकायदा तरीके से स्टेट बैंक में खोला गया। इन सब बातों को करने के उपरांत आर्थिक सहायता के लिये हम लोग पंजाब के पुराने परोपकारी नेता श्री डॉ० गोकुलचंद जी नारंग से मिले उन्होंने पहली मुलाकात में यह वचन दिया कि सारा रुपया तो वे नहीं लगा सकते मगर जितना रुपया इस ग्रंथ की छपाई के लिये चाहिये उसका आधा हम लोग इकट्ठा करें। सेवकसंघ की बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से पास हुआ कि प्रत्येक सदस्य स्वयं २५)रु० से कम दान नहीं करेगा साथ ही यह प्रयत्न करेगा कि इतना ही दान और लोगों से दिलवाए। हमारे इस प्रस्ताव का स्वागत हुआ और हमारे इस साहस की सफलता के लिये निम्नलिखित महानुभावों से नीचे दी गई धन राशि प्राप्त हुई।

१	श्री गोपालदास गोसाईं	सुपुत्र श्री मायारामजी	रु० ५
२	„ चिमनलाल बदुरा	„ दीवान चंद बदुरा	५
३	„ केसरराम भारद्व	„ भागचंद भारग	„ ५
४	डॉ० बालकृष्ण गुसाईं	रामचंद गोसाईं	२५
५.	वसुदेवलाल भास्कर	डा० बालकृष्ण गोसाईं	२५
६	कलासनाथ भास्कर	„ „ „	„ २५
७	श्रीमती पुष्पावन्ती	धर्मपत्नी रायसाहिब परमानंद गोसाईं	२५
८	पुष्पावती गोसाईं	„ श्री रामनाथ गोसाईं	२५
९.	श्री ओमप्रकाश गोसाईं	सुपुत्र „	२५
१०	ओमप्रकाश भास्कर	„ रामरक्खामल गोसाईं	२५
११	अमरसिंह बजाज	ला० जगतराम बजाज	„ २५
१२	मनोहरलाल तलवार	„ „ हरिचंद तलवार	२५
१३	विद्यावन्त गोसाईं	„ श्री जगन्नाथ गोसाईं	„ २५

१४	रलाराम गुलाटी ,,	,, गगाराम गुलाटी	२५	•
१५.	,, डॉ रघुनाथ भास्कर	शिवरामदास गोसाईं ,,	२६	•
१६	धर्मवीर मेंदा आदि बंधु ,,	रामनाथ मदा	२१०	
१७	प्रकाशनाथ आदि बधु	ला ठाकुरदास बहल	२१०	०
१८	,, प्राणनाथ बहल आदि बधु	विशम्भरदयाल बहल	२५	•
१९	श्रीमती पुष्पावती	धर्मपत्नी ज्ञानचद गोसाईं ,,	२१०	

इस प्रकार उपरोक्त धनराशि का सग्रह कर लेने के बाद हम डॉ गोकुलचद जी नारंग से मिले। उन्होने एक सहस्र रु १ स्वयं दिया तथा शेष कागज पर उनसे बाकी राशि रु ११४ ५ मेसर्स गोकुलचंद रामसहाय मरवाह कानपुर से दिलवाई। कुल २१४ ५ की राशि डॉ नारंगजी के प्रयत्नों का फल है। इसके अतिरिक्त शेष रुपया छोटी-छोटी रकमों के रूप में 'सेवक सघ' को प्राप्त हुआ जिससे हम इस आर्थिक मद्दो को पूरा करने में समर्थ हुए। इस रूप में 'ग्रथ साहिब' के छपने के दोनों काम पूरा कर लेने पर हमारा ध्यान प्रचार की ओर गया।

इसी बीच "ग्रथ साहिब" को लेकर श्री सोमीराज शास्त्री ने अपने 'थीसिस' के विषय को (Subject) चुना। इसके लिये डॉ हरभजनसिंह खालसा कालेज के हिंदी के लेक्चरर उनके गाइड बने। उनसे भी ग्रंथ साहिब के बारे में कभी-कभी बातचीत होती रही। उनसे प्राप्त होने वाले सुझावों के लिये हम उनके भी आभारी हैं। डॉ विजयेन्द्र स्नातक से बार-बार मिलने का मौका तो नहीं आया पर उन्होंने इस काम को प्रारंभ करवाया अत उनका भी हम आभार मानते हैं।

ग्रंथ साहिब का प्रचार—इस बीच ग्रथ साहिब की बानियो और सतगुरु सिद्ध बाबा हाड्याल और उनके द्वारा चलाए हुए गुसाईं मत का परिचय देने के लिए श्री रामनाथ कालिया और श्री जगन्नाथ प्रभाकर के प्रयत्नों से समाचारपत्रों (मिलाप प्रताप तेज और 'नवभारत टाइम्स' आदि) और आकाशवाणी में समय समय पर लेख छपे तथा वार्ताएँ प्रसारित हुईं। इन सबका सेवक संघ आभारी है।

अंत मे हिंदी प्रिंटिंगप्रेस के सचालक श्री श्यामसुन्दरजी और नेशनल पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री कन्हैयालाल जी के सहयोग के लिये भी मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूं।

●